विज्ञापन

…के हमारे कारखाने में जो पुस्तकें मूल संस्कृत टीका उर्दू में
…से कुछ नीचे लिखते हैं जिन साहबों को ज़रूरत हो मँगा…
…ायत से मिलेगी-

याज्ञवल्क्य स्मृति.

…स्वामीदयाल साहब के उर्दू तर्जुमा समेत है जिस में राजाओं…
…प्रजा पालन करने के धर्म और अधर्मियों को दण्ड देने और
चारों वर्णों और गृहस्थादि चारों आश्रमों के धर्म और प्रता…
…में इत्यादि अनेक विषय संयुक्त हैं-

मार्कण्डेय पुराण.

…का उल्था श्रीबाबूदेवनन्दनसिंह रईस खान्दान मजाशिषहर और…
…परगनात ज़िला तिरहुत व चम्पारन ने कराया श्लोक के नीचे श्लो…
…नुसार भाषा टीका है और उर्दूटीका भी संयुक्त कर दोनों टीकाओं…
…तवार अंक लगा दिये गये हैं छापा पत्थर है जिस में मार्कण्डेय मुनि
जैमिनि का सत्संग और संवाद अप्सराओं पर दुर्वासा मुनि का शाप,
…के मारे जाने पर विद्युतरूप राक्षस का मारा जाना और पक्षियों के ज…
…र चरित्र, देवी जी का माहात्म्य और दुर्गा पाठ भी संयुक्त है-

व्रतार्क.

…का उल्था लाला स्वामीदयाल साहब ने किया है छापा पत्थर का…
…उन्दा है इस में सम्पूर्ण व्रतों की कथा व उद्यापन इत्यादि वर्णित हैं

भगवद्गीता.

…शी श्यामसुन्दरलाल कृत उल्था सहित है छापा पत्थर है इस में यहि…
…में भावार्थ स्पष्ट किया है और फिर हरएक पद के अर्थ भी अलग…
…ाये हैं कि श्लोक लगाने की भी शक्ति हो-

वृहत्संहिता अर्थात् वाराहीसंहिता.

इस के मूल श्लोकों को वराह मिहराचार्य्य जी और टीका दे
। परिडत दुर्गाप्रसाद शास्त्री ने किया था और उसी देवनागरी
नक़ल उर्दू ख़त में लिखवा कर संस्कृत मूल व उर्दू टीका शामि
दी गई है इस में नवग्रह अगस्त्य और सप्तऋषियों के चार
र्य्य चन्द्र ग्रहण, धूमकेतु के फल, ग्रहयुद्ध, ग्रहसमागम, ग्रह
ल, यानी वर्षने के अनेक विचार इत्यादि १०८ विषय वर्णित
समान लौकिक व्यवहारों के निमित्त कोई संहिता नहीं है-

महिम्नस्तोत्र.

लाला स्वामीदयाल जी का तर्जुमा किया हुआ हर श्लोक का उस
ार्थ है जिस में शिव जी की स्तुति वर्णित है-

विष्णुसहस्रनाम.

जिस में श्रीविष्णुजी के हज़ार नाम श्लोकों में वर्णित हैं इस की टीके
भी लाला स्वामीदयाल जी ने उर्दू में उल्था किया है-

शिवसहस्रनाम.

उर्दू तर्जुमे को मुंशी शंकर दयाल फ़रहत ने किया है इस में
शिव जी हज़ार नाम श्लोकों में वर्णित हैं-

अर्कप्रकाश.

यह वैद्य की पुस्तक रावण ने अपनी परम प्यारी मंदोदरी प्रति व
र्णन किया है इस में सम्पूर्ण औषधियों की अर्क़ निकालने की विधि
अर्क़ निकालने यंत्र बनाने की विधि लिखा है इस का भी तर्जुमा ल
स्वामीदयाल सा० ने किया है-

मनोरंजन अर्थात् दिलबहलाव.

मुंशी जगन्नाथसहाय कृत, हज़ारीबाग़ निवासी- इस में ग़ज़लें व
ी व भजन, वग़ैरह अनेक प्रकार के हैं- देखने योग्य हैं-

वेदशास्त्रार्थतत्त्वज्ञोयत्रतत्राश्रमेवसन्॥ इहैवलोकेतिष्ठन्स
ब्रह्मभूयायकल्पते॥१०२॥ अज्ञेभ्योग्रन्थिनःश्रेष्ठाग्रन्थि-
भ्योधारिणोवराः॥धारिभ्योज्ञानिनःश्रेष्ठाज्ञानिभ्योव्यव
सायिनः॥१०३॥ तपोविद्याचविप्रस्यनिःश्रेयसकरंपरम्॥
तपसाकिल्विषंहन्तिविद्ययाऽमृतमश्नुते॥१०४॥ प्रत्यक्षंच
नुमानंचशास्त्रंचविविधागमम्॥ त्रयंसुविदितंकार्यंधर्मशु
द्धिमभीप्सिता॥१०५॥ आर्षंधर्मोपदेशंचवेदशास्त्राऽविरो
धिना॥ यस्तर्केणानुसन्धत्तेसधर्मंवेदनेतरः॥१०६॥

۱۰- وید اور شاستر کے اصلی مطلب کو جاننے والا کسی آشرم میں قیام کرتا ہوا موکش کے
لائق ہوتا ہے -

۱۰- جو کچھ نہیں جانتا اُس سے ایک گرنتھ پڑھنے والا بڑا ہے اس سے وہ بڑا ہے
جو پڑھے ہوئے کو نہیں بھولتا اُس سے پڑھے ہوئے کے مطلب کو جاننے والا بڑا ہے اُس سے
اُس میں لکھے ہوئے کرم کو کرنے والا بڑا ہے -

۱۰- تپ یعنی اپنا دھرم بدّیا یعنے برھم گیان یہ دونوں براہمن کی موکش کی افضل ہیں
کیونکہ تپ سے پاپ کو فانی کرتا ہے اور بدّیا سے موکش کو پاتا ہے -

۱۰- دھرم کے سدھ معانت کو جاننے کو خواہشمند آدمی پرتکیش انمان انواع اقسام کا شا
ستر میں کہا ہوا اِن تینوں پرمان کو اچھی طرح سے جانے -

۱۰- وید اور اسمرت ان دونوں کو اچھی دلیل سے جو تلاش کرتا ہے یعنے انکے اصلی مطلب کو
جانتا ہے وہی دھرم کو جانتا ہے دوسرا نہیں -

उत्पद्यन्ते च्यवन्ते च यान्यतोऽन्यानि कानिचित्॥ तान्यर्वाक्कालिकतया निष्फलान्यनृतानि च॥ ९६॥ चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्॥ भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति॥ ९७॥ शब्दः स्पर्शश्च रूपं च रसो गन्धश्च पंचमः॥ वेदादेव प्रसूयन्ते प्रसूतिगुणकर्मतः॥ ९८॥ बिभर्ति सर्वभूतानि वेदशास्त्रं सनातनं॥ तस्मादेतत्परं मन्ये यज्जन्तोरस्य साधनम्॥ ९९॥ सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च॥ सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति॥ १००॥ यथा जातबलो वह्निर्दहत्यार्द्रानपि द्रुमान्॥ तथा दहति वेदज्ञः कर्मजं दोषमात्मनः॥ १०१॥

۹۶- ویدسے باہر جو کلام ہے وہ آدمی کا بنایا ہوا ہے اسواسطے بازوال ہے اور اسکا پرمان نہیں
اور اسمرت وغیرہ جو کلام ہیں وہ بے زوال ہیں کیونکہ انکی جڑ وید ہی اسواسطے انکو پرمان ہے-
۹۷- چار ورن تینوں لوک علیحدہ علیحدہ چار و آشرم ماضی و حال و استقبال جو کچھ کرم ہے
وہ سب وید ہی سے مشہور ہوتا ہے-
۹۸- ست رج تم ان تینوں گنوں سے پیدا ہوئے جو شبد اسپرس روپ رس گندھ ہیں وہ
سب وید ہی سے پیدا ہوتے ہیں-
۹۹- ہمیشہ سب جانداروں کو دھارن کرنیوالا جو شاستر ہے وہی آدمی کا افضل پرشارتھ
ہے اسبات کو میں مانتا ہوں-
۱۰۰- سیناپت کا کرم راج ڈنڈ دینا سب لوک کی حکومت ان سبکو وید شاستر جاننے والا ہے-
۱۰۱- جسطرح ترقی یافتہ آگ گیلی درخت کو جلا دیتی ہے اسیطرح وید جاننے والا اپنے کرم
سے پیدا ہوتے دوش کو جلاتا ہے-

सर्वभूतेषु चात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि॥ समं पश्यन्नात्मया-
जी स्वाराज्यमधिगच्छति॥ ९१॥ यथोक्तान्यपि कर्माणि परि-
हाय द्विजोत्तमः॥ आत्मज्ञाने शमे च स्याद्वेदाभ्यासे च यत्नवान्
॥ ९२॥ एतद्धि जन्मसाफल्यं ब्राह्मणस्य विशेषतः॥ प्राप्यैत-
त्कृतकृत्यो हि द्विजो भवति नान्यथा॥ ९३॥ पितृदेवमनुष्या-
णां वेदश्चक्षुः सनातनम्॥ अशक्यं चाप्रमेयं च वेदशास्त्रमिति
स्थितिः॥ ९४॥ या वेदबाह्याः स्मृतयो याश्च काश्च कुदृष्टयः॥
सर्वास्ता निष्फलाः प्रेत्य तमोनिष्ठा हि ताः स्मृताः॥ ९५॥

۹۱ - جب جانداروں میں اپنی آتما کو اور سب جاندار ونکو اپنی آتما میں دیکھتا ہوا آتم یگیہ کرنیوالا آدمی برہم بھاو کو پاتا ہے —

۹۲ - براہمن یعنے برہم گیانی اگن ہوتر وغیرہ کرموں کو ترک کر کے برہم وگیان اندریوں کو جیتنا پرنو اپنشد وغیرہ وید ابھیاس ان سب میں تدبیر کرے —

۹۳ - براہمن کشتری ویشیہ کے جنم کو بانتیجہ کرنیوالے آتم گیان اور وید ابھیاس وغیرہ کرم ہیں لیکن براہمن کو تو زیادہ سو واسطے اس کرم کو پا کر کرت کرت ہوتا ہے یعنے کرنے کے لائق کام کو کر چکتا ہے —

۹۴ - وید ہمیشہ پتر دیوتا و آدمیوں کی آنکھ ہے وید و شاستر دونوں شک کے لائق نہیں ہیں اور دلیل کرنیکے لائق ہیں یہ شاستر کی مرجاد ہے —

۹۵ - جو وید سے باہر یعنے خلاف وید و شاستر اور جو کچھ ظاہری عقل سے پیدا ہوئے مذہب ہیں وہ سب بے نتیجہ ہیں یعنے موکش نہیں دیسکتے ہیں اور تموگن سے بھرے ہوئے ہیں —

षरणामेषान्तुसर्वेषांकर्मणांप्रेत्यचेहच॥ श्रेयस्करतरंज्ञेयंसर्व-दाकर्मवैदिकम्॥८६॥वैदिकेकर्मयोगेतुसार्वण्येतान्यशेष-तः॥ अन्तर्भवन्तिक्रमशस्तस्मिंस्तस्मिन्क्रियाविधौ॥८७॥सु-खाभ्युदयिकंचैवनैश्श्रेयसिकमेवच॥ प्रवृत्तंचनिवृत्तंचद्विवि-धंकर्मवैदिकम्॥८८॥इहचामुत्रवाकाम्यंप्रवृत्तंकर्मकीर्त्यते॥ निष्कामंज्ञानपूर्वन्तु निवृत्तमुपदिश्यते॥८९॥प्रवृत्तंकर्मसं-सेव्यदेवानामेतिसाम्यताम्॥ निवृत्तंसेवमानस्तुभूतान्त्ये-तिपंचवै॥९०॥

٨٦ - پہلے کہے ہوئے وید ابھیاس وغیرہ چھ کرموں میں ویدمیں کہا ہوا کرم یعنی آتم گیان اس لوک اور پرلوک میں موکش کیواسطے ہر وقت جاننے کے لائق ہے۔

٨٧ - اس کریا پدھی ویدک کرم جوگ یعنی برہم اپاسنا میں یہ سب وید ابھیاس وغیرہ ختم ہو جاتے ہیں یعنے جب برہم اپاسنا حاصل ہوئی تب کچھ سادھن باقی نہیں رہتا۔

٨٨ - ویدمیں لکھا ہوا کرم دو قسم کا ہے ایک پرورت دوسرا نیورت عیش و دنیا کا دینے والا (یعنے جو اگنشٹوم یگیہ وغیرہ سے سکھ دینے والا سورگ وغیرہ پھل ہوتا ہے لیکن سنسار میں پھر لوٹ آتا ہے اسواسطے پرورت کہلاتا ہے) اور نیورت موکش دینے والا ہے (یعنے موکش کیواسطے جو کرم ہے وہ نیورت کہلاتا ہے وہ کلیان کرنیوالا ہے یعنے سنسار میں پھر نہیں لاتا۔

٨٩ - اس لوک اور پرلوک میں خواہش دل حاصل ہونے کیواسطے جو کرم ہے وہ پرورت کہلاتا ہے اور گیان پوروک جو کرم ہے وہ نیورت کہلاتا ہے۔

٩٠ - پرورت کرم کرنے سے دیوتاؤں کے برابر ہوتا ہے اور نیورت کرم کرنیسے پرتھی وغیرہ پانچ عناصر کو فتح کرتا ہے یعنے پانچ عناصر سے جنم ہوتا ہے انکے فتح کرنیسے پھر جنم نہیں ہوتا۔

यादृशेन तु भावेन यद्यत्कर्म निषेवते॥ तादृशेन शरीरेण तत्तत्फलमुपाश्नुते॥ ८१॥ एष सर्वः समुद्दिष्टः कर्मणां वः फलोदयः॥ नैःश्रेयसकरं कर्म विप्रस्येदं निबोधत॥ ८२॥ वेदाभ्यासस्तपो-ज्ञानमिंद्रियाणां च संयमः॥ अहिंसा गुरुसेवा च निःश्रेयसकरं परम्॥ सर्वेषामपि चैतेषां शुभानामिह कर्मणाम्॥ किंचिच्छ्रेयस्करतरं कर्मोक्तं पुरुषं प्रति॥ ८४॥ सर्वेषामपि चैतेषामात्मज्ञानं परं स्मृतम्॥ तद्ध्यग्र्यं सर्वविद्यानां प्राप्यते ह्यमृतं ततः॥ ८५॥

۸۱ — جس جس بھاؤ سے جس جس کرم کا سیون کرتا ہی اُسی بدن سے اُس اُس کرم کے پھل کو بھوگ کرتا ہے —

۸۲ — میں نے یہ سب تمام نتیجہ اعمال کو بیان کیا اب اسکے بعد براہمن کے موکش دینے والے کرم کو بیان کرتا ہون —

۸۳ — وید کا پڑھنا۔ تپ گیان اندریون کا تھم اہنسا یعنی کسی جانور کو نہ مارنا گرو کی سیوا کرنا یہ سب کرم بڑے کلیان کرنیوالے ہین —

۸۴ — ان سب شُبھ کرمون مین سے ہر ایک کرم آدمیونکی موکش کیواسطے نہایت کلیان کرنیوالا ہے —

۸۵ — سب کرمون مین آتما کا گیان افضل ہی کیونکہ اُسی سے موکش ہوتا ہے —

یعنی ساتک وراجس وتامس بھاو کرکے اشنان ودان وجوگ وغیرہ کرے تو زیادہ ستوگن رکھنے والا یا زیادہ رجوگن رکھنے والا یا زیادہ تموگن رکھنے والا بدن پاکر اُس جنم کے وسیلے اشنان ودان وجوگ وغیرہ کرم کے پھل کو بھوگ کرتا ہے —

विविधाश्चैव संपीडाः काकोलूकैश्च भक्षणम्॥ करम्भवालुकातापान्कुम्भीपाकांश्च दारुणान्॥७६॥ सम्भवांश्च वियोनीषु दुःखप्रायासु नित्यशः॥ शीतातपाभिघातांश्च विविधानि भयानि च॥७७॥ असकृद्गर्भवासेषु वासं जन्म च दारुणम्॥ बंधनानि च काष्ठानि परप्रेष्यत्वमेव च॥७८॥ बन्धुप्रियवियोगांश्च संवासं चैव दुर्जनैः॥ द्रव्यार्जनं च नाशं च मित्रामित्रस्य चार्जनम्॥७९॥ जरां चैवाप्रतीकारां व्याधिभिश्चोपपीडनम्॥ क्लेशांश्च विविधांस्तांस्तान्मृत्युमेव च दुर्जयम्॥८०॥

٧٦- اور انواع اقسام کی تکلیف پاتے ہیں اور کوا اور الّو ان کو کھاتے ہیں اور گرم بالو کی گرمی کو پاتے ہیں اور نہایت خوفناک کمبھی پاک نام نرک کے دکھ بھوگ کرتے ہیں

٧٧- ہمیشہ بہت دکھ والی ناقص جونوں میں پیدا ہوتے ہیں اور سردی و گرمی سے تکلیف اور انواع اقسام کا خوف پاتے ہیں۔

٧٨- بار بار شکم میں قیام و تکلیف ولادت و تکلیف گرفتاری و دوسرے کی خدمتگذاری ان سب کو پاتے ہیں۔

٧٩- بھائیوں اور پیارے لوگوں سے جدائی اور برے آدمیوں کے ساتھ بودوباش اور دولت کا فراہم ہونا اور پھر اسکا کالعدم ہو جانا اور دوست و دشمن کا ملانا ان سب کو پاتے ہیں

٨٠- قابل عدم معالجہ حالت پیری و بیماریوں سے دکھ و انواع اقسام کی تکلیفیں کے بعد موت ان سب کو پاتے ہیں۔

मैत्राक्षज्योतिकः प्रेतोवैश्योभवतिपूयभुक्॥ चैलाशकश्चभवतिशूद्रोधर्मात्स्वकाच्च्युतः॥७२॥यथायथानिषेवन्तेविषयान्विषयात्मकाः॥ तथातथाकुशलतातेषांतेषूपजायते॥ तेऽभ्यासात्कर्मणांतेषांपापानामल्पबुद्धयः॥ सम्प्राप्नुवन्तिदुःखानितासुतास्विहयोनिषु॥७४॥तामिस्रादिषुचोग्रेषुनरकेषुविवर्त्तनम्॥ असिपत्रवनादीनिबन्धनच्छेदनानि च॥ ७५॥

۷۲- جو ویشیا اپنے دھرم سے علیحدہ ہو وہ پیپ بھوجن کرنیوالا میتراکش نام پریت ہوتا ہی اور جو شودر اپنے دھرم سے علیحدہ ہو وہ کیڑا بھوجن کرنیوالا پریت ہوتا ہے ۔

۷۳- بشیون مین آتما کو لگانیوالا آدمی جس جس طرح بشیون کا سیون کرتا ہی اس اس طرح وشیون مین ہوشیار ہوتا ہے ۔

۷۴- وہ سب کم عقل والے آپ پاپ کرمون کی مہارت سے اُن اُن یون مین دکھ کو پاتے

۷۵- اور تامشر اس پتر بن بندھن چھیدن جو نرک ہین انمین دکھ پاتے ہین ۔

* دیکھو ادھیا ۲ شلوک ۹ و ۱۰ -

वृकोमृगेभंव्याघ्रोऽश्वंफलमूलन्तुमर्कटः॥स्त्रीमृक्षःस्तोक
कोवारियानान्युष्ट्रःपशूनजः॥६७॥यद्वातद्वापरद्रव्यमपहृ-
त्यबलान्नरः॥अवश्यंयातितिर्यक्त्वंजग्ध्वाचैवाहुतंहविः॥
६८॥स्त्रियोऽप्येतेनकल्पेनहृत्वादोषमवाप्नुयुः॥एतेषामेव
जन्तूनांभार्य [illegible] पुयान्तिताः॥६९॥स्वेभ्यःस्वेभ्यस्तुकर्मभ्य
श्च्युतावर्णाह्यनापदि॥पापान्संसृत्यसंसारान्प्रेष्यतांयान्ति
शत्रुषु॥७०॥वान्ताश्युल्कामुखःप्रेतोविप्रोधर्मात्स्वकाच्च्यु-
तः॥अमेध्यकुणपाशीचक्षत्रियःकटपूतनः॥७१॥

٦٧ - ہرن اور ہاتھی اِن دونوں میں سے کسی ایک کو چرانے سے بھیڑیا ہوتا ہی گھوڑا کے چرانے سے باگھ ہوتا ہے پھل و پھول اِن دونوں میں سے کسی ایک کے چرانے سے بندر ہوتا ہی عورت کے چرانے سے ریچھ ہوتا ہی پینے کے لائق پانی چرانے سے پپیہا نام پرند ہوتا ہی سواریوں کو چرا کر اونٹ ہوتا ہی چارپایوں کو چرا کر بکرا ہوتا ہے —

٦٨ - دوسرے کی دربیہ چرانے سے اور بدون بھوگ لگائے دیوتاؤں کے بھیٹ کے بھوجن سے ضرور ٹیڑھے چلنے والے جانوروں کے جسم یعنی قالب کو پاتا ہے یعنی اُنکی صورت سی پیدا ہوتا ہے —

٦٩ - اور عورت بھی اوپر لکھے ہوئے کرموں کے کرنے سے اوپر لکھے ہوئے جانوروں کی عورت ہوتی ہے —

٧٠ - وقت مصیبت کے نہ ہونے میں چاروں ورن اپنے کرموں سے علیحدہ ہو کر پاپ یونیوں میں جا کر اپنے دشمنوں کے غلام ہوتے ہیں —

٧١ - اپنے دھرم سے علیحدہ برہمن قے کی ہوئی چیز کو بھوجن کرنیوالا الکا مکھ نام پریت ہوتا ہے اور اپنے دھرم سے علیحدہ کشتری غلیظ پیشاب کھانیوالا کیٹھ پوتن نام پریت ہوتا ہی —

धान्यंहृत्वाभवत्याखुःकांस्यंहंसोजलंप्लवः ॥ मधुदंशःपयः
काकोरसंश्वानकुलोघृतम् ॥ ६२ ॥ मांसंगृध्रोवपांमद्गुस्तैलंतै-
लपकःखगः ॥ चीरीवाकस्तुलवणंबलाकाशकुनिर्दधि ॥ ६३
॥ कौशेयंतित्तिरिर्हृत्वाक्षौमंहृत्वातुदर्दुरः ॥ कार्पासतान्तवंक्रौं-
चोगोधागांवाग्गुदोगुडम् ॥ ६४ ॥ छुच्छुन्दरिःशुभान्गन्धान्प-
त्रशाकंतुबर्हिणः ॥ श्वाविच्कृतान्नंविविधमकृतान्नंतुश-
ल्यकः ॥ ६५ ॥ बकोभवतिहृत्वाग्निंगृहकारीह्युपस्करम् ॥ र-
क्तानिहृत्वावासांसिजायतेजीवजीवकः ॥ ६६ ॥

۶۲- غلہ کے چورانیسے چوہا اور کانسا کے چورانیسے ہنس اور پانی کے چورانیسے پلو نام
جانور اور شہد کے چورانیسے جنگل کے ماچھی اور دودھ کے چورانیسے کوا اور رس کے چورانیسے
کتا اور گھی کے چورانیسے نیولا ہوتا ہے۔
۶۳- گوشت و چربی و تیل و نمک و دہی انھوں کے چورانیسے حسب سلسلہ گدھ و پانی کے
اوپر رہنے والا پرند و تیل نیپ پرند و جھینگر و بلا کا پرند ہوتا ہے۔
۶۴- کیڑوں کے پیٹ سے نکالے ہوئے سوت کا کپڑا اور ریشم کی چھال سے بنا ہوا کپڑا اور کپاس
کے سوت سے بنا ہوا کپڑا اور گئو اور گڑ انھوں کے چورانیسے بلحاظ سلسلہ تیتری پرند و مینڈھک
و کرونچ و گوہ و گودرا پرند ہوتا ہے۔
۶۵- ساگ وغیرہ پھول آدغیرہ بھات وستو وغیرہ جو و گیہوں انھوں کے چورانیسے بلحاظ سلسلہ
چھچھوندر و مور و کتا و سیہہ ساہی ہوتا ہے۔
۶۶- اگن سوپ و موسل وغیرہ گھر کی فائدہ مند چیزیں لال کپڑا انھوں کے چورانیسے بلحاظ
سلسلہ بگلا و بلی و چکور ہوتا ہے۔

तृणगुल्मलतानांचक्रव्यादांदंष्ट्रिणामपि॥ क्रूरकर्मकृतांचैव शतशोगुरुतल्पगः॥ ५८॥ हिंस्राभवंतिक्रव्यादाः कृमयोऽमध्यभक्षिणः॥ परस्परादिनःस्तेनाःप्रेतान्त्यस्त्रीनिषेविणः॥ ५९॥संयोगंपतितैर्गत्वापरस्यैवचयोषितम्॥ अपहृत्यच-विप्रस्वंभवतिब्रह्मराक्षसः॥ ६०॥मणिमुक्ताप्रवालानिहृत्वा लोभेनमानवः॥ विविधानिचरत्नानिजायतेहेमकर्तृषु॥६१॥

۵۸ - ترن یعنے دوب وغیرہ گلم لتا کچے گوشت کے کھانیوالے (گیدھ وغیرہ) ڈارھ والے (سنگھ وغیرہ) کرور کرم کرنیکا جنکا سبھاؤ ہے (باگھ وغیرہ) انھوں کی یون میں والدہ سے جماع کرنیوالا سیکڑوں دفعہ جاتا ہے -

۵۹ - جیو کے مارنے کی خصلت رکھنے والے جو ہیں وہ کچے گوشت کے کھانیوالے (یعنے بلاء وغیرہ) ہوتے ہیں اور جو نہ کھانے کے قابل چیز کو کھاتے ہیں وہ چھوٹے کیڑے ہوتے ہیں سوا پاپی کے سوا جو چور ہیں وہ باہم گوشت کے کھانیوالے ہوتے ہیں (یعنے وہ اسکے گوشت کو کھاتا ہے اور وہ اسکے گوشت کو کھاتا ہے) اور چانڈال کی عورت سے جماع کرنیوالا پریت ہوتا ہے -

۶۰ - پتیت لوگوں کے ساتھ میل ملاپ کرنا دوسرے کی عورت سے صحبت کرنا برہمن کا سونا چرانا انھوں میں سے کوئی ایک کرم کرنے سے برہم راکشس ہوتا ہے -

۶۱ - لوبھ سے من موتی و مونگا و انواع اقسام کے جواہرات کے چرانے سے سنار ہوتا ہے -

इन्द्रियाणांप्रसंगेनधर्मस्यासेवनेनच॥ पापान्संयान्तिसंसारा-
नविद्वांसोनराधमाः॥५२॥यांयांयोनिंतुजीवोयंयेनयेनेहक-
र्मणा॥ क्रमशोयातिलोकेऽस्मिंस्तत्तत्सर्वंनिबोधत॥५३॥ब-
हून्वर्षगणान्घोरान्नरकान्प्राप्यतत्क्षयात्॥ संसारान्प्रतिपद्य-
न्तेमहापातकिनस्त्विमान्॥५४॥श्वसूकरखरोष्ट्राणांगोजा-
विमृगपक्षिणाम्॥ चण्डालपुक्कसानांचब्रह्महायोनिमृच्छ-
ति॥५५॥कृमिकीटपतंगानांविड्भुजांचैवपक्षिणाम्॥ हिं-
स्राणांचैवसत्वानांसुरापोब्राह्मणोव्रजेत्॥५६॥लूताहिसर-
टानांचतिरश्चांचाम्बुचारिणाम्॥ हिंस्राणांचपिशाचानांस्ते-
नोविप्रःसहस्रशः॥५७॥

۵۲ - آدمیوں میں نیچ منوکھ آدمی اطاعت نفس امّارہ سے اور دھرم کر کے ترک کر دینے سے خراب حالت کو پاتا ہے۔

۵۳ - اس لوک میں سلسلے جیو جس جس کرم کر کے جس جس یون میں جاتا ہے اس سب کو کہتے ہیں۔

۵۴ - بہت سال تک گھور نرک کے بھوگ کرنے سے پاپوں کو دور کر کے باقیماندہ پاپ مہاپاپی آدمی سنسار میں جنم پاتے ہیں۔

۵۵ - کتے سور گدھا اونٹ گئو بکرا بھیڑ ہرن پرند چانڈال کہیں انھوں کی یونیوں میں برہمن کا مارنے والا جاتا ہے یعنی انھوں کا جنم پاتا ہے۔

۵۶ - چھوٹے بڑے کیڑے پتنگ غلیظ کھانے والے پرند مارنیکی خصلت رکھنے والے شیر وغیرہ کی یونیوں میں شراب پینے والا برہمن جاتا ہے۔

۵۷ - مکڑی سانپ گرگٹ جل کے جیو بڑے چلنے والے جیو پشاچ مارنے کی خصلت رکھنے والے جیو انھوں کی یونیوں میں سونا چرانے والا برہمن ہزاروں دفعہ جاتا ہے۔

गन्धर्वा गुह्यका यक्षा विबुधानुचराश्च ये॥ तथैवाप्सरसः सर्वा राजसीषूत्तमा गतिः॥ ४७॥ तापसा यतयो विप्रा ये च वैमानिका गणाः॥ नक्षत्राणि च दैत्याश्च प्रथमा सात्त्विकी गतिः॥ ४८॥ यज्वान ऋषयो देवा वेदा ज्योतींषि वत्सराः॥ पितरश्चैव साध्याश्च द्वितीया सात्त्विकी गतिः॥ ४९॥ ब्रह्मा विश्वसृजो धर्मो महानव्यक्तमेव च॥ उत्तमां सात्त्विकीमेतां गतिमाहुर्मनीषिणः॥ ५०॥ एष सर्वः समुद्दिष्टस्त्रिप्रकारस्य कर्मणः॥ त्रिविधस्त्रिविधः कृत्स्नः संसारः सार्वभौतिकः॥ ५१॥

۴۷ - گندھرب گہجک یکش و دیوتون کے پیچھے چلنے والے بدیادھر وغیرہ و اپسرا ان سب گتون کو رجوگن کی اُتم گت جاننا۔

۴۸ - تپسوی یتی برہمن اور اپسرا کے علاوہ پشپک بمان پر چڑھکر چلنے والے نکشتر و دیتیہ ان سب گتون کو ستوگن کی نیچ گت جاننا

۴۹ - یگیہ کرنیوالے رشی دیوتا وید و نجوم وغیرہ جوت گن سنبتسر پتر گن سادھو گن ان سب گتیون کو ستوگن کی مدھیم گت جاننا۔

۵۰ - برھما جی و سب سنسار کے پیدا کرنیوالے سب پرجاپت دھرم مہت تتو نا یا ان سب گتون کو ستوگن کی اُتم گت جاننا۔

۵۱ - دل و گفتار و بدن تینون کرم کی سادھن ہیں یعنے انہیں تینون کے وسیلے سے عمل ہو تو انھون کی تفریق سے تین قسم کے کرم ست رج تم نام والے ہوتے پھر نیچ و مدھیم و اُتم کی تفریق سے ایک ایک کی تین تین قسم ہوتین کہ سب ملا کر نو ہوتی ہین تمام عالم پانچ عناصر کی پیدایش ہے اسکو مین نے دکھانیکے واسطے کہا اسلیئے جو نہین کہا وہ گت بھی دوسری ابتک سے دیکھنے کے لائق ہے۔

स्थावराः कृमिकीटाश्च मत्स्याः सर्पाः सकच्छपाः ॥ पशवश्च मृ-
गाश्चैव जघन्या तामसी गतिः ॥ ४२ ॥ हस्तिनश्च तुरंगाश्च शूद्राम्ले-
च्छाश्च गर्हिताः ॥ सिंहा व्याघ्रा वराहाश्च मध्यमा तामसी गतिः ॥ ४३
॥ चारणाश्च सुपर्णाश्च पुरुषाश्चैव दांभिकाः ॥ रक्षांसि च पिशाचा-
श्च तामसीषूत्तमा गतिः ॥ ४४ ॥ झल्ला मल्ला नटाश्चैव पुरुषाः श-
स्त्रवृत्तयः ॥ द्यूतपानप्रसक्ताश्च जघन्या राजसी गतिः ॥ ४५ ॥ रा-
जानः क्षत्रियाश्चैव राज्ञां चैव पुरोहिताः ॥ वादयुद्धप्रधानाश्च म-
ध्यमा राजसी गतिः ॥ ४६ ॥

۴۲- درخت و چھوٹے بڑے کیڑے و مچھلی و سانپ و چارپایہ و کچھوا و ہرن ان سب
کنون کو تموگن کی نیچ گت جاننا-

۴۳- ہاتھی و گھوڑا شودر ملیچھ سنگھ باگھ سور ان سب گنون کو تموگن کی مدھیم گت جاننا

۴۴- نٹ پرند کپٹ سے دھرم کرنیوالے آدمی راکشش پشاچ ان گنون کو تموگن کی اتم
گت جاننا-

۴۵- براہنیہ کشتری کے ہم قوم عورت مین پیدا ہوئی اولاد جسکا بیان منو نے ادھیائے ۱۰ مین ہے
اور جھل یعنے لاٹھی سے پرہار کرنیوالے اور مل یعنے پہلوان لوگ اور نٹ یعنی سبھا کا بنانیوالا
اور اسلحہ سے زندگی بسر کرنیوالا اور قمار بازی کرنیوالا اور شراب پینے والا ان سب گنون کو
رجوگن کی نیچ گت جاننا-

۴۶- راجہ و کشتری و راجہ کا پروہت و بحث علمی کو افضل جاننے والا و تکلیف پسند کرنیوالا
ان سب گنون کو رجوگن کی مدھیم گت جاننا-

येनास्मिन्कर्मणा लोके ख्यातिमिच्छति पुष्कलाम्॥ न च शो
चत्यसम्पत्तौ तद्विज्ञेयं तु राजसं॥३६॥ यत्सर्वेणेच्छति ज्ञातुं यन्न
लज्जति चाचरन्॥ येन तुष्यति चात्मास्य तत्सत्वगुणलक्षणम्
॥३७॥ तमसो लक्षणं कामो रजसस्त्वर्थ उच्यते॥ सत्वस्य लक्ष
णं धर्मः श्रैष्ठ्यमेषां यथोत्तरम्॥३८॥ येन यांस्तु गुणेनैषां संसा
रान्प्रतिपद्यते॥ तान्समासेन वक्ष्यामि सर्वस्यास्य यथाक्रमम्
॥३९॥ देवत्वं सात्त्विका यान्ति मनुष्यत्वं च राजसाः॥ तिर्यक्त्वं
तामसा नित्यमित्येषा त्रिविधा गतिः॥४०॥ त्रिविधा त्रिविधै
षा तु विज्ञेया गौणिकी गतिः॥ अधमा मध्यमाग्र्या च कर्मवि
द्याविशेषतः॥४१॥

۳۶- جس کرم کرکے اس لوک مین بڑی شہرت ہونیکی خواہش کرتا ہے اور بے دولتی مین
رنج نہین کرتا ہے اس کرم کو رجس گن لکشن جانین -

۳۷- جو کرم سرب آتم کے وسیلہ سے دید ارتھ کو جاننے کی خواہش کرتا ہی اور جس کرم
کو کرتے ہوئے شرم نہین ہوتی اور جس کرم کرکے پرش کی آتما خوش اور ترپت ہوتی ہے
اس کرم کو ست گن لکشن جانین -

۳۸- تموگن کا لکشن کام یعنی شہوت ہے رجوگن کا لکشن ارتھ ہی ستوگن کا لکشن دھرم ہے
ان تینون مین پچھلا پچھلا افضل ہے -

۳۹- جس گن کے وسیلہ سے جو جس گت کو پاتا ہے اس تمام جگت کی گت کو مین مختصر بیان کرونگا -

۴۰- ستوگن دیو بھاؤ کو اور رجوگن والے منشیہ بھاؤ کو اور تموگن والے چارپایہ و پرندہ وغیرہ کے بھاؤ
کو پراپت ہوتے ہین یہ تین طرح کی گت ہے -

۴۱- ستوگن وغیرہ تین گن والے کے وسیلہ سے تین قسم کی گت جو بیان کی وہ دیش و کال وغیرہ
کی تفریق سے اور بسبب صورت عالم تفریق عمل سے ادھم مدھم و اتم اقسام کرکے پھر تین تین قسم کی گت جاننا

त्रयाणामपि चैतेषां गुणानां यः फलोदयः ॥ अग्र्यो मध्यो जघन्यश्च तं प्रवक्ष्याम्यशेषतः ॥ ३० ॥ वेदाभ्यासस्तपो ज्ञानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ॥ धर्मक्रियात्मचिन्ता च सात्त्विकं गुणलक्षणम् ॥ ३१ ॥ आरंभरुचिताधैर्य्यमसत्कार्यपरिग्रहः ॥ विषयोपसेवा चाजस्रं राजसं गुणलक्षणम् ॥ ३२ ॥ लोभः स्वप्नोऽधृतिः क्रौर्यं नास्तिक्यं भिन्नवृत्तिता ॥ याचिष्णुता प्रमादश्च तामसं गुणलक्षणम् ॥ ३३ ॥ त्रयाणामपि चैतेषां गुणानां त्रिषु तिष्ठताम् ॥ इदं सामासिकं ज्ञेयं क्रमशो गुणलक्षणम् ॥ ३४ ॥ यत्कर्म कृत्वा कुर्वंश्च करिष्यंश्चैव लज्जति ॥ तज्ज्ञेयं विदुषा सर्वं तामसं गुणलक्षणम् ॥ ३५ ॥

٣٠- ان تینوں گنوں کا جو نتیجہ افضل و اوسط و ادنی ہے اسکو ہم کہینگے۔

٣١- وید کا پڑھنا تپ گیان پاکی اندریوں کو جیتنا دھرم کریا یعنے وید کے موافق عمل آتم چنتا یہ سب ستوگن کے لکشن ہیں۔

٣٢- شروع کام میں رغبت بے صبری بڑے کام کو قبول کرنا ہمیشہ وشیوں کی سیوا یہ سب رجوگن کے لکشن ہیں۔

٣٣- لوبھ خواب بے صبری کٹھورپن ناستک پن آچار پر عمل نکرنا مانگنا پرماد یہ تموگن کے لکشن ہیں۔

٣٤- تینوں زمانہ ماضی و مستقبل و حال میں رہنے والے تینوں گنوں کا خلاصہ سلسلہ وار یہ گن لکشن جاننے کے لائق ہے۔

٣٥- آدمی جو کرم کرکے اور کرتا ہوا اور کرنے کی خواہش کرتا ہوا شرم آگین ہو اس کرم کو پنڈت لوگ تامس گن لکشن جانیں۔

सत्वरजस्तमश्चैव त्रीन्विद्यादात्मनोगुणान्॥ यैर्व्याप्येमान्स्थितोभावान्महान्सर्वानशेषतः॥ २४॥ योयदैषांगुणोदेहेसाकल्येनातिरिच्यते॥ सतदातद्गुणप्रायंतंकरोतिशरीरिणाम्॥ २५॥ सत्वंज्ञानंतमोऽज्ञानंरागद्वेषौरजः स्मृतम्॥ एतद्व्याप्तिमदेतेषांसर्वभूताश्रितंवपुः॥ २६॥ तत्रयत्प्रीतिसंयुक्तंकिंचिदात्मनिलक्षयेत्॥ प्रशांतमिवशुद्धाभंसत्वंतदुपधारयेत्॥ २७॥ यत्तुदुःखसमायुक्तमप्रीतिकरमात्मनः॥ तद्रजोप्रतिपंविद्यात्सततंहारिदेहिनाम्॥ २८॥ यत्तुस्यान्मोहसंयुक्तमव्यक्तंविषयात्मकं॥ अप्रतर्क्यमविज्ञेयंतमस्तदुपधारयेत्॥ २९॥

۲۴- ست رج تم یہ تینون آتما مست تتو کے گن ہین ان گنون سے محیط ہو کر سب چیزون مین وہان قائم ہے-

۲۵- تینون گنون مین سے جو گن جس بدن مین زیادہ ہے اس بدن کو زیادہ تر اسی گن والا وہ گن کرتا ہے-

۲۶- ست گیان ہے، تم اگیان ہے، راگ یعنی مرغوب چیز کی خواہش اور دویش یعنی چیز نامرغوب مین غصہ یہ دونون رج ہین ان تینون گنون سے تمام عالم محیط ہے-

۲۷- جب آتما کو پریت سے مشمول شانت و شدھ روپ دیکھے تب ست گن کو جانے-

۲۸- جب آتما کو دکھ سے مشمول ناخوش دیکھے تب رجو گن جانے وہ رجو گن سب ارباب قالبون کو مشکل سے دور کرنے کے لائق ہے-

۲۹- جب آتما کو موہ سے مشمول بیشے روپ و پوشیدہ دیکھے تب تمو گن جانے وہ تمو گن دلیل کے لائق نہین ہے اور جاننے کے لائق نہین ہے-

सोऽनुभूयासुखोदर्कान्दोषान्विषयसंगजान् ॥ व्यपेतकल्म-
षोऽभ्येतितावेवोभौमहौजसौ ॥ १८ ॥ तौधर्मंपश्यतस्तस्यपा-
पंचातन्द्रितौसह ॥ याभ्यांप्राप्नोतिसंपृक्तः प्रेत्येहचसुखासु-
खम् ॥ १९ ॥ यद्याचरतिधर्मंसप्रायशोऽधर्ममल्पशः ॥ तैरेव
चावृतोभूतैः स्वर्गेसुखमुपाश्नुते ॥ २० ॥ यदितुप्रायशोऽधर्मंसे-
वतेधर्ममल्पशः ॥ तैर्भूतैःसपरित्यक्तोयामीःप्राप्नोतियातनाः
॥ २१ ॥ यामीस्तायातनाःप्राप्यसजीवोवीतकल्मषः ॥ तान्ये-
वपंचभूतानिपुनरभ्येतिभागशः ॥ २२ ॥ एतादृष्ट्वास्यजीवस्य-
गतीःस्वेनैवचेतसा ॥ धर्मतोऽधर्मतश्चैवधर्मेदध्यात्सदामनः
॥ २३ ॥

۱۸- لنگ نام بدن میں قائم جیو بیشے باسنا کی صحبت سے پیدا ہوئے پاپوں کو بھوگ کر اور پاپوں سے علیحدہ ہو کر بڑے پراکرم والے مہان اور پرماتما دونوں کی پناہ لیتا ہے۔

۱۹- سستی سے علیحدہ مہان اور پرماتما یہ دونوں ساتھ ہو کر جس دھرم وا دھرم سے مشمول جیو اس لوک و پرلوک میں سکھ دکھ کو پاتا ہے اس دھرم کو اور بھوگ سے بچے ہوئے پاپوں کو بچانتے ہیں۔

۲۰- جب جیو بہت دھرم کو کرتا ہے اور تھوڑے پاپوں کو کرتا ہے تب پرلوک میں سکھ کو پاتا ہے

۲۱- اور جب بہت پاپ کرتا ہے اور تھوڑا دھرم کرتا ہے تب پرلوک میں دکھ پاتا ہے۔

۲۲- یم راج کی سزا کو بھگت کر پاپ سے علیحدہ ہو کر پھر جیو ان سے لنگ نام بدن پیدا ہوتا ہے اسی میں پھر حصہ وار داخل ہوتا ہے۔

۲۳- اپنے چیت سے اس جیو کی یہ گت دیکھ کر ہر وقت دل کو قائم کرے۔

जीवसंज्ञोऽन्तरात्माऽन्यः सहजः सर्वदेहिनाम् ॥ येनवेदयते सर्वंसुखंदुःखंचजन्मसु ॥ १३ ॥ तावुभौभूतसंपृक्तौ महान्क्षेत्रज्ञ एवच ॥ उच्चावचेषुभूतेषुस्थितंतंव्याप्यतिष्ठतः ॥ १४ ॥ असंख्यामूर्त्तयस्तस्य निष्पतन्ति शरीरतः ॥ उच्चावचानिभूतानिसततंचेष्टयन्तियाः ॥ १५ ॥ पंचभ्यएवमात्राभ्यः प्रेत्यदुष्कृतिनांनृणां ॥ शरीरंयातनार्थीयमन्यदुत्पद्यतेध्रुवम् ॥ १६ ॥ तेनानुभूयतायामीः शरीरेणेहयातनाः ॥ तास्वेवभूतमात्रासुप्रलीयन्ते विभागशः ॥ १७ ॥

۱۳- جو ارباب قالب کے ساتھ پیدا ہوا انتر آتما جیو نام والا جسکو ہمت کہتے ہیں علیحدہ ہے جس سے جنم میں تمام سکھ دکھ کو کشیترگیہ ان بھوگ کرتا ہے یعنے سکھ دکھ کو بھوگ کرتا ہے

۱۴- ہمت تتو و کشیترگیہ یہ دونوں پرتھوی وغیرہ پانچ مہابھوتوں کرکے اونچ نیچ یونوں میں پرماتما کو پکڑ کر رہتے ہیں۔

۱۵- پرماتما کے بدن سے اونچ نیچ یونوں میں قائم بدن کو ہمیشہ کرم متحرک کرنیوالے بے تعداد صورت یعنے جیو نکلتے ہیں۔

۱۶- پرلوک میں پاپیوں کے دکھ بھوگ کرنیکے لیئے پرتھوی وغیرہ پانچ عناصر کے حصوں سے ایک دوسرا بدن لنگ نام جدا ہوتا ہے۔

۱۷- اس بدن سے یم راج کی سخت سزا کو ان بھوگ کرکے یعنے دکھ بھوگ کرکے وہ بدن انہی میں محو ہو جاتا ہے (یعنے پرتھوی وغیرہ پانچ عناصر سے جو حصہ نکلا وہ پانچوں عناصر میں ملجاتا ہے۔

अदत्तानामुपादानंहिंसाचैवाविधानतः॥ परदारोपसेवाचशा-रीरंत्रिविधंस्मृतम्॥७॥ मानसंमनसैवायमुपभुंक्तेशुभाशुभम् ॥ वाचावाचाकृतंकर्म्मकायेनैवचकायिकम्॥ ८॥ शरीरजैःक र्म्मदोषैर्यातिस्थावरतांनरः॥ वाचिकैःपक्षिमृगतांमानसैरन्त्य-जातिताम्॥९॥ वाग्दण्डोऽथमनोदण्डःकायदण्डस्तथैवच ॥ यस्यैतेनिहिताबुद्धौत्रिदण्डीतिसउच्यते॥१०॥ त्रिदण्डमे-तन्निक्षिप्यसर्वभूतेषुमानवः॥ कामक्रोधौतुसंयम्यततःसिद्धिं नियच्छति॥११॥ योस्यात्मनःकारयितातंक्षेत्रज्ञंप्रचक्षते॥ यः करोतितुकर्माणिसभूतात्मोच्यतेबुधैः॥१२॥

۷- بدون دی ہوئی چیز کو لینا بدھ کے خلاف جیوؤں کا مارنا دوسرے کی عورت سے جماع کرنا یہ تین قسم کا کرم بدن کا ہے۔

۸- بدن سے پیدا ہوئے عمل نیک و بد کے نتیجہ کو صاحب بدن آدمی سلسلہ وار دل و گفتار و بدن سے بھوگ کرتا ہے۔

۹- بدن و گفتار و دل سے پیدا ہوئے کرم سے ساکن یعنی درخت وغیرہ و پرند و چارپایہ و چانڈال وغیرہ کا جنم پاتا ہے۔

۱۰- جسکے گفتار و دل و بدن سے سلسلہ وار نامرغوب گفتار و بدخیالی و سخت تجارت کو ترک کرنیوالے ہیں وہی تردنڈی کہلاتا ہے۔

۱۱- تمام جانداروں میں ان تینوں ڈنڈ کو (یعنے دل و بدن و گفتار کے ڈنڈ کو) قائم کرکے کام اور کرودھ کو روک کر سدھ کو پاتا ہے۔

۱۲- بدن کو کرم میں مشغول کرانیوالا کشیترگیہ کہلاتا ہے اور جو کرم کرتا ہے وہ بھوت آتما یعنے بدن کہلاتا ہے یہ بات پنڈت لوگ کہتے ہیں۔

चातुर्वर्ण्यस्य कृत्स्नोऽयमुक्तो धर्मस्त्वयानघ ॥ कर्मणां फलनिर्वृत्तिं शंस नस्तत्त्वतः पराम् ॥ १ ॥ स तानुवाच धर्मात्मा महर्षीन्मानवो भृगुः ॥ अस्य सर्वस्य शृणुत कर्मयोगस्य निर्णयम् ॥ २ ॥ शुभाशुभफलं कर्म मनोवाग्देहसंभवम् ॥ कर्मजा गतयो नृणामुत्तमाधममध्यमाः ॥ तस्येह त्रिविधस्यापि त्र्यधिष्ठानस्य देहिनः ॥ दशलक्षणयुक्तस्य मनो विद्यात्प्रवर्त्तकम् ॥ ४ ॥ परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिंतनम् ॥ वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म मानसम् ॥ ५ ॥ पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः ॥ असंबद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥ ६ ॥

۱۔ سب رشی بھرگ جی سے کہتے ہین کہ اے پاپ رہت بھرگ جی آپ نے بدھ کے موافق چارو ورنون کے دھرم کو کہا اب ہم سبھون سے عمل نیک و بد کے نتیجہ کو بدھ کے موافق کہیے۔

۲۔ دھرماتما منو جی کے بیٹے بھرگ جی اُن مہرشیون سے بولے کہ اے رشی لوگو سب کرم یوگ کے نرنے کو ہم سے سنو۔

۳۔ دل و بدن و گفتار سے جو عمل نیک و بد پیدا ہوتا ہے اُس سے آدمیون کی اتم مدھیم ادھم گت پیدا ہوتی ہے۔

۴۔ آگے جو دس لکشن کہینگے اُس سے مشغول آدمی ارباب قالب کا دل جو بدن و گفتار والا دل سے اتم مدھیم ادھم کرم مین مصروف کرنیوالا ہے اُسکو جانو۔

۵۔ دوسرے کی دولت لینے و دھیان دل سے بدخیالی ناستک پن یہ تین قسم کے مانس کرم ہین یعنے دل سے پیدا ہونیوالے ہین۔

۶۔ نامرغوب گفتار دروغ گوئی دوسرے کا عیب کہنا بے مطلب بولنا یہ چار قسم کا واچک کرم ہے یعنے گفتار سے پیدا ہوتا ہے۔

यथामहाह्रदंप्राप्यक्षिप्तंलोष्टंविनश्यति॥ तथादुश्चरितंसर्वंवे-
देत्रिवृतिमज्जति॥ २६३॥ ऋचोयजूंषिचान्यानिसामानिवि-
विधानिच॥ एषज्ञेयस्त्रिवृद्वेदोयोवेदैनंसवेदवित्॥ २६४॥ आ-
द्यंयत्त्र्यक्षरंब्रह्मत्रयीयस्मिन्प्रतिष्ठिता॥ सगुह्योऽन्यस्त्रिवृद्वे-
दोयस्तंवेदसवेदवित्॥ २६५॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहिताया मेकादशोऽध्यायः ११

۲۶۳ - جسطرح اتھاہ جل مین مٹی کا ڈھیلا ڈالو تو جلد غائب ہو جاتا ہی اسطرح سب پاپ تینون ویدکے پڑھنے سے ڈوب جاتے ہین -

۲۶۴ - رگ یجر سام ان تینون ویدون کے منتر مع برھمن بھی تین قسم کا وید جاننا چاہیے جو اسکو جانتا ہی وہی وید کا جاننے والا ہے -

۲۶۵ - سب ویدون کے آد تین اکشر والا سب وید کا سار اور سب ویدون کو اپنے درمیان مین قائم کرنیوالا جو پرنو ہے اسکو جانے وہ وید کا جاننے والا ہے -

شری منُ جی کا دھرم شاستر بھرگ جی کی سنگھتا کا گیارھوان ادھیایے سماپت ہوا -

ق

अरण्येवात्रिरभ्यस्यप्रयतोवेदसंहिताम्॥मुच्यतेपातकैःस-
र्वैःपराकैःशोधितस्त्रिभिः॥२५८॥त्र्यहन्तूपवसेद्युक्तस्त्रिर-
ह्नोऽभ्युपयन्नपः॥मुच्यतेपातकैःसर्वैस्त्रिर्जपित्वाऽघमर्षणं
॥२५९॥यथाश्वमेधःक्रतुराट्सर्वपापापनोदनः॥तथाऽघम-
र्षणंसूक्तंसर्वपापापनोदनम्॥२६०॥हत्वालोकानपीमांस्त्री
नश्नन्नपियतस्ततः॥ऋग्वेदंधारयन्विप्रोनैनःप्राप्नोतिकिंच
न॥२६१॥ऋक्संहितांत्रिरभ्यस्ययजुषांवासमाहितः॥साम्नां
वासरहस्यानांसर्वपापैःप्रमुच्यते॥२६२॥

۲۵۸- جنگل مین بیفکر ہوکر وید سنگھتا کو تین دفعہ ابھیاس کرے اور تین دفعہ پراکبرت کرے تو سب پاپ سے چھوٹتا ہے -

۲۵۹- اندریون پر غالب ہوکر ہر روز وقت صبح دوپہر و شام اسنان کرکے جل مین تین دفعہ تنبیج سینیم اس اگھمرکھن سوکت کو جپ کرے تو سب پاپون سے چھوٹتا ہے -

۲۶۰- جسطرح سب یگیون کا راجا اسومیدھ یگیہ سب پاپون کو دور کرتا ہے اسیطرح اگھمرکھن سوکت سب پاپون کو دور کرتا ہے -

۲۶۱- تینون لوک کو ہن کرکے اور جہان تہان بھوجن کرکے رگ وید کو دھارن کرے تو کسی پاپ کو نہین پاتا ہے -

۲۶۲- بیفکر ہوکر رگ وید یجر وید سام وید کی سنگھتا مین سے ایک ایک سنگھتا کو تین دفعہ مزاولت کرنے سب پاپون سے چھوٹتا ہے -

सोमारौद्रंतुबह्वेनामासमभ्यस्यशुद्ध्यति॥स्रवन्त्यामाचरन्स्नान
मर्यम्णामितिचत्र्यृचम्॥२५४॥अब्दार्धमिन्द्रमित्येतदेनस्वी-
सप्तकंजपेत्॥ अप्रशस्तंतुकृत्वाप्सुमासमासीतभैक्षभुक्॥
२५५॥मंत्रैःशाकलहोमीयैरब्दंहुत्वाघृतंद्विजः॥सुगुर्वप्यपह-
न्त्येनोजप्त्वावानमइत्यृचम्॥२५६॥महापातकसंयुक्तोऽनुग
च्छेद्गाःसमाहितः॥ अभ्यस्याब्दंपावमानीर्भैक्षाहारोविशुध्य-
ति॥२५७॥

۲۵۴- سوم رودرا وغیرہ چار رچا اَرجمنم وغیرہ تین رچاؤن مین سے ایک ایک کو ایک دفعہ
ایک مہینہ تک ندی وغیرہ مین اسنان کرکے جپ کرے تو بہت پاپون سے چھوٹتا ہے۔
۲۵۵- اندر مندر وغیرہ سات رچا کو چھ مہینہ تک جپ کرے تو سب پاپونسے چھوٹتا ہے۔
جل مین موتر اور تشٹا وغیرہ کرنیوالا ایک مہینہ تک بھیکھ مانگ کر بھوجن کرے۔
۲۵۶- دیو کرتشیہ وغیرہ ساکل ہون منتر سے ایک سال تک گھی کا ہون کرے خواہ نمہ اندر سیح
اس رچا کو ایک سال تک جپ کرے تو براہمن کشتری ویشیہ کے مہاپاتک دور ہون۔
۲۵۷- برہم ہتیا وغیرہ پاپ مین سے کسی ایک پاپ سے مشمول ہوتا ہو بفکر ہو کر گئو کے پیچھے
پیچھے چلے اور بھیکھ مانگ کر بھوجن کرے اور اندریون پر غالب ہو کر ایک سال تک ہر روز
پاوما نی رچا کو جپ کرے تو پاک ہوتا ہے۔

कौत्संजप्त्वापइत्येतद्वासिष्ठंचप्रतीत्यृचम् ।। माहित्रंशुद्धवत्य-
श्चसुरापोऽपिविशुध्यति ।। २४९ ।। सकृज्जप्त्वास्यवामीयंशि-
वसंकल्पमेवच ।। अपहृत्यसुवर्णन्तुक्षणाद्भवतिनिर्मलः ।।
२५० ।। हविष्पान्तीयमभ्यस्यनतमंहइतीतिच ।। जपित्वापौ-
रुषंसूक्तंमुच्यतेगुरुतल्पगः ।। २५१ ।। एनसांस्थूलसूक्ष्माणां
चिकीर्षन्नपनोदनम् ।। अवेत्यृचंजपेदब्दंयत्किंचेदमितीति
वा ।। २५२ ।। प्रतिगृह्याप्रतिग्राह्यंभुक्त्वाचान्नंविगर्हितम् ।।
जपंस्तरत्समन्दीयंपूयतेमानवस्त्र्यहात् ।। २५३ ।।

۲۴۹ - کوتس رشی نے جو سوکت دیکھا اپنہ نام اور بششٹ رشی نے جو سوکت دیکھا پرتیشٹ نام
دیا ہے سوکت و مہندر سدھ وتی اپنا مندرم ہیں رچا انکو ہر روز ایک مہینہ تک
سولہ دفعہ جپ کرے تو شراب پینے والا پاک ہوتا ہے۔
۲۵۰ - ایک مہینہ تک ہر روز ایک دفعہ اسیوامی کو اور شیوسنکلپ کو جو کہ اپنشد نام سے
مشہور ہے جپ کرے تو برہمن کا سونا چرانیوالا پاک ہوتا ہے۔
۲۵۱ - ہبشتیم وغیرہ انیس رچا اور نت منگ ہو ونگ آٹھ رچا اور سہسر شیرکھا جو پرش سوکت
نام اپنشد سے مشہور ہے انکو سولہ دفعہ ہر روز ایک مہینہ تک جپ کرے تو والدہ کے
ساتھ جماع کرنیکے پاپ سے چھوٹتا ہے۔
۲۵۲ - اوت سیلو ہرن یہ رچا یتکنچدم تیرن دیو وچل یہ رچا انکو یکسال تک ایک دفعہ
جپ کرے تو چھوٹے بڑے پاپوں کو دور کرتا ہے۔
۲۵۳ - نہ لینے کے لائق چیز کو لیکر اور نندا کے لائق ان کو بھوجن کرکے ترت سمم وغیرہ
چار رچا کو تین دن جپ کرے۔

इत्येतत्तपसोदेवामहाभाग्यंप्रचक्षते॥सर्वस्यास्यप्रपश्यन्त-स्तपसःपुरायमुत्तमम्॥२४४॥वेदाभ्यासोऽन्वहंशक्त्यामहायज्ञक्रियाक्षमा॥नाशयन्त्याशुपापानिमहापातकजान्यपि॥२४५॥यथैधस्तेजसावह्निःप्राप्तंनिर्दहतिक्षणात्॥तथा-ज्ञानाग्निनापापंसर्वंदहतिवेदवित्॥२४६॥इत्येतदेनसामुक्तंप्रायश्चित्तंयथाविधि॥अतऊर्ध्वंरहस्यानांप्रायश्चित्तंनिबोधत॥२४७॥सव्याहृतिप्रणवकाःप्राणायामास्तुषोडश॥अपिभ्रूणहनंमासात्पुनन्त्यहरहःकृताः॥२४८॥

۲۴۴ - تمام جانداروں کو تپ ہی سے دُرلبھ جنم ہوتا ہے اس بات کو دیکھتے ہوئے دیوتا لوگ تپ کو سب کی جڑ جان کر تپ کا مہاتم کہتے ہیں۔

۲۴۵ - مہایگیا اور طاقت کے بموجب ہر روز وید کا پاٹھ کرنے والے جلدی مہاپاپ کو بھی فنا کرتے ہیں

۲۴۶ - جسطرح تیز آگ کاٹھ کو جھٹ پٹ جلاتی ہے اسیطرح وید کو جاننے والا گیان روپی اگنی سے تمام پاپوں کو جلاتا ہے۔

۲۴۷ - ظاہری پاپوں سے یہ پرائشچت کو کہا اسکے بعد پوشیدہ پاپوں کا پرائشچت کہتے ہیں۔

۲۴۸ - پرنو و ساتوں بیاہرت سے سنیوکت گایتری کے وسیلے سے ہر روز سولہ پرانایام ایک مہینہ تک کرے تو اسقاط حمل کے پاپوں کو دور کرتا ہے۔ ٭

٭ یہ پرائشچت براہمن کشتری و ویشیہ کا ہے استری و شودر کو منتر کا ادھکار نہیں ہے۔

यद्दुस्तरं यद्दुरापं यद्दुर्गं यच्च दुष्करम्॥ सर्वं तु तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्रमम्॥ २३८ ॥ महापातकिनश्चैव शेषाश्चाकार्यकारिणः॥ तपसैव सुतप्तेन मुच्यन्ते किल्बिषात्ततः॥ २३९॥ कीटाश्चाहिपतंगाश्च पशवश्च वयांसि च॥ स्थावराणि च भूतानि दिवं यान्ति तपोबलात्॥ २४०॥ यत्किंचिदेनः कुर्वन्ति मनोवाङ्मूर्त्तिभिर्जनाः॥ तत्सर्वं निर्दहन्त्याशु तपसैव तपोधनाः॥ २४१॥ तपसैव विशुद्धस्य ब्राह्मणस्य दिवौकसः॥ इज्याश्च प्रतिगृह्णन्ति कामान्संवर्धयन्ति च॥ २४२॥ प्रजापतिरिदं शास्त्रं तपसैवासृजत्प्रभुः॥ तथैव वेदानृषयस्तपसा प्रतिपेदिरे॥ २४३॥

۲۳۸ - جو چیز دکھ سے ترنے کے لائق اور ملنے کے لائق اور جانے کے لائق ہو وہ تپ ہی سے ہو سکتی ہے جو کٹھن ہو تو اسکے ہونے میں تپ ہی حرف ہے تپ کا اُلنگھن کٹھن ہے —

۲۳۹ - مہاپاپی وغیرہ سے لیکر جتنے پاپ کرنیوالے ہیں وہ ستپ سے پاک ہوتے ہیں

۲۴۰ - بڑے بڑے سانپ و پلنگ و چارپایہ و پرند و ساکن جاندار یہ سب تپ کے زور سے سورگ میں جاتے ہیں —

۲۴۱ - دل و گفتار و بدن سے جو کچھ پاپ ہوتا ہے وہ سب تپ ہی سے خالی ہوتا ہے —

۲۴۲ - یگیہ میں تپ سے پاک برہمن کی دی ہوئی بہشت کو دیوتا لیتے ہیں اور اُنکے دلخواہ چیزوں کو ترقی دیتے ہیں —

۲۴۳ - پرجاپت پرمیشر نے اس شاستر کو تپ ہی سے پیدا کیا اور اسکو رشی لوگوں نے تپ ہی سے پایا —

—

अज्ञानाद्यदि वा ज्ञानात्कृत्वा कर्म विगर्हितम् ॥ तस्माद्विमुक्ति मन्विच्छन्द्वितीयं न समाचरेत् ॥ २३२ ॥ यस्मिन्कर्मण्यस्य कृते मनसः स्यादलाघवम् ॥ तस्मिंस्तावत्तपः कुर्य्याद्यावत्तुष्टिकरम्भवेत् ॥ २३३ ॥ तपोमूलमिदं सर्व्वं दैवमानुषिकं सुखम् ॥ तपोमध्यं बुधैः प्रोक्तं तपोऽन्तं वेददर्शिभिः ॥ २३४ ॥ ब्राह्मणस्य तपो ज्ञानं तपः क्षत्रस्य रक्षणम् ॥ वैश्यस्य तु तपो वार्त्ता तपः शूद्रस्य सेवनम् ॥ २३५ ॥ ऋषयः संयतात्मानः फलमूलानिलाशनाः ॥ तपसैव प्रपश्यन्ति त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ २३६ ॥ औषधान्यगदो विद्या दैवी च विविधा स्थितिः ॥ तपसैव प्रसिध्यन्ति तपस्तेषां हि साधनम् ॥ २३७ ॥

۲۳۲- دانستہ یا نادانستہ برا کام کرکے اس کرم سے چھوٹنے کی خواہش کرتا ہوا دوسری دفعہ برا کرم نکرے اور اگر دوسری دفعہ برا کرم کرے تو دوچند پرائشچت کرے۔

۲۳۳- جس پرائشچت کے کرنے سے پاپ کرنیوالے کے دلکو سنتوش ہو تو اس پرائشچت کو پھر کرے جبتک چت کو سنتوش ہونے تک پرائشچت کرتا رہے۔

۲۳۴- دیوتا و آدمی ان دونوں کے سکھ کا مول مدھیہ اور انت میں تپ ہی ہے ایسا بات کو وید کے دیکھنے والوں نے کہا ہے۔

۲۳۵- براہمن کا تپ برہم گیان ہے کشتری کا تپ حفاظت عالم ہے ویشیہ کا تپ زراعت وغیرہ ہے شودر کا سیوا ہے۔

۲۳۶- رشی لوگ اندریوں پر غالب ہو کر پھل و مول و ہوا انھوں میں سے کسی ایک کو بھوجن کرتے ہوئے ساکن و متحرک تینوں لوک کو تپ ہی سے دیکھتے ہیں۔

۲۳۷- اودیات و تندرستی ودیا یعنے براہمن کرم روپ ویدارتھ گیان وید کا پڑھنا اور انواع اقسام کا سورگ میں باس یہ سب تپ ہی سے سدھ ہوتے ہیں۔

स्थापनेनानुतापेनतपसाऽध्ययनेनच। पापकृन्मुच्यतेपापात्त-थादानेनचापदि॥ २२७॥ यथायथानरोधर्मंस्वयंकृत्वानुभाष-ते॥ तथातथात्वचेवाहिस्तेनाधर्मेणमुच्यते॥ २२८ ॥ यथाय-थामनस्तस्यदुष्कृतंकर्मगर्हति॥ तथातथाशरीरंतत्तेनाधर्मेणा मुच्यते॥ २२९॥ कृत्वापापंहिसन्तप्यतस्मात्पापात्प्रमुच्यते॥ नैवकुर्यांपुनरितिनिवृत्यापूयतेतुसः॥ २३०॥ एवंसंचिंत्यमन साप्रेत्यकर्मफलोदयम्॥ मनोवाङ्मूर्त्तिभिर्नित्यंशुभंकर्मस माचरेत्॥ २३१॥

۲۲۷- کہنا پچھتانا تپ کرنا وید پڑھنا انھوں کے وسیلہ سے پاپ کرنیوالا پاپ سے چھوٹتا ہے اور وقت مصیبت میں دان کرکے پاپ سے چھوٹتا ہے۔

۲۲۸- جیسے کیچل سے سانپ چھوٹتا ہے اسیطرح ظاہر پاپوں کو جیسے جیسے کہتا ہے اسیطرح آدمی پاپ سے چھوٹتا ہے۔

۲۲۹- پاپ کرنیوالے آدمی کا دل جیسے جیسے برے کام کی برائی کرتا ہے ویسے ویسے اسکا بدن اس ادھرم سے چھوٹتا ہے۔

۲۳۰- پاپ کرکے سنتاپ کرے تو اس پاپ سے چھوٹتا ہے میں پھر ایسا نکرونگا ایسی شرط کرکے وہ پاپی پاک ہوتا ہے۔

۲۳۱- اسیطرح دل سے پرلوک میں طلوع نتیجہ اعمال کو سوچکر دل و گفتار و بدن سے ہمیشہ نیک عمل کرے۔

ف لیکن جو پاپ ظاہر ہوا ہے اسکو کہنا پوشیدہ پاپوں کو نہ کہنا ایک پراجاپتیہ کی جگہ پر ایک گئو دان کرنا ایک مہینہ میں دو گئو ہوئی بارہ سال میں ۳۶۰ گئو ہوتی ہیں۔

त्रिरह्नस्त्रिर्निशायांचसवासाजलमाविशेत्॥स्त्रीशूद्रपतितांश्चै-
वनाभिभाषेतकर्हिचित्॥२२३॥स्थानासनाभ्यांविहरेदशक्तो
ऽधःशयीतवा॥ब्रह्मचारीव्रतीचस्याद्गुरुदेवद्विजार्चकः॥२२४
॥सावित्रींचजपेन्नित्यंपवित्राणिचशक्तितः॥सर्व्वेष्वेवव्रते
ष्वेवंप्रायश्चित्तार्थमादृतः॥२२५॥एतैर्द्विजातयःशोध्याव्र-
तैराविष्कृतैनसः॥अनाविष्कृतपापांस्तुमन्त्रैर्होमैश्चशोध-
येत्॥२२६॥

۲۲۳ - رات میں اور دن میں مع کپڑوں کے اسنان کرے یہ اسنان پہلے دو چاندراین کو چھوڑ کر تیسرے چاندراین میں جاننا کیونکہ ان دونوں میں ترکال اسنان لکھا ہے اور برت کرنیوالا عورت اور شودر سے ہمکلام نہووے۔

۲۲۴ - رات میں اور دن میں کھڑا رہے یا بیٹھا رہے خواب نکرے طاقت نہو تو زمین میں خواب کرے برہمچاری رہے یعنے عورت سے جماع نکرے مونج کی میکھلا اور پلاس کا ڈنڈ دھارن کرے گرو و دیوتا و برہمن کی پوجا کرے۔

۲۲۵ - گایتری و پاک منتر ان دونوں کا جپ طاقت کے موافق کرے یہ بات سب برتوں میں جاننا چاہیئے۔

۲۲۶ - براہمن کشتری ویشیہ ان برتوں سے اپنے کیئے ہوئے پاپوں کو دور کریں اور جو پاپ پوشیدہ ہیں انکو منتر و ہوم کرکے دور کریں۔ ٭

٭ اس مقام پر یہ شک ہوتا ہی کہ جب دھرم شاستریوں سے اپنے پاپ کو بیان کرینگے تب وے منتر و ہوم کا اپدیش کرینگے تب پاپ ظاہر ہی ہوگا پھر پاپ پوشیدہ کسطرح ہوگا اسکا جواب یہ ہی کہ دوسرے کے بہانہ سے پوچھے تو اتنا پاپ پوشیدہ ہی رہیگا

एतमेव विधिं कृत्स्नमाचरेद्यवमध्यमे ॥ शुक्लपक्षादिनियतश्च-
रंश्चान्द्रायणं व्रतम् ॥ २१७ ॥ अष्टावष्टौ समश्नीयात्पिण्डान्म-
ध्यन्दिने स्थिते ॥ नियतात्मा हविष्याशी यतिचान्द्रायणं चरन् ॥
२१८ ॥ चतुरः प्रातरश्नीयात्पिण्डान्विप्रः समाहितः ॥ चतुरोऽ
स्तमिते सूर्ये शिशुचान्द्रायणं स्मृतम् ॥ २१९ ॥ यथाकथंचित्पि-
ण्डानां तिस्रोऽशीतिः समाहितः ॥ मासेनाश्नन्हविष्यस्य चन्द्र-
स्यैति सलोकताम् ॥ २२० ॥ एतद्रुद्रास्तथादित्या वसवश्चाचरन्व्रत-
म् ॥ सर्वाकुशलमोक्षाय मरुतश्च महर्षिभिः ॥ २२१ ॥ महाव्या-
हृतिभिर्होमः कर्तव्यः स्वयमन्वहम् ॥ अहिंसासत्यमक्रोधमा-
र्जवं च समाचरेत् ॥ २२२ ॥

۲۱۷- اسی کو شکل پکش مین شروع کرے تو جو مدھیہ چاندراین کہلاتا ہے جو درمیان مین موٹا ہوتا ہے اور شروع و اخیر مین پتلا ہوتا ہے۔

۲۱۸- [illegible] چاندراین کو کرتا ہوا اندریون کو قابو مین کئے ہوئے ہبشنہ کے آٹھ لقمہ وقت دوپہر ایک مہینہ تک بھوجن کرے جس پکش سے چاہے اس پکش سے شروع کرے۔

۲۱۹- سشُ چاندراین کرتا ہوا بیفکر ہو کر چار لقمہ صبح اور چار لقمہ رات کو بھوجن کرے۔

۲۲۰- کسی طرح سے بیفکر ہو کر ایک مہینہ مین ہبشنہ کے ۲۴۰ لقمہ بھوجن کرے تو چندر لوک مین جاوے۔

۲۲۱- سب پاپون کے دور ہونے کیواسطے رودر سورج بسو ہوا اور بڑے بڑے رشیون نے اس برت کو کیا ہے۔

۲۲۲- آپ ہر روز مہا بیاہرت سے ہون کرے جانداروں کو قتل نکرنا سچ بولنا غصہ نکرنا نرم مزاج ہونا ان سب کو اختیار کرے۔

एकैकं ग्रासमश्नीयात्त्र्यहाणि त्रीणि पूर्ववत् ॥ त्र्यहं चोपव-
सेदन्त्यमतिकृच्छ्रं चरन्द्विजः ॥ २१३ ॥ तप्तकृच्छ्रं चरन्विप्रो जल
क्षीरघृतानिलान् ॥ प्रतित्र्यहं पिबेदुष्णान्सकृत्स्नायी समाहि-
तः ॥ २१४ ॥ यतात्मनोऽप्रमत्तस्य द्वादशाहमभोजनम् ॥ परा-
कोनाम कृच्छ्रोऽयं सर्वपापापनोदनः ॥ एकैकं ह्रासयेत्पिण्डं
कृष्णे शुक्ले च वर्द्धयेत् ॥ उपस्पृशंस्त्रिषवणमेतच्चान्द्रायणं
स्मृतम् ॥ २१६ ॥

۲۱۳ - ات کرچھ برت کرتا ہوا ایک دن وقت صبح ایک لقمہ اور ایک دن وقت شام ایک
لقمہ اور ایک دن بدون مانگنے کے ملنے مین ایک لقمہ بھوجن کرے اور تین دن اپاس کرے -

۲۱۴ - پرت کرچھ برت کرتا ہوا بیفکر ہوکر اسنان کرکے گرم جل دودھ و گھی و ہوا ان چار دین
سے ایک ایک کو ایک دفعہ تین تین دن پیوے (اب لغذا و مقدار کو بیان کرتے ہین
کہ ۶ گنڈہ بھر جل ۳ گنڈہ بھر دودھ ایک گنڈہ بھر گھی -)

۲۱۵ - چت کو سادھان کرکے اندریون کو اپنے قابو مین کرکے ۱۲ دن تک اپاس کرے -
یہ برت سب پاپ کو دور کرنیوالا ہے -

۲۱۶ - تینون وقت یعنی صبح و دوپہر شام اسنان کرتا ہوا ایک لقمہ کو کرشن پکش مین گھٹاوے
اور شکل پکش مین بڑھاوے یعنے شکل پکش کی پورنماشی کو پندرہ لقمہ بھوجن کرے اور کرشن
پکش کی پریوا کو چودہ لقمہ بھوجن کرے اسیطرح ایک ایک لقمہ کو کم کرتے ہوئے اماوستیا کو
اپاس ہوگا پھر شکل پکش کی پریوا سے ایک ایک لقمہ بڑھاتے ہوئے پورنماشی کو پندرہ لقمہ
ہونگے یہ پیلیکا مدہ چاندراین کہلاتا ہے -

--

अनुक्तनिष्कृतीनान्तु पापानामपनुत्तये ॥ शक्तिं चावेक्ष्य पापं च प्रायश्चित्तं प्रकल्पयेत् ॥ २०९ ॥ यैरभ्युपायैरेनांसि मानवो व्यपकर्षति ॥ तान्वोऽभ्युपायान्वक्ष्यामि देवर्षिपितृसेवितान् ॥ २१० ॥ त्र्यहं प्रातस्त्र्यहं सायं त्र्यहमद्यादयाचितम् ॥ त्र्यहं परं च नाश्नीयात्प्राजापत्यं चरन्द्विजः ॥ २११ ॥ गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ॥ एकरात्रोपवासश्च कृच्छ्रं सान्तपनं स्मृतम् ॥ २१२ ॥

۲۰۹- جس پاپ کا پرائشچت نہیں کہا ہے اُس پاپ کو دور کرنے کے واسطے اُسکی طاقت اور پاپ دونوں کو دیکھکر پرائشچت کو کلپنا کرے۔

۲۱۰- آدمی جن تدبیروں سے پاپوں کو دور کرتے ہیں اور اُن تدبیروں کو دیورش پتروں نے کیا ہے اُن تدبیروں کو ہم کہیں گے

۲۱۱- پراجاپتیہ برت کرتا ہوا تین دن وقت صبح تین دن وقت شام کے بھوجن کرکے تین دن بدون مانگنے کے جو ملے اُسکو بھوجن کرے اخیر پر تین ۳ دن اپاس کرے (ایک لقمے کی تعداد و مقدار کو کہتے ہیں کہ وقت صبح ۲۶ لقمہ وقت شام ۳۲ لقمہ اور بیدون مانگنے میں ۲۴ لقمہ بمقدار بیضہ مرغ یا جتنا منہ میں جا سکے ہمیشہ کے اُن کو بھوجن کرنا اور چیز کو نہ بھوجن کرنا)۔

۲۱۲- گئو کا موتر گوبر دودھ دہی گھی جل مع کشا ان سب کو ملا کر ایک دن پیوے اور دوسرے دن اپاس کرے یہ سانتپن کرچھ کہاتا ہے اور جب اوپر کہی ہوئی چیزوں کو ایک ایک دن میں ایک ایک چیز کو بھوجن کرے اور ساتویں دن اپاس کرے یہ مہاسانتپن کرچھ کہاتا ہے

* اسکو پنچ گیبہ کہتے ہیں۔

वेदोदितानां नित्यानां कर्मणां समतिक्रमे ॥ स्नातकव्रतलोपे च प्रायश्चित्तमभोजनम् ॥ २०३ ॥ हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा त्वंकारं च गरीयसः ॥ स्नात्वाऽनश्नन्नहः शेषमभिवाद्य प्रसादयेत् २०४ ताडयित्वा तृणेनापि कण्ठं वाबध्य वाससा ॥ विवादे वा विनिर्जित्य प्रणिपत्य प्रसादयेत् ॥ २०५ ॥ अवगूर्य त्वब्दशतं सहस्रमभिहत्य च ॥ जिघांसया ब्राह्मणस्य नरकं प्रतिपद्यते ॥ २०६ ॥ शोणितं यावतः पांसून्संगृह्णाति महीतले ॥ तावन्त्यब्दसहस्राणि तत्कर्ता नरके वसेत् ॥ २०७ ॥ अवगूर्य चरेत्कृच्छ्रमतिकृच्छ्रं निपातने ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रौ कुर्वीत विप्रस्योत्पाद्य शोणितम् ॥ २०८ ॥

٢٠٣- ویدمیں کہے ہوئے عمل روزمرہ کو نکرنے میں اور برہمچریہ برت کے چھوٹ جانے میں ایک دن اُپاس کرنا چاہیے۔

٢٠٤- براہمن کو ہوں ایسا کہکر اور بڑے لوگونکو تم ایسا کہکر اسنان کرکے اور انھون کو خوش کرکے اور پرانایام کرکے ایک دن اُپاس کرے۔

٢٠٥- براہمن کو ترن سے بھی تاڑنا کرکے اور بحث میں جیت کرکے کپڑے سے گلے کو باندھکر پرنام کرکے خوش کرے۔

٢٠٦- براہمن کے مارنے کو ہتھیار اوٹھاوے اور مارے نہیں توبھی سو برس تک نرک میں رہتا ہے

٢٠٧- مارنے سے براہمن کے جسم کا خون گرکر زمین کے جتنے ذرہ کو پکڑتا ہی اتنے ہزار برس تک مارنیوالا نرک میں رہتا ہے۔

٢٠٨- براہمن کے مارنے کے واسطے ہتھیار اوٹھاکر کرچھ برت کو کرے اور مارنے میں اتی کرچھ برت کو کرے اور خون نکالنے میں کرچھ اور اتی کرچھ دونوں برتوں کو کرے۔

शरणागतंपरित्यज्यवेदंविप्लाव्यचद्विजः॥ संवत्सरंयवाहारस्तत्पापमपसेधति॥१९८॥श्वसृगालखरैर्दष्टोग्राम्यैःक्रव्याद्भिरेवच॥ नराश्वोष्ट्रवराहैश्चप्राणायामेनशुध्यति॥११९॥षष्ठान्नकालतामासंसंहिताजपएववा॥ होमाश्चसकलानित्यमपांक्त्यानांविशोधनम्॥२००॥उष्ट्रयानंसमारुह्यखरयानंतुकामतः॥ स्नात्वातुविप्रोदिग्वासाःप्राणायामेनशुध्यति॥२०१॥विनाद्भिरप्सुवाप्यार्तःशारीरंसन्निवेश्यच॥ सचैलोबहिराप्लुत्यगामालभ्यविशुध्यति॥२०२॥

۱۹۸ - اپنی پناہ مین آئے ہوئے کو ترک کرکے جو وید پڑھانے کے لائق نہین ہے اسکو وید پڑھاکر ایک سال تک جو کا بھوجن کرکے رہے ۔

۱۹۹ - کتہ سیار آدمی گدھا گھوڑا سور گانون کا رہنے والا بلار وغیرہ انھون مین سے کسی ایک کا کاٹا ہوا آدمی پرانایام سے پاک ہوتا ہے ۔

۲۰۰ - کچے گوشت کا کھانیوالا پنکت مین رہنے کے لائق جو برہمن نہین ہے وہ دونون ایک ایک دو دن اپاس کرکے تیسرے دن وقت شام بھوجن کرین اور سنگھتا کا جپ کرین اور ویو کرت وغیرہ آٹھ منتر کرکے ہمیشہ آٹھ ہون کرین تب پاک ہوتے ہین ۔

۲۰۱ - جو گاڑی اونٹ یا گدھا سے مشمول ہے اسپر خواہش سے چڑھکر اور ننگا ہوکر اشنان کرکے پرانایام کرے ۔

۲۰۲ - دکھی آدمی بدون پانی کے ٹٹا وموتر کرے یا پانی ہی مین ٹٹا وموتر کرے تو گانو سے باہر جاکر ندی وغیرہ مین مع کپڑون کے غسل کرکے گئو کو چھوکر پاک ہوتا ہے ۔

यद्गर्हितेनार्जयन्तिकर्मणाब्राह्मणाधनम्॥ तस्योत्सर्गेणशुध्य-
न्तिजप्येनतपसैवच॥ १९३॥ जपित्वात्रीणिसावित्र्याःसहस्रा-
णिसमाहितः॥ मासंगोष्ठेपयःपीत्वामुच्यतेऽसत्प्रतिग्रहात्॥
१९४॥ उपवासकृशंतंतुगोव्रजात्पुनरागतम्॥ प्रणतंप्रतिपृच्छेयुः
साम्यंसौम्येच्छसीतिकिम्॥ १९५॥ सत्यमुक्त्वातुविप्रेषुविकिरे-
द्यवसंगवाम्॥ गोभिःप्रवर्त्तितेतीर्थेकुर्युस्तस्यपरिग्रहम्॥ १९६
॥ व्रात्यानांयाजनंकृत्वापरेषामन्त्यकर्मच॥ अभिचारमहीनंच
त्रिभिःकृच्छ्रैर्व्यपोहति॥ १९७॥

۱۹۳- برہمن قابل نفرین کام کو کرکے جو دولت کو فراہم کرتے ہین اس دولت کو ترک اور جپ تپ کرکے پاک ہوتے ہین۔

۱۹۴- برہمن بے فکر ہو کر ایک مہینہ تک ہمیشہ تین ہزار گائتری کا جپ کرتا ہوا گئو کے مقام مین مقیم ہو کر صرف دودھ پیتا ہوا برے دان لینے کے پاپ سے چھوٹتا ہے۔

۱۹۵- برت کرکے گئو کے مقام سے آئے ہوئے کمزور حلیم برہمن کو بھلے لوگ پوچھین کہ اے برہمن کیا ہم سب کے برابر ہونیکی خواہش کرتے ہو۔

۱۹۶- تب وہ برہمن کہے کہ آیندہ نہ لینے کے لائق دان کو نہ لینگے سچ کہتے ہین ایسا کہکر گئو کے بھوجن کیواسطے گھاس ڈالے اُسکی دی ہوئی گھاس کو گئو بھوجن کرے تب بھلے لوگ اُسکو قبول کرین۔

۱۹۷- براتیہ لوگون کو یگیہ کرا کے تپا و گرو وغیرہ کے سوا ممنوع داہ وغیرہ مرن شرادھ کرکے اور مارن پریوگ کرکے اہین نام والی یگیہ کرکے تین کرچھ برت کرے۔

सत्वप्सुतं घटं प्रास्य प्रविश्य भवनं स्वकम्॥ सर्व्वाणि ज्ञातिकार्या-
णि यथापूर्व्वं समाचरेत्॥१८७॥ एतदेव विधिं कुर्याद्योषित्सु पति-
तास्वपि॥ वस्त्रान्नपानं देयन्तु वसेयुश्च गृहान्तिके॥१८८॥ एन-
स्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थं किंचित्सहाचरेत्॥ कृतनिर्णेजनांश्चैव
नजुगुप्सेत कर्हिचित्॥ १८९॥ बालघ्नांश्च कृतघ्नांश्च विशुद्धान-
पि धर्मतः॥ शरणागतहन्तॄंश्च स्त्रीहन्तॄंश्च न संवसेत्॥१९०॥ येषां
द्विजानां सावित्री नानूच्येत यथाविधि॥ तांश्चारयित्वा त्रीन्कृच्छ्रा-
न्यथाविध्युपनाययेत्॥ १९१॥ प्रायश्चित्तं चिकीर्षन्ति विकर्म्म-
स्थास्तु ये द्विजाः॥ ब्रह्मणा च परित्यक्तास्तेषामप्येतदादिशेत्॥
१९२॥

۱۸۷- ادھر گرم پانی مین گھڑے کو ڈالکر اپنے گھر مین داخل ہوکر ذات کے سب کامون کو پہلے کے مانند کرے-

۱۸۸- پتت استری مین بھی یہی برتھے اور پتت استری کو گھر کے سامنے جا قیام اور کھانا پانی اور کپڑا دینا چاہیے-

۱۸۹- بدون پرایشچت کے پاپون کے ساتھ ارتھ کو نکرے اور جب پرایشچت کر چکین تو انکی برائی بھی کبھی نکرے-

۱۹۰- بالک و اپکار و ہرناگت و عورت انھون مین سے کسی ایک کے مارنیوالے نے شاستر مین لکھا ہوا پرایشچت بھی کیا ہو تو بھی اسکے ساتھ نرہے-

۱۹۱- جس براہمن کشتری ویشیہ کا گایتری بدھ سے اپدیش نہوا ہو اسکو تین کرچھ برت کراکے بدھ کے موافق پھر جنیو کرانا چاہئے-

۱۹۲- خلاف کام یعنے شودر کی سیوا کرنیوالا اور وید کو نہ پڑھنے والا براہمن کشتری ویشیہ پرایشچت کرنا چاہین تو انکو بھی تین کرچھ برت کا اپدیش کرنا چاہئے-

पतितस्योदकंकार्यसपिण्डैर्बान्धवैर्बहिः॥ निन्दितेऽहनिसा-याह्नेज्ञात्यृत्विग्गुरुसन्निधौ॥ १८२॥दासीघटमपांपूर्णंपर्यस्येत्प्रेतवत्पदा॥ अहोरात्रमुपासीरन्नशौचंबान्धवैःसह॥ १८३॥ निवर्तेरंश्चतस्मात्तुसंभाषणासहासने॥ दायाद्यस्यप्रदानंचयात्राचैवहिलौकिकी॥ १८४॥ ज्येष्ठताचनिवर्तेतज्येष्ठावाप्यंचयद्धनम्॥ ज्येष्ठांशंप्राप्नुयाच्चास्ययवीयान्गुणतोऽधिकः॥१८५ ॥प्रायश्चित्तेतुचरितेपूर्णंकुंभमपांनवम्॥ तेनैवसार्द्धंप्रास्येयुःस्नात्वापुण्येजलाशये॥ १८६॥

١٨٢ — سپنڈ یا باندھو باہر جا کر ذات و رتوج وگروؤں کے سامنے نامبارک دن مین وقت شام کے پتت کو جل دیوے۔

١٨٣ — داسی جل سے بھرے ہوئے گھڑے کو دکھن رُخ کھڑے ہو کر پانون سے دھکا دے اور سپنڈ لوگ مع باندھون کے ایک دن اُپاس کرین۔

١٨٤ — پتت کے ساتھ بیٹھنا بولنا اُسکو حصہ دینا اُسکے ساتھ لوک کا بیوہار وغیرہ کرنا ان سب باتونکو ترک کرے

١٨٥ — چھوٹا بھائی بڑے بھائی سے زیادہ صفت والا ہو تو بڑے بھائی کے حصہ کو پاوے اور بڑے بھائی کی بزرگی اور اُسکی بزرگی کا حصہ یہ دونون نبرت (یعنی ختم) ہو جاتے ہین۔

١٨٦ — جب پتت نے پراشچت کیا تب سپنڈ لوگ اُسکے ساتھ پاک ندی مین اشنان کر کے پانی سے بھرے ہوئے گھڑے کو دھکا دیوین۔

* پتت اُسکو کہتے ہین جو اپنے ورن و آشرم کے درجہ سے گر جاوے یعنے بے ذات ہو جاوے۔

साचेत्पुनः प्रदुष्येत्तु सदृशेनोपयंत्रिता ॥ कृच्छ्रं चान्द्रायणं चैव तदस्याः पावनं स्मृतम् ॥ १७७ ॥ यत्करोत्येकरात्रेण वृषलीसेवनाद्द्विजः ॥ तद्भैक्ष्यभुग्जपन्नित्यं त्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहति ॥ १७८ ॥ एषा पापकृतामुक्ता चतुर्णामपि निष्कृतिः ॥ पतितैः संप्रयुक्तानामिमाः शृणुत निष्कृतीः ॥ १७९ ॥ संवत्सरेण पतति पतितेन सहाचरन् ॥ याजनाध्यापनाद्यौनान्नतु यानासनाशनात् ॥ १८० ॥ यो येन पतितेनैषां संसर्गं याति मानवः ॥ स तस्यैव व्रतं कुर्यात्तत्संसर्गविशुद्धये ॥ १८१ ॥

۱۷۷ – جو عورت اپنی ذات کے مرد کے ساتھ ایک دفعہ جماع کرکے مجرم ہوئی ہو اور اوسکا پرایشچت کرکے پھر اپنے ذات والے مرد کے ساتھ جماع کرے تو وہ عورت پراجاپتیہ و چاندراین برت کرے۔

۱۷۸ – براہمن وکشتری وشودر ورن کی عورت کے ساتھ ایک رات جماع کرکے جو پاپ کرتے ہیں اسکے دور کرنیکے واسطے تین سال تک بھیکھ مانگ کر بھوجن کرتے ہوئے جپ کرتے ہیں۔

۱۷۹ – چاروورن کے پاپ کا یہ پرایشچت کہا اب پتتون کے ساتھ میل وبیوہار کرنیکے پرایشچت کو سنو۔

۱۸۰ – پتت لوگون کے ساتھ جو کوئی ایک سال تک ایک سواری یا ایک آسن پر بیٹھے یا ایک پنگت مین بھوجن کرے تو اوسکے برابر ہوتا ہی اور پتت لوگون کو یگیہ کرادے یا جنیو کراکے گایتری سنادے یا وواہ وغیرہ رشتہ داری کرے تو جلد اسکے برابر ہوتا ہے۔

۱۸۱ – جس پتت کے ساتھ جو بیوہار کرے وہ اسکے پاکی کے واسطے اسی کا برت کرے۔

एतास्तिस्रस्तु भार्यार्थे नोपयच्छेत्तु बुद्धिमान्॥ ज्ञातित्वेनानुपेयास्ताः पतति ह्युपयन्नधः॥ १७२॥ अमानुषीषु पुरुष उदक्यायामयोनिषु॥ रेतः सिक्त्वा जले चैव कृच्छ्रं सान्तपनं चरेत्॥ १७३॥ मैथुनन्तु समासेव्य पुंसि योषिति वा द्विजः॥ गोयानेऽप्सु दिवा चैव सवासाः स्नानमाचरेत्॥ १७४॥ चण्डालान्त्यस्त्रियो गत्वा भुक्त्वा च प्रतिगृह्य च॥ पतत्यज्ञानतो विप्रो ज्ञानात्साम्यं तु गच्छति॥ १७५॥ विप्रदुष्टां स्त्रियं भर्ता निरुन्ध्यादेकवेश्मनि॥ यत्पुंसः परदारेषु तच्चैनां कारयेद्व्रतम्॥ १७६॥

۱۷۲۔ عقلمند آدمی ان تینوں کے ساتھہ جماع نکرے کیونکہ وہ رشتہ میں ہونے سے جماع کے لائق نہیں ہیں انکے ساتھہ جماع کرنے سے نرک میں جاتا ہے۔

۱۷۳۔ کتو کو چھوڑ کر گھوڑے وغیرہ چارپایہ و حیض عورت و کسی ایک نسبت سی علیحدہ عورت و پانی انھون مین نطفہ گرانے سے سانتپن کرچھ برت کو کرے۔

۱۷۴۔ گاڑی پانی دن انھون مین براہمن کشتری ویشیہ مرد یا عورت سے جماع کرکے مع کپڑون کے اسنان کرے۔

۱۷۵۔ براہمن اگیان سے چانڈالی اور ملیچھ کی عورت کے غلہ کو بھوجن کرکے اور انھون سے دان لیکر پتت ہوتا ہے اور جانکر ہووے تو انکے برابر ہوتا ہے۔

۱۷۶۔ جس عورت نے دوسرے مرد مین دل لگایا اسکو شوہر ایک گھر مین روک کر رکھے اور جو برت مرد کو دوسری عورت کے ساتھہ جماع کرنے مین کہا ہے وہ برت عورت کو کراوے۔

मणिमुक्ताप्रवालानांताम्रस्यरजतस्यच॥ अयःकांस्योपला
नांचद्वादशाहंकणान्नता॥१६७॥ कार्पासकीटजोर्णानांद्विश-
फैकशफस्यच॥ पक्षिगन्धौषधीनांचरज्ज्वाश्चैवत्र्यहंपयः१६८
॥एतैर्व्रतैरपोहेतपापंस्तेयकृतंद्विजः॥ अगम्यागमनीयन्तुव्र
तैरेभिरपानुदेत्॥१६९॥ गुरुतल्पव्रतंकुर्याद्रेतःसिक्त्वास्वयो-
निषु॥ सख्युःपुत्रस्यचस्त्रीषुकुमारीष्वन्त्यजासुच॥१७०॥पै
तृष्वसेयींभगिनींस्वस्त्रीयांमातुरेवच॥ मातुश्चभ्रातुस्तनयांग-
त्वाचान्द्रायणंचरेत्॥१७१॥

۱۶۷- جواہر موتی مونگا تانبا و بارو پا کانسی پتھر انھوں میں سے کسی ایک کے چورانیمیں بارہ دن تک چاول کے کن بھوجن کرے

۱۶۸- کپاس کیڑا اون انھوں سے طیار ہوئے کپڑے ایکھر والے چارپایہ پرند خوشبو بات اودیہ رسی انھوں میں سے کسی ایک کے چورانے میں تین دن تک دودھ پیوے (یہاں سب چیز چورانیمیں ایک روپ پرایشچت کہا اسیطرح چوری میں جہان پر ایک روپ پرایشچت ہی وہان پر جاننا چاہیے)

۱۶۹- ان برتون کے وسیلہ سے چوری کے پاپ کو دور کرے اور جو عورت جماع کے لائق نہیں ہے اسکے ساتھ جماع کرنیمیں جو پاپ ہو اسکو برت مرقومہ ذیل سے دور کرے-

۱۷۰- خواہر حقیقی اور دوست اور بیٹے کی زوجہ اور کماری اور چانڈالی انھوں میں سے کسی ایک کے ساتھ اگیان سے جماع کرکے اس پرایشچت کو کرے جو ماتا کے ساتھ جماع کرنیمیں ہوتا ہی

۱۷۱- موسی کی بیٹی اور پھوپھو کی اور ماموں کی بیٹی جو اپنی خواہر ہیں انمیں سے کسی ایک کے ساتھ جماع کرنیمیں چاندراین برت کرے لیکن یہ سب اگیان سے ایک دفعہ دوسرے مرد کے ساتھ جماع کریں تب جاننا کیونکہ پرایشچت تھوڑا ہے اسلئے کہتے ہیں-

धान्यान्नधनचौर्याणि कृत्वा कामाद्द्विजोत्तमः॥ स्वजातीय-
गृहादेव कृच्छ्राब्देन विशुध्यति ॥१६२॥ मनुष्याणां तु हरणे स्त्री
णां क्षेत्रगृहस्य च॥ कूपवापीजलानां च शुद्धिश्चान्द्रायणं स्मृतं
॥१६३॥ द्रव्याणामल्पसाराणां स्तेयं कृत्वाऽन्यवेश्मतः॥ च-
रेत्सान्तपनं कृच्छ्रं तन्निर्यात्यात्मशुद्धये॥ १६४॥ भक्ष्यभोज्या-
पहरणे यानशय्यासनस्य च॥ पुष्पमूलफलानां च पंचगव्यं
विशोधनम्॥ १६५॥ तृणकाष्ठद्रुमाणां च शुष्कान्नस्य गुड
स्य च॥ चैलचर्मामिषाणां च त्रिरात्रं स्यादभोजनम्॥१६६॥

۱۶۲- برہمن برہمن کے گھر سے بالارادہ دھانیہ کو چرا کر پاکی کیو استطے ایک سال تک کرچھ
برت کو کرے لیکن دیش کال ورتیہ پران دسواہی کا گن وغیرہ دیکھکر زیادہ بھی جاننا
اسیطرح سے جو آگے کہینگے اس مین بھی جاننا-

۱۶۳- آدمی عورت کھیت گھر باؤلی کنوان کا جل انھون کے چرانیمین پاکی کیو (استطے)
چاندراین برت کہا ہے-

۱۶۴- تھوڑی قیمت والی چیز اور تھوڑے مطلب والی چیز کے چرانیمین سانتپن کرچھ برت
کرے اور مال مسروقہ مالک کو دیوے یہ بات سب چوری کے پراشچت مین جاننا-

۱۶۵- چبینا وغیرہ بھات وغیرہ سواریان پلنگ آسن پھول پھل انھون مین سے
کسی ایک کو چرانیمین پنچ گیبہ* کو پیوے-

۱۶۶- ترن کاٹھ سوکھا درخت غلہ گڑ کپڑا چمڑا گوشت انھون مین کسی ایک کے چرانیمین
تین دن برت کرنا چاہیے-

* پنچ گیبہ یعنے گئو کا دودھ گئو کا گھی گئو کا دہی گئو کا موتر گئو کا گوبر-

मासिकान्नंतुयोऽश्नीयादसमावर्त्तकोद्विजः॥ सत्रीण्यहा-
न्युपवसेदेकाहंचोदकेवसेत॥१५७॥ब्रह्मचारीतुयोऽश्नीयान्म
धुमांसंकथंचन॥सकृत्वाप्राकृतंकृच्छ्रंव्रतशेषंसमापयेत्१५८
॥बिडालकाकाखूच्छिष्टंजग्ध्वाश्वनकुलस्यच॥केशकीटाव
पन्नंचपिबेद्ब्रह्मसुवर्चलाम्॥१५९॥अभोज्यमन्नंनात्तव्यमा-
त्मनःशुद्धिमिच्छता॥अज्ञानभुक्तंतूत्तार्यंशोध्यंवाऽप्याशुशो
धनैः॥१६०॥एषोऽनाद्यादनस्योक्तोव्रतानांविविधोविधिः॥
स्तेयदोषापहर्तॄणांव्रतानांश्रूयतांविधिः॥१६१॥

۱۵۷- برہم چاری جیسے کی شرادھ کے غلہ کو بھوجن کرکے تین دن اُپاس کرے اور ایکدن پانی میں رہے

۱۵۸- برہم چاری اگیان سے شراب یا گوشت کو بھوجن کرکے پراجاپتیہ کرچھ برت کو کرکے باقی ماندہ برت کو تمام کرے۔

۱۵۹- بلار کوا موسا کتہ نیولا ان میں سے کسی ایک کی جوٹھی چیز کو بھوجن کرکے اور بال اور دیمہ رشی ہے ان دونوں میں سے کسی ایک سے ملی ہوئی چیز کو بھوجن کرکے سوبرچلا نام اودھ کے بھگوئے ہوئے جل کو پیوے۔

۱۶۰- آپ کو پاک کرنیکی خواہش رکھنے والا آدمی اس چیز کو جو بھوجن کے لائق نہیں ہے بھوجن نکرے اور اگیان سے بھوجن کیا ہو تو قے کرے یہ بھی نہو سکے تو جلد پرائشچت کرکے اپنی آتما کو پاک کرے۔

۱۶۱- بھوجن کے لائق جو چیز نہیں ہے اسکے بھوجن میں یہ پرائشچت کہا اب چوری کے پاپ کے پرائشچت کو کہتے ہیں۔

अभोज्यानां तु भुक्त्वान्नं स्त्रीशूद्रोच्छिष्टमेव च ॥ जग्ध्वा मांसम-
भक्ष्यं च सप्तरात्रं यवान्पिबेत् ॥ १५२ ॥ शुक्तानि च कषायांश्च-
पीत्वा मेध्यान्यपि द्विजः ॥ तावद्भवत्यप्रयतो यावत्तन्न व्रजत्य-
धः ॥ १५३ ॥ विड्वराहखरोष्ट्राणां गोमायोः कपिकाकयोः ॥
प्राश्य मूत्रपुरीषाणि द्विजश्चान्द्रायणं चरेत् ॥ १५४ ॥ शुष्का-
णि भुक्त्वा मांसानि भौमानि कवकानि च ॥ अज्ञातं चैव सूना-
स्थमेतदेव व्रतं चरेत् ॥ १५५ ॥ क्रव्यादसूकरोष्ट्राणां कुक्कुटानां
च भक्षणे ॥ नरकाकखराणां च तप्तकृच्छ्रं विशोधनम् ॥ १५६ ॥

۱۵۲ — کھانیکے لائق جسکا غلہ نہین ہے اوسکا غلہ اور شودر اور عورت کا جوٹھا غلہ اور جو گوشت کھانیکے لائق نہین ہے اُنہین سے کسی کو بھوجن کرے تو جو کے ستو سات دن تک پیوے۔

۱۵۳ — شکت* اور کسیلی چیز (مثل کھیڑا وغیرہ) یہ پاک بھی ہون تو بھی اُنکو پیکے تب تک پاک نہین ہوتا جب تک کہ وہ ہضم نہین ہوتے۔

۱۵۴ — گانون کے سور گدھا اونٹ کو سیار اُنھون کا موتر اور ٹٹا بھوجن کرے تو کشتری ویشیہ چاندراین برت کرین۔

۱۵۵ — سوکھا گوشت اور زمین مین پیدا ہوا الگرمتا اور جس گوشت کو جانا نہین کہ وہ کھانے کے لائق ہے یا نہین اور وہ مقام قتل جاندارین رکھا ہو انھون مین سے کسی ایک کو کھانے مین اوپر کے ہوئے برت کو کرے۔

۱۵۶ — کچے گوشت کے کھانیوالے شیر وغیرہ گانون کا سور اونٹ مرغا آدمی کوا گدھا انھون مین سے کسی ایک کے گوشت کے کھانے مین تپت کرچھر برت کو کرے۔

* شکت اسکو کہتے ہین کہ جو مادتا میٹھا ہے اور بسبب گزرنے دنوں کے یا پانی مین رہنے سے کھٹا ہو جاتا۔

अज्ञानाद्वारुणींपीत्वासंस्कारेणैवशुध्यति ॥ मतिपूर्वमनि-
र्देश्यंप्राणान्तिकमितिस्थितिः ॥ १४६ ॥ अपःसुराभाजनस्था
मद्यभाण्डस्थितास्तथा ॥ पंचरात्रंपिबेत्पीत्वाशंखपुष्पीशृ-
तंपयः ॥ १४७ ॥ स्पृष्ट्वादत्त्वाचमदिरांविधिवत्प्रतिगृह्यच ॥ शू-
द्रोच्छिष्टाश्चपीत्वापःकुशवारिपिबेत्त्र्यहम् ॥ १४८ ॥ ब्राह्म-
णस्तुसुरापस्यगन्धमाघ्रायसोमपः ॥ प्राणानप्सुत्रिरायम्य
घृतंप्राश्यविशुध्यति ॥ १४९ ॥ अज्ञानात्प्राश्यविण्मूत्रंसु-
रासंसृष्टमेवच ॥ पुनःसंस्कारमर्हन्तित्रयोवर्णाद्विजातयः
॥ १५० ॥ वपनंमेखलादण्डोभैक्षचर्याव्रतानिच ॥ निवर्त्तन्ते
द्विजातीनांपुनःसंस्कारकर्मणि ॥ १५१ ॥

۱۴۶ - بغیر جانے ہوئے گوڑی وما دھوی نام شراب کو پیوے تو دوسرے سنسکار سے پاک ہوتا ہے اور جانکر پیوے تو ترک قالب سے پاک ہوتا ہے یہ شاستر کا حکم ہے۔

۱۴۷ - پیشٹی اور مدیہ نام شراب کے برتن میں رکھا ہوا پانی پینے میں سنکھہ پشپی نام اودویہ کو گرم دودھ کے ساتھ پانچ رات تک پیوے۔

۱۴۸ - شراب کو چھوکر دیکر لیکر اور شودر کے جوٹھے جل کو پیکر کش سے پکے ہوئے جل کو تین دن تک پیوے۔

۱۴۹ - سوم نام یگیہ کو کرنیوالا برہمن شراب پینے والے کی بو سونگھ کر جل میں تین دفعہ پرانایام کرکے گھی کو بھوجن کرنے سے پاک ہوتا ہے۔

۱۵۰ - جو چیز موتر اور بشٹا اور شراب سے چھو گئی انمیں سے کسی ایک کو اگیان سے بھوجن کرکے برہمن کشتری ویشیہ پھر سنسکار کے لائق ہوتے ہیں۔

۱۵۱ - دوسرے سنسکار میں منڈن میکھلا ڈنڈ بھکشا نہیں ہوتے۔

किंचिदेवतु विप्रायदद्यादस्थिमतांवधे ॥ अनस्थांचैवहिंसा-
यांप्राणायामेनशुध्यति । १४१ ॥ फलदानान्तुवृक्षाणांछेद-
नेजप्यमृक्शतम् ॥ गुल्मवल्लीलतानांचपुष्पितानांचवी-
रुधाम् ॥ १४२ ॥ अन्नाद्यजानांसत्वानांरसजानांचसर्व्वशः ॥
फलपुष्पोद्भवानांचघृतप्राशोविशोधनम् ॥ १४३ ॥ कृष्ट-
जानामोषधीनांजातानांचस्वयंवने ॥ वृथालम्भेनुगच्छेद्गां
दिनमेकंपयोव्रतः ॥ १४४ ॥ एतैर्व्रतैरपोह्यंस्यादेनोहिंसास-
मुद्भवम् ॥ ज्ञानाज्ञानकृतंकृत्स्नंशृणुतानाद्यमक्षरो ॥ १४५

۱۴۱- استخوان دار جاندار کی مارنے مین براہمن کو کچھ دیکر اور بے استخوان دار جاندار کے مارنے مین
پرانایام کرے-
۱۴۲- پھل دینے والے درخت یعنی آنب وغیرہ گلم و بلی یعنی گرچ لتا اور پھولا ہوا انکو انھون
مین سے ایک ایک کے توڑنے اور اکھاڑنے مین گایتری وغیرہ رچا کو سو بار جپ کرے-
۱۴۳- ان وغیرہ گوڑ وغیرہ رس و پھل و پھول ان سب مین سے پیدا ہوئے جاندارون کے مارنے مین
گھی کو بھوجن کرے
۱۴۴- ساٹھی وغیرہ جو ان جوتنے سے پیدا ہوتا ہے اور ننی وغیرہ جو جنگل مین آپ سے آپ پیدا ہوتی ہے
انھون کا بے مطلب اکھاڑنے مین ایک دن دودھ پیکر رہے اور گئو کے پیچھے
چلے-
۱۴۵- دانستہ یا نادانستہ جاندارونکو مارا اس پاپ کو برتون کے وسیلہ سے دور کرنا چاہیے
اور جو چیز کھانے کے لائق نہین ہے اسکے کھانے مین پرائشچت سنو-

हत्वाहंसंबलाकांचबकंबर्हिणमेवच॥ वानरंश्येनभासौचस्प-
र्शयेद्ब्राह्मणायगाम्॥१३५॥ वासोदद्याद्धयंहत्वापंचनीला
न्वृषान्गजम्॥ अजमेषावनड्वाहंखरंहत्वैकहायनम्॥१३६॥
क्रव्यादांस्तुमृगान्हत्वाधेनुंदद्यात्पयस्विनीम्॥ अक्रव्यादा-
न्वत्सतरीमुष्ट्रंहत्वातुकृष्णलम्॥१३७॥ जीनकार्मुकबस्तावी-
न्पृथग्दद्याद्विशुद्धये॥ चतुर्णामपिवर्णानांनारीर्हत्वाऽनव-
स्थिताः॥१३८॥ दानेनवधनिर्णेकंसर्पादीनामशक्नुवन्॥ए-
कैकशश्चरेत्कृच्छ्रंद्विजःपापापनुत्तये॥१३९॥ अस्थिमतांतु
सत्वानांसहस्रस्यप्रमापणे॥ पूर्णेचानस्यनस्थ्नांतुशूद्रहत्याव्र-
तंचरेत॥१४०॥

١٣٥- ہنس بلاکا بگلا مور بندر باز بھاس ان سب میں سے کسی ایک کو مار کر براہمن کو گئو دیوے

١٣٦- گھوڑا کو مار کر کپڑا دیوے اور ہاتھی کو مار کر پانچ بیل براہمن کو دیوے بکرا اور بھیڑا ان میں سے کسی ایک کو مار کر ایک بیل دیوے گدھے کو مار کر ایک سال کا بچھڑا دیوے۔

١٣٧- شیر وغیرہ کچے گوشت کے کھانیوالے جانور کو مار کر دودھ دیتی ہوئی گئو دیوے اور ہرن وغیرہ کچے گوشت کے نہ کھانیوالے جانور کو مار کر بچھیہ دیوے اور اونٹ کو مار کر ایک رتی سونا دیوے۔

١٣٨- براہمن وغیرہ چار ورن کی چھنال عورت کو مار کر براہمن کشتری ویشیہ سلسلہ سے چرم پٹ و کمان بھیڑ بکرا کو دیوے۔

١٣٩- ان سب پاپون کو دور کرنے میں بے طاقت ہو تو ایک ایک کے قتل میں ایک ایک کرچھ برت کرے۔

١٤٠- ہزار جاندار استخوان دار کے قتل میں اور بغیر استخوان دار جاندار گاڑی بھر کے قتل میں شودر ہتیا کے برت کو کرے۔

एतदेवव्रतंकृत्स्नंषण्मासाञ्छूद्रहाचरेत्॥ वृषभैकादशावापि
दद्याद्विप्रायगाःसिताः॥१३०॥मार्जारनकुलौहत्वाचाषंमण्डू-
कमेवच।श्वगोधोलूककाकांश्चशूद्रहत्याव्रतंचरेत्॥१३१॥
पयःपिबेत्त्रिरात्रंवायोजनंवाऽध्वनोव्रजेत्॥उपस्पृशेत्स्रव-
न्त्यांवासूक्तंवाब्दैवतंजपेत्॥१३२॥अभ्रिंकार्ष्णायसींदद्या-
त्सर्पंहत्वाद्विजोत्तमः॥पलालभारकंषण्डेसैसकंचैकमाषक-
म्॥१३३॥घृतकुंभंवराहेतुतिलद्रोणन्तुतित्तिरौ॥शुकेद्वि-
हायनंवत्संक्रौंचंहत्वात्रिहायनम्॥१३४॥

۱۳۰- براہمن شودر کو قتل کرنین چھ مہینہ تک برہم ہتیا کی برت کو کرے اور ایک بیل سفید رنگ اور دس گئو براہمن کو دیوے یہ بھی بلا خواہش قتل کرنے مین جاننا ان سب پر لون کے کرنین کپال دودھ جا کو چھوڑ دینا چاہئے۔

۱۳۱- بلی نیولا نیل کنٹھ مینڈک کتہ گوہ الو کوا انھون مین سے کسی ایک کو شودر قتل کرکے متیا کے برت کو کرے۔

۱۳۲- یا تین رات دودھ پیوے اور اگر بے مقدور ہو تو تین رات تک چار کوس چلے یہ بھی نہو سکے تو تین رات ندی مین اسنان کرے یہ بھی نہو سکے تو آپو دیشتھ انام سوکت کا جپ کرے یہ سب بلا خواہش کے قتل مین جاننا۔

۱۳۳- سانپ کو مارے تو لوہے کا ڈنڈ جسکا حصہ پیشین اچھا ہو براہمن کو دیوے اور مخنث کو مارے تو ایک بوجھ پورا اور ایک ماشہ سیسا ان دونون کو دیوے

۱۳۴- سور کے مارنے مین گھی کا گھڑا اور تیتر کے مارنے مین ایک دون تل اور طوطا کے مارنے مین دو سال کا بچھڑا اور کرونچ نام جانور کے مارنے مین تین سال کا بچھڑا برہمن کو دیوے۔

त्करापात्रकृत्यासु मासंशोधनमैन्दवम्॥ मलीनीकरणीये-
षुतप्तःस्याद्यावकैस्त्र्यहम्॥१२५॥ तुरीयोब्रह्महत्यायाःक्ष-
त्रियस्यवधेस्मृतः॥ वैश्येऽष्टमांशोवृत्तस्थेशूद्रेज्ञेयस्तुषोडशः
॥१२६॥ अकामतस्तुराजन्यंविनिपात्यद्विजोत्तमः॥ वृषभै-
कसहस्रागादद्यात्सुचरितव्रतः॥१२७॥ त्र्यब्दंचरेद्वानियतो
जटीब्रह्महणोव्रतम्॥ वसन्दूरतरेग्रामाद्वृक्षमूलनिकेतनः॥
१२८॥ एतदेवचरेदब्दंप्रायश्चित्तंद्विजोत्तमः॥ प्रमाप्यवैश्यंवृ-
त्तस्थंदद्याच्चैकशतंगवाम्॥१२९॥

۱۲۵۔ سنکری کرن کرموں میں اور آپاتری کرن کرموں میں کسی ایک کرم کو خواہش سے کرنے میں ایک مہینہ چاندراین برت کرے اور ملنی کرن کرموں میں کسی ایک کرم کو خواہش سے کرکے تین دن جو کی لپسی بھوجن کرے۔

۱۲۶۔ اپنے کرم میں قائم کشتری ویشیہ شودر کو قتل کرنے میں سلسلہ سے چوتھی آٹھویں سولھویں حصہ برت کو جاننا مگر یہ سب برت خواہش سے کرم کرنے میں جاننا۔

۱۲۷۔ براہمن بدون خواہش کے کشتری کو قتل کرے تو ہزار گئو اور ایک بیل براہمن کو دیوے

۱۲۸۔ خواہ جٹا دھاری ہوکر نیم سے گاؤں کے باہر درخت کی جڑ میں مقیم ہوکر تین سال تک برہم ہتیا کا برت کرے اسکو بلا خواہش قتل کرنے میں جاننا۔

۱۲۹۔ براہمن اپنے کرم میں قائم ویشیہ کو قتل کرکے ایک سال تک برہم ہتیا کا برت کرے یا ایک سَو ایک گئو دان کرے بلا خواہش قتل کرنے میں اس برت کو جاننا۔

कामतोरेतसःसेकंव्रतस्थस्यद्विजन्मनः।। अतिक्रमंव्रतस्याहुर्ध-
र्मज्ञाब्रह्मवादिनः।।१२०।। मारुतंपुरुहूतंचगुरुंपावकमेवच ।।
चतुरोव्रतिनोऽभ्येतिब्राह्मंतेजोऽवकीर्णिनः ।। १२१ ।।एतस्मि-
न्नेनसिप्राप्तेवसित्वागर्दभाजिनम्।। सप्तागारांश्चरेद्भैक्षंस्वकर्म
परिकीर्तयन्।। १२२ ।। तेभ्योलब्धेनभैक्षेणवर्तयन्नेककालि-
कम्।।उपस्पृशंस्त्रिषवणंत्वब्देनसविशुध्यति।।१२३।।जाति
भ्रंशकरंकर्मकृत्वान्यतममिच्छया ।। चरेत्सान्तपनंकृच्छ्रंप्रा-
जापत्यमनिच्छया।।१२४ ।।

۱۲۰- براہمن کشتری ویشیہ تینون ورن برت مین قائم ہون اور خواہش سے نطفہ کو گراوین
تو برت کا الٹنگھن ہوا ایسا شاستر کو دھرم جاننے والے برہم بادیون نے کہا ہے۔

۱۲۱- اوکیرنی کا برہم تیج بایو اندر اگنی گرو ان چارو کے پاس جاتا ہے۔

۱۲۲- اس پاپ کو چھوڑانے کیواسطے گدھے کا چمڑا اوڑھکر اپنے کرم کو کرتا ہوا سات گہر
سے بھیکھ مانگے۔

۱۲۳- اس بھیکھ کو ایک وقت بھوجن کرتا ہوا وقت صبح دوپہر وشام کے اشنان کرتا ہوا اوقات
گذاری کرے تو ایک سال مین پاک ہو۔

۱۲۴- ذات سے خارج کرنیوالے کرمون مین سے کسی ایک کرم کو خواہش سے کرے تو
سانتپن کرچھ برت کرے اور بدون خواہش کے کیا ہو تو پراجاپتیہ برت کرے برتون کا
لکشن آگے کہینگے۔

+اوکیرنی یعنے برہم چرج کی حالت مین نطفہ کو گرانیوالا۔

आत्मनोयदिवान्येषांगृहेक्षेत्रेऽथवाखले॥ भक्षयन्तींनकथयेत्पिबन्तंचैववत्सकम्॥११४॥ अनेनविधिनायस्तुगोघ्नोगामनुगच्छति॥ सगोहत्याकृतंपापंत्रिभिर्मासैर्व्यपोहति॥ ११५॥ वृषभैकादशागाश्चदद्यात्सुचरितव्रतः॥ अविद्यमानेसर्वस्वंवेदविद्भ्योनिवेदयेत्॥११६॥ एतदेवव्रतंकुर्युरुपपातकिनोद्विजाः॥ अवकीर्णिवर्ज्यंशुद्ध्यर्थंचान्द्रायणमथापिवा॥११७॥ अवकीर्णीतुकाणेनगर्दभेनचतुष्पथे॥ पाकयज्ञविधानेनयजेतनैर्ऋतिंनिशि॥११८॥ हुत्वाग्नौविधिवद्धोमानन्ततश्चसमेत्यृचा॥ वातेन्द्रगुरुवन्हीनांजुहुयात्सर्पिषाहुतीः॥११९॥

۱۱۴- اپنے خواہ دوسرے کے گھر میں یا کھلیان یا کھیت میں چرتی ہوئی گئو کو نہ کہے اور بچھڑے کو پلاتی ہو تو بھی نہ کہے۔

۱۱۵- گئو کا مارنیوالا آدمی اس طریق سے گئو کے پیچھے پیچھے چلے تو تین مہینہ میں گئو کی ہتیا سے چھوٹ جاوے۔

۱۱۶- اچھی ریت سے برت کرکے ایک بیل اور دس گئو دیوے اگر اتنا نہ ہو سکے تو وید پڑھے ہوئے براہمن کو سب دھن دیوے۔

۱۱۷- اوکیرنی برت جو آگے کہینگے اسکو چھوڑ کر براہمن کشتری ویشیہ اپ پاتک کریں تو پاک ہونے کیواسطے اسی برت کو کریں یا چاندراین برت کریں۔

۱۱۸- اوکیرنی چوراہہ میں پاک یگیہ بدھان کرکے رات میں نرت دیوتا کیواسطے کانا گدھا سے یگیہ کرے۔

۱۱۹- اگن میں بدھی کے موافق سمان سنچیو نارنہ اس منتر سے بایو اندر اگن ان سب کو گھی کی آہت دیوے۔

उपपातकसंयुक्तोगोघ्नोमासंयवान्पिबेत्॥ कृतवापोवसेद्गो-
ष्ठेचर्मणातेनसंवृतः॥१०८॥ चतुर्थकालमश्नीयादक्षारलवणं
मितम्॥ गोमूत्रेणाचरेत्स्नानंद्वौमासौनियतेन्द्रियः॥१०९॥
दिवानुगच्छेद्गास्तास्तुतिष्ठन्नूर्ध्वंरजःपिबेत्॥ शुश्रूषित्वानम-
स्कृत्यरात्रौवीरासनंवसेत्॥११०॥ तिष्ठन्तीष्वनुतिष्ठेत्तुव्रजन्-
तीष्वप्यनुव्रजेत्॥ आसीनासुतथासीनोनियतोवीतमत्सरः
॥१११॥ आतुरामभिशस्तांवाचौरव्याघ्रादिभिर्भयैः॥ पति-
तांपंकलग्नांवासर्वोपायैर्विमोचयेत्॥११२॥उष्णेवर्षति-
शीतेवामारुतेवातिवाभृशम्॥ नकुर्वीतात्मनस्त्राणंगोरकृ-
त्वातुशक्तितः॥११३॥

۱۰۸- آپ پاتکی گئو کا مارنیوالا ایک مہینہ تک جو کے ستو پیوے ناخن موچھ بدن و مونچھ وغیرہ کو منڈوا کے چھپر سے کٹوا کر گئو کا چمڑا اوڑھکر گئو کے مقام مین قیام کرے۔

۱۰۹- ایک دن برت کرکے دوسرے دن پہلی دفعہ تھوڑا بھوجن کرے جو اس پر غالب ہو کر دو مہینہ تک گئو موتر سے اشنان کرے۔

۱۱۰- دن مین گئو کے پیچھے چلے کھڑا ہو کر گئو کے کھر سے اڑتی ہوئی دھول کو پیوے سیوا کرتا ہوا نمسکار کرکے رات مین بیر آسن سے رہے۔

۱۱۱- گئو کھڑی ہو تو آپ بھی حسد و بغض سے علیحدہ ہو کر اندریون کو جیت کر کھڑا رہے گئو چلے تو آپ بھی اسکے پیچھے چلے گئو بیٹھے تو آپ بھی بیٹھے۔

۱۱۲- جو گئو بیمار ہو اور چور اور شیر وغیرہ کے خوف سے خوفناک ہو یا گر پڑے ہو یا کیچ مین پھنس گئی ہو اسکو سب تدبیرون سے حتی المقدور چھوڑا دے۔

۱۱۳- گرمی و برسات و جاڑا و آندھی مین اپنے مقدور کے موافق جبتک گئو کی حفاظت نکرلے اپنی حفاظت نکرے۔

गुरुतल्प्यभिभाष्यैनस्तप्ते स्वप्यादयोमये ॥ सूर्मीं ज्वलन्तीं स्वाश्लिष्येन्मृत्युना स विशुद्ध्यति ॥१०३॥ स्वयं वा शिश्नवृषणावुत्कृत्याधाय चाञ्जलौ ॥ नैर्ऋतीं दिशमातिष्ठेदानिपातादजिह्मगः ॥१०४॥ खट्वाङ्गी चीरवासा वा श्मश्रुलो विजने वने ॥ प्राजापत्यं चरेत्कृच्छ्रमब्दमेकं समाहितः ॥१०५॥ चान्द्रायणं वा त्रीन्मासानभ्यस्येन्नियतेन्द्रियः ॥ हविष्येण यवाग्वा वा गुरुतल्पापनुत्तये ॥१०६॥ एतैर्व्रतैरपोहेयुर्महापातकिनो मलम् ॥ उपपातकिनस्त्वेवमेभिर्नानाविधैर्व्रतैः ॥१०७॥

۱۰۳ - والدہ سے جماع کرنیوالا اپنے پاپ کو کہکر گرم لوہے کے پلنگ پر سووے یا لوہے کی عورت بناکر آگ مین گرم کرکے اوس سے بغلگیری کرے -

۱۰۴ - یا آلت وفوطہ کو کاٹ کر اپنی انجلی مین رکھکر گوشہ جنوب و غرب مین دکھنی ہیرت کونہ مین سیدھا چلا جا جب تک وفات نہ پاوے -

۱۰۵ - یا پلنگ کا ایک جزو ہاتھ مین لئے ہوئے کپڑے کا ٹکڑا پہنے ہوئے ناخن و موے بدن و ڈاڑھی و موچھ کو دھارن کئے ہوئے بیفکر ہوکر ویران جنگل مین ایک سال تک پراجاپتیہ برت کرے یہ پرایشچت اگیان سے اپنی عورت جانکر والدہ کے جماع مین جاننا چاہئے

۱۰۶ - یا اندریون کو جیت کر ہتیہ یا جوگی لپسی کھاکر والدہ سے جماع کرنیکے پاپ کو دور کرنیکے واسطے تین مہینہ تک چاندراین برت کرے یہ پرایشچت غیر پتی برتا استری یا دوسرے ورن کی گرو بھاریا سے جماع کرنے مین جاننا چاہیئے

۱۰۷ - مہاپاپی لوگ ان برتون سے اپنے پاپ کو دور کرین اور اوپ پاپی لوگ برت مرقومہ ذیل سے اپنے پاپ کو دور کرین -

एषा विचित्राभिहिता सुरापानस्य निष्कृतिः ॥ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि सुवर्णास्तेयनिष्कृतिम् ॥ ९८ ॥ सुवर्णास्तेयकृद्विप्रो राजानमभिगम्य तु ॥ स्वकर्म ख्यापयन्ब्रूयान्मां भवाननुशास्त्विति ॥ ९९ ॥ गृहीत्वा मुसलं राजा सकृद्धन्यात्तु तं स्वयम् ॥ वधेन शुध्यति स्तेनो ब्राह्मणस्तपसैव तु ॥ १०० ॥ तपसाऽपनुनुत्सुस्तु सुवर्णास्तेयजं मलम् ॥ चीरवासा द्विजोऽरण्ये चरेद्ब्रह्महणो व्रतम् ॥ १०१ ॥ एतैर्व्रतैरपोहेत पापं स्तेयकृतं द्विजः ॥ गुरुस्त्रीगमनीयं तु व्रतैरेभिरपानुदेत् ॥ १०२ ॥

۹۸- یہ تجنبیر پرائشچت شراب نوشی کا کہا اسکے بعد سونا چورانے کا پرائشچت کہتے ہین -
۹۹- براہمن سونا چورا کر راجہ کے پاس جا کر کہے کہ مین سونا چورانیوالا ہون آپ مجھکو سزا دین
۱۰۰- راجہ آپ موسل لیکر ایک دفعہ اسکو مارے چوری کرنیوالا قتل خواہ قتل کے برابر مار پیٹ سے پاک ہوتا ہے چونکہ براہمن کو سزائے جسمانی نہین ہے اسواسطے بھرگ جی کہتے ہین کہ براہمن تپ ہی سے پاک ہوتا ہے -
۱۰۱- تپ سے سونا چورانے کے پاپ کو دور کرنے کی خواہش کرنیوالا کپڑے کا لنگر باندھکر بن مین جا کر اس برت کو کرے جیسے کر کے سے برہم ہتیا دور ہوتی ہے یعنے سونا چورانا برہم ہتیا کے برابر ہے
۱۰۲- براہمن ان برتون کو کرے چوری کے پاپون کو دور کرے اور والدہ سے جماع کرنے کے پاپ کو برت مرقومہ ذیل کرکے دور کرے -

सुरावैमलमन्नानांपाप्माचमलमुच्यते ।। तस्माद्ब्राह्मणराज-
न्यौवैश्यश्चनसुरांपिबेत् ।। ९३ ।। गौडीपैष्टीचमाध्वीचविज्ञेया
त्रिविधासुरा ।। यथैवैकातथासर्वानपातव्याद्विजोत्तमैः ।।९४।।
यक्षरक्षःपिशाचान्नंमद्यंमांसंसुरासवम् ।। तद्ब्राह्मणेननात्तव्यं
देवानामश्नताहविः ।। ९५ ।। अमेध्येवापतेन्मत्तोवैदिकंवाप्यु-
दाहरेत् ।। अकार्यमन्यत्कुर्य्याद्वाब्राह्मणोमदमोहितः ।। ९६।।
यस्यकायगतंब्रह्ममद्येनाप्लाव्यतेसकृत् ।। तस्यव्यपैतिब्राह्म-
ण्यंशूद्रत्वंचसगच्छति ।। ९७ ।।

۹۳- اَن کے مل کو سُرا کہتے ہین اسلئے براہمن و کشتری و ویشیہ سُرا کو نہ پیوین -

۹۴- گَوڑی - مادھوی پیشٹی تین قسم کی شراب ہے (یعنے گڑ اور مَدھوا اور پیشٹان سے بنائی جاتی ہین) جیسی ایک ویسی تینون ہین اسلئے تینون کو براہمن نہ پیوے -

۹۵- مدیہ اور مانس اور سُرا اور اساو ان سب کو یکش اور راکشش و پشاچ کا اَن کہتے ہین اسواسطے دیوتاؤن کے ہیبہ کو بھوجن کرنیوالا براہمن ان سب کو نہ پیوے -

۹۶- براہمن بباعث شراب نوشی کے غفلت مین اگر ناپاکی مین گریگا وید کے منترونکو کہیگا نہ کرنیکے لائق کام کو کریگا اسواسطے شراب نہ پیوے -

۹۷- جس براہمن کے سینہ مین قائم وید ایک دفعہ بھی شراب نوشی سے ڈوبے گا اُس براہمن کو برہم تیج جاتا رہیگا اور وہ براہمن شودر بھاؤ کو پراپت ہوگا -

* یہ جیسے تینون قسم کی شراب چھوڑ کر و پلستت رشی نے گیارہ قسم کی شراب کہی ہے وہ سب گناتے ہین - کُہل - مادھوک - مَهوا - کھجور - تاڑ - اور ایکشو - میریک - مردوی - سُرا - اساو - ان چیزون سے بنائی ہوئی شراب کو بھی براہمن نہ پیوے -

उक्त्वाचैवानृतंसाक्ष्येप्रतिरुध्यगुरुंतथा॥ अपहृत्यचनिःक्षे-
पंकृत्वाचस्त्रीसुहृद्वधम्॥८८॥इयंविशुद्धिरुदिताप्रमाप्याका-
मतोद्विजम्॥ कामतोब्राह्मणवधेनिष्कृतिर्नविधीयते॥ ८९॥
सुरांपीत्वाद्विजोमोहादग्निवर्णांसुरांपिबेत्॥ तयासकायेनिर्द-
ग्धेमुच्यतेकिल्बिषात्ततः॥९०॥गोमूत्रमग्निवर्णंवापिबेदुद-
कमेववा॥ पयोघृतंवामरणाद्गोशकृद्रसमेववा॥ ९१॥कणा-
न्वाभक्षयेदब्दंपिण्याकंवासकृन्निशि॥ सुरापानापनुत्त्यर्थं-
वालवासाजटीध्वजी॥ ९२॥

۸۸ - گواہ ہوکر جھوٹھ بولنے مین گرو کو جھوٹھا دوش لگانے مین براہمن کا سونا چھوڑ کر چاندی وغیرہ زر امانت اور کشتری وغیرہ کا سونا وغیرہ زر امانت کے لینے مین اگن ہوتری براہمن کی استری کی مارنے مین دوست کے مارنے مین برہم ہتیا کا برت کرنا چاہئے۔

۸۹ - یہ جو بارہ سال کا پرایشچت کہا ہے وہ بدون خواہش کے براہمن کے مارنے مین جاننا اور خواہش سے براہمن کے مارنے مین یہ پرایشچت نہین ہے بلکہ اسکا دو چند ہے

۹۰ - براہمن کشتری ویشیہ موہ سے تینون پیشٹی سرا کو پی کر اگن برن شراب کو پیوین اُسکا جسم فانی ہونے سے اُس پاپ سے چھوٹتے ہین۔

۹۱ - گئو موتر یا پانی یا گئو کا دودھ یا گئو کا گھی یا گئو کے گوبر کا رس ان مین سے کسی ایک کو اگن برن (آتش رنگ) کرکے پیوے اور اس سے مرجاوے تو پاک ہوتا ہے۔

۹۲ - گئو وغیرہ کے بالون سے کپڑے بناکر پہنے اور جٹا دھارن کرکے شراب کے برتن کا نشان لگاکر چاول کا کن یا تل کی کھلی اُمین سے کسی ایک کو رات مین ایک دفعہ ایک سال تک بھوجن کرے تو شراب نوشی کے پاپ سے چھوٹے یہ پرایشچت بدون جانے ہوئے شراب نوشی مین جاننا۔

+ دیکھو اشلوک ۹۳-

धर्मस्यब्राह्मणोमूलमग्रंराजन्यउच्यते।। तस्मात्समागमेतेषामे-
नोविख्याप्यशुध्यति।। ८३ ।। ब्राह्मणः सम्भवेनैवदेवानामपि
दैवतम्।। प्रमाणंचैवलोकस्यब्रह्मात्रैवहिकारणम्।। ८४।। ते-
षांवेदविदोब्रूयुस्त्रयोऽप्येनःसुनिष्कृतिम्।। सातेषांपावनायस्या-
त्पवित्राविदुषांहिवाक्।। ८५ ।। अतोऽन्यतममास्थायविधिं-
विप्रःसमाहितः ।। ब्रह्महत्याकृतंपापंव्यपोहत्यात्मवत्तया ।।
८६ ।। हत्वागर्भमविज्ञातमेतदेवव्रतंचरेत्।। राजन्यवैश्यौचेजा-
नावात्रेयीमेवचस्त्रियम्।। ८७ ।।

۸۳ - کیونکہ براہمن دھرم کا مول ہے اور کشتری دھرم کا حصہ بیشین ہے اسلیئے دونوں سے
اپنے پاپ کو کہکر پاک ہوتا ہے -

۸۴ - براہمن اپنی پیدایش ہی سے دیوتاؤں کا دیوتا ہے اور اوسکا اپدیش سب کے ماننے کی
لائق ہے ان باتوں مین وید ہی کارن ہے اور اپدیش کا مول وید ہی ہے -

۸۵ - وید پڑھے ہوئے تین براہمن جو پرایشچت کہین وہی پاک ہے کیونکہ وید پاٹھی براہمن
کی بانی ہی پاک ہے -

۸۶ - کہے ہوئے پرایشچتوں مین ایک بھی کرے اور برہم کو جانے تو برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے -

۸۷ - براہمنی مین براہمن سے پیدا ہوئے حمل کی اسقاط مین بھی یہی برت ہے یگیہ کرتے ہوئے
کشتری اور ویشیہ اور براہمن کی یا حیض عورت انھون مین سے کسی ایک کے مارنے مین بھی
کہے ہوئے برتون مین سے کسی ایک برت کو کرے -

त्रिवारंप्रतिरोद्धावासर्वस्वमवजित्यवा ॥ विप्रस्यतन्निमित्तेवा
प्राणालाभेविमुच्यते ॥ ८० ॥ एवंदृढव्रतोनित्यंब्रह्मचारीसमा-
हितः ॥ समाप्तेद्वादशेवर्षेब्रह्महत्यांव्यपोहति ॥ ८१ ॥ शिष्ट्वा-
वाभूमिदेवानांनरदेवसमागमे ॥ स्वमेनोऽवभृथस्नातोहयमे-
धेविमुच्यते ॥ ८२ ॥

۸۰ - کوئی شخص براہمن کا سب دھن چورا کر لیے جاتا ہی اُسکے لانے کیواسطے طاقت کے موافق بہانہ چھوڑکر تدبیر کرے اور تین دفعہ جنگ کرے اور برہمن کے چوری گئے ہوئے دھن کو لا بھی نہ سکے تو برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے خواہ دھن جانیسے دکھی براہمن چور کے ساتھہ جنگ کرنے سے جان دینے پر مستعد ہو تو جو دھن چوری گیا اُسکے برابر دھن دیکر اُسکی جان کی حفاظت کرے تو بھی برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے - ف

۸۱ - اس ریت سے ہمیشہ برت کرنیوالا بے اندیشہ ہوکر برہمچرج کرنے والا بارہ برس کے تمام ہونے پر برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے

۸۲ - خواہ برہم ہتیا کرنیوالا براہمن اشومیدھ یگیہ کے انت اسنان کرنیکے وقت راجہ کے پاس جاکر برہم ہتیا کو ظاہر کرکے اُسکے ساتھہ اسنان کرے تو برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے یہ پرایسچت سومنترے کسی کا انگ ہے -

ف اس مقام پر یہ شک ہوتا ہی کہ یہ بات اشلوک ۷۹ میں لکھ آئے ہیں پھر دوبارہ کیوں کہا فقط اسکا جواب یہ ہی کہ اسطرح کا مرنا چھوڑکر دوسری طرح سے گئو و براہمن کی حفاظت کیواسطے ترک قالب کرے وہاں اشلوک ۷۹ کا مطلب جاننا اسلیئے دوبارہ کہنے کا دوش نہیں ہوا -

सर्वस्वं वेद विदुषे ब्राह्मणायोपपादयेत्॥ धनं वा जीवनायालं
गृहं वा सपरिच्छदम्॥७६॥ हविष्यभुग्वाऽनुसरेत्प्रतिस्रोतः
सरस्वतीम्॥ जपेद्वा नियताहारस्त्रिर्वै वेदस्य संहिताम्॥७७
कृतवापनो निवसेद्ग्रामान्ते गोव्रजेऽपि वा॥ आश्रमे वृक्षमूले
वा गोब्राह्मणहितेरतः॥७८॥ ब्राह्मणार्थे गवार्थे वा सद्यः प्रा-
णान्परित्यजेत्॥ मुच्यते ब्रह्महत्याया गोप्ता गोर्ब्राह्मणस्य-
च॥७९॥

۷۶ - خواہ وید پڑھے ہوئے براہمن کو تمام دن دھن دیوے خواہ تمام عمر تک بھوجن کیواسطے براہمن کو دھن دیوے یا گھر مع سامان کے براہمن کو دیوے یہ بھی اگیان ہے براہمن ذات کے مارنے میں براہمن کو جاننا۔

۷۷ - خواہ ویشیہ بھوجن کرتا ہوا پچھم باہنی سرسوتی میں اشنان کرے یا تھوڑا بھوجن کرتا ہوا تین دفعہ وید کی سنگھتا کو پڑھے یہ گیان سے براہمن ذات کو مارنے میں براہمن کو جاننا۔

۷۸ - گئو اور براہمن کا بھلا کرتا ہوا ڈاڑھی مونچھ و سر منڈائے و ناخن کٹائے ہوئے گاؤں کے روبرو یا گئو کے مقام یا درخت کی جڑ میں قیام کرے جنگل میں کٹی بنا کر رہے اسی لئے کیواسطے کہا ہے

۷۹ - خواہ بارہ سال کے برت کا آغاز کیا ہے اور درمیان ان میں براہمن اور گئو کی بپت چھوڑانے کیواسطے پران کا تیاگ کرے تو اسوقت برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے۔

ब्रह्महा द्वादश समाः कुटीं कृत्वा वने वसेत्॥ भैक्षाश्यात्मविशु-
द्ध्यर्थं कृत्वा शवशिरोध्वजम्॥७२॥ लक्ष्यं शस्त्रभृतां वा स्याद्वि-
दुषामिच्छयात्मनः॥ प्रास्येदात्मानमग्नौ वा समिद्धे त्रिरवा-
क्शिराः॥७३॥ यजेत वाश्वमेधेन स्वर्जिता गोसवेन वा॥
अभिजिद्विश्वजिद्भ्यां वा त्रिवृताग्निष्टुतापि वा॥७४॥ जपन्
वान्यतमं वेदं योजनानां शतं व्रजेत्॥ ब्रह्महत्यापनोदाय मि-
तभुङ् नियतेन्द्रियः॥७५॥

۷۲ - براہمن کو مارنیوالا اپنے پاک ہونے کیواسطے جنگلمین کٹی بناکر بارہ برس تک اسمین رہے جس براہمن کو مارا ہو اسکا سر دھوجا بین رکھکر بھیکھ مانگے یہ پراشچت نرگن براہمن کے مارنیمین گنوان براہمن کو بدون اچھا کے جاننا۔

۷۳ - خواہ اپنی خواہش سے علم اسلحہ کو جاننے والے آدمیون کے اسلحہ کا نشانہ ہووے یا نیچے سر کرکے تین دفعہ اپنی آتما کو اگن مین ڈالے یہ پرایشچت ہی اور آگے کے اشلوک مین جو اسومیدھ یگیہ کہینگے وہ بھی نرگن براہمنون کو گنوان کشتری اچھا سے مارے وہان جاننا۔

۷۴ - خواہ اسومیدھ سورجت گوسب اگنجت بشوجت ترورت اگنشوت انھون مین سے کوئی ایک یگیہ کرے یہ پرایشچت اگیان سے براہمن کو مارے وہان براہمن وغیرہ تینون درن کو جاننا۔

۷۵ - برہم ہتیا چھوڑانے کیواسطے تھوڑا بھوجن کرتا ہوا اندریون پر غالب ہوکر کسی ایک وید کو پڑھتا ہوا سو جوجن گمن کرے یہ بھی اگیان سے براہمن ذات کے مارنے مین براہمن کشتری ویشیہ کو پراشچت جاننا۔

ब्राह्मणस्य रुजः कृत्वा घ्रातिरघ्रेयमद्ययोः ॥ जैह्म्यं च मैथुनं पुं-
सि जातिभ्रंशकरं स्मृतम् ॥ खराश्वोष्ट्रमृगेभानामजाविकवध-
स्तथा ॥ संकरीकरणं ज्ञेयं मीनाहिमहिषस्य च ॥ ६८ ॥ निन्दि-
तेभ्यो धनादानं वाणिज्यं शूद्रसेवनम् ॥ अपात्रीकरणं ज्ञेय
मसत्यस्य च भाषणम् ॥ ६९ ॥ कृमिकीटवयोहत्या मद्यानुग-
तभोजनम् ॥ फलैधः कुसुमस्तेयमधैर्यं च मलावहम् ॥ ७० ॥
एतान्येनांसि सर्वाणि यथोक्तानि पृथक् पृथक् ॥ यैर्यैर्व्रतैरपो
ह्यन्ते तानि सम्यङ् निबोधत ॥ ७१ ॥

۶۷- براہمن کو ڈنڈ دینا یعنے ہاتھ پاؤں وغیرہ کی ایذا دینا لہسن و پیشاب و شراب کا سونگھنا
کٹل پنا منھ وغیرہ میں جماع کرنا یہ سب ذات کو بھرشٹ کرنیوالے ہیں-

۶۸- گدھا گھوڑا - اونٹ - ہاتھی - بکرا - بھیڑ - مچھلی - سانپ - بھینسا - انھوں کا مارنا سنکری-
کرن کہلاتا ہے-

۶۹- نندت آدمی سے دھن لینا بنیا کا کام کرنا شودر کا سیون کرنا جھوٹھ بولنا یہ اپاتری
کرن کہلاتے ہیں -

۷۰- چھوٹے کیڑے بڑے کیڑے و پرند انھوں کا مارنا کھانے کے لائق چیز پیاری میں رکھی
ہوئی شراب کے ساتھ آئی ہوئی ہو اس چیز کا کھانا پھل و لکڑی و پھول کا چرانا دھیرج نکرنا
یہ سب ملاوہ کہلاتے ہیں-

۷۱- یہ سب پاپ علیٰحدہ علیحدہ کہے یہ سب جس جس برت کرنیسے دور ہوتے ہیں ان برتوں
کو کہتے ہیں-

सर्वाकरेष्वधीकारो महायंत्रप्रवर्त्तनम्॥ हिंसौषधीनां स्त्र्याजीवोऽभिचारो मूलकर्म च॥ इन्धनार्थमशुष्काणां द्रुमाणामवपातनम्॥ आत्मार्थं च क्रियारम्भो निन्दितान्नादनं तथा॥ ६४॥ अनाहिताग्निता स्तेयमृणानामनपक्रिया॥ असच्छास्त्राधिगमनं कौशीलव्यस्य च क्रिया॥ ६५॥ धान्यकुप्यपशुस्तेयं मद्यपस्त्रीनिषेवणम्॥ स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधो नास्तिक्यं चोपपातकम्॥ ६६॥

۶۳۔ سونا وغیرہ کی پیدائش کا جو مقام ہے اسپر بحکم حاکم وقت اختیار ہونا پل وغیرہ کا باندھنا دوا اون کا مارنا یعنی کشتہ بنانا اپنی عورت کو کسبی بنا کر دوسرے مرد کے جماع سے جو دولت ملی اُس سے اوقات بسر کرنا شاستر میں لکھے ہوئے مارن پرلوک کو کرنا منتر یا او وید وغیرہ کے ذریعہ سے کسبی کرن کرنا۔

۶۴۔ ایندھن کیواسطے گیلے درخت کو گرانا بدون دیوتا و پتروں کے صرف اپنے ہی واسطے کھانا بنانا بدون خواہش کے ایک دفعہ لسن وغیرہ جو کھانے کے لائق نہیں ہے اُسکو کھانا۔

۶۵۔ ادھکار ہوتے ہوئے اگن ہوتر کو ترک کرنا سونا چھوڑ کر چاندی وغیرہ چرانا تینون رن (یعنی رشی رن دیورن پتر رن) کو نہ ادا کرنا وید و دھرم شاستر کے خلاف جو شاستر ہے اُسکو سیکھنا ناچنا گانا بجانا۔

۶۶۔ دھانیہ تانبا و لوہا وغیرہ و چارپایہ کا چرانا براہمن کشتری ویشیہ کی شرابی عورت سے جماع کرنا استری و شودر و ویشیہ و کشتری انکوں کا مارنا یہ لوگ نہیں ہے ایسا سمجھنا یہ سب ایک ایک اپ پاتک کہلاتے ہیں۔

रेतःसेकःस्वयोनीषुकुमारीष्वन्त्यजासुच ॥ सख्युःपुत्रस्यच
स्त्रीषुगुरुतल्पसमंविदुः ॥ ५८ ॥ गोवधोऽयाज्यसंयाज्यपार
दार्यात्मविक्रयाः ॥ गुरुमातृपितृत्यागःस्वाध्यायाग्न्योःसु-
तस्यच ॥ ५९ ॥ परिवित्तितानुजेऽनूढेपरिवेदनमेवच ॥ तयो-
र्दानंचकन्यायास्तयोरेवचयाजनम् ॥ ६० ॥ कन्यायादूषणंचै-
ववार्द्धुष्यंव्रतलोपनम् ॥ तडागारामदाराणामपत्यस्यचवि-
क्रयः ॥ ६१ ॥ व्रात्यताबान्धवत्यागोभृत्याध्यापनमेवच ॥
भृताच्चाध्ययनादानमपण्यानांचविक्रयः ॥ ६२ ॥

۵۸۔ سگی بہن اور کماری اور چانڈالی اور دوست کی زوجہ اور بیٹے کی زوجہ انھون کے ساتھ جماع کرنا والدہ کے ساتھ جماع کرنیکے برابر ہے۔

۵۹۔ گئو کو مارنا جو یگیہ کرنیکے لائق نہین ہے اسکو یگیہ کرانا دوسرے کی زوجہ سے جماع کرنا اپنی آتما کو فروخت کرنا گرو اور ماتا اور پتا کو ترک کرنا وید خوانی اور اگنی کی سیوا اور بیٹا کو ترک کرنا

۶۰۔ بے شادی بڑے بھائی کے ہونے پر چھوٹے بھائی کی شادی ہو جانا اور ان دونون بھائیون کو کنیا دینا اور انکو یگیہ کرانا۔

۶۱۔ کنیا کی فرج مین انگلی ڈالکر باعیب کرنا سود لیکر زندگی بسر کرنا برہم چاری ہوکر جماع کرنا تالاب و باغیچہ و عورت و بیٹے کو فروخت کرنا۔

۶۲۔ وقت پر جنیو کا نہونا چاچا وغیرہ کی سیوا نہ کرنا دولت لیکر پڑھانا دولت دیکر پڑھنا نل وغیرہ جو فروخت کرنیکے لائق نہین ہین انکو فروخت کرنا۔

एवंकर्मविशेषेणजायन्तेसद्विगर्हिताः।।जडमूकान्धबधिरा-
विकृताकृतयस्तथा।।५२।।चरितव्यमतोनित्यंप्रायश्चित्तंवि-
शुद्धये।।निन्द्यैर्हिलक्षणैर्युक्ताजायन्तेऽनिष्कृतैनसः।।५३।।
ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वङ्गनागमः।।महान्तिपातकान्या-
हुःसंसर्गश्चापितैःसह।।५४।।अनृतंचसमुत्कर्षेराजगामिच
पैशुनम्।।गुरोश्चालीकनिर्बन्धःसमानिब्रह्महत्यया।।५५।।
ब्रह्मोज्झतावेदनिन्दाकौटसाक्ष्यंसुहृद्वधः।।गर्हितानाद्ययो-
र्जग्धिःसुरापानसमानिषट्।।५६।।निक्षेपस्यापहरणंनरा-
श्वरजतस्यच।।भूमिवज्रमणीनांचरुक्मस्तेयसमंस्मृतम्।।
५७।।

۵۲ — آدمی اس راہ سے کھوٹا کام کر کے بھلے لوگون مین نندت ہوتا ہے اور جاہل و گونگے و اندھے و بہرے وغیرہ عیوب کو پاتا ہے ۔

۵۳ — اسلیے پاک ہونیکے واسطے ہمیشہ پرائشچت کرین جنھون نے پرائشچت نہین کیا وی نندت لکشن والے ہوتے ہین

۵۴ — برہم ہتیا شراب خواری برہمن کا دھن اشرفی یا زر یا سونا چرانا والدہ سے جماع یہ چار مہاپاپ ہین انھون کے ساتھ میل و ملاپ کرنے سے پانچوان مہاپاتک ہے ۔

۵۵ — نیچ ذات ہو کر کہو کہ ہم بڑی ذات والے ہین اسطرح جھوٹھ بولنا اور کسی کا اس قسم کا دوش کہ جسکے کہنے سے اسکی موت ہو راجہ کے روبرو کہنا گرو سے جھوٹھ بولنا یہ سب برہم ہتیا کے برابر ہین

۵۶ — پڑھے ہوئے وید کو بھولنا وید کی برائی کرنا گواہ ہو کر جھوٹھ بولنا دوست کو مارنا لہسن وغیرہ کا کھانا لشا وغیرہ کا کھانا یہ سب شراب نوشی کے برابر ہین ۔

۵۷ - زر امانت و آدمی و گھوڑا و چاندی و زمین و ہیرا و منی انھون کا چرانا سونا چرانے کے برابر ہے

अकामतः कृतंपापंवेदभ्यासेनशुद्ध्यति ॥ कामतस्तुकृतंमोहा-
त्प्रायश्चित्तैः पृथग्विधैः ॥ ४६ ॥ प्रायश्चित्तीयतांप्राप्यदैवात्पू-
र्वकृतेनवा ॥ नसंसर्गंव्रजेत्सद्भिः प्रायश्चित्तेऽकृतेद्विजः ॥ ४७ ॥
इहदुश्चरितैः केचित्केचित्पूर्वकृतैस्तथा ॥ प्राप्नुवन्तिदुरात्मानो
नराःरूपविपर्ययम् ॥ ४८ ॥ सुवर्णचौरः कौनख्यंसुरापः श्याव
दन्तताम् ॥ ब्रह्महाक्षयरोगित्वंदौश्चर्म्यंगुरुतल्पगः ॥ ४९ ॥
पिशुनः पौतिनासिक्यंसूचकः पूतिवक्त्रताम् ॥ धान्यचौरोऽ
ङ्गहीनत्वमातिरैक्यन्तुमिश्रकः ॥ ५० ॥ अन्नहर्तामयावित्वं-
मौक्यंवागपहारकः ॥ वस्त्रापहारकः श्वैत्र्यंपङ्गुतामश्वहा-
रकः ॥ ५१ ॥

۴۶ ۔ بدون خواہش کے کیا ہوا پاپ وید کی مہارت سے چھوٹتا ہے اور شوق سے جو پاپ کیے
وہ انواع اقسام کے پرایشچت کرنیسے چھوٹتے ہیں۔

۴۷ ۔ بر تقاضائے مقسوم پہلے جنم میں کئے ہوئے پاپ سے پرایشچت کے لائق ہو کر سجنوں کے
ساتھ بھوجن و قیام و بغلگیری وغیرہ میلاپ نکرے۔

۴۸ ۔ کوئی آدمی اس لوک میں کھوٹے کام کرنیسے اور کوئی آدمی پہلے جنم میں کھوٹے
کام کرنیسے بدصورتی کو پاتے ہیں۔

۴۹ ۔ سونا چرانیوالا شراب پینے والا برہمن کو مارنیوالا گورو کی عورت سے جماع کرنیوالا
سلسلے سے ناخن ناکارہ پیدایش سے سیاہ دندان کشٹی روگ ناقص جلد پاتا ہے۔

۵۰ ۔ چغل خور اشارہ سے کام کو جاننے والا و غلہ چرانیوالا ملاوٹ کرنیوالا یہ سب سلسلے سے
بدبوے بینی و بدبوے دہن کسی عضو کا نہونا اور کسی عضو کا زیادہ ہونا ان عیبوں کو پاتے ہیں۔

۵۱ ۔ غلہ چرانیوالا جانکر چپ رہنے والا کپڑا چرانیوالا گھوڑا چرانیوالا سلسلہ سے عام روگ
گونگاپن سفید کوڑھ لنگڑاپن کو پاتا ہے

इन्द्रियाणियशःस्वर्गमायुःकीर्त्तिंप्रजाःपशून्॥ हन्त्यल्पद-क्षिणोयज्ञस्तस्मान्नाल्पधनोयजेत्॥ ४०॥ अग्निहोत्र्यपवि-ध्याग्नीन्ब्राह्मणःकामकारतः॥ चान्द्रायणंचरेन्मासंवीर-हत्यासमंहितत्॥ ४१॥ येशूद्रादधिगम्यार्थमग्निहोत्रमुपा-सते॥ ऋत्विजस्तेहिशूद्राणांब्रह्मवादिषुगर्हिताः॥ ४२॥ ते-षांसततमज्ञानांवृषलाग्न्युपसेविनाम्॥ पदामस्तकमाक्र-म्यदातादुर्गाणिसन्तरेत्॥ ४३॥ अकुर्वन्विहितंकर्मनिन्दितं-चसमाचरन्॥ प्रसक्तश्चेन्द्रियार्थेषुप्रायश्चित्तीयतेनरः॥ ४४ अकामतःकृतेपापेप्रायश्चित्तंविदुर्बुधाः॥ कामकारकृतेऽ-प्याहुरेकेश्रुतिनिदर्शनात्॥ ४५॥

۴۰۔ تھوڑی دکشنا والی یگیہ اندری یش سورگ عمر نیکنامی اولاد چارپایہ ان سب کو نیست نابود کرتی ہے اسلئے تھوڑا دھن والا یگیہ نکرے۔

۴۱۔ اگن ہوتری برہمن خواہش سے صبح و شام ہون نکرے تو بیٹا مارنے کا پاپ ہوتا ہے اس پاپ دور ہونیکے واسطے ایک مہینہ چاندراین برت کرے۔

۴۲۔ جو براہمن شودر سے دھن لیکر اگن ہوتر کرتا ہے وہ شودروں کا رتوج ہوتا ہے اسکو کچھ پھل نہیں ہوتا اور وید پڑھنے والے براہمنوں میں نندت کہلاتا ہے۔

۴۳۔ وہ شودر دیبہ دینے سے اپنے رتوجوں کے ماتھے پہ پانوں دھرکر نرک کو ترتا ہے اور رتوجوں کو کچھ پھل نہیں ہوتا۔

۴۴۔ شاستر میں لکھے ہوئے کرم کو نکرنے سے اور اندنت کرم کرنے سے اور اندریوں کے مطالب میں بدل مشغول ہونے سے آدمی پراسچت کرنیکے لائق ہوتا ہے۔

۴۵۔ پنڈتوں نے بدون خواہش کے پاپ کرنے میں پراسچت کو کہا اور خواہش سے پاپ کرنے میں بھی وید کے حکم سے پراسچت ہے۔

क्षत्रियो बाहुवीर्येण तरेदापदमात्मनः।। धनेन वैश्यशूद्रौ तु जप
होमैर्द्विजोत्तमः।।३४।। विधाता शासिता वक्ता मैत्रो ब्राह्मण उ-
च्यते।। तस्मै नाकुशलं ब्रूयान्न शुष्कां गिरमीरयेत।।३५।। न वै
कन्या न युवतिर्नाल्पविद्यो न बालिशः।। होता स्यादग्निहोत्रस्य
नार्त्तो नासंस्कृतस्तथा।।३६।। नरके हि पतन्त्येते जुह्वन्तः स च
यस्य तत्।। तस्माद्वैतानकुशलो होता स्याद्वेदपारगः।।३७।।प्र
जापत्यमदत्वाश्वमग्न्याधेयस्य दक्षिणाम्।। अनाहिताग्नि
र्भवति ब्राह्मणो विभवे सति।।३८।। पुण्यान्यन्यानि कुर्वीत
श्रद्धधानो जितेन्द्रियः।। नत्वल्पदक्षिणैर्यज्ञैर्यजेतेह कथंचन
।।३९।।

۳۴ - کشتری اپنی قوت بازو سے اور ویشیہ اور شودر دونوں دولت سے اور براہمن جپ اور ہون سے وقت مصیبت کو دور کریں۔

۳۵ - جو براہمن شاستر میں لکھے ہوئے کرم کا کرنیوالا اور بیٹے اور شاگرد وغیرہ کو پڑھانیوالا دیڑ اپرشچت وغیرہ کو کہنے والا اور سب جانداروں سے دوستی رکھنے والا ہے اُسکو نامرغوب بات وسخت کلمہ نہ کہنا چاہئے۔

۳۶ - کنیان اور جوان اور تھوڑے علم والا اور مورکھ یعنی بیوقوف اور بیمار اور جنیو نہ کیئے والا یہ سب وقت صبح وشام اگن ہوتر نہ کریں۔

۳۷ - اگر ان سب کو کریں تو نرک میں جاتے ہیں اور جسکی اگن ہو یعنی جو یجمان ہے وہ بھی نرک میں جاتا ہے اسلئے جو وید کے پار گیا ہوا اور اگن ہوتر کرم کو جاننے والا ہو وہی یجمان کا ہون کرے۔

۳۸ - براہمن کیواسطے اگن ہوتر کی دکشنا جو گھوڑا ہے اُسکو حسب دولت ہو کر بھی نہ دیوے تو اگن ہوتر کا پھل اُس براہمن کو نہیں ہوتا۔

۳۹ - جو آدمی اندریوں کو جیت کر شردھا سے دوسرا پنیہ کرے لیکن تھوڑی دکشنا سے یگیہ یکبھی

आपत्कल्पेन यो धर्मं कुरुतेऽनापदि द्विजः ॥ स नाप्नोति फलं तस्य परत्रेति विचारितम् ॥ २८ ॥ विश्वैश्च देवैः साध्यैश्च ब्राह्मणैश्च महर्षिभिः ॥ आपत्सु मरणाद्भीतैर्विधेः प्रतिनिधिः कृतः ॥ २९ ॥ प्रभुः प्रथमकल्पस्य योऽनुकल्पेन वर्त्तते ॥ न सांपरायिकं तस्य दुर्मतेर्विद्यते फलम् ॥ ३० ॥ न ब्राह्मणो वेदयेत किंचिद्राजनि धर्मवित् ॥ स्ववीर्येणैव तान् शिष्यान्मानवानपकारिणः ॥ ३१ ॥ स्ववीर्याद्राजवीर्याच्च स्ववीर्यं बलवत्तरम् ॥ तस्मात्स्वेनैव वीर्येण निगृह्णीयादरीन्द्विजः ॥ ३२ ॥ श्रुतीरथर्वाङ्गिरसीः कुर्यादित्यविचारयन् ॥ वाक्शस्त्रं वै ब्राह्मणस्य तेन हन्यादरीन्द्विजः ॥ ३३ ॥

۲۸ - وقت مصیبت نہین ہو اور جو براہمن وقت مصیبت کے دھرم کرتا ہے وہ پرلوک مین اسکے پھل کو نہین پاتا -

۲۹ - موت سے خوفناک وشوے دیو وسادھگن وبراہمن وبرے رشی لوگ ان سبھون نے وقت مصیبت مین اچھے دھرم کے خلاف عمل کیا ہی -

۳۰ - مقدم دھرم کے کرنے مین صاحب طاقت ہوکر خلاف دھرم کرنیوالا پرلوک مین اس خلاف دھرم کا پھل نہین پاتا -

۳۱ - دھرم کو جاننے والا براہمن راجہ سے کچھ نہ کہے بلکہ اپنی قوت سے اپکاری آدمیونکو سزا دیوے -

۳۲ - راجہ کے پراکرم سے اپنا پراکرم بڑا ہے اسلئے براہمن اپنے پراکرم سے دشمنون کو مغلوب کرے -

۳۳ - اتھرب وانگراش نے جو مارن پرلوگ کہا اسکو کرے اسمین کچھ بچار نکرے براہمن کی بانی ہی ہتھیار ہو اس سے دشمنونکو مارے -

तस्य भृत्यजनं ज्ञात्वा स्वकुटुम्बान्महीपतिः॥ श्रुतशीले च
विज्ञाय वृत्तिं धर्म्यां प्रकल्पयेत्॥ २२॥ कल्पयित्वाऽस्य वृ-
त्तिं च रक्षेदेनं समन्ततः॥ राजा हि धर्मषड्भागं तस्मात्प्राप्नोति
रक्षितात्॥ २३॥ न यज्ञार्थं धनं शूद्राद्विप्रो भिक्षेत कर्हिचित्॥
यजमानो हि भिक्षित्वा चाण्डालः प्रेत्य जायते॥ २४॥ यज्ञार्थ-
मर्थं भिक्षित्वा यो न सर्वं प्रयच्छति॥ स याति भासतां विप्रः का-
कतां वा शतं समाः॥ २५॥ देवस्वं ब्राह्मणस्वं वा लोभेनोपहि-
नस्ति यः॥ स पापात्मा परे लोके गृध्रोच्छिष्टेन जीवति॥ २६॥
इष्टिं वैश्वानरीं नित्यं निर्वपेदब्दपर्यये॥ क्लृप्तानां पशुसोमा-
नां निष्कृत्यर्थमसम्भवे॥ २७॥

۲۲- راجہ براہمن کے نوکر و عیال و اطفال و وید خوانی کی عادت ان سبکو جان کر دھرم سے مشمول وجہ معاش کو مقرر کرے۔

۲۳- براہمن کی وجہ معاش کر کے اُسکی حفاظت چاروطرف سے کرے اُس حفاظت سے براہمن جو دھرم کریگا اُسکا چھٹواں حصہ راجہ پاویگا۔

۲۴- براہمن یگیہ کے لئے شودر سے کبھی دھن نہ مانگے اگر مانگ کر اُس دھن سے یگیہ کرے تو دوسرے جنم مین چانڈال ہوتا ہے۔

۲۵- یگیہ کیواسطے بھیکھ مانگ کر دولت فراہم کر کے تمام دولت کو یگیہ مین نہ لگا دے تو سو جنم تک بھاس نام پرند اور کوّا ہوتا ہے

۲۶- جو آدمی طمع سے براہمن کی دربیہ اور دیوتا کی دربیہ برباد کرتا ہے وہ پاپی پرلوک مین گدھ پرند کے پس خوردہ سے زندگی بسر کرتا ہے۔

۲۷- پس یگیہ و سوم یگیہ تمام سال مین ایکمرتبہ کرنا چاہئے اگر یہ نہو سکے تو اُسکی پرایشچت کے لئے اخیر سال پر اگن دیوتا کی یگیہ کرے۔

तथैव सप्तमे भक्ते भक्तानि षडनश्नता ॥ अश्वस्तनविधाने
न हर्त्तव्यं हीनकर्मणः ॥ १६ ॥ खलात्क्षेत्रादगाराद्वा यतो वा-
प्युपलभ्यते ॥ आख्यातव्यं तु तत्तस्मै पृच्छते यदि पृच्छति १७
॥ ब्राह्मणस्वं न हर्त्तव्यं क्षत्रियेण कदाचन ॥ दस्युनिष्क्रिय-
योस्तु स्वमजीवन्हर्त्तुमर्हति ॥ १८ ॥ योऽसाधुभ्योऽर्थमादाय
साधुभ्यः संप्रयच्छति ॥ स कृत्वा प्लवमात्मानं संतारयति ता-
वुभौ ॥ १९ ॥ यद्धनं यज्ञशीलानां देवस्वं तद्विदुर्बुधाः ॥ अय-
ज्वनां तु यद्वित्तमासुरस्वं तदुच्यते ॥ २० ॥ न तस्मिन्धारयेद्दण्डं
धार्मिकः पृथिवीपतिः ॥ क्षत्रियस्य हि बालिश्याद्ब्राह्मणः
सीदति क्षुधा ॥ २१ ॥

۱۶- دن میں دو دفعہ بھوجن کرنا شاستر کا حکم ہے جو کسی برہمن نے چھ دفعہ بھوجن نہین کیا یعنے تین دن فاقہ ہوا اور چوتھے دن ایک دفعہ کیواسطے بھی بھوجن نہو تو بڑا کام کرنیوالے سے چوری کرکے لینا چاہیے

۱۷- کھلیان سے یا کھیت سے یا گھر سے یا جہان سے ملے وہانسے غلہ چراوے اور جب غلہ کا مالک پوچھے کہ تم نے کہان سے غلہ چرایا تب کہدیوے۔

۱۸- کشتری برہمن کا دھن کبھی نہ لیوے اور نہایت وقت مصیبت ہو تب کھوٹا کام کرنیوالا اور شاستر مین کہے ہوئے دھرم کو چھوڑنیوالا جو برہمن و کشتری ہے اسکے گھر سے چوری کرے۔

۱۹- جو آدمی اساد ہو لوگون سے روپیہ لیکر ساد ہو لوگون کو دیتا ہے وہ اپنے کو ناو یعنی کشتی بناکر دونو کو تارتا ہے

۲۰- یگیہ کرنیوالون کا دھن دیوتاون کا دھن اور یگیہ نہ کرنیوالون کا دھن راکشسون کا دھن کہلاتا ہے اسطرح پنڈتون نے کہا ہے۔

۲۱- ایسے کرم مین جسکا بیان اوپر ہوا راجہ سزا نہ دیوے کیونکہ راجہ کی کمی سے برہمن بھوک سے دکھی ہوتا ہے۔

योवैश्यः स्याद्बहुपशुर्हीनक्रतुरसोमपः ॥ कुटुम्बात्तस्य तद्द्र-
व्यमाहरेद्यज्ञसिद्धये ॥ १२ ॥ आहरेत्त्रीणि वा द्वे वा कामं शू-
द्रस्य वेश्मनः ॥ नहि शूद्रस्य यज्ञेषु कश्चिदस्ति परिग्रहः ॥ १३
॥ योऽनाहिताग्निः शतगुरयज्वा च सहस्रगुः ॥ तयोरपि कु-
टुंबाभ्यामाहरेदविचारयन् ॥ १४ ॥ आदाननित्याच्चादातु-
राहरेदप्रयच्छतः ॥ तथा यशोऽस्य प्रथते धर्मश्चैव प्रवर्द्धते ॥
॥ १५ ॥

۱۲- تو جو ویشیہ یک یگیہ اور سوم یگیہ نکرتا ہو اور بہت چار پایہ (یعنے گئو وغیرہ) رکھتا ہو اُسکے
گھر سے اس انگ یعنی سامان کے لائق دولت کو زور سے یا چوری سے یگیہ کرنیوالا لیوے -
۱۳- جب یگیہ کے دو انگ (یعنے سامان) خواہ تین انگ بدون دریہ کے پورے نہیں
ہوتے اور ویشیہ سے بھی دھن نہیں ملتا تو شودر کے گھر سے زور سے یا چوری سے دھن لینا
منع نہیں ہے -
۱۴- جو شخص اگنہوتری نہیں ہے اور سو گئو پاس رکھتا ہے یا یگیہ نہیں کرتا اور ہزار گئو رکھتا ہے اُن
دونوں کے گھر سے یگیہ کا انگ پورا ہونیکے واسطے دھن لیوے اسمین کچھ بچار نہ کرے -
۱۵- جو براہمن ہر روز دان لیتا ہے اور باولی کنوان و تالاب نہیں کھدواتا ہے اور یگیہ
نہیں کرتا اور دان نہیں دیتا ہے اس سے یگیہ کا انگ پورا ہونے کے واسطے دھن مانگا
اور وہ نہیں دیتا ہے تو زور سے یا چوری سے اُسکے گھر سے دھن لیوے اس سے لینے والے
کی شہرت ہوتی ہے اور دھرم بڑھتا ہے -

धनानि तु यथाशक्ति विप्रेषु प्रतिपादयेत् ॥ वेदवित्सु विविक्ते-
षु प्रेत्य स्वर्गं समश्नुते ॥ ६ ॥ यस्य त्रैवार्षिकं भक्तं पर्याप्तं भृत्यवृ-
त्तये ॥ अधिकं वापि विद्येत स सोमं पातुमर्हति ॥ ७ ॥ अतः
स्वल्पीयसि द्रव्ये यः सोमं पिबति द्विजः ॥ स पीतसोमपूर्व्वोऽ
पि न तस्याप्नोति तत्फलम् ॥ ८ ॥ शक्तः परजने दाता स्वजने-
दुःखजीविनि ॥ मध्वापातो विषास्वादः स धर्मप्रतिरूपकः ॥
९ ॥ भृत्यानामुपरोधेन यत्करोत्यौर्ध्वदैहिकम् ॥ तद्भवत्यसु-
खोदर्कं जीवतस्य मृतस्य च ॥ १० ॥ यज्ञश्चेत्प्रतिरुद्धः स्यादे-
केनाङ्गेन यज्वनः ॥ ब्राह्मणस्य विशेषेण धार्मिके सति रा-
जनि ॥ ११ ॥

۶- جو براہمن زن وفرزند کی پرورش مین ہو اور وید پڑھتا ہو راجہ ایسی براہمن کو اپنی طاقت کے موافق دولت دیوے وہ راجہ اس لوک اور پرلوک کو حاصل کرتا ہے۔

۷- جس آدمی کے پاس نوکر وزن وفرزند وغیرہ زیر سایہ رہنے والے کے خرچ کے لائق تین سال تک کھانے کے واسطے غلہ موجود ہے وہ سوم یگیہ کرنیکے لائق ہے۔

۸- اس سے کم دولت رکھنے والا سوم یگیہ کرے تو اوسکا پھل نہین پاتا۔

۹- غیر آدمیون کو غلہ دینے مین صاحب مقدور ہے اور اپنی عیال واطفال کو کھانا نہین دیتا اور وے عیال واطفال تکلیف سے بسر کرتے ہین ایسا آدمی دھرم کرنیوالا نہین ہے پہلے نیکنامی ملتی ہے پیچھے نرک ملتا ہے۔

۱۰- جو شخص نوکر وچاکر وزن وفرزند وغیرہ کو دکھ دیکر پرلوک کے واسطے دان وغیرہ کرتا ہے وہ دان اسکی زندگی تک ہو بعد مرنیکے دکھ دینے والا ہے۔

۱۱- دھرماتما راجہ کے موجود ہونے پر جس براہمن یا کشتری سے یگیہ کی سامگری کا کوئی ایک سامان طیار نہو

सान्तानिकं यक्ष्यमाणमध्वगं सर्ववेदसम् ॥ गुर्वर्थं पितृमात्रर्थं स्वाध्यायार्थ्युपतापिनः ॥ १ ॥ नवैतान्स्नातकान्विद्याद्ब्राह्मणान्धर्मभिक्षुकान् ॥ निःस्वेभ्यो देयमेतेभ्यो दानं विद्याविशेषतः ॥ २ ॥ एतेभ्यो हि द्विजाग्र्येभ्यो देयमन्नं सदक्षिणम् ॥ इतरेभ्यो बहिर्वेदि कृतान्नं देयमुच्यते ॥ ३ ॥ सर्वरत्नानि राजा तु यथार्हं प्रतिपादयेत् ॥ ब्राह्मणान्वेदविदुषो यज्ञार्थं चैव दक्षिणाम् ॥ ४ ॥ कृतदारोऽपरान्दारान्भिक्षित्वा योऽधिगच्छति ॥ रतिमात्रं फलं तस्य द्रव्यदातुस्तु सन्ततिः ॥ ५ ॥

۱- شادی کی خواہش کرنیوالا جو سنتوم وغیرہ یگیہ کی خواہش کرنیوالا مسافر سرب دچھن دکشنا والا بسوجت نام یگیہ کو کرنیوالا ودّیا گرو ماتا پیتا ان تینیوں کو کھانا و کپڑا دینے والا وقت پڑھنے ویدکے کھانے اور کپڑے کی خواہش کرنیوالا بیمار

۲- یہ نو براہمن سناتک کہلاتے ہیں یعنے برہم چاری کہلاتے ہیں اور دھرم بھکشا کا سوال رکھتے ہیں یہ سب بے زر ہوں تو انکی ودّیا کے لائق سونا وغیرہ دینا چاہیے -

۳- یہ نو براہمن افضل ہیں انکو بیدی کے اندر غلہ مع دکشنا دینا چاہیے اور جو براہمن انکے سوا ہیں انکو بیدی کے باہر طیار کھانا دینا کہتے ہیں -

۴- راجہ وید پڑھنے والے براہمن کو اوسکی ودیا کے لائق سب رتن دیوے اور یگیہ کے واسطے بھی دکشنا دیوے -

۵- پہلی عورت موجود ہو اور بھکشا سے دولت فراہم کرکے اس روپیہ سے دوسری شادی کرے تو اسکو صرف جماع کا لطف ملتا ہے اور اولاد اسی کی ہے جسنے دولت دی -

+ چونکہ اس ادھیاے میں پرائشچتوں کو بیان کیا جائیگا اسواسطے پہلے ان براہمنوں کو بیان کیا جو کہ دان دینے کے لائق ہیں -

एते चतुर्णां वर्णानामापद्धर्माः प्रकीर्तिताः। यान्सम्यगनुतिष्ठन्तो व्रजन्ति परमां गतिम् ॥१३०॥ एष धर्मविधिः कृत्स्नश्चातुर्वर्ण्यस्य कीर्तितः। अतः परं प्रवक्ष्यामि प्रायश्चित्तविधिं शुभम् ॥१३१॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां
दशमोऽध्यायः १०

۱۳۰ - وقت مصیبت مین چارو ورن کیواسطے اس دھرم کو کہا جس دھرم کے کرنے سے پرم گت کو پاتا ہے -

۱۳۱ - چارو ورنون کا یہ طریق دھرم کہا اسکے بعد پرایشچت (یعنی کفارہ) کے نیک طریق کہتے ہین -

منوجی کا دھرم شاستر بھرگو جی کی سنگھتا کا
دسوان ادھیا سماپت ہوا -

न शूद्रे पातकं किंचिन्न च संस्कारमर्हति ।। नास्याधिकारो धर्मेऽस्ति न धर्मात्प्रतिषेधनम् ।। १२६ ।। धर्मेप्सवस्तु धर्मज्ञाः सतां वृत्तमनुष्ठिताः ।। मंत्रवर्ज्यं न दुष्यंति प्रशंसां प्राप्नुवन्ति च ।। १२७ ।। यथा यथा हि सद्वृत्तमातिष्ठत्यनसूयकः ।। तथा तथेमं चामुं च लोकं प्राप्नोत्यनिंदितः ।। १२८ ।। शक्तेनापि हि शूद्रेण न कार्यो धनसंचयः ।। शूद्रो हि धनमासाद्य ब्राह्मणानेव बाधते ।। १२९ ।।

۱۲۶- شودر کو لہسن وغیرہ کھانے سے پاپ نہیں ہوتا اور شودر کو جنیو وغیرہ سنسکار بھی نہیں ہے اور اگنی ہوتر وغیرہ دھرم کا ادھکار بھی نہیں ہے پاک یگیہ وغیرہ دھرم کی ممانعت نہیں ہے یہ بات تو کہہ آئے ہیں مگر شلوک آئندہ کیواسطے اصل بات کا اظہار کرنیوالا ہے۔

۱۲۷- اپنے دھرم کو جاننے والا دھرم کی خواہش کرنیوالا جو نیکوں کا فعل چال چلن کرنیوالا جو شودر ہے وہ نمسکار منتر سے پنچ یگیہ کو کرے اور انکو ترک نہ کرے تو اس لوک میں نیکنامی حاصل کرتا ہے۔

۱۲۸- دوسرے کے گن کی نندا نکرنیوالا شودر جس جس طرح بھلے لوگوں کے آچرن کو کرتا ہے اسی طرح اس لوک میں بڑا کہلاتا ہے اور پرلوک میں سورگ پاتا ہے۔

۱۲۹- شودر سمرتھ بھی ہو مگر دولت جمع کرے کیونکہ شودر دولت پاکر براہمن ہی کو تکلیف دیتا ہے۔

शूद्रस्तु वृत्तिमाकांक्षन्क्षत्रमाराधयेद्यदि।। धनिनं वाप्युपारा-
ध्य वैश्यं शूद्रो जिजीविषेत्।।१२१।।स्वर्गार्थमुभयार्थं वा विप्रा
नाराधयेत्तु सः।। जातब्राह्मणशब्दस्य सा ह्यस्य कृतकृत्यता।।
१२२।। विप्रसेवैव शूद्रस्य विशिष्टं कर्म कीर्त्यते।। यदतोऽन्यद्धि
कुरुते तद्भवत्यस्य निष्फलम्।।१२३।। प्रकल्प्या तस्य तैर्वृत्तिः
स्वकुटुम्बाद्यथार्हतः।। शक्तिं चावेक्ष्य दाक्ष्यं च भृत्यानां च परि
ग्रहम्।।१२४।। उच्छिष्टमन्नं दातव्यं जीर्णानि वसनानि च।। पु
लाकाश्चैव धान्यानां जीर्णाश्चैव परिच्छदाः।।१२५।।

۱۲۱- شودر براہمن کی سیوا سے اوقات گذاری نکر سکے اور دوسری جیوکا کی خواہش کرے تو کشتری کی سیوا یا دولتمند ویش کی سیوا کرکے اوقات بسر کرے-

۱۲۲- شودر سورگ یا جیوکا و سورگ دونوں کیواسطے براہمن کی سیوا کرے براہمن کی سیوا کرنیوالا ہے اسطرح عالم مین شودر رہونا ایسا ہے کہ گویا شودر کرنیکے لائق سب کام وہ کرچکا-

۱۲۳- براہمن کی سیوا شودر کا بڑا کرم ہے اسکو چھوڑکر اور جو کچھ کرتا ہے وہ نشپھل ہے-

۱۲۴- براہمن اپنے خدمتگذار شودر کی سیوا مین طاقت اور کام کرنے مین خوشی اور زن و فرزند وغیرہ کی تعداد اور اونکا خرچ ان سب باتون کو دیکھکر اپنے گھر سے اسکے لائق جیوکا کو تجویز کرے-

۱۲۵- جو شودر اپنا خدمتگذار اور اپنی پناہ مین ہے اسکو جوٹھا غلہ اور پرانا کپڑا اور پیال سار کا دھانیہ وا پرانی چارپائی و گھر کا پرانا اسباب دینا چاہیے-

विद्याशिल्पंभृत्तिसेवागोरक्ष्यंविपणिःकृषिः॥ धृतिर्भैक्ष्यं-
कुसीदंचदशजीवनहेतवः॥ ११६॥ब्राह्मणःक्षत्रियोवापि
वृद्धिंनैवप्रयोजयेत्॥ कामन्तुखलुधर्मार्थंदद्यात्पापीयसेऽ
ल्पिकाम्॥ ११७॥ चतुर्थमाददानोऽपिक्षत्रियोभागमापदि॥
प्रजारक्षन्परंशक्त्याकिल्बिषात्प्रतिमुच्यते॥११८॥स्वधर्मो
विजयस्तस्यनाहवेस्यात्पराङ्मुखः॥ शस्त्रेणवैश्यान्रक्षि-
त्वाधर्म्यमाहारयेद्बलिम्॥ ११९॥ धान्येऽष्टमंविंशंशुल्कंविंशं
कार्षापणावरम्॥ कर्मोपकरणाःशूद्राःकारवःशिल्पिनस्त-
था॥ १२०॥

۱۱۶- ودّیا یعنے وید کے سواے دیگر علوم اور لکھنا وغیرہ و مزدوری و سیوا و پرورش گئو و خرید
و فروخت و کھیتی کرنا و دھیرج و بھیکھ و بیاج لینا یہ دس اسباب اوقات گذاری ہین لیکن وقت
مصیبت ہین جو وجہ معاش جسکو منع ہے وہ آوے وقت مصیبت ہین اس معاش کو اختیار کرے
۱۱۷- برہمن و کشتری بیاج نہ لیوین یا بُرا کام کرنیوالے کو دھرم کے واسطے تھوڑا بیاج
لیکر زر مطلوبہ دیوین-
۱۱۸- کشتری اپنی طاقت کے موافق پرورش رعایا کرتا ہوا وقت مصیبت ہین رعایا سے
چوتھا حصہ لیکر پاپ سے چھوٹتا ہے-
۱۱۹- اسلحون سے فتح کا حاصل کرنا لڑائی ہین نہ بھاگنا یہ دونون کام راجہ کا دھرم ہے اور
اسلحون سے ویشیون کی حفاظت کرکے اپنے دھرم کے موافق محصول لیوے-
۱۲۰- بحالت وقت مصیبت دھانیہ ہین ویشیون سے بیس روپیہ بڑھنے ہین آٹھوان حصہ
لیوے اور نہایت وقت مصیبت ہین تو چوتھا حصہ کہہ آئے ہین وقت مصیبت ہو تو بارہوان
حصہ لیوے سونا و چارپایہ انھونکا پچاسوان حصہ لیوے اور وقت مصیبت ہو تو بیسوان حصہ لیوے شودر و
رسوئیئے بنا نیوالا و بڑھئی وغیرہ سے وقت مصیبت ہین محصول نہ لیوے بعوض اسکے کام کرالیوے-

शिलोञ्छमप्याददीत विप्रोजीवन्यतस्ततः ॥ प्रतिग्रहाच्छिलः
श्रेयांस्ततोप्युञ्छः प्रशस्यते ॥ ११२ ॥ सीदद्भिः कुप्यमिच्छद्भि-
र्धनंवापृथिवीपतिः ॥ याच्यःस्यात्स्नातकैर्विप्रैरदित्संस्त्यागम-
र्हति ॥ ११३ ॥ अकृतंचकृतात्क्षेत्राद्गौरजाविकमेवच ॥ हिर-
ण्यंधान्यमन्नंचपूर्वंपूर्वमदोषवत् ॥ ११४ ॥ सप्तवित्तागमा-
धर्म्यादायोलाभःक्रयोजयः ॥ प्रयोगःकर्मयोगश्चसत्प्रतिग्र-
हएवच ॥ ११५ ॥

۱۱۲- براہمن اپنی جیوکا سے اوقات گذاری نکر سکے تو شل اور انچھ سے اوقات گذاری کرے
دان سے شل اور شل سے انچھ بڑا ہے۔

۱۱۳- بے زر براہمن دھرم و عیال و اطفال ان دونوں کیواسطے تکلیف پاکر سوائے
سونا و چاندی کے غلہ و کپڑا اور بیگہہ کیواسطے سونا و چاندی کو بھی اس کشتری سے مانگے
جو کہ شاستر کے موافق عمل نکرتا ہو اور جو بخل سے دینے کے خواہش نکرے اسکو ترک کرے۔

۱۱۴- زراعت رکھنے والے کھیت سے بدون زراعت رکھنے والے کھیت کا دان لینا بے دوش
ہے اور گئو و بکرا و بھیڑ و سونا و غلہ و دان انھوں میں پہلا پہلا دوسرے دوسرے سے بے دوش ہے
اسواسطے اول اول کے نہونے میں دوسرے دوسرے کو لینا چاہیئے۔

۱۱۵- تقسیم سے ملا زمین میں دفینہ ملا جو خرید کیا گیا جو فتح سے ملا جو بیوپار کرنیسے ملا جو کام کرکے
ملا جو اچھے آدمیوں سے دان لینے سے ملا ان سات قسم کی دولت کا ملنا دھرم سے شامل ہے

भरद्वाजः क्षुधार्त्तस्तु सपुत्रो विजने वने ॥ बह्वीर्गाः प्रतिजग्राह वृधोस्तक्ष्णो महातपाः ॥१०७॥ क्षुधार्त्तश्चात्तुमभ्यागाद्विश्वामित्रः श्वजाघनीम् ॥ चण्डालहस्तादादाय धर्माधर्मविचक्षणः ॥१०८॥ प्रतिग्रहाद्याजनाद्वा तथैवाध्यापनादपि ॥ प्रतिग्रहः प्रत्यवरः प्रेत्य विप्रस्य गर्हितः ॥१०९॥ याजनेध्यापने नित्यं क्रियेते संस्कृतात्मनाम् ॥ प्रतिग्रहस्तु क्रियते शूद्रादप्यन्त्यजन्मनः ॥११०॥ जपहोमैरपैत्येनो याजनाध्यापनैः कृतम् ॥ प्रतिग्रहनिमित्तन्तु त्यागेन तपसैव च ॥१११॥

۱۰۷- بھردواج رشی بڑے تپشوی نے بھوکھ سے دکھی ہوکر مع بیٹے کے بن میں بڑھو نام بڑھئی سے بہت گئون کا دان لیا-

۱۰۸- وشوامتر رشی دھرم ادھرم کے جاننے والے نے بھوکھ سے دکھی ہوکر چانڈال کے ہاتھ سے کتے کی ران کو لیکر کھانے کیواسطے تجویز کیا-

۱۰۹- براہمن کو وقت مصیبت ہونے مین یگیہ کرانا اور پڑھانا ان دونون کامونکے وسیلہ سے دان لینا پرلوک مین نندا کے قابل ہے-

۱۱۰- اوپر کہی ہوئی بات مین یہ سبب ہے کہ مصیبت یا غیر مصیبت مین براہمن وکشتری و ویشیہ سنساریون کو پڑھانا اور یگیہ کرانا ہوتا ہے اور دان لینا تو نیچ ذات شودر سے بھی ہوتا ہے اسلیے ان دونون سے زیادہ نندا کے قابل دان لینا ہے-

۱۱۱- یگیہ کرانے اور پڑھانے سے جو پاپ ہوتا ہے وہ جپ اور ہوم سے جاتا ہے اور دان لینے سے جو پاپ ہوتا ہے وہ تپ و دان کی چیز کے ترک سے جاتا ہے-

सर्वतः प्रतिगृह्णीयाद्ब्राह्मणस्त्वनयंगतः॥ पवित्रंदुष्यतीत्ये-
तद्धर्मतोनोपपद्यते॥१०२॥नाध्यापनाद्याजनाद्वागर्हिता-
द्वाप्रतिग्रहात्॥ दोषोभवति विप्राणांज्वलनाम्बुसमाहिते॥
१०३॥जीवितात्ययमापन्नोयोऽन्नमत्तियतस्ततः॥ आका-
शमिवपंकेननसपापेनलिप्यते॥१०४॥ अजीगर्तःसुतंहन्तु
मुपासर्पद्बुभुक्षितः॥ नचालिप्यतपापेनक्षुत्प्रतीकारमाच-
रन्॥१०५॥श्वमांसमिच्छन्नार्तोऽत्तुंधर्माधर्मविचक्षणः॥
प्राणानांपरिरक्षार्थंवामदेवोनलिप्तवान्॥१०६॥

۱۰۲- برہمن وقت مصیبت میں چاروطرف سے دان لیوے جسطرح یہ بات دھرم سے پیدا نہیں ہوئی کہ گنگا وغیرہ ندی کو دوش لگتا ہے-

۱۰۳- اسی طرح پڑھانا یگیہ کرانا نندا کے لائق آدمیوں سے دھن لینا انھوں سے برہمن کو دوش نہیں ہوتا کیونکہ برہمن جل و اگن کے برابر ہے-

۱۰۴- جو برہمن وقت مصیبت میں ادھر ادھر سے بھوجن کرتا ہے وہ پاپ سے آلودہ نہیں ہوتا جیسے آکاش کیچ میں بھی ہے لیکن اس سے آلودہ نہیں ہوتا-

۱۰۵- اجی گرت رشی نے بھوکھ سے دکھی ہو کر اپنے بیٹے شنو نہ سیپ کو بیچا اور یگیہ میں شنو گھو لیا اور بھوکھ دور کرنے کے واسطے بیٹے کو یگیہ کے ستون میں باندھ کر مارنے لگے لیکن پاپ سے آلودہ نہیں ہوئے یہ بات رگ وید کے براہمن میں شنو نہ سیپ کی کتھا میں ظاہر ہے-

۱۰۶- بامدیو رشی دھرم اور ادھرم کے جاننے والے بھوکھ سے دکھی ہو کر حفاظت جان کیواسطے کتے کا گوشت کھانے کی خواہش کرنے پر بھی پاپ سے آلودہ نہیں ہوئے-

योलोभादधमोजात्याजीवेदुत्कृष्टकर्म्मभिः ॥ तंराजानिर्धनंकृ-
त्वाक्षिप्रमेवप्रवासयेत् ॥ ९६ ॥ वरंस्वधर्मोविगुणोनपारक्यः
स्वनुष्ठितः ॥ परधर्म्मेणजीवन्हिसद्यःपततिजातितः ॥ ९७ ॥
वैश्योऽजीवन्स्वधर्म्मेणशूद्रवृत्त्यापिवर्त्तयेत् ॥ अनाचरन्नका-
र्य्याणिनिवर्त्तेतचशक्तिमान् ॥ ९८ ॥ अशक्नुवंस्तुशुश्रूषांशू-
द्रःकर्त्तुंद्विजन्मनाम् ॥ पुत्रदारात्ययंप्राप्तोजीवेत्कारुककर्म-
भिः ॥ ९९ ॥ यैःकर्म्मभिःप्रचरितैःशुश्रूष्यन्तेद्विजातयः ॥ ता-
निकारुककर्म्माणिशिल्पानिविविधानिच ॥ १०० ॥ वैश्य
वृत्तिमनातिष्ठन्ब्राह्मणःस्वेपथिस्थितः ॥ अवृत्तिकर्षितः
सीदन्निमंधर्म्मसमाचरेत् ॥ १०१ ॥

۹۶ - نیچ ذات والا طمع سے بڑون کے کرم سے اوقات گذاری کرے تو راجہ اسکو بے زر کرکے جلد اپنے ملک سے نکال دے۔

۹۷ - اپنا دھرم گن سے علیحدہ بھی ہو تو اسکو کرنا چاہیئے دوسرے کا دھرم بہت اچھا ہو تو بھی اسکو نکرنا چاہیئے دوسرا دھرم کرنے سے جلد ذات سے پتت ہوتا ہے۔

۹۸ - ویش یا اپنے کرم سے اوقات گذاری نکرسکے تو شودر کے کرم سے اوقات گذاری کرے اور جو چیز کرنیکے لائق نہین ہے اسکو نکرے۔

۹۹ - شودر دوجنماؤن کی سیوا نکرسکے اور اسکے زن و فرزند بھوکھ سے دکھی ہون تو صنعت کرنیوالون کے کام سے اوقات بسر کرے۔

۱۰۰ - جن کامون سے دوجنماون کی سیوا ہوسکے وہ کام (یعنے درودگری و مصوری وغیرہ انواع اقسام کے کام) کرے۔

۱۰۱ - جو براہمن ویشیہ کے کام کو نکرے اور جیوکا سے تکلیف پاوے اپنے مارگ مین قائم ہووے اس دھرم کو کرے جو آگے کہینگے۔

भोजनाभ्यंजनाद्दानाद्यदन्यत्कुरुते तिलैः ॥ कृमिभूतः श्वविष्ठायां पितृभिः सह मज्जति ॥ ९१ ॥ सद्यः पतति मांसेन लाक्षया लवणेन च ॥ त्र्यहेण शूद्रीभवति ब्राह्मणः क्षीरविक्रयात् ॥ ९२ ॥ इतरेषान्तु पण्यानां विक्रयादिह कामतः ॥ ब्राह्मणः सप्तरात्रेण वैश्यभावं नियच्छति ॥ ९३ ॥ रसा रसैर्निमातव्या न त्वेव लवणं रसैः ॥ कृतान्नं चाकृतान्नेन तिला धान्येन तत्समाः ॥ ९४ जीवेदेतेन राजन्यः सर्वेणाप्यनयं गतः ॥ न त्वेव ज्यायसीं वृत्तिमभिमन्येत कर्हिचित् ॥ ९५ ॥

۹۱- جو شخص بھوجن وابٹن ودان یہ تین کام چھوڑ کر دوسرا کام تل سے کرے وہ کیڑا ہو کر مع اپنے بزرگوں کے کتّے کے غلیظ میں غرق ہوتا ہے۔

۹۲- گوشت اور نمک اور لاکھ کے بیچنے سے جلد پتت ہوتا ہے (یعنی اپنے ورن کے درجہ سے گر جاتا ہے) اور دودھ بیچنے سے تین دن میں شودر بھاؤ کو پراپت ہوتا ہے۔

۹۳- برہمن بخواہش دل دوسری چیزوں کے فروخت کرنے سے سات رات میں ویشیہ بھاؤ کو پراپت ہوتا ہے۔

۹۴- رس یعنی گڑ وغیرہ کو گھی وغیرہ سے تبادلہ کرنا واجب ہے اور نمک کو دوسرے رس کے ساتھ تبدیل نہ کرنا چاہئے اور بدون بنائے ہوئے غلہ کو بنائے ہوئے غلہ سے اور تل کو دھان سے تبدیل کرنا چاہئے مگر وہ تبادلہ وزن میں برابر ہو۔

۹۵- کشتری وقت مصیبت آنے پر جیوکا مرقومہ بالا سے اوقات گذاری کرے لیکن بڑوں کی جیوکا سے اوقات گذاری کا غرور کبھی نہ کرے۔

सर्वान्रसानपोहेतकृतान्नंचतिलैःसह ॥ अश्मनोलवणंचै-वपशवोयेचमानुषाः॥ ८६॥सर्वंचतान्तवंरक्तंशाणक्षौमावि-कानिच॥ अपिचेत्स्युररक्तानिफलमूलेतथौषधीः॥ ८७॥अ-पःशस्त्रंविषंमांसंसोमंगन्धांश्चसर्वशः॥ क्षीरंक्षौद्रंदधिघृतंतै-लंमधुगुडंकुशान्॥ ८८॥ आरण्यांश्चपशून्सर्वान्दंष्ट्रिणश्चव-यांसिच॥ मद्यंनीलींचलाक्षांचसर्वांश्चैकशफांस्तथा॥ ८९॥ काममुत्पाद्यकृष्यांतुस्वयमेवकृषीवलः॥ विक्रीणीततिलान्शुद्धान्धर्मार्थमचिरस्थितान्॥ ९०॥

۸۶- سب رس اور پکے ہوئے اناج تل و پتھر و نمک و چارپایہ آدمی ان سب کو نہ بیچیں رس کی ممانعت سے نمک کی ممانعت ثابت ہے پتھر و نمک کی ممانعت کی توعیب کی عظمت ظاہر کرنیکے واسطے کہا وہ بھی پیداوار کی برائی کیواسطے ہے اسیطرح ان کی ممانعت علیحدہ کو بھی جتا لینا چاہئے

۸۷- پارچہ سرخ و سن کا بھی بھیڑ کا ان تینوں سے جو پارچہ طیار ہوتا ہو وہ سفید ہو خواہ سرخ ہو و پھل مول و ادویہ

۸۸- پانی ہتھیار زہر گوشت سوم لتا خوشبویات دودھ دہی شہد گھی تیل موم گڑ کشا

۸۹- جنگلی چوپایہ ڈاڑھ والے جانور جیسے شیر وغیرہ پرند شراب نیل لاکھ ایک کھر والا حیوان سب کو نہ بیچیں

۹۰- کھیتی کرنیوالا کھیتی میں تل کو پیدا کرے اور وہ تل شدھ ہو بہت دن گھر میں رہا ہو تو اسکو دھرم کے واسطے بیچے

अजीवंस्तु यथोक्तेन ब्राह्मणः स्वेन कर्मणा ॥ जीवेत्क्षत्रियधर्मेण स ह्यस्य प्रत्यनन्तरः ॥ ८१ ॥ उभाभ्यामप्यजीवंस्तु कथं स्यादिति चेद्भवेत् ॥ कृषिगोरक्षमास्थाय जीवेद्वैश्यस्य जीविकाम् ॥ ८२ ॥ वैश्यवृत्त्यापि जीवंस्तु ब्राह्मणः क्षत्रियोऽपि वा ॥ हिंसाप्रायां पराधीनां कृषिं यत्नेन वर्जयेत् ॥ ८३ ॥ कृषिं साध्विति मन्यन्ते सा वृत्तिः सद्विगर्हिता ॥ भूमिं भूमिशयांश्चैव हन्ति काष्ठमयोमुखम् ॥ ८४ ॥ इदं तु वृत्तिवैकल्यात्त्यजतो धर्मनैपुणम् ॥ विट्पण्यमुद्धृतोद्धारं विक्रेयं वित्तवर्द्धनम् ॥ ८५ ॥

۸۱ — اگر براہمن اپنے خاص کام سے اوقات گذاری نہ کرسکے تو کشتری کے کام سے اوقات گذاری کرے کیونکہ کشتری درن براہمن درن کے قریب ہے۔

۸۲ — دونوں کے کرم سے اوقات گذاری نہ کرسکے تو ویشیہ کے کرم سے اوقات گذاری کرے۔

۸۳ — براہمن و کشتری کبھی ویشیہ کی برت سے گذارہ کرتے ہوئے بہ تدبیر تمام کھیتی کو نہ کریں جو کہ دوسرے کے اختیار میں ہے (یعنے بدون بیل وغیرہ کے اس سے مطلب حاصل نہیں ہوتا) اور جسکے کرنے سے زمین میں رہنے والے بہت سے جانداروں کی جان جاتی ہے۔

۸۴ — کھیتی کو کوئی اچھا کہتا ہے سو درست نہیں ہے کیونکہ زمین کو اور زمین میں رہنے والے جانداروں کو کاٹھ اور لوہے کا منھ رکھنے والا (یعنے ہل) ناش کرتا ہے اسواسطے سادھ لوگوں نے اس جیوکا کی نندا کی ہے۔

۸۵ — براہمن و کشتری اپنی جیوکا سے اوقات گذاری نہ کرسکیں اور ویشیہ کی جیوکا سے اوقات گذاری کریں وے اگر جو فروخت کرنا منع کرینگے اسکو چھوڑکر دولت کو ترقی دینے والی چیزوں کو فروخت کریں۔

षण्णान्तु कर्मणामस्य त्रीणिकर्म्माणिजीविका ॥ याजनाध्यापनाचैवविशुद्धाच्चप्रतिग्रहः ॥७६॥ त्रयोधर्म्मानिवर्त्तन्तेब्राह्मणात्क्षत्रियंप्रति ॥ अध्यापनंयाजनंचतृतीयश्चप्रतिग्रहः ॥७७॥ वैश्यंप्रतितथैवैतेनिवर्त्तेरन्निति स्थितिः ॥ नतौप्रतिहितान्धर्म्मान्मनुराहप्रजापतिः ॥७८॥ शस्त्रास्त्रभृत्त्वंक्षत्रस्यवणिक्पशुकृषिर्विशः ॥ आजीवनार्थंधर्मस्तुदानमध्ययनंयजिः ॥७९॥ वेदाभ्यासोब्राह्मणस्यक्षत्रियस्यचरक्षणम् ॥ वार्त्ताकर्मैववैश्यस्यविशिष्टानिस्वकर्म्मसु ॥८०॥

۷۶- ان چھ کرموں میں تین کرم (یعنے پڑھانا اور یگیہ کرانا اور پاک آدمیوں سے دان لینا حصول معاش کے لئے ہیں۔

۷۷- براہمن سے آگے یعنے کشتری پڑھانا و یگیہ کرانا و دان لینا ان تینوں دھرموں کے کرنیکا ادھکاری نہیں ہے۔

۷۸- اسیطرح ویشیہ میں بھی وہ تینوں کرم موقوف ہو جاتے ہیں یعنے وہ بھی ان کرموں کے کرنیکا ادھکاری نہیں ہے یہ مرجادہے کشتری اور ویشیہ دونوں کے واسطے اُن دھرموں کو پرجاپت منُ جی نے نہیں کہا ہے۔

۷۹- شستر یعنے ہتھیار و استر یعنے جو منتر پڑھکر چلایا جا ان دونوں کا دھارن کرنا کشتریوں کا کرم ہے اور بیوپار کرنا او گیئو وغیرہ کو پرورش کرنا اور کھیتی کرنا ویشیہ کا کرم ہے اور پڑھنا اور یگیہ کرنا اور دان دینا یہ دھرم کشتری اور ویشیہ دونوں کا ہے۔

۸۰- اپنے اپنے کاموں میں ایک ایک افضل کرم تینوں کا ہے یعنے براہمن کو پڑھنا و کشتری کو حفاظت عالم کرنا و ویشیہ کو بیوپار کرنا۔

यस्माद्विजप्रभावेण तिर्यग्जा ऋषयोऽभवन्॥ पूजिताश्च प्रशस्ताश्च तस्माद्बीजं प्रशस्यते॥७२॥ अनार्यमार्यकर्माणमार्यं चानार्यकर्मिणम्॥ सम्प्रधार्याब्रवीद्धाता न समौ नासमाविति॥७३॥ ब्राह्मणा ब्रह्मयोनिस्था ये स्वकर्मण्यवस्थिताः॥ ते सम्यगुपजीवेयुः षट्कर्माणि यथाक्रमम्॥७४॥ अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा॥ दानं प्रतिग्रहश्चैव षट्कर्माण्यग्रजन्मनः॥७५॥

۷۲ - تخم کی فضیلت سے ہرنی سے پیدا شرنگی رشی وغیرہ برھم رشی پوجنے کے لائق ہوئے اسوجہ سے تخم بڑا ہی (یعنے درمیان تخم و ظرف کے) اور بیچے تخم والی ذات افضل ہی اس بات کو جاننا چاہئے —

۷۳ - نیچ سے اونچ کا کام کرتا ہے اور اونچ سے نیچ کا کام کرتا ہی ان دونون کا بچار کرکے برہما جی نے کہا کہ وے نہ برابر ہین نہ مختلف ہین - ڈ

۷۴ - جو براہمن برھم دھیان مین مشغول ہو اور اپنے کرمون مین مصروف ہو وہ سلسلہ سی چھ کرمون سے اوقات بسر کرے —

۷۵ - پڑھنا پڑھانا یگیہ کرنا یگیہ کرانا دان دینا دان لینا یہ چھ کرم براہمن کے ہین —

ڈ کیونکہ جو شودر دوجما کا کام کرنیوالا ہے وہ دوجما نہین ہونا چاہئے جو شخص دوجما کے کام کا ادھکاری نہین ہی وہ دوجما کا کام کرنیوالا بھی ہو تو دوجما کے برابر نہین ہوتا اسیطرح سے شودر کا کام کرنیوالا دوجما شودر کے برابر نہین ہوتا کام ممنوع کرنے سے ذات کی بڑائی نہین گئی ہی اور مختلف بھی نہین ہی کام ممنوع کرنے سے دونون کو برابری ہے اسلیئے سب کو جو کام جنکے لائق ہے اُس کام کو کرے یہ اپدیش ورن سنکر تک ہی —

जातोनार्य्यामनार्य्यायामार्य्यादार्य्योभवेद्गुणैः ॥ जातोऽप्यनार्य्यादार्य्या-
यामनार्य्यइतिनिश्चयः ॥ ६७ ॥ तावुभावप्यसंस्कार्य्याविति धर्मो
व्यवस्थितः ॥ वैगुण्याज्जन्मनःपूर्व्वउत्तरःप्रतिलोमतः ॥ ६८
॥ सुबीजंचैवसुक्षेत्रेजातंसम्पद्यतेयथा ॥ तथाऽर्य्याज्जातआ-
र्य्यायांसर्वंसंस्कारमर्हति ॥ ६९ ॥ बीजमेकेप्रशंसन्ति क्षेत्रमन्ये
मनीषिणः ॥ बीजक्षेत्रेतथैवान्येतत्रेयन्तुव्यवस्थितिः ॥ ७० ॥
अक्षेत्रेबीजमुत्सृष्टमन्तरैवविनश्यति ॥ अबीजकमपिक्षेत्रंके
वलंस्थण्डिलंभवेत् ॥ ७१ ॥

۶۷- اونچ نیچ سے نیچ یون مین (یعنے براہمن سے شودرا مین) پیدا ہوا پاک یگیہ وغیرہ اوصاف سے مشمول ہو وہ بڑا ہے اور نیچ بیچ سے اونچ یون مین (یعنے شودر سے براہمنی مین) پیدا ہوا بڑا نہین ہین یہ یقین ہے -

۶۸- یہ سدھانت ہی کہ دونون سنسکار کے لائق نہین ہین کیونکہ پہلا نیچ ذات مین پیدا ہوا اور دوسرا پرت لوم ہے -

۶۹- جس طریق پر اچھا بیج اچھے کھیت مین پڑنے سے اچھا غلہ پیدا ہوتا ہے اسی طرح سے افضل مرد سے افضل عورت مین پیدا ہوا سب سنسکار کے لائق ہوتا ہے -

۷۰- کوئی پنڈت تخم کو افضل کہتے ہین کوئی ظرف کو اور کوئی دونون کو افضل کہتے ہین اسکا بیان آگے جو کیفیت بیان کرینگے اسکو جاننا -

۷۱- اوسر زمین جو بیج پڑتا ہے وہ برباد جاتا ہے یعنی اگتا نہین ہی اور کھیت اچھا ہے مگر اسمین بیج نہین ہی تو صرف چبوترہ ہی ہے اسمین غلہ پیدا نہین ہوتا ہے اسلیئے دونون کی بڑائی ہے اچھا بیج اچھے کھیت مین پڑے تو اچھا غلہ پیدا ہو یہ پہلے کہا گئے ہین وہی قرین مصلحت ہی کہ دونون کو فضیلت ہے -

शूद्रायां ब्राह्मणाज्जातः श्रेयसा चेत्प्रजायते॥ अश्रेयान्श्रेयसीं जातिं गच्छत्यासप्तमाद्युगात्॥ ६४॥ शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शूद्रताम्॥ क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च॥ ६५॥ अनार्यायां समुत्पन्नो ब्राह्मणात्तु यदृच्छया॥ ब्राह्मण्यामप्यनार्यात्तु श्रेयस्त्वं केति चेद्भवेत्॥ ६६॥

۶۴- شودرا مین براہمن سے کنیا پیدا ہو وہ پارشوی کہاتی ہے اُس سے براہمن وواہ کرے اور کنیا پیدا ہو پہر اُس سے براہمن وواہ کرے اور کنیا پیدا ہو اسی طریق سے کنیا پیدا ہوتی جاوے اور اُس کنیا کا وواہ براہمن کرتا جاوے تو ساتوین کنیا فضیلت تخم سے براہمن ذات کو پیدا کرتی ہے-

۶۵- شودر براہمن بہاو کو حاصل کرتا ہے اور براہمن شودر بہاو کو حاصل کرتا ہے اسی طریق سے کشتری و ویشیہ سے پیدا شدہ اولاد کو جاننا-

۶۶- شودرا مین براہمن سے پیدا ہوا اور براہمنی مین شودر سے پیدا ہوا ان دونون مین کون بڑا ہے اسکا جواب اشلوک آیندہ مین دیتے ہین-

ذ یعنے جسطرح شودرا مین براہمن سے پیدا ہوا پارشو ہوتا ہے وہ شودرا کا وواہ کرے اُس سے پیدا ہو وہ بھی شودرا کا وواہ کرے اُس سے بھی بیٹا پیدا ہو اسی طریق پر بیٹا پیدا ہوتا جاوے اور شودرا کا وواہ کرتا جاوے تو چھٹوان بیٹا عورت کے نیچ ہونے سے شودر ذات کو پیدا کرتا ہے اسی طرح شودرا مین کشتری سے پیدا کیا چوتھی پشت مین فضیلت تخم سے کشتری کو پیدا کرتی ہے اور بیٹا تیسری پشت مین عورت کے نیچ ہونے سے شودر کو پیدا کرتا ہے اور ویشیہ سے شودرا مین پیدا کنیان دوسری پشت مین فضیلت تخم سے ویشیہ کو پیدا کرتی ہے اور بیٹا دوسری پشت مین عورت کے نیچ ہونے سے شودر کو پیدا کرتا ہے اسی طریق پر براہمن سے ویشیہ مین پیدا ہوا پانچوین پشت مین بزرگی و خوردی کو پاتا ہے اور براہمن سے کشتریا مین پیدا ہوا تیسری پشت مین بزرگی و خوردی کو پاتا ہے کشتری سے ویشیہ مین پیدا ہوا تیسری پشت مین بزرگی و خوردی کو پاتا ہے

अनार्यता निष्ठुरता क्रूरता निष्क्रियात्मता ॥ पुरुषं व्यञ्जयन्तीह लोके कलुषयोनिजम् ॥ ५८ ॥ पित्र्यं वा भजते शीलं मातुर्वोभयमेव वा ॥ न कथंचन दुर्योनिः प्रकृतिं स्वां नियच्छति ॥ ५९ ॥ कुले मुख्येऽपि जातस्य यस्य स्याद्योनिसंकरः ॥ संश्रयत्येव तच्छीलं नरोऽल्पमपि वा बहु ॥ ६० ॥ यत्र त्वेते परिध्वंसाज्जायन्ते वर्णदूषकाः ॥ राष्ट्रिकैः सह तद्राष्ट्रं क्षिप्रमेव विनश्यति ॥ ६१ ॥ ब्राह्मणार्थे गवार्थे वा देहत्यागोऽनुपस्कृतः ॥ स्त्रीबालाभ्युपपत्तौ च बाह्यानां सिद्धिकारणम् ॥ ६२ ॥ अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ॥ एतं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः ॥ ६३ ॥

۵۸-افضل نہونا بے پیری تی سخت مزاجی وید و شاستر کے موافق عمل نکرنا انھون سے لوک مین جانا جاتا ہے کہ یہ آدمی نیچ ذات سے پیدا ہوتا ہے -

۵۹-آدمی والد یا والدہ کی یا دونون کی خاصیت حاصل کرتا ہے مگر نیچ ذات والا کسیطرح اپنی خاصیت کو نہین چھوڑتا ہے -

۶۰-جو شخص اچھے خاندان مین پیدا ہوا مگر والدہ اوسکی نیچ ذات ہو تاہم وہ شخص والد کی خاصیت کو حاصل کرتا ہے -

۶۱-جس سلطنت مین ورنون کو باعیب کرنیوالے ورن سنکر پیدا ہوتے ہین وہ سلطنت مع رعایا جلد فانی ہو جاتی ہے -

۶۲-جو مطلب دیکھنے مین آوے اوسکو چھوڑکر براہمن اور گئو اور عورت اور بالک کیواسطے ترک قالب کرنا ان لوگون کو سورگ دینے والا ہے جو کہ وہان سے علیحدہ ہین -

۶۳-کسی جاندار کو قتل نکرنا سچ بولنا چوری نکرنا پاکیزگی حواس کو روکنا ان سب دھرمونکو منجی نے چارو ورن کیواسطے کہا ہے -

वासांसिमृतचेलानि भिन्नभाराडेषुभोजनम्॥ कार्ष्णायसमलं-
कारः परिव्रज्याच नित्यशः॥ ५२॥ नतैःसमयमन्विच्छेत्पुरुषो
धर्ममाचरन्॥ व्यवहारोमिथस्तेषांविवाहःसदृशैःसह॥ ५३॥
अन्नमेषांपराधीनंदेयंस्याद्भिन्नभाजने॥ रात्रौनविचरेयुस्ते ग्रा-
मेषुनगरेषुच॥ ५४॥ दिवाचरेयुःकार्यार्थं चिन्हिताराजशासनैः
॥ अबान्धवंशवंचैवनिर्हरेयुरितिस्थितिः॥ ५५॥ वंध्यांश्चहन्युः
सततंयथाशास्त्रंनृपाज्ञया॥ वध्यवासांसिगृह्णीयुःशय्याश्चा-
भरणानिच॥ ५६॥ वर्णापेतमविज्ञातंनरंकलुषयोनिजम्॥
आर्य्यरूपमिवानार्य्यंकर्म्मभिःस्वैर्विभावयेत्॥ ५७॥

۵۲- مُردے کے کپڑے پہنن اور پھوٹے ہوئے برتن مین بھوجن کرین زیور آہنی زیب بدن کرین ہمیشہ گشت کرتے رہین-

۵۳- دھرماتما آدمی ان لوگون کے ساتھ درشن وغیرہ بیوپار نکرے انھونکا وداہ آپسہین ہوتا ہے اور بیوپار بھی آپس مین ہی کرین-

۵۴- انھون کی خوراک دوسرے کے اختیار مین ہے پھوٹے برتن مین اُن دینا چاہیے اور یہ لوگ وقت شب گانون وشہر وغیرہ مین پھرنے نپاوین-

۵۵- یہ لوگ نشان ذات سے مشمول ہوکر بحکم راجہ ملک کے کام کرنیکے واسطے دن مین پھرین اور جس مردہ کا کوئی رشتہ دار نہو اُسکو لیجاوین شاستر کی مرجاد ہے-

۵۶- یہ لوگ بحکم راجہ موافق طریق شاستر قتل لائق آدمیون کو قتل کرین اور اُنھیں مقتولون کا کپڑا پلنگ وپارچہ وزیور لیوین-

۵۷- جو شخص نیچ ذات سے پیدا ہوا ہو ورن سے علیحدہ ہو مگر جاننے مین نہ آتا ہو شریف کی صورت مگر شریف نہو تو اُسکے اعمال سے اسکی ذات کو جانے-

सूतानामश्वसारथ्यमम्बष्ठानांचिकित्सनम्॥ वैदेहकानांस्त्री कार्यंमागधानांवणिक्पथः॥४७॥ मत्स्यघातोनिषादानांत्व-ष्टिस्त्वायोगवस्यच॥ मेदान्ध्रचुंचुमद्गूनामारण्यपशुहिंसनम्॥ ४८॥ क्षत्त्रुग्रपुक्कसानान्तुबिलौकोवधबन्धनम्॥ धिग्वणानां चर्मकार्यंवेणानांभाण्डवादनम्॥४९॥ चैत्यद्रुमश्मशानेषुशै-लेषूपवनेषुच॥ वसेयुरेतेविज्ञातावर्त्तयन्तःस्वकर्मभिः॥५०॥ चण्डालश्वपचानान्तुबहिर्ग्रामात्प्रतिश्रयः॥ अपपात्राश्च कर्त्तव्याधनमेषांश्वगर्दभम्॥५१॥

۴۷- سوت کا کام رتھ بانی اور امبشٹ کا کام طبابت بیدیہک کا کام ناچنا ماگدھ کا کام بقالی ہے۔

۴۸- نشاد کی وجہ معاش مچھلیوں کا مارنا ہے۔ ایوگو کی وجہ معاش لکڑی کو کاٹنا ہے میدا اندھر چنچ مدگو انھوں کی وجہ معاش چارپایہ کو مارنا ہے۔

۴۹- کشتا و اگر و پکس کی وجہ معاش سوراخ میں رہنے والی گوہ وغیرہ کا قتل و گرفتاری دھگیگن کی وجہ معاش چمڑے کا کام وین ذات کی وجہ معاش مردنگ وغیرہ کا بجانا ہے۔

۵۰- یہ سب لوگ مشہور درختوں کی جڑ واقع متصل دیہہ و شمشان و پہاڑ و جنگل میں اپنے کاموں سے اوقات گذاری کرتے رہیں۔

۵۱- چانڈال و سوپچ یہ دونوں گانوں کے باہر قیام کریں برتن وغیرہ سے محروم رہیں انھوں کی دولت سگ و خر ہے۔

* بیدیہک کی عورت میں براہمن سے پیدا ہوا پنچ کہلاتا ہے اور اسی سے شودری کی عورت میں پیدا ہوا سدگو کہلاتا ہے

मुखबाहूरुपज्जानांयालोकेजातयोबहिः॥ म्लेच्छवाचश्चार्य
वाचःसर्व्वेतेदस्यवःस्मृताः॥४५॥येद्विजानामपसदायेचाप-
ध्वंसजाःस्मृताः॥ तेनिन्दितैर्वर्त्तयेयुर्द्विजानामेवकर्मभिः॥
४६॥

۴۵- براہمن اور کشتری اور ویشیہ اور شودر ان چاروں ورنوں کی کریاؤں کے لوپ ہو جانے
سے جتنی ذات ہوتی ہیں اونکا نام ملیچھ بھاشا ہیں ہو خواہ آریہ بھاشا ہیں ہو یہ سب ذات
دسیو کہاتی ہیں۔ +

۴۶- دِجوں سے جو آپ سدو غیرہ بطریق اُن لوم پیدا ہوتے ہیں اور جنکا بیان دسویں
اشلوک میں ہوا اور بھی جو پرت لوم سے پیدا ہوتے ہیں یہ سب دِجوں کے نندت کرم سے اوقات بسر کریں ‡

+ یعنے براہمن و کشتری و ویشیہ و شودر کو جو کہ وید شاستر کے موافق عمل کرتے ہیں انکو آریہ کہتے ہیں اور وقت پیدایش عالم کے
اِن لوگوں کو جو ملک پاک مرغوب خاطر ہوا اوسکو آریاورت کہتے ہیں اور علم سنسکرت کو جو کہ سب زبانوں کی ماں یعنی زاد الاصل ہے اوسکو
آریہ بھاشا کہتے ہیں چنانچہ دیگر ولایت ہاے میں لفظ آریہ کو ایرین کہتے ہیں اور کہتے ہیں کہ تمام دنیا کی زبانیں ایرین زبان سے نکلی ہیں اگر کوئی
کہے کہ جب لوگوں نے ملک ہاے زمین میں صرف آریاورت کو پاک و کمت دہندہ سمجھکر اسمیں قیام کیا تو دیگر ملک ہاے زمین کسطرح آباد
ہوئی اسکا جواب یہ ہے کہ شروع میں براہمنوں نے اپنا قیام بلحاظ تپ و عبادت کے آریاورت ہی میں مناسب جانا اور کشتری
لوگوں کو اجازت دی کہ تم دیگر ولایت ہاے میں جا کر سلطنت کرو اسوجہ سے منبع تمام مردمان عالم و زبان ہاے عالم صرف
آریاورت ہے کہ جسکی گواہی اشلوک ۲۰ ادھیاے دوم اسی شاستر کا دیتا ہے۔

‡ خدمتگاری وغیرہ۔

तपोबीजप्रभावैस्तु ते गच्छन्ति युगे युगे ॥ उत्कर्षं चापकर्षं च मनुष्येष्विह जन्मजः ॥४२॥ शनकैस्तु क्रियालोपादिमाः क्षत्रियजातयः ॥ वृषलत्वं गता लोके ब्राह्मणादर्शनेन च ॥४३॥ पौण्ड्रकाश्चौड्रद्रविडाः काम्बोजा यवनाः शकाः ॥ पारदाः पाह्लवाश्चीनाः किराता दरदाः खसाः ॥४४॥

۳۲- تپ اور بیج کے پربھاؤ سے یکسان وغیرہ یکسان ذات سے پیدا ہوتے ہیں سنساری جگ جگ میں جنم سے اونچ اور نیچ ہوتے ہیں- +

۳۳- رفتہ رفتہ عدم تعمیل فرائض سے اور براہمن کے نہ دیکھنے سے مفصلہ ذیل کشتری دنیا میں شودر ہو گئے- لا

۳۴- پونڈرک اور ڈور دراوڑ کامبوج یون شک پارد پہلو چین کرات درد کھش ان ملکون کے رہنے والے کشتری لوگ جنیو وغیرہ سنسکار وید خوانی وغیرہ اعمال کے نکرنے سے شودر ہو گئے ۔ ؂

+ تپ کے پربھاؤ سے مانند لسوامتر کے اور بیج کے پربھاؤ سے مانند سرنگی رشی کے جاننا چاہیئے-

؂ اشلوک ۴۳ و ۴۴ ثابت کرتے ہیں کہ شروع میں تمام زمین پر صرف ایک مذہب مانند وید کے دیج لوگوں کا تھا جب بہت کھنڈ کے سوائے دیگر کھنڈ یعنے ایران و توران وغیرہ کے باشندگان کشتری لوگوں نے دیج کرم کو چھوڑ دیا تب وہ شودر ذات ہو گئے ان کا نام اگلے اشلوک میں کہتے ہیں-

لا یعنے جنیو وغیرہ دیگیہ کرانا و پڑھانا اور پراسچت کرنا ان سب باتون کے ترک کرنے سے شودر ہو گئے ۔

चाण्डालात्पाण्डुसोपाकस्त्वक्सारव्यवहारवान् ।। आहिण्ड
को निषादेन वैदेह्यामेव जायते ।। ३७ ।। चण्डालेन तु सोपाको मूल
व्यसनवृत्तिमान् ।। पुक्कस्यां जायते पापः सदा सज्जनगर्हितः ।। ३८
।। निषादस्त्री तु चण्डालात्पुत्रमन्त्यावसायिनम् ।। श्मशानगो-
चरं सूते बाह्यानामपि गर्हितम् ।। ३९ ।। संकरे जातयस्त्वेताः पि-
तृमातृप्रदर्शिताः ।। प्रच्छन्ना वा प्रकाशा वा वेदितव्याः स्वकर्म-
भिः ।। ४० ।। स्वजातिजानन्तरजाः षट्सुता द्विजधर्मिणः ।। शूद्रा
णां तु सधर्माणः सर्वेऽपध्वंसजाः स्मृताः ।। ४१ ।।

۳۷ — چانڈال سے بیدیہک کی عورت مین بالس کے روزگار سے اوقات لبسر کرنیوالا پانڈو سو
پاک ذات والا بیٹا ہوتا ہے اور اسی عورت مین سے نشاد سے آہنڈک ذات والا بیٹا پیدا ہوتا ہے۔
۳۸ — چانڈال سے پکس کی عورت مین سوپاک ذات والا بیٹا پیدا ہوتا ہے جو کہ بحکم حاکم وقت
مردمان قابل قتل کو قتل کرنیوالا اور اسی سے اوقات لبسر کرنیوالا اور پاپی ہمیشہ سادھو
لوگون سے لعنت ملامت پانیوالا ہوتا ہے۔
۳۹ — چانڈال سے نشاد کی عورت مین اسمشان کی زمین پر رہنے والا سب سے لعنت ملامت
پانیوالا انتیاوسائی ذات والا بیٹا پیدا ہوتا ہے۔
۴۰ — ورن سنکر ذات مین ماں باپ سے انکی ذاتون کو بیان کیا وہ ذات ظاہر ہون یا پوشیدہ
ہون مگر اپنے اپنے کامون سے جاننے کے لائق ہوتی ہین۔
۴۱ — براہمن کشتری ویشون سے اپنی اپنی ذات کی عورت مین جو لڑکے پیدا ہوتے ہین
اور براہمن سے کشتری اور کشتری سے ویشیہ مین اور ویشیا سے شودرا مین جو لڑکے پیدا
ہوتے ہین وہ چھٹو دج کے دھرم والے ہوتے ہین (یعنے جنیو وغیرہ سنسکار کی لائق ہوتے
ہین) اسکے سوا جو پرت لوم سے پیدا ہین وہ سب شودر کے دھرم والے کہلاتے ہین۔

प्रसाधनोपचारज्ञमदासं दासजीवनम् ॥ सैरिन्ध्रं वागुरावृत्तिं-
सूते दस्युरयोगवे ॥ ३२ ॥ मैत्रेयकं तु वैदेहो माधूकं संप्रसूयते ॥
नॄन्प्रशंसत्यजस्रं यो घण्टाताडोऽरुणोदये ॥ ३३ ॥ निषादो मा-
र्गवं सूते दासं नौकर्मजीविनम् ॥ कैवर्तमिति यं प्राहुरार्यावर्त-
निवासिनः ॥ ३४ ॥ मृतवस्त्रभृत्सु नारीषु गर्हितान्नाशनासु च
॥ भवन्त्यायोगवीष्वेते जातिहीनाः पृथक्त्रयः ॥ ३५ ॥ कारा-
वरो निषादात्तु चर्मकारः प्रसूयते ॥ वैदेहिकादन्ध्रमेदौ बहिर्ग्रा-
मप्रतिश्रयौ ॥ ३६ ॥

۳۲۔ درستی و صفائی موسے کا کرنیوالا جوٹھا کھانا کھانے کے سوا نہلانا دھلانا وغیرہ کا غلامی کو جاننے والا جال وغیرہ کے وسیلہ سے ہرن وغیرہ کے قتل سے اوقات بسر کرنیوالا سیرندھر نام بیٹے کو آیوگو کی استری میں دسیتو نام ذات والا آدمی (جسکا لکشن اشلوک ۴۵ میں کہینگے) پیدا کرتا ہے۔

۳۳۔ آیوگو کی عورت میں بیدیہک سے میترے نام بیٹا شیرین کلام کرنیوالا پیدا ہوتا ہے جو وقت شام و صبح بجا کر جیوکا کیواسطے راجہ وغیرہ کی تعریف کرتا ہے۔

۳۴۔ آیوگو کی عورت میں نشاد سے پیشہ ملاحی سے اوقات بسر کرنیوالا داس نام و مارگو نام بیٹا پیدا ہوتا ہے جسکو آریاورت کے رہنے والے کیورت کہتے ہیں۔

۳۵۔ سیرندھر و میتری و مارگو تینوں نیچ ذات آیوگو کی اس عورت میں والد کی تفریق سے علیحدہ علیحدہ پیدا ہوتے ہیں جوکہ پارچہ مردہ کے پہننے والے دہادی حیدوں خوردہ کھانیوالے ہیں

۳۶۔ نشاد سے بیدیہک کی عورت میں چمڑے کو چھیدنیوالا کاراور نام بیٹا پیدا ہوتا ہے۔ اور بیدیہک سے کاراور کی عورت میں اندھر ذات والا بیٹا اور نشاد کی عورت میں میدذات والا بیٹا پیدا ہوتا ہے یہ دونوں گانوں کے باہر رہنے والے ہوتے ہیں۔

प्रतिकूलंवर्त्तमानाबाह्याबाह्यतरान्पुनः॥ हीनाहीनान्प्रसूयन्तेवर्णान्पंचदशैवतु॥३१॥

۳۱۔ شودر سے پیدا ہوا براہمن کشتری ویشیہ کی عورت میں آیوگو کشتا چانڈال تینوں ہر دو ورن
کی عورت اور اپنی ہم قوم عورت میں آپ سے پنچ تین پنچ پندرہ بیٹے پیدا کرتے ہیں اور ان نیچ سے
ہیں ویشیہ و کشتری سے پیدا ماگدھ بیدیہک سوت یہ تینوں چاروں ورن کی عورت اور اپنی
ذات کی عورت میں آپ سے پنچ پندرہ بیٹے پیدا کرتے ہیں اس طرح سے تیس بیٹے ہوئے
خواہ چانڈال کشتا آیوگو بیدیہک ماگدھ سوت یہ چھ اول اول سے پچھلے پچھلے اچھے ہیں۔
یہی چھیوں پرت لوم کر کے بیٹے پیدا کریں تو پندرہ بیٹے ہوتے ہیں جیسے چانڈال سے پانچوں
ورن کی عورت میں پانچ لڑکے پیدا ہوئے کشتا سے چاروں ورن کی عورت میں چار لڑکے پیدا
ہوئے آیوگو سے تینوں ورن کی عورت میں تین لڑکے پیدا ہوئے بیدیہک سے
دونوں ورن کی عورت میں دو لڑکے پیدا ہوئے ماگدھ سے ایک ورن کی عورت میں
ایک لڑکا پیدا ہوا سوت سے آگے کوئی نہیں ہے اسلیئے سوت سے کوئی پرت لوم پیدا نہیں
ہوتا اس طرق سے پندرہ بیٹے ہوئے اشلوک میں بھرگ جی نے لفظ ہم کا بیان کیا اسکا مطلب
یہ ہے کہ سوت ماگدھ بیدیہک آیوگو کشتا چانڈال یہ چھ پچھلے پچھلے سے اول اول اچھے ہیں
یہ چھیوں پرت لوم کے طرق پر بیٹے کو پیدا کریں تو پندرہ بیٹے پیدا ہوتے ہیں جیسے سوت سے
پانچوں کی عورت میں پانچ بیٹے پیدا ہوتے ہیں ماگدھ سے چاروں کی عورت میں چار ہوئے بیدیہک سے
تینوں کی عورت میں تین بیٹے ہوئے آیوگو سے دونوں کی عورت میں دو بیٹے ہوئے کشتا سے
ایک کی عورت میں ایک بیٹا ہوا چانڈال سے کوئی اونچ نہیں ہے اس لیئے اس سے ان لوم
نہیں ہوتا اس طرق سے ملکر پندرہ ہوئے دونوں ملکر تیس ہوئے۔

एतेषट्सदृशान्वर्णाञ्जनयन्तिस्वयोनिषु ।। मातृजात्यांप्रसू-
यन्तेप्रवरासुचयोनिषु ।। २७ ।। यथात्रयाणांवर्णानांद्वयोरा-
त्मास्यजायते ।। आनन्तर्यात्स्वयोन्यान्तुतथाबाह्येष्वपिक्रमा-
त् ।। २८ ।। तेचापिबाह्यान्सुबहूंस्ततोऽप्यधिकदूषितान् ।। प-
रस्परस्यदारेषुजनयन्तिविगर्हितान् ।। २९ ।। यथैवशूद्रोब्राह्म-
ण्यांबाह्यंजन्तुंप्रसूयते ।। तथाबाह्यतरंबाह्यश्चातुर्वर्ण्येप्रसू-
यते ।। ३० ।।

۲۷ - یہ سب اپنی ذات کی استری میں اپنے ورن کو پیدا کرتے ہیں یہاں والدہ کی ہم ذات
کے ہونے سے والد کے برابر پیدا لیش اولاد کو جاننا چاہئے کیونکہ چاروں ورن کی استری میں
والد سے نیچ ذات والے پیدا ہوتے ہیں یہ بات آگے کہینگے والد اپنی ذات کی عورت میں
بھی نیچ پیدا کرتے ہیں اسقدر باقی رہا اسیکا بیان اس اشلوک میں کیا جیسے شودر سے
ویشیہ کی استری میں پیدا ہوا لڑکا آیوگو کہلاتا ہے اس سے شدر جو آیوگوی ویشیہ برہمنی کشتریا
شودرا میں پیدا ہوگا وہ آیوگو کہلاتا ہی لیکن شدر جو آیوگو سے پیدا ہو آیوگو دشٹ میں اتنی مثل
دیکھتے ہیں کہ جیسے مثلا مرد و عورت کے ایک نے برہم ہتیا کیا اس سے بیٹا پیدا ہوا اسکی نسبت سے مرد
و عورت دونوں گنہگار ہیں اس لئے جو پیدا ہوگا وہ برا دشٹ ہوگا۔

۲۸ - جیسے تینوں ورن میں سے دو میں اپنی طرح پیدا ہوتا ہے (یعنے عورت قریب یا اپنی
اپنی قوم میں) اسیطرح خارج القوم میں بھی ترتیب سے ہوتا ہے۔

۲۹ - آیوگو وغیرہ چھ ہمقوم عورت میں ان قوم کے بھی زیادہ دشٹ بیٹے کو پیدا کرتے ہیں
جیسے آیوگو کشتا کی عورت میں اپنے سے نیچ بیٹے کو پیدا کرتا ہے اور کشتا بھی آیوگو کی عورت میں اپنے
سے نیچ بیٹے کو پیدا کرتا ہے اسی طرح دیگر برن قوموں میں بھی جاننا چاہیئے۔

۳۰ - جسطرح شودر براہمنی میں چانڈال کو پیدا کرتا ہے اسی طرح چاروں ورن کی عورت میں
اپنے سے بھی نیچ بیٹے کو پیدا کرتا ہے۔

झल्लो मल्लश्च राजन्याद्व्रात्यान्निच्छिविरेव च ॥ नटश्च करणश्चैव खसो द्रविड एव च ॥ २२ ॥ वैश्यात्तु जायते व्रात्यात्सुधन्वाचार्य एव च ॥ कारूषश्च विजन्मा च मैत्रः सात्वत एव च ॥ २३ ॥ व्यभिचारेण वर्णानामवेद्यावेदनेन च ॥ स्वकर्मणां च त्यागेन जायन्ते वर्णसंकराः ॥ २४ ॥ संकीर्णयोनयो ये तु प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ अन्योन्यव्यतिषक्ताश्च तान्प्रवक्ष्याम्यशेषतः ॥ २५ ॥ सूतो वैदेहकश्चैव चण्डालश्च नराधमः ॥ मागधः क्षत्तृजातिश्च तथाऽयोगव एव च ॥ २६ ॥

۲۲- پرائینہ کشتری سے کشتری ذات کی عورت مین جھل ذات والے ہوتے ہین اُسکا نام جھل
پچھب نٹ کرن کھس درڑ ہے -

۲۳ پرائینہ ویشیہ سے ویشیہ ذات کی عورت مین سدھنوا چارج ذات والے ہوتے ہین اُنکو
کارش بجنما میتر ساتوت ذات والے کہتے ہین -

۲۴- دوسرے ذات کے مرد سے دوسری ذات کی عورت مین جماع - دواہ کرنیکے لائق
جو نہین ہے اُسکے ساتھ دواہ اپنے کرمون کا تیاگ - ان سبب سے ورن سنکر پیدا ہوتے ہین
۲۵- آن لوم اور پرت لوم کرکے باہم نسبت سے جو ورن سنکر لوں ہے اُسکو مین کہونگا -
۲۶- سوت اور بیدیہک اور چانڈال اور ماگدھ اور کشتا اور آیوگو -

+ دیکھو شلوک نمبر ۲۰ -

आयोगवश्चक्षत्ता च चण्डालश्चाधमोनृणाम्॥ प्रातिलो-
म्येनजायन्ते शूद्रादपसदास्त्रयः॥१६॥ वैश्यान्मागधवैदेहौक्ष
त्रियात्सूतएवतु॥ प्रतीपमेतेजायन्तेपरेऽप्यपसदास्त्रयः॥१७
॥जातोनिषादाच्छूद्रायांजात्याभवतिपुक्कसः॥ शूद्राज्जातोनि
षाद्यांतुसवैकुक्कुटकःस्मृतः॥१८॥ क्षत्तुर्जातस्तथोग्रायांश्व-
पाकइतिकीर्त्यते॥ वैदेहकेनत्वम्बष्ठ्यामुत्पन्नोवेणउच्यते॥
१९॥ द्विजातयःसवर्णासुजनयन्त्यव्रतांस्तुयान्॥ तान्सावि-
त्रीपरिभ्रष्टान्व्रात्यानितिविनिर्दिशेत्॥२०॥ व्रात्यात्तुजायते
विप्रात्पापात्माभूर्जकण्टकः॥ आवन्त्यवाटधानौचपुष्प
धःशैखएवच॥२१॥

۱۶- آیوگو کشتا چانڈال یہ تینوں بیٹے کام میں سمرتھ یعنے صاحب قدرت نہیں ہوتے۔
۱۷- ماگدھ ویدیہ سوت یہ تینوں بیٹے بھی کام میں سمرتھ نہیں ہوتے۔
۱۸- نشاد سے شودرا کنیا میں پکس ذات والے ہوتے ہیں نشاد میں ککٹ ذات والے ہوتے ہیں
۱۹- کشتا سے اگر کنیا میں سوپاک ذات والے ہوتے ہیں ویدیہ سے امبشٹ ذات کی کنیا میں بین ذات والے ہوتے ہیں۔
۲۰- دوجنما ان سے ہم ذات عورت میں جو پیدا ہوئے مگر ان کا جنیو وغیرہ سنسکار نہیں ہوا ہے وہ براتیہ کہلاتے ہیں۔
۲۱- براتیہ براہمن سے براہمنی میں جو پیدا ہوا وہ پاپاتما بھورج کنٹک نام والا کہلاتا ہے اور اسی کو دیش بھید سے آونتیہ باٹ دھان پشپدھ شیکھ کہتے ہیں۔

विप्रस्य त्रिषुवर्णेषुनृपतेर्वर्णयोर्द्वयोः ॥ वैश्यस्यवर्णेचैकस्मिन्षडेतेऽपसदाः स्मृताः ॥१०॥ क्षत्रियाद्विप्रकन्यायांसूतोभवति जातितः ॥ वैश्यान्मागधवैदेहौराजविप्राङ्गनासुतौ ॥११॥ शूद्रादायोगवः क्षत्ता चण्डालश्चाधमोनृणाम् ॥ वैश्यराजन्यविप्रासुजायन्तेवर्णसंकराः ॥ १२ ॥ एकान्तरेत्वानुलोम्यादम्बष्ठोग्रौयथास्मृतौ ॥ क्षत्तृवैदेहकौतद्वत्प्रातिलोम्येऽपिजन्मनि ॥ पुत्रायेऽनन्तरस्त्रीजाः क्रमेणोक्ताद्विजन्मनाम् ॥ ताननन्तरनाम्नस्तुमातृदोषात्प्रचक्षते ॥ १४ ॥ ब्राह्मणादुग्रकन्यायामावृतोनामजायते ॥ आभीरोऽम्बष्ठकन्यायामायोगव्यांतुधिग्वणः ॥१५॥

۱۰- براہمن سے کشتر انی وغیرہ تین ورن کی استری مین اور کشتری سے ویشیہ وغیرہ دو ورن کی استری مین اور ویشیہ سے شودر ورن کی استری مین جو پیدا ہوئے ہین وہ چھ اپسد یعنی ناقص کہلاتے ہین

۱۱- ان قوم کو بیان کرکے اب پرت قوم کو کہتے ہین) کشتری سے براہمنی کنیا مین سوت ذات والا ہوتا ہے اور ویشیہ سے کشتریا کنیا مین ماگدھ اور براہمنی کنیا مین بیدیہ ذات والا ہوتا ہے۔

۱۲- شودر سے ویشیہ اور کشتری اور براہمن کی کنیا سے حسب سلسلہ آیوگو کشتا آدمیون مین پنچ چانڈال ذات والے ہوتے ہین۔

۱۳- جسطرح ایک ذات کے تفاوت ہین ان قوم مین امبشٹ اور اگر ہے اسی طرح پرت قوم مین کشتا اور بیدیہک ہین

۱۴- دو جنماؤن مین ایک ذات کی تفاوت والی عورت مین سلسلہ سے جو لڑکے پیدا ہوئے کہے ہین وہ سب ماں کے عیب سے ماں کی ذات والے کہلاتے ہین۔

۱۵- براہمن سے اگر امبشٹ ایوگو ان تینون کی کنیا مین سلسلہ سے آبرت۔ ابھیر۔ دھگون ذات والے ہوتے ہین

स्त्रीष्वनन्तरजातासुद्विजैरुत्पादितान्सुतान्॥ सदृशानेवतानाहु-
र्मातृदोषविगर्हितान्॥ ६॥ अनन्तरासुजातानांविधिरेषसनात-
नः॥ द्व्येकान्तरासुजातानांधर्म्यंविद्यादिमंविधिम्॥ ७॥ ब्राह्म-
णाद्वैश्यकन्यायामम्बष्ठोनामजायते॥ निषादःशूद्रकन्यायां
सः पारशवउच्यते॥ ८॥ क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायांक्रूराचारविहा-
रवान्॥ क्षत्रशूद्रवपुर्जन्तुरुग्रोनामप्रजायते॥ ९॥

۶- دوِج اور ایک ذات کی تفاوت والی عورت سے جو اولاد پیدا ہو وہ موافق کہلاتی ہے مگر اُنہیں ماں کے عیب کا نقص ہے۔

۷- ایک ذات کی تفاوت میں پیدا ہوئی اولاد کے قدیم طریق کو کہا اب دو ایک ذات کے تفاوت میں پیدا ہوئی اولاد کے طریق کو کہتے ہیں۔

۸- براہمن سے بیاہتا ویشیا میں امبشٹ والا پیدا ہوتا ہے اور براہمن سے بیاہتا شودر کی کنیا میں نشاد ذات والا پیدا ہوتا ہے اسکو پارشو کہتے ہیں۔

۹- کشتری سے بیاہتا شودر کنیا میں بدچلن کشتری شودر رنگ والا اُگر نام ذات والا ہوتا ہے۔

مہا بھارت انساسن پرب ادھیائے [illegible] شلوک [illegible] کے بموجب براہمن سے براہمنی و کشترانی میں براہمن ویشیا میں ویشیہ و کشتری سے کشترانی و ویشیانی میں کشتری و ویشیا سے ویشیہ و شودرانی میں ویشیہ ورن شامل ہوتا ہے۔

امبشٹ و پارشو و اگر وغیرہ کسی قوم کا نام جدا گانہ نہیں قائم ہوا کیونکہ ہر ایک قسم کی اولاد چاروں ورن میں سے کسی ورن میں داخل ہوتی گئی۔ امبشٹ بعض راجاؤں کا نام بھی تھا مہا بھارت کرن پرب (سبھائی قسم) کشتریوں میں ایک قوم امبشٹ ہے چتر گپت کے لڑکا کا لقب امبشٹ ہوا تھا اور چتر گپت نسبتی بموجب قول بھوشیہ پوران مندرجہ ورن [illegible] کے کشتری ورن میں چتر گپت کو پراسمرت وسیہ پران میں چودہ جم میں ایک جم قرار دیا ہے اور جم کا ورن [illegible] براہمن [illegible] میں کشتری لکھا ہے۔

अधीयीरंस्त्रयो वर्णाः स्वकर्मस्था द्विजातयः॥ प्रब्रूयाद्ब्राह्मणस्त्वे-
षां नेतराविति निश्चयः॥१॥ सर्वेषां ब्राह्मणो विद्याद्वृत्त्युपाया-
न्यथाविधि। प्रब्रूयादितरेभ्यश्च स्वयं चैव तथा भवेत्॥ २॥ वैशे-
ष्यात्प्रकृतिश्रैष्ठ्यान्नियमस्य च धारणात्॥ संस्कारस्य विशेषा-
च्च वर्णानां ब्राह्मणः प्रभुः॥ ३॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो व-
र्णा द्विजातयः॥ चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पंचमः॥ ४॥
सर्ववर्णेषु तुल्यासु पत्नीष्वक्षतयोनिषु॥ आनुलोम्येन संभूता
जात्या ज्ञेयास्त एव ते॥ ५॥

۱- براہمن کشتری ویشیہ تینوں ورن اپنے کرم میں قائم ہو کر وید کے جاننے ہوویں سے بیچ دہرم کو کرنے ہوئے وید کو پڑھیں براہمن تو دوسروں کو پڑھاوے مگر کشتری و ویشیہ پڑھاویں اگر پڑھاویں تو اپنے گھر میں

۲- براہمن سب لوگوں کی تدبیر معاش کو موافق طریق کے جانے اور دوسروں کو سمجھا دے اور آپ بھی اسی کے موافق کرے۔

۳- بڑی ذات اور اتم جگہ سے پیدائش اور نیم کا دھارن اور بڑا سنسکار ان وجہوں سے براہمن سب سے بڑا ہے اور سب ورنوں کا گرو اور پربھو ہے۔

۴- براہمن کشتری ویشیہ یہ تینوں ورن دو جنما کہلاتے ہیں اور چوتھا ورن شودر ایک جنما کہلاتا ہے اور کوئی ورن پانچواں نہیں ہے۔

۵- سب ورنوں میں ان عورتوں سے جو ہم قوم و منکوحہ بوقت شادی باکرہ ہوں جو اولاد پیدا ہوتی ہو وہ مساوی (یعنے ماں باپ کی ذات والی) کہلاتی ہے۔

+ یعنے ایک جنم ماں باپ سے ہوتا ہے اور دوسرا جنم سنسکار سے ہوتا ہے۔

‡ مہابھارت انساسن پرب ادھیائے ... شلوک ۳ و ۴ و ۳۰ میں بھی صاف لکھا ہے کہ پانچواں ورن نہیں ہے اور چاروں ورنوں کے فرائض بیان ہوتے ہیں

धर्मेणाचन्नव्यवहारा तिष्ठेद्यत्नमुत्तमम्॥ दद्याञ्चसर्वभूतानामन्नमेवप्रयत्नतः॥३३३॥ विप्राणांवेदविदुषांगृहस्थानांयशस्विनाम्॥ शुश्रूषैवतुशूद्रस्यधर्मोनैश्रेयसःपरः॥३३४॥ शुचिरुत्कृष्टशुश्रूषुर्मृदुवागनहंकृतः॥ ब्राह्मणाद्याश्रयोनित्यमुत्कृष्टांजातिमश्नुते॥३३५॥ एषोऽनापदिवर्णानामुक्तःकर्मविधिःशुभः॥ आपद्यपिहियस्तेषांक्रमशःतन्निबोधत॥३३६॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां
नवमोऽध्यायः ९

۳۳۳- دھرم سے ترقی دولت مین اچھّی تدبیر کرے سب جانداروں کے کھانے پینے کی نیک طریق سے خبرگری کرے-

۳۳۴- وید پڑھنے والے نیکنام گرہستھ براہمنوں کی سیوا شودروں کی موکش دینے مین اول افضل ہے-

۳۳۵- پاکیزگی و خدمت بزرگان و نرم زبانی و خودی نکرنا و ہمیشہ براہمنوں کی پناہ مین رہنا یہ سب کام شودروں کو اتم ذات دینے والے ہین-

۳۳۶- بحالت نہونے وقت مصیبت کے یہ طریق اعمال حسنہ ہر چہاروں کیواسطے کہا اب وقت مصیبت مین انھون کے طریق عمل کو سلسلہ وار کہتے ہین-

منوجی کا دھرم گرنتھ کی سنگھتا کا
نوان ادھیا سماپت ہوا-

प्रजापतिर्हि वैश्याय सृष्ट्वा परिददे पशून्। ब्राह्मणाय च राज्ञे च सर्वाः परिददे प्रजाः॥३२७॥ न च वैश्यस्य कामः स्यान्न रक्षेयं पशूनिति। वैश्ये चेच्छति नाऽन्येन रक्षितव्याः कथंचन॥३२८॥ मणिमुक्ताप्रवालानां लोहानां तान्तवस्य च। गन्धानां च रसानां च विद्यादर्घबलाबलम्॥३२९॥ बीजानामुप्तिविच्च स्यात्क्षेत्रदोषगुणस्य च। मानयोगं च जानीयात्तुलायोगांश्च सर्वशः॥३३०॥ सारासारं च भाण्डानां देशानां च गुणागुणान्। लाभालाभं च पण्यानां पशूनां परिवर्द्धनम्॥३३१॥ भृत्यानां च भृतिं विद्याद्भाषाश्च विविधान्नृणाम्। द्रव्याणां स्थानयोगांश्च क्रयविक्रयमेव च॥३३२॥

۳۲۷- برہما جی نے ویشیہ کو پیدا کرکے اسکو پشُو (یعنے چارپایہ) دیا اور براہمن و کشتری کو تمام رعیت دی۔

۳۲۸- ویشیہ یہ خواہش نہ کرے کہ چارپایہ کی حفاظت نکرینگے کاشتکاری وغیرہ کرتا ہوا بھی چارپایہ کی حفاظت ضرور کرے اور جبتک ویشیہ چارپایہ کی حفاظت کرے تب تک دوسرا ورن نکرے۔

۳۲۹- جواہرات مونگا موتی و لوہا و سوت و خوشبویات و رس ان سبھون کی قیمت مالک و وقت سمجھکر کم و زیادہ مقرر کرے۔

۳۳۰- کھیت کا عیب و ہنر تخم ریزی پر سبھکے دو ورن وغیرہ تعداد تول و ماشہ وغیرہ تعداد وزن ان سبھونکا جاننے والا ویشیہ ہووے۔

۳۳۱- برتنون کا سارا سار ملکونکا عیب و ہنر اشیاء فروختنی کا نفع و نقصان ترقی چارپایہ ان سب کو جانے۔

۳۳۲- مزدورون کی مزدوری آدمیون کی انواع اقسام کی زبان روپیہ اشرفی وغیرہ چیزون کے قیام کی تدبیر اور خرید و فروخت ان سب کو جانے۔

अद्भ्योऽग्निर्ब्रह्मतः क्षत्रमश्मनो लोहमुत्थितम्॥ तेषां सर्वत्रगं ते-
जः स्वासु योनिषु शाम्यति॥ ३२१॥ नाब्रह्म क्षत्रमृध्नोति नाक्षत्रं
ब्रह्म वर्द्धते॥ ब्रह्म क्षत्रं च संपृक्तमिह चामुत्र वर्द्धते॥ ३२२॥ द-
त्त्वा धनं तु विप्रेभ्यः सर्वदण्डसमुत्थितम्॥ पुत्रे राज्यं समासृज्य
कुर्वीत प्रायणं रणे॥ ३२३॥ एवं चरन्सदा युक्तो राजधर्मेषु पा-
र्थिवः॥ हितेषु चैव लोकस्य सर्वान्भृत्यान्नियोजयेत्॥ ३२४॥
एषोऽखिलः कर्मविधिरुक्तो राज्ञः सनातनः॥ इमं कर्मविधिं-
विद्यात्क्रमशो वैश्यशूद्रयोः॥ ३२५॥ वैश्यस्तु कृतसंस्कारः कृ-
त्वा दारपरिग्रहम्॥ वार्त्तायां नित्ययुक्तः स्यात्पशूनां चैव रक्ष-
णे॥ ३२६॥

۳۲۱ - پانی سے آگ کی پیدائش ہے برہمن سے کشتری کی پیدائش ہے پتھر سے لوہے کی پیدائش ہے اور انھوں کا تیج سب جگہ جاتا ہے (دشمنوں کو مغلوب کرتا و مارتا ہے) لیکن اپنی اصل کو پاکر شانت ہو جاتا ہے۔

۳۲۲ - برہمن سے کشتری اور کشتری سے برہمن علیحدہ ہو کر ترقی نہیں پاتا دونوں شامل رہنے سے اس لوک میں ترقی پاتے ہیں۔

۳۲۳ - سزا سے حاصل ہوئی تمام دولت کو برہمن کو دیکر اور ملک بیٹے کو دیکر جنگ میں ترک قالب کرے۔

۳۲۴ - اس طریق سے راجہ ہر ایک وقت پر راج دھرموں کو کرتا ہوا بہبودی عالم میں سب ملازمان کو مصروف کرے۔

۳۲۵ - یہ تمام طریق راجہ کے عمل روزمرہ کا کہا گیا اب آگے سلسلہ وار ویشیہ اور شودر کے دھرموں کو کہیں گے۔

۳۲۶ - ویشیہ سنسکار کو پاکر بیواہ کرکے حفاظت چارپایہ و کاشتکاری وغیرہ میں ہمیشہ مصروف رہے

लोकानन्यान्सृजेयुर्ये लोकपालांश्च कोपिताः॥ देवान्कुर्युरदे-
वांश्च कः क्षिण्वंस्तान्समृध्नुयात्॥ ३१५॥ यानुपाश्रित्य तिष्ठन्ति
लोका देवाश्च सर्वदा॥ ब्रह्म चैव धनं येषां को हिंस्यात्तान्जिजी
विषुः॥ ३१६॥ अविद्वांश्चैव विद्वांश्च ब्राह्मणो दैवतं महत्॥ प्रणी
तश्चाप्रणीतश्च यथाग्निर्दैवतं महत्॥ ३१७॥ श्मशानेष्वपि ते-
जस्वी पावको नैव दुष्यति॥ हूयमानश्च यज्ञेषु भूय एवाभिवर्द्धते
॥ ३१८॥ सर्वं यद्यप्यनिष्टेषु वर्तन्ते सर्वकर्मसु॥ सर्वथा ब्राह्म-
णाः पूज्याः परमं दैवतं हि तत्॥ ३१९॥ क्षत्रस्यातिप्रवृद्धस्य-
ब्राह्मणान्प्रति सर्वशः॥ ब्रह्मैव सन्नियन्तृ स्यात्क्षत्रं हि ब्रह्मसं-
भवम्॥ ३२०॥

۳۱۵- جو براہمن خشمگین ہوکر دوسرا لوک و لوکپال بناوے اور دیوتا کو غیر دیوتا کرے اس براہمن کو
تکلیف دیکر کون شخص دولت و حکومت حاصل کر سکتا ہے-

۳۱۶- جن براہمنوں کی دولت وید ہی ہے اُنھوں کی پناہ میں لوک اور دیوتا رہتے ہیں اُن
براہمنوں کو زندگی کی خواہش رکھنے والا کون شخص ماریگا-

۳۱۷- جسطرح اگن سنسکار کو حاصل کرے یا نکرے تاہم وہ بڑا دیوتا ہے اسیطرح براہمن پنڈت
ہو یا مورکھہ ہو تاہم بڑا دیوتا ہے-

۳۱۸- تیج والی اگن شمسان میں بھی دوش کو نہیں پراپت ہوتی پھر بھی یگیہ میں ہون کو
پراپت ہوتی ہے بہرحال ترقی ہی پاتی ہے-

۳۱۹- اسیطرح اگرچہ براہمن تمام اعمال ناشائستہ کرتے ہیں تاہم پوجنے کے لائق ہیں اور بڑے
دیوتا ہیں-

۳۲۰- کشتری تمام چیزوں سے بڑا ہو تاہم براہمن کو اپنے اختیار میں نہیں کر سکتا کیونکہ وہ براہمن
سے ہوا ہے اس سبب سے براہمن کشتریوں کو اپنے اختیار میں کر سکتا ہے-

परिपूर्णं यथा चन्द्रं दृष्ट्वा हृष्यन्ति मानवाः ॥ तथा प्रकृतयो यस्मिन्स चान्द्रव्रतिको नृपः ॥ ३०९ ॥ प्रतापयुक्तस्तेजस्वी नित्यं स्यात्पापकर्मसु ॥ दुष्टसामन्तहिंस्रश्च तदाग्नेयं व्रतं स्मृतम् ॥ ३१० ॥ यथा सर्वाणि भूतानि धरा धारयते समम् ॥ तथा सर्वाणि भूतानि बिभ्रतः पार्थिवं व्रतम् ॥ ३११ ॥ एतैरुपायैरन्यैश्च युक्तो नित्यमतन्द्रितः ॥ स्तेनान्राजा निगृह्णीयात्स्वराष्ट्रे पर एव च ॥ ३१२ ॥ परामप्यापदं प्राप्तो ब्राह्मणान्न प्रकोपयेत् ॥ ते ह्येनं कुपिता हन्युः सद्यः सबलवाहनम् ॥ ३१३ ॥ यैः कृतः सर्वभक्ष्योऽग्निरपेयश्च महोदधिः ॥ क्षयी चाप्यायितः सोमः को न नश्येत्प्रकोप्य तान् ॥ ३१४ ॥

۳۰۹- جسطرح پورن چندرمان کو دیکھکر آدمیونکو آنند ہوتا ہے اسی طرح سب جاندار راجہ کو دیکھکر خوش رہیں اس طریق سے راجہ رہا کرے۔

۳۱۰- پاپ کرموں میں ہمیشہ صاحب اقبال و پرجلال رہے یعنے مجرمونکو ضرور سزا دیوے اور اگن کا برت کرتا ہوا دُشٹ منتریوں کو سزا دینے والا رہے۔

۳۱۱- جسطرح زمین تمام جانداروں کو اپنے اوپر یکساں قائم رکھتی ہے اسی طرح راجہ زمین کا برت دھارن کرتا ہوا سب جانداروں کو دھارن کرے۔

۳۱۲- ان تدبیروں اور دیگر تدبیروں سے مشغول رہکر ہمیشہ سستی سے دور رہے اپنے اور دوسروں کی راج سے چوروں کو نیست و نابود کرے۔

۳۱۳- راجہ وقت مصیبت میں بھی برہمنوں کو خشمگین نکرے کیونکہ اونکے غصہ کرنے سے راجہ مع فوج و سواریوں کے نیست و نابود ہو جاتا ہے۔

۳۱۴- جن برہمنوں نے اگن کو سرب بھکشی اور مہا سمدر کو کھاری اور چندرمان کو گھٹنی بڑھنی والا کر دیا ان برہمنوں کو خشمگین کرا کے کون فانی نہوگا۔

इन्द्रस्यार्कस्य वायोश्च यमस्य वरुणस्य च॥ चन्द्रस्याग्नेः पृथि-
व्याश्च तेजोवृत्तं नृपश्चरेत्॥ ३०३॥ वार्षिकांश्चतुरो मासान्यथे-
न्द्रोऽभिप्रवर्षति॥ तथाभिवर्षेत्स्वं राष्ट्रं कामैरिन्द्रव्रतं चरन्॥ ३०४
॥ अष्टौ मासान्यथादित्यस्तोयं हरति रश्मिभिः॥ तथा हरेत्करं रा-
ष्ट्रान्नित्यमर्कव्रतं हि तत्॥ ३०५॥ प्रविश्य सर्वभूतानि यथा चर-
ति मारुतः॥ तथा चारैः प्रवेष्टव्यं व्रतमेतद्धि मारुतम्॥ ३०६॥
यथा यमः प्रियद्वेष्यौ प्राप्ते काले नियच्छति॥ तथा राज्ञा निय-
न्तव्याः प्रजास्तद्धि यमव्रतम्॥ ३०७॥ वरुणेन यथा पाशैर्बद्ध
एवाभिदृश्यते॥ तथा पापान्निगृह्णीयाद्व्रतमेतद्धि वारुणम्
॥ ३०८॥

۳۰۳- اندر سورج ہوا یم راج برن چندرمان اگن زمین انھوں کے پراکرم کو راجہ دھارن کرے اور دشمنوں کو خالی کرکے اقبال و محبت سے شامل رہے۔

۳۰۴- جسطرح چار مہینہ برسات میں راجہ اندر پانی برساتے ہیں اُسیطرح راجہ اندر کا کام کرتا ہوا تمام راج میں رعایا کی تمناء دلی پوری کرے۔

۳۰۵- جسطرح سورج اپنی شعاع سے آٹھ مہینے تک پانی زمین سے کھینچتے ہیں اُسیطرح راجہ سورج کا کام کرتا ہوا راج سے محصول لیوے۔

۳۰۶- جسطرح ہوا تمام راج میں داخل ہو کر گشت کرتی ہے اُسیطرح راجہ ہوا کا کام کرتا ہوا بوسیلہ جاسوسان تمام جانداروں میں داخل ہو کر گشت کرے۔

۳۰۷- جسطرح یم راج دوست دشمن دونوں کو قریب المرگ ہونے پر مارتا ہے اُسیطرح راجہ سب رعایا کو جرم کے موافق یم راج کا کام کرتا ہوا سزا دیوے۔

۳۰۸- جسطرح برن دشمنوں کو باندھتے ہیں اُسیطرح راجہ برن کا کام کرتا ہوا مجرموں کو گرفتار کرے۔

चारेणोत्साहयोगेन क्रियय्यैवचकर्मणाम्॥ स्वशक्तिंपरशक्तिंचनित्यंविद्यान्महीपतिः॥ २९८॥ पीडनानिचसर्वाणिव्यसनानितथैवच॥ आरभेततत: कार्यंसंचिंत्यगुरुलाघवम्॥ २९९॥ आरभेतैवकर्माणिश्रान्तः श्रान्तः पुनःपुनः॥ कर्माण्यारभमाणांहिपुरुषंश्रीर्निषेवते॥ ३००॥ कृतंत्रेतायुगंचैवद्वापरंकलिरेवच॥ राज्ञोवृत्तानिसर्वाणिराजाहियुगमुच्यते॥ ३०१॥ कलिःप्रसुप्तोभवतिसजाग्रद्द्वापरंयुगम्॥ कर्मस्वभ्युद्यतस्त्रेताविचरंस्तुकृतंयुगम्॥ ३०२॥

۲۹۸- جاسوس و انتساہ (یعنے قوت دل) و عمل اُنکے وسیلہ سے راجہ دوسرون کی طاقت کو ہمیشہ جانلے-

۲۹۹- تمام تکلیفات و رنج کو خیال کرکے چھوٹے بڑے کام کو آغاز کرے-

۳۰۰- اگر کامون کو کرتے کرتے تھک جاوے تو پھر پھر کامون ہی کا آغاز کرتا رہے کیونکہ لکشمی کام کرنیوالون کی سیوا کرتی ہے-

۳۰۱- ست جگ ترتیا دواپر کلجگ یہ چار جگ ہیں مگر کچھ نہیں بلکہ راجہ جیسا رواج جاری کرے وہی جگ ہوتا ہے یعنے راجہ ہی جگ ہے-

۳۰۲- جب راجہ بیوقوفی و سستی وغیرہ سے انجام کار نکرے تب کلجگ ہوتا ہے اور جب جانکر کام نہین کرتا تب دواپر ہوتا ہے اور جب کام کرتا ہے تب ترتیا ہوتا ہے اور جب شاستر کے موافق کام کرتا ہے تب ست جگ ہوتا ہے اسلیئے راجہ ہر وقت کام کرتا رہے یہ سدھانت ہے چار و جگ کا ہونا سدھانت نہیں ہے-

स्वाम्यमात्यौपुरंराष्ट्रंकोशदण्डौसुहृत्तथा॥सप्तप्रकृतयोह्ये-
तासप्तांगंराज्यमुच्यते॥ २९४॥सप्तानांप्रकृतीनांतुराज्यस्या
सांयथाक्रमं॥पूर्वंपूर्वंगुरुतरंजानीयाद्व्यसनंमहत्॥२९५॥सप्तां
गस्येहराज्यस्यविष्टब्धस्यत्रिदण्डवत्॥अन्योन्यगुणवैशेष्या
न्नकिंचिदतिरिच्यते॥ २९६॥तेषुतेषुतुकृत्येषुतत्तदंगंविशिष्य
ते॥येनयत्साध्यतेकार्य्यंतत्तस्मिन्श्रेष्ठमुच्यते॥ २९७॥

٢٩٤ - راجہ و وزیر و دارالسلطنت و ملک و خزانہ و سزا دہندہ و دوست وغیرہ ان ساتوں کو
پرکرت کہتے ہیں اور یہ ساتوں عضو سلطنت ہیں اسواسطے سلطنت ہفت اعضا والی کہلاتی ہے -

٢٩٥ - ان ساتوں میں سلسلے سے اول اول کو سب بڑا دکھ ہوتا ہے یعنے آخر آخر کے نہ ہونے میں
اول اول کو دکھ ہوتا ہے -

٢٩٦ - اس لوک میں باہم ملے ہوئے ہفت اعضا سلطنت میں باہم عیب و گاری سے تردنڈ کی
طرح کوئی عضو زائد نہیں ہے اگرچہ اول اول عضو کو زیادہ کہا تو بھی ان ساتوں عضا کے
درمیان میں ایک عضو کے کام کو دوسرا عضو بذات خود نہیں کرسکتا اس سے اگلے لگے
عضو کی بھی ضرورت ہوتی ہے اسی وجہ سے زیادتی کی ممانعت ہے انہیں تینی کے تردنڈ کی مثال
دی ہے جیسے تینوں ڈنڈ ملاکر اوپر چار انگل گئو کے بال سے بندش کرنے سے باہم پیوست
ہوتی ہے اور تردنڈ دھارن سے شاستر ارتھ میں کوئی ڈنڈ زیادہ نہیں ہے ویسے ہی
ہفت اعضا سلطنت مرقومہ بالا کو جاننا چاہئے -

٢٩٧ - جس عضو سے جو کام ہو وہ اسمیں افضل ہے -

प्राकारस्यचभेत्तारंपरिखाणांचपूरकम्॥ द्वाराणांचैवभंक्ता-
रंक्षिप्रमेवप्रवासयेत्॥ २८९॥ अभिचारेषुसर्वेषुकर्त्तव्योद्वि-
शतोदमः॥ मूलकर्मणिचानाप्तेःकृत्यासुविविधासुच २९०
॥ अबीजविक्रयीचैवबीजोत्कृष्टंतथैवच॥ मर्यादाभेदकश्चै-
वविकृतंप्राप्नुयाद्वधम्॥२९१॥सर्वकण्टकपापिष्ठंहेमकारं
तुपार्थिवः॥ प्रवर्त्तमानमन्यायेछेदयेल्लवशःक्षुरैः॥२९२॥
सीताद्रव्यापहरणेशस्त्राणामौषधस्यच॥ कालमासाद्यका-
र्यंचराजादण्डंप्रकल्पयेत्॥ २९३॥

۲۸۹ - قلعہ کے توڑنیوالا اور اوسکی خندق کو پاٹنے والا اور اوسکے دروازہ کو توڑنیوالا جلد ملک سے باہر نکالدیا جاوے -

۲۹۰ - شاستر مین کہے ہوے مارن کا پرلوگ اور پالون کی دھول لیکر مارن پرلوگ ان کرہون کے کرنیوالون کو دوسوپن ڈنڈ دینا چاہیے اگر اس پرلوگ سے آدمی مرجاے تو سزا اسے قتل دینا اور اسی طریق سے مان باپ اور زوجہ کو چھوڑکر اگر منتری وغیرہ موہ کرکے دولت لینے کیواسطے بسی کرن وا چاٹن وانواع اقسام کا پرلوگ کرین تو اونکے کرنیمین بھی دوسوپن ڈنڈ لینا چاہیے

۲۹۱ - جو بیج کہ جمنے کے لائق نہین ہے اوسکو جمنے کے لائق کہکر فروخت کرنیوالا یا ناقص تخم مین تھوڑا اچھا تخم ڈالکر بیچنے والا مرجادا کا کھونیوالا یہ سب انواع اقسام کی سزا سے قطع اعضا پاوین

۲۹۲ - سب دشٹون مین بڑا دشٹ سنار ہے وہ جب قصور کرے تو جرم کے موافق تھوڑے تھوڑے عضو کو چھوری سے کاٹے -

۲۹۳ - ہل وپھرودہا وغیرہ جو آلات کاشتکاری ہین اور اسلحہ اور ادویہ انکے چرانے مین وقت اور محل کو دیکھکر راجہ سزا کا تعین کرے -

चिकित्सकानांसर्वेषांमिथ्याप्रचरतांदमः॥ अमानुषेषुप्रथमो
मानुषेषुतुमध्यमः॥२८४॥ संक्रमध्वजयष्टीनांप्रतिमानांच
भेदकः॥ प्रतिकुर्याच्चतत्सर्वंपंचदद्याच्छतानिच॥२८५॥ अ-
दूषितानांद्रव्याणांदूषणेभेदनेतथा॥ मणीनामपवेधेचदण्डः
प्रथमसाहसः॥२८६॥ समैर्हिविषमंयस्तुचरेद्वैमूल्यतोऽपिवा
॥ समाप्नुयाद्दमंपूर्वंनरोमध्यममेववा॥२८७॥ बन्धनानिचस
र्वाणिराजामार्गेनिवेशयेत्॥ दुःखितायत्रदृश्येरन्विकृताःपा
पकारिणः॥२८८॥

۲۸۴- جو شخص بدون علم شاستر کے چارپایہ وغیرہ مین جھوٹھی طبابت کرتا ہی اُس سے پورب ساہس
تاوان اور آدمیون مین جھوٹھی طبابت کرنیوالے سے مدہیم ساہس تاوان لینا چاہیئے-

۲۸۵- پانی کے اوپر آنے جانے کے واسطے قائم جو لکڑی یا پتھر سے اور محل بادشاہی مین جو
بیرق جھنڈا ہے اور تالاب وغیرہ مین جو لٹھہ ہے اور دیوتا کی مورت ان چیزون مین سے کسی چیز
کا علیحدہ کرنیوالا پانسوین ڈنڈ دیوے اور جو بگاڑا ہے اُسکو بناوے-

۲۸۶- بے عیب چیزونکو باعیب کرنے اور توڑنے مین اور جواہرات وغیرہ مین ناکارہ سوراخ
کرنیمین پرتھم ساہس ڈنڈ دیوے-

۲۸۷- برابر قیمت دینے والون مین ایک کو اچھی چیز اور دوسرے کو ناقص چیز یا کسیکو بیش قیمت والے
چیز اور کسیکو کم قیمت والی چیز دینے والا پورب ساہس یا مدہم ساہس ڈنڈ دیوے حسب حیثیت جرم
تعین سزا کرنا چاہیئے-

۲۸۸- تمام قیدخانون کو سڑک پر بنانا چاہیئے تاکہ اُسکے دیکھنے سے پاپ کرنیوالون کو دُکھہ ہو
دلعنی پابجولان دبھوکھے وپیاسے اور ناخن ومونے سر وداڑھی کے بال بڑھے ہوئے ولاغر بدن
ایسے قیدیون کے دیکھنے سے سب آدمی کارِ ناکردنی کرنے سے خوف کھاوینگے کہ جب ہم بُرا کام
کرینگے تو ایسی حالت ہوجاویگی-

तडागभेदकं हन्यादप्सु शुद्धवधेन वा॥ यद्वापि प्रतिसंस्कुर्याद्दा-
प्यस्तूत्तमसाहसम्॥ २७९॥ कोष्ठागारायुधागारदेवतागारभेद-
कान्॥ हस्त्यश्वरथहर्तॄंश्च हन्यादेवाविचारयन्॥ २८०॥ यस्तु-
पूर्वनिविष्टस्य तडागस्योदकं हरेत्॥ आगमं वाप्यपां भिन्द्या-
त्स दाप्यः पूर्वसाहसम्॥ २८१॥ समुत्सृजेद्राजमार्गे यस्त्वमेध्य
मनापदि॥ स द्वौ कार्षापणौ दद्यादमेध्यं चाशु शोधयेत्॥ २८२
॥ आपद्गतोऽथवा वृद्धो गर्भिणी बाल एव वा॥ परिभाषणमर्ह-
न्ति तच्च शोध्यमिति स्थितिः॥ २८३॥

۲۷۹- جو تالاب کہ اشنان اور دان وغیرہ سے لوگون کا اپکار کرنیوالا ہے اُسکو پل وغیرہ شکست کرنے سے جو بگاڑتا ہے اُس آدمی کو پانی مین غرق کرکے یا اور طرح سے نابود کرے اگر وہ آدمی تالاب مذکور کو بدستور سابق بنا دیوے تو اُسکو خالی نکرنا چاہیئے بلکہ اتم ساہس تاوان لینا چاہیئے

۲۸۰- راجہ کا غلہ وغیرہ دولت کا خزانہ و اسلحہ خانہ و دیوتا کا مندر انھونکا توڑنے و بگاڑنیوالا و ہاتھی و گھوڑا اور رتھ کو چرانیوالا ان سب کو مارنا اسمین کچھ بچار نکرنا چاہیئے -

۲۸۱- کسی شخص نے رعیت کیواسطے تالاب بنایا اور دوسرا آدمی اُسکا پانی لیوی اور پانی کے آنیکی راہ کو بینڈ لگا کر بند کردے تو وہ شخص پرتھم ساہس ڈنڈ کے لائق ہے -

۲۸۲- بغیر وقت مصیبت کے شاہراہ مین ناپاک چیز کو ڈالے تو وہ کارشاپن ڈنڈ دیوے اور جس ناپاک چیز کو ڈالا ہے اُسکو جلد شاہراہ سے باہر لیجاوے -

۲۸۳- اگر کوئی مصیبت زدہ یا بوڑھا یا حاملہ عورت یا نابالغ لڑکا حرکت مذکورہ بالا کرے تو صرف اس بات کے کہنے کے لائق ہوتا ہے کہ یہ کیا کیا سزا کے لائق نہین ہوتا لیکن اُس ناپاک چیز کو تو ضرور راستہ سے اُٹھا لیجا دین -

यश्चापिधर्मसमयात्प्रच्युतोधर्मजीवनः॥ दण्डेनैवतमप्योषे त्स्वकाद्धर्माद्धिविच्युतम्॥२७३॥ ग्रामघातेहिताभंगेपथिमो षाभिदर्शने॥ शक्तितोनाभिधावन्तोनिर्वास्याःसपरिच्छदाः॥ २७४॥ राज्ञःकोशापहर्तृंश्चप्रतिकूलेषुचस्थितान्॥ घातये द्विविधैर्दण्डैररीणांचोपजापकान्॥२७५॥ सन्धिंछित्वातु येचौर्यंरात्रौकुर्वन्तितस्कराः॥ तेषांछित्वानृपोहस्तौतीक्ष्णेशू ले निवेशयेत्॥२७६॥ अंगुलीग्रन्थिभेदस्यछेदयेत्प्रथमेग्रहे॥ द्वितीयेहस्तचरणौतृतीयेवधमर्हति॥२७७॥ अग्निदान्भक्त दांश्चैवतथाशस्त्रावकाशदान्॥ सन्निधातृंश्चमोषस्यहन्या च्चौरमिवेश्वरः॥२७८॥

۲۷۳- جو براہمن یگیہ دان وغیرہ کرکے یگیہ دان وغیرہ دھرم کو دوسرے کے واسطے پیدا کرکے اوقات گذاری کرے اور اپنے دھرم سے علیحدہ ہو راجہ اُس براہمن کو بھی ڈنڈ دیوے

۲۷۴- جو شخص چورون سے گاؤن کے غارت ہونے و شکستگی پل اور راستہ مین چور کے نظر آنیمین بحالت صاحب طاقت ہونیکے دوڑ نا سہین وہ مع اشیاء خانگی گاؤن سے نکالدینے کے لائق ہے —

۲۷۵- راجہ کے خزانہ مین چورانیوالا اور خلاف حکم راجہ کے عمل کرنیوالا اور راجہ کے دشمنون سے دوستی کرنیوالا انکو انواع اقسام کے ڈنڈ سے قتل کرنا چاہیئے —

۲۷۶- جو چور نقب زنی کرکے رات مین چوری کرتے ہین انکے دونون ہاتھ کاٹکر پھر انکو ترشول پر بٹھلا دے —

۲۷۷- جو چور اول گرہ کاٹ کا انگوٹھا اور انگوٹھا کی پاس کی انگلی کاٹنا چاہیے دوسری دفعہ مین ہاتھ پاؤن کاٹنا چاہیے تیسری دفعہ قتل کرنا چاہیے

۲۷۸- جو شخص چور کو آگ بھات واسطے سلحہ و مہلت دیتا ہے اور جو چور کی چیزون کا رکھنے والا ہے انکو راجہ مانند چور کے نابود کردے —

तेषां दोषानभिख्याप्य स्वे स्वे कर्मणि तत्त्वतः ॥ कुर्वीत शासनं राजा सम्यक्सारापराधतः ॥ २६२ ॥ न हि दण्डादृते शक्यः कर्तुं पापविनिग्रहः ॥ स्तेनानां पापबुद्धीनां निभृतं चरतां क्षितौ ॥ २६३ ॥ सभाप्रपापूपशालावेशमद्यान्नविक्रयाः ॥ चतुष्पथाश्चैत्यवृक्षाः समाजाः प्रेक्षणानि च ॥ २६४ ॥ जीर्णोद्यानान्यरण्यानि कारुकावेशनानि च ॥ शून्यानि चाप्यगाराणि वनान्युपवनानि च ॥ २६५ ॥ एवंविधान्नृपो देशान्गुल्मैः स्थावरजंगमैः ॥ तस्करप्रतिषेधार्थं चारैश्चाप्यनुचारयेत् ॥ तत्सहायैरनुगतैर्नानाकर्मप्रवेदिभिः ॥ विद्यादुत्सादयेच्चैव निपुणैः पूर्वतस्करैः ॥ २६७ ॥

۲۶۲- راجہ انکے علیحدہ علیحدہ کام مین کما حقہٗ عیب کو کہکر اچھی طرح سے جرم کے موافق سزا دیوے۔

۲۶۳- چور اور پاپی جو مؤدّب و متواضع صورت بناکر عالم مین گشت کرتے ہین انھون کے جرم کا انسداد بدون سزا دینے کے ممکن نہین ہے اسواسطے سزا دینا چاہئے۔

۲۶۴- سبھا (یعنے مقام فراہمی صلاح اندیشان) چاہ جا پخت پکوان مقام شراب فروشی مقام غلہ فروشی چوراہہ خانہ طوائف مشہور درخت سول مقام مجمع خلائق

۲۶۵- باغات جنگل ہا کہنہ خانہ کاریگران خانہ خالی درختان وغیرہ کا جنگل جنگل نو طیار کردہ

۲۶۶- ایسے ملکون کی فوج وغیرہ سے راجہ گرفتاری چور وغیرہ کی کرے کیونکہ چور وغیرہ ایسے مقامات مین سامان خورد و نوش و لوازمہ عیاشی کے تلاش کرنے کے واسطے اکثر رہا کرتے ہین۔

۲۶۷- انھون کے مدد کرنیوالے اور ملاپ اور بگاڑ کے جاننے والے چورون کے فریب مین ہوشیار پہلے چور جاسوس کی صورت مین انھون کے وسیلہ سے چورون کو جاننا اور نیست و نابود کرنا چاہیئے۔

उत्कोचकाश्चौपधिकावंचकाः कितवास्तथा।। मंगलादेशवृ-
त्ताश्चभद्राश्चेक्षणिकैः सह।। २५८।। असम्यक्कारिणश्चैवमहा
मात्राश्चिकित्सकाः।। शिल्पोपचारयुक्ताश्चनिपुणाः पण्य
योषितः।। २५९।। एवमादीन्विजानीयात्प्रकाशांल्लोककंट-
कान्।। निगूढचारिणश्चान्याननार्यानार्यलिंगिनः।। २६०।।
तान्विदित्वासुचरितैर्गूढैस्तत्कर्मकारिभिः।। चारैश्चानेकसं-
स्थानैः प्रोत्साह्यवशमानयेत्।। २६१।।

۲۵۸- کام والے آدمی سے دھن لیکر نامناسب کام کرنیوالا اور خوف دکھلاکر دھن لینے والا
اور سونا وغیرہ مین ناقص چیز ملاکر دغابازی کرکے دوسرے کا دھن لینے والا اور دیوت اور سماج ہو
قسم کی قماربازی کرنیوالا اور دولت و فرزند و نفع وغیرہ حالات خوشی کو بیان کرکے اوقات
بسر کرنیوالا اور بدفعلی کو چھپاکر اچھے فعل کو ظاہر کرکے دوسرے کی دولت لینے والا اور ہاتھ کی
ریکھا کو دیکھکر اچھے اور بُرے پھل کو کہکر دوسرے کی دولت لینے والا-
۲۵۹- ہاتھی کو سکھانے سے اوقات بسر کرنیوالا اور پیشہ طبابت سے اوقات بسر کرنیوالا
یہ دونون اُس حالت مین جبکہ اپنے کام کو اچھی طرح نکرین اور دھن لیوین اور پیشہ مصوری وغیرہ
سے گزارہ کرنیوالا اور بغیر کئے ہوئے تصور پیہ کھچوا اُنکی تحریک و ترغیب دیکر دوسرے کی دولت لینے والا
اور دوسرے کی عورت یہ سب دوسرے کو اپنے قابو مین کر لینے کو ہوشیار ہین-
۲۶۰- اِن سکو اور اُنکے برابر دوسرون کو ظاہر مین خار عالم جاننا چاہئے اور پوشیدہ غارتگر
دوسرے مین جوکہ بھلے آدمی نہین ہین مگر بھلے آدمیون کے نشان سے رہتے ہین
۲۶۱- اِن سب کو بوسیلہ کاٹپک وغیرہ جاسوس کے (جوکہ بہت سے مقامات پر مقیم ہین اور
جنکا بیان ساتوین ادھیاے مین ہوا) اور نیز بوسیلہ اُن آدمیون کے جوکہ پوشیدہ غارتگری کرنیوالے
ہین جانکر اور اُنکو دکھہ دیکر اپنے اختیار مین کرے-

सम्यङ्निविष्टदेशस्तु कृतदुर्गश्च शास्त्रतः ।। कण्टकोद्धरणे नित्यमातिष्ठेद्यत्नमुत्तमम् ।।२५२।। रक्षणादार्यवृत्तानां कण्टकानां च शोधनात् ।। नरेन्द्रास्त्रिदिवं यान्ति प्रजापालनतत्पराः ।।२५३।। अशासंस्तस्करान्यस्तु बलिं गृह्णाति पार्थिवः ।। तस्य प्रक्षुभ्यते राष्ट्रं स्वर्गाच्च परिहीयते ।।२५४।। निर्भयन्तु भवेद्यस्य राष्ट्रं बाहुबलाश्रितम् ।। तस्य तद्वर्धते नित्यं सिच्यमान इव द्रुमः ।।२५५।। द्विविधांस्तस्करान्विद्यात्परद्रव्यापहारकान् ।। प्रकाशांश्चाप्रकाशांश्च चारचक्षुर्महीपतिः ।।२५६।। प्रकाशवंचकास्तेषां नानापण्योपजीविनः ।। प्रच्छन्नवंचकास्त्वेते ये स्तेनाटविकादयः ।।२५७।।

۲۵۲- شاسترمین کہے ہوئے ملک مین موافق ہدایت شاستر کے قلعہ بنا کر اور اسمین مقیم ہو کر کانٹا نکالنے مین تدبیر شایستہ کرے۔ (دیکھو شلوک ۵۸ وغایت ۲۹۱)

۲۵۳- راجہ پرورش رعایا مین کما حقہ مشغول ہو کر اچھے لوگون کی حفاظت کرے اور کانٹے کے نکالنے سے سورگ مین جاتا ہے۔

۲۵۴- جو راجہ چورون کو سزا نہین دیتا۔ اور محصول اپنا لیتا ہی ایسے راجہ کی راج مین رعایا بددعا کرتی ہے۔ اور اس پاپ سے بہشت چھین ہوکر سورگ مین حاصل نہین ہوتا۔

۲۵۵- جس راجہ کی قوت بازو پا کر رعایا بیخوف رہتی ہے اسکا راج ہر روز ترقی پاتا ہی جیسے سینچا ہوا درخت۔

۲۵۶- راجہ دونون کی آنکھ سے دیکھکر دوسرے کی دولت کو چورانے والے چور کو ظاہر و باطن دو قسم کرکے دو طرحکا جانے۔

۲۵۷- انواع اقسام کی چیزون کو فروخت کرنیوالے ظاہری چور ہین اور آدمیون سے خالی مقام مین اور بحالت سو جانے آدمیونکے دوسرے کی دولت چورانیوالے پوشیدہ چور ہین۔

यत्रवर्जयतेराजापापकृद्भ्योधनागमम्॥ तत्रकालेनजायन्ते
मानवादीर्घजीविनः॥२४६॥ निष्पद्यन्तेचसस्यानियथोप्ता-
निविशांपृथक्॥ बालाश्चनप्रमीयन्तेविकृतंनचजायते॥२४७
॥ब्राह्मणान्बाधमानन्तुकामादवरवर्णजम्॥ हन्याच्चित्रैर्व-
धोपायैरुद्वेजनकरैर्नृपः॥२४८॥ यावानवध्यस्यवधेतावान्
वध्यस्यमोक्षणे॥ अधर्मोनृपतेर्दृष्टोधर्मस्तुविनियच्छतः॥
२४९॥उदितोऽयंविस्तरशोमिथोविवदमानयोः॥ अष्टादश
सुमार्गेषुव्यवहारस्यनिर्णयः॥२५०॥ एवंधर्म्याणिकार्य्या
णिसम्यक्कुर्वन्महीपतिः॥ देशानलब्धांल्लिप्सेतलब्धांश्चप-
रिपालयेत्॥२५१॥

۲۴۶ - جس مقام پر راجہ پاپیون کی فراہم کی ہوئی دولت کو نہین لیتا ہی وہان آدمی بڑی عمر والے پیدا ہوتے ہین (یعنے بہت دن تک زندہ رہتے ہین -

۲۴۷ - جسطرح ویشیہ لوگ جو غلہ بوتے ہین وہ غلہ علیحدہ علیحدہ پیدا ہوتا ہے اسیطرح اس راجہ کی راج مین لڑکے بھی نہین مرتے اور نہ کوئی لڑکا کسی عضو سے محروم پیدا ہوتا ہی -

۲۴۸ - جو چھوٹا ورن خواہش سے براہمنون کا قتل کرنیوالا ہے اسکو انواع اقسام کی تدبیرون سے قتل کرے جو بیقراری و رنج و خوف کی دینے والی ہین -

۲۴۹ - جو قتل کے لائق نہین ہے اسکے قتل مین جتنا پاپ ہوتا ہی اتنا ہی پاپ قتل کے لائق آدمی کو چھوڑ دینے سے ہوتا ہے -

۲۵۰ - اب بھرگ جی کہتے ہین کہ اے رشی لوگو اٹھارہ قسم کے مقدمات مین باہم جھگڑنیوالون کی تنقیح مقدمہ کو مفصل کہا -

۲۵۱ - راجہ اس طریق سے کاربار متعلقہ دھرم کو اچھی طرح سے کرتا ہوا ان ملکون کے فتح کی خواہش کرے جو کہ فتح نہین ہوتے اور پھر ممالک مفتوحہ کی پرورش کرنیکی خواہش کرے -

प्रायश्चित्तन्तुकुर्वाणाःसर्ववर्णायथोदितम्॥ नांक्याराज्ञा
ललाटेस्युर्दाप्यास्तूत्तमसाहसम्॥२४०॥ आगस्सुब्राह्मण
स्यैवकार्योमध्यमसाहसम्॥ विवास्योवाभवेद्राष्ट्रात्सद्रव्यःस
परिच्छदः॥२४१॥ इतरेकृतवन्तस्तुपापान्येतान्यकामतः॥
सर्वस्वहारमर्हन्तिकामतस्तुप्रवासनम्॥२४२॥ नाददीतनृपः
साधुर्महापातकिनोधनम्॥ आददानस्तुतल्लोभात्तेनदोषेण
लिप्यते॥२४३॥ अप्सुप्रवेश्यतंदण्डंवरुणायोपपादयेत्॥
श्रुतवृत्तोपपन्नेवाब्राह्मणेप्रतिपादयेत्॥२४४॥ ईशोदण्डस्य
वरुणोराज्ञांदण्डधरोहिसः॥ ईशःसर्वस्यजगतोब्राह्मणोवे-
दपारगः॥२४५॥

۲۴۰- جو چاروں ورن پرائشچت کے کرنیوالے ہیں راجہ انکی پیشانی پر نشان نکرے بلکہ ہزار پن ڈنڈ لیوے-

۲۴۱- مجرم برہمن سے مدھیم ساہس ڈنڈ لیوے خواہ مجرم براہمن کو مع اشیاء خانگی و دولت کے اپنی راج سے باہر نکال دیوے-

۲۴۲- کشتری وغیرہ تینوں ورن بلا خواہش ان پاپوں کو کریں تو انکی تمام دولت کو لے لیوے اور خواہش سے کیا ہو تو قطع اعضا خواہ قتل کی سزا دینا چاہیئے-

۲۴۳- جو راجہ سادھو ہو وہ بڑے پاپیوں کا دھن نہ لیوے اگر طمع سے لیو تو انکے پاپ میں شامل ہوتا ہے-

۲۴۴- ڈنڈ کے دھن کو (یعنی زر جرمانہ وغیرہ والی چیز) پانی میں ڈال کر برن دیوتا کی اختیار میں کرے یا اس براہمن کو دلوے جو وید شاستر کا جاننے والا اور اسپر عمل کرنیوالا ہو-

۲۴۵- کیونکہ مہاپاپی کو ڈنڈ دینے سے جو دھن ملا ہے اس دھن کا مالک برن دیوتا ہے وید کے تمام مطلب کو جاننے والا براہمن تمام جگت کا سوامی ہے-

ब्रह्महाचसुरापश्चस्तेयीचगुरुतल्पगः॥ एतेसर्वेपृथग्ज्ञेया महापातकिनोनराः॥२३५॥ चतुर्णामपिचैतेषांप्रायश्चित्तम कुर्वताम्॥ शारीरंधनसंयुक्तंदण्डंधर्म्यंप्रकल्पयेत्॥२३६॥गु-रुतल्पेभगःकार्यःसुरापानेसुराध्वजः॥ स्तेयेचश्वपदंकार्यंब्र-ह्महण्यशिराःपुमान्॥२३७॥ असंभोज्याह्यसंयाज्याअसं-पाठ्याविवाहिनः॥ चरेयुःपृथिवींदीनाःसर्वधर्मबहिष्कृताः॥ ॥२३८॥ ज्ञातिसंबन्धिभिस्त्वेतेत्यक्तव्याःकृतलक्षणाः॥ नि-र्दयानिर्नमस्कारास्तन्मनोरनुशासनम्॥२३९॥

۲۳۵ - براہمن کو مارنیوالا شراب پینے والا براہمن کا سونا یعنی ۱۶ ماشہ چرانیوالا اپنی والدہ سے جماع کرنیوالا یہ چار و علیحدہ علیحدہ بڑے پاپی کہلاتے ہیں

۲۳۶ - یہ چاروں پرایسچت نکریں تو مع دولت سزاے بدنی مرقومہ ذیل انکو دینا چاہیے۔

۲۳۷ - والدہ سے جماع کرنیوالا شراب پینے والا براہمن کا ۱۶ ماشہ سونا چرانیوالا براہمن کو مارنیوالا ان چاروں کی پیشانی پر حسب سلسلہ نشانات مرقومہ ذیل کرنا چاہیے یعنی فرج کی صورت دبگ وجھبکا کی صورت کتّے کے پانوں کی صورت بے سر کے آدمی کی صورت۔

۲۳۸ - جو یہ سب لوگ نشانات مرقومہ بالا کے رکھنے والے ہیں انکے بھوجن اور یگیہ اور پاٹھ اور شادی وغیرہ کرم نہ کرانا چاہیے یہ سب تمام دھرموں سے باہر ہوکر مفلس و متفکر و خوفناک ہوکر زمین پر گھومیں۔

۲۳۹ - ذات والے اور رشتہ دار اور بھائی وغیرہ سب انکو ترک کریں اپر رحم نکریں اور نہ انکو نمسکار کریں یہ منو مہاراج کا حکم ہے۔

अत्र विट्शूद्रयोनिस्तु दण्डं दातुमशक्नुवन्॥ आनृण्यं कर्मणा गच्छेद्विप्रो दद्याच्छनैः शनैः॥ २२९॥ स्त्रीबालोन्मत्तवृद्धानां दरिद्राणां च रोगिणाम्॥ शिफाविदलरज्ज्वाद्यैर्विदध्यान्नृपतिर्दमम्॥ २३०॥ ये नियुक्तास्तु कार्येषु हन्युः कार्याणि कार्यिणाम्॥ धनोष्मणा पच्यमानास्तान्निःस्वान्कारयेन्नृपः॥ २३१॥ कूटशासनकर्तॄंश्च प्रकृतीनां च दूषकान्॥ स्त्रीबालब्राह्मणघ्नांश्च हन्याद्द्विट्सेविनस्तथा॥ २३२॥ तीरितं चानुशिष्टं च यत्र क्वचन यद्भवेत्॥ कृतं तद्धर्मतो विद्यान्न तद्भूयो निवर्त्तयेत्॥ २३३॥ अमात्याः प्राड्विवाको वा यत्कुर्युः कार्य्यमन्यथा॥ तत्स्वयं नृपतिः कुर्य्यात्तान्सहस्रं च दण्डयेत्॥ २३४॥

۲۲۹- کشتری ویشیہ شودر بسبب ناداری دینے کی طاقت نہ رکھتے ہوں تو کام کرکے تاوان [illegible] قرضسے خلاصی پاویں اور برہمن ہوں تو آہستہ آہستہ دیوے کام نکرے۔

۲۳۰- استری - بالک - بوڑھا - احمق - مفلس - بیمار انکو بانس وغیرہ کی چھڑی سے مارنا اور رسّی سے باندھنا ان سزاؤں کو راجہ دیوے۔

۲۳۱- کام کرانیکے واسطے محکوم آدمی کام والے کے کام کا نقصان کریں تو سب دھن اسکا راجہ لیوے۔

۲۳۲- جو آدمی راجہ کے حکم کے خلاف کام کرنیوالے و مقبول سرکاری کو نقصان و عیب پہونچانیوالے و استری و بالک و برہمن کو مارنیوالے و دشمن کی خدمتگاری کرنیوالے ہیں راجہ ان سبھون کو نیست و نابود کرے۔

۲۳۳- جس مقام پر کسی مقدمہ میں ازروے انصاف جو حکم اخیر ظاہر کنندہ سزا نافذ ہوگیا اسکو منظور کرے اور پھر اسکو دوسری طرح نکرے۔

۲۳۴- لیکن وزیر و منصف جس مقدمہ کو خلاف فیصلہ کریں اسکو راجہ آپ دیکھے اور اگر راجہ کو وقت ملاحظہ کے انکا فیصلہ خلاف معلوم ہو تو راجہ انکو بھی ہزار پن ڈنڈ لیوے۔

अप्राणिभिर्यत्क्रियते तल्लोके द्यूतमुच्यते ॥ प्राणिभिः क्रि-
यते यस्तु स विज्ञेयः समाह्वयः ॥ २२३ ॥ द्यूतं समाह्वयं चैव यः कु-
र्यात्कारयेत वा ॥ तान्सर्वान्घातयेद्राजा शूद्रांश्च द्विजलिंगिनः
॥ २२४ ॥ कितवान्कुशीलवान्क्रूरान्पाखण्डस्थांश्च मानवा-
न् ॥ विकर्मस्थाञ्छौण्डिकांश्च क्षिप्रं निर्वासयेत्पुरात् ॥ २२५ ॥
एते राष्ट्रे वर्त्तमाना राज्ञः प्रच्छन्नतस्कराः ॥ विकर्मक्रियया नि-
त्यं बाधन्ते भद्रिकाः प्रजाः ॥ २२६ ॥ द्यूतमेतत्पुराकल्पे दृष्टं वैर-
करं महत् ॥ तस्माद्द्यूतं न सेवेत हास्यार्थमपि बुद्धिमान् ॥ २२७
॥ प्रच्छन्नं वा प्रकाशं वा तन्निषेवेत यो नरः ॥ तस्य दण्डविक-
ल्पः स्याद्यथेष्टं नृपतेस्तथा ॥ २२८ ॥

۲۲۳- بیجان چیز یا پانسہ وغیرہ سے داؤ لگا کر بازی کرنا دیوت کہلاتا ہے اور جاندار چیز مثل بھینسا وبھینس وگھوڑا سے داؤ لگا کر بازی کرنا سماہوے کہلاتا ہی-

۲۲۴- ان دونوں کو جو کرے اور کرا دے اسکو اور جو شودر کہ برہمن وکشتری کے نشان کو دھارن کرنیوالا ہی- اُسکو راجہ نابود کرے-

۲۲۵- قمار باز رقاص کانیوالا سب سے دشمنی کرنیوالا- پاکھنڈی ناکارہ کام کرنیوالا شراب بنانیوالا ان سب کو راجہ جلد شہر سے باہر نکال دیوے-

۲۲۶- یہ سب چھپے ہوئے چور ہیں کھوٹے کاموں سے اچھی رعایا کو تکلیف و رنج پہونچاتے ہیں-

۲۲۷- بڑی دشمنی کرنیوالا قماربازی ہے یہ زمانہ سابق میں تجربہ کیا گیا اسواسطے عقلمند آدمی ہنسی کے طور پر بھی اُسکا استعمال نکرے-

۲۲۸- پوشیدہ یا بظاہر قمار بازی کرنیوالے آدمیوں کو راجہ جس سزا کے دینے کی خواہش کرے وہی سزا دیوے-

अनपत्यस्यपुत्रस्यमातादायमवाप्नुयात्॥ मातर्यपिचवृत्ता-
यांपितुर्माताहरेद्धनम्॥२१७॥ ऋणेधनेचसर्वस्मिन्प्रवि-
भक्तेयथाविधि॥ पश्चाद्दृश्येतयत्किंचित्तत्सर्वंसमतांनयेत्
॥२१८॥ वस्त्रंपत्रमलंकारंकृतान्नमुदकंस्त्रियः॥ योगक्षेमं
प्रचारंचनविभाज्यंप्रचक्षते॥२१९॥ अयमुक्तोविभागोवः
पुत्राणांचक्रियाविधिः॥ क्रमशःक्षेत्रजादीनांद्यूतधर्मंनि-
बोधत॥२२०॥ द्यूतंसमाह्वयंचैवराजाराष्ट्रान्निवारयेत्॥ राजा-
न्तकरणावेतौद्वौदोषौपृथिवीक्षिताम्॥२२१॥ प्रकाशमेत-
त्तास्कर्यंयद्देवनसमाह्वयौ॥ तयोर्नित्यंप्रतीघातेनृपतिर्य-
त्नवान्भवेत्॥२२२॥

۲۱۷- اگر بیٹا لاولد ہو تو اسکا دھن اسکی والدہ لیوے والدہ بھی نہو تو اسکی دادی لیوے۔

۲۱۸- تو بعد تقسیم دولت و قرضہ کے موافق طریقہ شاستر کے جو کچھ دھن دیکھنے مین آوے اسکا حصہ برابر کرین

۲۱۹- پارچہ- سواری- زیور لڈو وغیرہ پکوان وغیرہ غلام و کنیزک مشیر پروہت وغیرہ گئو وغیرہ چارپایان کے آنے جانے کی راہ ان سبھون کا حصہ نکرنا چاہیے اپنے کام کے موافق سب کوئی لیوین۔

۲۲۰- بھرگ جی کہتے ہین کہ اے رشی لوگو کشیترج وغیرہ بیٹون کی تقسیم خصوص کر آپ لوگون سے کہا اسکے بعد قمار بازی کو بیان کرتے ہین۔

۲۲۱- دیوت اور سماہوے نام قمار بازیون کو راجا اپنی راج مین نہونے دیوے کیونکہ یہ دونون راج کو نیست و نابود کرتے ہین۔

۲۲۲- یہ دونون ظاہر چوری ہین اسواسطے ان دونون کے مٹانے کی تدبیر مین رہے۔

٭ دیکھو اشلوک ۲۲۳-

येषां ज्येष्ठः कनिष्ठो वा हीयेतांशप्रदानतः॥ म्रियेतान्यतरो वापि
तस्य भागो न लुप्यते॥२११॥ सोदर्या विभजेरंस्तं समेत्य सहिताः
समम्॥ भ्रातरो ये च संसृष्टा भगिन्यश्च सनाभयः॥२१२॥ यो
ज्येष्ठो विनिकुर्वीत लोभाद्भ्रातॄन्यवीयसः॥ सोऽज्येष्ठः स्याद
भागश्च नियन्तव्यश्च राजभिः॥२१३॥ सर्व एव विकर्मस्था ना
र्हन्ति भ्रातरो धनम्॥ न चादत्त्वा कनिष्ठेभ्यो ज्येष्ठः कुर्वीत यौ
तुकम्॥२१४॥ भ्रातॄणामविभक्तानां यद्युत्थानं भवेत्सह॥
न पुत्रभागं विषमं पिता दद्यात्कथंचन॥२१५॥ ऊर्ध्वं विभागा
ज्जातस्तु पित्र्यमेव हरेद्धनम्॥ संसृष्टास्तेन वा ये स्युर्विभजेत स
तैः सह॥२१६॥

۲۱۱- بھائیوں میں بڑا بھائی یا چھوٹا بھائی تقسیم حصہ کے وقت بوجہ سنیاس وغیرہ دھارن کرنے کے اپنے حصہ سے محروم ہو یا فوت ہو گیا ہو تو اسکے حصہ کو غائب نکرنا چاہیے بلکہ اوسکا حصہ بھی علیحدہ کرنا مناسب ہے۔

۲۱۲- اس حصہ کو سب بھائی اور بہن ملکر بانٹ لیوین۔

۲۱۳- جو بڑا بھائی طمع سے چھوٹے بھائی کو حصہ نہ دیوے وہ بڑا بھائی نہین کہلاتا ہے اور راجہ سے ڈنڈ پاتا ہے۔

۲۱۴- اگر سب بھائی بیفائدہ کاموں میں مشغول رہیں تو دولت کو نہین پاتے بڑا بھائی سب دولت کو چھوٹے بھائی کو بغیر دیئے ہوئے صرف اپنے قبضہ میں نکرے

۲۱۵- سب بھائی ملکر دولت کو جمع کریں تو والد کو مناسب ہے کہ وقت تقسیم کے طاق حصہ نکرے یعنے سب کو حصہ برابر دیوے۔

۲۱۶- باپ نے بیٹوں سے علیحدہ ہو کر پھر بیٹا پیدا کیا ہو تو وہ لڑکا صرف باپ ہی کا دھن پاتا ہے اور اسکے ساتھ پہلے علیحدہ ہوئے بھائی شامل ہوئے ہوں تو ان کے ساتھ بعد تقسیم حصص جو لڑکا پیدا ہوا ہے وہ تقسیم حصص کرے۔

विद्याधनन्तुयद्यस्यतत्तस्यैवधनंभवेत्॥ मैत्र्यमौद्वाहिकंचैव-माधुपर्किकमेवच॥ २०६॥ भ्रातॄणांयस्तुनेहेतधनंशक्तः स्व-कर्मणा॥ सनिर्भाज्यः स्वकादंशात्किंचिद्दत्त्वोपजीवनम्॥ २०७॥ अनुपघ्नन्पितृद्रव्यंश्रमेणयदुपार्जितम्॥ स्वयमीहितलब्धं तन्नाकामोदातुमर्हति॥ २०८॥ पैतृकन्तुपिताद्रव्यमनवाप्तंयदाप्नुयात्॥ नतत्पुत्रैर्भजेत्सार्द्धमकामः स्वयमर्जितम्॥ २०९॥ विभक्ताः सहजीवन्तोविभजेरन्पुनर्यदि॥ समस्तत्रविभागः स्याज्ज्यैष्ठ्यंतत्रनविद्यते॥ २१०॥

٢٠٦- علم ودوستی ورودواہ ویتّہ مدہوپرک انھون کے وسیلے سے جو دولت ملے انہین کسیکا حصّہ نہین ہے جو جمع کرے وہی لیوے۔

٢٠٧- سب بھائیون مین جو بھائی اپنے کام مین ہوشیار رہے اور والد کی دولت لینے کی خواہش نہین کرتا ہے اوسکو اپنے حصّے سے کچھ دولت دیکر الگ کرنا چاہیئے کیونکہ اوسکے لڑکے پیچھے سے تکرار نکرین کہ ہمارے والد نے حصّہ نہین لیا ہے ہمکو حصّہ دو۔

٢٠٨- والد کا روپیہ ضائع نہو یعنے خرچ نہو اور اپنی محنت سے جو دولت فراہم کرے اُسکو اگر اپنی مرضی نہو تو بھائیون کو نہ دیوے یعنے اس دولت مین سے بھائیونکو حصّہ نہ دیوے۔

٢٠٩- والد کی دولت کو کسی نے چھین لیا اور والد نے اُسکو واپس نہ پایا ہو اور بیٹا اُس دولت کو اپنی محنت سے وصول کرے تو اُسکا حصہ اپنے بیٹون کو نہ دیوے اور خوشی ہو تو دیوے کیونکہ وہ دولت اپنی کوشش وپیروی سے آئی ہے باپ کی نہین ہے۔

٢١٠- ایک دفعہ تقسیم حصص ہوگئی پھر اپنی خواہش سے شامل ہوکر رہین اور پھر تقسیم حصص کرین تو برادر کلان کو وہ حصّہ نہ دیوین جو اسکی بزرگی کی وجہ سے تقسیم اول مین دیا جاتا ہے۔

पत्यौजीवतियःस्त्रीभिरलंकारोधृतोभवेत्॥ नतंभजेरन्दायादा भजमानाःपतन्तिते॥२००॥ अनंशौक्लीबपतितौजात्यंधब-धिरौतथा॥उन्मत्तजडमूकाश्चयेचकेचिन्निरिन्द्रियाः॥२०१॥ सर्वेषामपितुन्याय्यंदातुंशक्त्यामनीषिणा॥ ग्रासाच्छादन-मत्यन्तंपतितोह्यददद्भवेत्॥२०२॥यद्यर्थितातुदारैःस्यात्क्ली-बादीनांकथंचन॥ तेषामुत्पन्नतन्तूनामपत्यंदायमर्हति २०३॥ यत्किंचित्पितरिप्रेतेधनंज्येष्ठोऽधिगच्छति॥ भागोयवी-यसांतत्रयदिविद्यानुपालिनः॥२०४॥ अविद्यानांतुसर्वेषा मीहातश्चेद्धनंभवेत्॥ समस्तत्रविभागःस्यादपित्र्यइतिधार-णा॥२०५॥

۲۰۰- عورت نے بحالت زندگی شوہر کے جو زیور زیب بدن کیا ہے اُسکو حصہ لینے والے تقسیم کریں تو پتت ہوتے ہیں-

۲۰۱- مخنث پتت پیدائش سے اندھا بہرا یا دو وغیرہ سے پیدا ہوا بیقرار دل گونگا کوئی عضو نہ رکھنے والا ایسے جو شخص ہیں وہ حصہ نہیں پاتے-

۲۰۲- حصہ لینے والا شاستر جاننے والا آدمی اِن سب کو حسب مقدور کھانا و کپڑا تا زیست انکو دیوے اور اگر نہ دیوے تو پتت ہوتا ہے-

۲۰۳- مخنث وغیرہ کو شادی کرنے کی خواہش ہو تو شادی کرکے حسب لیاقت اس عورت میں بیٹا کرا کے اُس بیٹے کو حصہ دیوے

۲۰۴- بعد وفات والد کے بڑا بھائی قبل تقسیم شراکت کے کچھ دولت جمع کرے تو اسمیں سے حسب چھوٹے بھائی پاویں بشرطیکہ صاحب علم ہوں-

۲۰۵- جملہ برادران بے علم کی محنت سے دولت جمع ہو تو انمیں برابر حصہ کرنا چاہئے وہ دولت والد کی نہیں ہے یہ شاستر کا حکم ہے-

अन्वाधेयं च यद्दत्तं पत्या प्रीतेन चैव यत्॥ पत्यौ जीवति वृत्तायाः प्रजायास्तद्धनं भवेत्॥१९५॥ ब्राह्मदैवार्षगान्धर्वप्राजापत्येषु यद्वसु॥ अप्रजायामतीतायां भर्तुरेव तदिष्यते॥१९६॥ यत्त्वस्याः स्याद्धनं दत्तं विवाहेष्वासुरादिषु॥ अप्रजायामतीतायां मातापित्रोस्तदिष्यते॥१९७॥ स्त्रियाः तु यद्भवेद्वित्तं पित्रा दत्तं कथंचन॥ ब्राह्मणी तद्धरेत्कन्या तदपत्यस्य वा भवेत्॥१९८॥ न निर्हारं स्त्रियः कुर्युः कुटुम्बाद्बहुमध्यगात्॥ स्वकादपि च वित्ताद्धि स्वस्य भर्तुरनाज्ञया॥१९९॥

۱۹۵- خوش ہوکر جو شوہر نے دیا۔ بعد شادی کے خاندان شوہر سے جو حاصل ہوا ان دونوں دھن کو بعد وفات اس عورت کے اسکے بیٹے لیوین -

۱۹۶- براہم دیو آرش گاندھرب پراجاپتیہ ان پانچوں بیواہ مین جو کچھ استری کو ملا اسکو بعد وفات اس لاولد استری کے اسکا شوہر پاتا ہے -

۱۹۷- آسر پشاچ راکشس ان تین قسم کی شادیوں مین جو دھن استری کو ملا اسکو بعد وفات اس لاولد استری کے اسکے ماں باپ پاتے ہیں شوہر نہیں پاتا -

۱۹۸- برہمن کے گھر مین چاروں ورن کی عورت شادی کی ہوئی ہوں اُنمین برہمنی کنیا رہتی ہو اور اور ورنوں کی استریاں لاولد بیوہ ہوں اور اُنکو کسیطرح باپ نے دھن دیا ہو تو اس دھن کو بعد وفات ان استریوں کے برہمنی کی کنیا پاوے اگر کنیا نہو تو اسکا بیٹا پاوے -

۱۹۹- برادری وغیرہ بہت لوگوں کا جو سادھارن دھن ہے اُسکو استری بغیر اجازت کے زیور بنانے کے نہ لیویں اور بدوں اجازت شوہر کے شوہر کا دیا ہوا دھن بھی نہ لیویں اس سے یہ بات ثابت ہوئی کہ یہ استریوں کے دھن نہیں ہیں -

अहार्यं ब्राह्मणद्रव्यं राज्ञा नित्यमिति स्थितिः ॥ इतरेषां तु वर्णानां सर्वाभावे हरेन्नृपः ॥ १८९ ॥ संस्थितस्यानपत्यस्य सगोत्रात्पुत्रमाहरेत् ॥ तत्र यद्रिक्थजातं स्यात्तत्तस्मिन्प्रतिपादयेत् ॥ १९० ॥ द्वौ तु यौ विवदेयातां द्वाभ्यां जातौ स्त्रिया धने ॥ तयोर्यद्यस्य पित्र्यं स्यात्तत्स गृह्णीत नेतरः ॥ १९१ ॥ जनन्यां संस्थितायां तु समं सर्वे सहोदराः ॥ भजेरन्मातृकं रिक्थं भगिन्यश्च सनाभयः ॥ १९२ ॥ यास्तासां स्युर्दुहितरस्तासामपि यथार्हतः ॥ मातामह्या धनात्किंचित्प्रदेयं प्रीतिपूर्वकम् ॥ १९३ ॥ अध्यग्न्यध्यावाहनिकं दत्तं च प्रीतिकर्मणि ॥ भ्रातृमातृपितृप्राप्तं षड्विधं स्त्रीधनं स्मृतम् ॥ १९४ ॥

۱۸۹- راجہ براہمن کی دولت کو نہ لیوے مگر دیگر درنون کی دولت کو بحالت عدم موجودگی اُنکے فرزند وغیرہ مرقومہ بالا کے لے لیوے۔

۱۹۰- بعد وفات لاولد آدمی کے اُسکی زوجہ مطابق حکم شستر وغیرہ کے اپنے گوتر کے آدمی سے بیٹا پیدا کرے تو اُس بیٹے کو سب دولت دیوے۔

۱۹۱- ایک عورت کے دو مرد سے دو لڑکے پیدا ہون اور والد کی دولت کیواسطے تکرار کرتے ہون تو جسکے والد نے جو دولت اُس عورت کو دی ہو وہ دولت وہی پاوے دوسرا نپاوے۔

۱۹۲- بعد وفات والدہ کے سب برادر حقیقی وکماری ہمشیرہ برابر حصہ کرکے والدہ کی دولت لیوین۔

۱۹۳- والدہ کی دولت کو دختر پاوے اور دختر کی دختر کو بھی نانی کی دولت مین سے کچھ از روے محبت کے دینا چاہیئے۔

۱۹۴- وقت شادی کے اگن کے روبرو والد وغیرہ نے جو دھن دیا ہو اور رخصت کے وقت جو دھن دیا جاتا ہی اور خوشی دل سے جو شوہر دیتا ہی بھائی نے جو دھن دیا ہو اور رخصت کے وقت والدہ نے جو دیا ہو یہ چھ قسم کے دھن استری کے ہین یہ رشیون نے کہا ہی۔

सर्वासामेकपत्नीनामेका चेत्पुत्रिणी भवेत्॥ सर्वास्तास्तेन-पुत्रेण प्राह पुत्रवतीर्मनुः॥१८३॥ श्रेयसः श्रेयसोऽलाभे पापीयान्रिक्थमर्हति॥ बहवश्चेत्तु सदृशाः सर्वे रिक्थस्य भागिनः॥१८४॥ न भ्रातरो न पितरः पुत्रा रिक्थहराः पितुः॥ पिता हरेदपुत्रस्य रिक्थं भ्रातर एव च॥१८५॥ त्रयाणामुदकं कार्यं त्रिषु पिण्डः प्रवर्तते॥ चतुर्थः संप्रदातैषां पंचमो नोपपद्यते॥१८६॥ अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्॥ अत ऊर्ध्वं सकुल्यः स्यादाचार्यः शिष्य एव वा॥१८७॥ सर्वेषामप्यभावे तु ब्राह्मणा रिक्थभागिनः॥ त्रैविद्याः शुचयो दान्तास्तथा धर्मो न हीयते॥१८८॥

۱۸۳- ایک آدمی کے چار پانچ زوجہ ہون ان سب مین ایک پتروان ہو تو اُسکے ہونیسے سب زوجہ پتروان کہلاتی ہین اس بات کو منو جی نے کہا ہے-

۱۸۴- بارہ طرح کے بیٹون مین بحالت نہونے اوّل اوّل کے دوسرے دوسرے دولت کو پاتے ہین اگر بہت بیٹے جفت ہون تو دولت کو بھی جفت پاتے ہین-

۱۸۵- باپ اور بھائی دولت کو نہین پاتے بیٹا ہی دولت کو پاتا ہے بیٹا نہو تو باپ اور بھائی دولت کو پاتے ہین-

۱۸۶- باپ اور دادا اور پردادا ان تینون کو پنڈ اور جل دینا چاہیئے چوتھا دینے والا ہے پانچوان کوئی نہین-

۱۸۷- سپنڈ یعنی سات پشت مین جو مردہ آدمی کا قریب ہو وہ دولت کو پاتا ہے اگر سپنڈ نہو تو سات پشت کے اوپر والا دولت کو پاتا ہے اگر وہ بھی نہو تو آچارج دولت کو پاتا ہے آچارج بھی نہو تو چیلا دولت کو پاتا ہے

۱۸۸- یہ سب نہون تو تینون وید پڑھنے والے اور اندریون کے جیتنے والے صاحب اولاد برہمن لوگ دولت کو پاتے ہین اس ریت سے دھرم کا ناش نہین ہوتا-

मातापितृविहीनोयस्त्यक्तोवास्यादकारणात॥ आत्मानं-
स्पर्शयेद्यस्मैस्वयंदत्तस्तुसंस्मृतः॥१७७॥यंब्राह्मणस्तुशूद्रा-
यांकामादुत्पादयेत्सुतम्॥ सपारयन्नेवशवस्तस्मात्पारशवः
स्मृतः॥१७८॥दास्यांवादासदास्यांवायः शूद्रस्यसुतोभवेत्॥
सोऽनुज्ञातोहरेदंशमितिधर्मोव्यवस्थितः॥१७९॥ क्षेत्रजा-
दीन्सुतानेतानेकादशयथोदितान्॥ पुत्रप्रतिनिधीनाहुःक्रि-
यालोपान्मनीषिणः॥१८०॥यएतेऽभिहिताःपुत्राःप्रसंगा-
दन्यबीजजाः॥ यस्यतेबीजतोजातास्तस्यतेनेतरस्यतु॥१८१
भ्रातॄणामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान्भवेत्॥सर्वांस्तांस्तेन
पुत्रेणपुत्रिणोमनुरब्रवीत॥१८२॥

۱۷۷- جس لڑکے کے ماں باپ مرگئے ہوں یا بلا سبب ماں باپ نے اسکو ترک کر دیا ہو وہ لڑکا اپنے کو آپ جسکو دیوے وہ اسکا سویم دت نام بیٹا کہلاتا ہے۔

۱۷۸- شہوت و محبت کے غلبہ سے شادی کی ہوئی شودر ذات کی عورت مین جو لڑکا پیدا ہو وہ زندہ ہی مردہ ہے اسلیئے وہ لڑکا برہمن کا شودر خواہ پارشو نام بیٹا کہلاتا ہے۔

۱۷۹- داسی خواہ داسی کی داسی مین شودر سے لڑکا پیدا ہوا وہ والد کے حکم سے حصہ پا سکتا ہے یہ دھرم مین داخل ہے۔

۱۸۰- کشیترج وغیرہ جو گیارہ بیٹے ہین انکو پنڈتون نے بدین لحاظ کہ پنڈ دان وغیرہ کرم معدوم ہو جاوین بجاے فرزند قائم کیا ہے۔

۱۸۱- دوسرے کے نطفہ سے جو لڑکے پیدا ہوئے کہے ہین وہ سب بحالت موجودگی اورس نام بیٹے کے ہین ورنہ جو جسکے نطفہ سے پیدا ہوتا ہے اسیکا بیٹا کہلاتا ہے دوسرے کا نہین۔

۱۸۲- ایک باپ سے پیدا ہوئے چار پانچ بھائیون مین ایک بھائی بھی پتر والا ہو تو اسکے ہونے سے سب بھائی پتر والے کہلاتے ہین اس بات کو منو جی نے کہا ہے۔

या गर्भिणी संस्क्रियते ज्ञाताज्ञातापि वा सती ॥ वोढुः स गर्भो भवति सहोढ इति चोच्यते ॥ १७३ ॥ क्रीणीयाद्यस्त्वपत्यार्थं मातापित्रोर्यमन्तिकात् ॥ स क्रीतकः सुतस्तस्य सदृशोऽसदृशो पि वा ॥ १७४ ॥ या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया ॥ उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते ॥ १७५ ॥ सा चेदक्षतयोनिः स्याद्गतप्रत्यागता पि वा ॥ पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनः संस्कारमर्हति ॥ १७६ ॥

۱۷۳- دختر حاملہ ہے اور سب کوئی جانتا ہے یا نہیں جانتا ہو اور اُس دختر کی شادی ہو اور اُس شادی کے اُسی حمل سے لڑکا پیدا ہو تو وہ لڑکا شادی کرنیوالے کا سہوڑھ نام بیٹا کہلاتا ہے۔

۱۷۴- جس لڑکے کے ماں باپ واسطے بنانے فرزند اپنے کے خرید کریں اور وہ لڑکا اپنے برابر صفت رکھتا ہو یا اپنی صفت کے خلاف ہو مگر ذات میں اپنے برابر ہو وہ لڑکا خریدنے والے کا کریت نام بیٹا کہلاتا ہے۔

۱۷۵- جس عورت کو شوہر نے ترک کیا ہو وہ یا زن بیوہ اپنی خواہش سے پھر دوسرے کی زوجہ ہو کر اُس آدمی سے بیٹا پیدا کرے تو وہ بیٹا پیدا کرنیوالے کا پونربھو نام بیٹا کہلاتا ہے۔

۱۷۶- جس عورت کی شادی ہو گئی ہے مگر اُس سے جماع نہیں ہوا ہے وہ دوسرے شوہر کی پناہ میں جاوے تو اُس آدمی کے ساتھ پھر شادی کے لائق ہوتی ہے خواہ کنوار شوہر کو چھوڑ کر دوسرے شوہر کی پناہ لیکر لیکن بغیر جماع سے محفوظ رہی ہو پھر کنوار شوہر کی پناہ لیوے تو پھر اوسکے ساتھ شادی کے لائق ہوتی ہے۔

* دیکھو یاگیہ ولک سمرت اچار ادھیائے شلوک نمبر ۶۷ - ویم سمرت مندرجہ دکھ چندرکا و بیر متر ادے دکھا تیاں و دیول و نارد سمرت و دیگر شدھ پر سنگرہا اور تتیہ ارنیک سوکھابستہ سانتا چاہیئے۔

यस्तल्पजः प्रमीतस्य क्लीबस्य व्याधितस्य वा ॥ स्वधर्मेण नियु-
क्तायां स पुत्रः क्षेत्रजः स्मृतः ॥ १६७ ॥ माता पिता वा दद्यातां
यमद्भिः पुत्रमापदि ॥ सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्त्रिमः सु-
तः ॥ १६८ ॥ सदृशं तु प्रकुर्याद्यं गुणदोषविचक्षणम् ॥ पुत्रं
पुत्रगुणैर्युक्तं स विज्ञेयश्च कृत्रिमः ॥ १६९ ॥ उत्पद्यते गृहे यस्य
न च ज्ञायेत कस्य सः ॥ स गृहे गूढ उत्पन्नस्तस्य स्याद्यस्य तल्पजः
॥ १७० ॥ मातापितृभ्यामुत्सृष्टं तयोरन्यतरेण वा ॥ यं पुत्रं परि-
गृह्णीयादपविद्धः स उच्यते ॥ १७१ ॥ पितृवेश्मनि कन्या तु यं पु-
त्रं जनयेद्रहः ॥ तं कानीनं वदेन्नाम्ना वोढुः कन्यासमुद्भवम् ॥
१७२ ॥

۱۶۷- مخنث اور بیمار و وفات یافتہ اس قسم کے آدمیون کی زوجہ مین ارزوے دھرم والدین
وغیرہ کے حکم سے دیور وغیرہ نے جو بیٹا پیدا کیا وہ کشیتیرج کہلاتا ہے۔
۱۶۸- مان باپ وقت مصیبت مین آپ اپنے ہمقوم بیٹے کو پانی سے سنکلپ کرکے براہ
محبت دیوین وہ بیٹا دتک یعنے متبنی کہلاتا ہے۔
۱۶۹- جو لڑکا ہمقوم اور عیب و ہنر کو جاننے والا اور بیٹون کی صفتون سے بھرا ہوا اسکو اپنا بیٹا
بناوے وہ بیٹا کرترم کہلاتا ہے۔
۱۷۰- گھر مین پیدا ہوا اور نہین معلوم کہ کسکے تخم سے پیدا ہوا تو جسکی عورت سے پیدا ہوا اسکا گوڑھ اتپن نام بیٹا کہلاتا ہے۔
۱۷۱- مان باپ دونون نے خواہ ایک نے جس لڑکے کو ترک کیا اس بیٹے کو دوسرے بیٹے نے
اپنا بیٹا کیا تو وہ بیٹا لینے والے کا بیٹا اپ بدھ نام کہلاتا ہے۔
۱۷۲- بدون شادی ہوئے دختر نے بخانہ والد خلوت مین جس لڑکے کو پیدا کیا وہ لڑکا
اس دختر سے شادی کرنیوالے کا کانین نام بیٹا کہلاتا ہے۔

यद्येकरिक्थिनौ स्यातामौरसक्षेत्रजौ सुतौ ॥ यस्य यत्पैतृकं रिक्थं स तद्गृह्णीत नेतरः ॥ १६२ ॥ एक एवौरसः पुत्रः पित्र्यस्य वसुनः प्रभुः ॥ शेषाणामानृशंस्यार्थं प्रदद्यात्तु प्रजीवनम् ॥ १६३ ॥ षष्ठं तु क्षेत्रजस्यांशं प्रदद्यात्पैतृकाद्धनात् ॥ औरसो विभजन्दायं पित्र्यं पंचममेव वा ॥ १६४ ॥ औरसक्षेत्रजौ पुत्रौ पितृरिक्थस्य भागिनौ ॥ दशापरे तु क्रमशो गोत्ररिक्थांशभागिनः ॥ १६५ ॥ स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु स्वयमुत्पादयेद्धि यम् ॥ तमौरसं विजानीयात्पुत्रं प्रथमकल्पितम् ॥ १६६ ॥

۱۶۲- جس آدمی کا تخم بیماری وغیرہ سے فانی ہوگیا ہو اُسکی عورت مین لاولد ہونیکے والد وغیرہ کے حکم سے بیٹا پیدا کیا اور پھر معالجہ وغیرہ سے نطفہ کی ترقی پاکر اس آدمی نے اپنی عورت سے بیٹا پیدا کیا تب اُسکی دولت کے مالک کشیتیرج و اورس نام دو بیٹے ہوئے اسپر منی جی کہتے ہین کہ جسکے تخم سے جو پیدا ہوا ہو وہ اُسکی دولت کو پاوے۔

۱۶۳- ایک ہی بیٹا اورس نام والا اپنے باپ کی تمام دولت کا مالک ہے وہ اور بھائیون کو رحم سے کھانا اور کپڑا دیوے۔

۱۶۴- والد وغیرہ کے حکم سے لڑکا پیدا کرنیوالا صاحب اولاد ہو تو کشیتیرج اور اس دونون بیٹے اپنے والد کی دولت کے چھہ حصہ یا پانچ حصہ کرین ایک حصہ کو کشیتیرج لیوے باقیماندہ دولت کو اورس لیوے اگر کشیتیرج صاحب صفت ہو تو دولت کے پانچ حصہ کرنا چاہیے اور اگر وہ بے صفت ہو تو چھہ حصہ کرنا چاہیے۔

۱۶۵- کشیتیرج و اورس یہ دونون والد کی دولت کو لے سکتے ہین باقیماندہ جو دس بیٹے ہین وہ گوترا اور دولت دونون کو سلسلہ سے لینے والے ہین۔

۱۶۶- جو اپنی بیوا ہتا استری سے بیٹا پیدا ہو وہ اورس نام بیٹا کہا ہے وہ سب بیٹون سے افضل

समवर्णासुयेजाताःसर्वेपुत्राद्विजन्मनाम्॥ उद्धारंज्यायसेद-
त्त्वाभजेरन्नितरेसमम्॥१५६॥ शूद्रस्यतुसवर्णैवनान्याभा-
र्याविधीयते॥ तस्यांजाताःसमांशाःस्युर्यदिपुत्रशतंभवेत्॥
१५७॥ पुत्रान्द्वादशयानाहनृणांस्वायंभुवोमनुः॥ तेषांष-
ड्बन्धुदायादाःषडदायादबान्धवाः॥१५८॥ औरसःक्षेत्र-
जश्चैवदत्तःकृत्रिमएवच॥ गूढोत्पन्नोऽपविद्धश्चदायादा-
बान्धवाश्चषट्॥१५९॥ कानीनश्चसहोढश्चक्रीतःपौनर्भ-
वस्तथा॥ स्वयंदत्तश्चशौद्रश्चषडदायादबान्धवाः॥१६०॥
यादृशंफलमाप्नोतिकुप्लवैःसंतरंजलम्॥ तादृशंफलमा-
प्नोतिकुपुत्रैःसन्तरंस्तमः॥१६१॥

۱۵۶- براہمن و کشتری و ویشیہ کی ہم قوم عورت میں جو لڑکا پیدا ہو وہ بڑے کو ادھار نام حصہ دیکر باقیماندہ دولت کو برابر حصہ کرے۔

۱۵۷- شودر کیواسطے خاص اپنی ہی ذات کی زوجہ ہے دوسری ذات کی نہیں ہے اسلیے اگرچہ سو لڑکے ہوں تو بھی برابر حصہ پاتے ہیں۔

۱۵۸- برہما جی کے بیٹے منجی نے جو آدمیوں کے بارہ طرح کے بیٹے کہے ہیں ان میں اول کے چھ بندھو اور دایا دکھلاتے ہیں اور پچھلے چھ خلاف اسکے ہیں یعنی بھائی ہیں اور شریک ترکہ نہیں

۱۵۹- وہ بارہ یہ ہیں- اورس- کشیترج- دتک- کرتریم- گوڈھوتپن- اپ بدھ یہ چھ دایا و بندھو کہلاتے ہیں۔ بندھو بھائی کو کہتے ہیں اور دایا و شریک ترکہ پدری کو کہتے ہیں۔

۱۶۰- کانین- سہوڑھ- کریت- پونربھو- سویم دت- شودر یہ چھ ادایا و بندھو کہلاتے ہیں ان بارہو قسم کے بیٹوں کی شرح و صفت اشلوک ۱۶۶ لغایت ۱۷۹ میں لکھی ہے۔

۱۶۱- خراب ناؤ پر چڑھکر دریا سے پار ہونیوالا جیسا نتیجہ پاتا ہے ویسا ہی نتیجہ نالائق بیٹے سے نرک پار اترتے وقت پاتا ہے۔

कीनाशोगोवृषोयानमलंकारश्चवेश्मच॥विप्रस्यौद्धारिकंदे-
यमेकांशश्चप्रधानतः॥१५०॥त्र्यंशंदायाद्धरेद्विप्रोद्वावंशौक्ष-
त्रियासुतः॥वैश्याजःसार्द्धमेवांशमंशंशूद्रासुतोहरेत्॥१५१॥
सर्वंवारिक्थजातंतद्दशधापरिकल्प्यच॥धर्म्यंविभागंकु-
र्वीतविधिनाऽनेनधर्मवित्॥१५२॥चतुरोंऽशान्हरेद्विप्रस्त्री-
नंशान्क्षत्रियासुतः॥वैश्यापुत्रोहरेद्द्व्यंशमंशंशूद्रासुतोहरे-
त्॥१५३॥यद्यपिस्यात्तुसत्पुत्रोऽप्यसत्पुत्रोऽपिवाभवेत्॥
नाधिकंदशमाद्दद्याच्छूद्रापुत्रायधर्मतः॥१५४॥ब्राह्मणक्ष-
त्रियविशांशूद्रापुत्रोनरिक्थभाक्॥यदेवास्यपितादद्यात्तदे-
वास्यधनंभवेत्॥१५५॥

۱۵۰- ہرواہہ وسانڈ وگھوڑا وغیرہ سواری وزیور وغیرہ ومکان کُل اجزا میں سے ایک ایک
افضل جزو ان سب کو براہمنی کے بیٹے کو ادھار نام حصہ دیکر باقیماندہ کی تقسیم اس طریق کے
موافق کرے جو آگے کہینگے

۱۵۱- براہمن سے براہمنی میں جو لڑکا پیدا ہو وہ تیسرا حصہ لیوے اور کشتریا کا بیٹا دوسرا
حصہ لیوے- اور ویشیا کا بیٹا ڈیڑھ حصہ لیوے اور شوودر کا بیٹا ایک حصہ لیوے-

۱۵۲- خواہ جو طریق آگے کہینگے اُسکے موافق دھرم کے جاننے والے تمام دولت کے دس
حصہ کر کے ازروے دھرم کے تقسیم حصہ کی کریں-

۱۵۳- براہمنی کا بیٹا چار حصہ اور کشتریا کا بیٹا تین حصہ اور ویشیا کا بیٹا دو حصہ اور شوودر کا
بیٹا ایک حصہ لیوے-

۱۵۴- براہمن وکشتری وویشیا ان تینوں ورن کی عورت میں براہمن سے بیٹا پیدا ہوا ہو یا
نہوا ہو لیکن ازروے دھرم کے شوودر کے بیٹے کو دسویں حصہ سے زیادہ نہ دیوے-

۱۵۵- براہمن وکشتری وویشیا ان تینوں ورن کی دولت کو شوودر کا بیٹا نہیں لے سکتا ہے اسکا باپ جو کچھ دیوے وہی اسکی دولت ہے

हरेत्तत्र नियुक्तायां जातः पुत्रो यथौरसः॥ क्षेत्रिकस्य तु तद्बीजं
धर्मतः प्रसवश्च सः॥१४५॥ धनं यो बिभृयाद्भ्रातुर्मृतस्य स्त्रिय
मेव च॥ सोऽपत्यं भ्रातुरुत्पाद्य दद्यात्तस्यैव तद्धनम्॥१४६॥
या नियुक्तान्यतः पुत्रं देवराद्वाप्यवाप्नुयात्॥ तं कामजमरि-
क्थीयं वृथोत्पन्नं प्रचक्षते॥१४७॥ एतद्विधानं विज्ञेयं विभा-
गस्यैकयोनिषु॥ बह्वीषु चैकजातानां नानास्त्रीषु निबोध-
त॥१४८॥ ब्राह्मणस्यानुपूर्व्येण चतस्रस्तु यदि स्त्रियः॥ ता-
सां पुत्रेषु जातेषु विभागेऽयं विधिः स्मृतः॥१४९॥

۱۴۵ - جس طرح اورس بیٹا دولت کو لیتا ہے اسی طرح جو لڑکا سسر وغیرہ کے حکم سے عورت نے
پیدا کیا وہ بھی دولت کو لیوے کیونکہ وہ کشیتر والے کا بیج ہے اور اسکی پیدائش دھرم سے ہوئی
۱۴۶ - برادر وفات یافتہ کی دولت ورثہ کو جو لیوے وہ اس عورت میں بیٹا کرے اسی
بیٹے کو دولت دیوے -
۱۴۷ - عورت سسر وغیرہ کے حکم سے دیور خواہ سپنڈ یعنے رشتہ دار سے بیٹا پیدا کرے
اور ایسا سمجھا جاکہ وہ بیٹا کام سے پیدا ہوا ہے تو دولت نہیں پاتا اور وہ بیفائدہ
پیدا ہوا ہے یہ رشی لوگوں نے کہا ہے -
۱۴۸ - ہمقوم عورتوں میں تقسیم حصص مطابق بیان مرقومہ بالا جانو اور مختلف اقوام
کی بہت سی عورتوں میں ایک سے پیدا ہوئے سب بیٹوں کی تقسیم حصص آگے کہینگے -
۱۴۹ - سلسلے سے چاروں ورن کی عورتیں جب برہمن کے گھر ہوں اور ان عورتوں سے جو
بیٹے پیدا ہوں انکی حصص کے تقسیم کو آگے کہیں گے -

۲ - رشی نے بغیر کام سے پیدا ہوئے بیٹا کی علامت یہ لکھی ہے کہ وقت جماع عورت کے منہ سے منہ نہ لگاوے اور نہ عضو سے عضو
لگاوے صرف مقام مخصوص میں عضو مخصوص داخل کر دیوے جو بیٹا پیدا ہو وہ بیٹا پیدا ہونے کے لائق ہے وہ کام سے پیدا نہیں
ہے برخلاف اس طریق کے پیدا ہو وہ کام سے پیدا ہوا کہا تا ہے

मातुः प्रथमतः पिण्डं निर्वपेत्पुत्रिकासुतः ॥ द्वितीयन्तु पितुस्तस्यास्तृतीयं तत्पितुः पितुः ॥ १४० ॥ उपपन्नो गुणैः सर्वैः पुत्रो यस्य तु दत्त्रिमः ॥ स हरेतैव तद्रिक्थं संप्राप्तोऽप्यन्यगोत्रतः ॥ १४१ ॥ गोत्ररिक्थे जनयितुर्न हरेद्दत्त्रिमः क्वचित् ॥ गोत्ररिक्थानुगः पिण्डो व्यपैति ददतः स्वधा ॥ १४२ ॥ अनियुक्तासुतश्चैव पुत्रिण्याप्तश्च देवरात् ॥ उभौ तौ नार्हतो भागं जारजातककामजौ ॥ १४३ ॥ नियुक्तायामपि पुमान्नार्यां जातो विधानतः ॥ नैवार्हः पैतृकं रिक्थं पतितोत्पादितो हि सः ॥ १४४ ॥

۱۴۰- پتر کا پہلا بیٹا پنڈ والدہ کو دیوے دوسرا پنڈ نانا کو تیسرا پنڈ باپ کو دیوے -

۱۴۱- دوسرے گوتر سے بھی لڑکا آیا ہو اور ہمہ صفت موصوف ہو تو جسکا وہ متبنی ہوا ہی اسکی تمام دولت کو پاتا ہے -

۱۴۲- پیدا کرنیوالے کے گوتر اور دولت کو فرزند متبنی نہیں پاتا بلکہ جسکا متبنی ہوا ہی اسکے گوتر اور دولت کو پاتا ہی اور اسیکو پنڈ دیتا ہے جس سے پیدا ہوا ہی اسکو پنڈ نہیں دیتا -

۱۴۳- بیوہ عورت نے بدون حکم والدہ وغیرہ کے جو لڑکا دیور وغیرہ سے پیدا کیا اور کسی عورت نے بحالت عدم موجودگی فرزند با جازت سسر وغیرہ دیور وغیرہ سے لڑکا پیدا کیا یہ دونوں قسم کے لڑکے حصہ نہیں پاتے کیونکہ پہلا لڑکا دوسرے شوہر سے پیدا ہوا ہے -

۱۴۴- درحالیکہ عورت سسر وغیرہ کے حکم کو پا کر خلاف طریق سے بیٹا پیدا کرے تو وہ بیٹا باپ کی دولت کو نہیں پاتا کیونکہ وہ پتت† سے پیدا ہوا ہے

---

† پتت اسکو کہتے ہیں کہ جو اپنی بدفعلی سے دہرم کے وجہ سے گر گیا ہے -

पुत्रिकायां कृतायां तु यदि पुत्रोऽनुजायते ॥ समस्तत्र विभागः स्याज्ज्येष्ठता नास्ति हि स्त्रियाः ॥ १३४ ॥ अपुत्रायां मृतायां तु पुत्रिकायां कथंचन ॥ धनं तत्पुत्रिकाभर्ता हरेतैवाविचारयन् ॥ १३५ ॥ अकृता वा कृता वापि यं विन्देत्सदृशात्सुतम् ॥ पौत्री मातामहस्तेन दद्यात्पिण्डं हरेद्धनम् ॥ १३६ ॥ पुत्रेण लोकाञ्जयति पौत्रेणानन्त्यमश्नुते ॥ अथ पुत्रस्य पौत्रेण ब्रध्नस्याप्नोति विष्टपम् ॥ १३७ ॥ पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात्त्रायते पितरं सुतः ॥ तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥ १३८ ॥ पौत्रदौहित्रयोर्लोके विशेषो नोपपद्यते ॥ दौहित्रोऽपि ह्यमुत्रैनं सन्तारयति पौत्रवत् ॥ १३९ ॥

۱۳۴- لاولد آدمی کے اگر پتر کا کرنے کے بعد یعنی لڑکی کو پتا فرزند قرار دینے کے بعد لڑکا پیدا ہو تو اس مقام پر اس لڑکے کے ساتھ بیٹی کا حصہ برابر ہونا ہی کیونکہ عورت کو بزرگی نہیں ہے اس سے بزرگی کا حصہ نہ پاوے گی۔

۱۳۵- اگر پتر کا سے لڑکا پیدا نہ ہو اور پتر کا مر جاوے تو اسکے مرنے کے بعد اسکی دولت کو اسکا شوہر لیوے اس میں کچھ بچار نہ کرے۔

۱۳۶- بیٹی کو بیٹا کرکے مانا ہو یا بغیر مانا ہو لیکن وہ بیٹی اپنے ہم قوم شوہر سے بیٹا پیدا کرے تو وہ بیٹا اپنے نانا لاولد کی دولت لیوے اور نانا کو پنڈ دیوے اسی وجہ سے نانا بیٹا والا کہاتا ہے

۱۳۷- بیٹا کے وسیلہ سے اندر لوک وغیرہ کو فتح کرتا ہے اور پوتا کے وسیلے سے بے انتہا پھل کو پاتا ہے اور پوتا کے بیٹے کے وسیلے سے سورج لوک کو پاتا ہے

۱۳۸- پت نام دوزخ کا ہے اس سے محافظ کرتے ہیں چونکہ بیٹا باپ کو دوزخ سے بچاتا ہے اس سبب سے پتر کہاتا ہے یہ بات کو خود برہما جی نے کہا ہے۔

۱۳۹- دنیا میں پوتا اور ناتی دونوں برابر ہیں ناتی بھی نانا کو پرلوک میں مثل پوتا کی نجات دلاتا ہے

अनेन तु विधानेन पुरा चक्रेऽथ पुत्रिकाः ॥ विवृद्ध्यर्थं स्ववंश-
स्य स्वयं दक्षः प्रजापतिः ॥ १२८ ॥ ददौ स दश धर्माय कश्यपाय त्र-
योदश ॥ सोमाय राज्ञे सत्कृत्य प्रीतात्मा सप्तविंशतिम् ॥ १२९ ॥
यथैवात्मा तथा पुत्रः पुत्रेण दुहिता समा ॥ तस्यामात्मनि तिष्ठ-
न्त्यां कथमन्यो धनं हरेत् ॥ १३० ॥ मातुस्तु यौतकं यत्स्यात्कुमारी
भाग एव सः ॥ दौहित्र एव च हरेदपुत्रस्याखिलं धनम् ॥ १३१ ॥
दौहित्रो ह्यखिलं रिक्थमपुत्रस्य पितुर्हरेत् ॥ स एव दद्याद्द्वौ-
पिण्डौ पित्रे मातामहाय च ॥ १३२ ॥ पौत्रदौहित्रयोर्लोके न-
विशेषोऽस्ति धर्मतः ॥ तयोर्हि मातापितरौ संभूतौ तस्य देहतः
॥ १३३ ॥

۱۲۸ - اگلے زمانہ مین ترقی نسل کیواسطے دکش پرجاپت نے اسیطرح دختر کو بجاے فرزند کے مانا ہے -

۱۲۹ - خوشی سے بہ تواضع تمام دکش پرجاپت نے دھرم کو دس کنیا اور کسیپ رش کو تیرہ کنیا اور چندرمان کو ستائیس کنیا دین -

۱۳۰ - جیسے اپنی آتما ہے ویسے بیٹا ہے اور بیٹا کے برابر کنیا ہے اسلئے آتما کے برابر کنیا کے ہونے پر کسطرح دوسرا آدمی دولت کو لیوے -

۱۳۱ - بعد وفات والدہ کے اسکی یوتک تمام دولت جسکا آگے بیان ہوگا اسکی کماری کنیا پاتی ہے اور جسکے بیٹا نہو اسکا سب دھن ناتی یعنی لڑکی کا لڑکا پاتا ہے -

۱۳۲ - جو شخص بیٹا نہ رکھتا ہو اسکی تمام دولت ناتی پاوے اور وہ دو پنڈ دیوے ایک باپ کو اور ایک اپنے نانا کو -

۱۳۳ - دنیا مین پوتا اور ناتی مین خصوصیت نہین ہے دونون برابر ہین کیونکہ ایک کے والد کی اور ایک کے والدہ کی پیدایش ایک ہی سے ہے -

एकंवृषभमुद्धारंसंहरेतसपूर्वजः॥ ततोऽपरेज्येष्ठवृषास्तदू-नानांस्वमातृतः॥१२३॥ज्येष्ठस्तुजातोज्येष्ठायांहरेद्वृषभषोड-शाः॥ ततःस्वमातृतःशेषाभजेरन्नितिधारणा॥१२४॥सदृश-स्त्रीषुजातानांपुत्राणामविशेषतः॥नमातृतोज्यैष्ठ्यमस्तिजन्म-तोज्यैष्ठ्यमुच्यते॥१२५॥जन्मज्येष्ठेनचाह्वानंसुब्रह्मण्या-स्वपिस्मृतम्॥ यमयोश्चैवगर्भेषुजन्मतोज्येष्ठतास्मृता॥१२६॥ अपुत्रोऽनेनविधिनासुतांकुर्वीतपुत्रिकाम्॥ यदपत्यंभ-वेदस्यांतन्ममस्यात्स्वधाकरम्॥१२७॥

۱۲۳- پہلی شادی سے جو لڑکا پیچھے پیدا ہوا ہے وہ ایک اچھا بیل اودھار لیوے اور بھائی اُس پیچھے بیل سے چھوٹا بیل اودھار لیویں والدہ کی شادی کے سلسلہ سے بزرگی لڑکے کی جاننا چاہیئے

۱۲۴- بڑی عورت میں پہلے لڑکا پیدا ہوا ہو تو پندرہ گئو اور ایک بیل لیوے اسکے بعد چھوٹی عورت میں جو لڑکے پیدا ہوئے ہیں وہ اپنی والدہ کی شادی کے سلسلہ سے بزرگی کو پاکر یقیناً باقی ماندہ گئو کا حصہ لیویں۔

۱۲۵- اپنی ذات کی عورت سے جتنے لڑکے پیدا ہوئے ہیں انمیں والدہ کی شادی کے حساب سے بزرگی نہیں ہے بلکہ پیدائش کے حساب سے بزرگی ہے۔

۱۲۶- ایسا نہیں کہ صرف تقسیم حصص میں پیدائش سے بزرگی ہو بلکہ جوتشٹوم یگیہ میں اندر کے بلانے کیواسطے سوبرہمنی نام منتر پہلے پیدا ہوئے لڑکے کے نام سے کہا جاتا ہے کہ فلانی لڑکے کا باپ یگیہ کرتا ہے ایسا شروتی میں کہا اور جو دو لڑکے ساتھ ہی پیدا ہوئے ہیں اس مقام پر اگرچہ ستیام حمل میں پہلے نطفہ سے پیچھے پیدا ہوگا اور پچھلے نطفہ سے پہلے پیدا ہوگا تاہم جو پہلے پیدا ہوگا وہی بڑا کہا ویگا۔

۱۲۷- کنیا دان کے وقت داماد سے ایسی صلاح کرے کہ ہمارے گھر میں بیٹا نہیں ہے، اس بیٹی سے جو پہلے پیدا ہوگا وہ ہمارا شرادھ کرم کرنیوالا ہو اسطرح دختر کو بجائے فرزند قرار دے۔

एकाधिकंहरेज्ज्येष्ठःपुत्रोऽध्यर्द्धंततोऽनुजः॥ अंशमंशंयवी-
यांसइतिधर्मोव्यवस्थितः॥ ११७॥ स्वेभ्योंऽशेभ्यस्तुकन्याभ्यः
प्रदद्युर्भ्रातरःपृथक्॥ स्वात्स्वादंशाच्चतुर्भागंपतिताःस्युरदि-
त्सवः॥ ११८॥ अजाविकंसैकशफंनजातुविषमंभजेत्॥ अ-
जाविकन्तुविषमंज्येष्ठस्यैवविधीयते॥ ११९॥ यवीयान्ज्ये-
ष्ठभार्यायांपुत्रमुत्पादयेद्यदि॥ समस्तत्रविभागःस्यादितिध-
र्मोव्यवस्थितः॥ १२०॥ उपसर्जनंप्रधानस्यधर्मतोनोपपद्यते
॥ पिताप्रधानंप्रजनेतस्माद्धर्मेणतंभजेत्॥ १२१॥ पुत्रःकनि-
ष्ठोज्येष्ठायांकनिष्ठायांचपूर्वजः॥ कथंतत्रविभागःस्यादिति
चेत्संशयोभवेत्॥ १२२॥

۱۱۷- بڑا بھائی دو حصّہ لیوے اُس سے چھوٹا ڈیڑھ حصّہ لیوے سب سے چھوٹا ایک حصہ لیوے۔ یہ دھرم کی بیوستھا ہے۔

۱۱۸- سب بھائی علیحدہ علیحدہ اپنے اپنے حصّہ میں سے چوتھا حصہ ہمشیرہ کو دیویں نہ دیں تو پتت ہوتے ہیں

۱۱۹- بکری و بھیڑ و ایک کھر والے (یعنی گھوڑا وغیرہ) یہ سب طاق ہوں (یعنی چار بھائی اور پانچ گھوڑے ہوں) تو طاق کا حصہ نکرنا چاہیئے جو باقی ہے وہ بڑا لیوے۔

۱۲۰- چھوٹا بھائی بڑے بھائی کی زوجہ میں بیٹا پیدا کرے تو اُس بیٹا کے ساتھ چاچا لوگ برابر تقسیم حصّہ کریں اُس بیٹے کو بڑے بھائی کے برابر حصّہ نہ دیویں دھرم بیوستھا ہے۔

۱۲۱- افضل کو غیر افضل کرنا دھرم کے خلاف ہے پیدائش میں والد افضل ہے اسلیئے دھرم سے والد کی خدمتگزاری کرے

۱۲۲- ایک کے دو زوجہ ہیں اور چھوٹی زوجہ سے لڑکا پہلے پیدا ہوا اور بڑی زوجہ کے پیچھے ہوا اس مقام پر تقسیم حصہ کسطرح کرنا چاہیئے ایسی حالت میں مشتبہ ہیں تصفیہ کرنے کو اشلوک آیندہ میں کہینگے

ज्येष्ठस्यविंशउद्धारःसर्वद्रव्याच्चयद्वरम्॥ ततोऽर्द्धंमध्यमस्यास्यात्तुरीयंतुयवीयसः॥११२॥ ज्येष्ठश्चैवकनिष्ठश्चसंहरेतांयथोदितम्॥ येऽन्येज्येष्ठकनिष्ठाभ्यांतेषांस्यान्मध्यमंधनम्॥११३॥ सर्वेषांधनजातानामाददीताग्र्यमग्रजः॥ यच्चसातिशयंकिंचिद्दशतश्चाप्नुयाद्वरम्॥११४॥ उद्धारोनदशस्वस्तिसंपन्नानांस्वकर्मसु॥ यत्किंचिदेवदेयन्तुज्यायसेमानवर्द्धनम्॥११५॥ एवंसमुद्धृतोद्धारेसमानंशान्प्रकल्पयेत्॥ उद्धारेऽनुद्धृतेत्वेषामियंस्यादंशकल्पना॥११६॥

۱۱۲- تمام چیزون مین افضل چیزین اور بیسوان حصہ بڑے بیٹے کو دیا جاے اور منجھلے کو چالیسوان حصہ اور چھوٹے کو اسّی وان حصہ دیگر جو باقی رہے اُسکو برابر حصہ کرکے اور سب لیوین

۱۱۳- بڑے اور چھوٹے کو جیسا کہا ہے ویسا ہی دینا اور منجھلے بھائی کو دولت بھی اوسط قسم کی دینا چاہیئے

۱۱۴- تمام دولت مین جو دولت افضل ہے اور ہر قسم دولت مین جو دولت افضل ہو اور گئو وغیرہ جو چارپایہ ہین اُنمین سے منجملہ دس چارپایہ کے ایک چارپایہ ان تینون چیزونکو بڑا بھائی لیوے لیکن اس قسم کی تقسیم کو اُسوقت جاننا جبکہ بڑا بھائی صاحب صفت ہو اور سب بھائی بےصفت ہون

۱۱۵- سب بھائی اپنے کرم مین مصروف ہون تو جو تقسیم اوپر کہہ آئے ہون وہ کرنا بلکہ بڑے کی تعظیم قایم رکھنے کیواسطے کچھ ایک چھوٹی چیز دینا-

۱۱۶- اسطرح بڑے بیٹے کو اودھار تمام حصہ دیگر باقی ماندہ اشیاء کو برابر حصہ کرنا اور حصہ نکو نہ لیوے تو آگے جو حصہ مقرر کرینگے وہ کرے -

* شرح ۲۰، ۴۰، ۵۰ - ان سب عددون مین سے صفر دور کیا جا تب تقسیم حصص ہوگی -

ज्येष्ठेन जातमात्रेण पुत्री भवति मानवः ॥ पितृणामनृणश्चैव स तस्मात्सर्वमर्हति ॥१०६॥ यस्मिन्नृणं सन्नयति येन चानन्त्यमश्नुते ॥ स एव धर्मजः पुत्रः कामजानितरान्विदुः ॥ १०७॥ पितेव पालयेत्पुत्रान्ज्येष्ठो भ्रातृन्यवीयसः ॥ पुत्रवच्चापि वर्त्तेरन्ज्येष्ठे भ्रातरि धर्मतः ॥ १०८ ॥ ज्येष्ठः कुलं वर्द्धयति विनाशयति वा पुनः ॥ ज्येष्ठः पूज्यतमो लोके ज्येष्ठः सद्भिरगर्हितः १०९ ॥ यो ज्येष्ठो ज्येष्ठवृत्तिः स्यान्मातेव हि पितेव सः ॥ अज्येष्ठवृत्तिर्यस्तु स्यात्स संपूज्यस्तु बन्धुवत् ॥ ११० ॥ एवं सह वसेयुर्वा पृथग्वा धर्मकाम्यया ॥ पृथग्विवर्द्धते धर्मस्तस्माद्धर्म्या पृथक्क्रिया ॥ १११ ॥

۱۰۶- بڑے بیٹے کے پیدا ہونیسے آدمی صاحب اولاد کہلاتا ہے اور پتر ونکے قرضہ سے چھوٹ جاتا ہے اسلیئے بڑا بیٹا سب دولت لینے کے لائق ہوتا ہے-

۱۰۷- جسکے پیدا ہونے سے باپ قرضہ سے ادا ہو جاتا ہے اور مکت پاتا ہے وہی بیٹا دھرم سے پیدا ہوا ہے- اور سب کام سے پیدا ہوئے ہین رشیون نے کہا ہے-

۱۰۸- باپ کی طرح بڑا بیٹا سب بھائیون کی حفاظت کرے اور بڑے بھائی کے پاس چھوٹے بھائی بیٹے کی طرح رہین-

۱۰۹- بڑا بیٹا ہی خاندان کو ترقی دیتا ہے اور نیست نابود بھی کرتا ہے اور دنیا مین بڑی تعظیم کے لائق ہے اچھے لوگون نے اسکی برائی نہین کی ہے-

۱۱۰- جو بزرگی اختیار کرتا ہی وہ مان باپ کے برابر ہی اور جو بزرگی نہین اختیار کرتا ہی وہ مثل بھائی کے قابل تعظیم ہے-

۱۱۱- اس طریق سے سب شامل ہو کر رہین یا دھرم کرنیکی خواہش سے علیحدہ رہین چونکہ علیحدہ رہنے سے دھرم ترقی پاتا ہے اسلیئے علیحدہ رہنا دھرم سے شامل ہے-

नानुशुश्रुम जात्वेतत्पूर्वेष्वपि हि जन्मसु॥ शुल्कसंज्ञेन मूल्येन छन्नं दुहितृविक्रयम्॥१००॥ अन्योन्यस्याव्यभिचारो भवेदामरणान्तिकः॥ एष धर्मः समासेन ज्ञेयः स्त्रीपुंसयोः परः॥१०१॥ तथा नित्यं यतेयातां स्त्रीपुंसौ तु कृतक्रियौ॥ यथा नाभिचरेतान्तौ वियुक्तावितरेतरम्॥१०२॥ एष स्त्रीपुंसयोरुक्तो धर्मो वो रतिसंहितः॥ आपद्यपत्यप्राप्तिश्च दायभागं निबोधत॥१०३॥ ऊर्ध्वं पितुश्च मातुश्च समेत्य भ्रातरः समम्॥ भजेरन्पैतृकं रिक्थमनीशास्ते हि जीवतोः॥१०४॥ ज्येष्ठ एव तु गृह्णीयात्पित्र्यं धनमशेषतः॥ शेषास्तमुपजीवेयुर्यथैव पितरं तथा॥१०५॥

۱۰۰ - معاوضہ لیکر پوشیدہ کنیا کا بیچنا پہلے جنم ہین بھی ہین سُنا -

۱۰۱ - مرنے دم تک دونون کی جدائی ہنو یہ مجملاً پرم دھرم استری پرش کا جاننا -

۱۰۲ - استری پرش ایسی تدبیرون سے زندگی بسر کرین کہ جس سے باہم جدائی ہنو -

۱۰۳ - استری پرش کا دھرم مع محبت باہمی کے بیان کیا اور وقت مصیبت مین اولاد کے حاصل کرنے کو بھی بیان کیا اب اسکے بعد تقسیم حصص کو بھی بیان کرتے ہین -

۱۰۴ - مان باپ کے مرنے کے بعد سب ملکر مان باپ کی دولت کے برابر حصہ کرین بحالت زندگانی والدین سب لڑکے بمنزلہ نابالغ کے ہین -

۱۰۵ - مان باپ کی تمام دولت کو بڑا بیٹا ہی لیوے اور چھوٹا اور مجھلا بھائی سب بڑے بھائی سے اوقات گذاری کرین جس طرح والد سے پرورش پاتے تھے -

त्रिंशद्वर्षोद्वहेत्कन्यां हृद्यां द्वादशवार्षिकीम्॥ त्र्यष्टवर्षोऽष्ट-
वर्षां वा धर्मे सीदति सत्वरः॥ ९४॥ देवदत्तां पतिर्भार्य्यां विन्दते
नेच्छयात्मनः॥ तां साध्वीं बिभृयान्नित्यं देवानां प्रियमाचरन्॥
९५॥ प्रजनार्थं स्त्रियः सृष्टाः सन्तानार्थं च मानवाः॥ तस्मात्साधा-
रणो धर्मः श्रुतौ पत्न्या सहोदितः॥ ९६॥ कन्यायां दत्तशुल्का-
यां म्रियेत यदि शुल्कदः॥ देवराय प्रदातव्या यदि कन्यानुमन्य-
ते॥ ९७॥ आददीत न शूद्रोऽपि शुल्कं दुहितरं ददन्॥ शुल्कं-
हि गृह्णन्कुरुते छन्नं दुहितृविक्रयम्॥ ९८॥ एतत्तु न परे चक्रु-
र्नापरे जातु मानवाः॥ यदन्यस्य प्रतिज्ञाय पुनरन्यस्य दीयते
॥ ९९॥

۹۴ - تیس برس کی عمر کا لڑکا اور بارہ برس کی دختر لخت جگر کا وواہ کرے یا چوبیس برس کا
لڑکا اور آٹھ برس کی لڑکی کا وواہ کرے یہ مناسب وقت دکھایا ہے نیم نہیں ہے، اتنی مدت میں
وید پڑھ سکتا ہے اسکے بعد گرہستھ آشرم میں آنے میں دیر نکرے۔

۹۵ - دیوتاؤں کی دی ہوئی کنیا کو شوہر پاتا ہے اپنی خواہش سے نہیں اسلئے دیوتاؤں کی
پوجن کرتا ہوا اُس نیک چلن عورت کی ہر روز پرورش کرے۔

۹۶ - حمل رہنے کیواسطے عورت کو اور حمل قائم کرنے کیواسطے مرد کو پیدا کیا اسلئے وید میں
استری پرش کا سادھارن دھرم ہے یعنے زوجہ کے ساتھ ہی شوہر اگنی ہوتر وغیرہ کرم کرے

۹۷ - کنیا کا معاوضہ دیکر معاوضہ دینے والا مرجاے تو اسکے بھائی کے ساتھ اس کنیا کا وواہ
کرے بشرطیکہ وہ کنیا منظور کرے۔

۹۸ - شودر بھی کنیا کو دیکر معاوضہ نہ لیوے اسکے لینے سے کنیا کا پوشیدہ بیچنے والا کہاتا ہے

۹۹ - ایک کو کہکر دوسرے کو دینا اس بات کو کسی چھوٹے بڑے نے کبھی نہیں کیا۔

काममामरणात्तिष्ठेद्गृहे कन्यर्तुमत्यपि ॥ नचैवैनां प्रयच्छेत्तु गुणहीनाय कर्हिचित् ॥ ८९ ॥ त्रीणि वर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमती सती ॥ ऊर्ध्वं तु कालादेतस्माद्विन्देत सदृशं पतिम् ॥ ९० ॥ अदीयमाना भर्तारमधिगच्छेद्यदि स्वयम् ॥ नैनः किंचिदवाप्नोति न च यं साधिगच्छति ॥ ९१ ॥ अलंकारं नाददीत पित्र्यं कन्या स्वयंवरा ॥ मातृकं भ्रातृदत्तं वा स्तेना स्याद्यदि तं हरेत् ॥ ९२ ॥ पित्रे न दद्याच्छुल्कं तु कन्यामृतुमतीं हरन् ॥ स हि स्वाम्यादतिक्रामेदृतूनां प्रतिरोधनात् ॥ ९३ ॥

۸۹- کنیا باحیض ہوکر بھی تازیست گھر میں رہے مگر اُس کنیا کو کبھی بےگُن آدمی کو نہ دیوے۔

۹۰- تین برس تک باحیض کنیا اچھے شوہر کی امید میں رہے اسکے بعد اپنے ہی موافق شوہر حاصل کرے۔

۹۱- والد وغیرہ شادی نہیں کرتے اور کنیا آپ سے بر قبول کرے تو اس کنیا کو اور بر کو عیب نہیں ہے۔

۹۲- اپنی طرف سے شوہر کو قبول کرنیوالی دختر کے ماں باپ بھائی وغیرہ کے دیئے ہوئے زیور وغیرہ کو نہ لیوے اگر لیوے تو چور کہاتی ہے۔

۹۳- باحیض دختر سے شادی کرنیوالا شوہر دختر کے باپ کو کچھ شُلک (یعنی معاوضہ) نہ دیوے۔ کیونکہ اولاد بر پیدا ہونیکی وجہ سے باپ کی ملکیت قایم نہیں رہتی۔

+ یعنے اگر پہلے ہی سے شادی ہوتی تو بعد فراغت حیض کے حمل قائم ہو جاتا پس بسبب بری شادی کے حمل نہ رہیگا اس وجہ سے باپ کی ملکیت جاتی رہی۔

अधिविन्ना तु या नारी निर्गच्छेद्रुषिता गृहात्। सा सद्यः सन्निरोद्धव्या त्याज्या वा कुलसन्निधौ॥ ८३॥ प्रतिषिद्धापि चेद्या तु मद्यमभ्युदयेष्वपि। प्रेक्षासमाजं गच्छेद्वा सा दण्ड्या कृष्णलानि षट्॥ ८४॥ यदि स्वाश्चापराश्चैव विन्देरन्योषितो द्विजाः॥ तासां वर्णक्रमेण स्याज्ज्येष्ठ्यं पूजा च वेश्म च॥ ८५॥ भर्तुः शरीरशुश्रूषां धर्मकार्यं च नैत्यकम्॥ स्वा चैव कुर्यात्सर्वेषां नास्वजातिः कथंचन॥ ८६॥ यस्तु तत्कारयेन्मोहात्सजात्या स्थितयान्यया॥ यथा ब्राह्मणचांडालः पूर्वदृष्टस्तथैव सः॥ ८७॥ उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदृशाय च॥ अप्राप्तामपि तां तस्मै कन्यां दद्याद्यथाविधि॥ ८८॥

۸۳- جس عورت کے اوپر دوسرا ویواہ شوہر نے کیا اور وہ عورت غصہ ہوکر گھر سے نکل جاتی ہو تو اسکو روک کر گھر میں رکھنا خواہ خاندان کے روبرو ترک کرنا چاہیے۔

۸۴- کشتری وغیرہ کی زوجہ شوہر وغیرہ سے محفوظ ہو اور شادی وغیرہ کاموں میں بھی ممنوع شراب کو پیوے یا ناچ رنگ کے جلسہ عام میں چلی جاے تو چھ رتی سونا ڈنڈ دیوے۔

۸۵- برہمن کشتری ویشیہ یہ سب اپنے ورن کی اور دوسرے ورن کی عورتوں سے شادی کریں تو ان عورتوں کے درجہ کی بڑائی اور پوجا اور گھر یہ سب بلحاظ سلسلہ ورن کے مقدم سمجھے ہیں

۸۶- سب ورنوں میں جو اپنے ورن کی استری ہیں وہی شوہر کے ذاتی و جسمی کام و قدیم دھرم کا کام کریں دوسرے ورن کی استری نکریں۔

۸۷- جو شخص بحالت نادانی اپنی ذات کی عورت کے ان دونوں کاموں کو موہ سے دوسری ذات کی عورت سے کراتا ہے تو جیسا برہمنی میں شودر سے چانڈال پیدا ہوا ویسا ہی وہ ہے یہ رشیوں نے کہا ہے۔

۸۸- اپنے کل میں بہت اچھا اچار اور خوبصورت اور ہم قوم لڑکا ملے تب لڑکی چھوٹی بھی ہو (یعنے ویواہ کے لائق نہو) تو بھی اسکا ویواہ شاستر کے موافق کردینا چاہیے۔

अतिक्रामेत्प्रमत्तंयामत्तंरोगार्तमेववा ॥ सात्रीन्मासान्परि-
त्याज्याविभूषणपरिच्छदा ॥ ७८ ॥ उन्मत्तंपतितंक्लीबमबीजं
पापरोगिणम् ॥ नत्यागोऽस्तिद्विषंत्याश्चनचदायापवर्त्तनम्
॥ ७९ ॥ मद्यपासाधुवृत्ताचप्रतिकूलाचयाभवेत् ॥ व्याधिता
वाधिवेत्तव्याहिंस्राऽर्थघ्नीचसर्वदा ॥ ८० ॥ वन्ध्याष्टमेऽधिवे
द्याब्देदशमेतुमृतप्रजा ॥ एकादशेस्त्रीजननीसद्यस्त्वप्रिय-
वादिनी ॥ ८१ ॥ यारोगिणीस्यात्तुहितासम्पन्नाचैवशीलतः
॥ सानुज्ञाप्याधिवेत्तव्यानावमन्याचकर्हिचित् ॥ ८२ ॥

۷۸۔ قمار باز وشہ باز و مریض شوہر کی بے تعظیمی جو عورت کرتی ہے اُسکو تین مہینہ تک زیور اور کپڑا نہ دینا چاہیئے۔

۷۹۔ اُمنت اور اپنے ورن کے دھرم کو ترک کرنیوالا و مخنث و کسی بیماری کی وجہ سے نطفہ نہ رکھنے والا و پاپ روگی ایسے شوہر سے فساد کرنیوالی عورت کو ترک کرنا مگر اُسکی دولت نہ لینا۔

۸۰۔ شراب پینے والی اور سادھوں کی سیوا نکرنیوالی اور دشمنی کرنیوالی اور بیماریوں سے بھری ہوئی اور گھات کرنیوالی اور ہر روز دولت کو بیننٹ و نابود کرنیوالی عورت ہو تو دوسرا وواہ کرنا چاہیئے

۸۱۔ بانجھ عورت اور جسکی اولاد نہ جیتی ہو اور جو صرف دختر ہی پیدا کرتی ہو ایسی عورت ہونے پر حسب سلسلہ آٹھویں دسویں گیارھویں سال دوسرا وواہ کرنا چاہیئے اور بدزبان عورت کے اوپر تو فوراً دوسرا وواہ کرنا چاہیئے۔

۸۲۔ جو عورت مریض ہو لیکن خیر خواہ اور با مروت ہو تو اُسکی اجازت سے دوسرا وواہ کرنا چاہیئے مگر اوسکی بے قدری ہرگز نہ کرنا چاہیئے۔

विधायवृत्तिंभार्यायाःप्रवसेत्कार्यवान्नरः।।अवृत्तिकर्षि-
ताहिस्त्रीप्रदुष्येत्स्थितिमत्यपि।।७४।।विधायप्रोषितेवृत्तिं
जीवेन्नियममास्थिता।।प्रोषितेत्वविधायैवजीवेच्छिल्पैर-
गर्हितैः।।७५।।प्रोषितोधर्मकार्यार्थंप्रतीक्ष्योऽष्टौनरस्समाः
।।विद्यार्थंषड्यशोऽर्थंवाकामार्थंत्रींस्तुवत्सरान्।।७६।।संव-
त्सरंप्रतीक्षेतद्विषन्तींयोषितंपतिः।।ऊर्ध्वंसंवत्सरात्त्वेनांदा-
यंहृत्वानसंवसेत्।।७७।।

۷۴ - اہل مطلب سفر کرنے سے پہلے عورت کے کھانے پینے کا بندوبست کرو ے تب پردیش کو جاے کیونکہ بھوکھ کی شدت سے حیادار عورت بھی دوسرے مرد کی خواہش کریگی -

۷۵ - کھانے پینے کا انتظام کرکے پردیش جانے کے بعد اوسکی زوجہ نیم سے رہکر زندگی بسر کرے - اور بدون انتظام خورد و نوش کے شوہر کے سفر کرنے مین سوت کاتنے سے یا اور لائق تعریف دستکاریون سے اوقات گذاری کرے -

۷۶ - دھرم کارج کرنے کے واسطے عورت پردیش گئے ہوئے شوہر کے حکم کی تعمیل آٹھ برس تک کرے اور اودیا پڑھنے کیواسطے پردیس گئے ہوئے شوہر کے حکم کی تعمیل چھہ برس تک کرے اور روزگار ادیش کیواسطے پردیش گئے ہوئے شوہر کے حکم کی تعمیل تین برس تک کرے -

۷۷ - مرد ایک سال تک لڑائی جھگڑا فساد کرنے والی عورت کا انتظار کرے اوسکے بعد بھی اگر لڑائی جھگڑا فساد کرتی رہے تو زیور وغیرہ جو دھن دیا ہے اسکو واپس لیکر اسکے ساتھ جماع ترک کرے مگر کھانا کپڑا دیے جاے -

* اسکے بعد کیا کرنا چاہیے اسکا بیان ماد و سمرت مین بحوالہ قول منی جی کے مشرح ہے اور اس موقع پر بھی ہے سکے اشلوک لاکر اوسکو پڑھنا چاہیے -

यस्याम्रियेतकन्यायावाचासत्येकृतेपतिः॥ तामनेनवि-
धानेननिजोविन्देतदेवरः॥६९॥ यथाविध्यधिगम्यैनांशु-
क्लवस्त्रांशुचिव्रताम्॥ मिथोभजेताप्रसवात्सकृत्सकृदृतावृ-
तौ॥७०॥ नदत्त्वाकस्यचित्कन्यांपुनर्दद्याद्विचक्षणः॥ दत्त्वा
पुनःप्रयच्छन्हिप्राप्नोतिपुरुषानृतम्॥७१॥ विधिवत्प्रतिगृ-
ह्यापित्यजेत्कन्यांविगर्हिताम्॥ व्याधितांविप्रदुष्टांवाछद्म-
नाचोपपादिताम्॥७२॥ यस्तुदोषवतींकन्यामनाख्यायो-
पपादयेत्॥ तस्यतद्वितथंकुर्यात्कन्यादातुर्दुरात्मनः॥७३

۶۹ - بیوہ عورت میں بیٹے کی پیدایش وعدم پیدایش کو بیان کیا اب اسکی دوسری کیفیت بیان کرتے ہیں کہ جس دختر کو کسی کو زبان سے دینے کو کہہ چکے اور وہ شخص جسکو دینے کو کہا قبل شادی ہونیکے مرگیا تو اسکا برادر حقیقی اس دختر کی شادی مطابق طریقہ مندرجہ ذیل کے کرے۔

۷۰ - پاکی سے برت کرنیوالی سفید کپڑے پہنے ہوئے کنیا کا دواہ شاستر کی رتیت سے کرکے بعد فراغت حیض حمل رہنے والی راتوں میں ایک ایک بار حمل رہنے تک اس سے جماع کرے اس سے جو اولاد ہوگی وہ اسکی ہوگی جسکو وہ دختر زبانی اقرار پر پہلے دیگئی تھی۔

۷۱ - عقلمند آدمی ایک شخص کو کنیا دیکر پھر اس کنیا کو دوسرے کو نہ دیوے اگر دیوے تو ہزار آدمی کے قتل کے برابر عذاب ہوتا ہے سات قدم پھرنے سے پہلے عورت کے دھرم کی پیدایش نہیں ہوتی تب دوسرے کو دینے کی سنسکار ہوئی اسلیے اس بچن کو کہا۔

۷۲ - نفرین کے لایق اور آفت آمیز اور مکار اور سخت عورت کو شاستر کے طریق سے دواہ کرکے ترک کرنا چاہیے۔

۷۳ - عیب دار کنیا کا عیب نہ کہکر اسکے دینے والے دُر آتما کا کنیا دان بے فائدہ ہے۔

नान्यस्मिन्विधवानारीनियोक्तव्याद्विजातिभिः॥ अन्यस्मिन्हिनियुंजानाधर्मंहन्युःसनातनम्॥ ६४॥ नोद्वाहिकेषुमंत्रेषुनियोगःकीर्त्यतेक्वचित्॥ नविवाहविधावुक्तंविधवावेदनंपुनः॥ ६५॥ अयंद्विजैर्हिविद्वद्भिःपशुधर्मोविगर्हितः॥ मनुष्याणामपिप्रोक्तोवेनेराज्यंप्रशासति॥ ६६॥ समहीमखिलांभुंजन्राजर्षिप्रवरःपुरा॥ वर्णानांसंकरंचक्रेकामोपहतचेतनः॥ ६७॥ ततःप्रभृतियोमोहात्प्रमीतपतिकांस्त्रियम्॥ नियोजयत्यपत्यार्थंतंविगर्हन्तिसाधवः॥ ६८॥

٦٤- اب بیٹا پیدا کرنے کیواسطے والد وغیرہ کے حکم کی ممانعت لکھتے ہیں کہ براہمن و کشتری و ویش تینوں ورن بیوہ عورت میں بیٹا پیدا کرنیکے واسطے حکم نہ دیوین کیونکہ حکم دینے سے قدیم دھرم ناش ہوتا ہے۔

٦٥- وِواہ کے منتر میں ایسا حکم کہیں نہیں لکھا ہے اور بیوہ عورت کے ساتھ جماع نہیں لکھا ہی۔

٦٦- راجہ بین کی راج میں اِس پشو دھرم کو آدمیونکے واسطے راجہ بین نے کہا اسکو پنڈت براہمنوں نے برا کہا۔

٦٧- زمانہ قدیم میں راج رشیوں سے افضل راجہ بین نے (جسکی عقل غلبہ کام دیو سے خراب ہوگئی تھی) تمام زمین کا مالک ہوکر ورنوں کا سنکر (یعنے ملانا) کیا۔

٦٨- اُس دن سے متوہ کرکے اولاد کی خواہش سے بیوہ عورت سے جماع کو جو حکم دیتا ہی اُسکی برائی ساد ھو لوگ کرتے ہیں۔

देवराद्वासपिण्डाद्वास्त्रियासम्यङ्‌नियुक्तया ॥ प्रजेप्सिताधिगन्तव्यासन्तानस्यपरिक्षये ॥ ५९ ॥ विधवायांनियुक्तस्तुघृताक्तोवाग्यतोनिशि ॥ एकमुत्पादयेत्पुत्रंनद्वितीयंकथंचन ॥ ६० ॥ द्वितीयमेकेप्रजनंमन्यन्तेस्त्रीषुतद्विदः ॥ अनिर्वृत्तंनियोगार्थंपश्यन्तोधर्मतस्तयोः ॥ ६१ ॥ विधवायांनियोगार्थेनिर्वृत्तेतुयथाविधि ॥ गुरुवच्चस्नुषावच्चवर्तेयातांपरस्परम् ॥ ६२ ॥ नियुक्तौयौविधिंहित्वावर्तेयातांतुकामतः ॥ तावुभौपतितौस्यातांस्नुषागगुरुतल्पगौ ॥ ६३ ॥

۵۹ - اولاد کے نہونے میں سُسر وغیرہ کے حکم کو پاکر عورت رشتہ دار سپنڈ یا دیور سے اولاد دلخواہ حاصل کرے۔

۶۰ - والد کا حکم پاکر بدن میں گھی لگاکر خاموش ہوکر بیوہ عورت میں لڑکا پیدا کرے سوائے ایک لڑکے کے دوسرا لڑکا کبھی نہ پیدا کرے۔

۶۱ - ایک بیٹا ہونا اور بے اولاد ہونا دونوں برابر ہیں بڑے لوگوں کی ایسی بحث سے اور والد وغیرہ کے حکم سے جو بیٹا پیدا ہو اس سے مطلب حاصل نہوا ایسا ماننے والے اور والد وغیرہ کے حکم سے بیٹا پیدا ہونے کے طریق کو جاننے والے جو دوسرا آچارج ہیں وہ بیوہ عورت میں دوسرے بیٹے کی پیدائش کو بھی دھرم سے مانتے ہیں۔

۶۲ - جب حمل پیدا ہوچکا تب بڑا بھائی مانند گرو کے اور چھوٹے بھائی کی زوجہ مانند بہو کے دونو باہم رہیں مگر یہ بات کو اس وقت جاننا جب چھوٹے بھائی کی زوجہ میں والد وغیرہ کا حکم ہوا ہو۔

۶۳ - والد وغیرہ کے حکم کو پاکر اور طریق کو چھوڑ کر خواہش سے بڑا بھائی چھوٹے بھائی کی زوجہ سے یا چھوٹا بھائی بڑے بھائی کی زوجہ سے جماع کریں تو دونوں اپنے ورن و آشرم کے درجے سے گر جاتے ہیں بڑا بھائی بہو سے جماع کرنیوالا کہلاتا ہے اور چھوٹا بھائی گرو پتنی سے جماع کرنیوالا کہلاتا ہے۔

क्रियाभ्युपगमात्त्वेतद्बीजार्थं यत्प्रदीयते ॥ तस्येह भागिनौ दृष्टौ बीजी क्षेत्रिक एव च ॥ ५३ ॥ ओघवाताहृतं बीजं यस्य क्षेत्रे प्ररोहति ॥ क्षेत्रिकस्यैव तद्बीजं न वप्ता लभते फलम् ॥ ५४ ॥ एष धर्मो गवाश्वस्य दास्युष्ट्राजाविकस्य च ॥ विहंगमहिषीणां च विज्ञेयः प्रसवं प्रति ॥ ५५ ॥ एतद्वः सारफल्गुत्वं बीजयोन्योः प्रकीर्त्तितम् ॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि योषितां धर्म्ममापदि ॥ ५६ ॥ भ्रातुर्ज्येष्ठस्य भार्या या गुरुपत्न्यनुजस्य सा ॥ यवीयसस्तु या भार्या स्नुषा ज्येष्ठस्य सा स्मृता ॥ ५७ ॥ ज्येष्ठो यवीयसो भार्यां यवीयान्वाग्रजस्त्रियम् ॥ पतितौ भवतो गत्वा नियुक्तावप्यनापदि ॥ ५८ ॥

۵۳ - اِس عورت مین جو پیدا ہو وہ ہمارا اور تمھارا دونون کا ہووے ایسا دلمین رکھکر جو پیدا کیا اُوسکا حصّہ دار تخم والا اور کھیت والا دونون ہوتے ہین -

۵۴ - تخم ہوا سے اوڑکر جسکے کھیت مین پڑا اُسکا پھل کھیت والاہی پاتا ہے صاحب تخم نہین پاتا -

۵۵ - گئو - گھوڑا - اونٹ بکری بھیڑ پرند بھینس واسی انھون کی پیدائش مین اُسی دہرم کو جانیا

۵۶ - بھرگ جی کہتے ہین کہ آپ لوگون سے تخم و ظرف کی فضیلت و غیر فضیلت کو کہا اِسکے بعد وقت مصیبت مین عورتون کا دھرم کہتے ہین -

۵۷ - بڑے بھائی کی زوجہ چھوٹے بھائی کی گرپتنی کہاتی ہے اور چھوٹے بھائی کی زوجہ بڑے بھائی کی پتوہو کہلاتی ہے -

۵۸ - وقت مصیبت نہو اور والد وغیرہ کا حکم بھی ہو لیکن بڑے بھائی کی زوجہ سے چھوٹا بھائی اور چھوٹے بھائی کی زوجہ سے بڑا بھائی جماع کرے تو دونون پتت ہوتے ہین یعنی ورن و آشرم کے درجہ سے گر جاتے ہین

सकृदंशो निपतति सकृत्कन्या प्रदीयते ॥ सकृदाह ददानीति
त्रीण्येतानि सतां सकृत् ॥ ४७ ॥ यथा गोऽश्वोष्ट्रदासीषु महि-
ष्यजाविकासु च ॥ नोत्पादकः प्रजाभागी तथैवान्यांगनास्व-
पि ॥ ४ ॥ येऽक्षेत्रिणो बीजवन्तः परक्षेत्रप्रवापिणः ॥ ते वै स-
स्यस्य जातस्य न लभन्ते फलं क्वचित् ॥ ४९ ॥ यदन्यगोषु वृषभो
वत्सानां जनयेच्छतम् ॥ गोमिनामेव ते वत्सा मोघं स्कन्दितमा-
र्षभम् ॥ ५० ॥ तथैवाक्षेत्रिणो बीजं परक्षेत्रप्रवापिणः ॥ कु-
र्वन्ति क्षेत्रिणामर्थं न बीजी लभते फलम् ॥ फलं त्वनभिसन्धा-
य क्षेत्रिणां बीजिनां तथा ॥ प्रत्यक्षं क्षेत्रिणामर्थो बीजाद्यो-
निर्गरीयसी ॥ ५२ ॥

۴۷ - تقسیم حصہ کنیادان دینگے یہ تینوں باتیں بھلے لوگوں کی ایک ہی دفعہ ہوتی ہے -
۴۸ - جسطرح گئو گھوڑا اونٹ لونڈی بھینس بکری بھیڑ انھوں میں بچہ پیدا کرنیوالے کا مالک
بچہ کو نہیں پاتا اسیطرح دوسرے کی عورت میں تخم ڈالنے والا اولاد کو نہیں پاتا -
۴۹ - دوسرے کے کھیت میں تخم ڈالنے والا اس تخم کے ثمر کو کبھی نہیں پاتا -
۵۰ - دوسرے کی گئوؤں میں دوسرے کا بیل بچھڑا پیدا کرے تو گئو کا مالک ان بچھڑوں کو پاتا ہے اور
بیل کا نطفہ بے فائدہ جاتا ہے -
۵۱ - اسیطرح دوسرے کے کھیت میں بیج بونے والا کھیت والے کا مطلب کرتا ہے آپ پھل کو
نہیں پاتا -
۵۲ - اس عورت میں جو پیدا ہو وہ ہمارا اور تمھارا دونوں کا ہووے ایسے خیال کو دل میں
نرکھکر جو پیدا کیا وہ لڑکا ظرف والی کا ہوتا ہے تخم سے ظرف افضل ہے -

अत्रगाथावायुगीताःकीर्त्तयन्तिपुराविदः॥यथाबीजंनव-
प्तव्यंपुंसापरपरिग्रहे॥४२॥नश्यतीषुर्यथाविद्धःखेविद्धम-
नुविध्यतः॥तथानश्यतिवैक्षिप्रंबीजंपरपरिग्रहे॥४३॥पृ-
थोरपीमांपृथिवींभार्यांपूर्वविदोविदुः॥स्थाणुच्छेदस्यकेदा-
रमाहुःशल्यवतोमृगम्॥४४॥एतावानेवपुरुषोयज्जाया-
त्माप्रजेतिह॥विप्राःप्राहुस्तथाचैतद्योभर्त्तासास्मृतांगना
॥४५॥ननिष्क्रयविसर्गाभ्यांभर्त्तुर्भार्याविमुच्यते॥एवंधर्मं
विजानीमःप्रजापतिविनिर्मितम्॥४६॥

۴۲ - دوسرے کی عورت مین تخم نہ ڈالنا چاہیے اسباب مین اگلے زمانہ کے جاننے والے رشی لوگون
نے ہوا کا کہا ہوا سخن جو خاص چھند سے شامل ہے بیان کیا ہے بلکہ اُسپر عمل کیا ہو۔
۴۳ - کسی نے آسمان پر پرند کو تیر مارا پھر دوسرے آدمی نے اُسی پرند پر تیر مارا تو دوسرے آدمی کا
تیر ضائع ہوا کیونکہ شکار تو پہلے تیر انداز کو ملتا ہے اسی طرح دوسرے کی عورت مین تخم ضائع جاتا ہے
یعنے جسکی عورت ہو اُسی کو بچہ کا افادہ ہوتا ہے۔
۴۴ - اول راجہ پرتھو نے اِس پرتھوی کو لیا پھر بہت سے راجاؤن نے لیا تاہم یہ پرتھوی راجہ
پرتھو ہی کی استری ہے اور جسنے اونچی نیچی زمین کو برابر کیا اُسیکا کھیت ہو اور جسنے اول تیر سے
مارا اُسی کا شکار ہو یہ اگلے زمانہ کے جاننے والون نے کہا ہے۔
۴۵ - ایک ہی پرش نہین ہوتا بلکہ اپنا جسم و عورت و اولاد یہ سب ملکر پرش کہاتا ہے یہ برہمنون
نے کہا ہے۔ جو شوہر ہے وہی عورت ہے یہ رشی لوگون نے کہا ہو۔
۴۶ - استری فروخت کرنے اور ترک کرنے سے استری کے دھرم سے علیحدہ نہین ہوتی اول
ہی ستری برھما جی نے یہ تحقیق دھرم کی ہے سب ہم جانتے ہین ایسا منُ جی نے کہا ہو۔

यादृशंतूप्यतेबीजंक्षेत्रेकालोपपादिते ॥ तादृग्रोहतितत्त-
स्मिन्बीजंस्वैर्व्यञ्जितंगुणैः ॥ ३६ ॥ इयंभूमिर्हिभूतानांशाश्व
तीयोनिरुच्यते ॥ नचयोनिगुणान्कांश्चिद्बीजंपुष्यतिपुष्टिषु
॥ ३७ ॥ भूमावप्येककेदारेकालोप्तानिकृषीवलैः ॥ नानारू-
पाणिजायन्तेबीजानीहस्वभावतः ॥ ३८ ॥ व्रीहयःशालयो
मुद्गास्तिलामाषास्तथायवाः ॥ यथाबीजंप्ररोहन्तिलशुना
नीक्षवस्तथा ॥ ३९ ॥ अन्यदुप्तंजात मन्यदित्येतन्नोपपद्य-
ते ॥ उप्यतेयद्धियद्बीजंतत्तदेवप्ररोहति ॥ ४० ॥ तत्प्राज्ञेन-
विनीतेनज्ञानविज्ञानवेदिना ॥ आयुष्कामेनवप्तव्यंनजा-
तुपरयोषिति ॥ ४१ ॥

۳۶- تخم ریزی کے وقت جیسا تخم کھیت میں بویا جاتا ویسا ہی مع اپنی صفات کے پیدا ہوتا ہے

۳۷- پانچ عناصر سے پیدا ہوئے جتنے جاندار ہیں اونکی پیدایش کا سبب ظرف ہی اور کوئی چیز بونے اور اگنے کی صفت کو سوائے تخم کے مضبوطی نہیں بخشتی ہے اسلیئے تخم ہی مقدم و افضل ہے

۳۸- ایک ہی کھیت میں کاشتکار نے تخم ریزی کے وقت جو و گندم وغیرہ تخم کو بویا اور وہ تخم اپنی عادت سے انواع و اقسام کا ہوتا ہے زمین تو ایک ہی صورت کی ہے اور تخم ایک صورت کا نہیں پس تخم ہی افضل ہے-

۳۹- جیسے سانٹھی و دھان و مونگ و تل و ماش و جو و لہسن و اوکھ یہ سب بونے کے بعد مختلف صورت سے پیدا ہوتے ہیں-

۴۰- ایک چیز کو بویا اور دوسری چیز پیدا ہوئی ایسا نہیں ہوتا بلکہ جو بوتے ہیں وہی اگتا ہے-

۴۱- متحمل و متواضع و دانشمند و کامل و گیان بگیان یعنی وید و شاستر کے جاننے والے و عمر کی خواہش کرنیوالے جو آدمی ہیں وہ دوسرے کی عورت میں تخم کو نہ ڈالیں-

व्यभिचारात्तुभर्तुः स्त्रीलोकेप्राप्नोतिनिन्द्यताम्॥ सृगालयो-
निंचाप्नोतिपापरोगैश्चपीड्यते॥ ३०॥ पुत्रंप्रत्युदितंसद्भिः पू-
र्वजैश्चमहर्षिभिः॥ विश्वजन्यमिमंपुण्यमुपन्यासंनिबोधत
॥ ३१॥ भर्तुःपुत्रंविजानन्तिश्रुतिद्वैधंतुभर्त्तरि॥ आहुरुत्पाद-
कंकेचिदपरेक्षेत्रिणांविदुः॥ ३२॥ क्षेत्रभूतास्मृतानारीबीज-
भूतःस्मृतःपुमान्॥ क्षेत्रबीजसमायोगात्संभवःसर्वदेहिना-
म्॥ ३३॥ विशिष्टंकुत्रचिद्बीजंस्त्रीयोनिस्त्वेवकुत्रचित्॥ उ-
भयंतुसमंयत्रसाप्रसूतिःप्रशस्यते॥ ३४॥ बीजस्यचैवयोन्या-
श्चबीजमुत्कृष्टमुच्यते॥ सर्वभूतप्रसूतिर्हिबीजलक्षणल-
क्षिता॥ ३५॥

۳۰ - دوسرے مرد کے ساتھ جماع کرنے سے عورت دنیا مین مذمت کے قابل ہوتی ہے اور گیدڑ
کا جنم پاتی ہے اور پاپ روگون سے دکھی و کلیش وان ہوتی ہے -
۳۱ - اچھے قدیم بڑے لوگون نے بابت اولاد کے سنسار کے بھلے کیواسطے جس پاک دھرم
کو کہا ہے اسکو سنتے ہین -
۳۲ - باپ کا بیٹا ہے ایسا سب جانتے ہین اور باپ کی بابت دو طرح کی شرتہ ہے کوئی کہتے
کہ تخم والے کا بیٹا ہے اور کوئی کہتا ہے کہ ظرف دینے کشیترا والے کا بیٹا ہے -
۳۳ - عورت ظرف کی صورت ہے اور تخم مرد کی صورت ہے ظرف اور تخم کی آمیزش سے جملہ
جسم دارون کی پیدایش ہے -
۳۴ - کہین تخم بڑا ہے کہین ظرف بڑا ہے جہان دونون برابر ہین وہ اولاد بہت اچھی ہے -
۳۵ - تخم اور ظرف دونون مین تخم بڑا ہے سب جاندارون کی پیدایش تخم کے نشان
سے جانی جاتی ہے -

सता श्चान्या श्च लोकेऽस्मिन्नपकृष्टप्रसूतयः ॥ उत्कर्षं योषितः प्राप्ताः स्वैः स्वैर्भर्तृगुणैः शुभैः ॥ २४ ॥ एषोदिता लोकयात्रा नित्यं स्त्रीपुंसयोः शुभा ॥ प्रेत्येह च सुखोदर्कान्प्रजाधर्मान्निबोधत ॥ २५ ॥ प्रजनार्थं महाभागाः पूजार्हा गृहदीप्तयः ॥ स्त्रियः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन ॥ २६ ॥ उत्पादनमपत्यस्य जातस्य परिपालनम् ॥ प्रत्यहं लोकयात्रायाः प्रत्यक्षं स्त्री निबन्धनम् ॥ २७ ॥ अपत्यं धर्म्मकार्याणि शुश्रूषा रतिरुत्तमा ॥ दाराधीनस्तथा स्वर्गः पितॄणामात्मनश्च ह ॥ २८ ॥ पतिं या नाभिचरति मनोवाग्देहसंयता ॥ सा भर्तृलोकानाप्नोति सद्भिः साध्वीति चोच्यते ॥ २९ ॥

۲۴- سوائے انکے اور بھی عورتین رذیل قوم سے پیدا ہوکر اس لوک مین اپنے شوہرون کی عظمت سے عظمت کو پہونچ گئین -

۲۵- عورت و مرد کی قدیم نیک چلنی کو کہا اب اس لوک مین اور پرلوک مین اور زمانہ آیندہ مین سکھ کیواسطے جو رعایا کا دھرم ہے اسکو کہتے ہین -

۲۶- گھر مین پیدائش کیواسطے بڑی قسمت والی پوجا کے لائق گھر کی شمع دان استری اور لکشمی مین ان دونون مین خصوصیت کچھ نہین ہے دونون برابر ہین -

۲۷- بیٹا اور بیٹی کی پیدائش اور بعد پیدائش کی انکی حفاظت اور دنیاوی مراسم قدیم ان سبھون کا ظاہری سبب عورت ہی ہے -

۲۸- اولاد اور دھرم کارج اور اُتم سیوا اور اپنا اور اپنے بزرگون کا سورگ سبب عورت کے اختیار مین ہین -

۲۹- جو عورت دل و زبان و بدن کے عیب سے علیحدہ ہوکر اپنے شوہر کو چھوڑ کر غیر مرد کا دھیان نہین کرتی وہ پتی لوک کو پاتی ہے اور دنیا مین اسکو اچھے لوگ سادھن دیوی نیک چلن کہتے ہین -

तथा च श्रुतयो बह्व्यो निगीता निगमेष्वपि ॥ स्वालक्षण्यपरी-
क्षार्थं तासां शृणुत निष्कृतीः ॥ १९ ॥ यनोमाता प्रलुलुभे विच-
रन्त्यपतिव्रता ॥ तन्मे रेतः पिता वृङ्क्तामित्यस्यैतन्निदर्शनम् ॥
२० ॥ ध्यायत्यनिष्टं यत्किंचित्पाणिग्राहस्य चेतसा ॥ तस्यै-
ष व्यभिचारस्य निह्नवः सम्यगुच्यते ॥ २१ ॥ यादृग्गुणेन भर्त्रा-
स्त्री संयुज्येत यथा विधि ॥ तादृग्गुणा सा भवति समुद्रेणेव नि-
म्नगा ॥ २२ ॥ अक्षमाला वसिष्ठेन संयुक्ताऽधमयोनिजा ॥
शारंगी मन्दपालेन जगामाभ्यर्हणीयताम् ॥ २३ ॥

۱۹- بدفعلی کرنا عورتوں کی عادت ہے یہ ہم پہلے لکھا ہی کہ ہم نہیں جانتے ہیں کہ براہمن ہیں یا غیر براہمن ہیں اسکو پراشچت واسطے ویدمیں دیکھو-

۲۰- اپنی والدہ کی بدفعلی یا غلطی دیکھکر کہنا چاہیئے کہ میری والدہ نے غیر پت برتا ہو کر غیر مرد میں رغبت کیا تو والدہ کے بیج روپ (یعنے صورت نطفہ) اس غیر مرد کو میرا والد پاک کرے

۲۱- جو عورت دل سے اپنے شوہر کا کچھ برا خیال کرتی ہی اس بدفعلی کی نسبت کا پاک کرنیوالا پہلا کہا ہوا منتر ہے جن وغیرہ رشیوں نے کہا ہے-

۲۲- جس طریق سے جیسے آدمی سے عورت وصل پاتی ہی ویسی ہی آپ ہوتی ہے جیسے سمندر سے ندی-

۲۳- ذلیل قوم سے پیدا اکش مالا نام عورت نے بششٹ رشی سے وصل کیا دونوں پوجن کے قابل ہوئے-

* دل وزبان و جسم کے فعل سے اپنے شوہر کو چھوڑ کر غیر مرد کی خواہش نکرے وہ پت برتا کہلاتی ہے جسکے سوا غیر پت برتا کہلاتی ہے
اس شلوک صورت منتر کا ل سے تین حصہ عورتوں کی بدفعلی کی عادت ظاہر کرنیوالا یہ منتر جاننا اس گھر میں کام آتا ہے

पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोऽटनम् ॥ स्वप्नोऽन्यगेहवास-
श्च नारीसंदूषणाणि षट् ॥ १३ ॥ नैता रूपं परीक्षन्ते नासां वय
सि संस्थितिः ॥ सुरूपं वा विरूपं वा पुमानित्येव भुंजते ॥ १४
॥ पौंश्चल्याच्चल चित्ताच्च नैस्नेह्याच्च स्वभावतः ॥ रक्षिता य
त्नतोऽपीह भर्तृष्वेता विकुर्वते ॥ १५ ॥ एवं स्वभावं ज्ञात्वाऽऽ-
सां प्रजापतिनिसर्गजम् ॥ परमं यत्नमातिष्ठेत्पुरुषो रक्षणं प्र-
ति ॥ १६ ॥ शय्यासनमलंकारं कामं क्रोधमनार्जवम् ॥ द्रोह
भावं कुचर्यां च स्त्रीभ्यो मनुरकल्पयत् ॥ १७ ॥ नास्ति स्त्रीणां
क्रिया मन्त्रैरिति धर्मे व्यवस्थितिः ॥ निरिन्द्रिया ह्यमन्त्राश्च स्त्रि
योऽनृतमिति स्थितिः ॥ १८ ॥

۱۳- عورتین کیواسطے چھہ باتین داخل عیب ہین شراب کا پینا بد کی صحبت شوہر سے دوری اور ادہر ادہر گھومنا بیوقت سونا دوسرے کے گہر مین رہنا۔

۱۴- عورتین صورت و عمر کو نہین دیکھتی ہین خوبصورت ہو یا بدصورت ہو لیکن مرد ہو اسی کو بھوگ کرتی ہین۔

۱۵- عورت تدبیر نیک سے محفوظ بھی ہو تاہم اپنی بداطواری و تلوّن طبعی و بیوفائی و عادات ان باتون سے شوہر کو رنجیدہ کرتی ہے

۱۶- وقت پیدایش سری برمہا جی سے عورتون کی یہ عادت جانکر حفاظت کیواسطے مرد تدبیر کرے۔

۱۷- پلنگ دامن دنار وغیرہ بنانیکی عادت و کام کرودھ ٹھگورپن و نفسانیت و بدچلنی ان سب کو منو جی نے شروع پیدایش مین عورتون کو دیا اسلیے تدبیر سے حفاظت کرنا چاہیے۔

۱۸- عورتون کی کریا منترون سے نہین ہے یہ دہرم مین داخل ہے اندری اور منتر ان دونون سے عورت علیحدہ ہے و دروغ کے مانند نامبارک ہے یہ شاستر کا حکم ہے۔

स्वां प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमेव च ॥ स्वं च धर्मं प्रयत्नेन जायां रक्षन्हि रक्षति ॥ ७ ॥ पतिर्भार्यां सम्प्रविश्य गर्भो भूत्वेह जायते ॥ जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः ॥ ८ ॥ यादृशं भजते हि स्त्री सुतं सूते तथाविधम् ॥ तस्मात्प्रजाविशुद्ध्यर्थं स्त्रियं रक्षेत्प्रयत्नतः ॥ ९ ॥ न कश्चिद्योषितः शक्तः प्रसह्य परिरक्षितुम् ॥ एतैरुपाययोगैस्तु शक्यास्ताः परिरक्षितुम् ॥ १० ॥ अर्थस्य संग्रहे चैनां व्यये चैव नियोजयेत् ॥ शौचे धर्मेऽन्नपक्त्यां च पारिणाह्यस्य चेक्षणे ॥ ११ ॥ अरक्षिता गृहे रुद्धाः पुरुषैराप्तकारिभिः ॥ आत्मानमात्मना यास्तु रक्षेयुस्ताः सुरक्षिताः ॥ १२ ॥

۷۔ عورت کی حفاظت کرنیسے اپنے خاندان و اولاد و تما و دھرم وغیرہ کی حفاظت ہوتی ہی
۸۔ شوہر اپنی عورت مین داخل ہو کر بشکل حمل دنیا مین پیدا ہوتا ہی عورت مین عورت سے نسبت رکھنے والا دھرم وہی ہے کہ عورت مین آپ پیدا ہووے
۹۔ جس قسم کے مرد کا استعمال عورت کرتی ہو ویسا ہی بیٹا پیدا کرتی ہی اسلیئے اولاد پاک ہونے کے لیے حتی المقدور عورت کی حفاظت کرنا چاہیے۔
۱۰۔ کوئی آدمی ضد کرکے عورت کی حفاظت مین صاحب قدرت نہین ہوتا ہی بلکہ جو تدبیر آگے کہینگے اُسکے وسیلہ سے آدمی حفاظت کرنے مین صاحب قدرت ہوتا ہے۔
۱۱۔ مطلبون کا حاصل کرنا خرچ خانہ پاکیزگی و دھرم خانہ بنانا گھر کی چیزون کو دیکھنا ان سب کامون مین عورت کو اختیار دینا چاہیے۔
۱۲۔ حکم کرکے اچھے آدمی سے عورت گھر مین محفوظ لیگئی ہو اُسپر بھی محفوظ نہین ہوتی بلکہ جو عورت اپنے کو آپ حفاظت کرتی ہو وہی محفوظ رہتی ہے۔

पुरुषस्य स्त्रियाश्चैव धर्म्ये वर्त्मनि तिष्ठतोः ॥ संयोगे विप्रयोगे च धर्मान्वक्ष्यामि शाश्वतान् ॥ १ ॥ अस्वतंत्राः स्त्रियः कार्याः पुरुषैस्स्वै र्दिवानिशम् ॥ विषयेषु च सज्जन्त्यः संस्थाप्या आत्मनो वशे ॥ २ ॥ पिता रक्षति कौमारे भर्त्ता रक्षति यौवने ॥ रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति ॥ ३ ॥ कालेऽदाता पिता वाच्यो वाच्यश्चानुपयन्पतिः ॥ मृते भर्त्तरि पुत्रस्तु वाच्यो मातुररक्षिता ॥ ४ ॥ सूक्ष्मेभ्योऽपि प्रसंगेभ्यः स्त्रियो रक्ष्या विशेषतः ॥ द्वयोर्हि कुलयोः शोकमावहेयुररक्षिताः ॥ ५ ॥ इमं हि सर्ववर्णानां पश्यन्तो धर्ममुत्तमम् ॥ यतन्ते रक्षितुं भार्यां भर्त्तारो दुर्बला अपि ॥ ६ ॥

۱- دھرم کی راہ پر چلنے والے جو مرد و عورت ہین ان دونون کے وصل و جدائی مین جو دھرم قدیم ہے اسکو کہتے ہین۔

۲- رات دن عورتون کو شوہر وغیرہ کے وسیلہ سے بے اختیار کرنا مناسب ہے جو عورت بِشیون مین لگی ہے اسکو اختیار مین رکھنا چاہیے۔

۳- لڑکپن مین باپ اور جوانی مین شوہر اور بڑھاپے مین بیٹا عورتون کی حفاظت کرے کیونکہ عورتین خود مختار ہونیکے لائق نہین ہین۔

۴- کنیا دان کیوقت کنیا کو نہ دیوے تو باپ اسکا پاپی ہوتا ہے اور حیض سے فراغت ہوئے پر شوہر اس سے جماع نکرے تو وہ پاپی ہوتا ہے اور بحالت وفات شوہر کے بیٹا اپنی مان کی حفاظت نکرے تو وہ پاپی ہوتا ہے۔

۵- تھوڑی صحبت سے بھی خصوصًا عورتونکی حفاظت کرنا چاہیے عورتین غیر محفوظ رہنے سے دونون کل (یعنے خاندان شوہر و خاندان والدین) کو رنج پہونچاتی ہین۔

۶- سب ورنون کے اتم دھرم کو دیکھتے ہوئے کمزور شوہر بھی عورت کی حفاظت کیواسطے کوشش و تدبیر کرتے ہین

वैश्यशूद्रौप्रयत्नेनस्वानिकर्माणिकारयेत्॥तौहिच्युतौस्वकर्मभ्यःक्षोभयेतामिदंजगत्॥४१८॥अहन्यहन्यवेक्षेतकर्मान्तान्वाहनानिच॥आयव्ययौचनियतावाकरान्कोशमेवच॥४१९॥एवंसर्वानिमान्राजाव्यवहारान्समापयन्॥व्यपोह्यकिल्बिषंसर्वंप्राप्नोतिपरमांगतिम्॥४२०॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायामष्टमोऽध्यायः ८

۴۱۸ - ویشیہ اور شودر یہ دونوں اپنے کام سے بیکار ہونے نہ پاویں اگر یہ دونوں اپنے دھرم سے علیحدہ ہوں تو زمانہ کو پُر آشوب کریں۔

۴۱۹ - کام کا ہو جانا و سواری و حاصل زر و خرچ و خزانہ و معدن ان سبھوں کو ہر روز راجہ ملاحظہ کیا کرے

۴۲۰ - اس طریق سے راجہ تمام کاموں کو کرتا ہوا پاپ کو چھوڑ کر پرم گت کو پاتا ہے۔

منو جی کا دھرم شاستر بھرگ جی کی سنگھتا کا

آٹھواں ادھیائے سماپت ہوا۔

शूद्रंतुकारयेद्दास्यंक्रीतमक्रीतमेववा ॥ दास्यायैवहिसृष्टोऽसौब्राह्मणस्यस्वयंभुवा ॥ ४१३ ॥ नस्वामिनानिसृष्टोऽपिशूद्रोदास्याद्विमुच्यते ॥ निसर्गजंहितत्तस्यकस्तस्मात्तदपोहति ॥ ४१४ ॥ ध्वजाहृतोभक्तदासोगृहजः क्रीतदत्त्रिमौ ॥ पैत्रिकोदण्डदासश्चसप्तैतेदासयोनयः ॥ ४१५ ॥ भार्यापुत्रश्चदासश्चत्रयएवाधनाः स्मृताः ॥ यत्तेसमधिगच्छन्तियस्यतेतस्यतद्धनम् ॥ ४१६ ॥ विस्रब्धंब्राह्मणः शूद्राद्द्रव्योपादानमाचरेत् ॥ नहितस्यास्तिकिंचित्स्वंभर्तृहार्य्यधनोहिसः ॥ ४१७ ॥

۴۱۳ - جو شودر خرید کیا گیا ہو یا نہ خرید کیا گیا ہو اُس سے داس کا کام کرانا چاہئے کیونکہ براہمن کا داس کرم کیواسطے سری برہما جی نے شودر کو پیدا کیا ہے۔

۴۱۴ - جو مالک داس کرم سے داس کو آزاد نہیں کرتا تو وہ داس اس کرم سے آزاد نہیں ہوتا کیونکہ داس کرم شودر کے سوبھاؤ سے پیدا ہے اس کرم کو کون چھوڑا سکتا ہے۔

۴۱۵ - دھوجاہرت* بھگت داس گھر میں داسی سے پیدا ہوا مول لیا ہوا ان میں ملا ہو بزرگوں سے چلا آیا ڈنڈ داس یہ سات بھی داس ہی ہیں۔

۴۱۶ - زوجہ و فرزند و داس یہ تینوں بے زر ہیں اور دولت کو فراہم کریں تو جسکے یہ تینوں ہیں اوسکی دولت ہے

۴۱۷ - براہمن داس شودر سے دولت لے لیوے اُسمیں کچھ بچار نہ کرے کیونکہ وہ دولت کچھ اوسکی ملکیت نہیں ہے وہ بے زر ہے وہ جو دولت فراہم کرے اس دولت کا مالک اُسکا سوامی ہے۔

* جسکو میدان جنگ سے فتح کر کے لائے۔

† یعنے بھوجن کیواسطے داس کرم کو منظور کرنیوالا

‡ یعنے کسی قصور کی سزا کے عوض میں داس بھاؤ کو منظور کرنیوالا۔

यन्नावि किंचिद्दासानां विशीर्येतापराधतः ॥ तद्दासैरेव दातव्यं समागम्य स्वतोंऽशतः ॥ ४०८ ॥ एष नौयायिनामुक्तो व्यवहारस्य निर्णयः ॥ दासापराधतस्तोये दैविके नास्ति निग्रहः ॥ ४०९ ॥ वाणिज्यं कारयेद्वैश्यं कुसीदं कृषिमेव च ॥ पशूनां रक्षणं चैव दास्यं शूद्रं द्विजन्मनाम् ॥ ४१० ॥ क्षत्रियं चैव वैश्यं च ब्राह्मणो वृत्तिकर्शितौ ॥ बिभृयादानृशंस्येन स्वानि कर्माणि कारयन् ॥ ४११ ॥ दास्यन्तु कारयँल्लोभाद्ब्राह्मणः संस्कृतान्द्विजान् ॥ अनिच्छतः प्राभवत्याद्राज्ञा दण्ड्यः शतानि षट् ॥ ४१२ ॥

۴۰۸ - کشتی مین ملاحون کے قصور سے کسی چیز کی بربادی ہو تو اُسکو سب ملاح ملکر اپنے حصہ سے دیوین -

۴۰۹ - ملاحون کے قصور سے پانی مین بہا گئی چیزون کی تنقیح کو کہا - آفت آسمانی ملاحون کا جرم و سزا نہین ہے -

۴۱۰ - ویشیہ کا کام کھیتی کرنا اور سود لینا اور چارپایہ کی پرورش کرنا ہے ان سب کامون کو ویشیہ سے کراوے برہمن اور کشتری اور ویشیہ کی سوا شودرون سے کراوے -

۴۱۱ - جو کشتری یا ویشیہ رزق نہونے سے پریشان ہو اُسکو برہمن رحم سے کام کو کراتا ہوا پرورش کرے -

۴۱۲ - جو برہمن کشتری ویشیہ جنیو وغیرہ سنسکار کو پاکر کام کرنیکی خواہش نہین کرتے اُنسے جو برہمن بوسیلہ اپنے پربھاؤ کے لوبھ سے کام کرنیوالا ہے اُس برہمن سے راجہ چھ سو پن ڈنڈ دیوے -

पणंयानंतरेदाप्यंपौरुषोऽर्द्धपणंतरे।।पादंपशुश्चयोषिच्चपा-
दार्द्धंरिक्तकःपुमान्।। ४०४।।भाण्डपूर्णानियानानितार्यंदा-
प्यानिसारतः।। रिक्तभाण्डानियत्किंचित्पुमांसश्चापरीच्छदाः
।।४०५।।दीर्घाध्वनियथादेशंयथाकालंतरोभवेत्।। नदीतीरेषु
तद्विद्यात्समुद्रेनास्तिलक्षणम्।।४०६।।गर्भिणीतुद्विमासा-
दिस्तथाप्रव्रजितोमुनिः।।ब्राह्मणालिंगिनश्चैवनदाप्यास्ता-
रिकंतरे।। ४०७।।

۴۰۴ - کشتی پر سوار ہو کر عبور کرنے میں سواری پیچھے ایک پن لینا چاہئے اور مع بوجھ فی آدمی آدھا پن اور چار پایہ اور استری پیچھے پن کا چوتھا حصہ اور بوجھ رکھنے والے آدمی پیچھے پن کا آٹھواں حصہ لینا چاہئے۔

۴۰۵ - گاڑی وغیرہ محمولہ اشیاء وغیرہ سے بلحاظ چیز یا محمول کے سارا سارا بچار کر کے محصول مقرر کرنا چاہئے اور جس گاڑی وغیرہ میں اشیاء وغیرہ نہیں ہے اور جو آدمی کچھ سامان وغیرہ نہیں رکھتا ان سے تھوڑا محصول لینا چاہئے۔

۴۰۶ - دریا کے راستے سے دور جانے میں دریا کی تیز روی و قیام اور موسم گرمی و برسات وغیرہ کا لحاظ کر کے کشتی کی اجرت مقرر کرنا چاہئے اور سمندر میں چلنا ہوا کے اختیار میں ہے اس لئے اوپر لکھی ہوئی بات کا لحاظ نہیں ہے بلکہ جو مناسب ہو وہی لینا چاہئے۔

۴۰۷ - دو مہینہ سے زیادہ کی حاملہ عورت و سنیاسی و بان پرستھ و برہمن و برہمچاری ان سب سے عبور دریا کا محصول نہ لینا چاہئے۔

शुल्कस्थानेषु कुशलाः सर्वपराय विचक्षणाः ॥ कुर्युरर्घं यथापरायं ततो विंशं नृपो हरेत् ॥ ३९८ ॥ राज्ञः प्रख्यातभाराडानि प्रतिषिद्धानि यानि च ॥ तानि निर्हरतो लोभात्सर्वहारं हरेन्नृपः ॥ ३९९ ॥ शुल्कस्थानं परिहरन्नकाले क्रयविक्रयी ॥ मिथ्यावादी च संख्याने दाप्योऽष्टगुणमत्ययम् ॥ ४०० ॥ आगमं निर्गमं स्थानं तथा वृद्धिक्षयावुभौ ॥ विचार्य सर्वपरायानां कारयेत्क्रयविक्रयौ ॥ ४०१ ॥ पंचरात्रे पंचरात्रे पक्षे पक्षेऽथवा गते ॥ कुर्वीत चैषां प्रत्यक्षमर्घसंस्थापनं नृपः ॥ ४०२ ॥ तुलामानं प्रतीमानं सर्वं च स्यात्सुलक्षितम् ॥ षट्सु षट्सु च मासेषु पुनरेव परीक्षयेत् ॥ ४०३ ॥

۳۹۸ - خراج سلطنت کو جاننے والے اور ہر چیز کو فروخت کرنے مین ہوشیار ایسا آدمی جس چیز کی جو قیمت مقرر کرے اُسمین جو نفع ہو اُسکے بیسوین حصہ کو راجہ لیوے۔

۳۹۹ راجہ کے لائق جو چیز ہے اور جس چیز کو دوسرے کے پاس فروخت کرنے کو راجہ نے منع کیا ہے اُن چیزون کو حرص سے دوسرے مقام پر فروخت کرے تو اُسکا تمام مال راجہ لیوے

۴۰۰ - جس مقام پر خراج کا محصول لیا جاتا ہے اُس مقام کو ترک کرنیوالا و بے وقت خرید و فروخت کرنیوالا و تول مین کم تولنے والا محصول سرکاری کا ہشت چند تاوان دیوے

۴۰۱ - سب چیزونکا آنا جانا و قیام و ردان کو دیکھکر خرید و فروخت کرنا چاہیے۔

۴۰۲ - بعد آخر ہونے پانچ پانچ دن یا ہفتہ ہفتہ کے سب چیزون کی قیمت قائم کرے۔

۴۰۳ - ماشہ و تولہ و سیر و پانچ سیری وغیرہ پسنگھ دورون وغیرہ کے باٹون کی کمی و بیشی کو راجہ دیکھے پھر چھٹھوین چھٹھوین مہینہ مین اُونکا امتحان کرے اور سب چیزون پر راج مُہر کا نشان کر دے

प्रातिवेश्यानुवेशौ च कल्याणे विंशतिद्विजे ॥ अर्हावभोजय-न्विप्रो दण्डमर्हति माषकम् ॥ ३९२ ॥ श्रोत्रियः श्रोत्रियं साधुं भूतकृत्येष्वभोजयन् ॥ तदन्नं द्विगुणं दाप्यो हिरण्यं चैव माषक-म् ॥ ३९३ ॥ अन्धो जडः पीठसर्पी सप्तत्या स्थविरश्च यः ॥ श्रोत्रि-येषूपकुर्वंश्च न दाप्याः केनचित्करम् ॥ ३९४ ॥ श्रोत्रियं व्याधि-तार्तौ च बालवृद्धावकिंचनम् ॥ महाकुलीनमार्यं च राजा संपूजये-त्सदा ॥ ३९५ ॥ शाल्मलीफलके श्लक्ष्णे नेनिज्यान्नेजकः शनैः ॥ न च वासांसि वासोभिर्निर्हरेन्न च वासयेत् ॥ ३९६ ॥ तन्तुवायो दशपलं दद्यादेकपलाधिकम् ॥ अतोऽन्यथा वर्तमानो दाप्यो द्वादशकं दमम् ॥ ३९७ ॥

۳۹۲- منگل شانت کرم میں برہمن کو ویشیہ بھوجن کراتا ہوا اور اپنے گھر کے روبرو رہنے والے اور اپنے گھر سے ایک گھر چھوڑ کر دوسرے گھر میں رہنے والے لیاقت برہمن کو بھوجن نکرادے تو ایک ماشہ چاندی ڈنڈ دیوے۔

۳۹۳- شادی وغیرہ خوشی کے کاموں میں وید پاٹھی اور اپنے گھر کے سامنے یا ایک گھر چھوڑ کر دوسرے گھر میں رہنے والا وید پاٹھی برہمن کو بھوجن نکرادے تو ایک ماشہ سونا اور بھوجن کا دوچند تاوان دیوے۔

۳۹۴- اندھا بہرا لنگڑا ستر برس کی عمر والا دھن دھانیہ سے وید پاٹھیوں کا اپکار کرنیوالا ان سبھوں سے راجہ باوجود خالی ہونے خزانے کے اپنے لینے کے لائق محصول کو نہ لیوے۔

۳۹۵- وید پاٹھی بیادھی دکھی بالک بڈھا نہایت نردھن عالی خاندانی شریف ان سبھوں کا پوجن ہر وقت راجہ کرے۔

۳۹۶- سیمر کے چکنے پاٹا پر آہستگی سے دھوبی کپڑے دھووے اور ایک کا کپڑا دوسرے کو نہ دیوے اور بہت دن تک اپنے گھر میں نہ رکھے۔

۳۹۷- کپڑا بننے والا کپڑا بنانے کے واسطے بمقدار وزن دس گنڈہ چمپا کے سوت لیوے تو بمقدار وزن گیارہ گنڈہ کے کپڑا دیوے اگر اس سے کم دیوے تو بمقدار بارہ پن ڈنڈ راجہ کو دیوے یا مالک سوت کو راضی کرے

यस्यस्तेनः पुरेनास्तिनान्यस्त्रीगोनदुष्टवाक् ॥ नसाहसिकद
ण्डघ्नौसराजाशक्रलोकभाक् ॥ ३८६ ॥ एतेषांनिग्रहोराज्ञः
पंचानांविषयेस्वके ॥ साम्राज्यकृत्सजात्येषुलोकेचैवयश-
स्करः ॥ ३८७ ॥ ऋत्विजंयस्त्यजेद्याज्योयाज्यंचर्त्विक्त्यजे-
द्यदि ॥ शक्तंकर्मण्यदुष्टंचतयोर्दण्डःशतंशतम् ॥ ३८८ ॥
नमातानपितानस्त्रीनपुत्रस्त्यागमर्हति ॥ त्यजन्नपतिता-
नेतान्राज्ञादण्ड्यःशतानिषट् ॥ ३८९ ॥ आश्रमेषुद्विजाती
नांकार्येविवदतांमिथः ॥ नविब्रूयान्नृपोधर्मंचिकीर्षन्हित
मात्मनः ॥ ३९० ॥ यथार्हमेतानभ्यर्च्यब्राह्मणैःसहपार्थिवः
॥ सांत्वेनप्रशमय्यादौस्वधर्मंप्रतिपादयेत् ॥ ३९१ ॥

۳۸۶ - چور اور دوسرے کی زوجہ سے جماع کرنیوالا اور کھوٹے بچن بولنے والا اور زبردستی سے کام کرنیوالا اور ڈنڈا وغیرہ سے مارنیوالا سب جسکی راج مین نہین ہین وہ راجہ اندرلوک کو پاتا ہی

۳۸۷ - اپنی راج مین ان پانچونکو سزا دینے والا راجہ راجاؤن مین منڈلیشور راجہ کا کام کرتا ہی اور اس دنیا مین نیکنامی پاتا ہے -

۳۸۸ - اپنے کام مین لائق اور کھوٹے پن سے علیحدہ رتوگ اور یجمان ان دونون مین سے ایک کو ایک ترک کرے تو ترک کرنیوالے کو سو پن ڈنڈ دینا چاہیے -

۳۸۹ - ماں و باپ و زوجہ و فرزند جو اپنے درن سے بھرشٹ ہوگئے ہون انہین سے کسی ایک کو ترک کرے تو وہ چھہ سو پن ڈنڈ کے لائق ہوتا ہے -

۳۹۰ - گرہستھ وغیرہ آشرم مین براہمن و کشتری و ویشیہ کے باہم بحث مطالب شاستر کی ہوتی ہو تو اپنا بھلا چاہنے والا راجہ ساہس کرکے ایسا نہ بولے کہ یہ مطلب شاستر کا ہی -

۳۹۱ - راجہ مع براہمنون کے بحث کرنیوالون کو حسب لیاقت آرام صورت کام سے پوجن کرکے اسکے غصہ کو دور کرکے اپنے دھرم کو بیان کرے -

नजातुब्राह्मणंहन्यात्सर्व्वपापेष्वपिस्थितम्॥ राष्ट्रादेनंबहि-
कुर्य्यात्समग्रधनमक्षतम्॥ ३८०॥ नब्राह्मणवधाद्भूयानध-
र्मोविद्यतेभुवि॥ तस्मादस्यवधंराजामनसापिनचिन्तयेत्॥
३८२॥ वैश्यश्चेत्क्षत्रियांगुप्तांवैश्यांवाक्षत्रियोव्रजेत्॥ यो-
ब्राह्मण्यामगुप्तायांतावुभौदण्डमर्हतः॥ ३८२॥ सहस्रंब्रा-
ह्मणोदण्डंदाप्योगुप्तेतुतेव्रजन्॥ शूद्रायांक्षत्रियविशोःसा-
हस्रोवैभवेद्दमः॥ ३८३॥ क्षत्रियायामगुप्तायांवैश्येपंचशतं
दमः॥ मूत्रेणमौण्ड्यमिच्छेत्तुक्षत्रियोदण्डमेववा॥ ३८४॥
अगुप्तेक्षत्रियावैश्ये शूद्रांवाब्राह्मणोव्रजन्॥ शतानिपंच-
दण्ड्यःस्यात्सहस्रंत्वन्त्यजस्त्रियम्॥ ३८५॥

۳۸۰ - تمام پاپوں کو برہمن نے کیا ہو تو بھی اسکو قتل نہ کرنا چاہئے بدون دیئے سزاے بدنی
کے مع سامان خانگی راج سے باہر نکالدینا چاہئے۔

۳۸۱ - دنیا مین برہمن کے قتل سے زیادہ کوئی دوسرا ادھرم نہین ہے اسلیئے راجہ دل مین بھی
برہمن کے قتل کا خیال نکرے۔

۳۸۲ - شوہر وغیرہ سے محفوظ ویشیہ کی زوجہ سے کشتری جماع کرے یا ویسی ہی کشترانی سے
ویشیہ جماع کرے تو شوہر وغیرہ سے غیر محفوظ برہمنی کے جماع مین جو سزا لکہی ہے وہی سزا دونون کو دینا۔

۳۸۳ - شوہر وغیرہ سے محفوظ کشتری یا ویشیہ کی زوجہ سے جماع کرنیوالے برہمن کو ہزار ڈنڈ
دینا چاہئے اور شوہر وغیرہ سے محفوظ شودر کی زوجہ سے جماع کرنیمین ویشیہ کو ہزار ڈنڈ دینا چاہیئے

۳۸۴ - شوہر وغیرہ سے غیر محفوظ کشتری کی زوجہ سے جماع کرنیمین ویشیہ کو پانسو ڈنڈ دینا چاہیئے
اور اسکے ساتھ جماع کرنیوالے کشتری کو گدھے کے پیشاب سے سر مونڈا دینا بھی سزا کافی ہے۔

۳۸۵ - شوہر وغیرہ سے غیر محفوظ کشتری یا ویشیہ یا شودر کی زوجہ سے جماع کرنیوالے برہمن کو پانسو
ڈنڈ دینا چاہیئے اور چانڈال وغیرہ کی زوجہ سے جماع کرنیمین برہمن کو ہزار ڈنڈ دینا چاہیئے۔

वैश्यः सर्वस्वदण्डः स्यात्संवत्सरनिरोधतः ॥ सहस्रं क्षत्त्रियो दण्ड्यो
मौण्ड्यं मूत्रेण चार्हति ॥ ३७५ ॥ ब्राह्मणीं यद्यगुप्तां तु गच्छेतां-
वैश्यपार्थिवौ ॥ वैश्यं पंचशतं कुर्य्यात्क्षत्त्रियन्तु सहस्रिणम् ॥
३७६ ॥ उभावपि तु तावेव ब्राह्मण्या गुप्तया सह ॥ विप्लुतौ शू-
द्रवद्दण्ड्यौ दग्धव्यौ वा कटाग्निना ॥ ३७७ ॥ सहस्रं ब्राह्मणो
दण्ड्यो गुप्तां विप्रां बलाद्व्रजन् ॥ शतानि पंच दण्ड्यः स्यादि-
च्छन्त्या सह संगतः ॥ ३७८ ॥ मौण्ड्यं प्राणान्तिको दण्डो-
ब्राह्मणस्य विधीयते ॥ इतरेषान्तु वर्णानां दण्डः प्राणान्ति
को भवेत् ॥ ३७९ ॥

٣٧٥- محفوظ براہمنی سے جماع کرنیمین ویشیہ کو ایک سال تک جیلخانہ مین قید رکھنا چاہیئے
اُسکے بعد سب مال کا چھین لینا یہ سزا اُسکو دینا چاہیئے اور اسی جرم مین کشتری کو ہزار پن ڈنڈ
دیوے اور گدھے کے پیشاب سے مونڈ مونڈوا دیوے-
٣٧٦- شوہر وغیرہ سے غیر محفوظ براہمنی سے جماع کرنیوالے کشتری و ویشیہ پانسو پن سلسلہ وار
وہزار پن ڈنڈ دیوے-
٣٧٧- شوہر وغیرہ سے محفوظ براہمنی سے جماع کرنیوالے کشتری و ویشیہ دونون شودر
کیطرح ڈنڈ کے لائق ہین یعنے سب اعضا سے معذور کرنا چاہیئے خواہ لال کش سے ڈھک کر
ویشیہ کو اور سپر تر یعنے سرہری سے ڈھککر کشتری کو جلانا چاہیئے یہ سزا براہمنی صاحب صفت
کی جماع مین جاننا چاہیئے-
٣٧٨- شوہر وغیرہ سے محفوظ براہمنی کے ساتھ زبردستی جماع کرنیوالے براہمن کو ہزار پن ڈنڈ
دینا چاہیئے اور اسی براہمنی کی خواہش سے جماع کرنیوالے براہمن کو پانسو پن ڈنڈ دینا چاہیئے
٣٧٩- سزائے قتل کے مقام مین براہمن کو مونڈ مونڈانا ہی سزا ہے اور دیگر قوم کو قتل
ہی کی سزا دینا چاہیئے-

यातुकन्यांप्रकुर्यात्स्त्रीसासद्योमौण्ड्यमर्हति॥ अंगुल्योरेव वाछेदंखरेणोद्वहनंतथा॥ ३७०॥ भर्त्तारंलंघयेद्यातुस्त्रीज्ञाति गुणदर्पिता॥ तांश्वभिःखादयेद्राजासंस्थानेबहुसंस्थिते ३७१ ॥पुमांसंदाहयेत्पापंशयनेतप्तआयसे॥ अभ्यादध्युश्चकाष्ठा नितत्रदह्येतपापकृत्॥ ३७२॥ संवत्सराभिशस्तस्यदुष्टस्यद्वि गुणोदमः॥ व्रात्ययासहसंवासेचाण्डाल्यातावदेवतु॥३७३ शूद्रोगुप्तमगुप्तंवाद्वैजातंवर्णमावसन्॥ अगुप्तमंगसर्वस्वैर्गु प्तंसर्वेणहीयते॥ ३७४॥

۳۷۰ - جو استری کنیا کی فرج مین انگلی ڈالکر باعیب کرے اوسکا مونڈ مونڈانا اور انگلیان کاٹنا اور گدھے پر چڑھا کر شہر میں گشت کرانا چاہئے [illegible] بعض سزا [illegible]

۳۷۱ - [illegible] ذات صفات کے غرور سے اپنے شوہر کو ترک کرنیوالی عورت کو راجہ بہت آدمیون کے روبرو کتّون سے بھوجن کرادے۔

۳۷۲ - دوسرے کی عورت مرقومہ بالا سے جماع کرنیوالے آدمی کو لوہے کے گرم پلنگ مین سولاکر چارو طرف لکڑی رکھکر آگ لگادے جس سے وہ پاپی جل جاے۔

۳۷۳ - دوسرے کی عورت رکھنا جسکا جنیو وغیرہ وقت محکومہ شاستر پر نہین ہوا اسکی عورت اور چانڈال کی عورت۔ انھون سے جماع کرکے نالائق آدمی بغیر پانے سزا کے ایک سال کے بعد پھر اسی عورت سے جماع کرے تو جو سزا لکھے گئے ہین اسکی دو چند سزا دیوے۔

۳۷۴ - براہمن کشتری ویشیہ کی عورت شوہر وغیرہ سے محفوظ ہو خواہ غیر محفوظ ہو اس سے جماع کرنیوالے شودر کا عضو تناسل قطع کرنا و تمام دولت چھین لینا و سزاے قتل دینا چاہئے مگر بحالت غیر محفوظ عورت سے جماع کرنے مین قطع عضو تناسل و تمام دولت کا چھین لینا صرف یہی سزا دینا چاہئے اور محفوظ عورت سے جماع کرنے مین دونون سزا ہاے مرقومہ بالا مع سزاے قتل دینا چاہئے

कन्यां भजन्तीमुत्कृष्टं न किंचिदपि दापयेत्॥ जघन्यं सेवमानां तु संयतां वासयेद्गृहे॥ ३६५॥ उत्तमां सेवमानस्तु जघन्यो वधमर्हति॥ शुल्कं दद्यात्सेवमानः समामिच्छेत्पिता यदि॥ ३६६॥ अभिषह्य तु यः कन्यां कुर्याद्दर्पेण मानवः॥ तस्याशु कर्त्ये अंगुल्यौ दण्डं चार्हति षट्शतम्॥ ३६७॥ सकामां दूषयंस्तुल्यो नांगुलिच्छेदमाप्नुयात्॥ द्विशतं तु दमं दाप्यः प्रसंगविनिवृत्तये॥ ३६८॥ कन्यैव कन्यां या कुर्यात्तस्याः स्याद्विशतो दमः॥ शुल्कं च द्विगुणं दद्याच्छिफाश्चैवाप्नुयाद्दश॥ ३६९॥

۳۶۵ - اپنی ذات سے اونچی ذات کو چاہنے والی کنیا تھوڑا بھی ڈنڈ نہیں پا سکتی اور اپنی ذات سے نیچ ذات کو چاہنے والی کنیا کو گھر میں باندھکر رکھنا چاہیے۔

۳۶۶ - جو اونچی ذات کی کنیا خواہش کرنیوالی یا نکرنیوالی ہے اس سے رذیل آدمی جماع وغیرہ کرنیوالا تفاوت ذات کی سبب سے قطع اعضا و قتل کے لائق ہوتا ہے اور خواہش کرنیوالی ہمقوم کنیا کو کچھہ دیکر اس سے جماع وغیرہ کرنیوالا سزا کے لائق نہیں ہوتا اور اگر اس کنیا کا باپ راضی ہو تو اوسکو کچھہ معاوضہ دیکر شادی کرلے۔

۳۶۷ - جو آدمی زبردستی اور مغروری سے اپنی ذات کی کنیا کی فرج میں جو کہ ناقابل جماع ہے انگلی ڈالکر با عیب کرتا ہے اوسکی دو انگلی کاٹنا چاہیے اور چھہ سو پن ڈنڈ لینا چاہیے

۳۶۸ - اور اگر خواہش کرنیوالی ہمقوم کنیا کو بطریق مرقومہ بالا باعیب کرے تو قطع انگشتان کی سزا دینا چاہیے لیکن کچھہ سزا دینے کے واسطے دو سو پن ڈنڈ لینا چاہیے۔

۳۶۹ - جو کنیا دوسری کنیا کی فرج میں انگلی ڈالکر باعیب کرے اسکو دو سو پن ڈنڈ دینا چاہیے اور انگلی ڈالنے والی کنیا کا باپ دو چند معاوضہ (شلک) دیوے

भिक्षुकाबन्दिनश्चैवदीक्षिताःकारवस्तथा।।संभाषणांसहस्त्री
भिःकुर्युरप्रतिवारिताः।। ३६०।। नसंभाषांपरस्त्रीभिःप्रतिषि
द्धःसमाचरेत।। निषिद्धोभाषमाणस्तुसुवर्णंदण्डमर्हति।।
३६१।। नैषचारणदारेषुविधिर्नात्मोपजीविषु।। सज्जयन्ति
हितेनारीर्निगूढाश्चारयन्तिच।। ३६२।। किंचिदेवतुदाप्यःस्या
त्संभाषांताभिराचरन्।। प्रैष्यासुचैकभक्तासुरहःप्रव्रजिता
सुच।। ३६३ ।। योऽकामांदूषयेत्कन्यांससद्योवधमर्हति।।
सकामांदूषयंस्तुल्योनवधंप्राप्नुयान्नरः।। ३६४।।

۳۶۰ - بھکھاری و بھاٹ و دیکشت (یعنی جسنے یگیہ کیواسطے دیکشا لی ہو) - اور سوئین بنانیوالا یہ سب بھیکھ وغیرہ اپنے کام کیواسطے عورتوں سے باتیں کریں - تو انکو منع نکرنا چاہیے -

۳۶۱ - ایک بار منع کیا کہ تم اس عورت سے نہ بولنا اور پھر وہ آدمی اسی عورت سے باتیں کرے تو ایک سورن (یعنے سولہ ماشہ) سونا ڈنڈ دیوے -

۳۶۲ - نٹ اور گانے بجانیوالے کی عورت اور جو شخص عورت کے قسبہ سے اپنی اوقات بسر کرتے ہیں انکی عورتوں کے واسطے آئین مندرجہ بالا نہیں ہے کیونکہ وہ لوگ تو خود اپنی عورتوں کو پوشیدہ سب جگہ بھیجتے ہیں

۳۶۳ - لیکن تاہم وہ دوسرے کی عورتیں ہیں اسواسطے انکے ساتھ بات کرنے سے بات کرنیوالا تھوڑا سا ڈنڈ پاوے ہی اور ایک گھر میں جس عورت کو روک رکھا ہے وہ - اور سنیاسی کی عورت انکون کے ساتھ بات کرنیوالا تھوڑا ڈنڈ پاوے -

۳۶۴ - جو ہمقوم دختر خواہش نہیں کرتی اور مرد اس سے جماع کرتا ہے اسکو قطع عضو تناسل کی سزا اسی وقت دینا چاہیے لیکن برہمن کو یہ سزا نہ دینا چاہیے کیونکہ اسکو سزا سے بدلی دینے کی ممانعت ہے اور جو شخص خواہش کرنیوالی دختر ہمقوم سے جماع کرے وہ سزائے قطع اعضا نہ پاوے

परस्यपत्न्यापुरुषःसंभाषांयोजयन्रहः॥पूर्वमाक्षारितोदो-
षैःप्राप्नुयात्पूर्वसाहसम्॥ ३५४॥यस्त्वनाक्षारितःपूर्वमभि
भाषेतकारणात्॥नदोषंप्राप्नुयात्किंचिन्नहितस्यव्यतिक्र
मः॥ ३५५॥परस्त्रियंयोऽभिवदेत्तीर्थेऽरण्येवनेऽपिवा॥न-
दीनांवापिसंभेदेससंग्रहणमाप्नुयात्॥ ३५६॥उपचारक्रि-
याकेलिःस्पर्शोभूषणवाससाम्॥सहखट्वासनंचैवसर्वंसं-
ग्रहणंस्मृतम्॥ ३५७॥स्त्रियंस्पृशेददेशेयःस्पृष्टोवामर्षयेत्त-
या॥परस्परस्यानुमतेसर्वंसंग्रहणंस्मृतम्॥ ३५८॥अब्रा-
ह्मणःसंग्रहणेप्राणान्तंदण्डमर्हति॥चतुर्णामपिवर्णानां
दारारक्ष्यतमाःसदा॥ ३५९॥

۳۵۴ - دوسرکی عورت سے جو شخص خلوت مین باتین کرتاہے اور پہلے سے اسکا
عیب جاناگیاہے اسکو پورب ساہس دنڈ دینا چاہیے-
۳۵۵ - جسکا عیب پہلے سے جانا نہین گیاہے اور کسی باعث سے خلوت مین دوسر
کی عورت سے باتین کرتاہے تو اسکو دنڈ نہ دینا چاہیے-
۳۵۶ - پانیمین جانیکا رستہ اور گھاس پھوس سے شامل اور آدمیون سے علیحدہ مکان جو گانوکی باہر
ہو اور جنگل اور ندی کا سنگم ان مقامات مین دوسری عورت سے باتین کرے تو سنگرہن نام پاپ کو پاتاہے
۳۵۷ - مالا پہننا عطر لگانا اور کپڑا اور زیور بھیجنا و ٹھٹھا و بغلگیری وغیرہ کرنا ایک چارپائی پر
بیٹھنا یہ سب سنگرہن کہلاتاہے اسبات کو من وغیرہ رشیون نے کہاہے-
۳۵۸ - جس مرد نے عورت کی ران وغیرہ کو چھوا خواہ عورت نے مرد کے فوطہ وغیرہ کو پکڑا اور مرد
عصہ نہ کیا تو باہمی محبت سے یہ سنگرہن کہلاتاہے من وغیرہ رشیون نے کہاہے-
۳۵۹ - سوا برہمنون کے اور ذات والون کو سنگرہن کی عوض مین قتل کی سزا دینا چاہیے
کیونکہ چارو ورن کی استری نہایت حفاظت کے لائق ہین-

आत्मनश्चपरित्राणेदक्षिणानांचसंगरे॥ स्त्रीविप्राभ्युपपत्तौचघ्नन्धर्मेणानदुष्यति॥ ३४९॥ गुरुंवाबालवृद्धौवाब्राह्मणांवाबहुश्रुतम्॥ आततायिनमायान्तंहन्यादेवाविचारयन्॥ ३५०॥ नाततायिवधेदोषोहन्तुर्भवतिकश्चन॥ प्रकाशंवाऽप्रकाशंवामन्युस्तंमन्युमृच्छति॥ ३५१॥ परदाराभिमर्शेषुप्रवृत्तान्नॄन्महीपतिः॥ उद्वेजनकरैर्दण्डैश्छिन्नयित्वाप्रवासयेत्॥ ३५२॥ तत्समुत्थोहिलोकस्यजायतेवर्णसंकरः॥ येनमूलहरोऽधर्मःसर्वनाशायकल्पते॥ ३५३॥

۳۴۹- آتما اور یگیہ کے سامان اور استری اور برہمن انکی حفاظت کرنے میں اور میدان جنگ میں دھرم سے مارنیوالے کو دوش نہیں ہوتا۔

۳۵۰- گرو و بالک و بوڑھا و بہت پڑھا ہوا برہمن یہ سب آتتائی ہوکر آدین تو انکو مارنا چاہئے - کچھ بچار نکرنا چاہئے۔

۳۵۱- آتتائی کے قتل میں مارنیوالے کو پاپ نہیں ہوتا جو شخص ظاہر یا پوشیدہ مارنیوالے کے کرودھ سے مارے گئے اسکے ظاہر و پوشیدہ کرودھ کو سلسلہ وار پاتا ہے۔

۳۵۲ جو آدمی دوسرے کی عورت سے بدفعلی کرنیوالے ہیں انکو ہیبت کرنیوالے ڈنڈ کے وسیلے سے بدن پریشان کرکے ملک سے باہر نکالدے

۳۵۳- زمانہ میں عورتوں کی بدفعلی سے ورن سنکر پیدا ہوتے ہیں اور اس ورن سنکر سے جڑ اکھاڑنیوالا ادھرم پیدا ہوتا ہے جس سے جگت کی ناش ہوتی ہے -

* آگ لگانا و زہر دینا و کسی دولت و کھیت و عورت کو چھین لینا ان چھ امور کا کرنیوالا آتتائی کہلاتا ہے -

अनेनविधिनाराजाकुर्वाणः स्तेननिग्रहम् ॥ यशोस्मिन्प्राप्नु-याल्लोकेप्रेत्यचानुत्तमंसुखम् ॥ ३४३ ॥ ऐन्द्रंस्थानमभिप्रेप्सुर्य-शश्चाक्षयमव्ययम् ॥ नोपेक्षेतक्षणमपिराजासाहसिकंनरम् ॥ ३४४ ॥ वाग्दुष्टात्तस्कराच्चैवदण्डेनैवचहिंसतः ॥ साहसस्यन-रः कर्ता विज्ञेयःपापकृत्तमः ॥ ३४५ ॥ साहसेवर्त्तमानन्तुयोम-र्षयतिपार्थिवः ॥ सविनाशंव्रजत्याशुविद्वेषंचाधिगच्छति ॥ ३४६ ॥ नमित्रकारणाद्राजाविपुलाद्वाधनागमात् ॥ समुत्सृ-जेत्साहसिकान्सर्वभूतभयावहान् ॥ ३४७ ॥ शस्त्रंद्विजातिभि-र्ग्राह्यंधर्मोयत्रोपरुध्यते ॥ द्विजातीनांचवर्णानांविप्लवेकाल-कारिते ॥ ३३८ ॥

۳۴۳ - اس طریق سے چورون کا ڈنڈ دینے والا راجہ اس لوک مین یس اور پرلوک مین اتم سکھ کو پاوے -

۳۴۴ - جو راجہ اندر کی پدوی پانے کی خواہش کرنیوالا اور نہ زوال نیکنامی کا چاہنے والا ہے وہ زبردستی بھی زبردستی سے کام کرنیوالے آدمی کی دلداری نکرے -

۳۴۵ - گالی دینے والا اور چور ڈنڈ سے مارنیوالا ان سبھون سے ساہس کرنیوالا پاپی ہے

۳۴۶ - جو راجہ زبردستی سے کام کرنیوالے آدمی کے جرم کا تحمل کرتا ہے وہ جلد عداوت و فنا کو پاتا ہے -

۳۴۷ - تمام جاندارون کو خوف دینے والے اور زبردستی سے کام کرنیوالے آدمی کو راجہ دوستی سے یا بہت دولت پانے سے رہا نہ کرے -

۳۴۸ - دھرم مٹانے کی حالت مین زمانہ کی تحریک سے براہمن کشتری ویشیہ تینون ورن ہتھیارون کو دھارن کرین -

अष्टापाद्यन्तुशूद्रस्यस्तेयेभवतिकिल्बिषम्॥ षोडशैवतुवैश्यस्यद्वात्रिंशत्क्षत्रियस्यच॥३३७॥ ब्राह्मणस्यचतुःषष्टीःपूर्णं-वापिशतम्भवेत्॥ द्विगुणावाचतुःषष्टिस्तद्दोषगुणविद्धिसः॥३३८॥ वानस्पत्यंमूलफलंदार्वग्न्यर्थंतथैवच॥ तृणांचगो-भ्योग्रासार्थमस्तेयंमनुरब्रवीत्॥३३९॥ योऽदत्तादायिनोह-स्ताल्लिप्सेतब्राह्मणोधनम्॥ याजनाध्यापनेनापियथास्ते-नस्तथैवसः॥३४०॥ द्विजोध्वगःक्षीणवृत्तिर्द्वाविक्षूद्वेचमूल-के॥ आददानःपरक्षेत्रान्नदण्डंदातुमर्हति॥३४१॥ असंधि-तानांसन्धातासन्धितानांचमोक्षकः॥ दासाश्वरथहर्ताच-प्राप्तःस्याच्चौरकिल्बिषम्॥३४२॥

۳۳۷ ۔ جو شودر ویشیہ کشتری و براہمن چیزوں کے گن اور دوش کو نہیں جانتے اونکا چوری میں جو ڈنڈ کہا ہے اُسکا آٹھ گنا سولہ گنا بتیس گنا۔

۳۳۸ ۔ چونسٹھ گنا یا سو گنا یا ایک سو اٹھائیس گنا ڈنڈ بسلسلہ وار شودر ویشیہ کشتری براہمن پاویں درحالیکہ چیزوں کے گن و دوش کو جانتے ہوں۔

۳۳۹ ۔ جو درخت وغیرہ محافظ کی حفاظت میں نہیں ہے اُس درخت کا مول پھل و پھول اور ہوم کیواسطے لکڑی اور گئو کے کھانیکے واسطے گھاس وغیرہ اِن سب کو لیوے تو اُسکو سزا نہ دینا کیونکہ وہ چوری نہیں ہے منُ جی نے کہا ہے۔

۳۴۰ ۔ جو براہمن چور کو پڑھاکر اور یگیہ کرا کر اُسکے ہاتھ سے دولت لینے کی خواہش کرتا ہے وہ براہمن بھی مثل چور کے ہے

۳۴۱ ۔ براہمن کشتری و ویشیہ سب راستہ میں چلے جاتے ہوں اور کھانیکو کچھ پاس نہو تو دوسرے کے کھیت سے دو گنا یعنی اوکھ اور دو مولی لے لیویں تو ڈنڈ کے لائق نہیں ہیں۔

۳۴۲ ۔ دوسرے کا گھوڑا جو بندھا ہو اُسکو کھولدینے والا اور طویلہ میں بندھے ہوئے گھوڑے وغیرہ کو چھوڑنیوالا اور غلام اور گھوڑا اور رتھ انکو لیجانیوالا چور کے پاپ کو پاتا ہے۔

परिपूतेषुधान्येषुशाकमूलफलेषुच॥ निरन्वयेशतंदण्डः सान्वयेऽर्द्धशतंदमः॥ ३३१॥ स्यात्साहसंत्वन्वयवत्प्रसभंकर्मयत्कृतम्॥ निरन्वयंभवेत्स्तेयंहृत्वापव्ययतेचयत्॥ ३३२॥ यस्त्वेतान्युपक्लृप्तानिद्रव्याणिस्तेनयेन्नरः॥ तमाद्यंदण्डयेद्राजायश्चाग्निंचोरयेद्गृहात्॥ ३३३॥ येनयेनयथाङ्गेनस्तेनोनृषुविचेष्टते॥ तत्तदेवहरेत्तस्यप्रत्यादेशायपार्थिवः॥ ३३४॥ पिताचार्यःसुहृन्माताभार्यापुत्रःपुरोहितः॥ नादण्ड्योनामराज्ञोऽस्तियःस्वधर्मेनतिष्ठति॥ ३३५॥ कार्षापणंभवेद्दण्ड्योयत्रान्यःप्राकृतोजनः॥ तत्रराजाभवेद्दण्ड्यःसहस्रमितिधारणा॥ ३३६॥

۳۳۱ - صاف و مصفا دھان و ساگ مول و پھل انھوں میں سے کسی ایک چیز کے چرانے میں چرانیوالا اگر مالک کا رشتہ دار ہو یعنے ہم وطنی وغیرہ رشتہ رکھتا ہو تو پچاس پن ڈنڈ اور اگر رشتہ اور نسبت نہ رکھتا ہو تو سو پن ڈنڈ دیوے۔

۳۳۲ - مالک کے دیکھتے ہوئے زبردستی سے چیز کو لیجا دے اور وقت استفسار کے لینے سے انکار کرے تو وہ بھی چور کہلاتا ہے۔

۳۳۳ - جو آدمی دوسرے کی چیز کو چرا دیا اگن ہوتر کے مقام سے اگن ہوتر کی اگن کو اور گھر کی آگ کو چرا دے وہ پرتھم ساہس ڈنڈ پاوے اور اگن استھاپن میں جو کچھ خرچ ہو وہ اگن مالک اگن کو دیوے۔

۳۳۴ - جس جس عضو سے دوسرے کی چیز کو چرا دے اس اس عضو کو قطع کرنا چاہئے تاکہ پھر ایسا کام نہ کرے۔

۳۳۵ - راجہ کے نزدیک کوئی آدمی ایسا نہیں کہ وہ بحالت جرم قابل سزا نہ ہو بلکہ ماں و باپ و آچارج و دوست و زوجہ و فرزند و پروہت سب کے سب دھرم میں قائم نہ ہوں تو لائق سزا دینے کے ہیں۔

۳۳۶ - جس جرم میں سوا راجہ کے اور آدمی کارشاپن ڈنڈ کے لائق ٹھہرتے ہیں اس جرم میں راجہ ہزار پن ڈنڈ کے لائق ہوتا ہے۔

गोषुब्राह्मणसंस्थासुछुरिकायाश्चभेदने ॥ पशूनांहरणेचैव
सद्यःकार्य्योऽर्धपादिकः ॥ ३२५ ॥ सूत्रकार्प्पासकिण्वा-
नांगोमयस्यगुडस्यच ॥ दध्नःक्षीरस्यतक्रस्यपानीयस्यतृ-
णस्यच ॥ ३२६ ॥ वेणुवैदलभाण्डानांलवणानांतथैवच ॥
मृन्मयानांचहरणेमृदोभस्मनएवच ॥ ३२७ ॥ मत्स्यानांपक्षि-
णांचैवतैलस्यचघृतस्यच ॥ मांसस्यमधुनश्चैवयच्चान्यत्पशु-
सम्भवम् ॥ ३२८ ॥ अन्येषांचैवमादीनामद्यानामोदनस्यच
॥ पक्वान्नानांचसर्व्वेषांतन्मूल्याद्द्विगुणोदमः ॥ ३२९ ॥ पुष्पे-
षुहरितेधान्येगुल्मवल्लीनगेषुच ॥ अन्येष्वपरिपूतेषुदण्डः
स्यात्पंचकृष्णलः ॥ ३३० ॥

۳۲۵ براہمن کی گئو چھین لینے اور سواری کے واسطے بانجھ گئو کی ناک چھید دینے اور بکرا وبھیڑا وغیرہ یگیہ کے لائق چارپایوں کے چرانے میں آدھا پانون فورًا کاٹنا چاہیئے

۳۲۶- اور تانا سوت اور کپاس کا سوت اور مھوا اور گوبر اور گڑ اور دہی اور دودھ اور چھاچھ اور جل اور ترن یعنی گھاس وغیرہ۔

۳۲۷- اور بانس کے ٹکڑے کا بنا ہوا پانی کا برتن اور مٹی کا برتن و مٹی و راکھ و نمک۔

۳۲۸- و مچھلی و پرند و تیل و گھی و گوشت و شراب و اقسام مرگ چرم و شاخ گوزن وغیرہ۔

۳۲۹- اسی قسم کی اور جو چیزیں ہیں دال و بھات و لڈو وغیرہ پکوان انہیں سے کسی ایک چیز کے چرانے میں اسکی قیمت سے دو چند تاوان دیوے۔

۳۳۰- پھولے ہوئے کھیت میں قائم سبزہ و دھانیہ اور مع پوست گلم لتا درخت اور ایک آدمی کے لیجانیکے لائق دھانیہ انہیں سے کسی چیز کے چرانے میں ملک وقت کو دیکھکر ایک ماشہ سونا یا چاندی تاوان دیوے۔

धान्यंदशभ्यःकुम्भेभ्योहरतोऽभ्यधिकंवधः॥ शेषेऽप्येकादशगु-
णंदाप्यस्तस्यचतद्धनम्॥ ३२०॥ तथाधरिममेयानांशतादभ्य-
धिकेवधः॥ सुवर्णरजतादीनामुत्तमानांचवाससाम्॥ ३२१
॥ पंचाशतस्त्वभ्यधिकेहस्तच्छेदनमिष्यते॥ शेषेत्वेकादश
गुणंमूल्याद्दण्डंप्रकल्पयेत्॥ ३२२॥ पुरुषाणांकुलीनानां
नारीणांचविशेषतः॥ मुख्यानांचैवरत्नानांहरणेवधमर्ह-
ति॥ ३२३॥ महापशूनांहरणेशस्त्राणामौषधस्यच॥ का-
लमासाद्यकार्यंचदण्डंराजाप्रकल्पयेत्॥ ३२४॥

۳۲۰ - دس کنبھ* سے زیادہ غلہ چراوے تو اسکو سزا بدنی دینا مگر چور و مالک مال کی حیثیت
دیکھکر تنبیہ و قطع اعضا و قتل کی سزا اون کو دینا چاہیے اگر اس مقدار سے کم چراوے تو مال مسروقہ
کا گیارہ گنا تاوان دینا چاہیے اور شئے مسروقہ کو مالک پاوے۔

۳۲۱ - سونا چاندی و کپڑا ان سبھوں کو سو گنڈے سے اوپر چرانیوالے کو قتل کرنا چاہیے
سزا کا حکم اخیر ملک و زمانہ و چور و مالک کی قومیت و حیثیت دیکھکر دینا چاہیے اسیطرح اشلوک آئندہ
مین بھی جاننا۔

۳۲۲ - اگر اشیاء مرقومہ بالا پچاس گنڈے سے اوپر اور سو گنڈے کے اندر ہو تو اسکے چرانے
مین ہاتھ کاٹنا اور پچاس گنڈے کے نیچے جتنا ہو اسکا گیارہ گنا تاوان دیوے۔

۳۲۳ - خاندانی آدمی یا بڑے خاندان کی عورت یا عمدہ جواہراتون مین سے کسی ایک
چیز کے چرانے یا غائب کر دینے مین قتل کرنا۔

۳۲۴ - ہاتھی گھوڑا بھینس گئو ہتھیار او دیہ ان سبھون مین سے کسی ایک کے چرانے مین قحط
وغیرہ زمانہ و مطلب کو دیکھکر تنبیہ و قطع اعضا و قتل کی سزا راجہ دیوے۔

* ۲۰۰ گنڈے پیسے کے وزن کو درون کہتے ہین اور ۲۰ درون کا ایک کنبھ کہلاتا ہے۔

राजा स्तेनेन गन्तव्यो मुक्तकेशेन धावता ॥ आचक्षाणेन त-
त्स्तेयमेवंकर्मास्मि शाधि माम् ॥ ३१४ ॥ स्कन्धेनादाय मुसलं-
लगुडं वापि खादिरम् ॥ शक्तिं चोभयतस्तीक्ष्णामायसं दण्डमे-
व वा ॥ ३१५ ॥ शासनाद्वा विमोक्षाद्वा स्तेनः स्तेयाद्विमुच्यते ॥
अशासित्वा तु तं राजा स्तेनस्याप्नोति किल्बिषम् ॥ ३१६ ॥ अन्ना-
दे भ्रूणहा मार्ष्टि पत्यौ भार्यापचारिणी ॥ गुरौ शिष्यश्च याज्यश्च
स्तेनो राजनि किल्बिषम् ॥ ३१७ ॥ राजनिर्धृतदण्डास्तु कृत्वा-
पापानि मानवाः ॥ निर्मलाः स्वर्गमायान्ति सन्तः सुकृतिनो-
यथा ॥ ३१८ ॥ यस्तु रज्जुं घटं कूपाद्धरेद्भिन्द्याच्च यः प्रपाम् ॥ स द-
ण्डं प्राप्नुयान्माषं तच्च तस्मिन्समाहरेत् ॥ ३१९ ॥

۳۱۴ - براہمن کا دھن یا شہ سونا وغیرہ چرانے والا آپنے چوٹی کو کھولکر دوڑکر راجہ کے
روبرو جاکر -
۳۱۵ - موسل یا کھیر کی لاٹھی یا دونوں طرف سے تیز برچھی یا لوہے کا ڈنڈا کندھے پر رکھکر
کہے کہ ایسا کام کرنیوالا میں ہون مجھکو سزا دیجیے -
۳۱۶ - راجہ اسکو سزا دے یا چھوڑ دے تو وہ مجرم چوری کے پاپ سے چھوٹ جاتا اور اگر راجہ
اسکو رحم سے سزا نہ دیوے تو چور کے پاپ کو پاوے -
۳۱۷ - اسقاط حمل کرنیوالا وقت عورت و چیلا دیگیہ کرنیوالا وچور یہ سب اپنا پاپ کو سلسلہ وار
بھوجن دینے والے وشوہر وگرو وراجہ انھون مین دھو دیتے ہین -
۳۱۸ - جسطرح نیکی کرنیوالے سورگ مین جاتے ہین اسیطرح پاپ کرنیوالے راجہ سے سزا پاکر پاک و صاف ہوکر سورگ مین جاتے ہین
۳۱۹ - کنوئیں سے رسی اور گھڑا چرانیوالا و پوسالہ کو گرانیوالا ایک ماشہ سونا تاوان دیوے
اور گھڑے اور رسی کو کنوئیں پر رکھدیوے -

अरक्षितारंराजानंबलिषड्भागहारिणम्॥ तमाहुःसर्वलोक
स्यसमग्रमलहारकम्॥ ३०८॥ अनपेक्षितमर्य्यादंनास्तिकं
विप्रलुम्पकम्॥ अरक्षितारमत्तारंनृपंविद्यादधोगतिम् ३०९
॥ अधार्म्मिकंत्रिभिर्न्यायैर्निगृह्णीयात्प्रयत्नतः॥ निरोधनेन
बन्धेनविविधेनबधेनच॥ ३१०॥ निग्रहेणहिपापानांसाधू-
नांसंग्रहेणाच॥ द्विजातयइवेज्याभिःपूयन्तेसततंनृपाः ॥
३११॥ क्षन्तव्यंप्रभुणानित्यंक्षिपतांकार्य्यिणांनृणाम् ॥ बा-
लवृद्धातुराणांचकुर्वताहितमात्मनः॥ ३१२॥ यःक्षिप्तोम-
र्षयत्यार्त्तैस्तेनस्वर्गेमहीयते॥ यस्त्वैश्वर्य्यान्नक्षमतेनरकंते
नगच्छति॥३१३॥

۳۰۸- جو راجہ رعیت کی حفاظت نہیں کرتا اور رعیت سے اپنا حصہ یعنے محصول لیتا ہے۔ وہ تمام آلایش وآخور کو لیتا ہے۔

۳۰۹- مرجاد کو چھوڑنے والا اور ناستک (یعنے پرلوک کو نہ ماننے والا) اور کوٹنے والا اور رعیت کی حفاظت نکرکے اپنا محصول لینے والا جو راجہ ہے وہ نرک میں جاتا ہے۔

۳۱۰- روکنا اور باندھنا اور انواع اقسام کی سزا سے بدلی دینا ان تینوں سزاؤں سے بوسیلہ تدبیر نیک مجرموں کو سزا دیوے۔

۳۱۱- مجرموں کو سزا دینے اور سادھو مہاتماؤں کی حفاظت اور نگہ کرنے سے راجا مثل براہمن وکشتری و ویشیہ کے پاک ہوتا ہے۔

۳۱۲- اپنا بھلا چاہنے والا آدمی مدعی و مدعا علیہ اور بالک اور بوڑھے اور دکھی آدمیوں کی باتوں کی برداشت کرے جو کہ رنج کی حالت میں کہتے ہوں۔

۳۱۳- مصیبت زدہ کی نالائق باتوں کو سنکر جو برداشت کرتا ہے وہ سورگ میں عزت پاتا ہے اور جو حکومت کی خیال سے برداشت نہیں کرتا وہ نرک میں جاتا ہے۔

परसंयत्नमातिष्ठेत्स्तेनानां निग्रहेन्नृपः॥ स्तेनानां निग्रहादस्य यशोराष्ट्रंचवर्द्धते॥ ३०२॥ अभयस्यहियोदातासपूज्यःसततं नृपः॥ सत्रंहिवर्द्धतेतस्यसदैवाभयदक्षिणाम्॥ ३०३॥ सर्वतो धर्म्मषड्भागोराज्ञोभवतिरक्षतः॥ अधर्म्मादपिषड्भागोभवत्यस्यह्यरक्षतः॥ ३०४॥ यदधीतेयद्यजतेयद्ददातियदर्चति॥ तस्यषड्भागभाग्राजासम्यग्भवतिरक्षणात्॥ ३०५॥ रक्षन्धर्मेणभूतानिराजावध्यांश्चघातयन्॥ यजतेऽहरहर्यज्ञैः सहस्रशतदक्षिणैः॥ ३०६॥ योऽरक्षन्बलिमादत्तेकरंशुल्कंचपार्थिवः॥ प्रतिभागंचदण्डंचससद्योनरकंव्रजेत्॥ ३०७

۳۰۲- چورون کو سزا دینے مین بڑی تدبیر کرے اُس سے راجہ کا یش (نیکنامی) اور راج ترقی پاتا ہے-

۳۰۳- رعیت کو بیخوف کرنیوالا راجہ ہر ایک وقت پرلائق تعظیم ہوتا ہے اور ہمیشہ اُس راجہ کی بیخوف دکشنا والی یگیہ بڑھتی ہے-

۳۰۴- چارو طرف سے رعیت کی حفاظت کرنے سے رعیت کے دھرم کا چھٹوان حصّہ راجہ پاتا ہے اور حفاظت نکرنے سے اُسکے ادھرم کا چھٹوان حصّہ پاتا ہی-

۳۰۵- رعیت کی حفاظت کرنیسے رعیت کے کئے ہوئے پاٹھ دیگیہ دان دپوجا کے چھٹوین حصّہ کو راجہ پاتا ہے-

۳۰۶- دھرم سے سب جاندارون کی حفاظت کرتا ہوا اور قطع اعضا خواہ قتل کے لائق مجرمون کو سزا دیتا ہوا راجہ لاکھ دکشنا والی یگیہ کو ہر روز کرتا ہی-

۳۰۷- جو راجہ بدون حفاظت کرنے رعیت کے رعایا سے محصولات وغیرہ لیتا ہی وہ راجہ جلد نرک مین جاتا ہے

मनुष्यमारणोक्षिप्रंचौरवत्किल्बिषंभवेत्॥प्राणाभृत्सुमहत्स्वर्द्धंगोगजोष्ट्रहयादिषु॥२९६॥क्षुद्रकाणांपशूनान्तु हिंसायांद्विशतोदमः॥पंचाशत्तुभवेद्दण्डःशुभेषुमृगपक्षिषु॥२९७॥गर्दभाजाविकानान्तुदण्डःस्यात्पंचमाषिकः॥माषकस्तुभवेद्दण्डःश्वसूकरनिपातने॥२९८॥भार्य्यापुत्रश्चदासश्चप्रेष्योभ्राताचसोदरः॥प्राप्तापराधास्ताड्याःस्युरज्ज्वावेणुदलेनवा॥२९९॥पृष्ठतस्तुशरीरस्यनोत्तमांगेकथंचन॥अतोन्यथातुप्रहरन्प्राप्तःस्याच्चौरकिल्बिषम्॥३००॥एषोऽखिलेनाभिहितोदण्डपारुष्यनिर्णयः॥स्तेनस्यातःप्रवक्ष्यामिविधिंदण्डविनिर्णये॥३०१॥

۲۹۶ - آدمی کے مارنے مین جلد چور کی طرح مجرم ہوتا ہے اتم ساہس ڈنڈ کے لایق ہوتا ہے اور گئو و ہاتھی و گھوڑا و اونٹ وغیرہ جو بڑے جانور ہین انھون کے مارنے مین مدھیم ساہس ڈنڈ دیوے۔

۲۹۷ - چھوٹے چارپایہ کے مارنے مین دوسو پن یعنے ڈنڈ دیوے اور جو پرند وہرن اچھے ہین انھون کے مارنے مین پچاس پن ڈنڈ دیوے۔

۲۹۸ - گدہا بکری بھیڑا انھون کے مارنے مین ایک ماشہ چاندی ڈنڈ دیوے۔

۲۹۹ - استری و بیٹا و غلام و شاگرد و برادر حقیقی انھون سے جرم سرزد ہو تو رسی اور بانس کی چھڑی سے انکو سزا دینا چاہیے۔

۳۰۰ - پیشانی چھوڑکر پشت مین مارنا چاہیے اسکے خلاف تنبیہ کرے تو چور کے پاپ کو پاوے یعنے تنبیہ و جرمانہ کے لایق ہووے۔

۳۰۱ - یہ سب مارپیٹ کے جرمون کی تنقیح کو بیان کیا اسکے بعد چور کی سزا دہی کے طریق کو بیان کرینگے۔

छिन्नेचैवयंत्राणांयोक्त्ररश्म्योस्तथैवच ॥ आक्रन्देचाप्यपै-
हीतिनदण्डंमनुरब्रवीत् ॥ २९२ ॥ यत्रापवर्त्ततेयुग्यंवैगुण्या
त्प्राजकस्यतु ॥ तत्रस्वामिभवेद्दण्ड्योहिंसायांद्विशतंदम-
म् ॥ २९३ ॥ प्राजकश्चेद्भवेदाप्तःप्राजकोदण्डमर्हति ॥ यु-
ग्यस्थाःप्राजकेऽनाप्तेसर्वेदण्ड्याःशतंशतम् ॥ २९४ ॥ स-
चेत्तुपथिसंरुद्धःपशुभिर्वारथेनवा ॥ प्रमापयेत्प्राणभृत-
स्तत्रदण्डोऽविचारितः ॥ २९५ ॥

۲۹۲- بانڈھنے کا چمڑا چارپایہ کے گلے کی رسّی کوڑا یہ سب ٹوٹ گئے ہوں اور آواز بلند سے سارتھی (یعنے رتھ ہانکنے والا) نے پکارا ہو کہ ہٹ جاؤ تو رتھی و سارتھی و مالک رتھ انہیں سے کسیکو ڈنڈ نہ دینا چاہئے۔

۲۹۳- جس مقام پر رتھ سارتھی کے قصور سے جیسا چلنا چاہئے ویسا نہیں چلتا ہو اور اس چال سے کوئی مرگیا ہے تو اوس مقام پر بدون سیکھے ہوئے سارتھی کو رتھ پر نوکر رکھنے سے مالک رتھ کا دوسوپن ڈنڈ دیوے۔

۲۹۴- سارتھی رتھ ہانکنے میں ہوشیار ہو اور رتھ سے کوئی مرگیا ہو تو سوپن ڈنڈ سارتھی دیوے سارتھی ہوشیار نہو اور رتھ سے کوئی مرگیا ہو تو بدون سیکھے ہوئے سارتھی کو رتھ پر مقرر کرنے سے مالک رتھ و سارتھی و رتھ کا سوار یہ سب سو سو پن ڈنڈ دیویں۔

۲۹۵- سارتھی کے روبرو دوسرا رتھ آیا خواہ بہت گئو وغیرہ چارپایہ روبرو آگئے اور اسکی رتھ رک گیا اور سارتھی آپ رتھ کو پیچھے لیجانے کی قدرت نہیں رکھتا ہو اور گھوڑے کو کوڑا مارکر آگے لیجاتا ہے اسمیں کوئی مرگیا تو بیچار نکرنا سارتھی کو ڈنڈ دینا۔

अंगावपीडनायां चव्रणशोणितयोस्तथा ॥ समुत्थानव्ययं दाप्यः सर्वदण्डमथापिवा ॥ २८७ ॥ द्रव्याणि हिंस्याद्यो यस्य ज्ञानतोऽज्ञानतोपिवा ॥ सतस्योत्पादयेत्तुष्टिं राज्ञेदद्याच्चतत्समम् ॥ २८८ ॥ चर्मचार्मिकभांडेषु काष्ठलोष्टमयेषुच ॥ मूल्यात्पंचगुणोदण्डः पुष्पमूलफलेषुच ॥ २८९ ॥ यानस्यचैवयातुश्चयानस्वामिनएवच ॥ दशातिवर्तनान्याहुः शेषेदण्डोविधीयते ॥ २९० ॥ छिन्ननास्येभग्नयुगे तिर्यक्प्रतिमुखागते ॥ अक्षभंगेचयानस्यचक्रभंगेतथैवच ॥ २९१ ॥

۲۸۷- ہاتھ پاؤں وغیرہ میں سوراخ کرنے اور خون نکلنے سے دکھ دینے والا آدمی اُس حمی کو خرچ و خوراک وادویہ اُتنے دنوں کا دیوے جتنے دنوں میں وہ زخمی صحیح البدن ہو جاوے اور اگر اُس خرچ کے دینے سے انکار کرے تو خرچ اور ڈنڈ دونوں دیوے۔

۲۸۸- کوئی آدمی دانستہ خواہ نادانستہ کسیکی دولت برباد کرے تو اُسکو راضی و خوش کرے اور اُس دولت کے برابر راجہ کو ڈنڈ دیوے۔

۲۸۹- چمڑا چمڑے کا برتن کاٹھ کا برتن مٹی کا برتن پھول پھل مول انھوں کو برباد کرنیوالا اصل چیز سے پچگنا ڈنڈ دیوے۔

۲۹۰- سواری و سوار و سواری کا مالک ان سب کو دس مقام پر ڈنڈ دینا چاہئے اور مقام پر ڈنڈ دینا مناسب ہے۔

۲۹۱- بیل کے ناتھ کی رسّی اور جوا ٹوٹ گیا ہو زمین کے اونچے نیچے ہونے سے رتھ وغیرہ ٹیڑھا ہو گیا ہو اور روبرو آیا ہو رتھ کے پایہ کے اندر کی لکڑی ٹوٹ گئی ہو رتھ کا پایہ ٹوٹ گیا ہو۔

सहासनमभिप्रेप्सुरुत्कृष्टस्यापकृष्टजः ।। कट्यांकृतांकोनि-
र्वास्यःस्फिचंवास्यावकर्त्तयेत् ।।२८१।। अवनिष्ठीवतोदर्प्पा
द्द्वावोष्ठौछेदयेन्नृपः ।। अवमूत्रयतोमेढ्रमवशर्धयतोगुदम् ।।
२८२ ।। केशेषुगृह्णतोहस्तौछेदयेदविचारयन् ।। पादयोर्दाढि-
कायांचग्रीवायांवृषणेषुच ।। २८३ ।। त्वग्भेदकःशतंदण्ड्यो
लोहितस्यचदर्शकः ।। मांसभेत्तातुषण्निष्कान्प्रवास्यस्त्वस्थि
भेदकः ।।२८४।। वनस्पतीनांसर्वेषामुपभोगंयथायथा ।। तथा
तथादमःकार्योहिंसायामितिधारणा ।। २८५ ।। मनुष्याणां
पशूनांचदुःखायप्रहृतेसति ।। यथायथामहद्दुःखंदण्डंकुर्या
त्तथातथा ।।२८६ ।।

۲۸۱- چھوٹا آدمی بڑے آدمی کے ساتھ ایک آسن پر بیٹھے تو اُسکی کمر مین نشان کرکے نکال
دیوے خواہ اسطرح اُسکے چوتڑ کو کاٹ دے کہ وہ مرنے نہ پاوے۔

۲۸۲- غرور سے بدن پر تھوکے تو دونون ہونٹھ چھید ڈالے اور پیشاب کرے تو عضو تناسل کو
کاٹ ڈالے اور پراز کرے تو مقعد کاٹ ڈالے۔

۲۸۳- جو شودر براہمن کے بال و پانون و داڑھی و گلا و فوطہ کو غرور سے پکڑنیوالا ہے اسکا
ہاتھ کاٹنا چاہیے یہ نہ خیال کرنا چاہیے کہ اُسکو تکلیف ہوگی۔

۲۸۴- جلد بدن کو چھیدنے والا خون نکالنے والا یہ دونون سوپن ڈنڈ پاوین اور گوشت
بدن کو علیحدہ کرنیوالا چھ نشک ڈنڈ کو پاوے اور استخوان بدن کو چھیدنیوالا دیش سے نکالا جاوے
یہ ڈنڈ یکسان ذات مین جاننا چاہیے۔

۲۸۵- تمام درختونکا جیسا جیسا تصرف کرے ویسا ویسا ڈنڈ پاوے مارنے مین ویسا ہی
جاننا یہ شاستر کا حکم ہے۔

۲۸۶- آدمی و چارپایہ انھون کو جیسا جیسا دکھ دیوے ویسا ویسا ڈنڈ پاوے۔

मातरंपितरंजायांभ्रातरंतनयंगुरुम्।। आक्षारयञ्छतंदाप्यः
पन्थानंचाददद्गुरोः।।२७५।।ब्राह्मणक्षत्रियाभ्यांतुदण्डःका-
र्योविजानता।। ब्राह्मणेसाहसःपूर्वःक्षत्रियेत्वेवमध्यमः ।।
२७६।। विट्शूद्रयोरेवमेवस्वजातिंप्रतितत्त्वतः।।छेदवर्जंप्रणा
यनंदण्डस्येति विनिश्चयः।।२७७।।एषदण्डविधिःप्रोक्तो-
वाक्पारुष्यस्यतत्त्वतः।। अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिदण्डपारुष्य
निर्णयम्।।२७८।।येनकेनचिदङ्गेनहिंस्याच्चेच्छ्रेष्ठमन्त्यजः।।
छेत्तव्यंतत्तदेवास्यतन्मनोरनुशासनम्।।२७९।।पाणिमुद्य-
म्यदण्डंवापाणिच्छेदनमर्हति।। पादेनप्रहरन्कोपात्पादच्छे-
दनमर्हति।।२८०।।

۲۷۵۔ ماتا پتا استری بھائی بیٹا گرو ان سب کو اگر ایسا کہے کہ تم پاتکی ہو اور گرو کو راہ نہ دیوے تو سو پن ڈنڈ دیوے۔

۲۷۶۔ براہمن کو کشتری یا کشتری کو براہمن کلمات حقارت آمیز یا دار بلند کہے تو براہمن کو پورب ساہس ڈنڈ اور کشتری کو مدھیم ساہس ڈنڈ دیوے۔

۲۷۷۔ اسیطرح ویشیہ اور شودر میں بھی اپنی ذات میں سوائے زبان میں سوراخ کرنے کے باقی سب ڈنڈ جاننا یہ شاستر کا حکم ہے۔

۲۷۸۔ سخت گفتاری کی سزا دین کا بیان کیا اسکے بعد مار پیٹ کی سزا دین کا طریق کہتے ہیں۔

۲۷۹۔ چانڈال وغیرہ جس عضو سے بڑے آدمیوں کے عضو پر ضرب کرے اس عضو کو کاٹ ڈالنا یہی منو جی کا حکم ہے۔

۲۸۰۔ ہاتھ کے ضرب سے مارے تو ہاتھ کاٹنا چاہیے پاؤن کے ضرب سے مارے تو پاؤں کو کاٹنا چاہیے۔

समवर्णो द्विजातीनांद्वादशैवव्यतिक्रमे॥वादेष्ववचनीयेषुत-
देवद्विगुणंभवेत॥२६९॥एकजातिर्द्विजातींस्तुवाचादारुणा-
याक्षिपन्॥ जिह्वायाः प्राप्नुयाच्छेदंजघन्यप्रभवोहिसः॥२७०
॥ नामजातिग्रहंत्वेषामभिद्रोहेणकुर्वतः॥निक्षेप्योऽयोमयः
शंकुर्ज्वलन्नास्येदशांगुलः॥२७१॥धर्मोपदेशंदर्पेणविप्रा वि-
प्राणामस्यकुर्वतः॥तप्तमासेचयेत्तैलंवक्त्रेश्रोत्रेचपार्थिवः
॥२७२॥श्रुतंदेशंचजातिंचकर्मशारीरमेवच॥वितथेनब्रुवन्द
र्पाद्दाप्यःस्याद्द्विशतंदमम्॥२७३॥काणंवाप्यथवाखंजम-
न्यंवापितथाविधम्॥ तथ्येनापिब्रुवन्दाप्योदण्डंकार्षाप-
णावरम्॥२७४॥

۲۶۹ - ہمقوم میں سخت گفتاری مرقومہ بالا کے کرنے سے بارہ پن اور جو بات کہنے کے لائق نہیں ہے اسکے کہنے سے چوبیس پن ڈنڈ ہوتا ہے۔

۲۷۰ - اگر شودر براہمن یا کشتری یا ویشیہ سے سخت زبانی کرے تو اسکی زبان میں سوراخ کیا جاوے کیونکہ وہ عضو حقیر سے یعنے پانوں سے پیدا ہوا ہے۔

۲۷۱ - جو شودر (ارے تو فلانے براہمن سے نیچ) ایسا آواز بلند براہمن وغیرہ کے نام اور ذات کو کہے تو اسکے منھ میں بارہ انگل کی سیخ آہنی جلتی ہوئی ڈالنا چاہیئے۔

۲۷۲ - جو شودر براہمنوں کو غرور سے دھرم کا اپدیش کرنیوالا ہے اسکے منھ اور کان میں گرم تیل راجہ ڈالے۔

۲۷۳ - اپکیان ذات میں ڈنڈ کہتے ہیں کہ جو شخص کسیکو غرور سے کہے کہ تمھارا اپنا نہیں ہے تم اس ملک میں پیدا نہیں ہوئے ہو تمھارے یہ ذات نہیں ہے تمھارا جنیو وغیرہ نہیں ہے ایسا غرور سے کہنے والا دو سو پن ڈنڈ دیوے۔

۲۷۴ - جو کانا یا لنگڑا ہے اسکو راستی سے بھی کانا یا لنگڑا نہ کہنا چاہیئے اور جو کبھی کہے تو ایک کارشاپن ڈنڈ دیوے۔

सामन्ताश्चेन्मृषा ब्रूयुः सेतौ विवदतां नृणाम्॥ सर्वे पृथक्पृथग्दण्ड्या राज्ञा मध्यमसाहसम्॥२६३॥ गृहं तडागमारामं क्षेत्रं वा भीषया हरन्॥ शतानि पंच दण्ड्यः स्यादज्ञानाद्द्विशतो दमः॥२६४॥ सीमायामविषह्यायां स्वयं राजैव धर्मवित्॥ प्रदिशेद्भूमिमेकेषामुपकारादिति स्थितिः॥२६५॥ एषोऽखिलेनाभिहितो धर्मः सीमाविनिर्णये॥ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि वाक्पारुष्यविनिर्णयम्॥२६६॥ शतं ब्राह्मणमाक्रुश्य क्षत्रियो दण्डमर्हति॥ वैश्योऽप्यर्द्धशतं द्वे वा शूद्रस्तु वधमर्हति॥२६७॥ पंचाशद्ब्राह्मणो दण्ड्यः क्षत्रियस्याभिशंसने॥ वैश्ये स्यादर्द्धपंचाशच्छूद्रे द्वादशको दमः॥२६८॥

۲۶۳ - گانون والے جھوٹھ بولیں تو راجہ ایک ایک کو مدہیم ساہس ڈنڈ دیوے۔

۲۶۴ - گھر تالاب باغیچہ کھیت ان سب کو خوف دکھا کر چھین لینے والے کو پانسو پن ڈنڈ دیوے اور اگیان سے چھین لینے والے کو دوسو پن ڈنڈ دیوے۔

۲۶۵ - نشان و گواہ وغیرہ مرقومہ بالا کے نہونے میں دھرم جاننے والا راجہ اس شخص کو زمین دیوے جسکا اس زمین کے پانے سے بہت اپکار ہوتا ہو یہ شاستر کی مرجاد ہے۔

۲۶۶ - یہ سب تحقیقیں حدود کی کہی گئیں اسکے بعد سخت گفتاری کے جرم اور سزا کی تشریح کرینگے۔

۲۶۷ - اگر کشتری کسی براہمن کو چور کہے تو سو پن ڈنڈ دیوے اور اگر ویشیہ ایسی بات کہے تو ڈیڑھ سو یا دوسو پن ڈنڈ دیوے اور اگر شودر ایسی بات کہے تو قطع عضو کے لائق ہے۔

۲۶۸ - اگر براہمن سخت بات مرقومہ بالا (یعنے چور) کشتری کو کہے تو پچاس ڈنڈ دیوے ویشیہ کو کہے تو پچیس ۲۵ پن ڈنڈ دیوے شودر کو کہے تو بارہ پن ڈنڈ دیوے۔

साक्ष्यभावेतुचत्वारोग्रामाः सामन्तवासिनः ॥ सीमाविनिर्णयंकुर्युः प्रयताराजसन्निधौ ॥ २५८ ॥ सामन्तानामभावेतुमौलानांसीम्निसाक्षिणाम् ॥ इमानप्यनुयुञ्जीतपुरुषान्वनगोचरान् ॥ २५९ ॥ व्याधाञ्छाकुनिकान्गोपान्कैवर्त्तान्मूलखानकान् ॥ व्यालग्राहानुञ्छवृत्तीनन्यांश्चवनचारिणः ॥ २६० ॥ तेपृष्टास्तुयथाब्रूयुः सीमासन्धिषुलक्षणम् ॥ तत्तथास्थापयेद्राजाधर्म्मेणाग्रामयोर्द्वयोः ॥ २६१ ॥ क्षेत्रकूपतडागानामारामस्यगृहस्यच ॥ सामन्तप्रत्ययोज्ञेयः सीमासेतुविनिर्णयः ॥ २६२ ॥

۲۵۸ - گواہ بھی نہ ملیں تو گانون کے چارو طرف کے رہنے والون میں سے چار آدمی نیک تدبیر سے راجہ کے روبرو حد کی تنقیح کرین۔

۲۵۹ - گانونکے رہنے والے بھی نہ ملیں تو جو لوگ اور آبادی گانونسے پشت در پشت اُسی گانونکے رہنے والے بھی نہ ملیں تو جو لوگ اور آبادی گانونسے پشت در پشت اُسی گانونکے رہنے والے ہون اُنسے تنقیح حدود کرانا چاہئے یہ بھی نہ ملیں یا تنقیح نہ کر سکیں تو جنگل کے رہنے والون کو تنقیح کے واسطے حکم دینا چاہئے۔

۲۶۰ - شکاری اور پرند پکڑنیوالے اور گئو چرانیوالے و مچھلی بیچنے سے اوقات بسر کرنیوالے و کند مول اُوکھاڑ کر بیچنے والے و سانپ پکڑنیوالے و اُنچھ سے اوقات بسر کرنیوالے و جنگل کے رہنے والے یہ سب اپنے مطلب کیواسطے اُس گانونسے ہر وقت جنگل کو جاتے ہوئے اُس گانون کی حد کو جاننے والے ہوتے ہین۔

۲۶۱ - وقت استفسار کے یہ سب جیسا نشان حد کا بیان کرین اُسی طرح راجہ دھرم سے دونون گانون کی حدود قائم کرے۔

۲۶۲ - کھیت - کنوان - تالاب باغیچہ گھر ان سبھون کی حد کی تنقیح گانون والون کے بیان سے جاننا چاہئے۔

एतैर्लिंगैर्नयेत्सीमां राजा विवदमानयोः॥ पूर्वभुक्त्या च सततमुदकस्यागमेन च॥२५२॥ यदि संशय एव स्याल्लिंगानामपि दर्शने॥ साक्षिप्रत्यय एव स्यात्सीमावादविनिर्णयः॥२५३ ग्रामीयककुलानां च समक्षं सीम्नि साक्षिणः॥ प्रष्टव्याः सीमलिंगानि तयोश्चैव विवादिनोः॥२५४॥ ते पृष्टास्तु यथा ब्रूयुः समस्ताः सीम्नि निश्चयम्॥ निबध्नीयात्तथा सीमां सर्वांस्तांश्चैव नामतः॥२५५॥ शिरोभिस्ते गृहीत्वोर्वीं स्रग्विणो रक्तवाससः॥ सुकृतैः शापिताः स्वैःस्वैर्नयेयुस्ते समञ्जसम्॥ २५६॥ यथोक्तेन नयन्तस्ते पूयन्ते सत्यसाक्षिणः॥ विपरीतं नयन्तस्तु दाप्याः स्युर्द्विशतं दमम्॥२५७॥

۲۵۲- یہ سب نشانات اور زمانہ ماضی مین قبضہ وتصرف اور نالہ وغیرہ پانی کا راستہ ان سب کے وسیلہ سے راجہ حدود کی تنقیح وتصفیہ کرے۔

۲۵۳- جب نشان کے دیکھنے مین شک ہو تب گواہون کے بیانات سے تنازع حدود کی تنقیح وتصفیہ کرے۔

۲۵۴- گانون کے آدمیون اور فریقین کے روبرو گواہون سے نشانات حدود پوچھنا چاہئے۔

۲۵۵- وے سب ایک صلاح ہوکر جیسا تصفیہ کرین اسیطرح حدبندی کرے اور اُن سب گواہونکا نام بھی تصفیہ حدود کے کاغذ پر لکھے۔

۲۵۶- وے سب گواہ پھولون کی مالا اور لال کپڑے پہنکر سر پر مٹی کا ڈھیلا رکھکر اور تنقیح کرنیوالے سے ایسا کلام (کہ نشان دروغ دکھلاوگے تو تمھارا پنیہ جاتا رہیگا) سنکر جیون کا تیون حد کی تنقیح کرین۔

۲۵۷- وے جو تنقیح کرین تو بوجہ راست بیانی کے پاک ہوجاتے ہین اور غلط تنقیح کرین تو ہر ایک دو سو پن تاوان دیوے۔

सीमावृक्षांश्चकुर्वीतन्यग्रोधाश्वत्थकिंशुकान्॥ शाल्मलीशालतालांश्चक्षीरिणश्चैवपादपान्॥२४६॥गुल्मान्वेणूंश्चविविधाञ्छमीवल्लीस्थलानिच॥ शरान्कुब्जकगुल्मांश्चतथासीमाननश्यति॥२४७॥तडागान्युदपानानिवाप्यःप्रस्रवणानिच॥ सीमासन्धिषुकार्याणिदेवतायतनानिच॥२४८॥उपच्छन्नानिचान्यानिसीमालिंगानिकारयेत्॥सीमाज्ञानेनृणांवीक्ष्यनित्यंलोकेविपर्ययम्॥२४९॥ अश्मनोऽस्थीनिगोवालांस्तुषान्भस्मकपालिकाः॥ करीषमिष्टकांगाराञ्छर्करावालुकास्तथा॥२५०॥यानिचैवंप्रकाराणिकालाद्भूमिर्नभक्षयेत्॥ तानिसन्धिषुसीमायामप्रकाशानिकारयेत्॥२५१॥

۲۴۶- برگد- پیپل- ڈھاک- سنبھل- شال- تال- شیر دار درخت ان سے کسی ایک کو حدود کے درمیان میں لگانا چاہیے-

۲۴۷- جھاڑی و بانس و انواع اقسام کے کم و زیادہ کٹیلے درخت اور اونچی زمین اور ٹیڑھی جھاڑی ان میں سے کسی ایک کو حد کے درمیان لگانا چاہیے- اس سے حد کا نشان ملتا ہے

۲۴۸- تالاب و چاہ و باولی و جھرنا و دیو استھان ان میں سے کسی کو حدود کی مینڈ میں قائم کرنا چاہیے-

۲۴۹- حدود کی پہچان میں آدمیوں کو الٹ پلٹ دیکھکر اور بھی پوشیدہ نشانات قائم کرنا چاہیے

۲۵۰- پتھر- ہڈی- گئو کے بال- بھوسہ- راکھ- ٹھکرا- کرسی- اینٹ- کوئلا- کنکرا- بالو-

۲۵۱- جلکو بیت دن تک زمین نہ کھائے ایسی جو چیزیں ہیں اُن سب کو حد کے اندر رکھنا چاہیے- یہ پوشیدہ نشانات ہیں-

क्षेत्रेष्वन्येषुतुपशुःसपादंपणमर्हति॥ सर्वत्रतुसदोदेयःक्षे-
त्रिकस्येतिधारणा॥ २४१ ॥ अनिर्दशाहांगांसूतांवृषान्देव
पशूंस्तथा॥ सपालान्वाविपालान्वानदण्ड्यान्मनुरब्रवी-
त्॥२४२॥क्षेत्रियस्यात्ययेदंडोभागाद्दशगुणोभवेत्॥ततो
ऽर्द्धदंडोभृत्यानामज्ञानात्क्षेत्रियस्यतु॥२४३॥एतद्विधान-
मातिष्ठेद्धार्मिकःपृथिवीपतिः॥ स्वामिनांचपशूनांचपाला
नांचव्यतिक्रमे॥२४४॥सीमांप्रतिसमुत्पन्नेविवादेग्रामयो
र्द्वयोः॥ज्येष्ठेमासिनयेत्सीमांसुप्रकाशेषुसेतुषु॥२४५॥

۲۴۱- راستہ اور گاؤن کے متصل والے کھیت کے سوا دوسرے کھیت مین چارپایہ اُس کھیت کی چیز کو برباد کرے تو چرواہا سلوین ڈنڈ دیوے اور جرم کے موافق مالک چارپایہ یا چرواہا یقیناً حاصل اراضی مالک زمین کو دیوے۔

۲۴۲- چرواہا ساتھ ہو یا نہو ایسی گئو جو بچہ جنے ہوئے دس دن نہ گذرے ہون اور دس دن کے اندر کھیت کو برباد کرے یا سانڈ کھیت کو برباد کرے تو سزا کے لائق نہین ہے یہ من جی نے کہا ہے۔

۲۴۳- بٹائی کے کھیت کے غلہ وغیرہ کو کاشتکار کے چارپایہ نے کھالیا ہو یا وقت تردد کے تخمریزی نکی ہو تو جسقدر منافع سرکاری کا نقصان ہوا ہو اسکا دس گنا تاوان دیوے اور اگر کاشتکار کے نوکرون نے ہو تو فی سے اُسکی زراعت کا مطابق بیان بالا کیا ہو تو نوکر پنج گنا تاوان دیوے۔

۲۴۴- مالک چرواہا و چارپایہ انھون کے جھگڑے مین اسطرحکی بدھ دھرماتما راجہ کرے۔

۲۴۵- دو گاؤن کی حدود کے جھگڑے کے تصفیہ کو جیٹھ کے مہینہ مین بروقت ظاہر ہونے نشانات حدود کے کرے۔

अजाविकेतुसंरुद्धेवृकैःपालेत्वनायति।। यांप्रसह्यवृकोह-
न्यात्पालेतत्किल्बिषंभवेत्।।२३५।। तासांचेदवरुद्धानांचर
न्तीनांमिथोवने।। यामुत्प्लुत्यवृकोहन्यान्नपालस्तत्रकिल्बि
षी।।२३६।। धनुःशतंपरीहारोग्रामस्यस्यात्समन्ततः।। शम्या
पातास्त्रयोवापित्रिगुणोनगरस्यतु।।२३७।। तत्रापरिवृतं
धान्यंविहिंस्युःपशवोयदि।। नतत्रप्रणयेद्दण्डंनृपतिःप-
शुरक्षिणाम्।।२३८।। वृत्तिंतत्रनकुर्वीतयामुष्ट्रोनविलोकये-
त्।। छिद्रंचवारयेत्सर्वंश्वसूकरमुखानुगम्।।२३९।।पथि-
क्षेत्रेपरिवृतेग्रामान्तीयेऽथवापुनः।। सपालःशतदण्डार्हो-
विपालान्वारयेत्पशून्।।२४०।।

۲۳۵- بکری یا بھیڑی کو بھیڑیا نے گھیرا اور اُسوقت نہیں آیا اور زبردستی سے بھیڑیے
نے بکری یا بھیڑی کو مارا تو اہیر پاپی ہوتا ہے۔
۲۳۶- اہیر کی حفاظت میں ہوکر جنگل میں چرتی ہوئی بکری یا بھیڑی کو بھیڑیے اُچھلکر مارا
تب اہیر کا دوش نہیں ہے۔
۲۳۷- گئو کے چرنے کیواسطے گانوں کے چاروطرف سَو دھنش (یعنی چارسَو ہاتھ) تک زراعت
نکرنا یا ہاتھ سے لاٹھی پھینکنا جہاں جاکر لاٹھی گرے اتنی زمین کی سہ چند زمین تک کھیتی نہ کرنا
اور شہر کے چاروطرف زمین مرقومہ بالا کا سہ چند چھوڑنا۔
۲۳۸- احاطہ نہ رکھنے والی غیر مزروعہ زمین کے روبرو جو دھان ہے اُسکو چارپایہ برباد کر
تو راجہ اہیر کو سزا نہ دیوے۔
۲۳۹- احاطہ ایسا بنادے کہ جسکو اونٹ نہ دیکھ سکے تمام سوراخونکو بند کردے جنمیں کتّا یا سُور کا منھہ اسمیں جا سکے
۲۴۰- رستہ کے پاس کا کھیت یا گانوں کے پاس کا کھیت احاطہ رکھتا ہو اور اُس کھیت کی چیز کو چارپایہ
نے برباد کیا ہو تو اہیر سَو پن ڈنڈ دیوے اور جس چارپایہ کے ساتھ اہیر نہ ہو اسکو اپنے کھیت سے نکالدے۔

दिवावक्तव्यतापालेरात्रौस्वामिनितद्गृहे ॥ योगक्षेमेऽन्य-
थाचेत्तुपालोवक्तव्यतामियात्॥ २३० ॥ गोपःक्षीरभृतोय-
स्तुसदुह्याद्दशतोवराम्॥ गोस्वाम्यनुमतेभृत्यःसास्यात्पा-
लेऽभृतेभृतिः॥ २३१ ॥ नष्टंविनष्टंकृमिभिःश्वहतंविषमेमृ-
तम्॥ हीनंपुरुषकारेणप्रदद्यात्पालएवतु॥ २३२ ॥ विघु-
ष्यतुहृतंचौरैर्नपालोदातुमर्हति॥ यदिदेशेचकालेचस्वा-
मिनःस्वस्यशंसति॥ २३३ ॥ कर्णौचर्मचवालांश्चबस्तिंस्ना-
युंचरोचनाम्॥ पशुषुस्वामिनांदद्यान्मृतेष्वङ्गानिदर्शयेत्॥
२३४ ॥

۲۳۰- دن میں گئو چرانے والے کے پاس گئو موقعہ نا مالک کی حفاظت نہو سکے تو وہ گئو چرانے والا ملزم ہوتا ہی اور رات میں مالک کے گھر میں اہیر کی سپرد کی ہوئی گائے کی حفاظت نہو سکے تو مالک ملزم ہوتا ہے اگر رات میں بھی اہیر کے گھر گئو رہے اور اسکی حفاظت نہو سکے تو اہیر ہی ملزم ہوتا ہے۔

۲۳۱- جس اہیر کی کچھ مزدوری مقرر نہیں ہوئی وہ مالک کی صلاح سے دس گئو چراوے تو ایک اچھی گئو کا دودھ لیوے۔

۲۳۲- جو گئو گم ہو جاوے یا کیڑا اسکو کھا جاوے یا کتا مار ڈالے یا ٹیڑھی زمین میں گر گیا اہیر سے علیحدہ ہو کر مر جاوے تو اسکا تاوان اہیر دیوے۔

۲۳۳- آواز دیکر چور لیجاوے تو اسکو اہیر نہ دیوے بشرطیکہ اسیوقت مالک کو خبر کرے۔

۲۳۴- مر جانے پر گئو کے اعضا کو مالک کو دکھلاوے اور گئو کا کان اور چمڑا اور بال مثانہ (یعنی حقہ رگ زیر ناف) ان سب کو گئو کے مالک کو دیوے۔

अकन्येतितुयःकन्यांब्रूयाद्द्वेषेणमानवः॥ सशतम्प्राप्नुयाद्द
गडंतस्यादोषमदर्शयन्॥ २२५॥ पाणिग्रहणिकामंत्राः-
कन्यास्वेवप्रतिष्ठिताः॥ नाकन्यासुक्वचिन्नृणांलुप्तधर्म्म
क्रियाहिताः॥२२६॥पाणिग्रहणिकामंत्रानियतंदारलक्ष
णम्॥ तेषांनिष्ठातुविज्ञेयाविद्वद्भिःसप्तमेपदे॥ २२७॥य-
स्मिन्यस्मिन्कृतेकार्य्येयस्येहानुशयोभवेत्॥ तमनेनविधा
नेनधर्म्मेपथिनिवेशयेत्॥२२८॥ पशुषुस्वामिनांचैवपा-
लानांचव्यतिक्रमे॥ विवादंसंप्रवक्ष्यामियथावद्धर्म्मतत्त्व-
तः॥ २२९॥

۲۲۵- دشمنی سے کنیا کو باعیب کہے اور اُس عیب کو ثابت نکرے تو سو پن ڈنڈ دیوے۔

۲۲۶- وواہ کرنیکا منتر کنیا ہی کو کہا ہے اور جو اکنیا یعنی باعیب ہے، اُسکی دھرم کریا لوپ ہو جاتی ہے اُسکو وواہ کا منتر نہین ہے۔

۲۲۷- نیم کرکے وِواہ کے منتر ہی سے زوجہ کہلاتی ہے اُس زوجیت کی تکمیل ساتوین پھیرے (یعنی بھانور) مین ہوتی ہے وواہ مین منتر سے سات پھیرے مرد و عورت ہوتے ہین ساتوین پھیرے مین وہ کنیا اُس مرد کی زوجہ ہو جاتی ہے۔

۲۲۸- جو جو کام کرتے ہوئے جسکو افسوس ہو اُسکو اس طریق سے دھرم کی راہ پر قائم کرے۔

۲۲۹- چوپایہ کے مالک اور اُسکے رکھنے والے اہیر وغیرہ اُنھون کے جھگڑے کو جیون کا تیون دھرم سے کہینگے۔

योग्रामदेशसंघानांकृत्वासत्येनसंविदम्॥ विसंवदेन्नरोलोभा-त्तंराष्ट्राद्विप्रवासयेत्॥२१९॥ निगृह्यदापयेच्चैनंसमयव्यभि-चारिणम्॥ चतुःसुवर्णान्षण्निष्कांश्छतमानंचराजतम्॥२२०॥ एतद्दण्डविधिंकुर्याद्धार्मिकःपृथिवीपतिः॥ ग्रामजातिसमूहेषुसमयव्यभिचारिणाम्॥२२१॥ क्रीत्वाविक्रीयवाकिंचिद्यस्येहानुशयोभवेत्॥ सोऽन्तर्दशाहात्तद्द्रव्यंदद्याच्चैवाददीतच॥२२२॥ परेणतुदशाहस्यनदद्यान्नापिदापयेत्॥ आददानोददच्चैवराज्ञादण्ड्यःशतानिषट्॥२२३॥ यस्तुदोषवतींकन्यामनाख्यायप्रयच्छति॥ तस्यकुर्यान्नृपोदण्डंस्वयंषण्णवतिंपणान्॥२२४॥

۲۱۹- جو آدمی گانوٗن وملک وعلاقہ کی صلاح کو راستی سے کرکے پھر طمع سے اُسکو نہین کرتا ہی اُسکو راج سے باہر نکالدینا چاہیئے۔

۲۲۰- پکڑکر اُس سے چار سُبرن چھ نشک ایک ست مان (یعنی ۳۲۰ رتی) چاندی تاوان لیوے اور یعنی حصہ معاملہ کی خوردی وبزرگی پر منحصر کرکے ایک ایک کو یا سب کو لینا۔

۲۲۱- دھرماتما راجہ گرام جات کے سموہ مین صلاح چھوڑنے والون کی اِس ڈنڈ بدھ کو کرے

۲۲۲- کسی چیز کو مول لیکر یا فروخت کرکے پچھتاوے (یعنی کچھ اچھا نہ بیچا یا اچھا نہ مول لیا ایسا کہے) تو دس دن کے اندر پھیر پھار کرے۔

۲۲۳- دس دن کے بعد پھیر پھار نہین ہوتا اور اگر کرے تو چھ سو پن ڈنڈ دیوے۔

۲۲۴- جو شخص عیب دار لڑکی کا عیب نہ کہکر اُسکا وِواہ کرے وہ چھیانوے پن تاوان دیوے۔

यदिसंसाधयेत्तत्तुदर्पाल्लोभेनवापुनः॥राज्ञादाप्यःसुवर्णंस्या-त्तस्यस्तेयस्यनिष्कृतिः॥२१३॥दत्तस्यैषोदिताधर्म्यायथावद-नपक्रिया॥ अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिवेतनस्यानपक्रियाम्॥२१४॥भृतोनार्त्तोनकुर्याद्योदर्पात्कर्मयथोदितम्। सदण्ड्यःकृ-ष्णलान्यष्टौनदेयंचास्यवेतनम्॥२१५॥ आर्त्तस्तुकुर्यात्स्व-स्थःसन्यथाभाषितमादितः॥ सुदीर्घस्यापिकालस्यतल्ल-भेतैववेतनम्॥२१६॥ यथोक्तमार्त्तःसुस्थोवायस्तत्कर्मनका-रयेत्॥ नतस्यवेतनंदेयमल्पोनस्यापिकर्मणः॥२१७॥एष धर्मोऽखिलेनोक्तोवेतनादानकर्मणः॥ अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि धर्मंसमयभेदिनाम्॥२१८॥

۲۱۳- جب لوبھ سے وہ نذر لوسے خواہ داتا دینے کو کہکر نہیں دیتا ہے اور لینے والا نذر لیکر دھرم میں نہیں لگاتا تو راجہ ان دونوں سے اس چوری کے پرایشچت کیواسطے ایک سبرن دنڈ لیوے اور اس دینیہ کو داتا پاوے یہ تو دنڈ لینے ہی سے ثابت ہے-

۲۱۴- دی ہوئی چیز کو واپس لینے کے طریق کو کہا اب اسکے بعد مزدور کی مزدوری نہ دینے کے طریق کو کہتے ہیں-

۲۱۵- صحیح وسالم آدمی نے ایک کام کو کرنا قبول کیا اور اہنکار یعنی خودی سے نہیں کرتا ہے تو راجہ اس سے آٹھ رتی سونا تاوان لیوے اور مزدوری اسکو دلاوے-

۲۱۶- کام کرنیوالا آدمی بیماری میں مبتلا ہوکر کام کو ترک کرے اور تندرست ہوکر کام کرے تو پچھلے دنوں کی بھی مزدوری پاوے

۲۱۷- بیمار ہو یا تندرست ہو کام کرنیوالا جس کام کو قبول کرکے اس کام کو کرتا ہے اور وہ کام پورا ہونے سے تھوڑا رہگیا ہے اسکو نہ آپ کرتا ہے نہ دوسرے سے ختم کراتا ہے تو اسکو بھی کچھ نہ دینا چاہئے-

۲۱۸- مزدوری نہ دینے کے طریق کو کہا اب اسکے بعد کوئی کام کرنے کی صلاح کرکے اسکو نہیں کرتا اسکا دھرم کہینگے

यस्मिन्कर्मणि यास्तु स्युरुक्ताः प्रत्यंगदक्षिणाः ॥ सएवता
आददीतभजेरन्सर्वेएववा ॥ २०८ ॥ रथंहरेतचाध्वर्युर्ब्रह्माधा-
नेचवाजिनम् ॥ होतावापिहरेदश्वमुद्गाताचाप्यनः क्रये
॥ २०९ ॥ सर्वेषामर्द्धिनोमुख्यास्तदर्द्धेनार्द्धिनोऽपरे ॥ तृती-
यिनस्तृतीयांशाश्चतुर्थांशाश्चपादिनः ॥ २१० ॥ सम्भूयस्वा
निकर्माणिकुर्वद्भिरिहमानवैः ॥ अनेनविधियोगेनक
र्त्तव्यांशप्रकल्पना ॥ २११ ॥ धर्मार्थंयेनदत्तंस्यात्कस्मै-
चिद्याचतेधनम् ॥ पश्चाच्चनतथातत्स्यान्नदेयंतस्यतद्भ-
वेत् ॥ २१२ ॥

۲۰۸- جس کام میں جس انگ کی جو دکشنا ہے اُسکو اُس انگ کے کرم کرنیوالے پاویں خواہ سب
رتوگ ملکر بانٹ لیویں -

۲۰۹- ادھوریج رتھ کو پاوے برہما اور ہوتا گھوڑا کو پاویں اودگاتا گاڑی کو پاوے -

۲۱۰- جس یگیہ کی سو گئو دکشنا ہے اُسکی تقسیم کا طریق لکھتے ہیں کہ یگیہ میں سولہ رتوگ ہوتے
ہیں اُنمیں چار رتوگ مقدم میں یعنے ہوتا ادھوریج برہما اودگاتا یہ چارو تمام دکشنا کی نصفی پاویں
اور پھر ایرن پرستوتا برہما چھنسی پرتیستوتا یہ چار مقدم رتوگ کا آدھا پاویں اور اچھاواک نیشٹا
اگنیدھر پرتیہرتا یہ چارو مقدم رتوگ کا تیسرا حصہ پاویں اور گراوستت انیتا پوتا سبرہمنیہ یہ چارو
مقدم رتوگ کا چوتھا حصہ پاویں اس نظام پر سب کو مطابق بیان کے دکشنا لے اسلیئے سب کا
آدھا اگرچہ پچاس ہے تو بھی اڑتالیس ہی لیا تب پہلی کہی ہوئی تعداد پوری ہوگی

۲۱۱- اپنے کام کو ملکر کرنے والے آدمی اس طریق سے حصہ معین کریں -

۲۱۲- کسی نے کسی مانگنے والے کو دھرم کیواسطے کچھ دیا اور وہ لیکر دھرم میں کچھ نہیں لگاتا
تو اُس دولت کو اُس سے واپس پھیر لے -

अथमूलमनाहार्यंप्रकाशक्रयशोधितः।। अदण्ड्योमु-
च्यतेराज्ञानाष्टिकोलभतेधनम्।।२०२।।नान्यदन्येनसंसृष्ट
रूपंविक्रयमर्हति।।नचासारंनचन्यूनंनदूरेणतिरोहितम्।।
२०३।।अन्यांचेद्दर्शयित्वान्यावोढुःकन्याप्रदीयते।।उभेतए
कशुल्केनवहेदित्यब्रवीन्मनुः।।२०४।।नोन्मत्तायानकुष्ठि-
न्यानचयास्पृष्टमैथुना।।पूर्वंदोषानभिख्याप्यप्रदातादण्ड
मर्हति।।२०५।।ऋत्विग्यदिवृतोयज्ञेस्वकर्मपरिहापयेत्।।
तस्यकर्मानुरूपेणदेयोंऽशःसहकर्तृभिः।।२०६।।दक्षिणा-
सुचदत्तासुस्वकर्मपरिहापयन्।।कृत्स्नमेवलभेतांशमन्ये-
नैवचकारयेत्।।२०७।।

٢٠٢ - جس سے مول لیا اُسکو دکھلا نہیں سکتا اور سب کے روبرو مول لینا ثابت کرتا ہے تو اُسکو راجہ سزا نہ دیوے اور مول لی ہوئی چیز کو جسکی چیز برباد ہوئی ہے وہ مالک پاوے جتنے روپیے وہ چیز مول لی گئی اتنا روپیہ مول لینے والے کا گیا۔

٢٠٣ - زعفران وغیرہ چیزوں میں کسم ملاکر فروخت نکرنا اور ناکارہ چیز کو اچھی کہکر فروخت نکرنا وزن میں کم نہ تولنا روبرو دبینا اور رنگ سے اچھا بناکر فروخت نکرنا۔

٢٠٤ - اور کنیا دکھلاکر دوسری کنیا دیکر تو وواہ کرنیوالا ایک ہی شلک (معاوضہ) سے دونوں کنیا کا وواہ کرے یہ منو جی نے کہا ہے۔

٢٠٥ - جو کنیا بیاولی ہو یا کوڑھن ہے یا ہمبستری میں یا عیب ہے اُسکا وواہ بدون اُسکے عیوب ظاہر کئے ہوئے کردیوے تو اُس کنیا کا دینے والا سزا کے لائق ہے۔

٢٠٦ - یگیہ میں ورن لیکر جو رتوگ اپنے کام کو نہ کریں تو جتنا کام کیا ہے اتنا ہی حصہ کرم کرنیوالوں کے ساتھ پاوے۔

٢٠٧ - تمام دکشنا دیکر بیماری وغیرہ سے اپنے کام کو ترک کرے تو اپنا کرم دوسرے سے کرا دیوے

निक्षेपस्य धनस्यैवं प्रीत्योपनिहितस्य च ॥ राजा विनिर्णयं कुर्यादक्षिण्वन्न्यासधारिणम् ॥१९६॥ विक्रीणीते परस्य स्वं योऽस्वामी स्वाम्यसम्मतः ॥ न तं नयेत साक्ष्यं तु स्तेनमस्तेनमानिनम् ॥१९७॥ अवहार्यो भवेच्चैव सान्वयः षट्शतं दमम् ॥ निरन्वयोऽनपसरः प्राप्तः स्याच्चौरकिल्बिषम् ॥१९८॥ अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ॥ अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥१९९॥ संभोगो दृश्यते यत्र न दृश्येतागमः क्वचित् ॥ आगमः कारणं तत्र न संभोग इति स्थितिः ॥२००॥ विक्रयाद्यो धनं किंचिद्गृह्णीयात्कुलसन्निधौ ॥ क्रयेण स विशुद्धं हि न्यायतो लभते धनम् ॥२०१॥

۱۹۶- جو چیز دکھلا کر شمار کرا کر کسیکے پاس امانت رکھی گئی اور جو چیز بغیر لیئے بدون دکھلانے و شمار کرانیکے کسیکے پاس امانت رکھی گئی اور جو چیز محبت سے دیگئی ان تینوں قسم کی تحقیقات راجہ اسطرح کرے کہ جسمین امانت رکھنے والے کو رنج نہ پہونچے۔

۱۹۷- جسکی چیز اسکی صلاح بدون دوسرا شخص اس چیز کو فروخت کرے تو اسکو گواہ نکرنا چاہیئے کیونکہ وہ چور ہے اگرچہ وہ اپنے کو چور نہیں مانتا۔

۱۹۸- اگر فروشندہ مالک چیز کا رشتہ دار ہو تو چھ سو پن تاوان دیوے اور اگر رشتہ دار نہو تو اسکو وہی سزا دیجاوے جو چور کو دیجاتی ہے۔

۱۹۹- جو شخص چیز کا مالک نہیں ہے اور اسنے اسکو دیدیا یا مول لیا یا فروخت کیا تو وہ بیوہار کے طریقہ مین جائز نہین ہوتا۔

۲۰۰- جس چیز کا تصرف دیکھ پڑتا ہے اور ثبوت تحریری نہین دیکھ پڑتا ہے اسمین ثبوت تحریری ہی باعث ہے تصرف نہین یہ شاستر کی مرجاد ہے۔

۲۰۱- بیوپار کرنیوالے کے روبرو بازار سے کسی چیز کو کسینے مول لیا اور مول لینا ثابت ہوا تو انصاف سے اس چیز کو مول لینے والا پاتا ہے

निक्षेपस्यापहर्त्तारमनिक्षेप्तारमेवच॥ सर्वैरुपायैरन्विच्छे-
च्छपथैश्चैववैदिकैः॥१९०॥ योनिक्षेपंनार्पयतियश्चानि-
क्षिप्ययाचते॥ तावुभौचौरवच्छास्यौदाप्यौवातत्समंदमम्
॥१९१॥ निक्षेपस्यापहर्त्तारंतत्समंदापयेद्दमम्॥ तथोपनि
धिहर्त्तारमविशेषेणपार्थिवः॥१९२॥ उपधाभिश्चयःकश्चि-
त्परद्रव्यंहरेन्नरः॥ ससहायःसहन्तव्यःप्रकाशंविविधैर्वधैः
॥१९३॥ निक्षेपोयःकृतोयेनयावांश्चकुलसन्निधौ॥ ता-
वानेवसविज्ञेयोविब्रुवन्दण्डमर्हति॥१९४॥ मिथोदायः
कृतोयेनगृहीतोमिथएववा॥ मिथएवप्रदातव्योयथादा-
यस्तथाग्रहः॥१९५॥

۱۹۰- شے امانت کو لینے والا اور بدون امانت رکھنے کے اسکو مانگنے والا ان دونون کو وید مین جو قسم اور تمام تدبیرین لکھی ہین انکے وسیلہ سے اصل مطلب کو جانے-

۱۹۱- جو شخص شے امانت کو نہین دیتا اور جو بدون رکھنے کے امانت کو مانگتا ہے دونو کو چور کیطرح سزا دینا چاہیے یا شے امانت کے برابر تاوان لینا چاہیے-

۱۹۲- سرکشادہ و سربمہر ان دونون قسمون کی امانتون کو جو نہین دیتا ہے اسکو ان دونو قسم کی امانت کے برابر تاوان دینا چاہیے-

۱۹۳- جو شخص فریب کرکے کیسکی دولت لیتا ہے اسکو مع سب مددگاران اس شخص کے سب آدمیون کے روبرو انواع و اقسام کی سزا دیکر مارے-

۱۹۴- کل کی موجودگی مین جتنی امانت رکھی ہے اسمین خلاف بیان کرے تو اتنا ہی تاوان دیوے-

۱۹۵- جسنے بغیر گواہ کے دیا تو وہ بے گواہی لیوے کیونکہ جیسا دیا ویسا لینا-

निक्षेपोपनिधीनित्यंनदेयौप्रत्यनन्तरे॥ नश्यतोविनिपाते-
तावनिपातेत्वनाशिनौ॥ १८५॥ स्वयमेवतुयोदद्यान्मृतस्य
प्रत्यनन्तरे॥ नसराज्ञानियोक्तव्योननिक्षेप्तुश्चबन्धुभिः॥१८६
॥ अच्छलेनैवचान्विच्छेत्तमर्थंप्रीतिपूर्वकम्॥ विचार्यत-
स्यवावृत्तंसाम्नैवपरिसाधयेत्॥१८७॥ निक्षेपेष्वेषुसर्वेषु
विधिःस्यात्परिसाधने॥ समुद्रेनाप्नुयात्किंचिद्यदितस्मा-
न्नसंहरेत्॥ १८८॥ चौरैर्हृतंजलेनोढमग्निनादग्धमेववा॥
नदद्याद्यदितस्मात्सनसंहरतिकिंचन॥ १८९॥

۱۸۵- جو چیز جانی ہوئی امانت رکھی جاوے اور جو چیز بغیر جانی ہوئی امانت رکھی جاوے (ان دونوں طرح کی) امانت کو مالک کے بیٹے وغیرہ کو نہ دیوے بلکہ جسکی امانت ہو اُسی کو دیوے۔

۱۸۶- کوئی آدمی کچھ امانت رکھکر مرگیا تو جسکے پاس شئے امانت ہو وہ از خود اس چیز کو جسکے سپرد کرے جسنے متوفی کے مال پر قبضہ پایا ہو اور متوفی کے بیٹے وغیرہ اور راجہ یہ دونوں اس سے دوسری چیز نہ طلب کریں (یعنی یہ نہ کہیں کہ دوسری چیز بھی تمھارے گھر امانت رکھی ہو اُسکو بھی لاؤ۔

۱۸۷- سام نام تدبیر جو فریب سے علیحدہ ہے اُسکے ذریعہ سے براہ محبت جسکے پاس امانت رکھی گئی ہے اُسکے آچرن کو بچار کرکے اپنا مطلب حاصل کرے۔

۱۸۸- امانت کا طریقہ بیان کیا اور بند چیز کو جیسا لے ویسا ہی دے اشرفی کو توڑکر اُسمیں سے کچھ نہ لیوے تو کچھ دوش نہیں پاتا۔

۱۸۹- امانت رکھی گئی چیز چوری گئی ہو یا پانی میں بہ گئی ہو یا آگ میں جل گئی ہو تو جسکے پاس رکھی گئی ہے وہ نہ دیوے بشرطیکہ اُسمیں سے کچھ آپ نہ لی ہو۔

कुलजेवृत्तसम्पन्नेधर्मज्ञेसत्यवादिनि ॥ महापक्षेधनिन्या-
र्येनिक्षेपंनिक्षिपेद्बुधः ॥ १७९ ॥ योयथानिक्षिपेद्धस्तेयमर्थं-
यस्यमानवः ॥ सतथैवग्रहीतव्योयथादायस्तथाग्रहः ॥१८०
॥ योनिक्षेपंयाच्यमानोनिक्षेप्तुर्नप्रयच्छति ॥ सयाच्यःप्राड्वि-
वाकेनतन्निक्षेप्तुरसन्निधौ ॥ १८१ ॥ साक्ष्यभावेप्रणिधि-
भिर्वयोरूपसमन्वितैः ॥ अपदेशैश्चसंन्यस्यहिरण्यंतस्यत-
त्त्वतः ॥ १८२ ॥ सयदिप्रतिपद्येततयथान्यस्तंयथाकृतम् ॥ न-
तत्रविद्यतेकिंचिद्यत्परैरभियुज्यते ॥ १८३ ॥ तेषान्नदद्याद्य-
दितुतद्धिरण्यंयथाविधि ॥ उभौनिगृह्यदाप्यःस्यादितिध-
र्मस्यधारणा ॥ १८४ ॥

۱۷۹- کلین سادھو یعنے خاندانی عابد دا چار کرنیوالا دھرم جاننے والا سچ بولنے والا بہت بیٹے پوتے والا ودولتمند جو آدمی ہے اوسکے پاس امانت کو رکھنا چاہیے۔

۱۸۰- جو آدمی جس آدمی کے ہاتھ مین جس چیز کو جسطرح دیوے وہ اس سے اوس چیز کو اوسیطرح لیوے جیسا دینا ویسا لینا۔

۱۸۱- جانی ہوئی چیز کو امانت رکھنے والے نے اپنی چیز کو اوس آدمی سے جسکے پاس امانت رکھی ہو مانگا اور وہ نہین دیتا ہو تب امانت رکھنے والے کی غیر حاضری مین جسکے پاس امانت رکھی گئی اوس سے حاکم سوال کرے

۱۸۲- گواہ کے نہونے مین امانت مین خیانت کرنیوالا شخص اہالیان حکمہ یا ایک کو اگر چیز امانت شدہ نہین دیتا ہے تو اوسکے پاس کچھ سونا رکھا کرے۔

۱۸۳- بعدہ امانت رکھنے والا اپنی امانت کو اوس یعنے امانت دار سے طلب کرے اگر وہ دیدے تو اوسکو سچا جاننا اور اس سے جو شخص اپنی امانت مانگتا ہے وہ جھوٹا ہے۔

۱۸۴- اور جبکہ اہالیان دربار یا وکیل کو جنھون نے سونا وغیرہ کوئی چیز امانت رکھی ہو انکو بھی وہ امانت دار نہ دیوے تو اوس سے دونون امانت کو راجہ لیوے یہ بات دھرم مین داخل ہے۔

यस्त्वधर्म्मेणाकार्य्याणिमोहात्कुर्य्यान्नराधिपः।। अचिरात्तं
दुरात्मानंवशेकुर्व्वन्तिशत्रवः।। १७४।।कामक्रोधौतुसंयम्य
योऽर्थान्धर्म्मेणपश्यति।। प्रजास्तमनुवर्त्तन्तेसमुद्रमिवसि-
न्धवः।। १७५।।यःसाधयन्तंछन्देनवेदयेद्धनिकंनृपे।। सराज्ञा
तच्चतुर्भागंदाप्यस्तस्यचतद्धनम्।। १७६।।कर्म्मणापिसमंकु-
र्य्याद्धनिकायाधमर्णिकः।। समोऽवकृष्टजातिस्तुदद्याच्छ्रे-
यांस्तुतच्छनैः।। १७७।। अनेनविधिनाराजामिथोविवदतांनृ-
णाम्।।साक्षिप्रत्ययसिद्धानिकार्य्याणिसमतांनयेत्।। १७८।।

۱۷۴ - جو راجہ موہ سے ادھرم کرکے کام کو کرے اُس دُرآتما راجہ کو دشمن لوگ اپنے قابو میں کر لیتے ہیں

۱۷۵ - جو راجہ کام کرودھ کو چھوڑ کر دھرم سے مطلب کو دیکھتا ہے اسکے پیچھے سب رعیت رہتی ہے جیسے سب ندی سمدر کے پیچھے رہتی ہیں یعنی سمدر میں جاکر پھر اُس سے علیحدہ نہیں ہوتی اسیطرح راجہ سے رعیت علیحدہ نہیں ہوتی۔

۱۷۶ - جو قرض دینے والا قرضدار سے اپنے دیئے ہوئے دھن کو اپنے زور سے لیتا ہے اور قرضدار راجہ کے پاس جا کر نالش کرے تو راجہ اُس قرضدار سے قرضہ کا چوتھا حصّہ تاوان میں لیوے اور قرضہ دہندہ کو زر قرضہ دلاوے۔

۱۷۷ - اگر شخص مذکور قرضہ دہندہ کا ہمقوم یا رذیل قوم ہو اور قرضہ ادا کرنے کی استطاعت نہ رکھتا ہو تو قرضہ دہندہ کا کام کرکے قرضہ ادا کرے اور اگر قرضدار قرضہ دہندہ کی قوم سے اونچی قوم والا ہے تو وہ قرضہ دہندہ کا کام نہ کرے بلکہ آہستہ آہستہ جب کچھ لے تب دیوے۔

۱۷۸ - اس طریق سے جو مقدمہ باہم بحث کرنیوالے آدمیوں کے گواہوں سے ثابت ہو راجہ انمیں خلاف باتوں کو دور کرکے اصل مطلب کو پہچان لے۔

त्रयः परार्थे क्लिश्यन्ति साक्षिणः प्रतिभूः कुलम् ॥ चत्वारस्तू-
पचीयन्ते विप्र आढ्यो वणिङ्नृपः ॥ १६९ ॥ अनादेयं ना-
ददीत परिक्षीणोऽपि पार्थिवः ॥ न चादेयं समृद्धोऽपि सू-
क्ष्ममप्यर्थमुत्सृजेत् ॥ १७० ॥ अनादेयस्य चादानादादेय-
स्य च वर्जनात् ॥ दौर्बल्यं ख्याप्यते राज्ञः स प्रेत्येह च नश्यति
१७१ ॥ स्वादानाद्वर्णसंसर्गात्त्वबलानां च रक्षणात् ॥ बलं सं-
जायते राज्ञः स प्रेत्येह च वर्द्धते ॥ १७२ ॥ तस्माद्यम इव स्वामी
स्वयं हित्वा प्रियाप्रिये ॥ वर्त्तेत याम्यया वृत्त्या जितक्रोधो-
जितेन्द्रियः ॥ १७३ ॥

۱۶۹- گواہ و ضامن و کل یہ تینون دوسرے کیواسطے تکلیف اُٹھاتے ہین اور براہمن و دولتمند و بنیا و راجہ یہ چار دوسرے کے واسطے ترقی پاتے ہین اسلیے پہلے کہے ہوئے تین آدمی اول ہی اپنے کام کو منظور کرین یعنی گواہی و ضامنی و بیوہار دیکھنا ان کامون کو نہ کرین اور پچھلے کہے جو چار ہین وہ سلسلے سے اپنے کام مین قوت سے مشغول ہووین یعنی براہمن و داتا کو دولتمند قرضدار کو بنیا خریدکرنیوالے کو راجہ بیوہار کرنیوالے کو زور سے کام مین مشغول کرین۔

۱۷۰- راجہ اگرچہ بے زر ہو لیکن جو چیز لینے کے قابل نہین ہے اسکو ہرگز نہ لیوے اور اگرچہ بڑا دولتمند ہو لیکن جو چیز چھوٹی بھی لینے کے قابل ہو اسکو لیوے۔

۱۷۱- لینے کے لائق چیز کو ترک کرنے سے اور نہ لینے کے لائق چیز کو لینے سے راجہ کی کم قوتی ظاہر ہوتی ہے اور وہ راجہ اس لوک مین اور پرلوک مین ناش کو پاتا ہے۔

۱۷۲- لینے کے لائق چیز کو لینے سے اور ہمقوم کا ہمقوم کے ساتھ شاستر کے موافق شادی وغیرہ نسبت کرانے سے و کم قوت رعایا کی حفاظت کرنے سے راجہ کو قوت ہوتی ہے اور وہ راجہ اس لوک اور پرلوک مین بڑھتا ہے۔

۱۷۳- اسلیے راجہ یم راج کے مانند مرغوب و نامرغوب کو ترک کرکے کرودھ و اندرینکو جیت کر

आधिश्चोपनिधिश्चोभौ न कालात्ययमर्हतः॥ अवहार्यौ भवे
तां तौ दीर्घकालमवस्थितौ॥१४५॥ संप्रीत्या भुज्यमानानि न
नश्यन्ति कदाचन॥ धेनुरुष्ट्रो वहन्नश्वो यश्च दम्यः प्रयुज्यते॥
१४६॥ यत्किंचिद्दशवर्षाणि संनिधौ प्रेक्षते धनी॥ भुज्यमा-
नं परैस्तूष्णीं न स तल्लब्धुमर्हति॥१४७॥ अजडश्चेदपोगण्डो
विषये चास्य भुज्यते॥ भग्नं तद्व्यवहारेण भोक्ता तद्द्रव्यमर्हति
॥१४८॥ आधिः सीमा बालधनं निक्षेपोपनिधिः स्त्रियः॥ रा-
जस्वं श्रोत्रियस्वं च न भोगेन प्रणश्यति॥१४९॥

۱۴۵ - شے مرہونہ براہ محبت استعمال کیلئے کسیکو کوئی چیز امانتاً دینا۔ یہ دونون قسم کی چیز جسوقت مالک طلب کرے اُسیوقت دینا چاہیئے یہ نہ کہنا کہ اِتنے دنون کیلئے اور بہت دن تک رہنے سے یہ دونون چیز کالعدم نہین ہو جاتی ہین اصل مالک کی ملکیت قائم رہتی ہے جسکے پاس رکھی ہے وہ مالک نہین ہوتا ہے۔

۱۴۶ - گئو اور اونٹ اور گھوڑا اور بیل اِن سب کو مالک کی محبت سے جوکوئی استعمال کرے تو سبکی وہ چیزین ہین اُسکی مالکیت زائل نہین ہوتی ہے۔

۱۴۷ - مالک دیکھتا ہے اور منع نہین کرتا ہے اُسکی چیز کو دس برس تک دوسرے آدمی نے استعمال کیا پھر مالک اس چیز کو پا نہین سکتا۔

۱۴۸ - کیونکہ استعمال کرنیوالا کہتا ہے کہ یہ دیوانہ یا نابالغ نہین ہے، اِسکے دیکھتے ہوئے ہمنے استعمال کیا ہے تب وہ کچھ جواب نہین دے سکتا اسواسطے بیوہار سے وہ خارج ہوتا ہے استعمال کرنیوالا اُس چیز کو پاتا ہے۔

۱۴۹ - شے مرہونہ و حد دو و نابالغ کی دولت و امانت جو دیکھا کر اور شمار کرا کے کسیکے پاس رکھی جا اور سربمہر (یعنی جو بدون دکھلائے اور شمار کرائے کے سربند چیز کسیکے پاس امانت رکھی جا) و استری و راجہ کی دولت و بید خوان کی دولت یہ سب استعمال کرنے سے کالعدم نہین ہوتی ہین یعنی اصل مالک کی ملکیت قائم رہتی ہے

वसिष्ठविहितांवृद्धिंसृजेद्वित्तविवर्द्धिनीम्॥ असीतिभागं
गृह्णीयान्मासाद्वार्द्धुषिकः शते॥ १४०॥ द्विकंशतंवागृह्णी-
यात्सतांधर्ममनुस्मरन्॥ द्विकंशतंहिगृह्णानोनभवत्यर्थ-
किल्विषी॥ १४१॥ द्विकंत्रिकंचतुष्कंचपंचकंचशतंसम-
म्॥ मासस्यवृद्धिंगृह्णीयाद्वर्णानामनुपूर्वशः॥ १४२॥ न-
त्वेवाधौसोपकारेकौसीदींवृद्धिमाप्नुयात्॥ नचाधेःका-
लसंरोधान्निसर्गोऽस्तिनविक्रयः॥ १४३॥ नभोक्तव्यो
बलादाधिर्भुञ्जानोवृद्धिमुत्सृजेत्॥ मूल्येनतोषयेच्चैनमा-
धिस्तेनोऽन्यथाभवेत्॥ १४४॥

۱۴۰- بسشٹ جی کا کہا ہوا سُود جو روپیہ کا بڑھانیوالا ہے اُسکو ترک کرے اور سَو روپیہ کا اسّی
دان حصّہ یعنے فیصدی سوا روپیہ سُود ماہواری مقرر کرے۔
۱۴۱- خواہ اچھے لوگوں کا دھرم خیال کرکے فیصدی دو روپیہ ماہواری لیوے اسکے لینے
سے دربتیہ پاپی نہیں ہوتا۔
۱۴۲- براہمن سے فیصدی دو روپیہ کشتری سے تین روپیہ ویشیہ سے چار روپیہ شودر سے
پانچ روپیہ سود فیصدی ماہواری لیوے۔
۱۴۳- اب رہن کے قواعد لکھتے ہیں کہ جو چیز نفع دینے والی مثل زمین و غلام و گئو وغیرہ رہن
کیجاوے اسمیں سود نہ لینا چاہئے جب رہن کو بہت دن ہو جاویں اور رہن رکھکر جتنا روپیہ لیا
تھا اُس سے دو چند روپیہ نفع شئی مرہونہ سے مالک نے پایا تب اُس شئی مرہونہ کو کسیکو دیدیوے
یا فروخت کرڈالے ایسا نکرے کہ جبتک زر اصل نہ پاوے تب تک اُسکی نفع کو حاصل کرتا رہے
۱۴۴- زبردستی سے شئی مرہونہ کو تصرف نکرے اگر کرے تو سود چھوڑ دے یا جسکی چیز ہو
اُسکو قیمت دیکر راضی کرے اگر ایسا نکرے تو شئی مرہونہ کا چور ہوتا ہے۔

सर्षपाःषड्यवोमध्यस्त्रियवंत्वेककृष्णलम्॥ पंचकृष्णल-
कोमाषस्तेसुवर्णस्तुषोडश॥१३४॥पलंसुवर्णाश्चत्वारःप-
लानिधरणंदश॥द्वेकृष्णलेसमधृतेविज्ञेयोरौप्यमाषकः॥
१३५॥तेषोडशस्याद्धरणंपुराणश्चैवराजतः॥कार्षापणस्तु-
विज्ञेयस्ताम्रिकःकार्षिकःपणः॥१३६॥धरणानिदशज्ञेयः
शतमानस्तुराजतः॥ चतुःसौवर्णिकोनिष्कोविज्ञेयस्तुप्रमा-
णतः॥१३७॥पणानांद्वेशतेसार्द्धेप्रथमःसाहसःस्मृतः॥ म-
ध्यमःपंचविज्ञेयःसहस्रंत्वेवचोत्तमः॥१३८॥ ऋणेदेयेप्रति-
ज्ञातेपंचकंशतमर्हति॥ अपह्नवेतद्द्विगुणंतन्मनोरनुशास-
नम्॥१३९॥

۱۳۴- چھ سرسون کا ایک مدھیم جو تین جو کی ایک رتی پانچ رتی کا ایک ماشہ سولہ ماشہ کا ایک سبرن ہوتا ہے-

۱۳۵- چار سبرن کا ایک پل دش پل کا ایک دھرن ہوتا ہے اب روپیہ کے وزن کی مقدار کو کہتے ہیں- کہ دو رتی کا ایک ماشہ-

۱۳۶- اور سولہ ماشہ کا ایک دھرن ہوتا ہے اور اوسکو پران بھی کہتے ہیں سولہ ماشہ تانبا کو مرک اور کارشاپن کہتے ہیں-

۱۳۷- دش دھرن کا ایک ست مان چار سبرن کا ایک نشک ہوتا ہے-

۱۳۸- ڈھائی سَو پن کا پورب ساہس اور پانسو پن کا مدھیم ساہس اور ہزار پن کا اُتم ساہس ہوتا ہے-

۱۳۹- دربار میں جا کر معروض کیے کہ قارض کا قرضہ ہمکو دینا ہے تو فیصدی پن پر پانچ پن ڈنڈ دیوے اور اگر کہے کہ ہم قرضدار نہیں ہیں اور گواہ تحریر کے ذریعہ سے مدعی کا دعویٰ ثابت ہو تو فیصدی پن پر دش پن ڈنڈ مدعا علیہ دیوے یہ منُ جی کا حکم ہے-

अदराड्यान्दराडयनूराजादराड्यांश्चैवाप्यदराडयन्॥ अयशो महदाप्नोति नरकं चैव गच्छति॥ १२८॥ वाग्दराडम्प्रथमं कुर्या द्धिग्दराडं तदनन्तरम्॥ तृतीयं धनदराडन्तु वधदराडमतः परम् ॥ १२९॥ वधेनापि यदा त्वेतान्निग्रहीतुं न शक्नुयात्॥ तदैषु सर्वमप्येतत्प्रयुञ्जीत चतुष्टयम्॥ १३०॥ लोकसंव्यवहारार्थं याः संज्ञाः प्रथिता भुवि॥ ताम्ररूप्यसुवर्णानां ताः प्रवक्ष्याम्यशेषतः॥ १३१॥ जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः॥ प्रथमं तत्प्रमाणानां त्रसरेणुं प्रचक्षते॥ १३२॥ त्रसरेणवोऽष्टौ विज्ञेया लिक्षैका परिमाणतः॥ ता राजसर्षपस्तिस्रस्ते त्रयो गौर सर्षपः॥ १३३॥

۱۲۸ - جو سزا کے لائق نہین ہے، اُسکو سزا دینے سے جو سزا کے لائق ہے اُسکو سزا نہ دینے سے راجہ بدنام ہوتا ہے - اور نرک مین جاتا ہے -

۱۲۹ - اول تو تم نے اچھا نہین کیا پھر ایسا نہ کرنا ایسی باتون سے خوف دینا یہ پہلا ڈنڈ ہے اسکے بعد یہ کہنا کہ تجھکو لعنت ہے بڑا پاپی و مُورکھ ہے تیری زندگی بھو یہ دُوسرا ڈنڈ ہے دھن ڈنڈ تیسرا ڈنڈ ہے اعضا کاٹ ڈالنا چوتھا ڈنڈ ہے -

۱۳۰ - صرف کسی عضو کے کاٹ ڈالنے سے بھی مجرم کو قابو مین نکر سکے تو چارو ڈنڈ دیوے

۱۳۱ - جگت کے اچھے بیوہار کے واسطے تانبا و روپا و سونا اِن کے وزن کی مقدار رکھی ہے اُس سب کو مین کہتا ہون -

۱۳۲ - جھروکھے مین سُورج کی کرن آنے سے جو ذرہ دیکھہ پڑتا ہے وہ مقدار مین اول کہلاتا ہے اُسکو ترسرین کہتے ہین -

۱۳۳ - آٹھہ ترسرین کا ایک لکشا تین لکشا کی ایک رائی اور تین رائی کی ایک پیلی سرسون

कौटसाक्ष्यन्तुकुर्वाणांस्त्रीन्वर्णान्धार्मिकोनृपः॥ प्रवासयेद्दंडयित्वाब्राह्मणान्तुविवासयेत्॥ १२३॥ दशस्थानानिदण्डस्यमनुःस्वायंभुवोऽब्रवीत्॥ त्रिषुवर्णेषुयानिस्युरक्षतोब्राह्मणोव्रजेत्॥ १२४॥ उपस्थमुदरंजिह्वाहस्तौपादौचपंचमम्॥ चक्षुर्नासाचकर्णौचधनंदेहस्तथैवच॥ १२५॥ अनुबन्धम्परिज्ञायदेशकालौचतत्त्वतः॥ सारापराधौचालोक्यदण्डंदण्ड्येषुपातयेत्॥ १२६॥ अधर्मदण्डनंलोकेयशोघ्नंकीर्त्तिनाशनम्॥ अस्वर्ग्यंचपरत्रापितस्मात्तत्परिवर्जयेत्॥ १२७॥

۱۲۳- کشتری ویشیہ شودر یہ تینوں ورن گواہ ہوکر جھوٹھ بولیں تو دھرماتما راجہ سزا (مرقومہ بالا) دیکر اپنے راج منڈل سے باہر نکالدے مگر براہمن کو جرم مرقومہ بالا مین صرف اپنے راج منڈل سے باہر نکالدے اُسکی جائیداد کو ضبط نکرے۔

۱۲۴- کشتری ویشیہ شودر ان تینوں ورنوں کے ڈنڈ کے مقامات سوئمبھو کے بیٹے من جی نے کہے براہمن تو بدون پانے سزا کے بدنی کے چلا جاے۔

۱۲۵- عضو تناسل شکم زبان دونوں ہاتھ دونوں پاؤں دونوں کان دونوں آنکھ ناک جائیداد جسم یہ دس ڈنڈ (یعنی سزا) کے مقام ہین۔

۱۲۶- خواہش سے متواتر جرم کرنا مقامات جرم وقت جرم مجرم کا جسم و جائداد وغیرہ سامان بڑا چھوٹا جرم ان سب کو دیکھکر سزا کے لائق آدمیوں کو سزا دینا چاہئے۔

۱۲۷- دھرم کے خلاف جو سزا ہے وہ یش اور کیرت کو نابود کرتی ہے اور پرلوک مین سورگ کو بھی چھوڑاتی ہے اسلیے دھرم کے خلاف سزا نہ دینا چاہیے۔

---

* جو نیکنامی بحالت زندگی ہو اُسکو یش کہتے ہین اور جو نیکنامی بعد وفات ہو اُسکو کیرت کہتے ہین۔

लोभान्मोहाद्भयान्मैत्रात्कामात्क्रोधात्तथैवच।। अज्ञानाद्बालभावाच्चसाक्ष्यंवितथमुच्यते।।११८।।एषामन्यतमेस्थाने यःसाक्ष्यमनृतंवदेत्।।तस्यदण्डविशेषांस्तुप्रवक्ष्याम्यनुपूर्वशः।।११९।।लोभात्सहस्रंदण्ड्यस्तुमोहात्पूर्वंतुसाहसम्।। भयाद्द्वौमध्यमौदण्डौमैत्रात्पूर्वंचतुर्गुणम्।।१२०।।कामाद्दशगुणंपूर्वंक्रोधात्तुत्रिगुणंपरम्।। अज्ञानाद्द्वेशतेपूर्णेबालिश्याच्छतमेवतु।।१२१।।एतानाहुःकौटसाक्ष्येप्रोक्तान्दण्डान्मनीषिभिः।। धर्मस्याव्यभिचारार्थमधर्मनियमायच।।१२२।।

۱۱۸۔ لوبھ۔ موہ ڈر متر کام کرودھ اگیان لڑکپن ان سببون مین سے کسی ایک سبب کے ہونے سے گواہ لوگ جھوٹھہ بولتے ہین۔

۱۱۹۔ انکے سوا اور مقامات مین جھوٹھی گواہی دے تو اسکے واسطے خاص سزا سلسلہ وار کہین گے۔

۱۲۰۔ اگر گواہ لوبھ سے جھوٹھہ بولے تو ہزار پن جرمانہ دیوے اور اگر موہ سے جھوٹھہ بولے تو بمقدار پورب ساہس جرمانہ دیوے اور اگر خوف سے جھوٹھہ بولے تو بمقدار دو مدھیم ساہس جرمانہ دیوے اور اگر بلحاظ دوستی جھوٹھہ بولے تو بمقدار چار پورب ساہس جرمانہ دیوے۔

۱۲۱۔ اگر گواہ کام کے غلبہ سے جھوٹھہ بولے تو دس پورب ساہس جرمانہ دیوے اور اگر کرودھ سے جھوٹھہ بولے تو بمقدار تین اتم ساہس جرمانہ دیوے اگر اگیانتا سے جھوٹھہ بولے تو بمقدار دو سو پن جرمانہ دیوے اور اگر لڑکپن سے جھوٹھہ بولے تو بمقدار ایک سو پن جرمانہ دیوے۔

۱۲۲۔ ادھرم کے بند ہونے اور دھرم کے جاری ہونے کے واسطے پنڈتون نے یہ ڈنڈ گواہون کے جھوٹھہ بولنے مین کہا ہے۔

† دیکھو اشلوک ۱۳۸۔

कामिनीषुविवाहेषुगवांभक्ष्येतथेन्धने। ब्राह्मणाभ्युपपत्तौच
शपथेनास्तिपातकम्॥११२॥सत्येनशापयेद्विप्रंक्षत्रियंवा-
हनायुधैः॥ गोबीजकांचनैर्वैश्यंशूद्रंसर्वैस्तुपातकैः॥११३॥
अग्निंवाहारयेदेनमप्सुचैनंनिमज्जयेत्॥पुत्रदारस्यवाप्येनं
शिरांसिस्पर्शयेत्पृथक्॥११४॥यमिद्धोनदहत्यग्निरापोनो
न्मज्जयन्तिच॥नचार्तिमृच्छतिक्षिप्रंसज्ञेयःशपथेशुचिः॥
११५॥वत्सस्यह्यभिशस्तस्यपुराभ्रात्रायवीयसा॥नाग्निर्द-
दाहरोमापिसत्येनजगतःस्पशः॥११६॥यस्मिन्यस्मिन्विवा
देतुकौटसाक्ष्यंकृतंभवेत्॥तत्तत्कार्यंनिवर्तेतकृतंचाप्य-
कृतंभवेत्॥११७

۱۱۲ - عورت و وواہ و گئو کے کھانے کی چیز و ایندھن و براہمن کی حفاظت مین جھوٹھی قسم
کھانیسے پاپ نہین ہوتا

۱۱۳ - براہمن کو سچ کی قسم اور کشتری کو سواری اور ہتھیارون کی اور ویشیہ کو گئو و بیج و سونے
کی اور شودر کو تمام پاپون کی قسم دلاوے -

۱۱۴ - آگ کو اٹھواوے یا پانی مین ڈبا دے اور عورت کے بیٹا کے سر کو چھواوے -

۱۱۵ - جسکو آگ جلاوے یا پانی نہ ڈباوے یا جو جلدی دکھ نہ پاوے اسکو قسم مین
پاک جاننا چاہیئے -

۱۱۶ - اگلے زمانہ مین بتس رشی کے چھوٹے بھائی نے اسکو عیب لگایا اور بتس رشی نے اپنی
صفائی کے واسطے آگ کو اٹھایا لیکن تمام دنیا کے عمل نیک و بد جاننے والی اگن نے رشی کا
ایک بال بھی نہ جلایا -

۱۱۷ - جو جو کام گواہون کے سچ بولنے سے صحیح ہوگئے ہین اور پھر پیچھے سے گواہونکا جھوٹھ
بولنا ثابت ہوگیا ہے تو اُس کام کو غلط سمجھنا چاہیئے

कुष्माण्डैर्वापिजुहुयाद्घृतमग्नौयथाविधि। उदित्यृचावा वारुणयातृचेनाब्दैवतेनवा॥२०६॥ त्रिपक्षादब्रुवन्साक्ष्यमृणादिषुनरोऽगदः॥ तदृणंप्राप्नुयात्सर्वंदशबन्धंचसर्वतः॥ १०७॥ यस्यदृश्येतसप्ताहादुक्तवाक्यस्यसाक्षिणः॥ रोगोऽग्निर्ज्ञातिमरणमृणंदाप्योदमंचसः॥ २०८॥ असाक्षिकेषुत्वर्थेषुमिथोविवदमानयोः॥ अविन्दंस्तत्त्वतःसत्यंशपथेनापिलम्भयेत्॥ २०९॥ महर्षिभिश्चदेवैश्चकार्य्यार्थंशपथाःकृताः॥ वशिष्ठश्चापिशपथंशेपेपैजवनेनृपे॥ ११०॥ नवृथाशपथंकुर्यात्स्वल्पेऽप्यर्थेनरोबुधः॥ वृथाहिशपथंकुर्वन्प्रेत्यचेहचनश्यति॥ १११॥

۱۰۶- خواہ کوشمانڈ منتر جو یجروید مین ہے اسکو پڑھکر یا اُدتم اپو تیشٹھا اِن دونون منترون مین سے کسی ایک منتر کو پڑھ پڑھکر گھی سے ہون کرے شاستر کی بدھ کے موافق۔

۱۰۷- قرض وغیرہ کے مقدمات مین تندرست گواہ ڈیڑھ مہینہ کے اندر کچھ نہ کہے تو جس مقدمہ مین گواہ ہوا ہے اُس مقدمہ کے قرضہ کو دسوان حصہ ڈنڈ کو دیوے۔

۱۰۸- عدالت سے گواہ گواہی دیکر آوے اور سات دن کے اندر بیماری و آگ کا لگنا و رشتہ دار کی موت اِنمین سے کوئی ایک رنج گواہ کو ہو تو وہ گواہ اُس قرضہ کو اور اُس قرضہ کا دسوان حصہ ڈنڈ کو دیوے۔

۱۰۹- جس مقدمہ مین گواہ نہین ہے، اور غور کرنے سے حاکم اصلی بات کو نہین پا سکتا تب آگے لکھی ہوئی سوگند کے وسیلے سے اصلی بات کو دریافت کرے۔

۱۱۰- دیوتا اور بڑے بڑے رشی لوگون نے کام کیواسطے سوگند کھائی ہے، اور بسوامتر کے جھگڑے مین بششٹ رشی نے پیون کے بیٹے سداس نام راجہ کے روبرو قسم کھائی تھی

۱۱۱- تھوڑے مطلب مین کبھی نادان آدمی جھوٹی سوگند نہ کھاوین کیونکہ جھوٹی قسم کھانے سے اِس لوک مین اور پرلوک مین نشٹ ہوتا ہے

अप्सुभूमिवदित्याहुःस्त्रीणांभोगेचमैथुने॥ अब्जेषुचैवरत्ने-
षुसर्वेष्वश्ममयेषुच॥१००॥ एतान्दोषानवेक्ष्यत्वंसर्वाननृ-
तभाषणे॥ यथाश्रुतंयथादृष्टंसर्वमेवाञ्जसावद॥१०१॥
गोरक्षकान्वाणिजिकांस्तथाकारुकुशीलवान्॥ प्रेष्यान्
वार्धुषिकांश्चैवविप्रान्शूद्रवदाचरेत्॥१०२॥ तद्वदन्धर्मतो
ऽर्थेषुजानन्नप्यन्यथानरः॥ नस्वर्गाच्च्यवतेलोकाद्दैवींवाचं
वदन्तिताम्॥१०३॥ शूद्रविट्क्षत्रविप्राणांयत्रर्तोक्तौभवेद्व-
धः॥ तत्रवक्तव्यमनृतंतद्धिसत्याद्विशिष्यते॥१०४॥ वा-
ग्दैवत्यैश्चचरुभिर्यजेरंस्तेसरस्वतीम्॥ अनृतस्यैनसस्तस्य
कुर्वाणानिष्कृतिंपराम्॥१०५॥

۱۰۰- پانی- عورت- جماع- موتی- جواہرات وغیرہ کے مقدمات میں بھی مثل زمین کے جاننا-
۱۰۱- جھوٹھ بولنے میں اتنے دوشوں کو دیکھکر جیسا دیکھا اور سنا ہے ویسا راست راست بولو-
۱۰۲- گئیو کی حفاظت سے اوقات بسر کرنیوالا ویشیا کا کام کرنیوالا دوسرے کی رسوئیں بنانیوالا
گانے والا غلامی کرنیوالا بیاج لینے والا جو براہمن ہے اسکو شودر کی طرح ماننا چاہئے-
۱۰۳- وغیرہ وہ لوگ رحم کی نظر سے جھوٹھ بولتے ہیں سورگ سے نہیں گرتا اور اسکی
بانی کو منو وغیرہ دیوتا کی بانی کے برابر سمجھتے ہیں-
۱۰۴- جہاں سچ بولنے سے براہمن کشتری ویشیہ شودر قتل ہوتا ہو وہاں جھوٹھ بولنا
سچ سے بھی زیادہ اچھا ہے-
۱۰۵- جھوٹھ بولکر گھر میں آکر سرسوتی دیبی کی یگیہ کرے تب جھوٹھ بولنے کے پاپ سے چھوٹے

अन्धोमत्स्यानिवाश्नातिसनरःकण्टकैःसह॥ योभाषतेऽर्थ
वैकल्यमप्रत्यक्षंसभांगतः॥९५॥यस्यविद्वान्हिवदतः क्षेत्रज्ञो
नाभिशंकते॥ तस्मान्नदेवाः श्रेयांसंलोकेऽन्यंपुरुषंविदुः९६
॥यावतोबान्धवान्यस्मिन्हन्तिसाक्ष्येऽनृतंवदन्॥ तावतः
संख्ययातस्मिन् शृणुसौम्यानुपूर्वशः॥९७॥ पंचपश्वनृते-
हन्तिदशहन्तिगवानृते॥ शतमश्वानृतेहन्तिसहस्रंपुरुषा-
नृते॥९८॥हन्तिजातानजातांश्चहिरण्यार्थेऽनृतंवदन्॥सर्वं
भूम्यनृतेहन्तिमास्मभूम्यनृतंवदीः॥९९॥

۹۵ - جو آدمی دربار مین جاکر رشوت لیکر جھوٹھ بولتا ہے وہ اندھے کی طرح مچھلی کو مع کانٹون کے کھاتا ہے۔

۹۶ - جس آدمی کے بولتے ہوئے اَنتر آتما شنک نہین کرتی ہے اُس سے اچھا دوسرے آدمی کو اس لوک مین دیوتا لوگ نہین جانتے۔

۹۷ - جس کام مین جھوٹھ بولنے سے جتنے رشتہ دارون کو مارتا ہے وہ سب اے رشی لوگو ہم سے سنئے۔

۹۸ - پشو یعنے چارپایہ کے مقدمہ مین جھوٹھی گواہی دینے سے پانچ پشت کی فنا کرتا ہے اور گئو کے مقدمہ مین دس پشت کی اور گھوڑے کے مقدمہ مین سو پشت کی اور آدمی کے مقدمہ مین ہزار پشت کی فنا کرتا ہے۔

۹۹ - سونے کے مقدمہ مین جھوٹھی گواہی دینے سے ہوئے اور ہونیوالے رشتہ دارون کو فنا کرتا ہے اور زمین کے مقدمہ مین جھوٹھی گواہی دینے سے سب کو تاباود کرتا ہے اسلیے زمین کی بابت گواہی دینے مین کبھی جھوٹھ نہ بولے۔

ब्रह्मघ्नोयेस्मृतालोकायेचस्त्रीबालघातिनाम्॥ मित्रद्रुहः
कृतघ्नस्यतेतेस्युर्ब्रुवतोमृषा॥८९॥जन्मप्रभृतियत्किंचित्पु-
ण्यंभद्रत्वयाकृतम्॥ तत्तेसर्वंशुनोगच्छेद्यदिब्रूयास्त्वमन्य-
था॥९०॥ एकोऽहमस्मीत्यात्मानंयत्त्वंकल्याणमन्यसे॥ नि-
त्यंस्थितस्तेहृद्येषपुण्यपापेक्षितामुनिः॥९१॥यमोवैवस्व-
तोदेवोयस्तवैषहृदिस्थितः॥ तेनचेदविवादस्तेमागंगांमाकु-
रून्गमः॥९२॥नग्नोमुण्डःकपालेनभिक्षार्थीक्षुत्पिपासितः
॥अन्धःशत्रुकुलंगच्छेद्यःसाक्ष्यमनृतंवदेत्॥९३॥ अवाक्
शिरास्तमस्यन्धेकिल्बिषीनरकंव्रजेत्॥ यःप्रश्नंवितथंब्रूया-
त्पृष्टःसन्धर्मनिश्चये॥९४॥

۸۹ - براہمن اور استری اور بالک ان تینوں کا مارنیوالا اور دوست سے دشمنی کرنیوالا
اور اُپکار کو نہ ماننے والا ان سب کو جو لوک ملتا ہے وہی لوک جھوٹھ بولنے سے تمکو ملے -

۹۰ - جو پنیہ تمام جنم مین تمنے کیا ہے وہ سب جھوٹھ بولنے سے کتے کو ملے -

۹۱ - اپنے کو تم ایسا مانتے ہو کہ مین اکیلا ہون سو نہ مانو کیونکہ ہمیشہ سے تمھارے سینہ مین
پاپ اور پنیہ کا دیکھنے والا ایشور قائم ہے

۹۲ - یم راج وویسوت دیوتا تمھارے دلمین قائم ہے اسکے ساتھ اگر تمھاری بحث ہو تو
گنگا اور کرکشیتر مین نجاؤ یعنے جھوٹھ بولنے سے یم راج کے ساتھ بحث ہوگی تو اس پاپ کے
دور ہونے کے واسطے گنگا جی اور کرکشیتر مین جانا پڑیگا -

۹۳ - جو گواہ جھوٹھ بولے وہ برہنہ مونڈ مونڈائے ہوئے بھوکھ پیاس سے دکھی اندھا ہوکر
بھیکھ مانگنے کیواسطے کپال لیکر دشمن کے خاندان مین جاوے -

۹۴ - جو شخص دھرم کے نشچے کر نہین پوچھا گیا اور جھوٹھ بولا وہ پاپی نیچے سر کئے ہوئے
بہت اندھیارے نرک مین جاتا ہے

आत्मैव ह्यात्मनः साक्षीगतिरात्मा तथात्मनः॥ मावमंस्थाः स्वमात्मानं नृणां साक्षिणमुत्तमम्॥८४॥ मन्यन्ते वै पापकृतो न कश्चित्पश्यतीति नः॥ तांस्तु देवाः प्रपश्यन्ति स्वस्यैवान्तरपूरुषः॥८५॥ द्यौर्भूमिरापो हृदयं चन्द्रार्काग्नियमानिलाः॥ रात्रिः सन्ध्ये च धर्मश्च वृत्तज्ञाः सर्वदेहिनाम्॥८६॥ देवब्राह्मणसान्निध्ये साक्ष्यं पृच्छेदृतं द्विजान्॥ उदङ्‌मुखान् प्राङ्‌मुखान्वा पूर्वाह्णे वै शुचिः शुचीन्॥८७॥ ब्रूहीति ब्राह्मणं पृच्छेत्सत्यं ब्रूहीति पार्थिवम्॥ गोबीजकाञ्चनैर्वैश्यं शूद्रं सर्वैस्तु पातकैः॥८८॥

۸۴- آتما کی گت اور گواہ آتما ہی ہے اسلئے سب آدمیوں میں اُتم اپنی آتما ہی اُسکا اپمان نکرنا چاہئیے۔

۸۵- پاپ کرنیوالے یہ جانتے ہیں کہ ہمکو کوئی نہیں دیکھتا ہے اور اُس پاپ کو دیوتا لوگ اور اپنے جسم کے اندر رہنے والا پرش دیکھتا ہے۔

۸۶- سورگ بھوم جل ہردے میں رہنے والا جیو آتما سورج چندرماں اگن یمراج ہوا ناسُن یہ دونوں سندھیا یہ سب آدمیونکے کرم کو دیکھتے و جانتے ہیں۔

۸۷- دیوتا اور براہمن کے سامنے گواہان قوم براہمن و کشتری و ویشیہ پاک ہوکر پورب منھ یا اُتر منھ کھڑے ہووین اور اُنسے حاکم پاک ہوکر دن کے حصہ اول میں سوال کرے۔

۸۸- کہو- اسطرح براہمن سے پوچھے سچ کہو اسطرح کشتری سے پوچھے گیوا اور بیج اور سونا کی قسم دے کر ویشیہ سے پوچھے اور جھوٹھ بولنے سے سب پاپوں کے بھوگ کرنیوالے ہوگے ایسا کہکر شودر سے پوچھے۔

स्वभावेनैवयद्ब्रूयुस्तद्ग्राह्यंव्यावहारिकम्।। अतोयदन्यद्विब्रू-
युर्धर्मार्थंतदपार्थकम्।।७८।।सभान्तःसाक्षिणःप्राप्तानर्थि-
प्रत्यर्थिसन्निधौ।। प्राड्विवाकोऽनुयुञ्जीतविधिनानेनसान्त्व-
यन्।।७९।।यद्द्वयोरनयोर्वेत्थकार्येऽस्मिंश्चेष्टितंमिथः।।तद्ब्रू-
तसर्वंसत्येनयुष्माकंह्यत्रसाक्षिता।।८०।।सत्यंसाक्ष्येब्रुवन्सा-
क्षीलोकानाप्नोतिपुष्कलान्।। इहचानुत्तमांकीर्तिंवागेषा-
ब्रह्मपूजिता।।८१।।साक्ष्येऽनृतंवदन्पाशैर्बध्यतेवारुणैर्भृश-
म्।।विवशःशतमाजातीस्तस्मात्साक्ष्यंवदेदृतम्।।८२।।सत्ये-
नपूयतेसाक्षीधर्मःसत्येनवर्द्धते।। तस्मात्सत्यंहिवक्तव्यंस-
र्ववर्णेषुसाक्षिभिः।। ८३।।

۷۸ - اپنی طبیعت سے جو بات کہے اسکو قبول کرنا چاہیے (یعنی درج اظہار کرنا چاہیے) اور جو بات سکھانے سے کہے وہ بیفائدہ ہے اُسکو قبول نکرنا چاہیے۔

۷۹ - راجہ کے حکم سے مقدمہ فیصل کرنیوالا برہمن دربار مین مدعی و مدعا علیہ کے روبرو مطابق طریقہ مندرجہ آیندہ بوسیلہ سام نام تدبیر کے گواہون کو حکم دے۔

۸۰ - کہ مدعی و مدعا علیہ کے مقدمہ مین باہم ظہور مین آئے ہوئے حال کو جو کچھ تم جانتے ہو براستی تمام کہو اس مقدمہ مین تمھاری گواہی ہے۔

۸۱ - گواہی مین سچ بولنے سے اونچا لوک (یعنی برہم لوک وغیرہ) کو پاتا ہے اور اس لوک مین بڑی نیکنامی کو پاتا ہے اور بانی اسکی شتری برھما جی سے پوجی ہوئی ہے یعنی برھما جی اسکی تعریف کرتے ہین

۸۲ - گواہی مین جھوٹھ بولنے سے ورن کے قابو مین پڑکر سو جنم تک برن دیوتا کے پاش سے سخت باندھا جاتا ہے اس سے سچی گواہی دینا چاہیے۔

۸۳ - سچ بولنے سے گواہ پاک ہوتا ہے اور اسکا دھرم ترقی پاتا ہے اسواسطے سب ورنون مین گواہ کو سچ بولنا چاہیے۔

बहुत्वंपरिगृह्णीयात्साक्षिद्वैधेनराधिपः॥ समेषुतुगुणोत्कृ-
ष्टान्गुणिद्वैधेद्विजोत्तमान्॥७३॥ समक्षदर्शनात्साक्ष्यंश्रव-
णाच्चैवसिध्यति॥ तत्रसत्यंब्रुवन्साक्षीधर्मार्थाभ्यांनहीयते
॥७४॥ साक्षीदृष्टश्रुतादन्यद्विब्रुवन्नार्यसंसदि॥ अवाङ्नरक-
मभ्येतिप्रेत्यस्वर्गाच्चहीयते॥७५॥ यत्रानिबद्धोऽपीक्षेतशृणु-
याद्वापिकिंचन॥ पृष्टस्तत्रापितद्ब्रूयाद्यथादृष्टंयथाश्रुतम्॥७६
॥ एकोऽलुब्धस्तुसाक्षीस्याद्बह्व्यःशुच्योऽपिनस्त्रियः॥ स्त्री-
बुद्धेरस्थिरत्वात्तुदोषैश्चान्येऽपियेवृताः॥७७॥

۷۳ - جہان گواہون کے دو قسم کے بیان ہون وہان زیادہ تعداد والے گواہون کا بیان ماننا چاہیے اگر تعداد مین برابر ہین اور دو قسم کے بیان ہین تو گواہان لائق و صاحب صفت کے بیان کو ماننا چاہیے اور صاحب صفت کے دو قسم کے بیانون مین برہمن کے بیان کو ماننا چاہیے۔

۷۴ - حالات بچشم دیدہ و بگوش خود شنیدہ مین گواہی دینا ٹھیک ہے، اور اسمین سچ بولنے سے دھرم و ارتھ کا نقصان نہین ہوتا۔

۷۵ - جو شخص امر واقعی بچشم دیدہ و بگوش شنیدہ کے برخلاف اچھے لوگون کی سبھا مین گواہی دیتا ہے وہ نیچے سر کئے ہوئے نرک مین جاتا ہے سورگ اسکو نہین ملتا۔

۷۶ - تم اسمین گواہ ہو اسطرح نہین کہا ہے اور کیفیت مقدمہ کو اسنے دیکھا ہے اُسکو طلب کرکے مقدمہ کا حال پوچھا جاوے تو جسطرح دیکھا اور سنا ہے اُسی طرح سے بیان کرے۔

۷۷ - طمع نرکھنے والا ایک آدمی بھی گواہ ہو سکتا ہے اور طہارت رکھنے والی بہت عورتین گواہ نہین ہو سکتین کیونکہ عورتون کی عقل ایک حالت پر قائم نہین رہتی اور جو آدمی عیب دار ہین وہ بھی گواہ نہین ہو سکتے۔

स्त्रीणांसाक्ष्यंस्त्रियःकुर्युर्द्विजानांसदृशाद्विजाः॥शूद्राश्चस-
न्तःशूद्राणामंत्यानामंत्ययोनयः॥६८॥अनुभावीतुयःकश्चि
त्कुर्यात्साक्ष्यंविवादिनाम्॥अन्तर्वेश्मन्यरण्येवाशरीरस्यापि
चात्यये।६९।स्त्रियाप्यसंभवेकार्यंबालेनस्थविरेणवा॥शि-
ष्येणबन्धुनावापिदासेनभृतकेनवा॥७०॥बालवृद्धातुराणां
चसाक्ष्येषुवदतांमृषा॥जानीयादस्थिरांवाचमुत्सिक्तमन-
सांतथा॥७१॥साहसेषुचसर्वेषुस्तेयसंग्रहणेषुच॥वाग्दण्ड-
योश्चपारुष्येनपरीक्षेतसाक्षिणः॥७२॥

۶۸ - عورتون کی گواہ عورتین ہووین دوجون کے گواہ دوج ہووین شودرون کے گواہ شودر ہووین چانڈال کے گواہ چانڈال ہووین -

۶۹ - مدعی اور مدعا علیہ کے مطالب کو جو جانتا ہو وہ گواہ ہووے جنگل گھر ان دونون کے اندر وجانکشی ان تینون طرح کے مقدمون مین قرض لینے مین جو لکھت گواہ ہونگے لکھے گئے ہین انکا آدر نکرنا یعنے اس مقام پر اُسکی تعمیل نکرنا -

۷۰ - اُن تینون مقدمون مین اگر گواہ مرقومہ بالا کے نہونے پر عورت ولڑکے وبڈھے ورشتہ دار وشاگرد وغلام ومزدور یہ سب بھی گواہ ہووین -

۷۱ - گواہی مین بالک وبڈھے ودُکھی وانمت وغیرہ کی بات معتبر نجاننا -

۷۲ - زور سے کام کرنا (مثل آتش زنی وغیرہ) اور چوری اور عورت کو زبردستی لیجانا اور سخت زبانی کرنا اور لاٹھی وغیرہ سے مارنا ان مقدمون مین گواہون کی گواہی معتبر نہونا چاہیے -

गृहिणः पुत्रिणो मौलाः क्षत्रविट्शूद्रयोनयः ॥ अर्थ्युक्ताः साक्ष्यमर्हन्ति न ये केचिदनापदि ॥ ६२ ॥ आप्ताः सर्वेषु वर्णेषु कार्याः कार्येषु साक्षिणः ॥ सर्वधर्मविदोऽलुब्धा विपरीतांस्तु वर्जयेत् ॥ ६३ ॥ नार्थसम्बन्धिनो नाप्ता न सहाया न वैरिणः ॥ न दृष्टदोषाः कर्तव्याः न व्याध्यार्त्ता न दूषिताः ॥ ६४ ॥ न साक्षी नृपतिः कार्यो न कारुककुशीलवौ ॥ न श्रोत्रियो न लिंगस्थो न संगेभ्यो विनिर्गतः ॥ ६५ ॥ नाध्यधीनो न वक्तव्यो न दस्युर्न विकर्मकृत् ॥ न वृद्धो न शिशुर्नैको नान्त्यो न विकलेन्द्रियः ॥ ६६ ॥ नार्तो न मत्तो नोन्मत्तो न क्षुत्तृष्णोपपीडितः ॥ न श्रमार्त्तो न कामार्त्तो न क्रुद्धो नापि तस्करः ॥ ६७ ॥

٦٢ وقت مصیبت ہونے پر جو کوئی ملے وہی گواہ تجویز ہوسکتا ہے بلکہ عیالدار صاحب اولاد و خاندانی کشتری و ویش و شودر ذات مدعی کی گواہی دینے کے لائق ہوتے ہیں۔

٦٣۔ سب ورنوں کے کام میں سچ بولنے والے تمام دھرموں کو جاننے والے حرص نہ رکھنے والے جو آدمی ہیں وہی گواہی دینے کے لائق ہوتے ہیں اور جو صفات مرقومہ بالا نہ رکھتے ہوں انکو گواہ نکرنا چاہیئے۔

٦٤۔ جس مطلب کی بحث ہے اس سے نسبت رکھنے والا دوست و مدد کرنیوالا و دشمن اور جسکا عیب پہلے دیکھنے میں آیا ہو اور بیماری سے دکھی اور دوشی والا۔

٦٥۔ اور راجہ اور ہوئین بنانیوالا اور نٹ وغیرہ وید پڑھنے والا اور برہم چاری وغیرہ صحبت سے جو نکالا گیا ہے

٦٦۔ و غلام و نیچ کرم کرنیوالا و چور و برخلاف کرم کرنیوالا و اسی برس سے زیادہ عمر والا و سولہ برس سے کم عمر والا و اکیلا و چانڈال وغیرہ و کوئی ایک عضو نہ رکھنے والا۔

٦٧۔ اور دکھی۔ اور بھنگ گانجہ وغیرہ کے نشہ میں مست و مخمور و بھوت وغیرہ کا خلل رکھنے والا بھوک پیاس کی تکلیف رکھنے والا محنتی و کام دیو سے دکھی و کرودھی و چوران سبکو گواہ نکرنا چاہیئے

ब्रूहीत्युक्तश्च न ब्रूयादुक्तं च न विभावयेत्॥ न च पूर्वापरं विद्यात्त-
स्मादर्थात्स हीयते॥५६॥ साक्षिणः सन्ति मेत्युक्त्वा दिशेत्युक्तो
दिशेन्न यः॥ धर्मस्थः कारणैरेतैर्हीनं तमपि निर्दिशेत्॥५७॥ अ-
भियोक्ता न चेद्ब्रूयाद्बध्यो दण्ड्यश्च धर्मतः॥ न चेत्त्रिपक्षात्प्रब्रू-
याद्धर्मं प्रति पराजितः॥५८॥ यो यावन्निह्नुवीतार्थं मिथ्या या-
वति वा वदेत्॥ तौ नृपेण ह्यधर्मज्ञौ दाप्यौ तद्द्विगुणं दमम्॥५९॥
पृष्टोऽपव्ययमानस्तु कृतावस्थो धनैषिणा॥ त्र्यवरैः साक्षिभि-
र्भाव्यो नृपब्राह्मणसन्निधौ॥६०॥ यादृशा धनिभिः कार्या-
व्यवहारेषु साक्षिणः॥ तादृशान्सम्प्रवक्ष्यामि यथावाच्यमृ-
तं च तैः॥६१॥

۵۶- اور جب حاکم نے حکم دیا کہ بولو تب بولتا نہیں ہے اور جو بیان کئے ہوئے دعوے
گواہی و تحریر وغیرہ سے ثابت نہیں کرتا اور جو اول و آخر بات کو نہیں جانتا یہ سب اپنے
مطلب کا نقصان کرتے ہیں۔

۵۷- ہمارے گواہ ہیں ایسا کہکر گواہوں کو حاضر نہیں کرتا ان سببوں سے حاکم اسکو
ہارنیوالا جانے۔

۵۸- جو مدعی حاکم کے روبرو کہتا ہے اور مدعا علیہ کے سامنے کچھ بولتا نہیں ہے وہ پیوبا
کا بڑا جھوٹھا منصور ہوکر قتل و جرمانہ کے لائق ہوتا ہے۔

۵۹- جو مدعی یا مدعا علیہ جتنے دھن کو جھوٹھ بیان کرتا ہے اتنے دھن کا دوچند تاوان
دونوں سے راجہ لیوے اور یہ دونوں ادھرم کے جاننے والے ہیں۔

۶۰- جب مدعا علیہ عدالت میں آکر کہے کہ ہمنے اوسکا دھن نہیں لیا ہے تب مدعی حاکم کے
روبرو میں سے زیادہ گواہوں کے وسیلے سے اپنے دئے ہوئے دھن کو ثابت کرے۔

۶۱- جو گواہ ان جیسا دولتمند تا ہیں مقرر ہونی چاہئیں اور جیسا وہ گواہ لوگ سچ بولیں اسکو ہم کہتے ہیں۔

अर्थेऽपव्ययमानन्तु करणेन विभावितम्॥ दापयेद्धनिकस्यार्थं दण्डलेशं च शक्तितः॥५१॥ अपह्नवेऽधमर्णस्य देहीत्युक्तस्य संसदि। अभियोक्ता दिशेद्देश्यं करणं वान्यदुद्दिशेत्॥५२॥ अदेश्यं यश्च दिशति निर्दिश्यापह्नुते च यः। यश्चाधरोत्तरानर्थान्विगीतान्नावबुध्यते॥५३॥ अपदिश्यापदेश्यं च पुनर्यस्त्वपधावति॥ सम्यक्प्रणिहितं चार्थं पृष्टः सन्नाभिनन्दति॥५४॥ असंभाष्ये साक्षिभिश्च देशे संभाषते मिथः॥ निरुच्यमानं प्रश्नं च नेच्छेद्यश्चापि निष्पतेत्॥५५॥

۵۱ — مدعی کے عرض کئے ہوئے دعوے سے مدعا علیہ نے انکار کیا اور مدعی نے گواہی گواہان پیشی دستاویزات وغیرہ سے اپنے دعوے کو ثابت کیا تو راجہ قرض دینے والے کے روپیہ کو شخص مقروض سے دلادے اور بلحاظ حیثیت سزا بھی شخص مقروض کو دیوے۔

۵۲ - عدالت مین حاکم نے شخص مقروض سے کہا کہ قرض دینے والے کا روپیہ دیدو اور مقروض نے جواب دیا کہ ہمنے نہین لیا ہے اسوقت مدعی گواہی و تحریر وغیرہ وجہ ثبوت کو پیش کرے۔

۵۳ — جس شہر مین مدعا علیہ کا قیام کسیوقت مین بھی ممکن نہین اور مدعی اُس شہر کو کہکر پھر کہے کہ اُس شہر کو مینے نہین کہا اور وہ مدعی اول و آخر خلاف بولتا ہے۔

۵۴ — اور جو کہتا ہے کہ اِسنے میرے ہاتھ سے اسقدر سُونا لیا ہے ایسا کہکر پھر کہے کہ میرے لڑکے کے ہاتھ سے لیا ہے اور جس بات کو حاکم پوچھتا ہی اُسکو ثابت نہین کرتا۔

۵۵ - اور جو خلوت مین گواہون سے گفتگو کرتا ہے اور سوال کو قائم کرنے کے واسطے حاکم سوال کرتا ہے اُسکا جواب نہین دیتا اور جو ایک مقام مین قائم نہین رہتا۔

सद्भिराचरितंयत्स्याधार्मिकैश्चद्विजातिभिः॥ तद्देशकुलजातीनामविरुद्धंप्रकल्पयेत्॥४६॥ अधमर्णार्थसिद्ध्यर्थमुत्तमर्णेनचोदितः॥ दापयेद्धनिकस्यार्थमधमर्णाद्विभावितम्॥४७॥ यैर्यैरुपायैरर्थंस्वंप्राप्नुयादुत्तमर्णिकः॥ तैस्तैरुपायैःसंगृह्यदापयेदधमर्णिकम्॥४८॥ धर्मेणव्यवहारेणछलेनचरितेनच॥ प्रयुक्तंसाधयेदर्थंपंचमेनबलेनच॥४९॥ यःस्वयंसाधयेदर्थमुत्तमर्णोऽधमर्णिकात्॥ नसराज्ञाभियोक्तव्यःस्वकंसन्साधयन्धनम्॥५०॥

۴۶ - دھرماتما اچھے دِج لوگوں نے جس دھرم پر عمل کیا ہے اُس دیش و کُل و ذات کے موافق دھرم کو تجویز کرے -

۴۷ - قرضہ دینے والے نے راجہ کے روبرو اپنے دیئے ہوئے دھن کو ملنے کیواسطے عرض کیا اور گواہ اور تحریر وغیرہ ثبوت سے اُس قرضہ کو ثابت کیا تو راجہ اوسکے دھن کو قرضدار سے دلادے -

۴۸ - جس جس تدبیر سے قرضہ دینے والا اپنے دھن کو پاوے اُس اُس تدبیر سے قرضدار کو پکڑکر راجہ دھن کو دلادے -

۴۹ - دھرم[۱] وبیوہار[۲] (یعنی گواہی و تحریر وغیرہ) و فریب[۳] و آچرت[۴] (یعنی برت اپاس) طاقت[۵] ان پانچو تدبیروں میں سے کسی تدبیر سے اپنے دیئے ہوئے دھن کو وصول کرے -

۵۰ - جو قرض دینے والا اپنے روپیہ کو مقروض آدمیوں سے بذریعہ تدبیر ذاتی کے وصول کرتا ہے اُسکو راجہ منع نکرے کہ ہمارے یہاں نالش کیوں نکی آپ اپنی تدبیر سے کیوں لیتا ہے -

दातव्यंसर्ववर्णेभ्योराज्ञाचौरैर्हृतंधनम्।।राजातदुपयुंजा
नचौरस्याप्नोतिकिल्बिषम्।। ४०।।जातिजानपदान्धर्मान्श्रे
णीधर्मांश्चधर्मवित्।।समीक्ष्यकुलधर्मांश्चस्वधर्मंप्रतिपा-
लयेत्।।स्वानिकर्माणिकुर्वाणादूरेसन्तोऽपिमानवाः।।प्रि
याभवन्तिलोकस्यस्वेस्वेकर्मण्यवस्थिताः।।४२।।नोत्पाद-
येत्स्वयंकार्यंराजानाप्यस्यपूरुषः।।नचप्रापितमन्येनग्रसे
दर्थंकथंचन।।४३।।यथानयत्यसृक्पातैर्मृगस्यमृगयुःपद
म्।।नयेत्तथानुमानेनधर्मस्यनृपतिःपदम्।।४४।।सत्यमर्थं
चसम्पश्येदात्मानमथसाक्षिणः।।देशंरूपंचकालंचव्यव
हारविधौस्थितः।।४५।।

۴۰ - راجہ چور کی چرائی ہوئی چیز کو لیکر سب ورنوں کو دیوے (یعنی جسکی چیز ہے اُسکو دیوی
اگر اُس چیز کو راجہ آپ لے لے تو جو پاپ چور کو ہوتا ہے وہ راجہ کو ہووے

۴۱ - جات دھرم و دیش دھرم و سمپردائے وغیرہ دھرم و کل دھرم ان سب دھرموں کو
دیکھکر اپنے دھرم کو قایم کرے۔

۴۲ - اپنے کرم کو کرتے ہوئے دور بھی رہنے والے آدمی سنسار کو پیارے ہوتے ہین

۴۳ - راجہ و راجہ کے نوکر آپسے کام کو پیدا نکرین اور مدعی و مدعا علیہ کے عرض کئے ہوئے
کام کو دولت کی حرص سے ترک نکرے (اُس مقدمہ کا فیصلہ راستی سے کرے)۔

۴۴ - جسطرح شکاری آدمی زخمی ہرن کے بدن سے زمین پر قطرات خون گرنے سے اُسکا
مقام ڈھونڈھ لیتا ہے اسیطرح راجہ خیال سے دھرم پد کو حاصل کرے

۴۵ - راجہ طریق بیوہار پر قائم ہوکر راستی و اصل مطلب و آتما (یعنی تجویز وغیرہ) و گواہ و دیش
و روپ و کال ان سب کو دیکھے۔

ममायमिति यो ब्रूयान्निधिं सत्येन मानवः ॥ तस्याददीत षड्भा
गं राजा द्वादशमेव वा ॥ ३५ ॥ अनृतं तु वदन्दण्ड्यः स्ववित्तस्यां
शमष्टमम् ॥ तस्यैव वा निधानस्य संख्यायाल्पीयसीं कला-
म् ॥ ३६ ॥ विद्वांस्तु ब्राह्मणो दृष्ट्वा पूर्वोपनिहितं निधिम् ॥ अ-
शेषतोऽप्याददीत सर्वस्याधिपतिर्हि सः ॥ ३७ ॥ यं तु पश्येन्नि
धिं राजा पुराणं निहितं क्षितौ ॥ तस्माद्द्विजेभ्यो दत्त्वार्धमर्धं को
शे प्रवेशयेत् ॥ ३८ ॥ निधीनां तु पुराणानां धातूनामेव च क्षि-
तौ ॥ अर्धभाग्रक्षणाद्राजा भूमेरधिपतिर्हि सः ॥ ३९ ॥

۳۵- جو چیز زمین مین گڑھی ہے اُسکو راجہ کے روبرو لیجاوے اور کوئی دوسرا آدمی کہے کہ چیز ہماری ہے اور صورت اور تعداد کے وسیلہ سے جیسی ہے ویسی ثابت کرے تو اُس چیز کو وہی پاوے اور اُس چیز کا چھٹوان حصّہ راجہ لیوے دفینہ کے مالک کی صفت و بے صفتی کو دیکھکر حصّہ تعین کرے صفت والے سے بارھوان حصّہ اور بے صفت والے سے چھٹوان حصّہ لیوے

۳۶- اگر جھوٹھ بولے تو اپنی چیز کا آٹھوان حصّہ جرمانہ دیوے یا اُس چیز مدفونہ کے حصّہ قلیل کے برابر اپنے گھر سے جرمانہ دیوے اور تعین حصّہ کا موافق طریقہ مرقومہ بالا سمجھنا چاہیے

۳۷- اگر پنڈت برہمن چیز مدفونہ کو پاوے تو وہ اُس تمام چیز کو لیوے کیونکہ وہ سب کا مالک ہے

۳۸- اگر راجہ چیز مدفونہ کو خود پاوے تو اُسمین سے آدھا برہمنون کو دیوے اور آدھا اپنے خزانہ مین رکھے-

۳۹- چیز مدفونہ یا فدیہ کے نصف حصّہ کو لینے والا راجہ ہی کیونکہ حفاظت کرتا ہے اور سب کا مالک ہے-

प्रणष्टस्वामिकंरिक्थंराजात्र्यब्दंनिधापयेत्॥ अर्वाक्त्र्य-
ब्दाद्धरेत्स्वामीपरेणनृपतिर्हरेत्॥ ३०॥ ममेदमितियोब्रूयात्
सोऽनुयोज्योयथाविधि॥ संवाद्यरूपसंख्यादीन्स्वामीतद्द्रव्य
मर्हति॥ ३१॥ अवेदयानोनष्टस्यदेशंकालंच तत्त्वतः॥ वर्णंरू
पंप्रमाणंचतत्समंदण्डमर्हति॥ ३२॥ आददीताथषड्भागं
प्रणष्टाधिगतान्नृपः॥ दशमंद्वादशंवापिसतांधर्ममनुस्मर-
न्॥ ३३॥ प्रणष्टाधिगतंद्रव्यंतिष्ठेद्युक्तैरधिष्ठितम्॥ यांस्तत्र
चौरान्गृह्णीयात्तान्राजेभेनघातयेत्॥ ३४॥

۳۰ - جس دولت کا کوئی مالک نہین ہے اُس دولت کو تین سال تک راجہ اپنے پاس رکھے اگر تین سال کے اندر اسکا مالک آوے تو اُس دولت کو پاوے اور بعد تین سال کے راجہ آپ لیوے -

۳۱ - جو آدمی راجہ کے روبرو جا کر کہے کہ یہ چیز ہماری ہے تو اُس سے بابت صورت و تعداد اُس چیز کے سوال کرے جب وہ اُس چیز کی تعداد و صورت کو صحیح بتلا دے وہ اُس چیز کو پاوے -

۳۲ - جب اوپر کہی ہوئی چیز کی تعداد و رنگ اور مقام و وقت کو نہ بتلا وے تب اُس چیز کے برابر جرمانہ پاوے -

۳۳ - اُس چیز کے چھٹھوین دسوین بارھوین حصّہ کو بطور خرچ حفاظت کے لیوے اچھے لوگون کے دھرم کو خیال کرتا ہوا راجہ حصّہ کا تقرر مالک کے بے صفتی و صاحب صفتی کو دیکھکر کرے -

۳۴ - پڑی ہوئی چیز ملے تو اُسکی حفاظت اچھے لوگون سے کرا کے رکھے اور راجہ اسکے چورانے والون کو بھی ہاتھی سے مروا دے -

अर्थानर्थावुभौ बुद्ध्वा धर्माधर्मौ च केवलौ ॥ वर्णक्रमेण सर्वाणि पश्येत्कार्याणि कार्यिणाम् ॥२४॥ बाह्यैर्विभावयेल्लिंगैर्भावमन्तर्गतं नृणाम् ॥ स्वरवर्णेंगिताकारैश्चक्षुषा चेष्टितेन च ॥२५॥ आकारैरिंगितैर्गत्या चेष्टया भाषितेन च ॥ नेत्रवक्त्रविकारैश्च गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः ॥२६॥ बालदायादिकं रिक्थं तावद्राजानुपालयेत् ॥ यावत्स स्यात्समावृत्तो यावच्चातीतशैशवः ॥२७॥ वशापुत्रासु चैवं स्याद्रक्षणं निष्कुलासु च ॥ पतिव्रतासु च स्त्रीषु विधवास्वातुरासु च ॥२८॥ जीवन्तीनां तु तासां ये तद्धरेयुः स्वबान्धवाः ॥ ताञ्छिष्याच्चौरदण्डेन धार्मिकः पृथिवीपतिः ॥२९॥

۲۴ امر واجب وغیر واجب کو تحقیق کرکے اور صرف دھرم و ادھرم پر لحاظ کرکے (ان یعنی براہمن وکشتری وغیرہ) کے سب مقدمات کو ورنہ وار دیکھے۔

۲۵ - آواز و صورت و قیافہ و اشارہ وغیرہ علامات بیرونی کے ذریعے آدمیوں کے مافی الضمیر کو جان لیوے۔

۲۶ - صورت و بشرہ و رفتار و گفتار و چہرہ و اشارہ چشم انھوں کے وسیلے سے دل کی بات جانی جاتی ہے۔

۲۷ - لاوارث لڑکے کی دولت کو اسکے چچا وغیرہ لیتے ہوں خواہش دولت کو راجہ اسوقت تک اپنے پاس رکھے جبتک اسکا سماورتن کرم ہو اور عہد طفولیت آخر ہو۔

۲۸ - بانجھ ولاولد و خاندان سے نکالی ہوئی پت برتا و رانڈ و روگنی ان سب کی دولت کی حفاظت راجہ کرے کوئی لینے نہ پاوے۔

۲۹ - ان سبھوں کے جیتے جی انکی دولت کو انھوں کے رشتہ دار لیتے ہوں تو دھرماتما راجہ اس دولت کے لینے والے کو چور کی طرح سزا دیوے۔

पादोधर्मस्यकर्त्तारंपादःसाक्षिणमृच्छति॥पादःसभासदः
सर्वान्पादोराजानमृच्छति॥१८॥राजाभवत्यनेनास्तुमुच्य-
न्तेचसभासदः॥एनोगच्छतिकर्त्तारंनिन्दार्होयत्रनिन्द्यते॥
१९॥जातिमात्रोपजीवीवाकामंस्याद्ब्राह्मणब्रुवः॥धर्मप्र-
वक्तानृपतेर्नतुशूद्रःकथंचन॥२०॥यस्यशूद्रस्तुकुरुतेराज्ञो
धर्मविवेचनम्॥तस्यसीदतितद्राष्ट्रंपंकेगौरिवपश्यतः॥२१
॥यद्राष्ट्रंशूद्रभूयिष्ठंनास्तिकाक्रान्तमद्विजम्॥विनश्यत्याशु
तत्कृत्स्नंदुर्भिक्षव्याधिपीडितम्॥२२॥धर्मासनमधिष्ठायसं-
वीतांगःसमाहितः॥प्रणम्यलोकपालेभ्यःकार्य्यदर्शनमा-
रभेत॥२३॥

۱۸- ادھرم کے چار حصے ہوتے ہیں ایک ایک حصہ کو ادھرم کرنیوالا گواہ و وزیر و راجہ یہ چاروں پاتے ہیں۔

۱۹- جہاں نندا کے قابل آدمی نندا کو پاتے ہیں وہاں راجہ پاپ سے علیحدہ ہوتا ہے اور سبھا میں بیٹھنے والے وزیر بھی پاپ سے چھوٹ جاتے ہیں ادھرم کرنیوالے ہی کو پاپ لگتا ہے۔

۲۰- جو ذات ہی میں برہمن ہو اور برہمن کا کرم کچھ بھی نہ کرتا ہو اور مورکھ ہو تو بھی وہ راجہ کو دھرم کا اپدیش کرسکتا ہے اور شودر کیسا ہی ہو وہ اپدیش نہیں کرسکتا۔

۲۱- جس راجہ کے دھرم کا بچار شودر کرتا ہے اس راجہ کا راج اسکے دیکھتے ہی دیکھتے مٹ جاتا ہے جیسی دلدل میں گئو پھنس کر مرجاتی ہے۔

۲۲- جس راج میں شودر اور ناستک بہت ہیں براہمن کشتری و ویش نہیں ہیں وہ تمام راج قحط اور آفت سے پریشان ہوکر جلد مٹ جاتا ہے۔

۲۳- دھرم سبھا میں بیٹھکر کپڑوں سے بدن کو چھپا کر یکدل ہوکر لوکپالوں کو پرنام کرکے کام کا دیکھنا شروع کرے۔

धर्मो विद्धस्त्वधर्मेण सभां यत्रोपतिष्ठते ॥ शल्यं चास्य न कृन्तन्ति विद्धास्तत्र सभासदः ॥१२॥ सभां वा न प्रवेष्टव्यं वक्तव्यं वा समञ्जसम् ॥ अब्रुवन्विब्रुवन्वापि नरो भवति किल्बिषी ॥१३॥ यत्र धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं यत्रानृतेन च ॥ हन्यते प्रेक्षमाणानां हतास्तत्र सभासदः ॥१४॥ धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः ॥ तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत् ॥१५॥ वृषो हि भगवान्धर्मस्तस्य यः कुरुते ह्यलम् ॥ वृषलं तं विदुर्देवास्तस्माद्धर्मं न लोपयेत् ॥ एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ॥ शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति ॥१७॥

۱۲ ادھرم سے بیدھا ہوا دھرم جس سبھا میں رہتا ہے وہ سبھا کے بیٹھنے والے اُس ادھرم کو دور نہیں کرسکتے وے سب سبھا کے بیٹھنے والے ادھرم سے بیدھے گئے ہیں۔

۱۳ سبھا میں جانا چاہیے اگر جانا تو صحیح بات کہنا چاہیے اگر جان کر صحیح نہ بولے یا خلاف بولے تو پاپی ہوتا ہے۔

۱۴ جہاں ادھرم سے دھرم اور جھوٹھ سے سچ مارا جاتا ہے اور دیکھنے والے اسکو دور نہیں کرسکتے وہاں گویا سبھا کے مالک ہی مارے گئے ہیں۔

۱۵ مارا گیا دھرم مارتا ہے اور حفاظت کیا گیا دھرم حفاظت کرتا ہے دھرم ہمکو نہ مارے اسلیئے دھرم کو نہ مارنا چاہیے۔

۱۶ بھگوان جو دھرم ہے اسکو برکھ یعنی بیل کہتے ہیں اور جو اسکو مارتا ہے اسکو برسل کہتے ہیں اسلیئے دھرم کو نابود نکرنا چاہیے۔

۱۷ دھرم ہی دوست ہے اور وہی ساتھ جاتا ہے اور زن و فرزند وغیرہ سب جسم کے ساتھ ہی چھوٹ جاتے ہیں۔ اگر کہو کہ مرنے پر ادھرم بھی ساتھ جاتا ہے وہ بھی دوست ہے اسکا جواب یہ ہے کہ دھرم نتیجہ دلواہ دینے کیواسطے اور ادھرم نتیجہ نامرغوب دینے کیواسطے ساتھ جاتا ہے تو جو نتیجہ دلواہ دینے کیواسطے ساتھ جاتا ہے وہی دوست کہلاتا ہے۔

स्त्रीपुन्धर्मो विभागश्च द्यूतमाह्वय एव च ॥ पदान्यष्टादशैता-
नि व्यवहारस्थिताविह ॥ ७ ॥ एषु स्थानेषु भूयिष्ठं विवादं चर-
तां नृणाम् ॥ धर्मं शाश्वतमाश्रित्य कुर्यात्कार्यविनिर्णयम् ॥
८ ॥ यदा स्वयं न कुर्यात्तु नृपतिः कार्यदर्शनम् ॥ तदा नियु-
ञ्ज्याद्विद्वांसं ब्राह्मणं कार्यदर्शने ॥ ९ ॥ सोऽस्य कार्याणि सं-
पश्येत्सभ्यैरेव त्रिभिर्वृतः ॥ सभामेव प्रविश्याग्र्यामासीनः
स्थित एव वा ॥ १० ॥ यस्मिन्देशे निषीदन्ति विप्रा वेदविदस्त्र-
यः ॥ राज्ञश्चाधिकृतो विद्वान्ब्रह्मणस्तां सभां विदुः ॥ ११ ॥

۷ - استری پرش کا دھرم تقسیم حصص شراکت - قمار بازی و جنگ جانوران وغیرہ اس سلسلہ میں یہ اٹھارہ طرح کے مقدمات مقدم رکھے گئے ہیں اور سب مقدمات انہیں میں شامل ہیں۔

۸ - راجہ ہمیشہ دھرم کی پناہ میں ہو کر ان اٹھارہ طرح کے مقدمات میں سب کارپردازوں کے خاص کاموں کو غور سے دیکھے۔

۹ - جب راجہ آپ کاموں کو ملاحظہ نہ کرے تب پنڈت براہمن کو کام دیکھنے کا حکم دے۔

۱۰ - وہ براہمن عدالت العالیہ میں بیٹھ کر خواہ کھڑا ہو کر تین مشیروں کے ساتھ راجہ کے کام کو دیکھے۔

۱۱ - جس ملک میں ایک براہمن پنڈت وید پڑھے ہوئے تین براہمنوں کے ساتھ مقدمات دیکھنے کے واسطے موافق حکم راجہ کے بیٹھتا ہے اس سبھا کو سری برھما جی کی سبھا جاننا چاہئے۔

یہ پچھلا قول منو کا نارد سمرت ہے کہ راجہ کے سپاہی سبھا شد دھرم شاستر محاسب منشی سونا آگ پانی آٹھ ارکان کارروائی عدالت کے لئے ہیں اسباب میں قول برہسپت و ویاس مندرجہ ویرمترودے وواہار دوار دھرم سوتر و پرہسپت سمرت و متاکشرا و اپرارک سمرت چندرکا پر لائق ملاحظہ ہیں کہ کس کس کام پر کون کون قوم مقرر کرنا چاہئے۔

व्यवहारान्दिदृक्षुस्तु ब्राह्मणैः सह पार्थिवः॥ मंत्रज्ञैर्मंत्रिभि
श्चैव विनीतः प्रविशेत्सभाम्॥ १॥ तत्रासीनः स्थितो वापि पा
णिमुद्यम्य दक्षिणम्॥ विनीतवेषाभरणः पश्येत्कार्याणि
कार्यिणाम्॥ २॥ प्रत्यहं देशदृष्टैश्च शास्त्रदृष्टैश्च हेतुभिः॥
अष्टादशसु मार्गेषु निबद्धानि पृथक्पृथक्॥ ३॥ तेषामाद्य-
मृणादानं निक्षेपोऽस्वामिविक्रयः॥ सम्भूय च समुत्थानं द-
त्तस्यानपकर्म च॥ ४॥ वेतनस्यैव चादानं संविदश्च व्यतिक्र-
मः॥ क्रयविक्रयानुशयो विवादः स्वामिपालयोः॥ ५॥ सी
माविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके॥ स्तेयं च साहसं चैव
स्त्रीसंग्रहणमेव च॥ ६॥

۱- راجہ مع مشیران سلطنت و براہمنان کے مقدمات کے ملاحظہ کی خواہش سے سادی پوشاک پہن کر راج سبھا میں داخل ہو

۲- سبھا میں بیٹھکر خواہ کھڑا ہو کر داہنا ہاتھ اوٹھا کر سادی پوشاک و زیور پہنکر کارپردازان سلطنت کے کاموں کو دیکھے-

۳- داد و ستد قرضہ وغیرہ اٹھارہ طرح کے مقدمات مفصلہ ذیل کو ملک و قوم و رواج عملی و شاستر سے جانے ہوئے گواہ و سوگند وغیرہ کے وسیلہ سے علیحدہ علیحدہ ہر روز غور کرے

۴- اٹھارہ طرح کے مقدمات یہ ہیں داد و ستد قرضہ - امانت - لاوارثی چیز کا بیچنا - شراکت قرضہ وغیرہ سے انکار کرنا-

۵- تنخواہ یا اجرت کا نہ دینا عہد شکنی کرنا - خرید و فروخت میں تکرار و رنج پیدا ہونا - مالک و نوکر کا جھگڑا-

۶- تنازع حدود اراضی - دشنام دہی - مار پیٹ - خفیہ چوری - ظاہرا زبردستی و ڈاکہ زنی عورات کا زبردستی لیجانا-

गत्वाकक्षान्तरंत्वन्यत्समनुज्ञाप्यतंजनम् ॥ प्रविशेद्भोजनार्थंचस्त्रीवृतोऽन्तःपुरंपुनः ॥ २२४ ॥ तत्रभुक्त्वापुनःकिंचित्तूर्यघोषैःप्रहर्षितः ॥ संविशेत्तुयथाकालमुत्तिष्ठेच्चगतक्लमः ॥ २२५ ॥ एतद्विधानमातिष्ठेदरोगःपृथिवीपतिः ॥ अस्वस्थःसर्वमेतत्तुभृत्येषुविनियोजयेत् ॥ २२६ ॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां
राजधर्मोनामसप्तमोऽध्यायः ७

۲۲۴- دوسرے استھان مین جا کر وہان کے آدمیون کو حکم دے کر پھر بھوجن کرنیکو عورتون کے محلات مین داخل ہو۔

۲۲۵- پھر تھوڑا کھانا کھا کر شہنائی کی آواز سے خوش ہو کر خواب مین آرام کرے کسل و محنت کو رفع کر کے وقت مناسب پر خواب سے بیدار ہو۔

۲۲۶- جو راجہ تندرست ہو وہ اس طریق چلے اگر آپ تندرست نہو تو ان سب امور سلطنت کے کرنے کو وزیرون کو حکم دے۔

منوجی کا دھرم شاستر بھرگ جی کی سنگھتا کا ساتوان ادھیاے سماپت ہوا۔

परीक्षिताः स्त्रियश्चैनं व्यजनोदकधूपनैः ॥ वेषाभरणसंशु-
द्धाः स्पृशेयुः सुसमाहिताः ॥२१९॥ एवं प्रयत्नं कुर्वीत यानश-
य्यासनाशने ॥ स्नाने प्रसाधने चैव सर्वालंकारकेषु च ॥२२०॥
भुक्तवान्विहरेच्चैव स्त्रीभिरन्तःपुरे सह ॥ विहृत्य तु यथाका-
लं पुनः कार्याणि चिन्तयेत् ॥२२१॥ अलंकृतश्च संपश्येदा-
युधीयं पुनर्जनम् ॥ वाहनानि च सर्वाणि शस्त्राण्याभरणा-
नि च ॥२२२॥ संध्यां चोपास्य शृणुयादन्तर्वेश्मनि शस्त्रभृ-
त् ॥ रहस्याख्यायिनां चैव प्रणिधीनां च चेष्टितम् ॥२२३॥

۲۱۹- جو عورت خوبصورت اور صاف زیور رکھنے والی اور ایک دل ہونے والی اور امتحان کی ہوئی ہو وہ پنکھا اور پانی اور دھوب اور اسپرس یعنی چھونا ان کاموں کو کرے۔

۲۲۰- اس طریق سے سواری و پلنگ و نشست و غسل و حجامت وغیرہ سب ساتھ تدبیر کے کرے۔

۲۲۱- کھانا کھا کر عورتوں کے ساتھ محل میں بہار کرے اُسکے بعد بوقت موقع پھر امور سلطنت کو دیکھے۔

۲۲۲- پھر زیور اور راج اور پوشاک کو زیب بدن کرکے پہلوانوں اور سواروں اور سلاح خانوں اور جواہر خانوں اور پوشاک خانوں کو بنفس نفیس خود ملاحظہ کرے۔

۲۲۳- وقت شام سندھیا کرکے خلوت گاہ میں مسلح ہو کر دوت و خفیہ گویان کے گزشتہ لائق کاموں کو سنے۔

सहसर्वाः समुत्पन्नाः प्रसमीक्ष्य पराभवम्॥ संयुक्तांश्च-
वियुक्तांश्च सर्वोपायान्सृजेद्बुधः॥२१४॥ उपेतारमुपेयं च स-
र्वोपायांश्च कृत्स्नशः॥ एतत्त्रयं समाश्रित्य प्रयतेतार्थसिद्ध-
ये॥ एवं सर्वमिदं राजा सह संमन्त्र्य मन्त्रिभिः॥ व्यायम्याप्लुत्य
मध्याह्ने भोक्तुमन्तःपुरं विशेत्॥२१६॥ तत्रात्मभूतैः कालज्ञै-
रहार्यैः परिचारकैः॥ सुपरीक्षितमन्नाद्यमद्यान्मन्त्रैर्विषाप-
हैः॥२१७॥ विषघ्नैरगदैश्चास्य सर्वद्रव्याणि योजयेत्॥ वि-
षघ्नानि च रत्नानि नियतो धारयेत्सदा॥२१८॥

۲۱۴ — ایک ہی زمانہ مین خزانہ کا خالی ہونا اور پرکرت کا کوپ اور دوست سے رنج
واقع ہو تو موہ نکرے بلکہ سام وغیرہ جو تدبیرین ہین انمین سے ایک ایک یا سبکو کرے

۲۱۵ — تدبیر تدبیر کا بتانے والا تدبیر کے وسیلے سے جو چیز حاصل ہو ان تینون کا آسرا
کرکے حصول مطلب کیواسطے تدبیر کرے —

۲۱۶ — اسطرح ان باتون کو وزیرون کے ساتھ بچار کرکے اسکے بعد کسرت یا ورزش کرکے
اور وقت دوپہر غسل کرکے کھانا کھانے کیواسطے محل مین داخل ہو —

۲۱۷ — اپنے برابر کال کا جاننے والا دولت وغیرہ پانے سے بھید نہ کھولنے والا ایسا
جو دوست ہو اور زہر کا دور کرنیوالا جو منتر ہے ان سبکے وسیلے سے جس غلہ کا امتحان ہوگیا ہے
اسکو کھاوے —

۲۱۸ — زہر اور بیماری کو فنا کرنے والی جو چیزین ہین انکو سب چیزون مین ملانا چاہیے
اور جو جواہر زہر کے فنا کرنیوالے ہین انکو ہر وقت زیب بدن کرنا مناسب ہے زہر آمیز
غلہ کو دیکھنے سے چکور نام پرند کی آنکھ سرخ ہو جاتی ہے اسواسطے اسکو غلہ دکھلاکر
امتحان لینا چاہیے —

धर्मज्ञं च कृतज्ञं च तुष्टप्रकृतिमेव च ॥ अनुरक्तं स्थिरारम्भं ल-
घुमित्रं प्रशस्यते ॥२०९॥ प्राज्ञं कुलीनं शूरं च दक्षं दातारमे-
व च ॥ कृतज्ञं धृतिमन्तं च कष्टमाहुररिं बुधाः ॥२१०॥ आर्य्य-
ता पुरुषज्ञानं शौर्य्यं करुणावेदिता ॥ स्थौललक्ष्यं च सततमु-
दासीनगुणोदयः ॥२११॥ क्षेम्यां सस्यप्रदां नित्यं पशुवृद्धि-
करीमपि ॥ परित्यजेन्नृपो भूमिमात्मार्थमविचारयन् ॥२१२
॥ आपदर्थं धनं रक्षेद्दारान्रक्षेद्धनैरपि ॥ आत्मानं सततं रक्षे-
द्दारैरपि धनैरपि ॥२१३॥

۲۰۹- اُپکار اور دھرم کا جاننے والا مستقل کام شروع کرنیوالا اچھی خصلت والا محبت سے بھرا ہوا جو دوست ہے وہ نہایت اچھا ہے۔

۲۱۰- جو دشمن پنڈت ہے اور بڑے کل میں پیدا ہوئے ہے اور شورمیر اور چتر اور داتا اور اُپکار جاننے والا اور دھیر ہے وہ بڑا کٹھن ہے یعنے وہ قابو میں نہیں آسکتا ہے یہ بات کو پنڈتون نے کہا ہے۔

۲۱۱- جو راجہ او اسمین بہادر و دھرم زیادہ جاننے والا و شورمیر دکر پال ہر ایک وقت پہ سبت دینے والا ہے اُسکی پناہ میں ہوکر دشمن کے ساتھ جنگ کرے۔

۲۱۲- جو زمین بے عیب اور دھانیہ دینے والی اور ہمیشہ جانورون کی ترقی کرنیوالی ہے اسکو بھی اپنی آتما کی حفاظت کے واسطے ترک کرے یعنے بدون ترک کرنے ایسی زمین کے آتما کی حفاظت نہو سکے تو بھی اُس زمین کو ترک کرے اور آتما کی حفاظت اور طرح سے کرے۔

۲۱۳- وقت مصیبت کے واسطے دولت فراہم کرے اور دولت کے وسیلے سے عورت کی حفاظت کرے اور عورت اور دولت کے وسیلے سے آتما کی حفاظت کرے

सर्व्वं कर्म्मेतमायत्तं विधाने दैवमानुषे ॥ तयोर्दैवमचिन्त्यं तु मानुषे विद्यते क्रिया ॥ २०५ ॥ सह वापि व्रजेद्युक्तः सन्धिं कृत्वा प्रयत्नतः ॥ मित्रं हिरण्यं भूमिं वा सम्पश्यंस्त्रिविधं फलम् ॥ २०६ ॥ पार्ष्णिग्राहं च सम्प्रेक्ष्य तथाक्रन्दं च मण्डले ॥ मित्रादथाप्यमित्राद्वा यात्राफलमवाप्नुयात् ॥ २०७ ॥ हिरण्यभूमिसम्प्राप्त्या पार्थिवो न तथैधते ॥ यथा मित्रं ध्रुवं लब्ध्वा कृशमप्यायतिक्षमम् ॥ २०८ ॥

۲۰۵- دیو کرم اور مانش کرم انھین دونون کرمون کے اختیار مین کرنیکے لائق جو چیزین ہین انھین دیو کرم تو لائق فکر کرنے کے نہین ہے مگر مانش کرم مین بچار ہے یعنے اب جنم مین جو کام کرے اسکو خوب سمجھکر کرے -

۲۰۶- اس طریق سے جنگ کرے اور اگر وہ راجہ دوستی کرے تو جاترا کا پھل (یعنے دوست وزمین وسونا وغیرہ کا ملنا) دیکھکر اسکے ساتھ ملاپ کرے -

۲۰۷- راج منڈل مین پارشن گراہ اور اگرند ان دونون راجاون کی صلاح سے جاترا کرے ورنہ بدون مرضی ان دونون کے جاترا کرنے سے اندیشہ ہے کہ وے دونون فساد برپا کرینگے اسوجہ سے صلاح لیکر جاترا کرنے سے دوست خواہ دشمن سے جاترا کا پھل ملتا ہی

۲۰۸- زمانہ حال مین کم قوت دوست اور زمانہ مستقبل مین صاحب ترقی وقائم دل دوست کو پاکر راجہ جیسی ترقی پاتا ہے ویسا ترقی سونا وزمین پانے سے نہین پاتا -

* پچھلے جنم مین جو پاپ اور پنیہ کئے وہ دیو کرم کہلاتا ہی -
* اس لوک مین جو پاپ و پنیہ کئے وہ مانش کرم کہلاتا ہی -
* پارشن گراہ سے وہ راجہ جو پیچھے رہتا ہو -
* اکرند وہ راجہ ہے کہ جو اس پارشن گراہ کے پیچھے عمل کرتا ہو جو کہ اپنے شمار کے خلاف کام کرتا ہو

त्रयाणामप्युपायानांपूर्वोक्तानामसम्भवे ॥ तथायुध्येत सम्पन्नोविजयेतरिपून्यथा ॥ २०० ॥ जित्वासंपूजयेद्देवान्ब्राह्मणांश्चैवधार्मिकान् ॥ प्रदद्यात्परिहारांश्चख्यापयेदभयानि च ॥ २०१ ॥ सर्वेषान्तुविदित्वैषांसमासेनचिकीर्षितम् ॥ स्थापयेत्तत्रतद्वंश्यंकुर्याच्चसमयक्रियाम् ॥ २०२ ॥ प्रमाणानिचकुर्वीततेषांधर्म्यान्यथोदितान् ॥ रत्नैश्चपूजयेदेनंप्रधानपुरुषैःसह ॥ २०३ ॥ आदानमप्रियकरंदानंचप्रियकारकम् ॥ अभीप्सितानामर्थानांकालेयुक्तंप्रशस्यते ॥ २०४ ॥

۲۰۰- جب تین تدابیر مرقومۂ بالا نہ چل سکین تب ایسے تدبیر سے جنگ کرے جسکے وسیلہ سے فتحیاب ہی ہوا کرے -

۲۰۱- فتح حاصل ہونیکے بعد دیوتاؤن اور دھرماتما براہمنون کا پوجن کرے اور سونا وغیرہ فتح کی ہوئی چیزون کو دیوتا اور رشی لوگون کے واسطے سنکلپ کرکے اُس دیش کے رہنے والون کو بطور معافی دوام کے دیوے اور سب آدمیون کو بیخوف کرے -

۲۰۲- مجملاً سب کا منشا سمجھکر اُس راجہ کی نسل مین جو ہو اُسکو اُسی کی گدی پر بٹھلاوے اور یہ تم کرنا یہ نکرنا ایسا اُس راجہ کو اور اُسکے وزیرون کو سمجھاوے -

۲۰۳- انھون کا جو آچار شاشتر کے موافق دھرم سے شامل ہے اُسکو پرمان کرے اور مع پردھان آدمیون کے رتنون سے راجہ کا پوجن کرے -

۲۰۴- اگرچہ دلخواہ چیزون کا لینا رنج کا دینے والا ہے اور دان یعنی چیزون کا دینا خاطرخواہ آرام و عیش کا دینے والا ہے یہ بات خلقی ہے تاہم خاص وقت پر دینا و لینا اچھا ہوتا ہے اسلیئے اُسوقت دان ہی کرنا چاہیئے -

उपरुध्यारिमासीतराष्ट्रंचास्योपपीडयेत्॥ दूषयेच्चास्यसत-
तंयवसान्नोदकेन्धनम्॥१९५॥भिन्द्याच्चैवतडागानिप्राका-
रपरिखास्तथा॥समवस्कन्दयेच्चैनंरात्रौवित्रासयेत्तथा१९६
॥उपजप्यानुपजपेद्बुध्येतैवचतत्कृतम्॥युक्तेचदैवेयुध्येतज-
यप्रेप्सुरपेतभीः॥१९७॥साम्नादानेनभेदेनसमस्तैरथवापृथ-
क्॥विजेतुंप्रयतेतारीन्नयुद्धेनकदाचन॥१९८॥अनित्यो-
विजयोयस्माद्दृश्यतेयुध्यमानयोः॥पराजयश्चसंग्रामेतस्मा-
द्युद्धंविवर्जयेत्॥१९९॥

۱۹۵- دشمن قلعہ مین رہے یا باہر رہے اور جنگ بھی نہ کرتا ہو لیکن اسکو گھیرے رہے اور اسکی راج کو تکلیف دے اور گھاس اور لکڑی اور پانی انمین ناکارہ چیز ڈالکر خراب کرے -

۱۹۶- تالاب و قلعہ و بالاخانہ و کھائین ان سب کو کھود ڈالے ہمیشہ دشمن کو باخوف کرے اور برچھی لیکر رات کو ڈھکا نام باجہ کی آواز سے زیادہ تکلیف دے -

۱۹۷ جو لوگ وزیر وغیرہ راجہ کے خاندان مین راج لینے کی خواہش رکھتے ہون انکو توڑ پھوڑ سے ملا کر اپنے قابو مین کرے اور انکو دنیا فریب سے جانے کرانے تا بومین ہو یا نہین فتح کی خواہش کرنیوالا راجہ خوف چھوڑ کر جب سب گرہ دشا اچھے ہون تب لڑائی کرے -

۱۹۸- سام - دان - بھید ان مین سے ایک ایک کے وسیلے سے خواہ تینونکے وسیلے سے دشمنون کو فتح کرنے کیواسطے تدبیر کرے نہ صرف جنگ ہی کے وسیلے سے -

۱۹۹- کیونکہ جنگ مین فتح ہوتی بھی ہے اور نہین بھی ہوتی ہے اسواسطے جنگ نکرنا چاہیے -

गुल्मांश्च स्थापयेदाप्तान्कृतसंज्ञान्समन्ततः । स्थाने युद्धे च कुशलानभीरूनविकारिणः ॥ १९० ॥ संहतान्योधयेदल्पान्कामं विस्तारयेद्बहून् । सूच्या वज्रेण चैवैतान्व्यूहेन व्यूह्य योधयेत् ॥ १९१ ॥ स्यन्दनाश्वैः समे युध्येदनूपे नौद्विपैस्तथा । वृक्षगुल्मावृते चापैरसिचर्मायुधैः स्थले ॥ १९२ ॥ कुरुक्षेत्रांश्च मत्स्यांश्च पंचालान्शूरसेनजान् । दीर्घांल्लघूंश्चैव नरानग्रानीकेषु योजयेत् ॥ १९३ ॥ प्रहर्षयेद्बलं व्यूह्य तांश्च सम्यक्परीक्षयेत् । चेष्टाश्चैव विजानीयादरीन्योधयतामपि ॥ १९४ ॥

۱۹۰- جو حصہ فوج کا مع سیناپت و بلادھیکش کے نیک آدمیون سے شامل ہو وہ قیام کرنے اور بھاگنے اور لڑنے کیواسطے بھیری شنکھ وغیرہ باجونکے اشارون کو سمجھتا ہو اور قیام و جنگ مین ہوشیار اور خوف و بغاوت سے خالی ہو ایسے حصہ فوج کو دور دور سب دشاؤن مین دشمن کے روکنے اور اسکی خواہش دلی جاننے کیواسطے حکم دیوے۔

۱۹۱- فوج تھوڑی ہو تو ملکر جنگ کرے اور بہت ہو تو موافق خواہش دل کے متفرق کرکے جنگ کرے سوچی بیوہ بجر بیوہ کرکے جنگ کرے۔

۱۹۲- برابر زمین مین رتھ اور گھوڑونکے وسیلے سے جنگ کرے اور زمین پر آب مین کشتی و ہاتھی سے جنگ کرے اور درخت اور جھاڑی والی زمین پر تیر کمان سے اور صاف زمین پر ڈھال تلوار سے جنگ کرے۔

۱۹۳- کرکشیتر متسیہ پنچال سورسین ان ملکون مین جو آدمی چھوٹے یا بڑے پیدا ہوئے ہون انکو آگے کرکے جنگ کرے۔

۱۹۴- بیوہ آراستہ کرکے فوج کو خوش و خرم کرے اور اس فوج کا اچھی طرح امتحان لیوے اور دشمنون کے ساتھ لڑتے ہوئے فوج کی حالت کو دریافت کرے کہ وہ دشمن کے ساتھ ملی ہے یا نہین۔

दंडव्यूहेनतन्मार्गंयायात्तुशकटेनवा।।वराहमकराभ्यांवासूच्या
वागरुडेनवा।।१८७।।यतश्चभयमाशंकेत्ततोविस्तारयेद्बलं।।प-
द्मेनचैवव्यूहेननिविशेतसदास्वयम्।।१८८।।सेनापतिबलाध्यक्षौ
सर्वदिक्षुनिवेशयेत्।।यतश्चभयमाशंकेत्प्राचींतांकल्पयेद्दिशं१८९

۱۸۷- ڈنڈ - سکٹ - براہ - مکر - شوچی - گرڑان بیوہ کرکے چلے یعنی جب چاروطرف سے خوف پیدا ہوتب ڈنڈ بیوہ سے جاوے جب پیچھے خوف پیدا ہوتب سکٹ بیوہ سے جاوے جب پہلوؤن خوف پیدا ہوتب براہ اور گرڑ بیوہ سے جاوے جب آگے پیچھے خوف پیدا ہوتب مکر بیوہ جاوے جب آگے خوف پیدا ہوتب سوچی بیوہ سے جاوے

۱۸۸- جسطرف خوف کا خیال ہو اسطرف فوج کو بڑھاوے پدم بیوہ کرکے شہر سے نکلکر راجہ ہر وقت پوشیدہ رہے -

۱۸۹- سیناپت اور بلادھیکش کو چاروں اطراف مین رکھنا چاہیے اور جس دشا سے خوف کا خیال ہو اسکو پورب دشا جانو -

---

ڈنڈ کی صورت فوج کو بنانا ڈنڈ بیوہ کہلاتا ہے شرح اسکی یہ ہے کہ بلادھیکش آگے درمیان مین راجہ پیچھے افسر فوج دونوں پہلوؤن ہاتھی اسکے روبرو گھوڑا پھر پیادہ اسطرح سے لمبا اور چاروطرف سے برابر ہو وہ ڈنڈ بیوہ کہلاتا ہے -

+ آگے پتلا مثل گاڑی کے اور پیچھے موٹا یہ سکٹ بیوہ کہلاتا ہے -

* آگے پیچھے پتلا ہو بیچ مین موٹا ہو وہ براہ بیوہ کہلاتا ہے -

۱- آگے پیچھے موٹا ہو بیچ مین پتلا ہو وہ مکر بیوہ کہلاتا ہے -

× چیونٹی کی پانت کے مانند آگا پیچھا برابر ہو اور پہلوان آگے رہین یہ سوچی بیوہ کہلاتا ہے -

۱ آگا پیچھا پتلا ہو اور بیچ مین بہت موٹا ہو وہ گرڑ بیوہ کہلاتا ہے -

++ چاروطرف برابر فوج اور درمیان مین راجہ اسکو پدم بیوہ کہتے ہین -

+++ دس ہاتھی دس گھوڑا دس پیادہ دس رتھہ کا ایک مالک کرنا اسکا نام پتک کہلاتا ہے دس پتک کا ایک سیناپت کہلاتا ہے دس سیناپت کا مالک بلادھیکش کہلاتا ہے -

मार्गशीर्षेशुभेमासियायाद्यात्रांमहीपतिः ॥ फाल्गुणंवाथ
चैत्रंवामासौप्रतियथाबलम् ॥१८२॥ अन्येष्वपितुकालेषु-
यदापश्येद्ध्रुवंजयम् ॥ तदायायाद्विगृह्यैवव्यसनेचोत्थितेरिपोः
॥१८३॥ कृत्वाविधानमूलेतुयात्रिकंचयथाविधि ॥ उपगृ-
ह्यास्पदंचैवचारान्सम्यग्विधायच ॥१८४॥ संशोध्यत्रिविधं
मार्गंषड्विधंचबलंस्वकम् ॥ सांपरायिककल्पेनयायादरिपु
रंशनैः ॥१८५॥ शत्रुसेविनिमित्रेचगूढेयुक्ततरोभवेत् ॥ गतप्र-
त्यागतेचैवसहिकष्टतरोरिपुः ॥१८६॥

۱۸۲- راجہ شبھ مہینہ اگھن مین دشمن کے اوپر جاترا کرے خواہ پھاگن یا چیت مین اپنی فوج کی موافق جاترا کرے

۱۸۳- دوسرے وقت پر بھی جب یقیناً اپنی فتح جانے تب بگاڑ کرکے جاوے اور دشمن کے اوپر جب دکھ دیکھے تب بھی جاوے-

۱۸۴- اپنے ملک کی حفاظت کرکے اور دستور کے موافق جاترا کے وقت کے کام کو کرکے ذریعے سواری و ہتھیار و زرہ وغیرہ بدرستی تمام ساتھ لیکر دشمن کے ملک مین جاکر جس سے اپنا قیام ہو اوسکو لیکر اور دشمن کے نوکرون کو اپنے اختیار مین کرکے اور دشمن کے ملک کا حال جاننے واسطے کاٹپک وغیرہ چار قسم کے آدمیون کو رخصت کرے-

۱۸۵- تین طرح کے جو راستہ ہین (یعنی جانگل انوپ اٹپک) انکو صاف کرکے (یعنی درخت وغیرہ کاٹکر اور نیچی اونچی زمین برابر کرکے) اور چھ طرح کے زور مین (یعنی ہاتھی گھوڑا رتھ پیادہ فوج - کاریگر) ان سب کو خوراک و ادویہ و دستکار وغیرہ سے درست کرکے سنگرام مین نیک طریق سے جلد دشمن کے شہر مین جاوے-

۱۸۶- جو اپنا دوست دشمن کی خدمتگذاری پوشیدہ کرتا ہو اور جو نوکر وغیرہ اپنے یہان سے نکلکر پھر آئے ہون ان دونون سے ہوشیار رہے کیونکہ انکا اٹھایا ہوا فساد بڑی مشکل سے رفع ہوتا ہے

* دیکھو اشلوک ۱۵۴-

यदितत्रापिसंपश्येद्दोषसंश्रयकारितम्॥ सुयुद्धमेवतत्रापि निर्विशंकःसमाचरेत्॥ १७६॥सर्व्वोपायैस्तथाकुर्य्यान्नीतिज्ञःपृथिवीपतिः॥ यथास्याभ्यधिकानस्युर्मित्रोदासीनशत्रवः॥ १७७॥ आयतिंसर्व्वकार्य्याणांतदात्वंचविचारयेत्॥ अतीतानांचसर्व्वेषांगुणदोषौचतत्वतः॥ १७८॥ आयत्यांगुणदोषज्ञस्तदात्वेक्षिप्रनिश्चयः॥ अतीतेकार्य्यशेषज्ञःशत्रुभिर्नाभिभूयते॥ १७९॥ यथैनंनाभिसंदध्युर्मित्रोदासीनशत्रवः॥ तथासर्व्वंसविदध्यादेषसामासिकोनयः॥ १८०॥ यदातुयानमातिष्ठेदरीराष्ट्रंप्रतिप्रभुः॥ तदानेनविधानेनयायादरिपुरंशनैः॥ १८१॥

۱۷۶- جب پناہ لینے مین بھی کچھ نقصان سمجھے تب شک کو دور کرکے اچھی لڑائی کرے-

۱۷۷- نیت جاننے والا راجہ سب تدبیرون سے اپنے کو ایسا کرے جسمین دوست اداسین ودشمن یہ سب اپنے سے بڑے نہونے پاوین-

۱۷۸- تمام کامون کا ودش اور گن زمانہ ماضی وحال ومستقبل سے نسبت رکھنے والا ان سب کو کما حقہ خیال کرے-

۱۷۹- ایسا خیال کرنے والا راجہ دشمنون سے رنج نہین پاتا-

۱۸۰- مجملاً سب نیت کا خلاصہ یہ ہے کہ دشمن اور دوست اور اداسین سب تکلیف نہ دے سکین ایسی تدبیر کرے-

۱۸۱- جب دشمن کے اوپر جانے کی خواہش ہو تب موافق تدبیر مندرجہ اشلوک بالا کے آہستہ آہستہ دشمن کے شہر مین جاوے-

यदाप्रकृष्टामन्येतसर्वास्तुप्रकृतीर्भृशम्॥ अत्युच्छ्रितंतथा
त्मानंतदाकुर्वीतविग्रहम्॥१७०॥ यदामन्येतभावेनहृष्टंपु-
ष्टंबलंस्वकम्॥ परस्यविपरीतंचतदायायाद्रिपुंप्रति॥१७१॥
यदातुस्यात्परिक्षीणोवाहनेनबलेनच॥ तदासीतप्रयत्नेन
शनकैःसान्त्वयन्नरीन्॥ १७२॥मन्येतारिंयदाराजासर्वथा
बलवत्तरम्॥ तदाद्विधाबलंकृत्वासाधयेत्कार्य्यमात्मनः
॥ १७३॥ यदापरबलानान्तुगमनीयतमोभवेत्॥ तदातुसं-
श्रयेत्क्षिप्रंधार्म्मिकंबलिनन्नृपम्॥ १७४॥ निग्रहंप्रकृती-
नांचकुर्य्याद्योऽरिबलस्यच॥ उपसेवेततंनित्यंसर्वयत्नैर्गु-
रुंयथा॥ १७५॥

۱۷۰ - جب اپنی پرکرت کو بلوان دیکھے اور اپنے کو نہایت اونچا دیکھے تب بگاڑ کرے

۱۷۱ - جب اپنی فوج کو زور آور صاحب ہمت دیکھے اور دشمن کی فوج اسکے برخلاف دیکھے تب دشمن کے اوپر چڑھائی کرے۔

۱۷۲ - جب سواری و فوج اپنے پاس نہو تب دشمن کو سام تمام تدبیر سے اپنے قابو مین کرکے اپنے مقام پر رہے۔

۱۷۳ - جب دشمن کو سب طرح سے زور آور جانے تب اپنی فوج کے دو حصہ کرے یعنی کچھ فوج لیکر آپ قلعہ مین رہے اور کچھ لڑنے کو بھیجے اپنے کام کو اسطرح سدھ کرے۔

۱۷۴ - جب جانے کہ دشمن سے بھاگینگے تب جلدی سے زور آور دھرماتما راجہ کی پناہ لیوے۔

۱۷۵ - جو راجہ دشمن کی پرکرت اور فوج کو قابو مین کرنیکی طاقت رکھتا ہو اسکی خدمت ہمیشہ اسطرح کرے کہ جسطرح گرو کی کرتے ہین۔

एकाकिनश्चात्ययिके कार्ये प्राप्ते यदृच्छया ॥ संहतस्य च मित्रेण द्विविधं यानमुच्यते ॥ १६५ ॥ क्षीणस्य चैव क्रमशो दैवात्पूर्वकृतेन वा ॥ मित्रस्य चानुरोधेन द्विविधं स्मृतमासनम् ॥ १६६ ॥ बलस्य स्वामिनश्चैव स्थितिः कार्य्यार्थसिद्धये ॥ द्विविधं कीर्त्यते द्वैधं षाड्गुण्यगुणवेदिभिः ॥ १६७ ॥ अर्थसंपादनार्थं च पीड्यमानस्य शत्रुभिः ॥ साधुषु व्यपदेशार्थं द्विविधः संश्रयः स्मृतः ॥ १६८ ॥ यदावगच्छेदायत्यामाधिक्यं ध्रुवमात्मनः ॥ तदात्वे चाल्पिकां पीडां तदा सन्धिं समाश्रयेत् ॥ १६९ ॥

۱۶۵۔ وقت دربپیش کا ضروری آپ اکیلا دشمن پر چڑھائی کرے یہ پہلی چڑھائی ہے اور دوست کی مدد سے چڑھائی کرے یہ دوسری چڑھائی ہے۔

۱۶۶۔ پہلے جنم کے پاپ سے یا اس جنم کے پاپ سے ہاتھی و گھوڑا دولت وغیرہ ہاتھ سے نکلجا دیں اسوقت دوسرے راجہ پر چڑھائی نکرے خواہ دولت و ہاتھی و گھوڑا وغیرہ سامان اپنے پاس موجود ہے اور جانتیں دوست کی حفاظت نہیں ہوسکتی تب اسکے واسطے بچانا چاہیئے۔ یہ دو طرحکا قیام ہے۔

۱۶۷۔ اپنے کام سدّھ ہونیکے واسطے ہاتھی و گھوڑا وغیرہ و سنیاپت (یعنے سپہ لار) کو دشمن کے کیتے ہوئے فسادو دور کرنے کیواسطے ایک جگہہ پر قائم رکھنا یہ پہلا بھید ہوا اور قلعہ بین مع افسر تمام فوج راجہ کا قائم ہونا یہ دوسرا بھید ہے۔

۱۶۸۔ دشمن سے دکھی ہو خواہ دشمن سے دکھہ نہووے ان دو فائدون کے لئے طاقتور راجہ کی پناہ لیوے یہ دو طرح کی پناہ ہے۔

۱۶۹۔ جب لڑائی کے پیچھے اپنی لڑائی کو یقیناً جانے اور اسوقت تھوڑے ہی دھن وغیرہ کا نقصان دیکھے تب صلح کرے۔

तान्सर्व्वानभिसन्दध्यात्सामादिभिरुपक्रमैः ॥ व्यस्तैश्चैवसमस्तैश्चपौरुषेणनयेनच ॥ १५९ ॥ सन्धिंचविग्रहंचैवयानमासनमेवच ॥ द्वैधीभावंसंश्रयंचषड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा ॥ १६० ॥ आसनंचैवयानंचसन्धिंविग्रहमेवच ॥ कार्य्यंवीक्ष्यप्रयुञ्जीतद्वैधंसंश्रयमेवच ॥ १६१ ॥ सन्धिंतुद्विविधंविद्याद्राजाविग्रहमेवच ॥ उभेयानासनेचैवद्विविधःसंश्रयःस्मृतः ॥ १६२ ॥ समानयानकर्म्माचविपरीतस्तथैवच ॥ तदात्वायतिसंयुक्तःसन्धिर्ज्ञेयोद्विलक्षणः ॥ १६३ ॥ स्वयंकृतश्चकार्यार्थमकालेकालएववा ॥ मित्रस्यचैवापकृतेद्विविधोविग्रहःस्मृतः ॥ १६४ ॥

۱۵۹- ان سب راجاؤن کو سام وغیرہ چار تدبیرون مین سے جیسا موقع ہو ایک ایک یا چار کے وسیلے سے اور اپنی فوج و ہمت سے قابو مین کرنا چاہئیے -

۱۶۰- صلح و بگاڑ و دشمن کے اوپر چڑھائی و قیام و بھید و کسی زور آور راجہ کی پناہ لینا انہ چھہ باتون کو ہمیشہ خیال کرنا چاہئیے -

۱۶۱- کام کا موقع دیکھکر منجملہ ان چھہ باتون کے جہان جسکی ضرورت ہو وہان اسکو کرے -

۱۶۲- صلح - بگاڑ - چڑھائی - قیام - بھید - پناہ لینا - یہ چھہ باتین دو دو طرح کی ہین -

۱۶۳- اسوقت یا زمانہ آیندہ مین نتیجہ ملنے کے واسطے ایک راجہ کے ساتھہ دوسرا راجہ پر چڑھائی کرنا یہ سمان یان کرنا نام صلح کہاتی ہے اور اگر تم یہان جاوگے تو ہم وہان جائینگے یہ کہکر صلح کرے تو وہ اسمان یان کرنا نام صلح ہے -

۱۶۴- وقت پر خواہ بے وقت اپنی خواہش سے آپ بگاڑ کیا یہ پہلا بگاڑ ہوا اور اپنے دوست کی توہین دیکھکر توہین کرنیوالے سے بگاڑ کیا وہ دوسرا بگاڑ ہوا -

मध्यमस्य प्रचारं च विजिगीषोश्च चेष्टितम् ॥ उदासीनप्रचारं च शत्रोश्चैव प्रयत्नतः ॥ १५५ ॥ एताः प्रकृतयो मूलं मण्डलस्य समासतः ॥ अष्टौ चान्याः समाख्याता द्वादशैव तु ताः स्मृताः ॥ १५६ ॥ अमात्यराष्ट्रदुर्गार्थदण्डाख्याः पंच चापराः ॥ प्रत्येकं कथिता ह्येताः संक्षेपेण द्विसप्ततिः ॥ १५७ ॥ अनन्तरमरिं विद्यादरिसेविनमेव च ॥ अरेरनन्तरं मित्रमुदासीनं तयोः परम् ॥ १५८ ॥

۱۵۵- دشمن[1] دشمن[2] فتح کی خواہش کرنیوالا مدھیم[3] اداسین[4] ان چارو کی خواہش لی دریافت کرے اور بچارے۔

۱۵۶- راج منڈل کی یہ چار مول پرکرت ہین آٹھ ساکھا پرکرت ہین[5] یہ سب ملکر بارہ ہوتی ہین

۱۵۷- چار مول پرکرت اور آٹھ ساکھا پرکرت انھون مین ہر ایک کی پانچ پانچ دبیہ پرکرت[6] ہین یہ سب ملکر بہتر پرکرت ہین۔

۱۵۸- اپنے راج کے سامنے کا راجہ دشمن ہے اور اسکی سیوا کرنے والا بھی دشمن ہے اس راجہ کے ملک سے آگے جو راجہ ہو وہ دوست ہے اور دوست سے آگے جو راجہ ہو وہ اداسین ہے۔

[3] مدھیم اسکو کہتے ہین کہ جو دشمن و دشمن فتح چاہنے والے ان دونونکے ملک کے بیچ مین راج رکھتا ہو اور انھین دونون راجاؤنکی صلح و جنگ کرا دینے کی طاقت رکھتا ہو۔

[4] اداسین وہ ہے کہ جو دشمن و فتح چاہنے والے و مدھیم ان تینون کی صلح و جنگ کرا دینے کی طاقت رکھتا ہو۔

[5] آٹھ ساکھا پرکرت یہ ہین دشمن کے ملک کے آگے کا دوست۔ دشمن دوست دوست کا دوست۔ دشمن کے دوست کا دوست پارشن گراہ آکرند پارشن گراہا سار آکرند اسار۔

[6] پانچ دبیہ پرکرت یہ ہین۔ وزیر۔ راج۔ قلعہ۔ دولت۔ سزا۔

कृत्स्नंचाष्टविधंकर्म्मपंचवर्गंचतत्त्वतः॥ अनुरागापरागौ-चप्रचारंमण्डलस्यच॥ १५४॥

۱۵۴ ۔ آٹھہ کامون کو اور ستّودھانت سے پانچ برگ کو بھی بچارے اور دوسرے راجاؤن
اور اپنے وزیرون کی محبت و دشمنی کو جانکر اُنکی تدبیر کرے ۔

ا ۔ آٹھہ کام یہ ہین ۔ رعیت سے محصول لینا ۔ نوکرون کی تنخواہ تقسیم کرنا اُس کو لالچ یا پرلوک کے واسطے جو کام ہین
انکو کرنا اور کرانا اِن باتون کا حکم وزیرونکو دینا اور کام مین شک ہو تو بھی حکم دینا یہ جو بارہ لکھا ہوا ہین جو ہارے ہین اُنسے مواف حکم سنتہ
کے دھن لینا یا بیوپارکو پرانچت کرانا یعنی جنھون نے ورن آشرم کو بگاڑ لیا ہو اُنسے پرائشچت کراکی پھر اُنکو اُس راہ پہ چلانا پانچ برگ یہ
ہین ۔ جو شخص دوسرے کے دل کا حال جانےوالا یعنی بخوف تقریر کرنیوالا و کپٹ بیوہار کرنیوالا ہے ایسا آدمی جیوکا کے واسطے
آوے تو اوسکو ان باتون سے اپنا کرکے خلوت مین اُس سے کہے کہ جسکا کام بُرا دیکھو فوراً ہم سے کہو سنیاس آشرم سے
جو بھرشٹ ہو گئے یعنے اُس درجہ سے گر گئے ہین اونکا دوش تو جہان مین مشہور ہی انکو صاحب عقل و صاحب طہارت کرکی
اور بہت پیدایش والے مٹھ مین جگہہ دیکر مثل بالا اُنسے کہے اور جس زمین مین دھان پیدا ہو اُس مین کو جیوکا کے واسطے دیوے
وہ بھرشٹ سنیاسی راج کاج کرنیوالے اور سنیاسیونکو کھانا کپڑا دیا کرے ۔ جو شخص جیوکا نہین رکھتا اور کھیتی کا کام
کرنیوالا ہے اُسکو صاحب عقل اور صاحب طہارت کرکے خلوت مین مثل بالا اُس سے گفتگو کرے اور اپنی زمین کھیتی کرنیکے واسطے دے ۔
جو دیشیو جیوکا نہین رکھتا اُس سے مثل سابق گفتگو کرکے دھن اور مکان کو دیکر اپنے اختیار مین کرکے اُس سے دیشیہ کا کام
کراوے ۔ مونڈ مونڈا وے ہو یا جٹا رکھائے ہو اور جیوکا نہ رکھتا ہو اُسکو پوشیدہ معاش دیکر مثل بالا خلوت مین گفتگو کری
اور وہ کٹی بہت شدت اور چیلے چیلون کے ساتھ بیٹھا کرے مہینہ دو مہینہ سب کے آگے مٹھی بھر بیر وغیرہ کھاے
اور رات کو جب کوئی نجانے سب طرح کا بھوجن کرے اور اُسکے چیلے اُسکی کرامات کو مشہور کرین کہ گرو جی ماضی و حال
و استقبال تینون زمانون کا حال جانتے ہین اس سبب سے لوگ اپنے مطلب کو کہینگے یہ پانچو سلسلہ وار کاپٹک
اود استھت ۔ گرہ پت ۔ بیدک ۔ تاپس کہلاتے ہین پس اِن ذریعون سے اپنا مطلب حاصل کرے ۔

जडमूकान्धबधिरांस्तिर्यग्योनान्वयोतिगान् ॥ स्त्रीम्लेच्छव्या-
धितव्यंगान्मंत्रकालेऽपसारयेत् ॥१४९॥ भिन्दन्त्यवमतामं-
त्रंतिर्य्यग्योनास्तथैवच ॥ स्त्रियश्चैवविशेषेणातस्मात्तत्राहृ-
तोभवेत् ॥१५०॥ मध्यंदिनेऽर्द्धरात्रेवा विश्रान्तो विगतक्लमः ॥
चिन्तयेद्धर्म्मकामार्थान्सार्द्धंतैरेकएववा ॥१५१॥ परस्परविरु-
द्धानांतेषांचसमुपार्जनम् ॥ कन्यानांसम्प्रदानंचकुमाराणां
चरक्षणम् ॥१५२॥ दूतसम्प्रेषणांचैवकार्य्यशेषंतथैवच ॥
अन्तःपुरप्रचारंचप्रणिधीनांचचेष्टितम् ॥१५३॥

۱۴۹۔ باولا گونگا۔ اندھا بہرا پرند۔ بڈھا یعنی ۸۰ برس سے زیادہ عمر کا مکھہ عورت مریض ایک عضو نہ رکھنے والا ان سب کو وقت صلاح ومشورہ کے اپنے پاس نہ رکھے۔

۱۵۰۔ یہ سب پہلے جنم کے پاپ سے ایسے ہوتے ہین اسلیئے اپان پاکر بھید کو ظاہر کردیتے ہین اور پرند اور بڈھے اور عورت انکی عقل قائم نہین رہتی اسوجہ سے یہ بھی بھید ظاہر کرتے ہین اسواسطے وقت مشورہ انتظام ملک کے یہ لوگ پاس نہ رہنے پاوین۔

۱۵۱۔ دوپہر دن یا آدھی رات کے وقت آرام وبیفکری سے ان مشیرون کے ساتھہ یا اکیلا آپہی دھرم وارتھہ کرو کام بچار کرے۔

۱۵۲۔ دھن ملنے کیواسطے ایسی تدبیر سوچے کہ جسمین دھرم ارتھہ کام جو باہم مختلف ہین انکون کا برودھ نہووے اپنے کام سدھ ہوتے کیواسطے کنیان کا دان اور بیٹون شاستر کے موافق پڑھانے سکھانے کیواسطے راج کمارون کی حفاظت ان باتون کو بھی بچار کرے۔

۱۵۳۔ سفیر ووکیل کو بھیجنا باقی رہا ہوا کام شہر کے اندر کا چلن دوسرے راجاؤن کا حال لانیوالا جو شخص ہے اسکے دل کی خواہش کو جاننا ان سب باتون کو بھی بچار کرے۔

विक्रोशन्त्योयस्यराष्ट्राद्ध्रियन्तेदस्युभिः प्रजाः ।। सम्पश्यतः स-
भृत्यस्यमृतः सनतुजीवति ।। १४३ ।। क्षत्रियस्यपरोधर्मः प्र-
जानामेवपालनम् ।। निर्दिष्टफलभोक्ताहिराजाधर्मेणयुज्य-
ते ।। १४४ ।। उत्थायपश्चिमेयामेकृतशौचः समाहितः ।। हुताग्नि
र्ब्राह्मणांश्चार्च्यप्रविशेत्सशुभांसभाम् ।। १४५ ।। तत्र स्थितः प्र-
जाः सर्वाः प्रतिनन्द्य विसर्जयेत् ।। विसृज्यचप्रजाः सर्वामंत्रये
त्सहमंत्रिभिः ।। १४६ ।। गिरिपृष्ठंसमारुह्यप्रासादंवारहोगतः
।। अरण्ये निःशलाकेवामंत्रयेदविभावितः ।। १४७ ।। यस्य-
मंत्रंनजानन्तिसमागम्यपृथग्जनाः ।। सकृत्स्नांपृथिवींभुंक्ते
कोशहीनोऽपिपार्थिवः ।। १४८ ।।

۱۴۳ جس راجہ اور راجہ کے اہلکارون کے دیکھتے ہوئے اُسکے راج مین چورون سے لوٹی ہوئی پرجا پکارتی ہے وہ راجہ زندہ نہین ہے بلکہ مرگیا ہے۔

۱۴۴۔ پرجا کو پالنا کشتریون کا پرم دھرم ہے جو راجہ شاستر کے موافق کام کرتا ہو اُسکو دھرماتما کہتے ہین۔

۱۴۵۔ پہر رات باقی رہے اُٹھکر اشنان وغیرہ کرکے یکدل ہوکر اگن ہوتر اور براہمن کا پوجن کرکے دربار مین داخل ہو۔

۱۴۶۔ دربار مین بیٹھکر سب رعایا کو دیکھ بھال کر بول چال کر رخصت کرے بعدہ وزیرون کے ساتھ انتظام ملک کی بابت مشورہ کرے۔

۱۴۷۔ پہاڑ یا بالاخانہ یا جنگل وغیرہ مقام خلوت مین بیٹھکر لگاڑنے والے آدمیون کو دور کرکے پنچانگ والی صلاح کا مشورہ کرے۔

۱۴۸۔ سوائے مشیرون کے اور لوگ میل ملاپ کرکے جس راجہ کے مشورہ کو نہین جانتے ہین وہ راجہ اگرچہ بے زر ہو تو بھی پرتھوی پر راج کرسکتا ہے۔

यत्किंचदपिवर्षस्यदापयेत्करसंज्ञितम्॥ व्यवहारेणजीवंतं
राजाराष्ट्रेपृथक्जनम्॥१३७॥ कारुकाञ्छिल्पिनश्चैवशूद्रां
श्चात्मोपजीविनः॥ एकैकंकारयेत्कर्ममासिमासिमहीपतिः
॥१३८॥ नोच्छिन्द्यादात्मनोमूलंपरेषांचातितृष्णया॥ उच्छि
न्दन्ह्यात्मनोमूलमात्मानंतांश्चपीडयेत्॥१३९॥ तीक्ष्णश्चै-
वमृदुश्चस्यात्कार्यंवीक्ष्यमहीपतिः॥ तीक्ष्णश्चैवमृदुश्चैवरा
जाभवतिसम्मतः॥१४०॥ अमात्यमुख्यंधर्मज्ञंप्राज्ञंदान्तं-
कुलोद्गतम्॥ स्थापयेदासनेतस्मिन्खिन्नःकार्येक्षणेनृणा
म्॥१४१॥ एवंसर्वंविधायेममितिकर्तव्यमात्मनः॥ युक्तश्चै
वाप्रमत्तश्चपरिरक्षेदिमाःप्रजाः॥१४२॥

۱۳۷- راج مین چھوٹے آدمیون سے بھی تھوڑا سا کچھ ٹیکا وغیرہ سالتمام مین بطور محصول کے لیوے

۱۳۸- رسوئی بنانیوالے وہر قسم کے کاریگر و شودر و جسم کی تکلیف سے اوقات بسر کرتیوہے (پلیدار وغیرہ) ان سبھون سے ہر مہینہ مین ایکدن کام کراوے انکا یہی محصول ہے-

۱۳۹- اگر تقاضاے محبت محصول رعیت سے نہ لیوے تو راجہ اپنی جڑ اوکھاڑتا ہے- اور حرص سے زیادہ محصول لیوے تو بھی اس سبب سے ان دونون کامون کو نہ کرے اگر کرے تو وہ راجہ آپکو اور رعیت کو دکھی کرتا ہے-

۱۴۰- راجہ کام کو دیکھکر کام کے موافق نرم و سخت ہووے (یعنی اچھا کام دیکھکر نرم ہو اور برا کام دیکھکر سخت ہو) ایسا راجہ سب کو اچھا معلوم ہوتا ہے-

۱۴۱- آپ مقدمات فیصل کرنیمین تکلیف پاوے تو اپنی جگہ پر ایسے برہمن کو بٹھلاوے جو کہ وزیر اعظم ہو اور دھرم کا جاننے والا اور نفس پر غالب اور خاندانی ہو

۱۴۲- اسطرح اپنے کرنے کے لائق کامون کو تجویز کرکے بیہودہ پن کو چھوڑکر مشغولی سے تمام رعایا کی حفاظت کرے

आददीताथषड्भागंद्रुमांसमधुसर्पिषाम्॥ गन्धौषधिरसा-
नांचपुष्पमूलफलस्यच॥१३१॥पत्रशाकतृणानांचचर्मणां
वैदलस्यच॥ मृन्मयानांचभाण्डानांसर्वस्याश्ममयस्यच ॥
१३२॥ म्रियमाणोऽप्याददीतनराजाश्रोत्रियात्करम्॥ नचक्षु-
धाऽस्यसंसीदेच्छ्रोत्रियोविषयेवसन्॥१३३॥ यस्यराज्ञस्तुवि
षयेश्रोत्रियःसीदतिक्षुधा॥ तस्यापितत्क्षुधाराष्ट्रमचिरेणैव
सीदति॥१३४॥ श्रुतवृत्तेविदित्वास्यवृत्तिंधर्म्यांप्रकल्पयेत्॥
संरक्षेत्सर्वतश्चैनंपितापुत्रमिवौरसम्॥१३५॥ संरक्ष्यमाणो-
राज्ञायंकुरुतेधर्ममन्वहम्॥ तेनायुर्वर्द्धतेराज्ञोद्रविणंराष्ट्रमे-
वच॥१३६॥

۱۳۱ - درخت، بانس، شراب، گھی، خوشبودار چیزیں اودیات رس پھول مول پھل -

۱۳۲ - پتا، ساگ، گھاس، چمڑا، بانس کا برتن مٹی کا برتن پتھر کا برتن ان سبھوں کے نفع میں سے چھٹواں حصہ راجہ لیوے -

۱۳۳ - راجہ مرتا بھی ہو تو بھی وید پڑھنے والے براہمن سے محصول نہ لیوے اور تمام راج میں کوئی وید پاٹھی کھانے پینے کا دکھ نہ پاوے -

۱۳۴ - جس راجہ کے راج میں وید پاٹھی بھوکھا مرتا ہے اُسکا راج بہت جلد مٹ جاتا ہے -

۱۳۵ - براہمنوں کے پڑھنے اور آچرن کو سمجھکر انکی ایسی معاش تجویز کرے جو انکے دھرم کے خلاف نہو اور انکی حفاظت سب طرف سے اسطرح کرے کہ جسطرح باپ بیٹے کی حفاظت کرتا ہے -

۱۳۶ - راجہ کی حفاظت پاکر براہمن ہر روز جو دھرم کرتا ہے اُسکے پرتاپ سے راجہ کی دولت و عمر بڑھتی ہے -

पणोदेयोवकृष्टस्य षडुत्कृष्टस्य वेतनम्॥ षाण्मासिकस्त-
थाच्छादो धान्यद्रोणस्तु मासिकः॥ १२६॥ क्रयविक्रयमध्वा-
नं भक्तं च सपरिव्ययम्॥ योगक्षेमं च संप्रेक्ष्य वणिजो दापये-
त्करान्॥ १२७॥ यथाफलेन युज्येत राजा कर्ता च कर्मणाम्॥
तथावेक्ष्य नृपो राष्ट्रे कल्पयेत्सततं करान्॥ १२८॥ यथाल्पा-
ल्पमदन्त्याद्यं वार्यौकोवत्सषट्पदाः॥ तथाल्पाल्पो ग्रही-
तव्यो राष्ट्राद्राज्ञाब्दिकः करः॥ १२९॥ पंचाशद्भाग आदेयो
राज्ञा पशुहिरण्ययोः॥ धान्यानामष्टमो भागः षष्ठो द्वादश-
एव वा॥ १३०॥

۱۲۶ - جو شخص گھر کا صاف کرنیوالا اور پانی کا لانیوالا ہے اُسکو ایک پن یومیہ دیوے اور
مہینہ میں ایک درون اَن دیوے اور چھٹے مہینہ دو کپڑے دیوے اور جو شخص اُتم کام کرنیوالا
ہے اُسکو چھہ پن یومیہ دیوے اور چھٹے مہینے چار کپڑے دیوے ہر مہینہ میں چھہ درون دھان
دیوے چھٹے مہینہ کپڑے دیوے

۱۲۷ - ان سب باتوں کا بچار کر بنیوں سے محصول لیوے یعنی کس قیمت پر خرید کیا ہے بیچنے
میں کتنا ملیگا کتنی دور سے لایا ہے کیا اوسکی خوراک میں خرچ ہوا کتنا حفاظت مال میں
خرچ ہوا ہے کتنا اُسکو نفع ملیگا

۱۲۸ - جس طریق سے کام کرنیوالے کو اور راجہ کو فائدہ ہو اس طریق کو دیکھکر راجہ اپنے محصولات کو تجویز کرے

۱۲۹ - جس طرح جونک اور بچھڑا اور بھونرا یہ سب کھانیکے لائق چیزوں کو تھوڑا تھوڑا کھاتے ہیں اسی
طرح راجہ راج سے محصول سالانہ کو تھوڑا تھوڑا لیوے -

۱۳۰ - پشُو اور سونے کے نفع میں سے پچاسواں حصہ لیوے دھانیہ کے نفع میں آٹھواں یا
چھٹواں یا بارھواں حصہ لیوے زمین کی عمدگی و غیر عمدگی اور جوتنے کی محنت و بے محنت کو دیکھکر محصول تجویز کرے

तेषांग्राम्याणिकार्याणिपृथक्कार्याणिचैवहि ॥ राज्ञोऽन्यः
सचिवः स्निग्धस्तानिपश्येदतन्द्रितः ॥ १२० ॥ नगरेनगरेचैकं
कुर्यात्सर्वार्थचिन्तकम् ॥ उच्चैः स्थानंघोररूपंनक्षत्राणामि-
वग्रहम् ॥ १२१ ॥ सताननुपरिक्रामेत्सर्वानेवसदास्वयम् ॥ ते-
षांवृत्तंपरिणयेत्सम्यग्राष्ट्रेषुतच्चरैः ॥ १२२ ॥ राज्ञोहिरक्षाधि-
कृताः परस्वादायिनः शठाः ॥ भृत्याभवन्तिप्रायेणतेभ्योर-
क्षेदिमाः प्रजाः ॥ १२३ ॥ येकार्यिकेभ्योऽर्थमेवगृह्णीयुः पाप-
चेतसः ॥ तेषांसर्वस्वमादायराजाकुर्यात्प्रवासनम् ॥ १२४ ॥ रा-
जकर्मसुयुक्तानांस्त्रीणांप्रेष्यजनस्यच ॥ प्रत्यहंकल्पयेद्वृत्तिं
स्थानकर्मानुरूपतः ॥ १२५ ॥

۱۲۰ - جو وزیر اعظم نہایت عاقل دارالسلطنت مین راجہ کے پاس رہنے والا ہو وہ سُستی کو چھوڑ کر گانون اور نگر اور پور کے مالکونکا کام اور دیگر کامونکو بھی دیکھتا اور جانچتا رہے -

۱۲۱ - ہر ایک نگر مین ایک آدمی جو تمام مطلبون کا سوچنے والا ہو رکھے اور ایک مکان بڑا اونچا بھیانک روپ بناوے وہ مکان ایسا خوبصورت ہو جیسے تارون مین چاند ہے

۱۲۲ - وہ وزیر اعظم گانون اور نگر وغیرہ کے مالکونکو بے مطلب بھی وقتاً فوقتاً اپنی قوت سے دیکھتا رہے اور مخبرون کے وسیلے سے سب کے من کی بات جانے -

۱۲۳ - راجہ کے اکثر عہدہ دار دوسرے کا مال لے لیا کرتے ہین اور ظالم ہوتے ہین اسواسطے اُنکے ہاتھ سے رعیت کی حفاظت کرے -

۱۲۴ - دلمین پاپ رکھنے والے جو عہدہ دار رعیت سے روپیہ لیتے ہین راجہ اُنکی تمام جائداد ضبط کر لے اور اُنکو راج سے باہر نکال دیوے -

۱۲۵ - جو عورت نوکر چاکر راجہ کا کام کرتے ہون اُنکی وجہ معاش اُنکے روزمرہ کے کام کے موافق مقرر کرے -

ग्रामस्याधिपतिंकुर्याद्दशग्रामपतिंतथा ॥ विंशतीशंशतेशं-
चसहस्रपतिमेवच॥ ११५ ॥ ग्रामदोषान्समुत्पन्नान्ग्रामिकः
शनकैःस्वयम्॥ शंसेद्ग्रामदशेशायदशेशोविंशतीशिनम् ॥
११६ ॥ विंशतीशस्तुतत्सर्वंशतेशायनिवेदयेत्॥ शंसेद्ग्रामश-
तेशस्तुसहस्रपतयेस्वयम्॥ ११७ ॥ यानिराजप्रदेयानिप्रत्यहं
ग्रामवासिभिः॥ अन्नपानेन्धनादीनिग्रामिकस्तान्यवाप्नुया-
त्॥ ११८ ॥ दशीकुलंतुभुंजीतविंशीपंचकुलानिच॥ ग्रामंग्रा-
मंशताध्यक्षःसहस्राधिपतिःपुरम्॥ ११९॥

۱۱۵- لیاقت کے موافق کسی کو ایک گانون کا کسیکو دسن گانون کا کسیکو بیس گانون کا کسیکو سَو گانون کا کسیکو ہزار کا مالک کرے۔

۱۱۶- گانون مین کچھ واردات ہو تو گانون کا مالک آہستگی دس گانون کے مالک سے کہے اور وہ بیس گانون کے مالک سے کہے۔

۱۱۷- بیس گانون کا مالک سَو گانون کے مالک سے کہے اور وہ ہزار گانون کے مالک سے کہے۔

۱۱۸- ہر روز جو حصہ راجہ کا مثل اناج اور پان اور لکڑی وغیرہ گانون کے رہنے والون سے لینے کے لائق ہے اُسکو گانون کا مالک لیوے۔

۱۱۹- دس گانون کا مالک ایک کُل کی مقدار کے موافق زمین اپنے گزارہ کے واسطے لیوے اور بیس گانون کا مالک پانچ کُل کے موافق لیوے اور سَو گانون کا مالک ایک گانو درجہ متوسط کو لیوے اور ہزار گانون کا مالک ایک پورا اپنے گزارہ کے واسطے لیوے۔

چھ بیل سے ایک ہل چلا کر ایسے دو ہل سے جسقدر زمین جوتی جاوے اُسقدر زمین کو کُل کہتے ہین۔

सामादीनामुपायानां चतुर्णामपि पण्डिताः॥ सामदण्डौ प्रशंसन्ति नित्यं राष्ट्राभिवृद्धये॥ १०९॥ यथोद्धरति निर्दाता कक्षं धान्यं च रक्षति॥ तथा रक्षेन्नृपो राष्ट्रं हन्याच्च परिपन्थिनः॥ ११०॥ मोहाद्राजा स्वराष्ट्रं यः कर्षयत्यनवेक्षया॥ सोऽचिराद्भ्रश्यते राज्याज्जीविताच्च सबान्धवः॥ १११॥ शरीरकर्षणात्प्राणाः क्षीयन्ते प्राणिनां यथा॥ तथा राज्ञामपि प्राणाः क्षीयन्ते राष्ट्रकर्षणात्॥ ११२॥ राष्ट्रस्य संग्रहे नित्यं विधानमिदमाचरेत्॥ सुसंगृहीतराष्ट्रो हि पार्थिवः सुखमेधते॥ ११३॥ द्वयोस्त्रयाणां पञ्चानां मध्ये गुल्ममधिष्ठितम्॥ तथा ग्रामशतानां च कुर्याद्राष्ट्रस्य संग्रहम्॥ ११४॥

۱۰۹- سام وغیرہ چار تدبیروں میں سام و دنڈ کی تعریف پنڈت لوگ واسطے ترقی راج کے کرتے ہیں۔

۱۱۰- جسطرح کھیتی کرنیوالا غلہ کی حفاظت کرتا ہے اور گھاس وغیرہ اوکھاڑ ڈالتا ہے اسیطرح راجہ حفاظت راج کی کرے اور دشمنوں کو نیست و نابود کرے۔

۱۱۱- جو راجہ بدوں غور کے موہ سے راج کو دکھ دیتا ہے وہ تھوڑے دنوں میں اپنا راج اور پران اور بھائی بندوں کو نابود کرتا ہے۔

۱۱۲- جسطرح شریر کو دکھ دینے سے پران کو دکھ ہوتا ہے اسیطرح راج (یعنی رعیت) کے دکھی ہونے سے راجہ کا پران دکھ پاتا ہے۔

۱۱۳- راج کی ترقی کیواسطے ہمیشہ اس آئین پر چلے جس راجہ سے راج نے اچھی طرح ترقی پائی ہے وہ راجہ بخوشی تمام ترقی پاتا ہے۔

۱۱۴- وہ تین پانچ گانوں کے بیچ میں ایک حفاظت کا مکان بناوے اسمیں واسطے انتظام کرنے کے اپنے اہلکاروں کو رکھے۔

नित्यमुद्यतदण्डस्य कृत्स्नमुद्विजते जगत्॥ तस्मात्सर्वाणि भू-
तानि दण्डेनैव प्रसाधयेत्॥१०३॥ अमाययैव वर्त्तेत न कथंच
न मायया॥ बुध्येतारिप्रयुक्तां च मायां नित्यं सुसंवृतः॥१०४
॥ नास्य छिद्रं परो विद्याद्विद्याच्छिद्रं परस्य तु॥ गूहेत्कूर्म इवां-
गानि रक्षेद्विवरमात्मनः॥१०५॥ बकवच्चिन्तयेदर्थान्सिंहवच्च
पराक्रमेत्॥ वृकवच्चावलुम्पेत शशवच्च विनिष्पतेत्॥१०६
एवं विजयमानस्य येऽस्य स्युः परिपन्थिनः॥ तानानयेद्वशं स-
र्वान्सामादिभिरुपक्रमैः॥१०७॥ यदि ते तु न तिष्ठेयुरुपायैः
प्रथमैस्त्रिभिः॥ दण्डेनैव प्रसह्यैतांश्छनकैर्वशमानयेत्॥
१०८॥

۱۰۳- جسکی سزا زبردست ہو اُس راجہ سے تمام عالم ڈرتا ہے اسلیئے سزا کے وسیلے سے سب جاندارون کو اپنے اختیار مین کرے۔

۱۰۴- آپ فریب نہ کرے اور دشمن کے فریب کو ہمیشہ جانتا رہے اور اپنے تابعدارون کی حفاظت تدبیر نیک سے کرے۔

۱۰۵- اس راجہ کے عیب کو دوسرا نجانے مگر راجہ دوسرے کے عیب کو جان لیوے جسطرح کچھوا اپنے اعضا کو چھپاتا ہے اسطرح اپنے عیب کو چھپاوے۔

۱۰۶- بگلا کیطرح اپنے مطالب کا غور کرے سنگھ کے مانند پراکرم کرے بھیڑیا کیطرح چیزون کو لیوے خرگوش کیطرح بھاگے۔

۱۰۷- اسطرح فتح یافتہ راجہ اپنے دشمنون کو سام[1] دان[2] ڈنڈ[3] بھید[4] ان چار تدبیرون سے اپنے اختیار مین کرے

۱۰۸- جب دشمن اوپر کہی ہوئی تین تدبیرون سے قابو مین نہ آئے تو ڈنڈ ہی کے وسیلے سے اسکو قابو مین لاوے۔

[1] ملاپ و صلح - [2] روپیہ وغیرہ دینا [3] سزا - [4] دشمن کی فوج مین پھوٹ کرنا۔

समयोऽनुपस्कृतः प्रोक्तो योधधर्मः सनातनः ॥ अस्माद्धर्मान्न च्यवेत क्षत्रियो घ्नन्रणे रिपून् ॥ ९८ ॥ अलब्धं चैव लिप्सेत लब्धं रक्षेत्प्रयत्नतः ॥ रक्षितं वर्द्धयेच्चैव वृद्धं पात्रेषु निःक्षिपेत् ॥ एतच्चतुर्विधं विद्यात्पुरुषार्थप्रयोजनम् ॥ अस्य नित्यमनुष्ठानं सम्यक्कुर्यादतन्द्रितः ॥ १०० ॥ अलब्धमिच्छेद्दण्डेन लब्धं रक्षेदवेक्षया ॥ रक्षितं वर्द्धयेद्वृद्ध्या वृद्धं दानेन निःक्षिपेत् ॥ १०१ ॥ नित्यमुद्यतदण्डः स्यान्नित्यं विवृतपौरुषः ॥ नित्यं संवृतसंवार्यो नित्यं छिद्रानुसार्यरेः ॥ १०२ ॥

۹۸۔ پہلوانون کے دھرم بے عیب قدیم کو کہا کشتری لوگ لڑائی ہین دشمنونکو مارتے ہوئے اِس دھرم کو نہ چھوڑین۔

۹۹۔ جو چیز نہین ملی راجہ اُسکے ملنے کی خواہش کرے اور جو مل گئی اُسکی حفاظت تدبیر سے کرے محفوظ چیزون کو بڑھاوے اور بڑھی ہوئی چیزون کو سب پاترون مین قائم کرے۔

۱۰۰۔ راجہ کے پرشارتھ (یعنی سورگ وغیرہ) کا پریوجن بھی چار طرح کا ہے اسکو جانے اور سستی کو ترک کرکے اُن چارو کا سیون یعنے استعمال کرے جو اوپر کے اشلوک مین کہے گئے۔

۱۰۱۔ جو چیز نہین ملی اُسکی خواہش کرے اور جو ہنر اُسکے ذریعہ سے حاصل ہوئی (مثل جرمانہ وغیرہ) اسکی حفاظت کرے جسکی حفاظت دیکھنے سے ہوتی ہے اُسکی ترقی دیکھنے سے کرے بیاج بڑھی چیز کو دان سے قائم کرے۔

۱۰۲۔ ہاتھی گھوڑا وغیرہ کی سواری اور جنگ کے قاعدے سیکھنے کی مہارت کرے اور استر وغیرہ کے وسیلے سے اپنی شجاعت کی شہرت ہمیشہ کرے اور منتر اور اچار وچیشٹا وغیرہ کو ظاہر نکرے اور دشمن کے عیب کو جاننا رہے ان سب باتونکا ہمیشہ کرتا رہے۔

---

* یعنی جو براہم چاری اور بان پرستھ اور سنیاسی اور برہمن اگن ہوتری وغیرہ جنکا دن رات برہم کرم ہی میں گذرتا ہے ان لوگون کو ان چیزون کو دے۔

नसुप्तंनविसन्नाहंननग्नंननिरायुधम्॥नायुध्यमानंपश्यन्तंनप-
रेणसमागतम्॥९२॥नायुधव्यसनप्राप्तंनार्त्तंनातिपरिक्षितम्
॥नभीतंनपरावृत्तंसतान्धर्ममनुस्मरन्॥९३॥यस्तुभीतःपरा
वृत्तःसंग्रामेहन्यतेपरैः॥भर्त्तुर्यद्दुष्कृतंकिंचित्तत्सर्वंप्रतिपद्य-
ते॥९४॥यच्चास्यसुकृतंकिंचिदमुत्रार्थमुपार्जितम्॥भर्त्तात-
त्सर्वमादत्तेपरावृत्तहतस्यतु॥९५॥रथाश्वंहस्तिनंछत्रंधनं
धान्यंपशून्स्त्रियः॥सर्वद्रव्याणिकुप्यंचयोयज्जयतितस्यत-
त्॥९६॥राज्ञश्चदद्युरुद्धारमित्येषावैदिकीश्रुतिः॥राज्ञाच-
सर्वयोधेभ्योदातव्यमपृथग्जितम्॥९७॥

۹۲ - جو شخص سوتا ہو یا زرہ اُسکے بدن مین نہو بے ہتھیار ہو لڑائی کا ارادہ نرکھتا ہو
کسی کے ساتھہ تماشا دیکھنے کو آیا ہو ایسے آدمیون کو بھی نہ مارے۔

۹۳ - جسکا ہتھیار ٹوٹ گیا ہو سبب مر جانے فرزند وغیرہ کے رنج مین ہو زخم شدید مین مبتلا ہو
ڈرا ہوا ہو لڑائی سے بھاگا ہوا ہو ان سب کو اچھے لوگون کے دھرم کو خیال کرکے نہ مارے۔

۹۴ - جو آدمی ڈر کر بھاگ کر لڑائی مین دوسرے کے ہتھیار سے زخمی ہو کر مارا گیا ہے وہ اپنے
مالک کے پاپ کو پاتا ہے۔

۹۵ - جو آدمی بھاگ کر مارا گیا اُسکا پنیہ (یعنی نتیجہ فعل نیک) اسورگ کے ملنے کیواسطے جو فراہم
ہوا ہو اُسکو اسکا مالک پاتا ہے۔

۹۶ - رتھہ گھوڑا ہاتھی چھتری - دھن و دھانیہ چار پایہ عورت اور تمام دولت سوائے سونا چاندی
کے سیسا پیتل وغیرہ ان سب کو جو فتح کرے وہی اوسکا مالک ہوتا ہے۔

۹۷ - سونا چاندی زمین وغیرہ جو عمدہ چیزین فتح ہون انکا فتح کرنے والا اپنے راجہ کو
دلوے یہ ویدمین لکھا ہے اور راجہ اس چیز کو ان سب پہلوانون کو تقسیم کرے جنھون نے
ملک فتح کیا ہو۔

पात्रस्य हि विशेषेण श्रद्दधानतयैव च॥ अल्पं वा बहु वा प्रेत्य दानस्यावाप्यते फलम्॥ ८६॥ समोत्तमाधमै राजा त्वाहूतः पालयन्प्रजाः॥ न निवर्तेत संग्रामात्क्षात्रं धर्ममनुस्मरन्॥ ८७॥ संग्रामेष्वनिवर्तित्वं प्रजानां चैव पालनम्॥ शुश्रूषा ब्राह्मणानां च राज्ञां श्रेयस्करं परम्॥ ८८॥ आहवेषु मिथोऽन्योन्यं जिघांसन्तो महीक्षितः॥ युध्यमानाः परं शक्त्या स्वर्गं यान्त्यपराङ्मुखाः॥ ८९॥ न कूटैरायुधैर्हन्याद्युध्यमानो रणे रिपून्॥ न कर्णिभिर्नापि दिग्धैर्नाग्निज्वलिततेजनैः॥ ९०॥ न च हन्यात्स्थलारूढं न क्लीबं न कृताञ्जलिम्॥ न मुक्तकेशं नासीनं न तवास्मीति वादिनम्॥ ९१॥

۸۶ - جو براہمن دان لیتا ہے اسکی عبادت کی بزرگی اور دینے والے کی توفیق کی وجہ سے دان کا پھل تھوڑا یا بہت پرلوک مین ملتا ہے -

۸۷ - جو راجہ رعایا کی پرورش کرتا ہوا کشتری کے دھرم کا خیال رکھتا ہو اگر اسکو اس سے بڑا یا چھوٹا راجہ لڑائی کے واسطے بلاوے تو اوسکا مقابلہ کرے لڑائی سے منھ نہ پھیرے -

۸۸ - جنگ مین ثابت قدم رہنا رعیت کی پرورش کرنا برہمنون کی سیوا کرنا یقین تمام راجہ کے پرم کلیان کرنے والے ہین -

۸۹ - لڑائی مین مارتے ہوئے اور لڑائی مین منھ نہ پھیر کر جو کشتری مرتا ہے وہ سورگ مین جاتا ہے -

۹۰ - جو ہتھیار زہر سے بجھائے گئے اور جنکے اوپر لکڑی اور اندر سے لوہا ہے اور جس تیر کی گانسی کرنٹے کی صورت ہے اور جو ہتھیار آگ سے گرم کیا گیا ایسے ہتھیارون سے لڑائی مین دشمنون کو نہ مارے -

۹۱ - زمین پر کھڑا ہوا اور مخنث اور ہاتھ جوڑنے والا اور جسکے سر کے بال کھلے ہون اور ایسا کہنے والے کو مین تمھارا ہون اور بیٹھے ہوئے کو نہ مارے -

अध्यक्षान्विविधान्कुर्यात्तत्रतत्रविपश्चित:॥तेऽस्यसर्वाण्य
वेक्षेरन्नृणांकार्याणिकुर्वताम्॥८१॥आवृत्तानांगुरुकुला-
द्विप्राणांपूजकोभवेत्॥नृपाणामक्षयोह्येषनिधिर्ब्राह्मोऽ
भिधीयते॥८२॥नतंस्तेनानचामित्राहरन्तिनचनश्यति॥त-
स्माद्राज्ञानिधातव्योब्राह्मणेष्वक्षयोनिधि:॥८३॥नस्क-
न्दतेनव्यथतेनविनश्यतिकर्हिचित्॥वरिष्ठमग्निहोत्रेभ्योब्रा
ह्मणस्यमुखेहुतम्॥८४॥सममब्राह्मणेदानंद्विगुणंब्राह्म-
णब्रुवे॥प्राधीतेशतसाहस्रमनन्तंवेदपारगे॥८५॥

۸۱- ہر ایک جگہ پر ایک ایک عالم عہدہ دار انواع اقسام کا رکھے وہ عہدہ دار راجہ کے نوکرون کا کام دیکھے۔

۸۲- جو براہمن گروکل مین ودیا کو پڑھکر اپنے باپ کے گھر آوین راجہ انکا پوجن کرے وے براہمن راجہ کے خزانہ بے زوال ہین۔

۸۳- جو دولت وسامان براہمن کو دیا جاتا ہے وہ لازوال ہے اسکو چور چورا نہین سکتا پس راجہ اپنی دولت سے ایسے براہمنون کی سیوا اور پوجا کرے۔

۸۴- براہمن کے مکھ مین جو ہون کیا گیا یعنی دیوتا اور پتردن اور رشیون کیلئے جو انکو بھوجن کرایا گیا خواہ پرمیشر کی خوشی کیواسطے بھوجن کرایا گیا وہ گرتا نہین نہ خراب جاوے نہ کچھ دوی اور ایسا ہون (یعنی برہم بھوج) اگنی ہوتر سے بڑا ہے۔

۸۵- سواے براہمن کے کشتری وغیرہ کو جسقدر دیوے اسقدر ملتا ہے مورکھہ براہمن کو دینے سے دو چند ملتا ہے وید کے ایک ساکھا پڑھے ہوئے کو دینے سے لاکھ گنا ملتا ہے تمام وید پڑھے ہوئے کو دینے سے بے نہایت پھل ملتا ہے۔

* براہمن اسکو کہتے ہین کہ جو اپنے ورن و آشرم کے دھرم مین قایم ہوکر پرمیشر کی اپاسنا کرتا ہو اور گیانی گیا بالی ہو

तत्स्यादायुधसम्पन्नं धनधान्येन वाहनैः॥ ब्राह्मणैः शिल्पिभि
र्यन्त्रैर्यवसेनोदकेन च॥७५॥ तस्य मध्ये सुपर्याप्तं कारयेद्गृहमा
त्मनः॥ गुप्तं सर्वर्तुकं शुभ्रं जलवृक्षसमन्वितम्॥७६॥ तदध्या-
स्योद्वहेद्भार्यां सवर्णां लक्षणान्विताम्॥ कुले महति सम्भू-
तां हृद्यां रूपगुणान्विताम्॥ ७७॥ पुरोहितं च कुर्वीत वृणुयादे-
व चर्त्विजः॥ तेऽस्य गृह्याणि कर्माणि कुर्युर्वैतानिकानि-
च॥७८॥ यजेत राजा क्रतुभिर्विविधैराप्तदक्षिणैः॥ धर्मार्थं चै
व विप्रेभ्यो दद्याद्भोगान्धनानि च॥७९॥ सांवत्सरिकमाप्तैश्च
राष्ट्रादाहारयेद्बलिम्॥ स्याच्चाम्नायपरो लोके वर्तेत पितृवन्नृ
षु॥ ८०॥

۷۵ - قلعہ کے اندر یہ سامان موجود رہے ہتھیار - دھن دھانیہ - سواری - براہمن - کاریگر
جنتر یعنی کل - گھاس - پانی

۷۶ - اس قلعہ کے اندر اپنا مکان ایسا بناوے کہ جسمین علیحدہ علیحدہ سب رتوں کے اگنی ہوتر کے گھر ہون اور کھائین بھی ہو اور سب فصلوں کے پھل پھول بھی موجود ہون مکان سفید رنگ
اور اسمین باؤلی کنواں درخت ہون -

۷۷ - اس مکان مین بیٹھکر ایسی ہم قوم عورت کے ساتھ شادی کرے کہ جو اچھے خاندان کی
ہو اور دل کو پیاری ہو اور خوبصورت و ہنرمند و نیک خصلت ہو -

۷۸ - پروہت اور رتوگ (یعنی یگیہ کرانیوالا) ان دونوں کو اختیار دے وہ دونوں راجہ کے اگنی ہوتر وغیرہ گھر کا کام کریں

۷۹ - انیک پکار کی یگیہ بہت دکشنا دے کر کرے اور دھرم کیواسطے براہمنوں کو بھوگ دینے
مکان و چارپائی و زیور و کپڑا وغیرہ اور دھن کو دیوے -

۸۰ - راجہ اپنی راج سے اپنا حصہ سالانہ لیوے اور وید کے احکام کی تعمیل کرے اور تمام رعایا کو
مثل اپنی اولاد کے پرورش کرے اور رعیت اسکو باپ کیطرح سمجھکر اسکے حکم کی تعمیل کرے

धनुर्दुर्गंमहीदुर्गमब्दुर्गंवार्क्षमेववा॥ नृदुर्गंगिरिदुर्गंवासमा-
श्रित्यवसेत्पुरम्॥७०॥ सर्वेणतुप्रयत्नेनगिरिदुर्गंसमाश्रयेत्
॥एषांहिबाहुगुण्येनगिरिदुर्गंविशिष्यते॥७१॥ त्रीण्याद्यान्या
श्रितास्त्वेषांमृगगर्ताश्रयाऽप्सराः॥ त्रीण्युत्तराणिक्रमशः
प्लवंगमनरामराः॥७२॥ यथादुर्गाश्रितानेतान्नोपहिंसन्ति
शत्रवः॥ तथाऽरयोनहिंसन्तिनृपंदुर्गसमाश्रितम्॥७३॥एकः
शतंयोधयतिप्राकारस्थोधनुर्धरः॥ शतंदशसहस्राणितस्मा
द्दुर्गंविधीयते॥७४॥

۷۰- جسکے چاروطرف پانی ہو جہان کی زمین ٹھنڈی ہو جسکے چاروطرف پانی ہو جسکے
چاروطرف درخت ہوں جسکے چاروطرف آدمی جنگجو ہوں جسکے چاروطرف پہاڑ ہوں
یہ چھہ مقامات مانند قلعہ کے ہین ایسے مقام پر راجہ قیام کرے جہان پر دشمن کی فوج
نہ جاسکے—

۷۱- جس ملک کے چاروطرف پہاڑ ہین اس ملک مین قیام کرے جبتک ایسا ملک ملے
تب تک دوسرے ملک مین قیام نکرے ان سبھون مین ایسا ملک سب سے اچھا ہے—

۷۲- پہلے تین قلعہ مین ہرن- چوہا جل کے جیو رہتے ہین پچھلے تین قلعہ مین بندر آدمی دیوتا
رہتے ہین—

۷۳- جسطرح ہرن وغیرہ اپنے قلعہ مین رہنے سے دشمنون سے تکلیف نہین پاتے
اسیطرح راجہ قلعہ مین رہنے سے دشمنون سے تکلیف نہین پاتا—

۷۴- قلعہ مین رہنے والا ایک کماندار نیچے رہنے والے سو آدمی سے لڑائی کرسکتا ہے
اور قلعہ مین رہنے والے ایک سو آدمی نیچے رہنے والے دس ہزار آدمی سے لڑائی کرسکتے
ہین اسلیے قلعہ بنانے کا اپدیش کرتے ہین—

अमात्ये दण्ड आयत्तो दण्डे वैनयिकी क्रिया ॥ नृपतौ कोशराष्ट्रे च दूते सन्धिविपर्ययौ ॥ ६५ ॥ दूत एव हि सन्धत्ते भिनत्त्येव च संहतान् ॥ दूतस्तत्कुरुते कर्म भिद्यन्ते येन वा न वा ॥ ६६ ॥ स विद्यादस्य कृत्येषु निगूढेङ्गितचेष्टितैः ॥ आकारमिङ्गितं चेष्टां भृत्येषु च चिकीर्षितम् ॥ ६७ ॥ बुद्ध्वा च सर्वं तत्त्वेन परराजचिकीर्षितम् ॥ तथा प्रयत्नमातिष्ठेद्यथात्मानं न पीडयेत् ॥ ६८ ॥ जांगलं सस्यसम्पन्नमार्यप्रायमनाविलम् ॥ रम्यमानतसामन्तं स्वाजीव्यं देशमावसेत् ॥ ६९ ॥

۶۵ - وزیر کے اختیار میں سزا ہے اور سزا کے اختیار میں انصاف ہے راجہ کے اختیار میں خزانہ اور راج ہے دوت کے اختیار میں صلح اور لڑائی ہے -

۶۶ - دوت ہی بگڑے ہوئے کو ملاتا ہے اور ملے ہوئے کو بگاڑتا ہے جس سے ملاپ اور بگاڑ ہوتا ہے وہ کام دوت ہی کرتا ہے -

۶۷ - سب اہلکاروں میں دوت ہی راجہ کی بات اور اشارہ اور آثار اور قیافہ سے راجہ کے کرنے کے لائق سب کام کو جانے -

۶۸ - اور دوسرے راجاؤں کے دل کی اصلی بات اپنی حکمت سے معلوم کرے اور ایسی تدبیر کرے جس سے اپنی آتما کو تکلیف نہووے -

۶۹ - جس ملک میں تھوڑا پانی اور گھاس ہو اور سیت ہوا اور دھوپ اور غلہ ہو اسکو جانگل دیش کہتے ہیں اسمیں اور جس ملک میں اچھے آدمی ہوں اور بیمار نہوں اور وہ ملک پھل پھول لتا وغیرہ سے سرسبز ہو اور وہاں کے سب سمت کے آدمی ملائم ہوں اور زراعت و تجارت وغیرہ دولت ملنے کی تدبیریں وہاں پر آسانی تمام ممکن ہوں ایسے ملک میں راجہ قیام کرے -

नित्यं तस्मिन्समाश्वस्तः सर्वकार्याणि निःक्षिपेत् ॥ तेन सार्द्धं-
विनिश्चित्य ततः कर्म्म समारभेत् ॥ ५९ ॥ अन्यानपि प्रकुर्वीत
शुचीन्प्राज्ञानवस्थितान् ॥ सम्यगर्थसमाहर्तॄनमात्यान्सुप-
रीक्षितान् ॥ ६० ॥ निर्वर्त्तेतास्य यावद्भिरितिकर्त्तव्यता नृभिः ॥
तावतोऽतन्द्रितान्दक्षान्प्रकुर्वीत विचक्षणान् ॥ ६१ ॥ तेषाम-
र्थे नियुञ्जीत शूरान्दक्षान्कुलोद्गतान् ॥ शुचीनाकरकर्मान्ते
भीरूनन्तर्निवेशने ॥ ६२ ॥ दूतं चैव प्रकुर्वीत सर्वशास्त्रविशार-
दम् ॥ इङ्गिताकारचेष्टज्ञं शुचिं दक्षं कुलोद्गतम् ॥ ६३ ॥ अनुर-
क्तः शुचिर्दक्षः स्मृतिमान्देशकालवित् ॥ वपुष्मान्वीतभीर्वा-
ग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते ॥ ६४ ॥

۵۹ - اعتماد پاکر اُسی برہمن وزیر کے ساتھ یقین کرکے کام شروع کرے -
۶۰ - جو آدمی پاک ہیں اور سب باتوں کے جاننے والے اور اچھی راہ سے دولت حاصل کرنیوالے
ہیں اور عمدہ طریق سے جنکا امتحان ہوگیا ایسے اور بھی وزیر مقرر کرے -
۶۱ - جتنے آدمیوں سے مطلب حاصل ہو سکے اتنے آدمیوں کو نوکر رکھے مگر وہ آدمی چالاک
و مستعد و ہوشیار و کام کرنے میں صاحب ہمت ہوں -
۶۲ - اُن وزیروں میں جو ہوشیار و عمدہ خاندانی و پاک و نیکخواہش و صابر ہوں اُنکو وہ کام
سپرد کرے جسمیں دولت کی پیدائش ہو اور جو آدمی ڈرنیوالے ہیں اُنکو قلعہ کے اندر رکھے
۶۳ - جو آدمی شاستر کا جاننے والا اور اشاروں اور قیافوں کا سمجھنے والا اور پاک اور
ہوشیار اور عمدہ خاندان ہو اُسکو دوت (یعنی سفیر و وکیل) مقرر کرے -
۶۴ - جو دوت اپنے مالک کو خوش رکھنے والا و پاک و ہوشیار و سب باتوں کو یاد رکھنے
والا و ملک و وقت کا جاننے والا اور اچھی صورت و شکل والا اور اچھی تقریر کرنیوالا و بیخوف ہو
وہ دوت راجہ کو اچھا ہوتا ہے -

व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते ॥ व्यसन्यधोऽधो व्रज-
ति स्वर्यात्यव्यसनी मृतः ॥ ५३ ॥ मौलाञ्छास्त्रविदः शूराँल्लब्ध
लक्षान्कुलोद्गतान् ॥ सचिवान्सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षिता
न् ॥ ५४ ॥ अपि यत्सुकरं कर्म तदप्येकेन दुष्करम् ॥ विशेषतो
ऽसहायेन किन्तु राज्यं महोदयम् ॥ ५५ ॥ तैः सार्द्धं चिन्तयेन्नि-
त्यं सामान्यं सन्धिविग्रहम् ॥ स्थानं समुदयं गुप्तिं लब्धप्रशम-
नानि च ॥ ५६ ॥ तेषां स्वं स्वमभिप्रायमुपलभ्य पृथक्पृथक् ॥
समस्तानां च कार्य्येषु विदध्याद्धितमात्मनः ॥ ५७ ॥ सर्व्वेषां तु
विशिष्टेन ब्राह्मणेन विपश्चिता ॥ मन्त्रयेत्परमं मन्त्रं राजा षाड्गु-
ण्यसंयुतम् ॥ ५८ ॥

۵۳ ان اٹھارہ کا نام بیسن ہے بیسن اور موت مین بیسن نہ بون ہے کیونکہ بیسن والا نرک مین جاتا ہے اور جسنے بیسن کو ترک کیا وہ مرنے کے بعد سورگ مین جاتا ہے اسکو بیسن سے موت اچھی ہے

۵۴ - جو لوگ شاستر کے جاننے والے - و شجاع و علم انداز ہون اور اچھے خاندان مین پیدا ہوتے مین انکا امتحان لیکر راجہ انکو اپنا وزیر بناوے اور وہ وزیر تعداد مین سات یا آٹھ ہون

۵۵ - جو کام سہل ہے وہ بھی اکیلے نہین ہو سکتا اور راج کاج بڑا بھاری ہے وہ کسطرح اکیلے ہو سکے -

۵۶ ان وزیرون کیساتھ امور مفصلہ ذیل پر ہر روز غور کرے یعنی صلح و جنگ و خزانہ و شہر و راج و رتھ خانہ وغیرہ و فوج کی پرورش و غلہ و سونا وغیرہ کی پیدائش کا مقام و اپنی و راج کی حفاظت اور ملے ہوئے دھن کو اچھے لوگون کو دان دینا -

۵۷ - وزیر لوگ جو صلاح دین اسکو علیحدہ علیحدہ یا ایک ہی دفعہ سمجھکر حکم مناسب دیوے جسمین اپنا بھلا ہو -

۵۸ - سب وزیرون مین جو اچھا ہو اسکے ساتھ چھہ گن والے پرم منتر (یعنی صلاح) کو بچارے چھہ گن آگے کہینگے

* جسکا پرلتا نہ پر خطا کرے -

पैशुन्यंसाहसंद्रोहईर्ष्यासूयार्थदूषणम्।।वाग्दण्डजंचपारु-
ष्यंक्रोधजोऽपिगणोऽष्टकः।।४८।।द्वयोरप्येतयोर्मूलंयंसर्वे
कवयोविदुः।। तंयत्नेनजयेल्लोभंतज्जावेतावुभौगणौ ४९
पानमक्षाःस्त्रियश्चैवमृगयाचयथाक्रमम्।।एतत्कष्टतमंवि-
द्याच्चतुष्कंकामजेगुणे।।५०।।दण्डस्यपातनंचैववाक्पारु-
ष्यार्थदूषणे।। क्रोधजेऽपिगणेविद्यात्कष्टमेतत्त्रिकंसदा
।।५१।।सप्तकस्यास्यवर्गस्यसर्वत्रैवानुषंगिणः।।पूर्वंपूर्वंगु
रुतरंविद्याद्व्यसनमात्मवान्।।५२।।

۴۸- جو چیزین کرودھ سے پیدا ہوتی ہین وہ یہ ہین - بدون جانے عیب کو کہنا اپنے بل سے کام کرنا - دغا سے کیسیکو مارڈالنا - دوسری کی عظمت کو نہ سہنا - کیسیکے ہنر مین عیب لگانا - ارتھ کو چرانا - خواہ جو چیز دینے کے قابل ہے اوسکو نہ دینا - سخت زبانی سے گفتگو کرنا - ڈنڈے سے تاڑنا کرنا -

۴۹- اوپر جو دو طرحکی باتین واجب الترک کہہ آئے ہین اونکی جڑ لالچ ہے یعنے لالچ کرنے سے وہ پیدا ہوتی ہین اسواسطے لالچ کو حکمت عملی سے چھوڑنا چاہیے اسکو قابو مین کرنے سے سب قابو مین ہوجاتی ہین اسبات کو عقلمندون نے کہا ہے -

۵۰- کام سے پیدا ہوئی چیزون مین شراب پینا - پانسا کھیلنا - عورت کی اطاعت - شکار کھیلنا - یہ چارو ایک سے ایک زیادہ زبون ہین -

۵۱- کرودھ سے پیدا ہوئی چیزون مین ڈنڈے مارنا - گالی دینا - دینے کے لائق چیز کو نہ دینا یہ تین ہمیشہ سخت زبون ہین -

۵۲- یہ ساتوانک جگہ رہنے والے ہین انمین درجہ بدرجہ ایک سے ایک زیادہ زبون ہین -

त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्यां दण्डनीतिं च शाश्वतीम्॥ आन्वीक्षि-
कीं चात्मविद्यां वार्त्तारम्भांश्च लोकतः॥ ४३॥ इन्द्रियाणां ज-
ये योगं समातिष्ठेद्दिवानिशम्॥ जितेन्द्रियो हि शक्नोति वशे-
स्थापयितुं प्रजाः॥ ४४॥ दश कामसमुत्थानि तथाष्टौ क्रोधजा-
नि च॥ व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्जयेत्॥ ४५॥ कामजेषु
प्रसक्तो हि व्यसनेषु महीपतिः॥ वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्यां क्रोधजे-
ष्वात्मनैव तु॥ ४६॥ मृगयाक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः॥
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः॥ ४७॥

۴۳ - تین وید کے جاننے والون سے تینون وید کو اور ڈنڈا اور نیت جاننے والون سے نیت شاستر کو اور برہم ودیا جاننے والون سے برہم ودیا کو پڑھے اور حصول دولت کی تدبیر جاننے والون سے کھیتی اور تجارت اور حفاظت چارپایہ وغیرہ کو سیکھے۔

۴۴ - رات دن اندریون کو قابو مین کرنے کی کوشش کرے جو راجہ جتیندری یعنی اپنے نفس پر غالب ہے وہ تمام رعایا کو اپنے اختیار مین رکھ سکتا ہے

۴۵ - دس چیز کام سے پیدا ہوتی ہین اور آٹھ چیز کرودھ سے پیدا ہوتی ہین اونکا ترک واجب سمجھے۔

۴۶ - کام سے پیدا ہوئی چیزون مین مصروف ہونے سے راجہ کے دھرم اور ارتھ کا ناش ہو جاتا ہے اور کرودھ سے پیدا ہوئی چیزون مین مصروف ہونے سے راجہ آپ نشٹ جاتا ہے۔

۴۷ - جو چیزین کام سے پیدا ہوتی ہین وہ یہ ہین۔ شکار کھیلنا۔ پانسا کھیلنا۔ دن مین سونا۔ دوسرے کا عیب ظاہر کرنا۔ عورت کی خدمت کرنا۔ شراب پیکر مست ہو جانا۔ ناچنا۔ گانا بجانا۔ بے فائدہ گھومنا

ब्राह्मणान्पर्युपासीत प्रातरुत्थाय पार्थिवः ॥ त्रैविद्यवृद्धा-
न्विदुषस्तिष्ठेत्तेषांच शासने ॥ ३७ ॥ वृद्धांश्च नित्यंसेवेत विप्रा-
न्वेदविदः शुचीन् ॥ वृद्धसेवी हि सततं रक्षोभिरपि पूज्यते ॥ ३८ ॥
तेभ्योऽधिगच्छेद्विनयं विनीतात्मापि नित्यशः ॥ विनीतात्मा
हि नृपतिर्न विनश्यति कर्हिचित् ॥ ३९ ॥ बहवोऽविनयान्नष्टा
राजानः सपरिच्छदाः ॥ वनस्था अपि राज्यानि विनयात्प्रति
पेदिरे ॥ ४० ॥ वेनो विनष्टोऽविनयान्नहुषश्चैव पार्थिवः ॥ सु-
दासो यवनश्चैव सुमुखो निमिरेव च ॥ ४१ ॥ पृथुस्तु विनयाद्रा-
ज्यं प्राप्तवान्मनुरेव च ॥ कुबेरश्च धनैश्वर्यं ब्राह्मण्यं चैव गा-
धिजः ॥ ४२ ॥

۳۷ - راجہ وقت صبح اٹھکر رگ یجر سام ویدون کے ارتھ جاننے والے براہمنون کا درشن اور
اور پوجن کرے - اور انکا تابع حکم رہے -

۳۸ - کپوترا اور بڈھے وید پڑھنے والے براہمنون کی ہر روز خدمت کرے ایسا راجہ راکشسون
سے بھی پوجا پاتا ہے -

۳۹ - پیدایشی عقل اور وید شاستر کے پڑھنے سے جو عقل پیدا ہوا ان دونون کی وجہ سے
اگر مزاج ملائم ہو تاہم بمرادزیادتی عاجزی کے براہمنون سے عاجزی کیا کرے تاکہ کبھی نشٹ نہو

۴۰ - بہت راجہ عاجزی نکرنے سے مع اپنی راج و دولت کے بگڑ گئے اور جنگل مین رہنے
والے راجاؤن نے عاجزی کرنے سے راج کو پایا ہے -

۴۱ - بین نہش جمن کا بیٹا شدا س سکھ نم یہ سب راجا لوگ عاجزی نکرنے سے مٹ گئے -

۴۲ - عاجزی کرنے سے پرتھو منُو نے راج پایا اور کبیر بھگوان کے بھنڈارے کے
خزانچی ہوئے اور بسوامتر کشتری سے براہمن ہو گئے -

शुचिनासत्यसन्धेनयथाशास्त्रानुसारिणा।। प्रणेतुंशक्यतेदंडः सुसहायेनधीमता।।३१।। स्वराष्ट्रेन्यायवृत्तःस्याद्भृशदंडश्चश-त्रुषु।। सुहृत्स्वजिह्मः स्निग्धेषुब्राह्मणेषुक्षमान्वितः।।३२।। ए-वंवृत्तस्यनृपतेः शिलोञ्छेनापिजीवतः।। विस्तीर्यतेयशोलोके तैलविन्दुरिवाम्भसि।।३३।। अतस्तुविपरीतस्यनृपतेरजितात्म-नः।। संक्षिप्यतेयशोलोकेघृतविन्दुरिवाम्भसि।। ३४।। स्वेस्वेध-र्म्मेनिविष्टानांसर्व्वेषामनुपूर्व्वशः।। वर्णानामाश्रमाणांचरा-जासृष्टोऽभिरक्षिता।। ३५।। तेनयद्यत्सभृत्येनकर्त्तव्यंरक्षताप्र-जाः।। तत्तद्वोऽहंप्रवक्ष्यामियथावदनुपूर्व्वशः।।३६।।

۳۱ - جو راجہ پاک و سچ بولنے والا و شاستر کی ریت پر چلنے والا و پناہ رکھنے والا و دانشمند ہے وہ اُس سزا کے دیسکتا ہے -

۳۲ - اپنی راج مین انصاف کے موافق چلے اور دشمنون کو سزاے سخت دیوے اور وفادار دوستون کے ساتھ مہربانی کرتا رہے اور کم قصور والے براہمنون کی عفو تقصیر کرے

۳۳ - اس ریت سے راجہ رکہہ شل اونچھ سے اوقات گذاری کرے تو اوسکا یش لوک مین پھیل جاے جیسے پانی مین تیل کا بوند پھیل جاتا ہے -

۳۴ - جو راجہ اسکے برخلاف ہو اور جسنے اپنے نفس کو مغلوب نہین کیا اُسکا یش لوک مین نہین پھیلتا ہے جیسے گھی کا بوند پانی مین نہین پھیلتا ہے -

۳۵ - جو ورن اور آشرم اپنے اپنے دھرم پر ثابت قدم ہین اُنکی حفاظت کے لئے راجہ پیدا کیا گیا ہے -

۳۶ - بھرگ جی مہاراج کہتے ہین کہ اے رشی لوگو جو راجہ مع اپنے اہلکارون کے رعایا کی حفاظت مین مشغول رہتے ہین اُنکے کرنیکے لایق کامونکو سلسلہ سے ہم آپ لوگون سے کہینگے

यत्रश्यामोलोहिताक्षोदण्डश्चरतिपापहा॥ प्रजास्तत्रनमुह्यन्तिनेताचेत्साधुपश्यति॥२५॥तस्याहुःसम्प्रणेतारंराजानांसत्यवादिनम्॥ समीक्ष्यकारिणंप्राज्ञंधर्मकामार्थकोविदम्॥२६॥ तंराजाप्रणयन्सम्यक्त्रिवर्गेणाभिवर्द्धते॥ कामात्माविषमःक्षुद्रोदण्डेनैवनिहन्यते॥२७॥दण्डोहिसुमहत्तेजोदुर्धरश्चाकृतात्मभिः॥ धर्माद्विचलितंहन्तिनृपमेवसबान्धवम्॥२८॥ततोदुर्गंचराष्ट्रंचलोकंचसचराचरम्॥ अन्तरिक्षगतांश्चैवमुनीन्देवांश्चपीडयेत्॥२९॥ सोऽसहायेनमूढेनलुब्धेनाकृतबुद्धिना॥ नशक्योन्यायतोनेतुंसक्तेनविषयेषुच॥३०॥

۲۵- جہاں سیاہ رنگ سرخ آنکھہ والا ناس کرنیوالا ڈنڈ گھومتا ہے وہاں پرجا کو موہ نہیں ہوتا لیکن اس حالت میں کہ جب ڈنڈ دینے والا آدمی اچھی طرح سے ڈنڈ کو دیوے-

۲۶- جو راجہ سچ بولنے والا و غور کرنے والا اور دھرم ارتھہ کام تینوں میں ہوشیار اچھی طرح سے جاننے والا ہو وہی اس ڈنڈ کا دینے والا ہے-

۲۷- اُس سزا کو دینے سے راجہ دھرم ارتھہ و کام سے بڑھتا ہے جتنے آدمی کامی کرودھی پیچ ہیں وے سب سزا ہی سے مارے جاتے ہیں-

۲۸- سزا نہایت پُر جلال ہے جو راجہ شاستر کو نہیں جانتا وہ سزا دہی کو اختیار نہیں کر سکتا وہی سزا ادھرمی راجہ اور اوسکے رشتہ داروں کو نیست و نابود کر دیتی ہے-

۲۹- وہی سزا قلعہ و آج و ساکن و متحرک عالم و انترکش یعنے عالم بالا میں جو منی و دیوتا لوگ ہیں اُنکو تکلیف دیتی ہے

۳۰- جو راجہ سپاہ نہیں رکھتا اور جاہل اور لالچی اور دنیاوی عیش میں بھولا ہوا ہے وہ انصاف کے موافق سزا نہیں دیسکتا-

समीक्ष्यसधृतःसम्यक्सर्वारंजयतिप्रजाः॥ असमीक्ष्यप्रणी
तस्तुविनाशयतिसर्वतः॥ १९॥ यदिनप्रणयेद्राजादण्डं-
दण्ड्येष्वतन्द्रितः॥ शूलेमत्स्यानिवापक्ष्यन्दुर्बलान्बलवत्तराः
॥२०॥ अद्यात्काकःपुरोडाशंश्वाचलिह्याद्धविस्तथा॥स्वा
म्यंचनस्यात्कस्मिंश्चित्प्रवर्त्तेताधरोत्तरम्॥ २१॥सर्वोदण्डजि-
तोलोकोदुर्लभोहिशुचिर्नरः॥दण्डस्यहिभयात्सर्वंजगद्भोगा-
यकल्पते॥२२॥देवदानवगन्धर्वारक्षांसिपतगोरगाः॥तेपि
भोगायकल्पन्तेदण्डेनैवनिपीडिताः॥२३॥दुष्येयुःसर्ववर्णा-
श्चभिद्येरन्सर्वसेतवः॥सर्वलोकप्रकोपश्चभवेद्दण्डस्यविभ्र-
मात्॥ २४॥

۱۹- جب غور کرکے اچھی طرح سے سزا دیجاتی ہے تب تمام رعایا کو آرام ملتا ہے اور جب وہی
سزا بدون غور کئے بے محابا دیجاتی ہے تب تمام رعایا کو سب طرف سے مٹا دیتی ہے۔

۲۰- اگر راجہ سستی کرکے اشخاص واجب التعزیر کو سزا نہ دیوے تو زبردست آدمیون کو
زبردست آدمی جیسا مشکل کردیوین۔

۲۱- اگر سزا نہو تو دیوتاؤن کا حصہ کوکوا کھا ڈالے اور کوئی مالک نرہے سب الٹ پلٹ ہو جاے

۲۲- جتنے جاندار ہین سب سزا کے لائق ہین پاک آدمی ناتوان ہین سزا کے خوف سے سب
جاندار کام کرنے کی طاقت رکھتے ہین۔

۲۳- دیو دانو راکشش پکشی سانپ یہ سب سزا کے وسیلے سے کام کرنے کی طاقت
رکھتے ہین۔

۲۴- سزا کے لائق آدمیون کو سزا نہ دینے سے اور سزا نہ دینے کے لائق آدمیون کو سزا
دینے سے تمام ورن دشٹ ہو جاینگے اور مرجادا ٹوٹ جایگی تمام عالم درہم برہم
ہو کر بگڑ جائیگا۔

तस्माद्धर्म्मयमिष्टेषु सव्यवस्येन्नराधिपः ॥ अनिष्टं चाप्यनिष्टेषु तं धर्म्मं न विचालयेत् ॥ १३ ॥ तस्यार्थे सर्व्वभूतानां गोप्तारं धर्म्ममात्मजम् ॥ ब्रह्मतेजोमयं दण्डमसृजत्पूर्व्वमीश्वरः १४ ॥ तस्य सर्व्वाणि भूतानि स्थावराणि चराणि च ॥ भयाद्भोगाय कल्पन्ते स्वधर्म्मान्न चलन्ति च ॥ १५ ॥ तं देशकालौ शक्तिं च विद्यां चावेक्ष्य तत्वतः ॥ यथार्हतः संप्रणयेन्नरेष्वन्यायवर्त्तिषु ॥ १६ ॥ स राजा पुरुषो दण्डः स नेता शासिता च सः ॥ चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः ॥ १७ ॥ दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति ॥ दण्डः सुप्तेषु जागर्त्ति दण्डं धर्म्मं विदुर्बुधः ॥ १८ ॥

۱۳۔ اس سبب سے دھشت انشٹ مین وید کے موافق جس دھرم کو راجہ قایم کرے اس سے انحراف نکرنا چاہیے۔

۱۴۔ ایشور نے اس راجہ کے واسطے سب جانداروں کے حفاظت کے لئے اپنے بیٹے برھم تیج روپ ڈنڈ کو پہلے ہی پیدا کیا۔

۱۵۔ اس ڈنڈ کے خوف سے جانداران ساکن و متحرک بھوگ کرنے کے لئے سمرتھ ہوتے ہین اور اپنے دھرم سے منحرف نہین ہو سکتے۔

۱۶۔ ملک و وقت و علم و طاقت کو دیکھکر مجرمون کو درجہ بدرجہ سزا سے مناسب دیوے۔

۱۷۔ وہی ڈنڈ (یعنی سزا) جسکا اوپر بیان کیا گیا ہے راجہ ہے اور وہی مرد ہے اور سب بمنزلہ عورت ہین کامونکا انجام دینے والا چار و آشرمونکے دھرم کا حکم دینے والا اور ضامن وہی ہے۔

۱۸۔ سب رعایا کی حفاظت کرنیوالا اور حکم دینے والا اور سوتے ہوئے لوگون کا جگانیوالا وہی ڈنڈ ہے اُسی ڈنڈ کو پنڈت لوگ دھرم کہتے ہین۔

सोऽग्निर्भवतिवायुश्चसोऽर्कःसोमःसधर्म्मराट्॥ सकुबेरः
सवरुणःसमहेन्द्रःप्रभावतः॥७॥बालोऽपिनावमन्तव्यो
मनुष्यइतिभूमिपः॥ महतीदेवताह्येषानररूपेणतिष्ठति॥
८॥ एकमेवदहत्यग्निर्नरन्दुरुपसर्पिणम्॥ कुलन्दहति
राजाग्निःसपशुद्रव्यसंचयम्॥९॥कार्य्यंसोऽवेक्ष्यशक्तिं-
चदेशकालौचतत्वतः॥ कुरुतेधर्म्मसिद्ध्यर्थंविश्वरूपंपुनः
पुनः॥१०॥यस्यप्रसादेपद्मास्त्रीविजयश्चपराक्रमे॥मृत्यु-
श्चवसतिक्रोधेसर्व्वतेजोमयोहिसः॥११॥तंयस्तुद्वेष्टिसंमो-
हात्सविनश्यत्यसंशयम्॥ तस्यह्याशुविनाशायराजाप्रकु-
रुतेमनः॥१२॥

۷- وہی راجہ اپنے پربھاؤ کے موافق۔ اگن ہوا سورج چندرمان دھرم راج اندر
کبیر برن ہے۔
۸- راجہ بالک بھی ہو تو بھی بعقل انسانی اسکی تحقیر نکرنا چاہیے کیونکہ راجہ بصورت انسان
بڑا دیوتا زمین پر قائم ہے۔
۹- اگن کے سامنے جو کوئی جاتا ہے صرف اسی کو اگن جلاتی ہے مگر راج روپی اگن
تمام خاندان کو مع اسباب و چارپایہ کے جلا دیتی ہے۔
۱۰- وہ راجہ اپنے کام و شکست و دیش و کال کو تتو پوروک دیکھکر دھرم سدھ کیلئے
انیک روپ بارم بار دھارن کرتا ہے۔
۱۱- جس راجہ کی خوشی میں لکشمی رہتی ہے اور پراکرم میں فتح اور غصہ میں موت وہ راجہ
تمام تیجون کا دھارن کرنیوالا ہے۔
۱۲- جو آدمی موہ سے ایسے راجہ کے ساتھ دشمنی کرتا ہے وہ ضرور ناش ہوجاتا ہے
ایسے آدمی کے ناش کے لئے راجہ بہت جلد دل لگاتا ہے۔

राजधर्मान्प्रवक्ष्यामियथावृत्तोभवेन्नृपः॥सम्भवश्चयथा तस्यसिद्धिश्चपरमायथा॥१॥ब्राह्मंप्राप्तेनसंस्कारंक्षत्रि-येणायथाविधि॥सर्व्वस्यास्ययथान्यायंकर्त्तव्यंपरिरक्ष-णम्॥२॥अराजकेहिलोकेऽस्मिन्सर्व्वतोविद्रुतेभयात्॥ रक्षार्थमस्यसर्व्वस्यराजानमसृजत्प्रभुः॥३॥इन्द्रानिलयमा-र्काणामग्नेश्चवरुणस्यच॥चन्द्रवित्तेशयोश्चैवमात्राभि-र्निर्म्मितोनृपः॥४॥यस्मादेषांसुरेन्द्राणांमात्राभ्योनिर्मि-तोनृपः॥तस्मादभिभवत्येषसर्वभूतानितेजसा॥५॥तपत्या-दित्यवच्चैषचक्षूंषिचमनांसिच॥नचैनंभुविशक्नोतिकश्चि-दप्यभिवीक्षितुम्॥६॥

۱- جس پرکار سے راجون کی پیدایش اور پرم ستہ ہوا اور آچرن ہے اس سب کو کہین گے-

۲- کشتری بدھ سے جینو لے کر اپنی راج کی پرجا کا پالن ازروے انصاف سے کرے-

۳- جو ملک سب طرف سے خوفناک ہے اور اوسمین راجہ نہین ہے اس ملک کی حفاظت کیواسطے سری برہماجی نے راجہ کو پیدا کیا-

۴- اندر- بایو- یم- راج- سورج- اگن- برن- چندرمان کبیر- ان آٹھون کے انس سے سری برہماجی نے راجہ کو پیدا کیا

۵- جو کہ دیوتون کے انش سے راجہ پیدا ہوا ہے اس سبب سے اپنے تیج سے سب جانداروں کو مغلوب کرتا ہے-

۶- دیکھنے والے کی آنکھون کو اور دل کو سورج کیطرح تپاتا ہے کوئی آدمی زمین پر راجون کے روبرو ہوکر انکو دیکھ نہین سکتا کیونکہ اونکا تیج سورج کے مانند ہے-

दशलक्षणकं धर्ममनुतिष्ठन्समाहितः।। वेदान्तं विधिवच्छ्रु-
त्वासंन्यसेदनृणोद्विजः।।९४।।संन्यस्यसर्वकर्माणिकर्मदो-
षानपानुदन्।। नियतोवेदमभ्यस्यपुत्रैश्वर्येसुखंवसेत्।।९५
।।एवंसंन्यस्यकर्माणिस्वकार्यपरमोऽस्पृहः।। संन्यासेना-
पहत्यैनः प्राप्नोतिपरमांगतिम्।।९६।।एषवोऽभिहितोध-
र्मोब्राह्मणस्यचतुर्विधः।। पुण्योऽक्षयफलःप्रेत्यराज्ञांध-
र्मंनिबोधत।।९७।।

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां षष्ठोऽध्यायः ६

۹۴ - بے فکر ہو کر اس دھرم کو کرتا ہوا بدھ پورک ویدانت شاستر کو سنکر تینوں رِن یعنے قرض کو ادا کر کے سنیاس دھارن کرے -
۹۵ - سب کرموں کو چھوڑ کر اور کرم دوش کا ناش کر کے نیم سے وید کا ابھیاس کر کے پتر کے ایشورج میں سکھ سے رہے -
۹۶ - اسطرح سب کرموں کو چھوڑ کر آتم گیان کو مقدم کر سورگ وغیرہ کی خواہش چھوڑ کر سنیاس کے وسیلہ سے پاپوں کو دور کر کے پرم گت کو پاتا ہے -
۹۷ - بھرگ جی کہتے ہیں کہ اے رشی لوگو آپ سے براہمنوں کا چار پرکار کا دھرم کہا وہ دھرم پاک ہے اور پرلوک میں اسکا پھل بے زوال ہے اسکے بعد راجن کا دھرم کہتے ہیں -

منُ جی کا دھرم شاستر بھرگ جی کی سنگھتا کا چھٹھوان ادھیاے

سماپت ہوا -

सर्वेषामेवचैतेषांवेदस्मृतिविधानतः॥ गृहस्थउच्यतेश्रेष्ठःस-
त्रीनेतान्बिभर्तिहि॥८९॥यथानदीनदाःसर्वेसागरेयांतिसं-
स्थितिम्॥तथैवाश्रमिराःसर्वेगृहस्थेयांतिसंस्थितिम्॥९०
॥चतुर्भिरपिचैवैतैर्नित्यमाश्रमिभिर्द्विजैः॥दशलक्षणकोध-
र्मःसेवितव्यःप्रयत्नतः॥९१॥धृतिःक्षमादमोऽस्तेयंशौचमि-
न्द्रियनिग्रहः॥धीर्विद्यासत्यमक्रोधोदशकंधर्मलक्षणम्॥
९२॥दशलक्षणानिधर्मस्यये विप्राःसमधीयते॥ अधीत्य-
चानुवर्त्तन्तेतेयान्तिपरमांगतिम्॥९३॥

٨٩ - ویداور اسمرت کے بدھان سے چاروں آشرموں سے گرہستھ آشرم بڑا ہے کیونکہ تینوں آشرم مین رہنے والے آدمیون کو کھانے اور کپڑے سے گرہستھ ہی پالن کرتا ہے۔

٩٠ - جسطرح ندی اور نالے سمندر مین جاکر قائم ہوتے ہین اسیطرح سب آشرم والے گرہستھ ہی مین قیام پاتے ہین۔

٩١ - چاروں آشرم والے ہمیشہ دس لکشن والے دھرم کو تدبیر سے اختیار کرین

٩٢ - دھرم کے دس لکشن یہ ہین۔ سنتوش (یعنے قناعت) کشما (یعنے کسی سے نقصان پاکر اسکا نقصان نکرنا) دم (یعنے بکار کرنیوالے بسئے پاکر من مین بکار نہونا) چوری کا تیاگ پوترتا (یعنے طہارت) بشیون سے اندریون کو روکنا۔ شاستر وغیرہ کا تتو گیان آتم گیان (یعنی خودشناسی) ستیہ۔ غصہ کرنے والی بات مین بھی غصہ نکرنا

٩٣ - جو آدمی ان دھرمون کو جان کر اختیار کرتا ہے وہ پرم گت کو پاتا ہے۔

अधियज्ञंब्रह्मजपेदाधिदैविकमेवच॥ आध्यात्मिकंचसततं
वेदान्ताभिहितंचयत्॥ ८३॥ इदंशरणमज्ञानामिदमेववि-
जानताम्॥ इदमन्विच्छतांस्वर्गमिदमानन्त्यमिच्छताम्॥
८४॥ अनेनक्रमयोगेनपरिव्रजतियोद्विजः॥ सविधूयेहपा-
प्मानंपरंब्रह्माधिगच्छति॥ ८५॥ एषधर्मोऽनुशिष्टोवोय-
तीनांनियतात्मनाम्॥ वेदसंन्यासिकानान्तुकर्मयोगंनिबो-
धत॥ ८६॥ ब्रह्मचारीगृहस्थश्चवानप्रस्थोयतिस्तथा॥ एते
गृहस्थप्रभवाश्चत्वारःपृथगाश्रमाः॥ ८७॥ सर्वेऽपिक्रमशा-
स्त्वेतेयथाशास्त्रंनिषेविताः॥ यथोक्तकारिणंविप्रंनयन्ति
परमांगतिम्॥ ८८॥

۸۳ - یگیہ اور دیوتا اور جیو ان سبھون کے ادھکار کرکے جو برہم کا سروپ وید اور ویدانت مین کہا ہے ان سبھون کا برت یاد کرنے والا جو وید ہے اسکا جپ کرے۔

۸۴ - گیانی اور اگیانی اور موکش و سورگ کی اچھا کرنیوالون کو تدبیر بتانیوالا ایک وید ہی ہے

۸۵ - جو براہمن کشتری ویشیہ اس طریق سے سنیاسی ہوتا ہے وہ اس لوک مین پاپ کو چھوڑکر پرلوک مین پربرہم کو پاتا ہے۔

۸۶ - بھرگ جی کہتے ہین کہ اے رشیو چار طرح کے جو یتی ہین کٹیچر بہودک ہنس پرم ہنس ان سبھون کا سادھارن دھرم کہا اب تینون مین جو بیس کٹیچر ہین انکا اسادھارن دھرم کہتی ہین

۸۷ - برہم چاری گرہستھ بانپرستھ یتی یعنی سنیاسی یہ چارو آشرم علیحدہ علیحدہ گرہستھ ہی سے پیدا ہین۔

۸۸ - جو براہمن شاستر کی بدھ سے ان چارو آشرم کا سیون کرتا ہے وہ پرم گت کو پاتا ہے۔

जराशोकसमाविष्टंरोगायतनमातुरम्॥रजस्वलमनित्यंचभूतावासमिमंत्यजेत्॥७७॥नदीकूलंयथावृक्षोवृक्षंवाशकुनिर्यथा॥तथात्यजन्निमन्देहंकृच्छ्राद्ग्राहाद्विमुच्यते॥७८॥प्रियेषुस्वेषुसुकृतमप्रियेषुचदुष्कृतम्॥विसृज्यध्यानयोगेनब्रह्माभ्येतिसनातनम्॥७९॥यथाभावेनभवतिसर्वभावेषुनिःस्पृहः॥तदासुखमवाप्नोतिप्रेत्यचेहचशाश्वतम्॥८०॥अनेनविधिनासर्वांस्त्यक्त्वासंगान्शनैःशनैः॥सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तोब्रह्मण्येवावतिष्ठते॥८१॥ध्यानिकंसर्वमेवैतद्यदेतदभिशब्दितम्॥नह्यनध्यात्मवित्कश्चित्क्रियाफलमुपाश्नुते॥८२॥

۷۷۔ ضعیفی اور رنج کی وجہ سے بیماری کا گھر دکھ سکھ پیاس سردی گرمی سے بے چین رجوگن کے ساتھ ناش ہونے والا پنچ عناصر کا گھر ایسے بدن میں جیو آتما رہتا ہے سو ایسے بدن کو ترک کرے یعنے جس کرم کرنے سے ایسا شریر ملے وہ کرم نہ کرے۔

۷۸۔ جسطرح ندی کے کنارے کو درخت چھوڑ دیتا ہے اور درخت کے پرند درخت کو اسیطرح شریر کو تیاگ کرتا ہوا برہم کی اپاسنا کرنیوالا کشٹ روپی گراہ سے چھوٹ جاتا ہے۔

۷۹۔ برہم کو جاننے والا مہاتما ہت کارج میں سُکرت کو تیاگ کرکے دھیان یوگ کے وسیلہ برہم میں لین ہو جاتا ہے۔

۸۰۔ جب پرمارتھ کی وجہ سے بستیوں میں دوش جانکر سب چیزوں سے بیخواہش ہو جاتا ہے تب اِس لوک میں اور پرلوک میں سُکھ پاتا ہے۔

۸۱۔ اِسطرح آہستہ آہستہ سب کو تیاگ کرکے کام کرودھ وسردی وگرمی وغیرہ جو جفت چیزیں ہیں اُن سے علیحدہ ہوکر برہم میں لین ہوتا ہے۔

۸۲۔ پتر وغیرہ کی ممتا کا تیاگ اور مان واپمان کا سہنا یہ سب باتیں جیو آتما کو پرماتما کے دھیان کے وسیلے سے ملتی ہیں آتما کا نجاننے والا آدمی کریا پھل (یعنی موہ کا تیاگ اور جفت چیزوں کا سہنا) اور کسی نہیں پا سکتا

दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः॥ तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्॥७१॥ प्राणायामैर्दहेद्दोषान्धारणाभिश्च किल्बिषम्॥ प्रत्याहारेण संसर्गान्ध्यानेनानीश्वरान्गुणान्॥ उच्चावचेषु भूतेषु दुर्ज्ञेयामकृतात्मभिः॥ ध्यानयोगेन सम्पश्येद्गतिमस्यान्तरात्मनः॥७३॥ सम्यग्दर्शनसम्पन्नः कर्मभिर्न निबध्यते॥ दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते॥७४॥ अहिंसयेन्द्रियासङ्गैर्वैदिकैश्चैव कर्मभिः॥ तपसश्चरणैश्चोग्रैः साधयन्तीह तत्पदम्॥७५॥ अस्थिस्थूणं स्नायुयुतं मांसशोणितलेपनम्॥ चर्मावनद्धं दुर्गन्धि पूर्णं मूत्रपुरीषयोः॥७६॥

۱ ۷ - جسطرح سب دھات (مثل چاندی و سونا وغیرہ) آگ مین تپانے سے میل سے صاف ہو جاتی ہے اسی طرح پرانایام کرنے سے اندریون کا سب دوش بھسم ہو جاتا ہے۔

۲ ۷ - پرانایام کے وسیلے سے راگ و دیش وغیرہ دوشون کو جلا دینا چاہئے برہم مین دل لگانے سے پاپ کو دور کرنا اور اندریون کو روکنے سے بسنتے کو دور کرنا اور دھیان سے کرودھ لوبھ مند وغیرہ جو کہ ایشور سے نسبت نہین رکھتے چھوڑنا چاہیے۔

۳ ۷ - اونچ نیچ بھوتون مین اس انترآتما کی گت کو دھیان جوگ کرکے دیکھے جس گت کو شاستر کے موافق سنسکار سے جدا نشش کرن والے آدمی کشٹ سے بھی نہین دیکھ سکتے۔

۴ ۷ - تتو پورک برہم کو دیکھنے والا آدمی کرمون کے بندھن مین نہین آتا اور جو آدمی برہم درشن سے محروم رہتا ہے وہ سنسار کو پاتا ہے برہم کو نہین پاتا۔

۵ ۷ - جیون کو نہ مارنا اندریون کی صحبت مین نہ پڑنا وید کے موافق کرم کرنا بڑا تپ کرنا ان کے ذریعہ سے عقلمند آدمی برہم پد دی کو سادھن کرتا ہے۔

۶ ۷ - (اب شریر کا برنن کرتے ہین) ہاڑ کا کھمبھا یعنے ستون رگون سے کسا ہوا خون و گوشت سے لپا ہوا چمڑے سے بندھا ہوا بو دار غلیظ و پیشاب سے بھرا ہوا ہے۔

सूक्ष्मतां चान्ववेक्षेत योगेन परमात्मनः ॥ देहेषु च समुत्पत्ति-
मुत्तमेष्वधमेषु च ॥ ६५ ॥ दूषितोऽपि चरेद्धर्म्मं यत्र तत्राश्रमेर-
तः ॥ समः सर्व्वेषु भूतेषु न लिंगं धर्म्मकारणम् ॥ ६६ ॥ फलंक-
तकवृक्षस्य यद्यप्यम्बुप्रसादकम् ॥ न नामग्रहणादेव तस्य वा-
रि प्रसीदति ॥ ६७ ॥ संरक्षणार्थं जन्तूनां रात्रावहनि वा सदा ॥
शरीरस्यात्यये चैव समीक्ष्य वसुधां चरेत् ॥ ६८ ॥ अह्ना रात्र्या
च यान् जन्तून् हिनस्त्यज्ञानतो यतिः ॥ तेषां स्नात्वा विशुद्ध्यर्थं
प्राणायामान् षडाचरेत् ॥ ६९ ॥ प्राणायामा ब्राह्मणस्य त्रयो
ऽपि विधिवत्कृताः ॥ व्याहृतिप्रणवैर्युक्ता बिज्ञेयं परमं तपः
॥ ७० ॥

۶۵- یوگ کے وسیلے سے پرماتما کی گت کو اعمال نیک و بد کا نتیجہ پانے کیواسطے اُتم مدھیم ادھم یون مین جانداروں کی پیدایش کو بھی غور کرے۔

۶۶- کسی آشرم مین رہے اور اُس آشرم کے دھرم پر چلتا ہو لیکن برھم بدھی سے سب کو برابر دیکھے یہی دھرم ہے گیروا کپڑا وغیرہ پہننا کچھ دھرم مین داخل نہین ہے۔

۶۷- نرملی پھل اگرچہ پانی کو صاف کرتا ہے لیکن اُسکے نام لینے سے پانی صاف نہین ہوتا جب اُسکو گھسکر پانی مین ڈالینگے تب صاف ہوگا اسیطرح چھہ دھارن کرنا کچھ دھرم نہین ہے بلکہ اس دھرم پر چلنا دھرم کہلاتا ہے۔

۶۸- جاندارون کی حفاظت کیواسطے دن رات ہر وقت زمین کو دیکھکر چلے تاکہ کوئی جیو نہ مرے اور اوسکے بدن کو بھی تکلیف نہو۔

۶۹- جو سنیاسی بغیر جانے جاندارون کو مارتا ہے اس پاپ کے دور کرنے کے واسطے اشنان کرکے چھہ پرانایام کرنے سے سدھ ہوتا ہے۔

۷۰- بیاہرت اور اونکار کرکے جو ہو سے تین پرانایام بھی کرے تو اس براہمن کا پرم تپ ہے

अल्पान्नाभ्यवहारेण रहः स्थानासनेन च ॥ ह्रियमाणानि-
विषयैरिन्द्रियाणि निवर्तयेत् ॥ ५९ ॥ इन्द्रियाणां निरोधेन राग
द्वेषक्षयेण च ॥ अहिंसया च भूतानाममृतत्वाय कल्पते ॥ ६० ॥
अवेक्षेत गतीर्नृणां कर्मदोषसमुद्भवाः ॥ निरये चैव पतनं यात
नाश्च यमक्षये ॥ ६१ ॥ विप्रयोगं प्रियैश्चैव संयोगं च तथाप्रियैः ॥
जरया चाभिभवनं व्याधिभिश्चोपपीडनम् ॥ ६२ ॥ देहादुत्क्रमणं
चास्मात्पुनर्गर्भे च संभवम् ॥ योनिकोटिसहस्रेषु सृतीश्चास्या
न्तरात्मनः ॥ ६३ ॥ अधर्मप्रभवं चैव दुःखयोगं शरीरिणाम् ॥ ध-
र्मार्थप्रभवं चैव सुखसंयोगमक्षयम् ॥ ६४ ॥

۵۹ - تھوڑا بھوجن کرے اور ایکانت مین رہے اِس سے بِشیون کی قابو کی ہوئی اندریون
کو نِبرِت کرے یعنے نفس اَمّارہ کو ہوا و ہوس سے خالی کرے -

۶۰ - اندریون کو روکنا راگ اور دویش سے الگ رہنا کسی جاندار کو نہ مارنا اِن باتون سے
سنّیاسی موکش کے لائق ہوتا ہے -

۶۱ - کرمون کے دوش سے آدمیون کی حالت اور نرک مین پڑنا اور یم راج کے ملک مین
بڑا دُکھ پانا اِن سب باتون کو دیکھے یعنے بچار کرے -

۶۲ - پیاری چیزون کا چھوٹنا نامرغوب چیزون کا ملنا بحالت پیری بے قدری گناہ کو
عذاب و رنج اِن باتون پر بھی غور کرے -

۶۳ - بدن سے جان کا نکلنا پھر حمل مین قیام کرنا کروڑون قالب مین پیدا ہونا
اِن باتون پر بھی غور کرے -

۶۴ - دیہ دھاری آدمیون کے ادھرم سے دُکھ کا ہونا اور دھرم دارتھ سے
لازوال سُکھ کا ہونا بھی غور کرے -

अतैजसानि पात्राणि तस्य स्युर्निर्व्रणानि च ॥ तेषामद्भिः स्मृ-
तं शौचं चमसानामिवाध्वरे ॥ ५३ ॥ अलाबुं दारुपात्रं च मृन्मयं
वैदलं तथा ॥ एतानि यतिपात्राणि मनुः स्वायंभुवोऽब्रवीत् ॥ ५४
एककालं चरेद्भैक्षं न प्रसज्जेत विस्तरे ॥ भैक्षे प्रसक्तो हि यतिर्वि-
षयेष्वपि सज्जति ॥ ५५ ॥ विधूमे सन्नमुसले व्यंगारे भुक्तवज्जने
॥ वृत्ते शरावसंपाते भिक्षां नित्यं यतिश्चरेत् ॥ ५६ ॥ अलाभे न वि-
षादी स्याल्लाभे चैव न हर्षयेत् ॥ प्राणयात्रिकमात्रः स्यान्मात्रा-
संगाद्विनिर्गतः ॥ ५७ ॥ अभिपूजितलाभांस्तु जुगुप्सेतैव सर्व-
शः ॥ अभिपूजितलाभैश्च यतिर्मुक्तोऽपि बध्यते ॥ ५८ ॥

۵۳ — جو برتن کانسے وپیتل وغیرہ کے ہین انکو چھوڑ کر تونبا وغیرہ کو رکھے جنہین چھید ہو
انکو پانی و مٹی سے پاک کرے جیسے یگیہ مین چمس نام برتن کو پاک کرتے ہین —

۵۴ — تونبی اور کاٹھ او مٹی اور بانس کا برتن اپنے پاس رکھے صرف اتنی ہی برتن سنیاسی
کے ہین ایسا منجی نے کہا ہے —

۵۵ — صرف ایک وقت بھیکھ مانگے زیادہ بھیکھ لینے کی خواہش نکرے کیونکہ زیادہ بھیکھ
لینے سے سنیاسی لذت دنیا مین گرفتار ہو جاتا ہے —

۵۶ — جسوقت گرہستھ کے گھر مین دھوان وموسل کی آواز نہو اور آگ بھی روشن نہو اور سب
آدمی بھوجن کر چکے ہون اور جوٹھی پتیل وغیرہ گھر سے باہر ڈال دیگئی ہو اسوقت سنیاسی بھیکھ
کیواسطے ہمیشہ جاوے —

۵۷ — بھیکھ نملے تو رنجیدہ نہو اور ملے تو خوش نہو جسمین پران کی رکشا ہو وہی کرے اور ڈنڈا
وغیرہ سامگری مین اچھے برے کا خیال نکرے جیسا ملجاوے اسی سے کارروائی کرے —

۵۸ — جو چیز پوجا سے ملے اسکی نندا کرے یعنے اسکو نہ لیوے اور پوجا مین خوش ہونے سے
مکت روپ سنیاسی بندھن مین پھنس جاتا ہے —

क्रुध्यन्तं न प्रतिक्रुध्येदाक्रुष्टः कुशलं वदेत्॥ सप्तद्वारावकीर्णां
च न वाचमनृतां वदेत्॥४८॥ अध्यात्मरतिरासीनो निरपेक्षो
निरामिषः॥ आत्मनैव सहायेन सुखार्थी विचरेदिह॥४९॥
न चोत्पातनिमित्ताभ्यां न नक्षत्राङ्गविद्यया॥ नानुशासनवा
दाभ्यां भिक्षां लिप्सेत कर्हिचित्॥५०॥ न तापसैर्ब्राह्मणैर्वा व
योभिरपि वा श्वभिः॥ आकीर्णं भिक्षुकैर्वान्यैरगारमुपसंव्र-
जेत्॥५१॥ क्लृप्तकेशनखश्मश्रुः पात्री दण्डी कुसुम्भवान्॥
विचरेन्नियतो नित्यं सर्वभूतान्यपीडयन्॥५२॥

۴۸ - اپنے اوپر کوئی غصہ کرے تو آپ اُس پر غصہ نہ کرے اور اگر اپنی بُرائی کرے تو بھی اپنی اچھی باتوں سے اُسکو خوش کرے پانچ گیان اندری اور من اور بدھ ان سات سے جو چیز گرہن کی گئی اُنکی بانی کی پرورتی ہے پس ان سات وسیلوں سے جو مطلب حاصل کیا گیا اُس مطلب سے نسبت رکھنے والی بانی کو نہ بولے بلکہ جو بانی برہم سے نسبت رکھتی ہے اُسکو بولے یعنے سچ بولا کرے۔

۴۹ - آتما میں پریت کرتا ہے کسی چیز کی خواہش نہ کرے ماس کھانا چھوڑ دے صرف اپنی آتما ہی کو مددگار جانکر سکھ کیلئے اِس لوک میں رہے

۵۰ - زلزلہ زمین آنکھ کا پھڑکنا وغیرہ نکشتر اور ہاتھ کی ریکھا انہوں کا پھل کہکر نیت شاستر کا اپدیش کرکے کبھی بھیک لینے کی خواہش نہ کرے۔

۵۱ - سنیاسی برہمن وپرند و کتّے و بھکاری یہ سب جس گھر میں ہوں اُس گھر کو چھوڑ دے۔

۵۲ - بال و ناخن و مونچھ کو چھوٹا رکھے ڈنڈ و کمنڈل و پاتر کو پاس رکھے کسی جاندار کو رنج و تکلیف نہ دیوے یکسو ہو کر ہمیشہ رہے۔

अनग्निरनिकेतःस्याद्ग्राममन्नार्थमाश्रयेत्॥ उपेक्षकोऽशं-
कुसुकोमुनिर्भावसमाहितः॥४३॥कपालंवृक्षमूलानिकु-
चेलमसहायता॥ समताचैवसर्वस्मिन्नेतन्मुक्तस्यलक्षणा-
म्॥४४॥नाभिनन्देतमरणंनाभिनन्देतजीवितम्॥ कालमे-
वप्रतीक्षेतनिर्देशंभृतकोयथा॥४५॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादंव-
स्त्रपूतंजलंपिबेत्॥ सत्यपूतांवदेद्वाचंमनःपूतंसमाचरेत्॥४६
॥ अतिवादांस्तितिक्षेतनावमन्येतकंचन॥ नचेमंदेहमाश्रि-
त्यवैरंकुर्वीतकेनचित्॥४७॥

۴۳ - اگن اور گھر سے علیحدہ ہو کر سب چیزوں کو ترک کرکے مستقیم العقل ہو کر برہم میں چت لگائے ہوئے اَن کے واسطے گانوں کا آسرا کرے -

۴۴ - مکت کا لکشن یہ ہے کہ بھیکھ کے واسطے مٹی کا برتن رکھے درخت کی جڑ میں سووے اور ایسے کپڑے رکھے کہ جو کسی کام کے لائق نہوں اور کسی سے مدد نہ چاہے اور سب جانداروں کو برابر سمجھے -

۴۵ - موت یا زندگی ان دونوں میں سے کسی کی خواہش نکرے صرف وقت ہی کا خیال رکھے جیسے نوکر اپنے مالک کے حکم کا خیال رکھتا ہے -

۴۶ - بال اور ہڈی سے علیحدہ رہنے کے لیئے دیکھکر زمین پر پانوں رکھے اور چھوٹے چھوٹے جانداروں کی حفاظت کے لیئے پانی چھان کر پیوے اور جو باتیں سچ کرکے پاک ہیں انکو بولے اور من کو سنکلپ سے خالی کرکے ہر وقت پوتر آچار رہے -

۴۷ - لوگوں کی بیہودہ باتوں کی برداشت کرے اور کسی کا اپمان (توہین) نکرے اور نہ کسی سے دشمنی کرے -

अनधीत्यद्विजोवेदाननुत्पाद्यतथासुतान्॥ अनिष्ट्वाचैवय
ज्ञैश्चमोक्षमिच्छन्व्रजत्यधः॥३७॥प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिंसर्व
वेदसदक्षिणाम्॥ आत्मन्यग्नीन्समारोप्यब्राह्मणःप्रव्रजे
द्गृहात्॥३८॥योदत्त्वासर्वभूतेभ्यःप्रव्रजत्यभयंगृहात्॥ त-
स्यतेजोमयालोकाभवन्तिब्रह्मवादिनः॥३९॥यस्मादण्व
पिभूतानांद्विजान्नोत्पद्यतेभयम्॥ तस्यदेहाद्विमुक्तस्यभयं-
नास्तिकुतश्चन॥४०॥आगारादभिनिष्क्रान्तःपवित्रोपचि-
तोमुनिः॥समुपोढेषुकामेषुनिरपेक्षःपरिव्रजेत्॥४१॥ए-
कएवचरेन्नित्यंसिद्ध्यर्थमसहायवान्॥ सिद्धिमेकस्यसम्प
श्यन्नजहातिनहीयते॥४२॥

۳۷ - جو براہمن کشتری ویشیہ وید کو نہ پڑھکر اور دھرم سے پُتر پیدا کرکے اور یگیہ کا انشٹھان نہ کرکے موکش کی اچھا کرتا ہے وہ نرک مین جاتا ہے -

۳۸ - پرجاپت دیوتا کی یگیہ کرکے سب کو دکشنا دے کر سب اگن کو اپنی آتما مین رکھکر براہمن گھر سے نکلے یعنے سنیاس دھارن کرے

۳۹ - جو آدمی وید کا پڑھنے والا تمام جانداروں کو نیربھئی دے کر گھر سے باہر نکلتا ہے (یعنے سنیاس دھارن کرتا ہے) اسکو تیج روپ لوک ملتا ہے -

۴۰ - جس براہمن سے سب جانداروں کو تھوڑا بھی ڈر نہین ہے اسکو پرلوک مین کسی سے ڈر نہین ہوتا -

۴۱ - گھر سے نکلا ہوا اور طہارت سے ترقی پایا ہوا اور بچار کرتا ہوا اور دوسر کی دی ہوئی ان وغیرہ چیزون مین اچھا نرکھنے والا سنیاس دھارن کرے -

۴۲ - کسی کی مدد کی خواہش نکرے ہمیشہ اکیلا رہے سدھ کے لئے ایک ہی کو سدھ ہوتی ہو اسیات کو دیکھکر کسیکو تیاگ نہین کرتا اور اسکو بھی کوئی تیاگ نہین کرتا -

अपराजितां वास्थाय व्रजेद्दिशमजिह्मगः ॥ आनिपाताच्छ-
रीरस्य युक्तो वार्यनिलाशनः ॥ ३१ ॥ आसां महर्षिचर्याणां त्य-
क्त्वान्यतमया तनुम् ॥ वीतशोकभयो विप्रो ब्रह्मलोके महीय-
ते ॥ ३२ ॥ वनेषु च विहृत्यैवं तृतीयं भागमायुषः ॥ चतुर्थमायु-
षो भागं त्यक्त्वा संगान्परिव्रजेत् ॥ ३३ ॥ आश्रमादाश्रमं गत्वा हु-
तहोमो जितेन्द्रियः ॥ भिक्षाबलिपरिश्रान्तः प्रव्रजन्प्रेत्य वर्द्धते
॥ ३४ ॥ ऋणानि त्रीण्यपाकृत्य मनो मोक्षे निवेशयेत् ॥ अ-
नपाकृत्य मोक्षं तु सेवमानो व्रजत्यधः ॥ ३५ ॥ अधीत्य विधि-
वद्वेदान्पुत्रांश्चोत्पाद्य धर्मतः ॥ इष्ट्वा च शक्तितो यज्ञैर्मनो मो-
क्षे निवेशयेत् ॥ ३६ ॥

۳۱ - خواہ پانی وہوا کو کھاتا ہوا ایسان کونہ یعنے پورب واتر گوشہ کی طرف سیدھا چلا جاۓ
جبتک شریر نہ چھوٹے -

۳۲ - یہ سب آچرن بڑے بڑے رشیون نے کہا ہے انمین کسی آچرن سے شریر کا تیاگ کرکے شوک
اور ڈر کو چھوڑ کر برہم لوک مین پوجت ہوتا ہے -

۳۳ - اسطرح سے عمر کا تیسرا حصہ جنگل مین آخر کرکے سنگھ کو چھوڑ کر عمر کے حصہ چہارم مین
سنیاس کو دھارن کرے -

۳۴ - اندریون کو جیت کر ہون کو تمام کر ایک آشرم سے دوسرے آشرم مین جاکر بھیکھہ اور بل
کرم سے تھکا ہو سنیاس لیکر پرلوک مین برہم پد کو پاتا ہے -

۳۵ - تینون رن یعنی قرض جسکو دیورن پتررن رشی رن کہتے ہین ادا کرکے دلکو موکش
مین لگا دے بدون ادا کرنے ان تینون قرضون کے جو موکش کا سیون کرتا ہے وہ نرک مین جاتا

۳۶ - دہرم سے وید کو پڑھکر دھرم سے پتر پیدا کرکے اپنے مقدور کے موافق یگیہ کو کرتا ہوا
موکش مین دل لگا دے -

अग्नीनात्मनिवैतानांसमारोप्ययथाविधि॥ अनग्निरनि-
केतास्यान्मुनिर्मूलफलाशनः॥२५॥ अप्रयत्नःसुखार्थेषु-
ब्रह्मचारीधराशयः॥ शरणेष्वममश्चैववृक्षमूलनिकेतनः॥
२६॥ तापसेष्वेवविप्रेषुयात्रिकंभैक्षमाहरेत्॥ गृहमेधिषु-
चान्येषुद्विजेषुवनवासिषु॥ २७॥ ग्रामादाहृत्यवाश्नीयादष्टौ
ग्रासान्वनेवसन्॥ प्रतिगृह्यपुटेनैवपाणिनाशकलेनवा॥
२८॥एताश्चान्याश्चसेवेतदीक्षाविप्रोवनेवसन्॥ विविधा-
श्चौपनिषदीरात्मसंसिद्धयेश्रुतीः॥ २९॥ ऋषिभिर्ब्राह्मणै-
श्चैवगृहस्थैरेवसेविताः॥ विद्यातपोविवृद्ध्यर्थंशरीरस्यचशु-
द्धये॥ ३०॥

۲۵ - برہمن اگن ہوتر کی آگ کو اپنی آتما مین قائم کرے بعد اسکے اگن اور استہان سے علیحدہ ہوکر مول و پھل کھاتا ہوا شاستر کو بچارے۔

۲۶ - سکھ کے واسطے کوشش و تدبیر نکرے برہم چاری ہوکر زمین پر سووے درخت کی جڑ مین قیام کرے اور قیامگاہ سے محبت نرکھے۔

۲۷ - تپسوی براہمن سے بھیکھ مانگے اور جو گرہستھ بن باسی دوج ہین انسے بھی بھیکھ مانگے۔

۲۸ - خواہ گاؤن سے بھیکھ مانگ کر آٹھ لقمہ کھائے جنگل مین رہکر دونا یا ہاتھ یا مٹی کے برتن کے ٹکڑے مین بھیکھ لیوے۔

۲۹ - جنگل مین رہکر اس دکشا کا اور دوسری دکشا کا بھی سیون کرے اور طرح طرح کے اپنشدون مین جو وید کے منتر ہین انکو آتما کی بھلی پرکار سدھ ہونے کے لئے پڑھے اور سمجھے۔

۳۰ - بدن کے شدھ ہونے اور تپ بڑھنے کے واسطے اس ودیا کا سیون کرے جس ودیا کا سیون رشی اور گرہستھ براہمنون نے کیا ہے۔

नक्तंचान्नंसमश्नीयाद्दिवावाहृत्यशक्तितः॥ चतुर्थकालिको वास्यात्स्याद्वाप्यष्टमकालिकः॥ १९॥ चान्द्रायणविधानैर्वा शुक्लकृष्णेचवर्त्तयेत्॥ पक्षान्तयोर्वाप्यश्नीयाद्यवागूंक्वथितांसकृत्॥ २०॥ पुष्पमूलफलैर्वापिकेवलैर्वर्त्तयेत्सदा॥ कालपक्वैःस्वयंशीर्णैर्वैखानसमतेस्थितः॥ २१॥ भूमौविपरिवर्त्तेत तिष्ठेद्वाप्रपदैर्दिनम्॥ स्थानासनाभ्यांविहरेत्सवनेषूपयन्नपः॥ २२॥ ग्रीष्मेपंचतपस्तुस्याद्वर्षास्वभ्रावकाशिकः॥ आर्द्रवासास्तुहेमन्तेक्रमशोवर्द्धयंस्तपः॥ २३॥ उपस्पृशंस्त्रिषवणं पितॄन्देवांश्चतर्पयेत्॥ तपश्चरंश्चोग्रतरंशोषयेद्देहमात्मनः ॥२५॥

۱۹- اپنی طاقت کے موافق دن مین لاکر رات کو بھوجن کرے یا ایک دن اُپاس کرے دوسرے دن ایک دفعہ بھوجن کرے یا تین دن اُپاس کرے چوتھے دن ایک دفعہ بھوجن کرے

۲۰- چاندراین برت کو کرے خواہ اماوسیا خواہ پورنماشی کے دن ایک دفعہ جو کی لپسی کھاوے -

۲۱- جو پھول پھل مول بسبب گذرنے ایام کے پختہ ہوکر خود بخود کرے ہون انکو کھاکر زندگی بسر کرے -

۲۲- بان پرستھ کے مت مین رہکر صرف زمین ہی پر لوٹا کرے یا پانون کے اگلے حصّہ کے زور سے تمام دن کھڑا رہے اور استھان اور آسن مین بہار کرے تینون کال یعنی صبح دوپہر شام کو اشنان کرے -

۲۳- آہستہ آہستہ تپ کو بڑھاتا ہوا گرمی مین پنچ اگن تاپے برسات مین مکان سے بے پردہ مین رہے یعنی کھلے میدان مین رہے جاڑے مین گیلا کپڑا پہنے رہے -

۲۴- تینون کال اشنان کرکے دیوتا اور پتّرون کا ترپن کرے بڑے بھاری تپ کو کرتا ہوا بدن کو سکھاوے

स्थलजौदकशाकानिपुष्पमूलफलानिच॥ मेध्यवृक्षोद्भवा
न्यद्यात्स्नेहांश्चफलसंभवान्॥ १३॥ वर्जयेन्मधुमांसंचभौमा
निकवकानिच॥ भूस्तृणंशिग्रुकंचैवश्लेष्मातकफलानिच॥
१४॥ त्यजेदाश्वयुजेमासिमुन्यन्नंपूर्वसंचितम्॥ जीर्णानिचै
ववासांसिशाकमूलफलानिच॥ १५॥ नफालकृष्टमश्नीया
दुत्सृष्टमपिकेनचित्॥ नग्रामजातान्यार्तोऽपिमूलानिचफ-
लानिच॥ १६॥ अग्निपक्वाशनोवास्यात्कालपक्वभुगेववा।
अश्मकुट्टोभवेद्वापिदन्तोलूखलिकोऽपिवा॥ १७॥ सद्यःप्र-
क्षालकोवास्यान्माससंचयिकोऽपिवा॥ षण्मासनिचयो-
वास्यात्समानिचयएववा॥ १८॥

۱۳ - زمین و پانی و پاک درخت سے جو ساگ مول پھول و پھل پیدا ہوتے ہیں - انکو بھوجن کرے اور پھل سے پیدا ہوئے تیل کو بھی بھوجن کرے -

۱۴ - شراب و ماس و زمین سے پیدا ہوا چھتر اکار و بھوستر ن جو مالوہ دیش میں مشہور ہے و سگر ساگ جو باہلیک دیش میں مشہور ہے و بھیڑا ان سب کا کھانا ترک کرے -

۱۵ - منیون کا ان جو بٹورا ہے و پارچہ کہنہ و بوسیدہ و شاک مول پھل ان سب کو ترک کرے کنوار کے مہینے میں -

۱۶ - جو چیز ہل کے ذریعہ سے پیدا ہوئی اور جو چیز کھیت سے متصل ہو اگرچہ اسکو مالک نے ترک بھی کر دیا ہو تو بھی اوسکو بھوجن نہ کرے اور دکھی ہو تو بھی جو پھل مول بدون ہل چلائے گانون کے اندر پیدا ہوئے ہون انکو نہ کھاے -

۱۷ - جو چیز اگ کے ذریعہ سے یا زمانہ پا کر پختہ ہوئی ہو اسکو بھوجن کرے پتھر سے کوٹ کر دانتون کی اوکھلی بنا کر بھوجن کرے -

۱۸ - ایکدن کے بھوجن کے لائق چیز کو رکھے یا ایک مہینہ یا چھ مہینہ یا ایکسال تک کے بھوجن کے لائق چیز کو رکھے -

यद्भक्ष्यंस्यात्ततोदद्याद्बलिंभिक्षांचशक्तितः॥ अम्मूलफल-भिक्षाभिरर्चयेदाश्रमागतान्॥७॥स्वाध्यायेनित्ययुक्तःस्या-द्दान्तोमैत्रःसमाहितः॥ दातानित्यमनादातासर्वभूतानुकम्प-कः॥८॥वैतानिकंचजुहुयादग्निहोत्रंयथाविधि॥ दर्शमस्क-न्दयन्पर्वपौर्णमासंचयोगतः॥ ९ ॥ ऋक्षेष्ट्याग्रयणंचैव चातुर्मास्यानिचाहरेत॥ उत्तरायणंचक्रमशोदाक्षस्यायन-मेवच॥ १०॥वासन्तशारदैर्मेध्यैर्मुन्यन्नैःस्वयमाहृतैः॥ पुरो-डाशांश्चरूंश्चैवविधिवन्निर्वपेत्पृथक्॥ ११॥ देवताभ्यस्तुत-द्धुत्वावन्यंमेध्यतरंहविः॥ शेषमात्मनियुञ्जीतलवणंचस्वयं-कृतम्॥ १२॥

۷- جس چیز کو کھاوے اُسی چیز سے بل کرم کرے اور اُسی چیز کو حسب مقدور اپنے بھیکھ دیوے اور اسکے قیام گاہ پر جو کوئی آوے تو مول پھل بھیکھ سے اُسکا پوجن کرے-

۸- ہر روز وید پڑھے چت کو قائم رکھے سب کا دوست ہو کر رہے سردی و گرمی و کام و کرودھ وغیرہ کی برداشت کرے کسی سے کچھ نہ لیوے سب جیوں پر دیا رکھے-

۹- بدھی پوروک شاستر سے اگنی ہوتر کرے اور درشن پورنماش یگیہ کرے-

۱۰- نکشتر یگیہ اگرین چاتر ماس اترائن دکشائن کرمیوں کو کرے-

۱۱- بسنت اور جاڑے میں جو پاک غلہ قابل خورش منیہ ران پیدا ہوتا ہے اُسکو خود لاکر اُس سے بطریق شاستر علیحدہ علیحدہ پرڈوداس چرو دیوتاؤں کو یگیہ سدھ کے لئے دیوے-

۱۲- نہایت پاک ہنیہ دیوتاؤں کو دے کر جو بچے اسکو آپ بھوجن کرے اپنے بنائے ہوئے نمک کو بھوجن کرے-

एवंगृहाश्रमेस्थित्वाविधिवत्स्नातकोद्विजः॥वनेवसेत्तुनियतो
स्यथावद्विजितेन्द्रियः॥ १॥ गृहस्थस्तुयदापश्येद्वलीपलित
मात्मनः॥ अपत्यस्यैवचापत्यंतदारण्यंसमाश्रयेत्॥ २॥स
त्यज्यग्राम्यमाहारंसर्व्वंचैवपरिच्छदम्॥पुत्रेषुभार्य्यांनिक्षि
प्यवनंगच्छेत्सहैववा॥ ३॥ अग्निहोत्रंसमादायगृह्यंचाग्नि
परिच्छदम्॥ ग्रामादरण्यंनिःसृत्यनिवसेन्नियतेन्द्रियः॥ ४
॥मुन्यन्नैर्विविधैर्मेध्यैःशाकमूलफलेनवा॥ एतानेवमहा
यज्ञान्निर्वपेद्विधिपूर्व्वकम्॥ ५॥वसीतचर्म्मचीरंवासायं-
स्नायात्प्रगेतथा॥ जटाश्चबिभृयान्नित्यंश्मश्रुलोमनखानि-
च॥ ६॥

۱- اس طریق سے گرہستھ آشرم میں رہکر اسناتک دوج بیفکر ہو حواس پر غالب رہکر جنگل میں اسلئے کرکے عبادت کے مقیم ہووے۔

۲- جب گرہستھ آدمی آپ کو حالت پیری میں دیکھے اور بیٹی کے بیٹے کو دیکھے تب جنگل میں قیام کرے۔

۳- گانون کے اہار کو اور گھر کی سامگری کو ترک کرکے اور عورت کو بیٹے کے سپرد کرکے جنگل میں جاوے خواہ مع عورت کے جنگل میں جاوے۔

۴- اگن ہوتر کو اور مع سامگری کے گھر کی اگن کو لیکر اور اندریون کو روک کر گانون سے نکلکر جنگل میں رہے۔

۵- انواع و اقسام کے منیون کے ان اور پوتر شاک مول پھل انھون سے شاستر کے موافق پنچ مہایگیہ کو کرے۔

۶- چمڑا یا کپڑے کا ٹکڑا پہنکر صبح و شام اشنان کرے جٹا و مونچھ و بال اور ناخن کو بڑھاوے یعنے حجامت نہ بنواوے۔

अनेननारीवृत्तेनमनोवाग्देहसंयता॥ इहाग्र्यांकीर्त्तिमाप्नोति पतिलोकंपरत्रच॥ १६६॥ एवंवृत्तांसवर्णांस्त्रींद्विजातिःपूर्व मारिणीम्॥ दाहयेदग्निहोत्रेणयज्ञपात्रैश्चधर्मवित्॥१६७ भार्यायैपूर्वमारिण्यैदत्वाग्नीनन्त्यकर्मणि॥पुनर्दारक्रियांकु- र्यात्पुनराधानमेवच॥ १६८॥ अनेनविधिनानित्यंपंचयज्ञान्न हापयेत्॥ द्वितीयमायुषोभागंकृतदारोगृहेवसेत्॥ १६९॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां पंचमोऽध्यायः ५

۱۶۶ - اسطرح دل و زبان و جسم کو قابو مین کرکے اس لوک مین بڑی نیکنامی اور پرلوک مین پت لوک کو پاتی ہے -

۱۶۷ - دھرم کے جاننے والے براہمن و کشتری و ویشیہ ایسی اپنی ذات کی استری کے مرجانے مین اسکا داہ اگن ہوتر کی آگ اور یگیہ پاترسے کرین -

۱۶۸ - اسکے بعد عمل آخری کرکے دوسرا بواہ کرین اور اگن کو استھاپن کرین -

۱۶۹ - اس طرح سے ہمیشہ پنچ یگیہ کو کرین انکو کبھی ترک نکرین اور عمر کے دوسرے حصّہ تک بواہ کرکے گھر مین رہین -

منوجی کا دھرم شاستر جی کی سنگھتا کا پانچوان ادھیاے سماپت ہوا

मृतेभर्तरिसाध्वीस्त्रीब्रह्मचर्येव्यवस्थिता॥स्वर्गंगच्छत्यपु-
त्रापियथातेब्रह्मचारिणः॥१६०॥ अपत्यलोभाद्यातुस्त्री-
भर्त्तारमतिवर्तते॥सेहनिन्दामवाप्नोतिपतिलोकाच्चहीयते
॥१६१॥नान्योत्पन्नाप्रजास्तीहनचाप्यन्यपरिग्रहे॥नद्वि-
तीयश्चसाध्वीनांक्कचिद्भर्त्तोपदिश्यते॥१६२॥पतिंहित्वाप-
कृष्टंस्वमुत्कृष्टंयानिषेवते॥निन्द्यैवसाभवेल्लोकेपरपूर्वेति
चोच्यते॥१६३॥व्यभिचारात्तुभर्त्तुःस्त्रीलोकेप्राप्नोतिनिन्द्य
ताम्॥ शृगालयोनिंप्राप्नोतिपापरोगैश्चपीड्यते॥१६४॥प
तिंयानाभिचरतिमनोवाग्देहसंयता॥साभर्तृलोकमाप्नोति
सद्भिःसाध्वीतिचोच्यते॥१६५॥

۱۶۰ - بعد وفات شوہر کے پت برتا استری برہم چرج مین قایم رہے تو بدون ہونے اولاد کے
سورگ مین جاتی ہے جیسے کمار برہم چاری سورگ کو گئے -

۱۶۱ - جو عورت اولاد کے ہونے کی طمع سے دوسرے پت سے جماع کرتی ہے وہ دنیا مین بدنام
ہوتی ہے اور عاقبت مین پت لوک یعنی عالم شوہر کو نہین پاتی -

۱۶۲ - دوسرے پت سے جو اولاد پیدا ہوتی ہے وہ شاستر کی موافق اپنی اولاد نہین کہلاتی
کیونکہ پت برتا استری کو شاستر مین دوسرا پت نہین لکھا ہے -

۱۶۳ - جو عورت اپنے کم ہنر والے شوہر کو چھوڑکر دوسرے زیادہ ہنر والے شوہر کو اختیار کرتی ہے
وہ دنیا مین مکروہ اور دو شوہر والی کہلاتی ہے -

۱۶۴ - دوسرے شوہر سے جماع کرنے سے عورت دنیا مین بدنام ہوتی ہے اور گیدڑ کا جنم پاتی ہے
اور پاپ روگون سے دکھی ہوتی ہے -

۱۶۵ - جو عورت دوسرے شوہر سے جماع نہین کرتی اور دل و زبان و جسم کو اپنے قابو مین رکھتی ہے
وہ پتر لوک مین پت لوک کو پاتی ہے اور اچھے لوگ اسکو سادھو کہتے ہین -

नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषितम्। पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते॥१५५॥ पाणिग्राहस्य साध्वी स्त्री जीवतो वा मृतस्य वा। पतिलोकमभीप्सन्ती नाचरेत्किंचिदप्रियम्॥१५६॥ कामन्तु क्षपयेद्देहं पुष्पमूलफलैः शुभैः। न तु नामापि गृह्णीयात्पत्यौ प्रेते परस्य तु॥१५७॥ आसीतामरणात्क्षान्ता नियता ब्रह्मचारिणी। यो धर्म एकपत्नीनां काङ्क्षन्ती तमनुत्तमम्॥१५८॥ अनेकानि सहस्राणि कुमारब्रह्मचारिणाम्। दिवं गतानि विप्राणामकृत्वा कुलसन्ततिम्॥१५९॥

۱۵۵- عورتوں کے واسطے یگیہ اور برت اور اُپاس علیحدہ نہیں ہے صرف شوہر کی خدمتگذاری سے سورگ لوک میں پہونچکر درجہ اعلےٰ پاتی ہے۔

۱۵۶- پت برتا استری پت کے لوک میں جانے کی خواہش رکھنے والی بحالت زندگی یا وفات اپنے شوہر کے کوئی کام ایسا نہ کرے جو اُسکے شوہر کے خلاف مرضی ہو۔

۱۵۷- بعد وفات اپنے شوہر کے دوسرے شوہر کا نام بھی نہ لیوے اچھے مول پھل پھول سے حسب خواہش تھوڑا کھا کر صحیح البدن رہکر اوقات بسر کرے۔

۱۵۸- جس استری کا ایک ہی پت ہے وہ پت برتا دھرم کی خواہش کرتی ہوئی اپنے مرنے دم تک نیم سے برہم چاری ہو کر لاغر بدنی سے زندگی بسر کرے۔

۱۵۹- اگر کہو کہ بدون اولاد کے سورگ نہیں ملتا اسلئے اولاد کے واسطے دوسرا شوہر کرنا چاہئے۔ اسکا جواب یہ ہے کہ کئی ہزار کمار برہم چاری برہمن بدون پیدا کئے اولاد کے سورگ کو چلے گئے ہیں اس بات کو سمجھکر بدون اولاد کے نیم سے رہے۔

* پت برتا استری اس عورت کو کہتے ہیں جو کوئی کام خلاف مرضی شوہر کے نہ کرے اور شوہر کو مثل پرمیشور کے سمجھکر اُسی کی سیوا اور بھگت کرتی رہے۔

पित्राभर्त्रासुतैर्वापिनेच्छेद्विरहमात्मनः॥एषांहिविरहेणा-
स्त्रीगर्ह्येकुर्यादुभेकुले॥१४९॥सदाप्रहृष्टयाभाव्यंगृहका-
र्येषुदक्षया॥सुसंस्कृतोपस्करयाव्ययेचामुक्तहस्तया॥
१५०॥यस्मैदद्यात्पितात्वेनांभ्राताचानुमतेपितुः॥तंशुश्रूषे-
तजीवन्तंसंस्थितंचनलंघयेत्॥१५१॥मंगलार्थंस्वस्त्ययनं-
यज्ञश्चासांप्रजापतेः॥प्रयुज्यतेविवाहेतुप्रदानंस्वाम्यकार-
णम्॥१५२॥अनृतावृतुकालेचमंत्रसंस्कारकृत्पतिः॥सु-
खस्यनित्यंदातेहपरलोकेचयोषितः॥१५३॥विशीलःका-
मवृत्तोवागुणैर्वापरिवर्जितः॥उपचर्यःस्त्रियासाध्व्यासततं
देववत्पतिः॥१५४॥

۱۴۹ - باپ اور بھائی اور بیٹا ان تینوں سے علیحدہ ہونے کی خواہش نہ کرے انھوں سے علیحدہ ہونے میں استری دونوں کل کو بدنامی دلاتی ہے۔

۱۵۰ - ہر وقت خوشدل اور امور خانگی میں مستعد رہے گھر کی چیزوں کو اچھی طرح درست رکھے فضول خرچ نہ ہووے۔

۱۵۱ - باپ جسکے ساتھ شادی کر دے یا باپ کے حکم سے بھائی جسکے ساتھ شادی کر دے اسکی خدمت میں رہے اور بعد وفات شوہر کے کسی مرد غیر سے صحبت کرے۔

۱۵۲ - بواہ میں شانت منتر پڑھنا اور شری پرجاپتی کیواسطے یگیہ کرنا یہ دونوں استریونکے آنند کیواسطے ہیں اور دان شوہر کے مالک ہونیکا باعث ہے۔

۱۵۳ - رت کال میں یا غیر رت کال میں منتر سنسکار کرنیوالا شوہر اس لوک اور پرلوک میں استریونکو سکھ دینے والا ہے۔

۱۵۴ - اگرچہ شوہر بے مروت ہو اور دوسری عورت کے ساتھ محبت رکھتا ہو یا بے ہنر ہو تو بھی پت برتا استری ہمیشہ اسکی سیوا دیوتا کی طرح کرے۔

उच्छिष्टेन तु संस्पृष्टो द्रव्यहस्तः कथंचन ॥ अनिधायैव तद्द्रव्यमाचान्तः शुचितामियात् ॥ १४३ ॥ वान्तो विरिक्तः स्नात्वा तु घृतप्राशनमाचरेत् ॥ आचामेदेव भुक्त्वान्नं स्नानं मैथुनिनः स्मृतम् ॥ १४४ ॥ सुप्त्वा क्षुत्वा च भुक्त्वा च निष्ठीव्योक्त्वानृतानि च ॥ पीत्वापोऽध्येष्यमाणश्च आचामेत्प्रयतोऽपि सन् ॥ १४५ ॥ एष शौचविधिः कृत्स्नो द्रव्यशुद्धिस्तथैव च ॥ उक्तो वः सर्ववर्णानां स्त्रीणां धर्मान्निबोधत ॥ १४६ ॥ बालया वा युवत्या वा वृद्धया वापि योषिता ॥ न स्वातंत्र्येण कर्त्तव्यं किंचित्कार्यं गृहेष्वपि ॥ १४७ ॥ बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्पाणिग्राहस्य यौवने ॥ पुत्राणां भर्त्तरि प्रेते न भजेत्स्त्री स्वतंत्रताम् ॥ १४८ ॥

۱۴۳- چیز کو ہاتھ مین لیئے ہوئے آدمی جو جھوٹھے آدمی سے چھو جا تو اُس چیز کو لیئے ہوئے ہی آچمن کرنے سے پاک ہو جاتا ہے-

۱۴۴- قے کرنیوالا اور دستون کی بیماری والا اسنان کرکے گھی کھاے اور اَن وغیرہ بھوجن کرکے آچمن کرے اور جماع کرکے غسل کرے-

۱۴۵- سوے کر اور چھینک کر اور بھوجن کرکے اور کھنکھار کر اور جھوٹھ بول کر اور پانی پی کر پاک ہوئے پر بھی آچمن کرے-

۱۴۶- بھرگ جی کہتے ہین کہ ہے رشی لوگو آپ سے سب ورنون کی پاکی کے طریق کو کہا اور چیزون کی پاکی کو بھی کہا اب اسکے بعد استریون کے دھرم کہتے ہین-

۱۴۷- عورت نابالغ ہو یا جوان یا بڈھی ہو گھر مین کوئی کام خود مختاری سے نہ کرے

۱۴۸- عورت لڑکپن مین اپنے باپ کے اختیار مین رہے اور جوانی مین اپنے شوہر کے اختیار مین اور بعد وفات شوہر کے اپنے بیٹون کے اختیار مین رہے خود مختار ہو کر کبھی نہ رہے-

एतच्छौचं गृहस्थानां द्विगुणं ब्रह्मचारिणाम्॥ त्रिगुणं स्याद्व-
नस्थानां यतीनां तु चतुर्गुणम्॥ १३७॥ कृत्वा मूत्रं पुरीषं वा खा-
न्याचान्त उपस्पृशेत्॥ वेदमध्येष्यमाणश्च अन्नमश्नंश्च सर्वदा
॥ १३८॥ त्रिराचामेदपः पूर्वं द्विः प्रमृज्यात्ततो मुखम्॥ शारीरं
शौचमिच्छन्हि स्त्री शूद्रस्तु सकृत्सकृत्॥ १३९॥ शूद्राणां मा-
सिकं कार्यं वपनं न्यायवर्तिनाम्॥ वैश्यवच्छौचकल्पश्च द्वि-
जोच्छिष्टं च भोजनम्॥ १४०॥ नोच्छिष्टं कुर्वते मुख्या विप्रुषोऽ
ङ्गे पतन्ति याः॥ न श्मश्रूणि गतान्यास्यं न दन्तान्तरधिष्ठितम्॥
१४१॥ स्पृशन्ति बिन्दवः पादौ य आचामयतः परान्॥ भौमिकै-
स्ते समा ज्ञेया न तैरप्रयतो भवेत्॥ १४२॥

۱۳۷ - یہ شَوچ یعنی طہارت گرہستھہ لوگون کے واسطے ہے اور برہم چاریون کو دو چند اور بان پرستھ یعنی جنگل مین عبادت کرنیوالون کو سہ چند اور سنیاسیون کو چہار چند کرنا چاہئے -

۱۳۸ - بشٹا و موتر کرکے ہاتھ پانون دھوکر آچمن کرکے اندریون کو چھووے اور وقت تناول طعام و وید خوانی کے بھی آچمن کرکے اندریون کو چھووے -

۱۳۹ - بدن کی طہارت کیواسطے تین دفعہ پہلے آچمن کرے تب دو دفعہ منھہ دھووے اور استری اور شودر صرف ایک ہی دفعہ منھہ دھووین اور آچمن کرین -

۱۴۰ - نیاے سے رہنے والے شودر کو مہینہ کے اندر ایکبار حجامت کرانا چاہئے اوسکی طہارت ویشیہ کے مانند ہے اور براہمن کا پس خوردہ اوسکی غذا ہے -

۱۴۱ - تھوک کے بوند بدن کے کسی عضو پر گر جائین اور موچھ کا بال منھہ مین جاتا رہے اور دانت مین جو چیز لگی ہو یہ سب پاک ہین -

۱۴۲ - کوئی شخص کسی کو آچمن کراتا ہو اور آچمن کرنیوالے کے منھہ سے پانی کا بوند زمین پر گر کر آچمن کرنیوالے کے پانون پر پڑے تو وہ بوند آب زمین کے برابر ہے اس سے ناپاکی نہین ہوتی -

श्वभिर्हतस्य यन्मांसं शुचि तन्मनुरब्रवीत्॥ क्रव्याद्भिश्च हत
स्यान्यैश्चण्डालाद्यैश्च दस्युभिः॥१३१॥ ऊर्द्ध्वं नाभेर्यानि खा-
नि तानि मेध्यानि सर्वशः॥ यान्यधस्तान्यमेध्यानि देहाच्चैव
मलाश्च्युताः॥१३२॥ मक्षिका विप्रुषश्छाया गौरश्वः सूर्यर
श्मयः॥ रजो भूर्वायुरग्निश्च स्पर्शे मेध्यानि निर्दिशेत्॥१३३॥
विण्मूत्रोत्सर्गशुद्ध्यर्थं मृद्वार्य्यादेयमर्थवत्॥ दैहिकानां मला
नां च शुद्धिषु द्वादशस्वपि॥१३४॥ वसा शुक्रमसृङ् मज्जा मूत्र
विड्घ्राणकर्णविट्॥ श्लेष्माश्रु दूषिका स्वेदो द्वादशैते नृणां-
मलाः॥१३५॥ एका लिङ्गे गुदे तिस्रस्तथैकत्र करे दश॥ उभयोः
सप्त दातव्या मृदः शुद्धिमभीप्सता॥१३६॥

۱۳۱۔ کتّے و شیر باز و بیاد ہو وغیرہ و ہرن کے مارنے سے اوقات بسر کرنیوالے ان سب سے
جو جانور کھانیکے قابل بلکے مارا گیا اوسکا گوشت سرادھ وغیرہ آتھہ بھوجن مین پاک ہے منو جی نے کہا ہے

۱۳۲۔ ناف سے اوپر کے تمام اعضا پاک ہین اور ناف سے نیچے کے تمام اعضا ناپاک ہین اور
جو فضلہ بدن سے علیحدہ ہو وہ بھی ناپاک ہے۔

۱۳۳۔ مکھی و قطرۂ آب و سایہ و گئو و گھوڑا و سورج کی کرن و دھول و زمین و ہوا و آگ یہ سب چھونے
مین پاک ہین

۱۳۴۔ غلیظ و پیشاب و دیگر بارہو فضلون کو جبکہ وہ جسم سے علیحدہ ہو کر گرے ہون چھو کر پانی اور مٹی
بقدر ضرورت لگا کر دھونے سے پاک ہوتا ہے۔

۱۳۵۔ آدمی کے جسم مین یہ بارہ مل یعنے فضلہ ہوتے ہین۔ چربی [۱] بیج [۲]۔ خون [۳] مجا [۴] پیشاب [۵] غلیظ [۶]
ناک [۷]۔ کھونٹ [۸]۔ کھکھار [۹]۔ آنسو [۱۰] کیچڑ [۱۱] پسینا [۱۲]۔

۱۳۶۔ مٹی کے وسیلے سے پاکی کی خواہش کرنیوالا آدمی ایک بار مٹی مقام پیشاب پر پانچ دفعہ
مقام پاخانہ پر اور دس دفعہ بائین ہاتھ مین اور سات دفعہ داہنے ہاتھ مین لگا دے۔

पक्षिजग्धं गवाघ्रातमवधूतमवक्षुतम् ॥ दूषितं केशकीटैश्च
मृत्प्रक्षेपेण शुध्यति ॥ १२५ ॥ यावन्नापैत्यमेध्याक्ताद्गन्धो ले
पश्च तत्कृतः ॥ तावन्मृद्वारि चादेयं सर्वासु द्रव्यशुद्धिषु ॥ १२६
॥ त्रीणि देवाः पवित्राणि ब्राह्मणानामकल्पयन् ॥ अदृष्टम
द्भिर्निर्णिक्तं यच्च वाचा प्रशस्यते ॥ १२७ ॥ आपः शुद्धा भूमि
गता वैतृष्ण्यं यासु गोर्भवेत् ॥ अव्याप्ताश्चेदमेध्येन गन्धव-
र्णरसान्विताः ॥ १२८ ॥ नित्यं शुद्धः कारुहस्तः पण्ये यच्च प्र-
सारितम् ॥ ब्रह्मचारिगतं भैक्ष्यं नित्यं मेध्यमिति स्थितिः १२९
॥ नित्यमास्यं शुचि स्त्रीणां शकुनिः फलपातने ॥ प्रस्रवे च शु-
चिर्वत्सः श्वा मृगग्रहणे शुचिः ॥ १३० ॥

۱۲۵- کھانے کے لائق پرند سے جس چیز کا ایک حصہ جھوٹا ہو گیا ہو اور جس چیز کو گئو نے سونگھ لیا ہو اور جو چیز پاؤں لگنے سے کانپنے لگے، اور جس چیز پر چھینک پڑی ہو اور جس چیز میں بال چھوٹے کیڑے پڑ گئے ہوں یہ سب اور مٹی پانے سے پاک ہوتے ہیں۔

۱۲۶- جس چیز میں ناپاک چیز لگی ہو جبتک اس ناپاک چیز کی بو اور داغ اس چیز سے دور نہ ہو تب تک مٹی اور پانی سے اسکو پاک کرنا چاہیے یہ طریق سب چیزوں کے پاک کرنے میں جاننا۔

۱۲۷- دیوتوں نے برہمنوں کے واسطے تین چیزیں پاک کی ہیں ایک چیز دیکھی ہوئی چیز دوسری وہ چیز جو پانی سے دھوئی گئی ہے تیسری جو بانی سے سریشٹھ ہو۔

۱۲۸- جو پانی ایک گئو کی پیاس بجھانے بھر کو ہو اور ناپاک چیز سے شامل نہ ہو اور رنگ و بو رس کے ہو اور زمین پر قائم ہو وہ پانی پاک ہے۔

۱۲۹- کاریگر کا ہاتھ اور بیوپاری کی دوکان کی چیز اور برہمچاری کی بھیکھ یہ تینوں چیزیں ہمیشہ پاک ہیں یہ شاستر کی مرجادا ہے۔

۱۳۰- جماع کے وقت عورت کا منہ پھل گرانے میں پرند دودھ دوہنے وقت بچھڑا ہرن کے پکڑنے میں کتا

श्वभिर्हतस्ययन्मांसंशुचितन्मनुरब्रवीत्॥ क्रव्याद्भिश्चहत
स्यान्यैश्चाण्डालाद्यैश्चदस्युभिः॥१३१॥ऊर्द्ध्वंनाभेर्यानिखा-
नितानिमेध्यानिसर्वशः॥ यान्यधस्तान्यमेध्यानिदेहाच्चैव
मलाश्च्युताः॥१३२॥ मक्षिकाविप्रुषश्छायागौरश्वः सूर्यर-
श्मयः॥ रजोभूर्वायुरग्निश्चस्पर्शेमेध्यानिनिर्दिशेत्॥१३३॥
विण्मूत्रोत्सर्गशुद्ध्यर्थंमृद्वार्यादेयमर्थवत्॥ दैहिकानांमला
नांचशुद्धिषुद्वादशस्वपि॥१३४॥वसाशुक्रमसृङ् मज्जामूत्र
विड्घ्राणकर्णविट्॥ श्लेष्माश्रुदूषिकास्वेदोद्वादशैतेनृणां-
मलाः॥१३५॥एकालिंगेगुदेतिस्रस्तथैकत्रकरेदश॥उभयोः
सप्तदातव्यामृदःशुद्धिमभीप्सता॥१३६॥

۱۳۱۔ کتہ و شیر باز و صیاد وغیرہ دہرتی کے مارنے سے اوقات بسر کرنیوالے ان سب سے جو جانور کھانیکے قابل مارا گیا اوسکا گوشت سرادھ وغیرہ اتھوجن مین پاک ہے منوجی نے کہا ہے

۱۳۲۔ ناف سے اوپر کے تمام اعضا پاک ہین اور ناف سے نیچے کے تمام اعضا ناپاک ہین اور جو فضلہ بدن سے علیحدہ ہو وہ بھی ناپاک ہے۔

۱۳۳۔ مکھی و قطرہ آب و سایہ و گئو و گھوڑا و سورج کی کرن و دھول و زمین و ہوا و آگ یہ سب چھونے مین پاک ہین

۱۳۴۔ غلیظ و پیشاب و دیگر بارھو فضلون کو جبکہ وہ جسم سے علیحدہ ہوکر گرے ہون چھوکر پانی اور مٹی بقدر ضرورت لگا کر دھونے سے پاک ہوتا ہے۔

۱۳۵۔ آدمی کے جسم مین یہ بارہ مل یعنے فضلہ ہوتے ہین۔ چربی[۱] بیج[۲]۔ خون[۳]۔ مجا[۴]۔ پیشاب[۵] غلیظ[۶] ناک[۷]۔ کھونٹ[۸]۔ کھکھار[۹]۔ آنسو[۱۰] کیچڑ[۱۱] پسینا[۱۲]۔

۱۳۶۔ مٹی کے وسیلہ سے پاکی کی خواہش کرنیوالا آدمی ایک بار مٹی مقام پیشاب پر اور پانچ دفعہ مقام پاخانہ پر اور دس دفعہ بائین ہاتھ مین اور سات دفعہ داہنے ہاتھ مین لگاوے۔

पक्षिजग्धंगवाघ्रातमवधूतमवक्षुतम्॥ दूषितंकेशकीटैश्च मृत्प्रक्षेपेणशुध्यति॥१२५॥ यावन्नापैत्यमेध्याक्ताद्गन्धोलेपश्चतत्कृतः॥ तावन्मृद्वारिचादेयंसर्वासुद्रव्यशुद्धिषु॥१२६॥ त्रीणिदेवाःपवित्राणिब्राह्मणानामकल्पयन्॥ अदृष्टमद्भिर्निर्णिक्तंयच्चवाचाप्रशस्यते॥१२७॥ आपःशुद्धाभूमिगतावैतृष्ण्यंयासुगोर्भवेत्॥ अव्याप्ताश्चेदमेध्येनगन्धवर्णरसान्विताः॥१२८॥ नित्यंशुद्धःकारुहस्तःपण्येयच्चप्रसारितम्॥ ब्रह्मचारिगतंभैक्ष्यंनित्यंमेध्यमितिस्थितिः१२९॥ नित्यमास्यंशुचिःस्त्रीणांशकुनिःफलपातने॥ प्रस्रवेचशुचिर्वत्सःश्वामृगग्रहणेशुचिः॥१३०॥

۱۲۵۔ کھانے کے لائق پرند سے جس چیز کا ایک حصّہ چھوٹا ہو گیا ہو اور جس چیز کو گئو نے سونگھ لیا ہو اور جو چیز پاؤں لگنے سے کانپنے لگے اور جس چیز پر چھینک پڑی ہو اور جس چیز میں بال چیونٹے کیڑے پڑ گئے ہوں یہ سب چیزیں اور مٹی پانے سے پاک ہوتے ہیں۔

۱۲۶۔ جس چیز میں ناپاک چیز لگی ہو جبتک اُس ناپاک چیز کی بو اور آلودگی اُس چیز سے دور نہ ہو تب تک مٹی اور پانی سے اُسکو پاک کرنا چاہیے یہ طریق سب چیزوں کے پاک کرنے میں جاننا۔

۱۲۷۔ دیوتوں نے برہمنوں کیواسطے تین چیزیں پاک کی ہیں ایک بغیر دیکھی ہوئی چیز دوسرے وہ چیز جو پانی سے دھوئی گئی ہے تیسرے جو بانی سے مشتہر ہو۔

۱۲۸۔ جو پانی ایک گئو کی پیاس بجھانے بھر کو ہو اور ناپاک چیز سے شامل نہ ہو اور مع رنگ و بو و رس کے ہو اور زمین پر قائم ہو وہ پانی پاک ہے۔

۱۲۹۔ کاریگر کا ہاتھ اور بیپاری کی دوکان کی چیز اور برہمچاری کی بھیکھ یہ تینوں چیزیں ہمیشہ پاک ہیں یہ شاستر کی مرجادا ہے۔

۱۳۰۔ جماع کے وقت عورت کا منہ پھل گرانے میں پرند دودھ دیتے وقت بچھڑا ہرن کے پکڑنے میں کتا

चैलवच्चर्मणांशुद्धिर्वैदलानांतथैवच॥ शाकमूलफलानांच
धान्यवच्छुद्धिरिष्यते॥११९॥ कौशेयाविकयोरूषैः कुतुपा
नामरिष्टकैः॥ श्रीफलैरंशुपट्टानांक्षौमाणांगौरसर्षपैः॥१२०
क्षौमवच्छंखशृंगाणामस्थिदन्तमयस्यच॥ शुद्धिर्विजानता-
कार्यागोमूत्रेणोदकेनवा॥१२१॥ प्रोक्षणात्तृणकाष्ठंच पला
लंचैवशुद्ध्यति॥ मार्जनोपांजनैर्वेश्मपुनः पाकेनमृन्मयम्॥
१२२॥ मद्यैर्मूत्रैः पुरीषैर्वाष्ठीवनैः पूयशोणितैः॥ संस्पृष्टंनैव-
शुद्ध्येतपुनः पाकेनमृन्मयम्॥१२३॥ संमार्जनोपांजनेनसे-
केनोल्लेखनेनच॥ गवांचपरिवासेनभूमिः शुद्ध्यतिपंचभिः
॥१२४॥

۱۱۹- جو بس چھونے کے لائق ہیں اُنکے چمڑے کا برتن اور بانس کا برتن اِن دونوں کی
پاکی کپڑے کی پاکی کے مانند جاننا اور ساگ مول پھل پھلوں کی پاکی غلہ کی پاکی کے مانند جاننا چاہیے

۱۲۰- ریشمی اور اونی کپڑا کھاری مٹی سے اور نیپالی کمل ریٹھی سے اور پٹ لبستر بیل کے پھل سے اور
السی کا کپڑا اسفید سرسوں سے پاک ہوتا ہے-

۱۲۱- سنکھ کا برتن اور جو جانور مثل ہاتھی وغیرہ چھونے کے قابل ہو اُسکے دانت او سینگ اور
ہڈی کا برتن اِنکی پاکی مثل پاکی پارچہ و بسی کے جاننا یا گئو کے موتر یا پانی سے سمجھنا-

۱۲۲- پانی چھڑکنے سے ترن اور کاٹھ و پوال اور جھاڑو دینے سے انگن اور لیپنے سے گھر اور
دوسری بار پکانے سے مٹی کا برتن پاک ہوتا ہے-

۱۲۳- شراب - پیشاب - غلیظ - کھنکھار - پیپ و خون انہیں سے کوئی ایک لگ گیا ہو تو
وہ برتن دوسری بار پکانے سے پاک نہیں ہوتا-

۱۲۴- جھاڑو - لگانا - لیپنا - چھڑکاؤ کرنا - اوپر کی مٹی چھیلنا گئو کا باس یعنی قیام اِن پانچوں
سے زمین پاک ہوتی ہے-

ताम्रायः कांस्यरैत्यानांत्रपुणाःसीसकस्यच ॥ शौचंयथार्हंकर्त्तव्यंक्षाराम्लोदकवारिभिः ॥ ११४ ॥ द्रवाणांचैवसर्व्वेषांशुद्धिरुत्पवनंस्मृतम् ॥ प्रोक्षणंसंहतानांचदारवाणांचतक्षणम् ॥ ११५ ॥ मार्जनंयज्ञपात्राणांपाणिनायज्ञकर्म्मणि ॥ चमसानांग्रहाणांचशुद्धिःप्रक्षालनेनतु ॥ ११६ ॥ चरूणांस्रुक्स्रुवाणांचशुद्धिरुष्णेनवारिणा ॥ स्फ्यशूर्पशकटानांमुसलोलूखलस्यच ॥ ११७ ॥ अद्भिस्तुप्रोक्षणंशौचंबहूनांधान्यवाससाम् ॥ प्रक्षालनेनत्वल्पानामद्भिःशौचंविधीयते ॥ ११८ ॥

۴ ॥- تانبا- لوہا- کانسا- پیتل- رانگا- سیسا- ان سب کی پاکی راکھ و کھٹائی و جل سے بدھ پور دک کرنا چاہیے-

۵ ॥- جتنی چیزیں رواں شل تیل و گھی وغیرہ کے ہیں انکو اگر کوا و کیڑا وغیرہ چھو لیویں اور ایک ہاتھ میں آنیکے لائق ہوں تو ستہ یا اور انگشت کے پھیلاؤ کے برابر دو کش لیکر ان چیزیں جلانے سے پاک ہو جاتی ہیں اور اگر چار پائی وغیرہ پر دشمن گر پڑے تو وہ پانی کے چھینٹے دینے سے پاک ہو جاتی ہے اور کاٹھ کا برتن جب دشمن وغیرہ سے ناپاک ہو وے تب وہ چھیلنے سے پاک ہوتا ہے-

۶ ॥- یگیہ کے برتنوں کی صفائی ہاتھ سے کرنا چاہیے یگیہ میں چمس اور گرہ ان دونوں کی پاکی دھونے سے ہوتی ہے-

۷ ॥- چرو- سرک- سروا- سوپ گاڑی موسل اوکھلی ان سب کی پاکی گرم پانی سے ہوتی ہے-

۸ ॥- اور کپڑوں کا ڈھیر ہو تو وہ پانی کے چھینٹے دینے سے پاک ہو جاتا ہے اور اگر تھوڑا ہو تو پانی سے دھونے سے پاک ہوتا ہے-

* یہ سب یگیہ کے برتن ہیں-

मृत्तोयैः शुध्यते शोध्यं नदी वेगेन शुध्यति॥ रजसा स्त्री मनोदुष्टा संन्यासेन द्विजोत्तमः॥१०८॥ अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति॥ विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥१०९॥ एष शौचस्य वः प्रोक्तः शारीरस्य विनिर्णयः॥ नानाविधानां द्रव्याणां शुद्धेः शृणुत निर्णयम्॥११०॥ तैजसानां मणीनां च सर्वस्याश्ममयस्य च॥ भस्मनाद्भिर्मृदा चैव शुद्धिरुक्ता मनीषिभिः॥१११॥ निर्लेपं कांचनं भाण्डमद्भिरेव विशुध्यति॥ अब्जमश्ममयं चैव राजतं चानुपस्कृतम्॥११२॥ अपामग्नेश्च संयोगाद्धैमं रौप्यं च निर्बभौ॥ तस्मात्तयोः स्वयोन्यैव निर्णेको गुणवत्तरः॥११३॥

۱۰۸ - جو چیزیں پاک کرنے کے قابل ہین وہ مٹی اور پانی سے اور دریا روانی سے اور جسکا عورت کا دل غیر مرد سے لگا ہے وہ حیض سے اور برہمن سنّیاس اختیار کرنیسے پاک ہو جاتا ہے۔

۱۰۹ - پانی سے تمام اعضا بدن کے پاک ہوتے ہین اور راستی سے دل پاک ہوتا ہے اور برہم ودیا اور تپ سے بھوت آتما یعنے لنگ شریر یعنے جیو آتما کے پاک ہوتا ہے اور گیان سے بدھ شدھ ہوتی ہے۔

۱۱۰ - بھرگ جی کہتے ہین کہ ہے رشیو جسم کی پاکی کے طریق کو کہا اب انواع اقسام کی چیزون کے پاک ہونیکا طریق سنو

۱۱۱ - سونے وغیرہ کے برتن جواہرات کے برتن پتھر کے برتن یہ سب راکھ و مٹی و پانی سے پاک ہوتے ہین ایسا منو وغیرہ رشیون نے کہا ہے۔

۱۱۲ - جس سونے یا سنکھ یا موتی یا پتھر کے برتن مین جوٹھن وغیرہ نہین لگی اور جس روپے کے برتن مین رکھا یعنے خطوط نہین ہین یہ سب صرف پانی ہی سے پاک ہو جاتے ہین۔

۱۱۳ - آگ اور پانی کے ملنے سے سونا اور چاندی پیدا ہوتا ہے اسلئے اپنی اصل کرکے دونون کی پاکی سب اچھی ہے۔

अनुगम्येच्छया प्रेतं ज्ञातिमज्ञातिमेव च ॥ स्नात्वा सचैलः स्पृष्ट्वा-
ग्निं घृतं प्राश्य विशुध्यति ॥ १०३ ॥ न विप्रं स्वेषु तिष्ठत्सु मृतं
शूद्रेण नाययेत् ॥ अस्वर्ग्या ह्याहुतिः सा स्याच्छूद्रसंस्पर्श-
दूषिता ॥ १०४ ॥ ज्ञानं तपोऽग्निराहारो मृन्मनो वार्युपाञ्ज-
नम् ॥ वायुः कर्मार्ककालौ च शुद्धेः कर्तॄणि देहिनाम् १०५
॥ सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम् ॥ योऽर्थे शुचिर्हि
स शुचिर्न मृद्वारिशुचिः शुचिः ॥ १०६ ॥ क्षान्त्या शुध्यन्ति वि-
द्वांसो दानेनाकार्यकारिणः ॥ प्रच्छन्नपापा जप्येन तपसा वे-
दवित्तमाः ॥ १०७ ॥

۱۰۳- مرا ہوا آدمی اپنی ذات ہو یا دوسری ذات ہو اُسکے پیچھے اپنی خواہش سے جاکر
مع کپڑون کے اسنان کرے اور گھی کھاے اور آگ کو چھوے تب شدھ ہوتا ہے۔

۱۰۴- جو براہمن کا ہم ذات موجود ہو تو اُس مُردہ براہمن کو شودر نہ لیجاے کیونکہ شودر کے چھونے
سے اُسکے شریر کی اگن مین آہت دینا سورگ کے واسطے نہین ہوتا۔

۱۰۵- گیان۔ تپ۔ اگن۔ آہار۔ مٹی۔ من۔ جل۔ لیپ۔ ہوا۔ سورج۔ زمانہ۔ یہ سب آدمیون کو
پاک کرنیوالے ہین۔

۱۰۶- سب شوچ یعنی پاکی مین ارتھ شوچ (یعنے دولت کو راستی سے حاصل کرنا) بڑا ہے جس
آدمی کی دولت پاک ہے وہی پاک ہے اور جو آدمی مٹی و پانی کے سبب سے پاک ہے مگر دولت مین
پاک نہین ہے وہ آدمی پاک نہین ہے۔

۱۰۷- جو پنڈت ہے وہ کشما یعنے عفو تقصیر کرکے پاک ہو جاتا ہے اور جو آدمی کام واجب
الترک کو کرتا ہے وہ دان کرنے سے پاک ہوتا ہے اور جو پاپ کرنے مین مصروف
ہے وہ جپ کرکے پاک ہوتا ہے اور وید پڑھنے والا تپ کرکے پاک ہوتا
ہے۔

लोकेशाधिष्ठितोराजानास्याशौचंविधीयते ॥ शौचाशौचंहि मर्त्यानांलोकेशप्रभवाप्ययम् ॥ ९७ ॥ उद्यतैराहवेशस्त्रैः क्षत्रधर्महतस्यच ॥ सद्यः सन्तिष्ठतेयज्ञस्तथाशौचमिति स्थितिः ९८ ॥ विप्रः शुध्यत्यपःस्पृष्ट्वाक्षत्रियोवाहनायुधम् ॥ वैश्यः प्रतोदं रश्मीन्वायष्टिंशूद्रःकृतक्रियः ॥ ९९ ॥ एतद्वोऽभिहितंशौचंसपिण्डेषुद्विजोत्तमाः ॥ असपिण्डेषुसर्वेषुप्रेतशुद्धिंनिबोधत ॥ १०० ॥ असपिण्डंद्विजंप्रेतंविप्रोनिर्हृत्यबन्धुवत ॥ विशुध्यतित्रिरात्रेणमातुराप्तांश्चबान्धवान् ॥ १०१ ॥ यद्यन्नमत्तितेषान्तुदशाहेनैवशुध्यति ॥ अनदन्नन्नमह्नैवनचेत्तस्मिन्गृहेवसेत ॥ १०२

۹۷ - راجہ سب لوکپالون کا انس یعنے حصہ ہے اس سے اسکو سوتک نہین لگتا اور راجا لوک کا مالک ہے، اس سبب سے سب آدمیون کی پاکی اور ناپاکی کو دور کر سکتا ہے۔

۹۸ - لڑائی مین کشتری دھرم کرکے جو آدمی ہتھیار لگنے سے مرگئے انکو اسی وقت پاکی اور یگیہ قائم ہوتی ہے۔

۹۹ تمام کریا کرکے سوتک کے آخر برہمن جل اور کشتری سواری ہتھیار اور ویش پینا+ اور شودر لاٹھی کو چھوکر پاک ہو جاتے ہین

۱۰۰ - بھرگ جی کہتے ہین کہ ہے رشی لوگو آپ سے سپنڈون کا سوتک کہا اب ان لوگون کی پریت شدہ کو کہتے ہین جو سپنڈ مین نہین ہین۔

۱۰۱ - جو براہمن سپنڈ نہین ہین سے اسکو بھائی کے مانند مرگھٹ تک لیجا کر تین رات مین پاک ہوتا ہے اور ماما اور موسی وغیرہ کو بھی مرگھٹ تک لیجا کر تین رات مین پاک ہوتا ہے۔

۱۰۲ - جب مرے ہوئے کے سپنڈ سے اُن کو بھوجن کرے تو دس دن مین شدھ ہوتا ہے اور اگر ان کا بھوجن نہ کرے اور نہ اوسکے گھر مین قیام کرے تو ایک دن مین شدھ ہوتا ہے۔

+ آلہ ستورانی یا رسی۔

दक्षिणेनमृतंशूद्रंपुरद्वारेणनिर्हरेत्॥ पश्चिमोत्तरपूर्वैस्तुय-
थायोगंद्विजन्मनः॥९२॥नराज्ञामघदोषोऽस्तिव्रतिनांनच
सत्त्रिणाम्॥ ऐन्द्रंस्थानमुपासीनाब्रह्मभूताहितेसदा॥९३॥
राज्ञोमहात्मिकेस्थानेसद्यःशौचंविधीयते॥ प्रजानांपरिर-
क्षार्थमासनंचात्रकारणम्॥ डिंबाहवहतानांचविद्युतापा-
र्थिवेनच॥ गोब्राह्मणस्यचैवार्थेयस्यचेच्छतिपार्थिवः॥
९५॥ सोमाग्न्यर्कानिलेन्द्राणांवित्ताप्पत्योर्यमस्यच॥अ-
ष्टानांलोकपालानांवपुर्धारयतेनृपः॥९६॥

۹۲ - شہر کے پچھم - اُتر - پورب - دکھن - دروازہ سے حسب سلسلہ اوّل دوم و سوم و چہارم دروازہ سے براہمن کشتری ویشیہ شودر کا مردہ لیجانا چاہیئے ۔

۹۳ - راجا و برہم چاری چاندراین وغیرہ برت کا کرنیوالا و یگیہ کرنیوالا ان تینوں کو سوتک نہیں لگتا کیونکہ راجا تو راجا اندر کی جگہ پر بیٹھا ہے اور برہم چاری برت کرنیوالا اور یگیہ کرنیوالا یہ سب ہر وقت برہم سروپ ہیں ۔

۹۴ - راجا انصاف کرنے میں پاک رہتا ہے دوسرے کام میں نہیں کیونکہ رعایا کی حفاظت بغیر سنگھاسن پر بیٹھے نہیں ہوتی ۔

۹۵ - بدون راجا کے جو لڑائی ہوئی اور اسمیں جو آدمی مر گئے اور بجلی پڑکر جو مر گئے اور راجا کے حکم سے جو آدمی مارنے کے لائق مارے گئے اور برہمن اور گئو کے واسطے جو آدمی مر گئے ایسے مرن میں سوتک نہیں ہوتا اور اپنے کام کے لئے جسکو راجا سوتک لگنا نہیں چاہتا اسکو بھی سوتک نہیں لگتا ۔

۹۶ - چندرمان - اگن - سورج - بایو - اندر - کبیر - برن - یم ان سب کے ورنوں کو راجا دھارن کرتا ہے ۔

आचम्यप्रयतोनित्यंजपेदशुचिदर्शने॥सौरान्मंत्रान्यथोत्साहं
पावमानीश्चशक्तितः॥८६॥नारंस्पृष्ट्वास्थिसस्नेहंस्नात्वावि-
प्रोविशुध्यति॥ आचम्यैवतुनिःस्नेहंगामालभ्यार्कमीक्ष्य-
वा॥८७॥आदिष्टीनोदकंकुर्य्यादाव्रतस्यसमापनात्॥समा
प्तेतूदकंकृत्वात्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति॥८८॥वृथासंकरजाता-
नांप्रव्रज्यासुचतिष्ठताम्॥ आत्मनस्त्यागिनांचैवनिवर्त्तेतो
दकक्रिया॥८९॥पाषण्डमाश्रितानांचचरन्तीनांचकाम
तः॥ गर्भभर्तृद्रुहांचैवसुरापीनांचयोषिताम्॥९०॥ आचा-
र्य्यंस्वमुपाध्यायंपितरंमातरंगुरुम्॥ निर्हृत्यतुव्रतीप्रेतान्न-
व्रतेनवियुज्यते॥९१॥

٨٦- ناپاکی کے دیکھنے میں آچمن کرکے بدرستی اپنی طاقت کے موافق ہمیشہ جیسے اچھا لوم ہو ویسے ہی سورج نارائن کے منتر یا کسی دوسرے پاک کرنیوالے منتر کا جپ کرے۔

٨٧- برہمن آدمی کی استخوان تر کو چھو کر اشنان کرنے سے پاک ہوتا ہے اور استخوان خشک کو چھو کر آچمن کرکے گئو چھولے یا سورج بھگوان کے درشن سے پاک ہوتا ہے۔

٨٨- برہمچاری کسی کے مرنے میں جل نہ دیوے جب تک اسکا برت پورا نہ ہو جاوے برت پورا ہونے پر جل دیکر تین رات میں پاک ہوتا ہے۔

٨٩- جنہے اپنے دھرم کو چھوڑ دیا اور جو اتم ورن کی استری میں نیچ ورن کے بیج سے پیدا ہوا اور جو جھوٹھا سنیاس دھارن کئے ہوا اور جو خلاف شاستر آتما کا تیاگ کرنے والا ہو ان سب کے مرنے میں جل نہ دینا چاہیے۔

٩٠- پاکھنڈ دھرم یعنی وید کے خلاف دھرم کرنیوالی اور اپنی خوشی سے جہاں چاہے وہاں جانیوالی حمل اور اپنے شوہر سے دشمنی کرنیوالی شراب پینے والی ایسی عورتوں کے مرنے میں جل نہ دینا چاہیے۔

٩١- آچارج اپادھیایا ماتا پتا گورو ان سبھوں کا داہ کرکے برہمچاری اپنے برت سے بھرشٹ نہیں ہوتا

श्रोतिये तूपसम्पन्ने त्रिरात्रमशुचिर्भवेत्॥ मातुले पक्षिणीं रा-
त्रिं शिष्यर्त्विग्बान्धवेषु च॥८१॥ प्रेते राजनि सज्योतिर्यस्य स्या
द्विषये स्थितः॥ अश्रोत्रिये त्वहः कृत्स्नमनूचाने तथा गुरौ॥८२
॥ शुद्ध्येद्विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः॥ वैश्यः पंचदशाहेन
शूद्रो मासेन शुद्ध्यति॥८३॥ न वर्द्धयेदघाहानि प्रत्यूहेन्नाग्निषु क्रि-
याः॥ न च तत्कर्म कुर्वाणाः सनाभ्योऽप्यशुचिर्भवेत्॥८४॥ दि-
वाकीर्तिमुदक्यां च पतितं सूतिकां तथा॥ शवं तत्स्पृष्टिनं चैव
स्पृष्ट्वा स्नानेन शुद्ध्यति॥८५॥

۸۱ - وید اور شاستر کا پڑھنے والا مرا ہو تو دوستی وغیرہ کرکے اُسکے پاس رہنے والے کو یا اُسکے
گھر میں رہنے والے کو تین رات تک سوتک ہوتا ہے اور ماما و چیلا و یگیہ کرنے والا و بھائی بند
انھوں کے مرنے میں پکشنی رات (یعنے اول و آخر دن کے بیچ کی رات) تک سوتک ہوتا ہے -

۸۲ - راجا اگر دن میں مرا ہو تو تمام دن اور رات میں مرا ہو تو تمام رات اُس راج میں رہنے والے
پرجا کو سوتک ہوتا ہے اور مورکھ برہمن کے مرنے میں اُسکے گھر میں رہنے والوں کو ایک دن
سوتک ہوتا ہے یعنے اگر دن میں مرا ہو تو تمام دن اور رات میں مرا ہو تو تمام رات سوتک
ہوتا ہے ہم مکتب کے مرنے میں اور کسیقدر وید اور شاستر پڑھا ہوا کے مرنے میں ایک
دن سوتک ہوتا ہے حسب مرقومہ بالا -

۸۳ - برہمن دس ۱۰ دن میں کشتری بارہ ۱۲ دن میں ویش پندرہ ۱۵ دن میں شودر تیس ۳۰ دن
میں شدھ ہوتے ہیں -

۸۴ - پاپ کے دن کو نہ بڑھانا اور اگنی ہوتر نہ چھوڑنا چاہئے اگنی ہوتری سامرتھ نہ رکھتا ہو تو اُسکا
بیٹا وغیرہ اگنی ہوتر کو کرلیوے اس کرم کے کرنے سے ناپاکی اُسکو نہیں پہنچتی -

۸۵ - چانڈال حیض والی عورت میت عورت جسنے بیٹا یا بیٹی جنی ہو مردہ اسکے چھونیوالے
ان سب کو چھو کر اسنان کرنے سے پاک ہو جاتا ہے -

विगतन्तुविदेशस्थंशृणुयाद्योह्यनिर्दशम्॥ यच्छेषंदशरात्र-स्यतावदेवाशुचिर्भवेत्॥७५॥ अतिक्रान्तेदशाहेचत्रिरात्रम-शुचिर्भवेत्॥ संवत्सरव्यतीतेतुस्पृष्ट्वैवापोविशुद्ध्यति॥७६॥नि-र्दशंज्ञातिमरणंश्रुत्वापुत्रस्यजन्मच॥ सवासजलमाप्लुत्यशुद्धो भवतिमानवः॥७७॥बालेदेशान्तरस्थेचपृथक्पिंडेचसंस्थिते॥ सवासाजलमाप्लुत्यसद्यएवविशुद्ध्यति॥७८॥ अन्तर्दशाहेस्यातांचेत्पुनर्मरणजन्मनी॥ तावत्स्यादशुचिर्विप्रोयावत्तत्स्यादनिर्दशम्॥७९॥ त्रिरात्रमाहुराशौचमाचार्येसंस्थितेसति॥ तस्यपुत्रेचपत्न्यांचदिवारात्रमितिस्थितिः॥८०॥

۷۵ - دوسرے ملک مین وفات پائے ہوئے کی خبر دس دن کے اندر سُننے مین آوے تو دس دن مین جتنے دن باقی رہین اُن باقی ماندہ دنون تک سوتک ماننا چاہیئے

۷۶ - اگر مرنے سے دس دن بعد سُننے مین آوے تو تین دن رات تک سوتک ماننا چاہیے، اور اگر ایکسال کے بعد سُننے مین آوے تو سُننے والا اشنان کرکے شُدھ ہوتا ہے۔

۷۷ - دس دن کے بعد اگر برادری مین کسی کا مرن اور بیٹے کا جنم سُننے مین آوے تو مع کپڑون کے غسل کرنے سے پاک ہو جاتا ہے۔

۷۸ - دوسرے ملک مین سماؤدک بالک کا مرن سُننے مین آوے تو مع کپڑون کے غسل کرنے سے اسیوقت پاک ہو جاتا ہے۔

۷۹ - ایک کا جنم ہوکر دوسرے کا جنم دس دن کے اندر ہو یا ایک کے مرنے سے دس دن کے اندر دوسرے کا مرن ہو تو پہلے سوتک کے ختم ہونے سے دوسرا سوتک بھی ختم ہو جاتا ہے۔

۸۰ - آچارج کے مرنے مین چیلا کو تین رات تک سوتک ہوتا ہی اور آچارج کی استری اور اُسکے بیٹے کے مرنے مین ایک رات دن تک سوتک ہوتا ہے شاستر مین لکھا ہے

नास्यकार्यो ऽग्निसंस्कारो न च कार्योदकक्रिया ॥ अरण्ये काष्ठवत्त्यक्त्वा क्षपेयुस्त्र्यहमेव वा ॥६९॥ नात्रिवर्षस्य कर्त्तव्या बान्धवैरुदकक्रिया ॥ जातदन्तस्य वा कुर्युर्नाम्नि वापि कृते सति ॥७०॥ सब्रह्मचारिण्येकाहमतीते क्षपणं स्मृतम् ॥ जन्मन्येकोदकानां तु त्रिरात्राच्छुद्धिरिष्यते ॥७१॥ स्त्रीणामसंस्कृतानां तु त्र्यहाच्छुद्ध्यन्ति बान्धवाः ॥ यथोक्तेनैव कल्पेन शुद्ध्यन्ति तु सनाभयः ॥७२॥ अक्षारलवणान्नाः स्युर्निमज्जेयुश्च ते त्र्यहम् ॥ मांसाशनं च नाश्नीयुः शयीरंश्च पृथक्क्षितौ ॥७३॥ सन्निधावेष वै कल्पः शावाशौचस्य कीर्त्तितः ॥ असन्निधावयं ज्ञेयो विधिः सम्बन्धिबान्धवैः ॥७४॥

۶۹ - اور اس لڑکے کا اگن سے سنسکار بھی نکرنا اور نہ جلا دینا جنگل مین لکڑی کی طرح چھوڑ کر تین دن تک سوتک ماننا چاہیے -

۷۰ - اور جو تین برس سے کم ہو اسکے مرنے مین جل دینا مگر اگن سے داہ نکرنا اور اگر دانت پیدا ہو کر مرا ہو یا نام کرن کے بعد مرا ہو تو داہ کرنا جل دینا شمشان مردہ کو آنند ہوتا ہے اور نکرنے تو دوش بھی نہین ہوتا -

۷۱ - ہم مکتب کے مرنے مین ایک دن سوتک ہوتا ہے اور جنم مین سمانودک تین راتک سوتک ہوتا ہے

۷۲ - دواہ کے پہلے باکدان کے پیچھے استری کے مرنے مین پت وغیرہ تین دن مین شدھ ہوتے ہین اور دواہ کے پیچھے مرنے مین باپ وغیرہ سب تین دن مین شدھ ہوتے ہین

۷۳ - کھاری نمک نہ کھانا اور ندی وغیرہ مین تین دن تک اشنان کرنا اور ماس کو نہ کھانا اور علیحدہ زمین پر سونا چاہیے -

۷۴ - جو رشتہ دار پاس موجود ہون اونکا سوتک مرنے مین بیان کیا گیا اب جو رشتہ دار برادری کے لوگ دوسرے ملک مین ہون اونکا سوتک کہتے ہین -

निरस्यतुपुमान्शुक्रमुपस्पृश्यैवशुध्यति ।। बैजिकादभिसंबन्धा दनुरुन्ध्यादघंत्र्यहम् ।। ६३ ।। अह्नाचैकेनरात्र्याचत्रिरात्रैरेवच त्रिभिः ।। शवस्पृशोविशुध्यन्तित्र्यहादुदकदायिनः ।। ६४ ।। गुरोः प्रेतस्यशिष्यस्तुपितृमेधंसमाचरन् ।। प्रेतहारैःसमंतत्रदशरा-त्रेणशुध्यति ।। ६५ ।। रात्रिभिर्मासतुल्याभिर्गर्भस्रावेविशुध्य-ति ।। रजस्युपरतेसाध्वीस्नानेनस्त्रीरजस्वला ।। ६६ ।। नृणाम-कृतचूडानांविशुद्धिर्नैशिकीस्मृता ।। निर्वृत्तचूडकानांतुत्रिरा-त्राच्छुद्धिरिष्यते ।। ६७ ।। ऊनद्विवार्षिकंप्रेतंनिदध्युर्बान्धवाबहिः ।। अलंकृत्यशुचौभूमावस्थिसंचयनादृते ।। ६८ ।।

۶۳- اگر علاوہ خواہش جماع کے تخم گر پڑے تو غسل کرکے پاک ہو جاتا ہے اور جس استری نے پہلے پت کو چھوڑ کر دوسرا پت کیا اس استری میں دوسرے پت سے پتر پیدا ہوئے ہیں وہ دوسرے پت کو تین دن کا سوتک ہوتا ہے۔

۶۴- سپنڈ لوگ دس رات میں شدھ ہوتے ہیں اور جو لوگ سپنڈ ایک دن سوتک کے لائق اوپر کہہ آئے ہیں وہ جب مردے کو چھوئیں تو تین دن میں شدھ ہوتے ہیں اور جو سمانودک ہیں وہ بھی تین دن میں شدھ ہوتے ہیں۔

۶۵- گرو کے داہ کرنے سے چیلا بھی گرو کے سپنڈ کے برابر شدھ کو پاتا ہے۔

۶۶- جب حمل گر جاوے تو جتنے مہینے کا حمل ہو اتنی ہی رات تک اشدھ ہوتا ہے حیض ختم ہوئے غسل کرکے حیض والی عورت پاک ہو جاتی ہے۔

۶۷- جسکا مونڈن نہوا ہو اسکے مرنے میں ایک رات دن کا سوتک ہوتا ہے اور مونڈن ہو چکے پر مرنے میں تین رات تک سوتک ہوتا ہے۔

۶۸- جو لڑکا دو برس کا ہو کر مر جاوے اسکو النکار کرکے گانوں سے باہر جنگل میں گاڑنا چاہئے اسکی ہڈیاں جمع کرنا منع ہے۔

दन्तजातेऽनुजाते च कृतचूडे च संस्थिते ।। अशुद्धा बान्धवाः स-
र्वे सूतके च तथोच्यते ।। ५८ ।। दशाहं शावमाशौचं सपिण्डेषु-
विधीयते ।। अर्वाक्संचयनादस्थ्नां त्र्यहमेकाहमेव च ।। ५९ ।। सपि
ण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते ।। समानोदकभावस्तु जन्मना-
म्नोरवेदने ।। ६० ।। यथेदं शावमाशौचं सपिण्डेषु विधीयते ।। ज-
ननेऽप्येवमेव स्यान्निपुणां शुद्धिमिच्छताम् ।। ६१ ।। सर्वेषां शाव-
माशौचं मातापित्रोस्तु सूतकम् ।। सूतकं मातुरेव स्यादुपस्पृश्य
पिता शुचिः ।। ६२ ।।

۵۸ — جنکے دانت نکل آئے ہوں اور ہو مُنڈن اور جنیو ہو گیا ہو اُنکے مرنے اور پیدا ہونے میں تمام رشتہ دار سات پرش تک اور سات پرش سے اوپر تک جنم نام گیان تک اشدھ ہوتے ہیں۔

۵۹ — جو براہمن وید کے دونوں بھاگ (یعنی منتر بھاگ اور براہمن بھاگ) کو تمام پڑھا ہوا اور اگنی ہوتر کرتا ہو اُسکے مرنے میں ایک دن رات کا سوتک ہوتا ہے اور جو صرف وید پڑھا ہو اور اگنی ہوتر کرتا ہو اُسکو تین دن کا سوتک ہوتا ہے اور جو نہ وید پڑھا ہو اور نہ اگنی ہوتر کرتا ہو لیکن سمارت اگنی کو رکھتا ہو اُسکو چار دن کا سوتک ہوتا ہے اور جو سب گُنوں سے خالی ہو اُسکو دس دن کا سوتک ہوتا ہے۔

۶۰ ساتویں پرش میں سپنڈتا کی نیورت ہوتی ہے اور اپنے کُل میں جب جنم نام کا گیان نہیں رہتا تب سمانودکتا کی نیورت ہوتی ہے۔

۶۱ — جو پرش سپنڈ میں ہوں اور بڑی شدھی کی اچھا رکھنے والے ہوں اُنکا سوتک پیدا ہونے میں بھی مرنے کے سوتک کے برابر ہوتا ہے۔

۶۲ — مرن کا سوتک سبکو ہوتا ہے مگر جنم کا سوتک صرف ماں باپ ہی کو ہوتا ہے ان دونوں میں ماں کو چھونا نہ چاہیے اور باپ اشنان کرنے کے بعد چھونے کے لائق ہوتا ہے۔

वर्षेवर्षेऽश्वमेधेन योयजेत शतंसमाः॥ मांसानिचनखादेद्य-
स्तयोःपुण्यफलंसमम्॥५३॥ फलमूलाशनैर्मेध्यैर्मुन्यन्ना-
नांचभोजनैः॥ नतत्फलमवाप्नोतियन्मांसपरिवर्जनात्॥५४
॥मांसभक्षयितामुत्रयस्यमांसमिहाद्म्यहम्॥ एतन्मांसस्य-
मांसत्वंप्रवदन्तिमनीषिणः॥५५॥ नमांसभक्षणेदोषोनम-
द्येनचमैथुने॥ प्रवृत्तिरेषाभूतानांनिवृत्तिस्तुमहाफला॥५६
॥प्रेतशुद्धिंप्रवक्ष्यामिद्रव्यशुद्धिंतथैवच॥ चतुर्णामपिवर्णा-
नांयथावदनुपूर्वशः॥५७॥

۵۳ - جو شخص سَو برس تک ہر ایک برس مین ایک ایک اشومیدھ یگیہ کرتا ہے اور دوسرا شخص مانس کو نہین کھاتا ہے اِن دونون کے پنیہ کا پھل برابر ہے۔

۵۴ - مانس کے ترک کرنے سے جو پھل ہوتا ہے وہ پھل پوتر اناج تنی وغیرہ جو منی جی کا ان ہے اور مول پھل انھون کے کھانے سے نہین ہوتا۔

۵۵ - جسکی مانس کو مین اِس لوک مین کھاتا ہون اور پرلوک مین مجھکو کھائیگا مانس لفظ کے یہی معنی ہین یہ بات پنڈت لوگ کہتے ہین۔

۵۶ - مانس اور شراب اِن دونون کے کھانے مین کچھ دوش نہین ہے* اور جماع مین بھی دوش نہین ہے کیونکہ یہ تو جیوونکا سُبھاو ہے لیکن اُنھون کا ترک کرنا بڑا پھل ہے۔

۵۷ - اب چارو ورنون کی پریت شدھ اور دربیہ شدھ کہتے ہین۔

* اس شلوک کا اصل مطلب یہ ہے کہ یگیہ کے مانس کھانے مین اور شادی مین جماع کرنے مین اور سَوترامنی نام یگیہ مین شراب پینے مین دوش نہین ہے لیکن تاہم اوسکا ترک کرنا بہت اچھا ہے۔

नियुक्तस्तुयथान्यायंयोमांसंनात्तिमानवः॥सप्रेत्यप [illegible] तिसम्भवानेकविंशतिम्॥ ३५॥ असंस्कृतान्पशून्मंत्रैन [illegible] प्रः कदाचन॥मंत्रैस्तुसंस्कृतानद्याच्छाश्वतंविधिमा [illegible] ३६॥ कुर्य्याद्घृतपशुंसंगेकुर्य्यात्पिष्टपशुंतथा॥ नत्वे [illegible] थाहन्तुंपशुमिच्छेत्कदाचन॥ ३७॥ यावन्तिपशुरोमा [illegible] वत्कृत्वोहमारणम्॥ वृथापशुघ्नःप्राप्नोतिप्रेत्यजन्म [illegible] न्मनि॥ ३८॥ यज्ञार्थंपशवःसृष्टाःस्वयमेवस्वयम्भुवा॥ [illegible] स्यभूत्यैसर्वस्यतस्माद्यज्ञेवधोऽवधः॥ ३९॥ ओषध्य [illegible] वृक्षास्तिर्य्यंचःपक्षिरास्तथा॥ यज्ञार्थंनिधनंप्राप्ताः [illegible] न्त्युच्छ्रितीःपुनः॥ ४०॥

यत्नेनयो
नमुत्पद्य
[illegible]येत॥
[illegible]थनिवर्त्ते
[illegible]धिंहि
[illegible]पीड्यते
संस्कर्त्ता
[illegible]रमांसेन
न्योनास्त्य

۴۷- جو شخص کسی شاستر کی بدھ کے جو مانس سدھ ہے اوسکو جو آدمی نہیں کھاتا وہ پرلوک میں اکیس جنم تک وہ اُسکو بدون محنت [illegible]

۴۸- بدون ہنسا جیوں کا سنسکار نہیں ہوا اسکو براہمن کبھی نہ کھاوے اور ہمیشہ شاستر کے موافق [illegible] نہیں ہے اسواسطے مانس [illegible] بنے مانس کو کھایا کرے۔

۴۹- مانس کی پیدایش اور جیو [illegible] کو نہایت دل چاہے تب گھی یا پیٹھی کا پشو بناکر کھاوے مگر پشو کھانا ترک کرے۔

۵۰- جو آدمی بدھ کو چھوڑ کر پشاچ کی طرح مانس نہیں کھاتا وہ لوگ میں سب کا پیارا ہے جیتے مال اور مصیبت سے تکلیف نہیں پاتا۔

۵۱- جسکی صلاح بغیر جیو ہنسا ہو سکے اور ہتھیار سے مانس کو کاٹنے والا مارنے والا بیچنے والا مول لینے والا بنانے والا لے آنے والا مانس کا کھانے والا یہ آٹھو مارنے والے ہی کہلاتے ہیں۔

۵۲- جو شخص دوسرے کے مانس سے اپنے مانس کے بڑھانے کی اچھا کرتا ہے اس سے زیادہ کوئی دوسرا پاپی نہیں ہے۔

मधुपर्केर्थ १४ न्यत्रेत्य: फ चयज्ञेच पितृदैवतकर्म्मणि ॥ अत्रैवपशवोहिंस जः ॥ अमोऽब्रवीन्मनुः ॥ ४१ ॥ एष्वर्थेषु पशुंहिंसंवेदतत्वार्थवि वरायेसम स्मानंचपशुंचैवगमगत्युत्तमांगतिम् ॥ ४२ ॥ गृहेगु द्यपिसवं प्रव तेवसन्नात्मवान्द्विजः ॥ नावेदविहितान्हिंसामाप चेर ॥ अमेथुन रेत ॥ ४३ ॥ यावेदविहिताहिंसानियतास्मिंश्चरा- सकानि गू सामेवतांविद्याद्देदाद्धर्मोहिनिर्बभौ ॥ ४४ ॥ योऽहिं- सकानि भूतानिहिनस्त्यात्मसुखेच्छया ॥ सजीवंश्चमृतश्चैवन- कीर्षति खमेधते ॥ ४५ ॥ योबन्धनवधक्लेशान्प्राणिनांनचि ॥ ससर्व्वस्यहितप्रेप्सुः सुखमत्यन्तमश्नुते ॥ ४६ ॥

۴۱ - مدھو پرک یگیہ دیو کرم پتر کرم ان سب میں پشو کو مارنا چاہیے اور ... کرم میں نہ مارنا چاہیئے اسبات کو منوجی نے کہا ہے -

۴۲ - ایسے کرموں میں پشو کو مارکر وید کے اصل مطلب کو ... الا براہمن آپ کو اور اس پشو کو اتم گت کو پہونچاتا ہے -

۴۳ - گھر ... میں رہکر براہمن وید کے خلاف جان کشی کو ودت ...

۴۴ - جو ہنسا اس دنیا میں وید کے حکم کے موافق ہے اسکو ہنسا یعنی جان کشی نہ جاننا چاہیئے کیونکہ وید ہی سے دھرم نکلا ہے -

۴۵ - جو جیو مارنے کے لائق نہیں ہے انکو جو کوئی اپنے سکھ کے واسطے مارتا ہے وہ جیتا ہوا مردہ کہیں سکھ نہیں پاتا ہے -

۴۶ - جو شخص کسی جاندار کو پکڑنے اور مارنے اور ایذا دینے کی خواہش نہیں رکھتا وہ سبکا بھلا چاہنے والا ہے اسلیئے بڑا سکھ پاتا ہے -

नियुक्तस्तुयथान्यायंयोमांसंनात्तिमानवः ॥ सप्रेत्यपशुतांया
तिसम्भवानेकविंशतिम् ॥ ३५ ॥ असंस्कृतान्पशून्मंत्रैर्नाद्याद्वि
प्रः कदाचन ॥ मंत्रैस्तुसंस्कृतानद्याच्छाश्वतंविधिमास्थितः ॥
३६ ॥ कुर्य्याद्घृतपशुंसंगेकुर्य्यात्पिष्टपशुन्तथा ॥ नत्वेवतुवृ-
थाहन्तुम्पशुमिच्छेत्कदाचन ॥ ३७ ॥ यावन्तिपशुरोमाणिता
वत्कृत्वोहमारणम् ॥ वृथापशुघ्नः प्राप्नोतिप्रेत्यजन्मनिज-
न्मनि ॥ ३८ ॥ यज्ञार्थंपशवःसृष्टाःस्वयमेवस्वयम्भुवा ॥ यज्ञ-
स्यभूत्यैसर्व्वस्यतस्माद्यज्ञेवधोऽवधः ॥ ३९ ॥ ओषध्यःपशवो
वृक्षास्तिर्य्यंचःपक्षिणस्तथा ॥ यज्ञार्थंनिधनंप्राप्ताःप्राप्नुव-
न्त्युत्सृतीःपुनः ॥ ४० ॥

۳۵ - شاستر کی بدھی سے جو ماس ستر دھ ہے اوسکو جو آدمی نہین کھاتا وہ پرلوک مین اکیس جنم تک پشو ہوتا ہے۔

۳۶ - جس ماس کا سنسکار نہین ہوا اسکو براہمن کبھی نہ کھاوے اور ہمیشہ شاستر کے موافق منتر سے سنسکار کیئے ہوئے ماس کو کھایا کرے۔

۳۷ - جب پشو کے ماس کھانے کا نہایت دل چاہے تب گھی یا پیٹھی کا پشو بنا کر کھاوے مگر پشو کے مارنے کی نیت نہ کرے۔

۳۸ - جو آدمی پشو کو بیفائدہ مارتا ہے وہ پرلوک مین کئی جنم تک اتنی دفعہ مارا جاتا ہے جتنے بال اوس پشو کے بدن پر ہون

۳۹ - شری برہماجی نے آپسے آپ یگیہ کیواسطے پشو کو پیدا کیا اوس سے یگیہ مین جو پشو لیئے قتل ہوتا ہے وہ بدھ نہین کہلاتا۔

۴۰ - ان پشو - درخت - پرند - کچھوا - وغیرہ یہ سب یگیہ کے واسطے مارے جاتے اتم ذات کو دوسرے جنم مین پاتے ہین۔

चराणामन्नमचरादंष्ट्रिणामप्यदंष्ट्रिणः ॥ अहस्ताश्च सहस्तानां शूराणां चैव भीरवः ॥ २९ ॥ नात्ता दुष्यत्यदन्नाद्यान्प्राणिनोऽहन्यहन्यपि ॥ धात्रैव सृष्टा ह्याद्याश्च प्राणिनोऽत्तार एव च ॥ ३० ॥ यज्ञाय जग्धिर्मांसस्येत्येष दैवो विधिः स्मृतः ॥ अतोऽन्यथा प्रवृत्तिस्तु राक्षसो विधिरुच्यते ॥ ३१ ॥ क्रीत्वा स्वयं वाप्युत्पाद्य परोपकृतमेव वा ॥ देवान्पितॄंश्चार्चयित्वा खादन्मांसं न दुष्यति ॥ ३२ ॥ नाद्यादविधिना मांसं विधिज्ञोऽनापदि द्विजः ॥ जग्ध्वा ह्यविधिना मांसं प्रेत्य तैरद्यतेऽवशः ॥ ३३ ॥ न तादृशं भवत्येनो मृगहन्तुर्धनार्थिनः ॥ यादृशं भवति प्रेत्य वृथामांसानि खादतः ॥ ३४ ॥

۲۹- جانداران متحرک کی غذا جانداران ساکن ہین ڈاڑھ والون کی غذا بیڈون ڈاڑھ والے ہین ہاتھ والون کی غذا بیڈون ہاتھ والے ہین شور بیرون کی غذا ڈرنے والے ہین

۳۰- کھانے کے لائق جانورون کو کھانے سے کھانیوالے کو دوش نہین ہوتا کیونکہ کھانیکے لائق جانور کو اور کھانیوالے جاندار کو برہماجی ہی نے پیدا کیا ہے۔

۳۱- یگیہ کے نمت مانس کو بھوجن کرنا شاستر کی بدھ ہے سوا اُسکے اور مانس بھوجن کرنا راکشی بدھ ہے۔

۳۲- مول لئے ہوئے یا دوسرے کے لائے ہوئے مانس کو دیوتا اور پترون کو بھوگ لگا کر کھانے سے پاپ نہین ہوتا۔

۳۳- جو براہمن شاستر کی بدھ جاننے والا ہے وہ بغیر وقت مصیبت کے اور حالت مین بدھ کے خلاف اگر مانس کو کھاوے تو اُسکے مانس کو پرلوک مین وہ کھاتا ہے جسکے مانس کو اُسنے کھایا۔

۳۴- دولت کے لئے ہرن کے مارنیوالے کو ویسا پاپ نہین ہوتا جیسا پاپ بیقاعدہ مانس کھانیوالے کو پرلوک مین ہوتا ہے۔

यत्किंचित्स्नेहसंयुक्तंभक्ष्यंभोज्यमगर्हितम्॥ तत्पर्युषितम-
प्याद्यंहविःशेषंचयद्भवेत्॥ २४ ॥ चिरस्थितमपित्वाद्यमस्नेहा
क्तं द्विजातिभिः॥ यवगोधूमजंसर्वंपयसश्चैवविक्रिया॥ २५॥
एतदुक्तंद्विजातीनांभक्ष्याभक्ष्यमशेषतः॥ मांसस्यातःप्रवक्ष्या
मिविधिंभक्षणवर्जने॥ २६ ॥ प्रोक्षितंभक्षयेन्मांसंब्राह्मणा-
नांचकाम्यया॥ यथाविधिनियुक्तस्तुप्राणानामेवचात्यये
॥२७॥ प्राणस्यान्नमिदंसर्व्वंप्रजापतिरकल्पयत्॥ स्थावरं
जंगमंचैवसर्व्वंप्राणस्यभोजनम्॥२८॥

۲۴- جو چیز گھی یا تیل سے پکی ہو اور کھانے کے لائق ہو وہ باسی بھی ہو تو اُسکو بھوجن کرے اور
بچا ہوا ہبیہ بھی اگرچہ باسی ہو کھانا چاہیے-

۲۵- جو چیز جو یا گیہون سے بنی ہے مگر گھی یا تیل سے نہین پکی اور باسی ہے اور جو چیز دودھ سے
بنی ہے وہ باسی ہے اسکو بھوجن کرے-

۲۶- جو چیز براہمن کشتری ویشیہ کے کھانے کے لائق ہین اور جو نہین لائق ہین اونکو کہا اب
ماس کھانے کی ممانعت کو کہتے ہین

۲۷- پرو کش نام سنسکار سے جو ماس بنا ہے اور یگیہ مین ہون کرنے سے جو ماس بچا ہے ان
دونون طرح کے ماس کو بھوجن کرنا چاہیے اور جب براہمنون کو ماس کی اچھا ہو تب شاستر
کی بدہم سے ماس کو بھوجن کرین اور جبکہ بھوکھ سے جان جاتی ہو اسوقت بھی ماس بھوجن کرین

۲۸- استھاور* جنگم‡ جتنی چیزین دنیا مین ہین وہ سب جان کی غذا ہین اسبات کو برہما جی
نے کہا ہے-

* جو یوتاؤن کا حصّہ-

+ ساکن-

‡ متحرک-

श्वाविधंशल्यकंगोधांखड्गकूर्मशशांस्तथा।। भक्ष्यान्पंचनखे-
ष्वाहुरनुष्ट्रांश्चैकतोदतः।।१८।। छत्राकंविड्वराहंचलशुनंग्रा-
मकुक्कुटम्।। पलाण्डुंगृंजनंचैवमत्याजग्ध्वापतेद्द्विजः।।१९
।। अमत्यैतानिषड्जग्ध्वाकृच्छ्रंसांतपनंचरेत्।। यतिचान्द्रा-
यणंवापिशेषेषूपवसेदहः।।२०।। संवत्सरस्यैकमपिचरेत्कृ-
च्छ्रंद्विजोत्तमः।। अज्ञातभुक्तशुद्ध्यर्थंज्ञातस्यतुविशेषतः २१
यज्ञार्थंब्राह्मणैर्वध्याःप्रशस्तामृगपक्षिणः।। भृत्यानांचैव-
वृत्त्यर्थमगस्त्योह्याचरत्पुरा।।२२।।बभूवुर्हिपुरोडाशाभक्ष्या-
णांमृगपक्षिणाम्।। पुराणेष्वपियज्ञेष्वब्रह्मक्षत्रसवेषुच।।
।।२३।।

۱۸- پانچ ناخن والون مین سالی گوہ ساہی گینڈا کچھوا۔ کھرہا کھانے کے لائق ہین اور اونٹ کو چھوڑکر ایک طرف دانت رکھنے والے علاوہ اُنکے سبکی ممانعت ہی کھانے کے لائق نہین ہین

۱۹- کُکرمُتا گانون کا رہنے والا سُور لہسن گانون کا مُرغا پیاز۔ گاجر اِن سب کو جانکر بھوجن کرے تو پتت ہو جاتا ہے یعنے اپنے دھرم ورن آشرم کے درجہ سے گرجاتا ہے۔

۲۰- اگر اُن چھہو کو بغیر جانے بھوجن کرے تو سانتپن نام کرچھر برت کو کرے یا یتی چندر برت کو کرے باقی درخت کا لاسا وغیرہ کھانے مین ایک دن فاقہ کرے۔

۲۱- جو چیز کھانیکے لائق نہین ہے اسکو بغیر جانے کھاجانے مین جو دوش ہے اُسکو ناش کرنیکے لئے سال بھر مین ایک کرچھر برت کو کرے اور اگر جانکر کھایا ہو تو اسکے لئے خاص کرچھر برت کرے۔

۲۲- یگیہ کیواسطے اور نوکرون کے کھانے کیواسطے اچھے ہرن اور پکشی (پرند) مارنا چاہئے اگستت رشی نے اگلے زمانہ مین ایسا کیا ہے۔

۲۳- اگلے زمانہ مین رشیون نے یگیہ کے لئے کھانے کے لائق ہرن اور پکشیون کو مارا ہے

कलविंकंप्लवंहंसंचक्राङ्गंग्रामकुक्कुटम्॥ सारसंरज्जुबालंच-
दात्यूहंशुकसारिके॥१२॥ प्रतुदांजालपादांश्चकोयष्टिनखविष्किरान्॥ निमज्जतश्चमत्स्यादान्शौनंवल्लूरमेवच॥१३॥
बकंचैवबलाकांचकाकोलंखंजरीटकम्॥ मत्स्यादान्विड्वराहांश्चमत्स्यानेवचसर्वशः॥१४॥ योयस्यमांसमश्नातिसतंमांसादउच्यते॥ मत्स्यादःसर्वमांसादस्तस्मात्मत्स्यान्विवर्जयेत्॥१५॥ पाठीनरोहितावाद्यौनियुक्तौहव्यकव्ययोः॥ राजीवान्सिंहतुण्डांश्चसशल्कांश्चैवसर्वशः॥१६॥ नभक्षयेदेकचरानज्ञातांश्चमृगद्विजान्॥ भक्ष्येष्वपिसमुद्दिष्टान्सर्वान्पंचनखांस्तथा॥१७॥

۱۲۔ گوراجل میں پیر والے ہنس چکوا گانوں کا رہنے والا مرغا سارس رجوال۔ پرند جل کاگ طوطا۔ مینا۔ ان کو بھی نہ کھاوے۔

۱۳۔ چونچ سے کھانے والے پٹ پھوڑ نام جانور وغیرہ آڑی وغیرہ ٹھڑی وغیرہ ناخن سے نوچ کر کھانے والے باز وغیرہ پانی میں ڈوب کر مچھلی کھانے والے جانور کسائی کے گھر کا ماس سوکھا ماس ان سب کو بھی نہ کھاوے۔

۱۴۔ بگلا اور بلاکا (یعنی دوسری قسم کا بگلا) نہایت سیاہ زاغ کھڑ ریچہ مچھلی کھانیوالے پرند گانوں کا سور اور مچھلی ان سب کو بھی نہ کھاوے۔

۱۵۔ جو جیو جسکے ماس کو کھاتا ہے وہ اوسکا کھانیوالا کہلاتا ہے جیسے مچھلی سب کا ماس کھاتی ہے اور اسکو جسنے کھایا وہ گویا سب ماس کھا چکا اسلیے مچھلی کو کھانا نچاہیے

۱۶۔ راجیو سنگھ تند شنلک سہنار وہو ان سب کو دیوتا اور پتروں کو بھوگ لگا کر کھانا چاہیے

۱۷۔ جو جاندار اکثر اکیلے رہتے ہیں مثل سانپ وغیرہ اور جو جانے ہوئے نہیں ہیں ہرن و پرند وغیرہ اور پانچ ناخن والے بندر وغیرہ ان سب کو بھوجن نکرے۔

त्थाकृसरसंयावंपायसापूपमेवच॥ अनुपाकृतमांसानिदे-
वान्नानिहवींषिच॥७॥ अनिर्दशायागोःक्षीरमौष्ट्रमैकशफं
तथा॥ आविकंसंधिनीक्षीरंविवत्सायाश्चगोःपयः॥८॥ आर-
ण्यानांचसर्वेषांमृगाणांमाहिषंविना॥ स्त्रीक्षीरंचैववर्ज्यानि
सर्वशुक्तानिचैवहि॥९॥ दधिभक्ष्यंचशुक्तेषुसर्वंचदधिसंभवम्
॥ यानिचैवाभिषूयन्तेपुष्पमूलफलैःशुभैः॥१०॥ क्रव्यादाञ्छ-
कुनीन्सर्वांस्तथाग्रामनिवासिनः॥ अनिर्दिष्टांश्चैकशफांष्टि-
ट्टिभंचविवर्जयेत॥११॥

۷- دیوتا اور پتروں کو چھوڑ کر اپنے واسطے تل ملا ہوا بھات دودھ گڑ گیہوں کے آٹا سے بنا ہوا پکوان کھیر مال پوا اور جو جانور منتر سے شدھ نہیں کیا گیا اوسکا مانس اور جو اُن دیوتاؤں کے واسطے بنایا گیا ہو اور انکو بھوگ نہ لگایا گیا ہو اور جو ہتیہ ہوں کیو اسطے بنا اور ہوں نہیں ہوا ان سب کو دیوتا اور پتروں کے بھوگ لگائے بغیر نکھاوے۔

۸- بیانے سے دس دن تک گئو کا دودھ اور اونٹنی اور ایک کھر والی (یعنی گھوڑی وغیرہ) اور بھیڑ اور گابھن گئو اور وہ گئو جسکا بچہ مر گیا ہو ان سب کا دودھ پینا منع ہے۔

۹- سوائے بھینس کے اور جتنے جانور جنگل کے رہنے والے ہیں اونکا دودھ اور عورت کا دودھ اور جو چیز بدون ملائے کسی دوسری چیز کے محض بسبب گذرنے ایام کے کھٹی ہو جاوے ان سب کا کھانا منع ہے۔

۱۰- لیکن کھٹی چیزوں میں دہی اور دہی سے بنی ہوئی چیزیں اور پانی سے بنا ہوا پھول مول پھل وغیرہ کو کھانا منع نہیں ہے۔

۱۱- کچے گوشت کے کھانے والے گدھ وغیرہ پرند گانوں میں رہنے والے کبوتر وغیرہ پرند ایک کھر والے جانور باستثنا اونکے جو شاستر میں کھانے کے لائق کہے گئے ہیں اور ٹٹھری ان سب کو نہ کھاوے۔

श्रुत्वैतानृषयोधर्मान्स्नातकस्ययथोदितान्॥ इदमूचुर्महात्मा
नमनलप्रभवंभृगुम्॥१॥ एवंयथोक्तंविप्राणांस्वधर्ममनुति
ष्ठताम्॥ कथंमृत्युःप्रभवतिवेदशास्त्रविदांप्रभो॥२॥ सतानु
वाचधर्मात्मामहर्षीन्मानवोभृगुः॥ श्रूयतांयेनदोषेणमृत्युर्वि-
प्रांजिघांसति॥३॥ अनभ्यासेनवेदानामाचारस्यचवर्जनात्॥
आलस्यादन्नदोषाच्चमृत्युर्विप्रांजिघांसति॥४॥ लशुनंगृञ्ज
नंचैवपलाण्डुंकवकानिच॥ अभक्ष्याणिद्विजातीनाममेध्य
प्रभवाणिच॥५॥ लोहितान्वृक्षनिर्यासान्व्रश्चनप्रभवांस्तथा
॥ शेलुंगव्यंचपेयूषंप्रयत्नेनविवर्जयेत्॥६॥

۱- اسنانک کے دھرموں کو سنکر رشی لوگوں نے مہاتما بھرگ جی سے (جو اگ سے پیدا ہیں) اس بات کو پوچھا کہ ہے پربھو۔

۲- اسطرح براہمن لوگ جو اپنے دھرم پر جیسا کہ کہا گیا ہے قائم ہوں اور وید اور شاستر جانتے ہوں انکی موت کیوں ہوتی ہے۔

۳- منوجی کے پتر دھرماتما بھرگ جی نے ان رشیوں سے کہا کہ جس دوش سے براہمنوں کو موت مارتی ہے انکو سنئے۔

۴- وید کے ابھیاس نکرنے سے کاہلی کرنے سے آچار کو چھوڑنے سے کھانے کے نقص سے براہمنوں کو موت مارتی ہے۔

۵- لسن - گاجر - پیاز - کُکرمتا غلیظ وغیرہ ناپاک چیزوں سے جو چیز پیدا ہو ان سب کو براہمن بھوجن نکرے۔

۶- درخت کا لال رنگ کا یا جو کاٹنے سے پیدا ہو کسی رنگ کا ہو اندر جو نئی بیائی ہوئی گئو کا دودھ پیوس ان سب کو بھوجن نہ کرے

× اگن بھی منو جی کا نام ہے - دیکھو ادھیاے ۱۲

महर्षिपितृदेवानांगत्वानृण्यंयथाविधि॥पुत्रेसर्वंसमासज्य वसेन्माध्यस्थमाश्रितः॥२५७॥एकाकीचिन्तयेन्नित्यंविविक्तेहितमात्मनः॥एकाकीचिन्तयानोहिपरंश्रेयोऽधिगच्छति॥२५८॥एषोदिताग्रहस्थस्यवृत्तिर्विप्रस्यशाश्वती॥स्नातकव्रतकल्पश्चसत्ववृद्धिकरःशुभः॥२५९॥अनेनविप्रोवृत्तेनवर्त्तयन्वेदशास्त्रवित्॥व्यपेतकल्मषोनित्यंब्रह्मलोकेमहीयते॥२६०॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां चतुर्थोऽध्यायः ४

۲۵۷- دیو رکش پتران تینوں کے رن سے یتھا بدھ چھوٹ کر سب چیز بیٹے کو سپرد کرکے تارک الدنیا ہو کر سب کو بچشم وحدت برابر دیکھے اور گھر ہی مین رہے۔

۲۵۸- ایکانت مین اکیلا اپنی آتما کے ہت کو نتیہ ہی دھیان کرے اسمین پرم کلیان ہو گا۔

۲۵۹- براہمن گرہستھ کا یہ نتیہ برت کہا اور بدھ کا بڑھانیوالا اسناتک برت بھی کہا۔

۲۶۰- ویداور شاستر کا جاننے والا براہمن اوپر کہی ہوئی ریت سے رہا کرے تو سب پاپون سے چھوٹ کر ہمیشہ برہم لوگ مین پوجنے کے لائق ہو۔

منو جی کا دھرم شاستر بھرگ جی کی سنگھتا

کا چوتھا ادھیایے سماپت ہوا

गुरून्भृत्यांश्चोज्जिहीर्षन्नर्चिष्यन्देवतातिथीन्।। सर्वतः प्रतिगृ-
ह्णीयान्नतुतृप्येत्स्वयंततः।।२५१।।गुरुषुत्वभ्यतीतेषुविनावा-
तैर्गृहेवसन्।। आत्मनोवृत्तिमन्विच्छन्गृह्णीयात्साधुतः सदा।।
२५२।। आर्द्धिकः कुलमित्रंचगोपालोदासनापितौ।। एतेशूद्रे-
षुभोज्यान्नायश्चात्मानंनिवेदयेत्।।२५३।।यादृशोऽस्यभवेदा-
त्मायादृशंचचिकीर्षितम्।। यथाचोपचरेदेनंतथात्मानंनिवेद-
येत्।।२५४।।योऽन्यथासन्तमात्मानमन्यथासत्सुभाषते।। स-
पापकृत्तमोलोकेस्तेनआत्मापहारकः।।२५५।।वाच्यर्थानिय-
ताः सर्वेवाङ्मूलावाग्विनिःसृताः।। तांस्तुयः स्तेनयेद्वाचंसस-
र्वस्तेयकृन्नरः।।२५६।।

۲۵۱- اگر ماتا پتا سیوک استری وغیرہ بھوک سے تکلیف پاتے ہوں تو انکی رنج وتکلیف کی نیت سے دیوتا و اتتھی کی پوجن کرتا ہوا انیت کے سوا اور سب سے لیوے مگر آپ اسکو نہ کھاوے۔

۲۵۲- ماتا پتا کے مرنے کے بعد یا بحالت زندگی انکے دوسرے مقام پر رہکر اپنی وجہ معاش کے لئے اچھے لوگوں سے لیوے۔

۲۵۳- جو شودر جسکی کھیتی کرتا ہے اس شودر کا ان اسکے کھانے کے لائق ہے اور جو شودر خاندان کا دوست ہے اور گوپال اور داس اور ناؤ اور جس شودر نے غلامی اختیار کی ہو ان کا ان کھانا چاہئے۔

۲۵۴- جس شودر کا جیسا کل جیسا سُروپ اور جیسی کرنیکی اچھا ہو اور جسطرح سیوا کرنا چاہتے ویساہی وہ شودر اپنے کو کہے۔

۲۵۵- جو کوئی اچھے لوگوں میں اپنے کو چھپاتا ہے یعنی جیسا ویسا نہیں کہلاتا وہ بڑا پاپ کرنیوالا ہے اور اپنی آتما کا چور ہے

۲۵۶- جتنے ارتھ ہیں سو سب بانی میں رہتے ہیں اور بانی انکی جڑ ہے بانی سے نکلتے ہیں اس بانی کو جسنے چرایا وہ سب چیزوں کا چرانیوالا ہوا۔

दृढकारीमृदुर्दान्तः क्रूराचारैरसंवसन्॥ अहिंस्रोदमदानाभ्यांजयेत्स्वर्गंतथाव्रतः॥२४६॥ एधोदकंमूलफलमन्नमभ्युद्यतंचयत्॥ सर्वतः प्रतिगृह्णीयान्मध्वथाभयदक्षिणाम्॥२४७॥ आहृताभ्युद्यतांभिक्षांपुरस्तादप्रचोदिताम्॥ मेनेप्रजापतिर्ग्राह्यामपिदुष्कृतकर्मणः॥२४८॥ नाश्नन्तिपितरस्तस्यदशवर्षाणिपंचच॥ नचहव्यंवहत्यग्निर्यस्तामभ्यवमन्यते॥२४९॥ शय्यांगृहांकुशान्गन्धानपः पुष्पंमणीन्दधि॥ धानामत्स्यान्पयोमांसंशाकंचैवननिर्णुदेत्॥२५०॥

۲۴۶ - کسی کام کو شروع کرکے اُسکو اختتام تک پھونچانے والا نرم مزاج والا گرمی سردی وغیرہ وحندون کا سہنے والا - اندریون کو وشیون سے روکنے والا بد آدمیون سے رشتہ مندی ترک کرنیوالا - جان کُشی نکرنیوالا - دان دینے والا سورگ مین جاتا ہے -

۲۴۷ - لکڑی - جل - مول - پھل - اَن - مدھ - ابھے (دچھنا) یہ بن مانگے ملین تو انکو سب سے لینا چاہیے مگر زناکار نیچ - نامرد و دشمن سے نہ لیوے -

۲۴۸ - جبکہ کسی چیز کو دینے والے نے پہلے سے دینے کو نہ کہا ہو اور لینے والے کے پاس پہنچکر بے مانگے دے تو اُس چیز کو سوائے نیچ کے بدکرم کرنے والے سے بھی لینا چاہیے برہما جی نے کہا ہے -

۲۴۹ - جو شخص ایسی چیز کو نہین لیتا ہے اُسکے دئیے ہوئے ہَیّہ اور کَیّہ کو دیوتا اور پتر پندرہ برس تک نہین لیتے ہین

۲۵۰ - چارپائی - مکان - کُش - خوشبو - پانی - پھول - جواہر - دہی - لائی - مچھلی دودھ - گوشت - ساگ - ان سب کو ترک نکرے -

एकः प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते ॥ एकोऽनुभुंक्ते सुकृतमेक एव च दुष्कृतम् ॥ २४० ॥ मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमं क्षितौ ॥ विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति ॥ २४१ ॥ तस्माद्धर्मं सहायार्थं नित्यं संचिनुयाच्छनैः ॥ धर्मेण हि सहायेन तमस्तरति दुस्तरम् ॥ २४२ ॥ धर्मप्रधानं पुरुषं तपसा हतकिल्बिषम् ॥ परलोकं नयत्याशु भास्वन्तं खशरीरिणम् ॥ २४३ ॥ उत्तमैरुत्तमैर्नित्यं संबंधानाचरेत्सह ॥ निनीषुः कुलमुत्कर्षमधमानधमांस्त्यजेत् ॥ २४४ ॥ उत्तमानुत्तमान्गच्छेन्हीनान्हीनांश्च वर्जयन् ॥ ब्राह्मणः श्रेष्ठतामेति प्रत्यवायेन शूद्रताम् ॥ २४५ ॥

۲۴۰- ایک ہی پیدا ہوتا ہے ایک ہی مرتا ہے ایک ہی پنیہ بھوگ کرتا ہے ایک ہی پاپ بھوگ کرتا ہے۔

۲۴۱ مردہ کو لکڑی ڈھیلا کی طرح زمین میں چھوڑ کر بھائی بندہ الگ جاتے ہیں دھرم ہی ساتھ جاتا ہے۔

۲۴۲- اسلئے اپنی مدد کیواسطے دھرم کو ہمیشہ کرتا رہے کیونکہ دھرم کی مدد سے بھوساگر پار اتر جاتا ہے۔

۲۴۳- جس آدمی دھرم مددگار ہے اور تپ سے اوسکا پاپ دور ہو گیا ہے وہی دھرم اسکو سورگ لوک میں لیجاتا ہے۔

۲۴۴- خاندان کو اسکی بزرگی دینے کے لئے اچھے اچھے لوگوں کے ساتھ رشتہ مندی کرے نالائقوں سے ترک تعلق کرے۔

۲۴۵- اچھوں اچھوں سے رشتہ مندی کرکے اور بروں بروں سے ترک کرکے براہمن بزرگی حاصل کرتا ہے اور دوش لگنے سے سودر کے برابر ہوتا ہے۔

येनयेनतुभावेनयद्यद्दानंप्रयच्छति॥ तत्तत्तेनैवभावेनप्राप्नोतिप्रतिपूजितः॥२३४॥ योऽर्चितंप्रतिगृह्णातिददात्यर्चितमेवच॥ तावुभौगच्छतःस्वर्गंनरकन्तुविपर्यये॥२३५॥नविस्मयेततपसावदेदिष्ट्वाचनानृतम्॥नार्त्तोऽप्यपवदेद्विप्रान्नदत्वापरिकीर्त्तयेत्॥२३६॥यज्ञोऽनृतेनक्षरतितपःक्षरतिविस्मयात्॥ आयुर्विप्रापवादेनदानंचपरिकीर्त्तनात्॥२३७॥ धर्मंशनैःसंचिनुयाद्वल्मीकमिवपुत्तिकाः॥परलोकसहायार्थंसर्व्वभूतान्यपीडयन्॥२३८॥नामुत्रहिसहायार्थंपितामाताचतिष्ठतः॥ नपुत्रदारानज्ञातिर्धर्म्मस्तिष्ठतिकेवलः॥ २३९॥

۲۳۴ - جو دان جسطرح دیا جاتا ہے وہ اُسی طرح دوسرے جنم مین ملتا ہے -

۲۳۵ - جو شخص اچھی چیز دیتا ہے اور جو اُسکو لیتا ہے وہ دونون سورگ مین جاتے ہین -

۲۳۶ - تپ کرکے غرور نکرے - یگیہ کرکے جھوٹھ نہ بولے رنجیدہ ہوکر برہمن کو جا بیجا نہ کہے دان دیکر نہ کہے -

۲۳۷ - جھوٹھ بولنا - غرور کرنا - برہمن کی توہین یا بیقدری کرنا - دان دیکر کہنا ان سبھون سے حسب سلسلہ یگیہ - تپ - عمر - دان کا ناش ہو جاتا ہے -

۲۳۸ - اس طریق سے کہ جس سے کسی جاندار کو تکلیف نہونے پاوے پرلوک کی امداد کے واسطے دھرم کو جمع کرئیے جیسے چینٹی غلہ کو جمع کرتی ہے -

۲۳۹ - مان - باپ - عورت - ہمقوم - بیٹا - یہ سب پرلوک مین امداد نہین کر سکتے صرف دھرم ہی کام آتا ہے -

यत्किंचिदपिदातव्यंयाचितेनानसूयया॥उत्पत्स्यतेहित-
त्पात्रंयत्तारयतिसर्वतः॥२२८॥वारिदस्तृप्तिमाप्नोतिसुखम-
क्षय्यमन्नदः॥तिलप्रदःप्रजामिष्टांदीपदश्चक्षुरुत्तमम्॥२२९
॥भूमिदोभूमिमाप्नोतिदीर्घमायुर्हिरण्यदः॥गृहदोऽग्र्याणि
वेश्मानिरूप्यदोरूपमुत्तमम्॥२३०॥वासोदश्चन्द्रसालोक्य
मश्विसालोक्यमश्वदः॥अनडुहःश्रियंपुष्टांगोदोब्रध्नस्य
विष्टपम्॥२३१॥यानशय्याप्रदोभार्यामैश्वर्यमभयप्रदः॥
धान्यदःशाश्वतंसौख्यंब्रह्मदोब्रह्मसार्ष्टिताम्॥२३२॥स-
र्वेषामेवदानानांब्रह्मदानंविशिष्यते॥वार्यन्नगोमहीवास
स्तिलकांचनसर्पिषाम्॥२३३॥

۲۲۸ - گن مین دوش نہ لگا کر مانگنے والون کو اپنی شکت کے موافق آن دیا کرے کیونکہ ہر روز جب ان دیا کرے گا تو ایک ایک دن کسی طرف سے ایسا شخص آ جائیگا جو سب طرح سے نہال کر دیگا -

۲۲۹ - جل - ان - تل - دیپ - انکھون کا دینے والا حسب سلسلہ آسودگی عیش لازوال اچھی اولاد - اچھی انکھون کو پاتا ہے -

۲۳۰ - زمین - سونا - گھر روپا انکھون کا دینے والا حسب سلسلہ زمین بڑی عمر اچھا گھر اچھی صورت کو پاتا ہے -

۲۳۱ - کپڑا - گھوڑا - بیل - گئو - دینے والا حسب سلسلہ چندر لوک اسونی کا لوک دولت لازوال سورج لوک کو پاتا -

۲۳۲ - سواری - چارپائی - بچھونے - وید انکھون کا دینے والا حسب سلسلہ استری دولت عیش لازوال - برہم لوک کے برابر درجہ پاتا ہے -

۲۳۳ - ان - جل گئو - زمین - کپڑا - تل - سونا - گھی ان سب دانون مین وید کا دان بڑا ہے -

भुक्त्वातोऽन्यतमस्यान्नममत्याक्षपणंत्र्यहम्॥मत्याभुक्त्वाचरेत्कृच्छ्रंरेतोविण्मूत्रमेवच॥२२२॥नाद्याच्छूद्रस्यपक्वान्नंविद्वानश्राद्धिनोद्विजः॥आददीताममेवास्मादवृत्तावेकरात्रिकम्॥२२३॥श्रोत्रियस्यकदर्यस्यवदान्यस्यचवार्धुषेः॥मीमांसित्वोभयंदेवाःसममन्नमकल्पयन्॥२२४॥तान्प्रजापतिराहैत्यमाकृध्वंविषमंसमम्॥श्रद्धापूतंवदान्यस्यहतमश्रद्धयेतरत्॥२२५॥श्रद्धयेष्टंचपूर्तंचनित्यंकुर्यादतन्द्रितः॥श्रद्धाकृतेह्यक्षयेतेभवतःस्वागतैर्धनैः॥२२६॥दानधर्मंनिषेवेतनित्यमैष्टिकपौर्तिकम्॥परितुष्टेनभावेनपात्रमासाद्यशक्तितः॥२२७॥

۲۲۲ - انھوں میں سے کسی کے اَنّ کو اگر بغیر جانے ہوئے بھوجن کرے تو تین دن اپاس کرے اور اگر جان کر بھوجن کرے تو کرچھ برت جو آگے کہیں گے اسکو کرے اور بِشٹا اور موتر کے بھوجن میں بھی علیحدہ علیحدہ وہی بھوجن کرے۔

۲۲۳ - پنڈت جو براہمن ہو وہ شودر کا پکوان بھوجن نہ کرے اگر گھر میں اَن نہو تو ایک رات کے بھوجن کے موافق کچا اَن لے لینا کچھ مضائقہ نہیں۔

۲۲۴ - بخیل وید پڑھنے والا اور فیاض بیاج سے اوقات بسر کرنیوالا ان دونوں کے اَنّ کو دیوتاؤں نے برابر کہا ہے۔

۲۲۵ - اُن دیوتاؤں کے پاس برہما جی نے آکر کہا کہ انکے اَنّ کو برابر نکرو شخص فیاض کا اَن بوجہ عقیدت کے پاک ہے اور بخیل کا اَنّ بوجہ بے عقیدتی ناپاک ہے۔

۲۲۶ - کاہلی چھوڑ کر ہمت کے ساتھ ہمیشہ یگیہ - اور تعمیر چاہ و تالاب و باولی کو کرے نیک کمائی کا روپیہ لگا کر ہمت کے ساتھ یہ دونوں کام کرے تو لازوال ہو۔

۲۲۷ - اچھے براہمنوں کو پا کر حسب مقدور سیر چشمی کے ساتھ ہمیشہ یگیہ اور کنواں وغیرہ کا دان کرے

ध्वजवतांशौण्डिकानांचचैलनिर्णेजकस्यच।।रंजकस्यनृशं
सस्ययस्यचोपपतिर्गृहे।।२१६।।मृष्यंतियेचोपपतिंस्त्रीजि
तानांचसर्वशः।।अनिर्दशंचप्रेतान्नमतुष्टिकरमेवच।।२१७
।।राजान्नंतेजआदत्तेशूद्रान्नंब्रह्मवर्चसम्।।आयुःसुवर्णका
रान्नंयशश्चर्मावकर्तिनः।।२१८।।कारुकान्नंप्रजांहन्तिबलं
निर्णेजकस्यच।।गणान्नंगणिकान्नंचलोकेभ्यःपरिकृन्तति
।।२१९।।पूयंचिकित्सकस्यान्नंपुंश्चल्यास्त्वन्नमिन्द्रियम्।।वि
ष्ठावार्धुषिकस्यान्नंशस्त्रविक्रयिणोमलम्।।२२०।।यएतेऽ
न्येत्वभोज्यान्नाःक्रमशःपरिकीर्तिताः।।तेषांत्वगस्थिरोमा
णिवदन्त्यन्नंमनीषिणः।।२२१।।

۲۱۶- کتّہ سے اوقات بسر کرنیوالا کلوار- دھوبی- رنگریز- کھاتک- جسکے گھر میں دوسرا شوہر ہو-

۲۱۷- جو دوسرا شوہر ہونے سے راضی رہتے ہوں جو عورت سے مغلوب ہوں جسکے عورت کا دسوان نہوا ہو انھوں کا اَن اور جو اَن آسودگی نہیں بخشتا یہ سب اَن ہوجن نکرنا-

۲۱۸- راجا- شودر- چمار- سنار- اِن لوگوں کا اَن حسب ترتیب سلسلہ تیج برہم تیج عمر نیکنامی کو ناش کرتا ہے-

۲۱۹- دال بنانیوالا- دھوبی- اِن دونوں کا اَن حسب سلسلہ اولاد و طاقت کو کھوتا ہے اور جماعت اور بیسیا کا اَن اُس سورگ لوک کو کھوتا ہے جو اور کرموں سے ملنے والا ہو-

۲۲۰- علاج کرنیوالا- زناکار- بیاج سے اوقات بسر کرنیوالا- ہتھیار بیچنے والا انھوں کا اَن حسب سلسلہ پیپ- بیج- لِشّا- کھکھار کے برابر ہے-

۲۲۱- جتنے اَن کھانیکے لائق نہیں ہیں وہ سب حسب مفصلہ بال کھال اور ہڈی اور بال کے برابر ہیں یہ پنڈتوں نے کہا ہے یعنی بال وغیرہ کھانے میں جو تکلیف ہے وہی تکلیف ہوگی اُن کو جن کر نیکی ہے

अभिशस्तस्य षंढस्य पुंश्चल्या दाम्भिकस्य च ॥ शुक्तं पर्युषितं चैव शूद्रस्योच्छिष्टमेव च ॥२११॥ चिकित्सकस्य मृगयोः क्रूरस्यो-च्छिष्टभोजिनः ॥ उग्रान्नं सूतिकान्नं च पर्याचान्तमनिर्दशम् ॥ अनर्चितं वृथामांसमवीरायाश्च योषितः ॥ द्विषदन्नं नगर्यन्नं पतितान्नमवक्षुतम् ॥२१३॥ पिशुनानृतिनोश्चान्नं क्रतुवि-क्रयिणस्तथा ॥ शैलूषतुन्नवायान्नं कृतघ्नस्यान्नमेव च २१४ ॥ कर्मारस्य निषादस्य रंगावतारकस्य च ॥ सुवर्णकर्तुर्वेणस्य शस्त्रविक्रयिणस्तथा ॥२१५॥

۲۱۱- عیب دار- نامرد- زناکار یا گھمنڈی اِن لوگون کا اَن نشکت† باسی شودر کا جھوٹھا-

۲۱۲- علاج کرنیوالا- آفت والا- کھوٹا- جوٹھا بھوجن کرنے والا- بدکام کرنے والا اُن سبھون کا اَن اور وہ اَن جو زچہ خانے کے واسطے بنایا گیا ہو اور ایک صف مین کچھ آدمی کھانا کھاتے ہون اور کوئی آدمی توہین کی غرض سے سب سے پہلے بھوجن کی سماپت کی آچمن کرے اُس وقت کا اَن اور سوتک والے کا اَن-

۲۱۳- اور وہ اَن جو شخص واجب التعظیم کو بیقدری کے ساتھ دیا گیا ہو اور وہ مانس جو دیوتا وغیرہ کے لئے نہین بنایا گیا ہو اور پت اور پتر نہ رکھنے والی استری اور دشمن اور شہر سے نکالا ہوا اِن لوگون کا اَن اور وہ اَن جسپر چھینک پڑی ہو-

۲۱۴- چغل خور- یگیہ کر کے پھر اُسکو بیچنے والا نٹ*- درزی- احسان نہ ماننے والا-

۲۱۵- لوہار- نکھاد- نٹ سواے گانیوالے کے اِن دونون کے پیشے سے اوقات بسر کرنیوالا- سنار- بسکھور- ہتھیار بیچنے والا-

† یعنے وہ اَن جو بغیر ملانے کسی چیز کے محض بسبب گذرنے ایام کے کھٹا ہو گیا ہو-

* جسکا ذکر دسوین ادھیاے مین ہے-

नाश्रोत्रियतते यज्ञे ग्रामयाजिकृते तथा ॥ स्त्रिया क्लीबेन च हुते भुंजीत ब्राह्मणः क्वचित् ॥ २०५ ॥ अश्लीकमेतत्साधूनां यत्र जुह्वत्यमी हविः ॥ प्रतीपमेतद्देवानां तस्मात्तत्परिवर्जयेत् ॥ २०६ ॥ मत्तक्रुद्धातुराणां च न भुंजीत कदाचन ॥ केशकीटावपन्नं च पदा स्पृष्टं च कामतः ॥ २०७ ॥ भ्रूणघ्नावेक्षितं चैव संस्पृष्टं चाप्युदक्यया ॥ पतत्रिणावलीढं च शुना संस्पृष्टमेव च ॥ २०८ ॥ गवा चान्नमुपघ्रातं घुष्टान्नं च विशेषतः ॥ गणान्नं गणिकान्नं च विदुषां च जुगुप्सितम् ॥ २०९ ॥ स्तेनगायनयोश्चान्नं तक्ष्णो वार्द्धुषिकस्य च ॥ दीक्षितस्य कदर्यस्य बद्धस्य निगडस्य च ॥ २१० ॥

۲۰۵- مورکھ- گرام کی یگیہ کرانے والا استری نپنسک ان سب کی یگیہ مین براہمن کبھی نہ بھوجن کرے-

۲۰۶- ان سب کی یگیہ کرنا بھلے لوگون کو لکشمی رہت ہے اور دیوتاؤن کو اچھا نہین ہے اسلیئے اس کرم کو نہ کرے-

۲۰۷- بدمست غصہ ور آتر دکھیون کے ان کو اور جس ان مین بال یا کیڑا ہو اور جو ان قصدًا پانون سے چھوا گیا ہو ان سب کو بھوجن نکرے-

۲۰۸- حمل گرانے والے کا دیکھا ہوا حیض والی عورت کا چھوا ہوا چڑیون کی چونچ کا کا چھوڑا ہوا کتے کا چھوا ہوا-

۲۰۹- گئو کا سونگھا ہوا یگیہ وغیرہ مین وہ ان جو باواز بلند یہ کہکر کون بھوجن کریگا دیا گیا ہو اور جماعت کا ان اور بیشیون کا ان ان سب اناجون کی پنڈت لوگ نندا کرتے ہین

۲۱۰- چور گانیوالا بڑھئی- بیاج سے جینے والا جسکی یگیہ ابھی سماپت نہین ہوئی بخیل قیدی پابجولان-

अलिंगीलिंगिवेषेणयोवृत्तिमुपजीवति॥ सलिंगिनांहरत्येनस्तिर्यग्योनौचजायते॥ २००॥ परकीयनिपानेषुनस्नायाच्चकदाचन॥ निपानकर्तुःस्नात्वातुदुष्कृतांशेनलिप्यते॥२०१॥ यानशय्यासनान्यस्यकूपोद्यानगृहाणिच॥ अदत्तान्युपभुंजानएनसःस्यात्तुरीयभाक्॥ २०२॥ नदीषुदेवखातेषुतडागेषुसरःसुच॥ स्नानंसमाचरेन्नित्यंगर्तप्रस्रवणेषुच॥२०३॥ यमान्सेवेतसततंननित्यंनियमान्बुधः॥ यमान्पतत्यकुर्वाणोनियमान्केवलान्भजन्॥ २०४॥

۲۰۰- برہم چاری نہیں ہے اور برہم چاری کے بھیس سے رہتا ہے سو برہم چاری کے پاپ کو پاتا ہے اور کیڑے مکوڑے کا جنم پاتا ہے اسی طرح سب آشرم والوں کو جاننا-

۲۰۱- دوسرے کا کھدایا ہوا کنواں یا تالاب وغیرہ جسکا اُتسرگ نہ ہوا ہو اسمیں اسنان نکرے اس میں اسنان کرنے سے کھدانے والے کے پاپ کو پاتا ہے

۲۰۲- سواری - چارپائی - کنواں - باغ - مکان - یہ سب جسکے ہوں اسکی اجازت بغیر جو شخص استعمال کرتا ہے وہ جسکے یہ سب ہوں اُس کے پاپ کے چوتھائی حصّہ کو پاتا ہے-

۲۰۳- ندی - دیوتاؤں کا کھدایا ہوا تالاب اور سَر اور جھرنا اور گڑھا ان سب میں روز اسنان کرے-

۲۰۴- یم اور نیم جسکا بیان آگے آویگا ان میں یم کو ہر روز اختیار کرے اور نیم کو نہیں یم کو چھوڑکر صرف نیم کو اختیار کرنے سے پتت ہو جاتا ہے-

* سَر اسکو کہتے ہیں جو ۲۰۰۰ ہاتھ لمبا چوڑا ہو-

۲۰۱- اسمیں یہ شک ہو سکتا ہے کہ دوسرے کا کھدایا ہوا کنواں تالاب وغیرہ میں اسنان کرنا منع ہے تو جواب یہ ہے کہ اپنا کھدایا ہوا اور وہ جو سب کیواسطے چھوڑ دیا گیا ہو تو کچھ مضائقہ نہیں-

धर्मध्वजी सदा लुब्धश्छाद्मिको लोकदम्भकः ॥ वैडालव्रतिको ज्ञेयो हिंस्रः सर्वाभिसन्धकः ॥ १९५ ॥ अधोदृष्टिर्नैष्कृतिकः स्वार्थसाधनतत्परः ॥ शठो मिथ्याविनीतश्च बकव्रतचरो द्विजः ॥ १९६ ॥ ये बकव्रतिनो विप्रा ये च मार्जारलिंगिनः ॥ ते पतन्त्यन्धतामिस्रे तेन पापेन कर्म्मणा ॥ १९७ ॥ न धर्म्मस्यापदेशेन पापं कृत्वा व्रतं चरेत् ॥ व्रतेन पापं प्रच्छाद्य कुर्वन्स्त्रीशूद्रदम्भनम् ॥ १९८ ॥ प्रेत्येह चेदृशा विप्रा गर्ह्यन्ते ब्रह्मवादिभिः ॥ छद्मना चरितं यच्च व्रतं रक्षांसि गच्छति ॥ १९९ ॥

۱۹۵- دھرم دھوجی لوبھی بہانہ سے چلنے والا ٹھگنے والا- مارنیوالا سب کی نندا کرنیوالا ایسا آدمی بیڈال برتک کہلاتا ہے-

۱۹۶- نیچ ہی دیکھنے والا نٹھر نردئی اپنے مطلب مین ستفد ٹیڑھ معافی سے رہنے والا جھوٹی ملائمت کرنیوالا ایسا آدمی بک برتک کہلاتا ہے-

۱۹۷- بک برتک اور بیڈال برتک یہ دونون اپنے پاپ سے اندھتا مستر نام نرک مین جاتے ہین-

۱۹۸- پاپ کرکے دھرم کے بہانہ سے برت کو نکرے یعنی پاپ تو کرتا ہے اور استری اور شودر کو دمنبھ دکھلاتا ہے کہ مین دھرم کرتا ہون-

۱۹۹- وید پڑھنے والے پرش لوک اور پرلوک مین ایسے براہمنون کو برا کہتے ہین کپٹ کا برت راکششون کے پاس جاتا ہے-

* دھرم دھوجی اسکو کہتے ہین جو بہت آدمیون کو دکھلاکر دھرم کرتا ہو-

* بلی کی طرح ہے برت جسکی-

* بگلا کی طرح ہے برت جسکی-

हिरण्यमायुरन्नंचभूर्गौश्चाप्योषतस्तनुम्॥ अश्वश्चक्षुस्त्वचंवासोघृतंतेजस्तिलाःप्रजाः॥१८९॥ अतपास्त्वनधीयानःप्रतिग्रहरुचिर्द्विजः॥ अम्भस्यश्मप्लवेनेवसहतेनैवमज्जति॥१९०॥ तस्मादविद्वान्बिभियाद्यस्मात्तस्मात्प्रतिग्रहात्॥ स्वल्पकेनाप्यविद्वान्हिपंकेगौरिवसीदति॥१९१॥ नवार्यपिप्रयच्छेत्तुवैडालव्रतिकेद्विजे॥ नबकव्रतिकेविप्रेनावेदविदिधर्मवित्॥१९२॥ त्रिष्वप्येतेषुदत्तंहिविधिनाप्यर्जितंधनं॥ दातुर्भवत्यनार्थायपरत्रादातुरेवच॥१९३॥ यथाप्लवेनौपलेननिमज्जत्युदकेतरन्॥ तथानिमज्जतोऽधस्तादज्ञौदातृप्रतीच्छकौ॥१९४॥

۱۸۹ - سونا اور ان کا دان لینے سے مورکھ براہمن کی عمر کم ہو جاتی ہے اسیطرح گیو اور زمین جسم کو گھوڑا آنکھون کو کپڑا چمڑے کو گھی تیج کو تل پترون کو نقصان پہونچاتا ہے۔

۱۹۰ - جو براہمن تپ اور وید ابھیاس نہین کرتا ہے اور دان لیا کرتا ہے وہ مع اس دان دینے والے کے ڈوب جاتا ہے جیسے پانی مین پتھر کی ناؤ۔

۱۹۱ - اسلیئے مورکھ براہمن تھوڑا دان لینے سے بھی ڈرتا ہے ورنہ جسطرح کیچڑ مین گیو پھنس کر تکلیف اٹھاتی ہے اسیطرح وہ بھی تکلیف اٹھاتا ہے۔

۱۹۲ - بیڈال برتک (بلی ۱۲) بک برتک (بگلا ۱۲) مورکھ ان تینون براہمنون کو دھرم جاننے والا آدمی پانی تک نہ دیوے۔

۱۹۳ - بدھی پوروک پیدا کئے ہوئے دھن کو ان تینون کو دینے سے پرلوک مین کچھ فائدہ نہین۔

۱۹۴ - جسطرح پتھر کی ناو پر چڑھکر آدمی پانی مین ڈوب جاتا ہے اسیطرح مورکھ براہمن کو دان دینے والا اور لینے والا دونون نرک مین ڈوبتے ہین۔

* اسکی تعریف اشلوک ۱۹۵ و ۱۹۶ مین لکھی ہے۔

यामयोऽप्सरसांलोकेवैश्वदेवस्यबान्धवाः॥ सम्बन्धिनोह्यपां लोकेपृथिव्यांमातृमातुलौ॥१८३॥ आकाशेशास्तुविज्ञेया बालवृद्धकृशातुराः॥ भ्राताज्येष्ठःसमःपित्राभार्यापुत्रःस्व-कातनुः॥१८४॥ छायास्वोदासवर्गश्चदुहिताकृपणंपरम्॥ तस्मादेतैरधिक्षिप्तःसहेतासंज्वरःसदा॥१८५॥ प्रतिग्रहसम-र्थोऽपिप्रसंगंतत्रवर्जयेत्॥ प्रतिग्रहेणह्यस्याशुब्राह्मंतेजःप्र-शाम्यति॥१८६॥ नद्रव्याणामविज्ञायविधिंधर्म्यंप्रतिग्रहे॥ प्राज्ञःप्रतिग्रहंकुर्यादवसीदन्नपिक्षुधा॥१८७॥ हिरण्यंभूमि मश्वंगामन्नंवासस्तिलान्घृतम्॥ प्रतिगृह्णन्नविद्वांस्तुभस्मी भवतिदारुवत्॥१८८॥

۱۸۳- بہن اور پتوہ وغیرہ اپسراؤن کے لوک کے مالک ہیں اور نانا ماما وغیرہ سمبندھی اپ لوک کے سوامی ہیں اور ماتا اور ماما پرتھوی لوک کے سوامی ہیں۔

۱۸۴- بال بردھ کرش آتر اکاش لوک کے سوامی ہیں بڑا بھائی باپ کے برابر ہے بھائی کا بیٹا اپنا شریر ہے۔

۱۸۵- داس لوگ اپنی چھایا ہے اور لڑکی غریب ہے اسلیئے ان سب کی باتوں کی برداشت کرکے دلمیں رنج نہ لاوے۔

۱۸۶- دان لینے کی سامرتھ رکھتا ہو تو بھی نہ لیوے کیونکہ دان لینے سے برہم تیج جاتا رہتا ہے۔

۱۸۷- اگر مصیبت میں بھوکھ کے مارے بے چین ہو تو بھی دان کو اس حالمین نہ لیوے بلا اس دان لینے کے پردھان لینے دیوتا اور منتر کو سمجھتا ہو۔

۱۸۸- سونا- زمین- گھوڑا- گئو- ان بستر تل گھی ان میں سے کسی ایک چیز کے لینے سے مورکھ براہمن لکڑی کی طرح جلکر راکھ ہو جاتا ہے۔

नपाणिपादचपलोननेत्रचपलोऽनृजुः॥ नस्याद्वाक्चपलश्चैवनपरद्रोहकर्मधीः॥१७७॥ येनास्यपितरोयातायेनयाताः पितामहाः॥तेनयायात्सतांमार्गंतेनगच्छन्नरिष्यते॥१७८॥ ऋत्विक्पुरोहिताचार्यैर्मातुलातिथिसंश्रितैः॥बालवृद्धातुरैर्वैद्यैर्ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः॥१७९॥मातापितृभ्यांजामीभिर्भ्रात्रापुत्रेणभार्यया॥ दुहित्रादासवर्गेणविवादन्नसमाचरेत॥१८०॥एतैर्विवादान्संत्यज्यसर्वपापैःप्रमुच्यते॥एभिर्जितैश्चजयतिसर्वांल्लोकानिमान्गृही॥१८१॥ आचार्योब्रह्मलोकेशःप्राजापत्येपिताप्रभुः॥ अतिथिस्त्विन्द्रलोकेशोदेवलोकस्यचर्त्विजः॥१८२॥

۱۷۷- ہاتھہ پاؤن آنکھہ زبان سے شوخی نکرے ٹیڑھا نرہے کسی کی برائی مین نرہے-

۱۷۸- بہت پرکار کا شاستر ارتھہ سمجھو سنتے پتر پتامہ آدکرکے سنگ ہیت جو شاستر ارتھہ سے اُسی کا انشٹھان کرے اُس کرکے ادھرم سے مارا نہین جاتا-

۱۷۹- رتوک- پروہت- اچارج- ماما اتتھہ- آشرت- بال- برد ھہ- اتر- بیدجا*- سمبندھی- باندھو+

۱۸۰- جام- مانا- پتا- بھائی- پتر- استری- بیٹی- داس لوگ اِھنون کے ساتھہ لڑائی نکرے-

۱۸۱- اِھنون سے لڑائی نکرنے سے سب پاپون سے چھوٹ جاتاہے اِن سبھون سے ہارنے سے گرہستھہ آدمی سب لوک جیتتا ہے-

۱۸۲- آچارج برہم لوک کا سوامی ہے اور پتا پرجاپت لوک کا اتتھہ اندرلوک کا اور رتز لوک دیولوک کا سوامی ہے-

* پتا پکش والے
+ سارے سنبندھی-
+ استری پکش والے-
لا بہن اور بیٹو وغیرہ-

नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव॥ शनैरावर्त्तमानस्तु कर्त्तुर्मूलानि कृन्तति॥१७२॥ यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत्पुत्रेषु नप्तृषु॥ न त्वेव तु कृतोऽधर्मः कर्त्तुर्भवति निष्फलः॥१७३॥ अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति॥ ततः सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति॥१७४॥ सत्यधर्मार्यवृत्तेषु शौचे चैवारमेत्सदा॥ शिष्यांश्च शिष्याद्धर्मेण वाग्बाहूदरसंयतः॥१७५॥ परित्यजेदर्थकामौ यौ स्यातां धर्मवर्जितौ॥ धर्मं चाप्यसुखोदर्कं लोकविक्रुष्टमेव च॥१७६॥

۱۷۲- ادھرم جلدی نہین پھل دیتا جیسے زمین بیج بونے سے جلدی پھل نہین دیتی کچھ دنون بعد پھل دیتی ہے —

۱۷۳- ادھرم کا پھل ادھرم کرنے والے کو نہین ملتا تو اُسکے بیٹے کو ملتا ہے. اگر بیٹے کو نہ ہوا تو اسکے پوتے کو ملتا ہے اگر پوتے کو بھی نہ ملا تو ناتی کو ملتا ہے حاصل یہ کہ ادھرم بے پھلے نہین رہتا —

۱۷۴- ادھرم کرنیوالا پہلے ادھرم کرنے سے بڑھتا ہے پھر کلیّان پاتا ہے پھر دشمن کو جیتتا ہے آخر کو جڑ بنیاد سے مٹ جاتا ہے —

۱۷۵- بھلے لوگون کا آچار ست دھرم پوترتا ہے ان سب مین ہمیشہ مصروف رہے استھری - پوتر - داس - چیلہ - ان سب کو راہ راستی بتاوے بانی ہاتھ اُدر کا سنجم کرے —

۱۷۶- ادھرم سے برجت جو ارتھ کام ہے اوسکا تیاگ کرنا دھرم ہے مگر لوک ریت کے خلاف ہے اور جو زمانہ آیندہ مین دکھ دینے والا نہین ہے اسکو بھی تیاگ کرنا چاہیے —

× بانی کا سنجم یہ ہے کہ سچ بولے - ہاتھ کا سنجم یہ ہے کہ ہاتھ سے کسی کو کلیش نہ ہونے پاسے - اودر کا سنجم یہ ہے کہ تھوڑا بہت جو کچھ ملی اسی کو کھا کر گذرے

अयुध्यमानस्योत्पाद्यब्राह्मणस्यासृगंगतः॥दुःखंसुमहदा
प्नोतिप्रेत्याप्राज्ञतयानरः॥१६७॥शोणितंयावतःपांसून्संगृ-
ह्णातिमहीतलात्॥तावतोऽब्दानमुत्रान्यैःशोणितोत्पादको
ऽद्यते॥१६८॥नकदाचिद्द्विजेतस्माद्विद्वानवगुरेदपि॥नताडये
त्तृणेनापिनगात्रात्स्रावयेदसृक्॥१६९॥अधार्मिकोनरोयो
हियस्यचाप्यनृतंधनम्॥हिंसारतश्चयोनित्यंनेहासौसुखमे
धते॥१७०॥नसीदन्नपिधर्मेणमनोधर्मेनिवेशयेत्॥अधा-
र्मिकाणांपापानामाशुपश्यन्विपर्ययम्॥१७१॥

۱۶۷۔ جو برہمن لڑائی نہین کرتا ہے۔ اُسکے بدن سے خون نکالنے والا اپنی بےعقلی سے پرلوک مین بڑا دُکھ پاتا ہے۔

۱۶۸۔ جو براہمن لڑائی نہین کرتا اُسکے بدن سے ہتھیار سے خون نکالنے والا پرلوک مین بہا دکھ پاتا ہے ہتھیار وغیرہ سے براہمن کے بدن سے جو خون نکل کر زمین پر گرتا ہے اُس خون مین جتنے ذرے زمین کے آلودہ ہو جاتے ہین اتنے برس تک پرلوک مین وہ خون نکالنے والا کتّا وسیار وغیرہ سے بھوجن کیا جاتا ہے۔

۱۶۹۔ اسلیئے عقلمند آدمی کبھی براہمن کو مارنے کے واسطے ہتھیار نہ اٹھاوے بلکہ تنکے سے بھی نہ مارے۔ اور نہ جسم سے خون نکالے۔

۱۷۰۔ جو ادھرمی یا ناپاک دولت والے یا ہر روز جان مارنے والے ہین وہ اس لوک مین سُکھ نہین پاتے۔

۱۷۱۔ ادھرمی اور پاپیون کے دھن وغیرہ کو جلد ناش ہوتے ہوتے دیکھکر اور دھرم مین تکلیف پانے پر بھی ادھرم مین مصروف نہوتے۔

यत्कर्म कुर्वतोऽस्य स्यात्परितोषोऽन्तरात्मनः॥ तत्प्रयत्नेन कुर्वीत विपरीतं तु वर्जयेत्॥ १६१॥ आचार्यं च प्रवक्तारं पितरं मातरं गुरुम्॥ न हिंस्याद्ब्राह्मणान्गाश्च सर्वांश्चैव तपस्विनः॥ १६२॥ नास्तिक्यं वेदनिन्दां च देवतानां च कुत्सनम्॥ द्वेषं दम्भं च मानं च क्रोधं तैक्ष्ण्यं च वर्जयेत्॥ १६३॥ परस्य दण्डं नोद्यच्छेत्क्रुद्धो नैव निपातयेत्॥ अन्यत्र पुत्राच्छिष्याद्वा शिष्ट्यर्थं ताडयेत्तु तौ॥ १६४॥ ब्राह्मणायावगुर्यैव द्विजातिर्वधकाम्यया॥ शतं वर्षाणि तामिस्रे नरके परिवर्त्तते॥ १६५॥ ताडयित्वा तृणेनापि संरम्भान्मतिपूर्वकम्॥ एकविंशतिमाजातीः पापयोनिषु जायते॥ १६६॥

۱۶۱ - جس کرم کے کرنے سے اپنے دل کو اطمینان ہو اسکو کرے اور اگر بالعکس ہو تو نکرے

۱۶۲ - آچاریج وید کا رتھہ پڑھانیوالا باپ ماں گرو براہمن - گئو - تپسوی - انمیں سے کسی کو نہ مارے -

۱۶۳ - ناستک پن - وید اور دیوتا کی برائی کرنا دشمنی - پاکھنڈ - غرور - غصّہ - تند مزاجی ان سب کو نہ کرے -

۱۶۴ غصہ سے کسیکے مارنے کو ڈنڈا نہ پھینکے اور کسیکو ضرب جسمانی پہنچاوے مگر بیٹا اور چیلہ کو تعلیم کیواسطے جسم پر ضرب دینا نا موزون نہیں ہے -

۱۶۵ - براہمن کشتری ویشیہ اگر براہمن کو مار ڈالنے کی نیت سے ہتھیار اٹھاوین اور مارین نہیں تو بھی تامسیر نام نرک میں سو برس تک رہتے ہیں -

۱۶۶ اگر غصہ کرکے قصداً ایک تنکے سے بھی مارے تو اکیس جنم تک پاپیو یون میں (یعنی کتہ وگدھا وغیرہ کے جسم میں) پیدا ہوتا ہے -

× یعنی یگیو پویت کرانیوالا -

श्रुतिस्मृत्युदितंसम्यंनिबद्धंस्वेषुकर्मसु ॥ धर्ममूलंनिषेवेतस-
दाचारमतन्द्रितः॥ १५५॥ आचाराल्लभतेह्यायुराचारादीप्सि-
ताःप्रजाः॥ आचाराद्धनमक्षय्यमाचारोहन्त्यलक्षणम्॥१५६
॥ दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवतिनिन्दितः॥ दुःखभागीचस
ततंव्याधितोऽल्पायुरेवच॥ १५७॥ सर्वलक्षणहीनोऽपि
यःसदाचारवान्नरः॥ श्रद्दधानोऽनसूयश्चशतंवर्षाणिजी-
वती॥ १५८ ॥यद्यत्परवशंकर्मतत्तद्यत्नेनवर्जयेत॥ यद्यदा-
त्मवशंतुस्यात्तत्तत्सेवेतयत्नतः॥ सर्वंपरवशंदुःखंसर्वमा-
त्मवशंसुखम्॥ एतद्विद्यात्समासेनलक्षणंसुखदुःखयोः
॥ १६०॥

۱۵۵- وید اور شاستر کے موافق جو اچھے لوگوں کا آچار ہے وہ عین دھرم ہے کاہلی چھوڑ کر اُسی آچار پر ہمیشہ چلے۔

۱۵۶- عمر و اچھی اولاد و لازوال دولت یہ سب آچار سے ملتے ہیں اور جو عیوب نتیجہ بد دینے والے جسم میں ہوں اُنکو آچار دور کر دیتا ہے۔

۱۵۷- دُراچاری آدمی دنیا میں بدنام ہوتا ہے اور ہمیشہ رنج و مصیبت میں رہکر تھوڑے دن جیتا ہے۔

۱۵۸- جسمیں کوئی لکشن نہیں ہے اور کسی کی برائی نہیں کرتا اور شردھا اور اچھے لوگوں کی طرح آچار رکھتا ہے وہ سو برس تک جیتا ہے۔

۱۵۹- جو کرم دوسرے کے اختیار میں ہے اُسکو ترک کرے اور جو اپنے اختیار میں ہے اُسکا سیون کرے۔

۱۶۰- جو کرم پرائے بس میں ہے وہ دُکھ ہے اور جو کرم اپنے بس میں ہے وہ سُکھ ہے سُکھ دُکھ کا یہ لکشن ہے۔

पौर्विकीं संस्मरञ्जातिं ब्रह्मैवाभ्यसते पुनः ॥ ब्रह्माभ्यासेन चाजस्रमनन्तं सुखमश्नुते ॥१४९॥ सावित्रांछान्तिहोमांश्च कुर्यात्पर्वसु नित्यशः ॥ पितॄंश्चैवाष्टकास्वर्चेन्नित्यमन्वष्टकासु च ॥१५०॥ दूरादावसथान्मूत्रं दूरात्पादावसेचनम् ॥ उच्छिष्टान्ननिषेकं च दूरादेव समाचरेत् ॥१५१॥ मैत्रं प्रसाधनं स्नानं दन्तधावनमंजनम् ॥ पूर्वाह्ण एव कुर्वीत देवतानां च पूजनम् ॥१५२॥ दैवतान्यभिगच्छेत्तु धार्मिकांश्च द्विजोत्तमान् ॥ ईश्वरं चैव रक्षार्थं गुरूनेव च पर्वसु ॥१५३॥ अभिवादयेद्वृद्धांश्च दद्याच्चैवासनं स्वकम् ॥ कृतांजलिरुपासीत गच्छतः पृष्ठतोऽन्वियात् ॥१५४॥

۱۴۹- اگلی جنم کی ذات کو یاد کرتے ہوئے پھر وید ہی کا استعمال کرتا رہے وید کے استعمال سے ہمیشہ سکھ ملتا ہے۔

۱۵۰- پرب میں ہر روز گایتری دیوتا کا ہون اور ارشٹ تراس کے لئے سانت ہون کرے اشٹکا انوشٹکا میں پتروں کی ہر روز پوجا کرے۔

۱۵۱- اگنی کے گرہ سے دور دیش میں موتر۔ پاد پرچھالن۔ جوٹھا انّ۔ بیرج۔ ان سب کو تیاگ کرے۔

۱۵۲- بشٹا تیاگ (یعنی رفع براز) سنگار وغیرہ اسنان۔ داتون۔ انجن۔ دیوتا کا پوجن ان سب کاموں کو قبل دوپہر کرنا چاہیے۔

۱۵۳- رکشا کے واسطے دیوتا۔ دھارمک۔ براہمن۔ گرو۔ راجا۔ ان سب کا درشن پرب میں کرے۔

۱۵۴- اگر کوئی بڑا بوڑھا اپنے گھر میں آوے تو اسکو پرنام کرکے اپنا آسن بیٹھنے کیواسطے دے اور ہاتھ جوڑ کر سامنے کھڑا رہے جب چلنے لگے تو آپ بھی پیچھے ہوکر چلے۔

स्पृष्ट्वैतानशुचिर्नित्यमद्भिः प्राणानुपस्पृशेत्॥ गात्राणि चैव सर्वाणि नाभिं पाणितलेन तु॥ १४३॥ अनातुरः स्वानि खानि न स्पृशेदनिमित्ततः॥ रोमाणि च रहस्यानि सर्वाण्येव विवर्जयेत्॥ १४४॥ मंगलाचारयुक्तः स्यात्प्रयतात्मा जितेन्द्रियः॥ जपेच्च जुहुयाच्चैव नित्यमग्निमतन्द्रितः॥ १४५॥ मंगलाचारयुक्तानां नित्यं च प्रयतात्मनाम्॥ जपतां जुह्वतां चैव विनिपातो न विद्यते॥ १४६॥ वेदमेवाभ्यसेन्नित्यं यथाकालमतन्द्रितः॥ तं ह्यस्याहुः परं धर्ममुपधर्मोऽन्य उच्यते॥ १४७॥ वेदाभ्यासेन सततं शौचेन तपसैव च॥ अद्रोहेण च भूतानां जातिं स्मरति पौर्विकीम्॥ १४८॥

۱۴۳ - جنکو چھونا نہیں کہا ہے اگر انکو چھوے تو آچمن کرکے ہاتھ مین پانی رکھکر اُس پانی سے ناک کان وغیرہ سب اندریون کو اور سب بدن کو چھوے اور ناف کو ہتھیلی سے چھوے۔

۱۴۴ - آتر جو نہیں ہے وہ بغیر ضرورت اپنی اندریون کو نہ چھوے اور پوشیدہ مقامات کے بال (یعنی بغل و مقام پاخانہ و پیشاب وغیرہ کے بال) بھی نہ چھوے۔

۱۴۵ - خوش خرم و اندر و باہر سے پاک صاف رہکر نفس پر قادر ہو کر جپ ہون کرے کاہلی نکرے۔

۱۴۶ - جو شخص ان سب کرمون کو کرتا ہے اور شاستر کی ریت پر چلتا ہو اوسکا دیوتا و آدمی کچھ نقصان نہیں کر سکتے۔

۱۴۷ - آلس چھوڑکر اپنے وقت پر ہر روز وید کا استعمال کرے یہ پرم دھرم ہے اور سب اُپ دھرم ہے۔

۱۴۸ - ہر روز وید کا ابھیاس پوتر تا تپ جیوُن پر دیا کرنا یہ سب کرنے سے اگلی جنم کی ذات یاد آتی ہے۔

नात्मानमवमन्येत पूर्वाभिरसमृद्धिभिः ॥ आमृत्योः श्रियम-
न्विच्छेन्नैनां मन्येत दुर्लभाम् ॥२३७॥ सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न
ब्रूयात्सत्यमप्रियम् ॥ प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मः सनातनः
॥२३८॥ भद्रं भद्रमिति ब्रूयाद्भद्रमित्येव वा वदेत् ॥ शुष्कवैरं वि-
वादं च न कुर्यात्केनचित्सह ॥२३९॥ नातिकल्यं नातिसायं
नातिमध्यंदिने स्थिते ॥ नाज्ञातेन समं गच्छेन्नैको न वृषलैः स-
ह ॥२४०॥ हीनांगानतिरिक्तांगान्विद्याहीनान्वयोऽधिकान् ॥
रूपद्रव्यविहीनांश्च जातिहीनांश्च नाक्षिपेत् ॥२४१॥ न स्पृशे-
त्पाणिनोच्छिष्टो विप्रो गोब्राह्मणानलान् ॥ न चापि पश्येद-
शुचिः सुस्थो ज्योतिर्गणान्दिवा ॥२४२॥

۱۳۷ - افلاس ہونے پر بھی اپنی بےقدری نکرے مرتے دم تک دولت کی تمنّا رکھے
حصول دولت کو غیر ممکن نہ سمجھے -

۱۳۸ - بات سچی اور میٹھی کہے اور اگر سچی ہو اور میٹھی نہو تو نہ کہے اور اگر میٹھی ہو اور سچی نہو
تو بھی نہ کہے یہ روزمرّہ کا دھرم ہے -

۱۳۹ - بُری کو بھی اچھی کہنا چاہیئے خالی عداوت اور جھگڑا کسی سے نہ
کرے -

۱۴۰ - عین صبح اور عین شام اور عین دوپہر کے وقت اور اجنبی شخص اور شودر کے
ساتھ اور اکیلے کہیں نجاوے -

۱۴۱ - کوئی عضو نہ رکھنے والا - کوئی عضو زیادہ رکھنے والا - مورکھ - بوڑھا - بدصورت
نیچ ذات والا کم دولت والا انکی بدگوئی نکرے یعنی کانے کو کانا کہکر نہ پکارے -

۱۴۲ - براہمن جوٹھے منھ ہوکر اپنے ہاتھوں سے براہمن و گئو و اگن کو نہ چھوے اور جو اتنے
اپوتر ہیں ہے وہ چاند سورج و ستاروں کو نہ دیکھے -

मध्यंदिनेऽर्द्धरात्रे च श्राद्धं भुक्त्वा च सामिषम्॥ सन्ध्ययोरुभयो-
श्चैव न सेवेत चतुष्पथम्॥१३१॥ उद्वर्त्तनमपस्नानं विण्मूत्रे रक्त-
मेव च॥ श्लेष्मनिष्ठ्यूतवान्तानि नाधितिष्ठेत्तु कामतः॥१३२॥ वै-
रिणं नोपसेवेत सहायं चैव वैरिणः॥ अधार्मिकं तस्करं च पर-
स्यैव च योषितम्॥१३३॥ न हीदृशमनायुष्यं लोके किंचन वि-
द्यते॥ यादृशं पुरुषस्येह परदारोपसेवनम्॥१३४॥ क्षत्रियं चै-
व सर्पं च ब्राह्मणं च बहुश्रुतम्॥ नावमन्येत वै भूष्णुः कृशानपि
कदाचन॥१३५॥ एतत्त्रयं हि पुरुषं निर्दहेदवमानितम्॥ तस्मा-
देतत्त्रयं नित्यं नावमन्येत बुद्धिमान्॥१३६॥

۱۳۱ دن کو وقت دوپہر اور آدھی رات کو اور صبح و شام کیوقت اور شرادھ کا مانس بھوجن کرکے چوراہے مین نجاے۔

۱۳۲- ادبٹن کی لیچھی پر اسنان کرنے سے جو پانی زمین پر گرے اسپر اور غلیظ اور پیشاب ونطفہ و کھکھار و تھوک و قے ان سب پر قصداً نہ ٹھہرے۔

۱۳۳- دشمن اور دشمن کا دوست اور ادھرمی اور چور اور پرائی عورت ان سب کی صحبت مین نہ رہے۔

۱۳۴- پرائی عورت کی صحبت کے برابر دوسری کوئی چیز عمر کی گھٹانے والی مرد کیواسطے نہین ہے۔

۱۳۵- جو شخص سب چیزون مین ترقی پانے کی آرزو رکھتا ہو وہ کشتری اور سانپ اور بہت پڑھے ہوئے براہمن اگرچہ ضعیف ولاغر بھی ہون تو بھی اونکی بیقدری نکرے۔

۱۳۶- یہ تینون توہین پانے سے ناش کرتے ہین اسلئیے عقلمند آدمی ان تینون کی بیقدری نکرے۔

स तद्विदन्तो विद्वांसस्त्रयीनिष्कर्षमन्वहम्॥ क्रमतःपूर्वमभ्यस्यपश्चाद्वेदमधीयते॥१२५॥ पशुमण्डूकमार्जारश्वसर्पनकुलाखुभिः॥ अन्तरागमने विद्यादनध्यायमहर्निशम्॥१२६ द्वावेववर्जयेन्नित्यमनध्यायौप्रयत्नतः॥ स्वाध्यायभूमिंचाशुद्धामात्मानंचाशुचिंद्विजः॥१२७॥ अमावस्यामष्टमींचपौर्णमासींचतुर्दशीम्॥ ब्रह्मचारीभवेन्नित्यमप्यृतौस्नातकोद्वि-जः॥१२८॥ नस्नानमाचरेद्भुक्त्वानातुरोनमहानिशि॥ नवा-सोभिःसहाजस्रंनाविज्ञातेजलाशये॥१२९॥ देवतानांगुरोराज्ञःस्नातकाचार्य्ययोस्तथा॥ नाक्रामेत्कामतश्छायांबभ्रुणोदीक्षितस्यच॥१३०॥

۱۲۵ - اِسبات کے جاننے والے جو پُرش ہین وہ ہر روز تینون ویدون کا سار بھوت اونکار - بیاہرت - گایتری - ان تینون کو سلسلے سے پڑھکر پیچھے وید کو پڑھتے ہین -

۱۲۶ - چوپایہ - مینڈک - بلی - کتا - سانپ - نیولا - چوہا - اِنمین سے کوئی ایک اگر گرو اور چیلے کے بیچ سے نکل جاوے تو ایک رات اندھیاے کرنا -

۱۲۷ - پڑھنے کی زمین یا اپنا جسم ناپاک ہو تو بھی نہ پڑھے اِن دونون اندھیاین پڑھنا جتن سے تیاگ کرے

۱۲۸ - سناتک برہمن رتو کال ہین بھی اماوس اشٹمی اور پورنماشی چتردشی ان تتھون مین استری سے بھوگ نکرے

۱۲۹ - بھوجن کے بعد اور آتر ہو تو اسنان نکرے کپڑا پہنے ہوئے بھی بار بار اسنان نکرے آدھی رات کو اور جو جل کا استھان جانا ہوا نہین ہے اُسمین اسنان نکرے -

۱۳۰ دیوتا - گرو - راجا - سناتک - اچارج - کپل - برن - جو شخص یگیہ کرنے کو ہے اُنمین سے کسی کی چھایا جتن سے ٹکرانا ہے -

* یعنی گیروہ جٹھرہ سکوہ وغیرہ -

उपाकर्मणि चोत्सर्गे त्रिरात्रं क्षेपणं स्मृतम्॥ अष्टकासु त्वहोरा-त्रमृत्वन्तासु च रात्रिषु ॥ ११९॥ नाधीयीताश्वमारूढो न वृक्षं न च हस्तिनम्॥ न नावं न खरं नोष्ट्रं नेरिणस्थो न यानगः॥१२०॥ न विवादे न कलहे न सेनायां न संगरे॥ न भुक्तमात्रे नाजीर्णे न वमित्वा न सूतके॥ १२१॥ अतिथिं चाननुज्ञाप्य मारुते वाति वा भृशम्॥ रुधिरे च स्रुते गात्राच्छस्त्रेण च परिक्षते॥ १२२॥ सामध्वनावृग्यजुषी नाधीयीत कदाचन॥ वेदस्याधीत्य वाप्यन्तमारण्यकमधीत्य च॥ १२३॥ ऋग्वेदो देवदैवत्यो यजुर्वेदस्तु मानुषः॥ सामवेदः स्मृतः पित्र्यस्तस्मात्तस्याशुचिर्ध्वनिः ॥१२४॥

۱۱۹۔ اپاکرن مین اور اتسرگ مین اندھیا تین راتر اشٹکا مین ایک دن رات اور رت کے انت مین ایک دن رات اندھیا کرنا چاہیے۔

۱۲۰۔ گھوڑا۔ ہاتھی۔ درخت۔ ناؤ۔ گدھا۔ اونٹ۔ اوسر زمین۔ سواری۔ انھون پر بیٹھکر وید کو نہ پڑھے۔

۱۲۱۔ لڑائی۔ جھگڑا۔ رنج۔ فوج کی لڑائی۔ بدہضمی۔ قے۔ ان سب مین بھی اندھیاے جاننا اور بھوجن کرکے بھی نہ پڑھنا۔

۱۲۲۔ بہت ہوا چلنے مین بدن سے خون نکلنے مین ہتھیار سے گھاو لگنے مین اتتھی کی بلا مرضی مین بھی اندھیاے جاننا۔

۱۲۳۔ سام وید کو سنکر رگ وید اور یجر وید کو نہ پڑھے وید کا انت اور رنیک پڑھکر ان دونون مین سے کسی کو پڑھکر اندھیاے کرے۔

۱۲۴۔ ارگ وید کے دیوتا دیو مین یجر وید کے دیوتا منشیہ ہین شام وید کے دیوتا پتر ہین اس سے سام وید کا شبد پوتر نہین ہے

नीहारेबाणशब्देचसन्ध्ययोरेव चोभयोः॥ अमावस्याचतुर्द-
श्योः पौर्णमास्यष्टकासुच॥११३॥ अमावस्यांगुरुंहन्तिशि-
ष्यंहन्तिचतुर्दशी॥ ब्रह्माष्टकापौर्णमास्यौतस्मात्ताःपरिवर्ज-
येत्॥११४॥ पांसुवर्षेदिशांदाहेगोमायुविरुतेतथा॥ श्वखरोष्ट्रे
चरुवतिपंक्तौचनपठेद्द्विजः॥११५॥ नाधीयीतश्मशानान्तेग्रा-
मान्तेगोव्रजेऽपिवा॥ वसित्वामैथुनंवासः श्राद्धिकंप्रतिगृह्यच॥
११६॥ प्राणिवायदिवाऽप्राणियत्किंचिच्छ्राद्धिकंभवेत्॥ त-
दालभ्याप्यनध्यायःपाण्यास्योहिद्विजःस्मृतः॥११७॥ चौरै-
रुपप्लुतेग्रामेसंभ्रमेनाग्निकारिते॥ आकालिकमनध्यायंवि-
द्यात्सर्वाद्भुतेषुच॥११८॥

۱۱۳۔ کہرا پڑتے وقت بان کا شبد دونوں سندھیا۔ اماوس۔ چتردشی۔ پورنماشی
اسٹمی۔ اِن سب میں وید کو نہ پڑھے۔

۱۱۴۔ اماوس گرو کو چتردشی چیلہ کو اسٹمی و پورنماشی وید کو ناش کرتی ہے اسلیے اِن
سب کو ہرا دے۔

۱۱۵۔ جس وقت خاک اڑتی ہو یا کسی طرف آگ لگی ہو یا سیارنی و کتا و گدہا و اونٹ ڈناہو
اور پنگت اِن سب میں وید کو نہ پڑھے۔

۱۱۶۔ مرگھٹ اور گوشالہ اور گاؤں کے پاس اور جماع کے وقت والے کپڑے پہن کر
اور شرادھ کے اَن کو لیکر وید کو نہ پڑھے۔

۱۱۷۔ شرادھ کی چیز خواہ جاندار ہو یا بے جان اُسکو لیکر وید کو نہ پڑھے کیونکہ براہمن
اُسکا منھ ہاتھ ہے۔

۱۱۸۔ جس گاؤں میں چوری بہت ہوئی ہو یا جس میں اگن لگے دہ میں اور ادبھت کرم
کے دیکھنے میں اوسوقت سے دوسرے دن کے اسیوقت تک انذھیاے جانتا۔

नित्यानध्यायएवस्यात्ग्रामेषुनगरेषुच॥ धर्मनैपुण्यका-
मानांपूतिगन्धेचसर्वदा॥१०७॥ अन्तर्गतशवेग्रामेवृषलस्य
चसन्निधौ॥ अनध्यायोरुद्यमानेसमवायेजनस्यच॥१०८॥
उदकेमध्यरात्रेचविण्मूत्रस्यविसर्जने॥उच्छिष्टः श्राद्धभुक्
चैवमनसापिनचिन्तयेत्॥१०९॥प्रतिगृह्यद्विजोविद्वाने-
कोद्दिष्टस्यकेतनम्॥ त्र्यहन्नकीर्तयेद्ब्रह्मराज्ञोराहोश्चसू-
तके॥११०॥यावदेकानुदिष्टस्यगन्धोलेपश्चतिष्ठति॥वि-
प्रस्यविदुषोदेहेतावद्ब्रह्मनकीर्तयेत्॥१११॥शयानःप्रौ-
ढपादश्चकृत्वाचैवावसक्थिकाम्॥नाधीयीतामिषंजग्-
ध्वासूतकान्नाद्यमेवच॥११२॥

۱۰۷- گانون اور شہر مین تو ہر روز اندھیائے ہے اور درگندھ مین بھی اندھیا کرنا چاہئے
پورا دھرم کرنے کی کامنا والے کو۔

۱۰۸ جبتک گانون مین مردہ پڑا رہے تب تک ادھرمی کے پاس اور رونے مین
اور دوسرے کام کے لئے بہت آدمیون کے بلاپ مین اندھیائے جاننا۔

۱۰۹- پانی مین اور آدھی رات کو پاخانہ و پیشاب کرتے وقت دل مین بھی وید کا
خیال نہ لاوے اور جوٹھے منھ اور شرادھ مین بھوجن کرکے بھی کو نہ پڑھے۔

۱۱۰- ایکودشٹ شرادھ کا نیوتا لیکر نیوتا کے دن سے تین دن تک وید کو نہ پڑھے
اور راجا کے سوتک مین اور چندر سورج کے گرہن مین بھی۔

۱۱۱- جبتک ایکودشٹ شرادھ کی بوباس بدن مین رہے تب تک وید کو نہ پڑھے۔

۱۱۲- مانس اور سوتک کا ان دونون مین سے کسی ایک کو بھوجن کرکے اور سوتے
ہوئے اور آسن پر پانون رکھے ہوئے اور دونون گھٹنون کو سیچے کیے ہوئے وید
کو نہ پڑھے۔

इमान्नित्यमनध्यायानधीयानो विवर्जयेत्।। अध्यायनं चकु-
र्वाणः शिष्याणां विधिपूर्वकम्।।१०१।। कर्णाश्रवेऽनिलेरात्रौ
दिवापांसुसमूहने।। एतौवर्षास्वनध्यायावध्यायज्ञाः प्रचक्ष-
ते।।१०२।। विद्युत्स्तनितवर्षेषु महोल्कानां च संप्लवे।। आका-
लिकमनध्यायमेतेषु मनुरब्रवीत्।।१०३।। एतांस्त्वभ्युदितां वि
द्याद्यदा प्रादुष्कृताग्निषु।। तदा विद्यादनध्यायमनृतौ चाभ्रद
र्शने।।१०४।। निर्घाते भूमिचलने ज्योतिषां चोपसर्जने।। एता-
नाकालिकान्विद्यादनध्यायानृतावपि।।१०५।। प्रादुष्कृतेष्व
ग्निषु तु विद्युत्स्तनितनिःस्वने।। सज्योतिः स्यादनध्यायः शे-
षेरात्रौ यथा दिवा।।१०६।।

۱۰۱- آگے جو اندھیا (یعنی روز تعطیل) کہینگے اُنہین گرو اور چیلے دونون وید کو نہ پڑھین پڑھاوین
۱۰۲- رات کے وقت کان مین ہوا سنسناتی ہو اور دن مین دھول اُڑتی ہو تو برسات مین اُس دن اندھیاے جاننا یہ بات اندھیاے جاننے والے نے کہا ہے۔
۱۰۳- بجلی کا چمکنا گرجنا برسنا ہوتے مین بجلی کا ٹوٹنا ایسے وقت مین دوسرے دن اُسیوقت تک اندھیاے ہے یہ بات منو جی نے کہا ہے۔
۱۰۴- بجلی کا چمکنا گرجنا پانی برسنا یہ تینون شام کیوقت ہون تو فصل برسات مین اندھیاے جاننا ہمیشہ نہین کیونکہ برسات مین تو یہ سب ہوتے ہی ہین اور اگر بے فصل ابر دکھائی دے تو بھی اندھیاے جاننا
۱۰۵- اکاش مین اوتپات کا شبد ہو اور بھوچال اور چندر سورج تارا ان سب کا اپدرو ہو تو جسوقت یہ ہون اُس سے دوسرے دن اُسیوقت تک اندھیاے ہر فصل مین جاننا۔
۱۰۶- وقت صبح و شام ہون کے لیئے آگ لکڑی کے گھسنے سے ظاہر ہوئی اور اسیوقت بجلی کا چمکنا اور گرجنا ہوا مگر برسنا نہوئی تو دن بھر اندھیاے ہے اور اگر وقت صبح و شام اوپر کہی ہوئی تینون باتین ہون تو صرف رات بھر اندھیاے جاننا دوسرے دن کے اسیوقت تک۔

श्रावण्यांप्रौष्ठपद्यांवाप्युपाकृत्ययथाविधि॥युक्तश्छन्दा-
स्यधीयीतमासान्विप्रोऽर्धपंचमान्॥९५॥पुष्येतुछन्दसांकु
र्य्याद्बहिरुत्सर्जनंद्विजः॥ माघशुक्लस्यवाप्राप्तेपूर्वाह्णेप्रथ-
मेऽहनि॥९६॥यथाशास्त्रन्तुकृत्वैवमुत्सर्गंछन्दसांबहिः॥
विरमेत्पक्षिणींरात्रिंतदेवैकमहर्निशम्॥९७॥अतऊर्ध्वंतु
छन्दांसिशुक्लेषुनियतःपठेत्॥ वेदांगानिचसर्वाणिकृष्ण-
पक्षेषुसंपठेत्॥९८॥नाविस्पष्टमधीयीतनशूद्रजनसन्निधौ
॥ननिशान्तेपरिश्रान्तोब्रह्माधीत्यपुनःस्वपेत्॥९९॥यथो-
दितेनविधिनानित्यंछन्दस्कृतम्पठेत्॥ ब्रह्मछन्दस्कृतंचैवद्वि
जोयुक्तोह्यनापदि॥१००॥

۹۵- ساون یا بھادون مین بدھ سے اپاکرم کر کے ساڑھے چار مہینے تک کوشش
کر کے وید کو پڑھے ۔

۹۶ ساڑھے چار مہینہ لیعنی پکھیہ نکشتر مین گانون سے باہر جا کر چھند کا تیاگ کرے اور
ساون یا بھادون مین جو اپاکرن کیا ہو اسکو ماگھ شکل پرتپدا مین پوربا ہن کال مین (پہلے دن)
کرے ۔

۹۷- اسیطرح گانون کے باہر جا کر تیھا شکت اتسرگ کر پکھنی رات تک یا اتسرگ کا دن
رات تک وید نہ پڑھے ۔

۹۸- اسکے بعد نیم سے شکل پکش مین وید کو اور کرشن پکش مین شاستر کو پڑھے ۔

۹۹ پڑھنے مین حرف حرف صاف زبان سے نکلے اور شودر کے پاس نہ پڑھے
اور اگر رات کے چوتھے پہر مین وید کے پڑھنے سے تھک جاوے تو سووے نہین

۱۰۰- جو بدھ کہی گئی اسی بدھ سے ہر روز وید کے دونون بھاگ (یعنی منتر اور براہمن) کو پڑھے

* یعنی اتسرگ کا دن اور آنیوالا دن بیچ دونون پکش کا طرح یعنی ان دونون کے بیچ کی رات ۔

संजीवनंमहावीचिंतपनंसम्प्रतापनम्॥ संघातंचसकाको-
लंकुड्मलंप्रतिमूर्त्तिकम्॥ ८९॥ लोहशंकुमृजीषंचपन्था
नंशाल्मलींनदीम्॥ असिपत्रवनंचैवलोहदारकमेवच॥९०
एतद्विदन्तोविद्वांसोब्राह्मणाब्रह्मवादिनः॥ नराज्ञःप्रतिगृ-
ह्णन्तिप्रेत्यश्रेयोऽभिकांक्षिणः॥९१॥ब्राह्मेमुहूर्त्तेबुध्येतध
र्म्मार्थौचानुचिंतयेत्॥ कायक्लेशांश्चतन्मूलान्वेदतत्वार्थमे-
वच॥९२॥उत्थायावश्यकंकृत्वाकृतशौचःसमाहितः॥पू-
र्वांसन्ध्यांजपंस्तिष्ठेत्स्वकालेचापरांचिरम्॥९३॥ऋषयो
दीर्घसन्ध्यत्वाद्दीर्घमायुरवाप्नुयुः॥प्रज्ञांयशश्चकीर्तिंचब्रह्म
वर्चसमेवच॥ ९४॥

۸۹ - سنجیون - مہاویچ - تپن - پرتاپن - سنگھات - کاکول - کڈمل - پوت مرتک -

۹۰ - لوہ شنک - رجیش - شال ملی ندی - اس پتربن - لوہ دارک -

۹۱ - اسبات کے جاننے والے اور پرلوک میں کلیان چاہنے والے اور وید کے پڑھنے والے جو براہمن ہیں وہ راجہ سے دان نہیں لیتے -

۹۲ - دو گھڑی رات رہے اٹھکر دھرم اور ارتھ کا دھیان کرے دھرم وارتھ کی جڑ جو کایا کلیس ہے اسکو اور وید کے تتو ارتھ یعنے برہم گیان کو بھی دھیان کرے

۹۳ - اٹھکر ضروری کاموں سے فرصت کرکے اطمینان کے ساتھ طہارت کرے اور صبح وشام سندھیا میں دیر تک جپ کرتا رہے -

۹۴ - دیر تک سندھیا کرنے سے رشی لوگوں نے بڑی عمر کو پایا ہے اور بدھ اور یش اور کیرت اور برہم تیج کو بھی پایا ہے

केशग्रहान्प्रहारांश्च शिरस्येतान्विवर्जयेत्॥ शिरःस्नातश्च तैलेन नांगं किंचिदपिस्पृशेत्॥ ८३॥ न राज्ञः प्रतिगृह्णीयादराजन्यप्रसूतितः॥ सूनाचक्रध्वजवतां वेशेनैव च जीवताम्॥ ८४॥ दशसूनासमं चक्रं दशचक्रसमो ध्वजः॥ दशध्वजसमो वेशो दशवेशसमो नृपः॥ ८५॥ दशसूनासहस्राणि यो वाहयति सौनिकः॥ तेन तुल्यः स्मृतो राजा घोरस्तस्य प्रतिग्रहः॥ ८६॥ यो राज्ञः प्रतिगृह्णाति लुब्धस्योच्छास्त्रवर्जितः॥ स पर्यायेण यातीमान्नरकानेकविंशतिम्॥ ८७॥ तामिस्रमन्धतामिस्रं महारौरवरौरवौ॥ नरकं कालसूत्रं च महानरकमेव च॥ ८८॥

۸۳- غصہ سے اپنے یا دوسرے کے سر مین نہ مارے اور بالون کو نہ کھینچے اگر سر مین تیل لگا کر اسنان کرے تو پھر اور کسی عضو مین تیل نہ لگاوے۔

۸۴- جو راجا کشتری نہین ہے اوس سے اور کسائی اور تیلی اور کلار اور جو مرد یا عورت بیسیا کی جیوکا سے جینے والے ہین ان سب کے دان نہ لیوے۔

۸۵- دس کسائی کے برابر تیلی ہے دس تیلی کے برابر کلار ہے دس کلار کے برابر بیسیا ہے دس بیسیا کے برابر راجا ہے۔

۸۶- جو کسائی اپنے لیئے دس ہزار جان مارتا ہے اسکے برابر راجا ہے اسو جہ سے راجا کا دان سخت ہے۔

۸۷- جو راجا لالچی اور خلاف شاستر کے کام کرنے والا ہے اوس سے جو کوئی دان لیتا ہے وہ سلسلے سے اکیس قسم کے نرک جو آگے کہین گے اومین جاتا ہے۔

۸۸- تامسر۔ اندھتامسر۔ مہارورو۔ رورو۔ نرک۔ کال سوتر۔ مہا نرک۔

अचक्षुर्विषयंदुर्गंनप्रमाद्येतकर्हिचित।।नविरामूत्रंनिरीक्षेत नबाहुभ्यांनदींतरेत्।।७७।।अधितिष्ठेन्नकेशांस्तुनभस्मास्थिकपालिकाः।।नकार्पासास्थिनतुषान्दीर्घमायुर्जिजीविषुः।।७८।। नसंवसेच्चपतितैर्नचाण्डालैर्नपुल्कसैः।।नमूर्खैर्नावलिप्तैश्चनान्त्यैर्नान्त्यावसायिभिः।।७९।।नशूद्रायमतिंदद्यान्नोच्छिष्टंनहविष्कृतम्।।नचास्योपदिशेद्धर्मंनचास्यव्रतमादिशेत्।।८०।। योह्यस्यधर्ममाचष्टेयश्चैवादिशतिव्रतम्।।सोऽसंवृतंनामतमः सहतेनैवगच्छति।।८१।।नसंहताभ्यांपाणिभ्यांकण्डूयेदात्मनःशिरः।।नस्पृशेच्चैतदुच्छिष्टोनचस्नायाद्विनाततः।।८२।।

۷۷ - جو ملک آنکھوں سے دیکھا نہیں ہے، اور جس مقام پر مر جانیکا اندیشہ ہے اُس ملک و مقام مین کبھی نہ جاوے اور اپنے غلیظ و پیشاب کو کبھی آنکھون سے نہ دیکھے اور ندی کو ہاتھون سے نہ تیرے

۷۸ - زیادہ عمر کا چاہنے والا آدمی بال یا راکھہ یا ہڈی یا مٹی کے ٹوٹے ہوئے برتنون کے ٹکڑے یا بنولا یا بھوسا پر کھڑا نہ رہے -

۷۹ - دوسرے گاؤن کے رہنے والے آدمی جو پتت چانڈال پکّس مغروران دولت مورکھ دھوبی وغیرہ وانتیا وسائی ہون اُنکے ساتھ ایک درخت کے سایہ مین نہ رہے -

۸۰ - شودر کو صلاح نہ دیوے اور شودرون کو جوٹھا اُن نہ دے جو ہبیہ ہون کرنے سے بچ رہا ہے وہ شودر کو نہ دے اور دھرم اور برت کا اُپدیش کبھی شودر کو نہ دے -

۸۱ - جو شخص شودر کو دھرم اور برت کا اُپدیش دیتا ہے وہ مع اُس شودر کے اسمبرت نام نرک مین جاتا ہے

۸۲ - ملے ہوئے دونون ہاتھون سے اپنے سر کو نہ کھجلاوے اور ہاتھ جوٹھے ہون تو سر کو نہ چھووے اور سر کو چھوڑ کر گلے سے اشنان نہ کرے یعنی سر سے پاؤن تک اشنان کرے -

* یعنے نکما وسے شودر استری مین پیدا - + یعنے چانڈال سے نکھاد استری مین پیدا + مگر مارکنڈے پران مین لکھا ہے کہ بغیر ضرورت کے سر سے اشنان نکرے -

लोष्ठमर्दीतृणच्छेदीनखखादीचयोनरः॥ सविनाशंव्रजत्याशुसूचकोऽशुचिरेवच॥७१॥नविगर्ह्यकथांकुर्याद्बहिर्माल्यंनधारयेत्॥ गवांचयानंपृष्ठेनसर्वथैवविगर्हितम्॥७२॥
अद्वारेणचनातीयाद्ग्रामंवावेश्मवावृतम्॥ रात्रौचवृक्षमूलानिदूरतः परिवर्जयेत्॥७३॥ नाक्षैःक्रीडेत्कदाचित्तुस्वयन्नोपानहौहरेत्॥ शयनस्थोऽपिभुञ्जीतनपाणिस्थंनचासने॥७४॥सर्वंचतिलसंबद्धंनाद्यादस्तमितेरवौ॥ नचनग्नःशयीतेहनचोच्छिष्टःक्वचिद्व्रजेत्॥७५॥ आर्द्रपादस्तुभुञ्जीतनार्द्रपादस्तुसंविशेत्॥ आर्द्रपादस्तुभुञ्जानोदीर्घमायुरवाप्नुयात्॥७६॥

۷۱ - ڈھیلا - مردن کرنیوالا تنکا توڑنے والا - دانتون سے ناخن اکھاڑنیوالا - چغلی کرنیوالا ناپاک رہنے والا جلد ناش ہو جاتا ہے -

۷۲ - لوک ریت یا وید ریت مین دل لگا کر قصہ گوئی نکرے بالون مین مالا نہ پہنے بیل کی پیٹھ پر چڑھکر نہ چلے یہ سب باتین ہمیشہ منع ہین -

۷۳ - گانون یا گھر یہ دونون طرف سے گھرے ہوئے ہون تو دروازہ چھوڑکر اور طرف سے پھاند کر اسکے اندر نجاے اور رات کے وقت درخت کی جڑ مین نرہے -

۷۴ - پانسا نہ کبھی کھیلے اپنا جوتا اپنے ہاتھ سے اٹھا کر ایک جگہ سے دوسری جگہ نلیجا بلکہ پانون سے لیجاے چارپائی پر بیٹھکر اور بہت ان کو ہاتھ مین رکھکر اسمین سے تھوڑا تھوڑا نکال کر اور آسن کے اوپر بھوجن کے پاتر کو رکھکر بھوجن نکرے -

۷۵ - تل ملی ہوئی چیز کو رات کے وقت نہ کھاے ننگا ہو کر نسووے جوٹھے منھ کہین نجاے

۷۶ - گیلے پانون ہو کر بھوجن کرنا اچھا ہے مگر گیلے پانون ہو کر سونا منع ہے جو شخص گیلے پانون ہو کر بھوجن کرتا ہے وہ بڑی عمر پاتا ہے -

नपादौधावयेत्कांस्येकदाचिदपिभाजने।। नभिन्नभाण्डेभु-
ञ्जीतनभावप्रतिदूषिते।।६५।।उपानहौचवासश्चधृतमन्यै-
र्नधारयेत्।।उपवीतमलंकारंस्रजंकरकमेवच।।६६।।नावि-
नीतैर्भजेद्धुर्यैर्नचक्षुद्व्याधिपीडितैः।। नभिन्नशृङ्गाक्षिखुरैर्न-
वालधिविरूपितैः।।६७।।विनीतैस्तुव्रजेन्नित्यमाशुगैर्लक्षणा-
न्वितैः।।वर्णरूपोपसम्पन्नैःप्रतोदेनातुदन्भृशम्।।६८।।बा-
लातपःप्रेतधूमोवर्ज्यंभिन्नंतथासनम्।। नछिन्द्यान्नखलो-
मानिदन्तैर्नोत्पाटयेन्नखान्।।६९।।नमृल्लोष्ठंचमृद्नीयान्न-
च्छिन्द्यात्करजैस्तृणम्।। नकर्मनिष्फलंकुर्यान्नायत्यामसु-
खोदयम्।।७०।।

۶۵- کانسے کے برتن مین پاؤن نہ دھووے اور پھوٹے برتن مین یا جس برتن مین اپنا من پرسن نہو اسمین بھوجن نکرے -

۶۶- جوتا - چھتری - جنیو - گہنا - پھولونکی مالا کمنڈل کپڑا - ان سب کو اگر کسی نے استعمال کیا ہو تو آپ استعمال نکرے -

۶۷- جس رتھہ مین ایسا بیل لگا ہو کہ جسکو رتھہ مین چلنا نہ سکھایا گیا ہو یا بھوکھا یا پیاسا یا بیمار ہو یا جسکی سینگ آنکھہ کھر لو چھہ ٹوٹ گئی ہو ایسے رتھہ پر سوار ہوکر نہ چلے -

۶۸- جس رتھہ مین ایسا بیل لگا ہو کہ جسکو رتھہ مین چلنا سکھایا گیا ہو اور لکشن رنگ روپ جسکا اچھا ہو اُس رتھہ پر سوار ہوکر چلے مگر بیل کو پنیا سے نہ مارے -

۶۹- صبح کے وقت تین گھڑی تک سورج کا گھام اور کسی کے مت مین کنیان راس مین سورج کا گھام جلتے ہوئے مردے کا دھوان ٹوٹا آسن ان سب سے علیحدہ رہے بال اور ناخن نہ نوچے اور ناخن کو دانتونسے نہ اوکھاڑے -

۷۰- مٹی اور ڈھیلا کو نہ مردن کرے ناخن سے تنکے نہ توڑے بیفایدہ کام نکرے اور جسکام کے کرنے سے سکھہ ہونیوالا نہین اسکام کو نکرے -

नावारयेद्गांधयन्तींनचाचक्षीतकस्यचित्॥ नदिवीन्द्रायुधंदृ-
ष्ट्वाकस्यचिद्दर्शयेद्बुधः॥ ५९॥ नाधार्मिकेवसेद्ग्रामेनव्याधि
बहुलेभृशम्॥ नैकःप्रपद्येताध्वानंनचिरंपर्वतेवसेत्॥६०॥
नशूद्रराज्येनिवसेन्नाधार्मिकजनावृते॥ नपाषण्डिगणा
क्रान्तेनोपसृष्टेऽन्त्यजैर्नृभिः॥ ६१॥ नभुंजीतोद्धृतस्नेहंना-
तिसौहित्यमाचरेत्॥ नातिप्रगेनातिसायंनसायंप्रातराशि-
तः॥ ६२॥ नकुर्वीतवृथाचेष्टांनवार्य्यञ्जलिनापिबेत्॥ नो-
त्संगेभक्षयेद्भक्ष्यान्नजातुस्यात्कुतूहली॥ ६३॥ ननृत्येन्नैव-
गायेन्नवादित्राणिवादयेत्॥ नास्फोटयेन्नचक्ष्वेडेन्नच
रक्तोविरावयेत्॥ ६४॥

۵۹- دودھ یا پانی پیتی ہوئی گئو کو نہ ہٹاوے اور نہ کسی سے کہے اور اندر دھنکھ کو دیکھکر
کسی کو نہ دکھاوے-

۶۰- جس گانون مین دھرم نہین ہے- اور آفتون سے بھرا ہوا، اوسمین نہ رہے اکیلے
راہ نہ چلے بہت دنون تک پہاڑ پر نہ رہے-

۶۱- جس گانون مین شودر کا راج ہے اور جسمین ادھرمی پاکھنڈی چانڈال آدمی فساد
کرتے ہون اس گانون مین نہ رہے-

۶۲- جس چیز سے تیل نکال لیا گیا ہو اسکو وکھاوے اور عین صبح اور عین شام کیوقت بھوجن
نکرے اور بہت بھوجن نکرے اور اگر صبح کو زیادہ کھا گیا ہو تو شام کو نہ کھاوے-

۶۳- جس تجارت سے اس لوک اور پرلوک مین کچھ فائدہ نہو اسکو نکرے اور چلّو سے پانی نہ پیئے
جانگھہ پر لڈو وغیرہ رکھکر نہ کھاوے اور بے مطلب کسی کے بھید کے جاننے کی خواہش نکرے-

۶۴- ناچنا- گانا- بجانا- تالی ٹھوکنا- کٹ کٹانا- غصے سے گدھے وغیرہ کی بولی بولنا
سب باتون سے پرہیز کرے-

नाग्निंमुखेनोपधमेन्नग्नांनेक्षेतचस्त्रियम्॥ नामेध्यंप्रक्षिपे-
दग्नौनचपादौप्रतापयेत्॥५३॥ अधस्तान्नोपदध्याच्चनचैनम-
भिलंघयेत्॥ नचैनंपादतःकुर्य्यान्नप्राणाबाधमाचरेत्॥५४॥
नाश्नीयात्सन्धिवेलायांनगच्छेन्नापिसंविशेत्॥ नचैवप्र-
लिखेद्भूमिंनात्मनोपहरेत्स्रजम्॥५५॥ नाप्सुमूत्रंपुरीषंवा
ष्ठीवनंवासमुत्सृजेत्॥ अमेध्यलिप्तमन्यद्वालोहितंवाविषा-
णिवा॥५६॥ नैकःस्वप्याच्छून्यगेहेशयानंनप्रबोधयेत्॥ नो-
दक्ययाभिभाषेतयज्ञंगच्छेन्नचावृतः॥५७॥ अग्न्यगारेग-
वांगोष्ठेब्राह्मणानांचसन्निधौ॥ स्वाध्यायेभोजनेचैवदक्षि-
णंपाणिमुद्धरेत्॥५८॥

۵۳ - اگن کو منھ سے نہ پھونکنا اور اگن میں ناپاک چیز نہ ڈالنا اور پانوں کو نہ تپانا اور
ننگی استری کو نہ دیکھنا چاہیے -

۵۴ - چارپائی کے نیچے اگن کو نہ رکھنا اور نہ اسکو نانگھنا اور نہ پانوں سے چھونا اور نہ
پران بادھا کرنا چاہیے -

۵۵ - وقت صبح و شام کھانا اور سونا اور چلنا نچاہیے اور زمین پر لکیریں نہ کھینچے اور
جو پھول کی مالا اپنے بدن میں پہنے اسکو آپ نہ اوتارے دوسرے سے اتروا لے -

۵۶ - پانی میں پیشاب اور غلیظ اور کھنکھار اور ناپاک چیز اور خون اور زہر ان سب کو نہ
ڈالنا چاہیے -

۵۷ - گھر میں اکیلا نہ سووے اور جو شخص آپ سے علم وغیرہ میں زیادہ ہو اور سوتا ہو اسکو
نہ جگا دے اور حیض والی عورت سے بات نہ کرے اور بغیر بلائے یگیہ میں نجاوے -

۵۸ - اگن کا گھر - گیو کا استھان - براہمن کے پاس - وید کا پڑھنا - بھوجن کا کرنا ان سب
میں داہنا ہاتھ نکالنا چاہیے -

नससत्वेषुगर्तेषुनगच्छन्नापिचस्थितः॥ननदीतीरमासाद्य नचपर्व्वतमस्तके॥ ४७॥ वाय्वग्निविप्रमादित्यमपःपश्यं स्तथैवगाः॥नकदाचनकुर्वीतविण्मूत्रस्यविसर्जनम्॥ ४८ ॥ तिरस्कृत्योच्चरेत्काष्ठलोष्ठपत्रतृणादिना॥ नियम्यप्रयतो वाचंसंवीतांगोऽवगुण्ठितः॥ ४९॥ मूत्रोच्चारसमुत्सर्गंदिवा कुर्यादुदङ्मुखः॥ दक्षिणाभिमुखोरात्रौसन्ध्ययोश्चयथादि- वा॥ ५०॥ छायायामन्धकारेवारात्रावहनिवाद्विजः॥ यथा सुखमुखःकुर्य्यात्प्राणबाधाभयेषुच॥ ५१ ॥ प्रत्यग्निंप्रतिसू- र्य्यंचप्रतिसोमोदकद्विजान्॥ प्रतिगांप्रतिवातंचप्रज्ञानश्य- तिमेहतः॥ ५२॥

۴۷- کھڑے ہوکر اور اُس گڑھے میں جسمیں جاندار رہتے ہوں اور چلتے ہوئے اور ندی کے کنارہ اور پہاڑ کے چوٹی پر بھی پاخانہ وپیشاب نکرے۔

۴۸- اگن- سورج- جل- براہمن- گئو- ہوا- ان سب کو دیکھتے ہوئے بھی پاخانہ وپیشاب نکرے۔

۴۹- سوکھا پتہ گھاس پھوس- کاٹھ ڈھیلا وغیرہ سے زمین کو چھپا کر اور سر کو باندھکر سب اعضا کو کپڑے سے پوشیدہ کر کے خاموش ہوکر پاخانہ وپیشاب کرے-

۵۰- دن کو وقت صبح وشام اُتر طرف مُنھ کر کے اور رات کو دکشن طرف منھ کر کے پاخانہ وپیشاب کرے-

۵۱- چھایا- اندھکار- پران بادھا- بھئے- اِن سب میں رات یا دن کو جسطرف منھ کرنے سے سُکھ ہو اُسطرف منھ کر کے پاخانہ وپیشاب کرے-

۵۲- اگن- سورج- سوم- جل- براہمن- گئو- ہوا- اِن سب کو دیکھتے ہوئے پاخانہ وپیشاب کرنے سے بُدھ کا ناش ہوتا ہے-

रजसाभिप्लुतांनारींनरस्यह्युपगच्छतः॥ प्रज्ञातेजोबलंचक्षु-रायुश्चैवप्रहीयते॥४१॥ तांविवर्जयतस्तस्यरजसासमभि-प्लुताम्॥ प्रज्ञातेजोबलंचक्षुरायश्चैवप्रवर्द्धते॥४२॥नाश्नीया द्भार्य्ययासार्द्धंनैनामीक्षेतचाश्नतीम्॥ क्षुवतींजृम्भमाणांवा नचासीनांयथासुखम्॥४३॥ नांजयन्तींस्वकेनेत्रेनचास्य-क्तामनावृताम्॥ नपश्येत्प्रसवन्तींचतेजस्कामोद्विजोत्तमः ॥४४॥नान्नमद्यादेकवासानननग्नःस्नानमाचरेत्॥ नमूत्र-स्यथिकुर्व्वीतनभस्मनिनगोव्रजे॥४५॥नफालकृष्टेनज-लेनचित्यांनचपर्व्वते॥ नजीर्णदेवायतनेनवल्मीकेकदा चन॥४६॥

۴۱- جو شخص حیض والی عورت سے صحبت کرتا ہے اسکی عقل و جلال و قوت و نظر و عمر یہ سب کم ہو جاتی ہے-

۴۲- جو شخص حیض والی عورت سے صحبت نہین کرتا ہے اسکی عقل و جلال و قوت و نظر و عمر یہ سب بڑھتی ہے-

۴۳- عورت کے ساتھ بھوجن نکرنا اور جسوقت عورت کھاتی ہو یا چھیکتی ہو یا جمہائی لیتی ہو یا سکھ سے بیٹھی ہو تو اوسکو نہ دیکھنا چاہئے-

۴۴- اور جسوقت عورت آنکھ مین انجن یا بدن مین ابٹن لگاتی ہو یا ننگی ہو یا لڑکا جنتی ہو تو اوسکو نہ دیکھے جس برہمن کو تیج کی اچھا ہو-

۴۵- ایک کپڑا پہنے ہوئے بھوجن نکرے ننگے ہوکر اسنان نکرے راستہ اور راکھ اور گئو کے استھان مین پیشاب نکرے-

۴۶- جوتا ہوا کھیت پانی- آگ پزاوہ- پہاڑ- دیوتاؤن کا پرانا مندر- چھوٹے چھوٹے کیڑون سے ڈھیر کی ہوئی مٹی- ان سب چیزون پر پیشاب نکرے-

क्लृप्तकेशनखश्मश्रुर्दान्तः शुक्लाम्बरः शुचिः॥ स्वाध्याये चैव युक्तः स्यान्नित्यमात्महितेषु च॥ ३५॥ वैणवीं धारयेद्यष्टिं सोदकं च कमण्डलुम्॥ यज्ञोपवीतं वेदं च शुभे रौक्मे च कुण्डले॥ ३६॥ नेक्षेतोद्यन्तमादित्यं नास्तं यान्तं कदाचन॥ नोपसृष्टं न वारिस्थं न मध्यं नभसो गतम्॥ ३७॥ न लंघयेद्वत्सतंत्रीं न प्रधावेच्च वर्षति॥ न चोदके निरीक्षेत स्वं रूपमिति धारणा॥ ३८॥ मृदं गां दैवतं विप्रं घृतं मधु चतुष्पथम्॥ प्रदक्षिणानि कुर्वीत प्रज्ञातांश्च वनस्पतीन्॥ ३९॥ नोपगच्छेत्प्रमत्तोऽपि स्त्रियमार्तवदर्शने॥ समानशयने चैव न शयीत तया सह॥ ४०॥

۳۵ - وید خوانی اور اعمال نیک مین ہمیشہ مصروف رہے اور بال اور ناخن اور داڑھی کو چھوٹا کئے رہے سفید کپڑے پہنے پاک صاف رہکر حواس پر ضابط رہے۔

۳۶ - بانس کی لاٹھی۔ کمنڈل مع پانی۔ جنیو۔ سونے کے دو کنڈل۔ وید انکو استعمال کرے۔

۳۷ - وقت طلوع و وقت غروب و وقت دوپہر کے آفتاب کو نہ دیکھے اور اگر گہن پڑتا ہو تب بھی نہ دیکھے اور نہ پانی کے اندر آفتاب کو دیکھے۔

۳۸ - بچھڑا باندھنے کی رسی کو نہ نانگھے پانی برستے ہوئے نہ دوڑے۔ پانی مین اپنی صورت نہ دیکھے یہ شاستر مین لکھا ہے۔

۳۹ - کہین جاتا ہو اور سامنے۔ اکھاڑی۔ مٹی۔ گئو۔ دیوتا۔ برہمن۔ گھی۔ شہد۔ چوراہا جاتا ہو اور درخت یہ سب ملین تو داہنی طرف انکو کرکے جاوے۔

۴۰ - اگر شہوت بدرجہ غایت ہو تو بھی حیض والی عورت سے صحبت نہ کرے اور ایک چارپائی پر عورت کے ساتھ نہ سووے۔

आसनाशनशय्याभिरद्भिर्मूलफलेन वा॥ नास्य कश्चिद्वसेद्गे-
हे शक्तितोऽनर्चितोऽतिथिः॥२९॥ पाषण्डिनो विकर्मस्था-
न्बैडालव्रतिकाञ्छठान्॥ हैतुकान्बकवृत्तींश्च वाङ्मात्रे-
णापि नार्चयेत्॥३०॥ वेदविद्याव्रतस्नातांश्श्रोत्रियान्गृहमे-
धिनः॥ पूजयेद्धव्यकव्येन विपरीतांश्च वर्जयेत्॥३१॥ शक्ति-
तोऽपचमानेभ्यो दातव्यं गृहमेधिना॥ संविभागश्च भूतेभ्यः
कर्त्तव्योऽनुपरोधतः॥३२॥ राजतो धनमन्विच्छेत्संसीदन्स्ना-
तकः क्षुधा॥ याज्यान्तेवासिनोर्वापि न त्वन्यत इति स्थितिः
॥३३॥ न सीदेत्स्नातको विप्रः क्षुधाशक्तः कथंचन॥ न जी-
र्णमलवद्वासा भवेच्च विभवे सती॥३४॥

۲۹ - آسن بھوجن شیّا جل مول پھل ان سبھوں میں سے کسی ایک چیز سے تھا شکت بغیر پوجا
پائے اتتھ گرہستھ کے گھر میں نہ رہنے پاوے۔

۳۰ - اگر پاکھنڈی و ناقص معاش سے اوقات بسر کرنیوالے و بیڈال برتک وید خوانی
نکرنیوالے و خلاف دلیل اٹھانیوالے یہ سب اتتھ کال میں آویں تو گفتگو سے بھی انکی پوجا نکرے مگر بھوجن دے

۳۱ - جو گرہستھ وید میں یا برت میں یا دونوں میں پکا ہے اسکا پوجن ہویہ اور کویہ سے کرے
خلاف عمل نکرے۔

۳۲ - جو برہمچاری یا سنیاسی وغیرہ اپنے ہاتھ سے کھانا نہیں بناتے ہیں انکو حسب توفیق
گرہستھ آدمی کھانا پانی دے پھر کیڑیا لوں کے کھانے سے جو کھانا پانی بچ رہیں ور جانداروں کو دے۔

۳۳ - اگر سناتک گرہستھ بھوکھ سے بیچین ہو تو راجا و یجمان و دیارتھی ان سب سے دھن لیوے
اور کسی سے نہ لیوے یہ شاستر کی مرجاد ہے۔

۳۴ - جو گرہستھ سناتک اور صاحب قدرت ہو وہ بھوکھ سے کسی طرح رنجیدہ دل نہو اور مقدور
ہوتے ہوئے پرانے اور میلے کپڑے نہ پہنے۔

वाच्येकेजुह्वतिप्राणंप्राणेवाचंचसर्वदा।।वाचिप्राणेचपश्य-न्तोयज्ञनिर्वृत्तिमक्षयाम्।।२३।।ज्ञानेनैवापरेविप्रायजंत्येतैर्म-खैःसदा।।ज्ञानमूलांक्रियामेषांपश्यन्तोज्ञानचक्षुषा।।२४।।अ-ग्निहोत्रंचजुहुयादाद्यंतेद्युनिशोःसदा।।दर्शेनचार्द्धमासान्तेपौ-र्णमासेनचैवहि।।२५।।सस्यान्तेनवसस्येष्ट्यातथर्त्वन्तेद्विजोऽ-ध्वरैः।।पशुनात्वयनस्यादौसमान्तेसौमिकैर्मखैः।।२६।।नानि-ष्ट्वानवसस्येष्ट्यापशुनाचाग्निमान्द्विजः।।नवान्नमद्यान्मांसं-वादीर्घमायुर्जिजीविषुः।।२७।।नवेनानर्चिताह्यस्यपशुहव्येन-चा[illegible]नेवात्तुमिच्छंतिनवान्नामिषगर्द्धिनः।।२८।।

۲۳ - جو آدمی بانی اور پران مین [illegible] ہیں وہ پران کو بانی مین اور بانی کو پران [illegible] ہون کرتے ہیں)

۲۴ - بعض آدمی [illegible] گیان روپی آنکھ سے دیکھ کر گیان ہی سے ان یگیون کو پورا کرتے ہیں -

۲۵ - طلوع آفتاب و عدم طلوع آفتاب مین ہون کرنا جائز ہے اور اماوس اور پورنماشی کے دن بھی ہون کرنا چاہیئے -

۲۶ - جب نیا غلہ پیدا ہو اوسوقت نوسسیشٹ سے ہون کرنا اور فصل کی اخیر مین چترماس یگیہ سے اور دونون آین مین پشو سے ہون کرنا چاہیئے اور سال کے اخیر پر اگنشٹوم وغیرہ یگیہ کرے -

۲۷ - جو برہمن اگن ہوتری زیادہ عمر ہونے کی خواہش رکھتا ہو وہ نیا غلہ جبتک ہی غلہ سے یگیہ نکرے اور پشو کا مانس جبتک ہی مانس سے یگیہ نکرے دونون کو بھوجن نہ کرے -

۲۸ - جو اگنی نیا غلہ اور پشو کے مانس سے آسودہ نہین ہوئی وہ اوس آدمی کے پران کو بھوجن کرنیکا ارادہ کرتی ہے جسنے نئے غلہ اور پشو کے مانس سے یگیہ نہین کیا اور کھانے لگا -

सर्वान्परित्यजेदर्थान्स्वाध्यायस्यविरोधिनः॥ यथातथाध्यापयं-
स्तुसाह्यस्यकृतकृत्यता॥१७॥वयसःकर्मणोऽर्थस्यश्रुतस्या-
भिजनस्यच॥वेषवाग्बुद्धिसारूप्यमाचरन्विचरेदिह॥१८॥बु-
द्धिवृद्धिकराण्याशुधान्यानिचहितानिच॥ नित्यंशास्त्राण्य
वेक्षेतनिगमांश्चैववैदिकान्॥१९॥यथायथाहिपुरुषःशास्त्रं
समधिगच्छति॥तथातथाविजानातिविज्ञानंचास्यरोचते॥२०
ऋषियज्ञंदेवयज्ञंभूतयज्ञंचसर्वदा॥ नृयज्ञंपितृयज्ञंचयथाश
क्तिनहापयेत्॥२१॥एतानेकेमहायज्ञान्यज्ञशास्त्रविदोज-
नाः॥ अनीहमानाःसततमिन्द्रियेष्वेवजुह्वति॥२२॥

۱۷- جس دولت سے وید پڑھنے مین ہرج ہو اسکو ترک کرے اور جس طریق سے وید پڑھنے مین ہرج نہو اس طریق سے مطلب حاصل کرے۔

۱۸- عمر و دولت و عمل و سنی سنائی بات و ملک و پوشاک و تقریر و عقل ان سب کی صورت کو آچرن کرتا ہوا دنیا مین رہے۔

۱۹- عقل و دولت کو ترقی دینے والے جو مفید ویدک (وید انگ وغیرہ) و نگم علم صناعت و طب و حکمرانی و دھرم شاستر وغیرہ علوم ہین انکو روز مطالعہ کیا کرے۔

۲۰- آدمی جیسی جیسی مہارت شاستر مین کرتا ہے ویسا ویسا اوسکا مطلب سمجھتا ہے اور گیان بھی اوسکو اچھا لگتا ہے۔

۲۱- رِش یگیہ - دیو یگیہ - بھوت یگیہ - منشیہ یگیہ - پتر یگیہ - ان سب یگیون کو حتی الامکان ہمیشہ ترک نکرے۔

۲۲- جو آدمی یگیہ شاستر کو جانتے ہین مگر ان یگیون کے کرنے کی خواہش نہین کرتے وے ہمیشہ اندریون مین ہون کرتے ہین۔

न लोकवृत्तं वर्त्तेत वृत्तिहेतोः कथंचन ॥ अजिह्मामशठां शुद्धां जीवेद्ब्राह्मणजीविकाम् ॥ ११ ॥ संतोषं परमास्थाय सुखार्थी संयतो भवेत् ॥ सन्तोषमूलं हि सुखं दुःखमूलं विपर्ययः ॥ १२ ॥ अतोऽन्यतमया वृत्त्या जीवंस्तु स्नातको द्विजः ॥ स्वर्गायुष्ययशस्यानि व्रतानीमानि धारयेत् ॥ १३ ॥ वेदोदितं स्वकं कर्म्म नित्यं कुर्य्यादतन्द्रितः ॥ तद्धि कुर्व्वन्यथाशक्ति प्राप्नोति परमां गतिम् ॥ १४ ॥ नेहेतार्थान्प्रसंगेन न विरुद्धेन कर्म्मणा ॥ न विद्यमानेष्वर्थेषु नार्त्यामपि यतस्ततः ॥ १५ ॥ इन्द्रियार्थेषु सर्व्वेषु न प्रसज्जेत कामतः ॥ अतिप्रसक्तिं चैतेषां मनसा संनिवर्त्तयेत् ॥ १६ ॥

۱۱- واسطے حصول معاش کے دروغگوئی و شیرین زبانی و مضحکہ اختیار کرے دروغ و فریب والی معاش کو ترک کرکے براہمنوں کی نیک معاش سے اوقات گذاری کرے-

۱۲ قناعت کرکے حواس کو قابو مین لاوے کیونکہ خوشی کی بنیاد قناعت ہے اور رنج کی جڑ بے صبری ہے-

۱۳- منجملہ معاش مفصلہ بالا کے کسی معاش سے اوقات گذاری کرے اور ویدپڑھنے سے فارغ ہوکر سماورتن کیواسطے اندریون کو قابو مین لاوے اور سورگ اور عمر اور نیکنامی کیواسطے مفید برت جو آگے کہین گے اسکو کرے-

۱۴- کاہلی چھوڑکر اپنے اعمال مندرجہ وید کو کرے حتی المقدور ان اعمال کو کرنے سے مکت پدوی کو پاویگا-

۱۵- گانا بجانا اور جو آدمی یگیہ کرانیکے لائق نہیں ہے اسکو یگیہ کرانا ان سب باتون سے اوقات گذاری نکرے اور جو آدمی تپت یعنی اپنے ورن سے بھرشٹ ہوگیا ہے اُسکے دھن وغیرہ کبھی نہ لیوے

۱۶ اندریون کو قابو مین لاکر اونکی زیادتی خواہش کو دل سے دور کرے-

सत्यानृतंतुवाणिज्यंतेनचैवापिजीव्यते।।सेवाश्ववृत्तिराख्या
तातस्मात्तांपरिवर्जयेत्।।६।।कुसूलधान्यकोवास्यात्कुंभी-
धान्यकएववा।।त्र्यहैहिकोवापिभवेदश्वस्तनिकएववा।।७।।
चतुर्णामपिचैतेषांद्विजानागृहमेधिनाम्।।ज्यायान्परःपरो-
ज्ञेयोधर्मतोलोकजित्तमः।।८।।षट्कर्मैकोभवत्येषांत्रिभिर-
न्यःप्रवर्त्तते।। द्वाभ्यामेकश्चतुर्थस्तुब्रह्मसत्रेणजीवति।।९।।
वर्त्तयंश्चशिलोञ्छाभ्यामग्निहोत्रपरायणः।।इष्टीःपार्वाय
णांतीयाःकेवलानिर्वपेत्सदा।।१०।।

۶- بنیا کے کرم کو جھوٹھ سچ کہتے ہیں سیوا کو کتا کی برت کہتے ہیں اسلئے
سیوا نہ کرے -

۷- ستیہ نمیتک دھرم وغیرہ کرنیوالے کو اتنا غلہ فراہم کرنا چاہئے جو تین سال
تک کافی ہو یا ایک سال تک یا ایک دن تک کفایت کرے -

۸- چار طرح کے براہمن کہے ہیں انمیں پہلے سے دوسرا دوسرے سے تیسرا تیسرے
سے چوتھا بڑا ہے - اور وے دھرم سے لوک کو جیت سکتے ہیں -

۹- ان چاروں میں پہلا چھہ کرم سے اوقات بسر کرے اور دوسرا تین کرم سے اور تیسرا
دو کرم سے اور چوتھا ایک کرم سے اوقات بسر کرے -

۱۰- شل اور انچھ سے اوقات گذاری کرے اگن ہوتر کرے اماوس اور پورنما
اور اسوقت جبکہ نیا غلہ پیدا ہوتا ہے ان تینوں وقت میں یگیہ کرے -

* یعنی یگیہ کرانا پڑھانا دان لینا رت وغیرہ جو اوپر کہہ آئے ہیں -
* یعنی یگیہ کرانا پڑھانا دان لینا -
* یعنے یگیہ کرانا پڑھانا -
* یعنے پڑھانا -

चतुर्थमायुषोभागमुषित्वाद्यंगुरौद्विजः॥ द्वितीयमायुषो-
भागंकृतदारोगृहेवसेत्॥१॥ अद्रोहेणैवभूतानामल्पद्रोहेण
वापुनः॥ यावृत्तिस्तांसमास्थायविप्रोजीवेदनापदि॥२॥
यात्रामात्रप्रसिद्ध्यर्थंस्वैःकर्मभिरगर्हितैः॥ अक्लेशेनशरीर
स्यकुर्वीतधनसंचयम्॥३॥ ऋतामृताभ्यांजीवेत्तुमृतेनप्र-
मृतेनवा॥ सत्यानृताभ्यामपिवानश्ववृत्त्याकदाचन॥४॥
ऋतमुञ्छशिलंज्ञेयममृतंस्यादयाचितम्॥ मृतंतुयाचितंभै-
क्ष्यंप्रमृतंकर्षणंस्मृतम्॥५॥

۱۔ تمام عمر کے * چار حصّہ فرض کر کے اول حصّہ تک گروکل مین باس کرے دوسرے حصہ تک شادی کر کے گھر مین رہے۔

۲۔ جو وجہ معاش ایسی ہے کہ حاصل ہونا اوسکا بحالت عدم ایذا رسانی جانداران کم ایذا دہی جانداران ممکن ہے اُس سے براہمن اپنی بسر اوقات کرے بشرطیکہ وقت مصیبت نہو۔

۳۔ اعمال نیک سے اور ایسے طریقہ سے کہ جس سے بدن کو تکلیف نہو صرف اپنے کھانے بھر کو دولت جمع کرے۔

۴۔ رت امرت مرت پرمرت جھوٹھ سچ ان سب طریقون سے زندگی بسر کرے۔

۵۔ انچھ شل کو رت کہتے ہین بغیر مانگے ملے اسکو امرت کہتے ہین مانگے سے ملے اسکو مرت کہتے ہین۔ کھیتی کو پرمرت کہتے ہین۔

* اس مقام پر یہ شک ہو سکتا ہے کہ یقیناً عمر کی تعداد صحیح معلوم نہین ہو سکتی جسکے چار حصّہ مقرر کرے لیکن آدمی کی عمر کلجگ مین سو برس کی ہوتی ہے تو پچیس ۲۵ برس چوتھا حصہ ہوا۔

वसून्वदन्तितुपितॄन्रुद्रांश्चैवपितामहान्॥ प्रपितामहां-स्तथादित्याञ्छ्रुतिरेषासनातनी॥२८४॥ विघसाशीभवेन्नित्यंनित्यंवामृतभोजनः॥ विघसोभुक्तशेषंतुयज्ञशेषंतथा-मृतम्॥२८५॥ एतद्वोऽभिहितंसर्वंविधानंपाञ्चयाज्ञिकम्। द्विजातिमुख्यवृत्तीनांविधानंश्रूयतामिति॥२८६॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां
तृतीयोऽध्यायः३

۲۸۴- پتا کو بسو کہتے ہین پتامہ کو رُدر کہتے ہین پرپتامہ کو ادتیہ کہتے ہین یہ نتیہ شرت ہے-

۲۸۵- براہمنون کے بھوجن سے یا یگیہ کرنے سے جو کھانا بچ رہے اسکو آپ بھوجن کرے

۲۸۶- بھرگ جی کہتے ہین کہ ہے رشی لوگو پنچ یگیہ کی بدھی کہی اب براہمنون کے جیو کا کی بدھ کہتے ہین سنو-

منو جی کا دھرم شاستر بھرگ جی کی سنگھتا

کا تیسرا ادھیاے تمام ہوا-

प्राचीनावीतिनासम्यगपसव्यमतन्द्रिणा ॥ पित्र्यमानिधनात्कार्यं विधिवद्दर्भपाणिना ॥ २७९ ॥ रात्रौ श्राद्धं न कुर्वीत राक्षसी कीर्तिता हि सा ॥ संध्ययोरुभयोश्चैव सूर्ये चैवाचिरोदिते ॥ २८० ॥ अनेन विधिना श्राद्धं त्रिरब्दस्येह निर्वपेत् ॥ हेमन्तग्रीष्मवर्षासु पांचयज्ञिकमन्वहम् ॥ २८१ ॥ न पैतृयज्ञियो होमो लौकिकेऽग्नौ विधीयते ॥ न दर्शेन विना श्राद्धमाहिताग्नेर्द्विजन्मनः ॥ २८२ ॥ यदेव तर्पयत्यद्भिः पितॄन्स्नात्वा द्विजोत्तमः ॥ तेनैव कृत्स्नमाप्नोति पितृयज्ञक्रियाफलम् ॥ २८३ ॥

۲۷۹ - داہنے کندھے پر جنیو رکھے ہوئے آلس کو چھوڑے ہوئے کُش ہاتھ میں لئے ہوئے پتر تیرتھ کرکے شاستر کی ریت سے پتروں کے کرم کرے -

۲۸۰ - رات کے وقت شرادھ نکرنا چاہئے کیونکہ وہ راکشسی ہے اور دونوں سندھیا کے وقت اور پراتہ کال تین گھڑی تک اسمین بھی شرادھ نکرنا چاہئے -

۲۸۱ - اسطرح ہر سال ہیمنت گریشم برشا یعنے جاڑا گرمی برسات تینوں فصلوں میں تین بار شرادھ کرے اور پنچ مہایگیہ تو ہر روز کرے -

۲۸۲ - اگنی ہوتری کو پتر یگیہ سمبندھی ہون دنیا کی آگ میں نہیں ہوتا اور بغیر اماوشیا کے شرادھ نہیں ہوتی -

۲۸۳ - پنچ یگیہ سمبندھی شرادھ نہو سکے تو اسنان کرکے براہمن جل سے ترپن کرے اسی سے سب پتر یگیہ کے پھل کو پا سکتے ہیں -

अपि नः स कुले जायाद्यो नो दद्यात्त्रयोदशीम्॥ पायसं मधुसर्पि-
र्भ्यां प्राक्छाये कुंजरस्य च॥२७४॥ यद्यद्ददाति विधिवत्सम्यक् श्र-
द्धासमन्वितः॥ तत्तत्पितॄणां भवति परत्रानन्तमक्षयम्॥२७५
॥ कृष्णपक्षे दशम्यादौ वर्जयित्वा चतुर्दशीम्॥ श्राद्धे प्रशस्ता-
स्तिथयो यथैता न तथेतराः॥२७६॥ युक्षु कुर्वन्दिनर्क्षेषु सर्वा-
न्कामान्समश्नुते॥ अयुक्षु तु पितॄन्सर्वान्प्रजां प्राप्नोति पुष्क-
लाम्॥ २७७॥ यथा चैवापरः पक्षः पूर्वपक्षाद्विशिष्यते॥ त-
था श्राद्धस्य पूर्वाह्णादपराह्णो विशिष्यते॥ २७८॥

۲۷۴ - پتر لوگ مناتے ہین کہ ہمارے کل مین ایسا شخص پیدا ہو کر جو بھادون کرشن ترپودشی تتھہ یا اسی مہینہ کی کسی اور تتھہ مین اپراہن کال مین (یعنے بعد دوپہر) دودھ اور گھی ملی ہوئی کھیر دیوے -

۲۷۵ - جو چیز بدھ پورک اچھے پرکار سے شردھا سمیت پترونکو دیجاتی ہے اوسکا پھل پرلوک مین بے انتہا ہے -

۲۷۶ - کرشن پکش مین دسمی سے لیکر چتردشی کے سوائے اماوشیا تتھہ جیسی شرادھ مین اچھی ہے ویسی اور نہین -

۲۷۷ - سم تتھہ اور سم نکشتر مین شرادھ کرنے سے سمپورن کامنا ملتی ہے اور وکھم تتھہ اور وکھم نکشتر مین شرادھ کرنے سے علم و دولت والی اولاد ملتی ہے -
جفت[۱] طاق[۲]

۲۷۸ - جسطرح شکل پکش سے کرشن پکش اتم ہے اسیطرح پورباہن کال سے اپراہن کال شرادھ مین اتم ہے -
قبل دوپہر بعد دوپہر

[۱] جیسے دوج وچوتھ وچھٹہ و بہرنی و روہنی وغیرہ -
[۲] جیسے پریوا و تیج و اسونی و کرتکا وغیرہ -

द्वौमासौमत्स्यमांसेनत्रीन्मासान्हारिणेनतु॥ औरभ्रेणाथचतुरःशाकुनेनाथपंचवै॥२६८॥ षण्मासांश्छागमांसेनपार्षतेनचसप्तवै॥ अष्टावेणस्यमांसेनरौरवेणनवैवतु॥२६९॥ दशमासांस्तुतृप्यन्तिवराहमहिषामिषैः॥ शशकूर्मयोस्तुमांसेनमासानेकादशैवतु॥२७०॥ संवत्सरन्तुगव्येनपयसापायसेनच॥ वार्ध्रीणसस्यमांसेनतृप्तिर्द्वादशवार्षिकी॥२७१॥ कालशाकंमहाशल्काःखड्गलोहामिषंमधु॥ आनन्त्यायैवकल्प्यन्तेमुन्यन्नानिचसर्वशः॥२७२॥ यत्किञ्चिन्मधुनामिश्रंप्रदद्यात्तुत्रयोदशीम्॥ तदप्यक्षयमेवस्याद्वर्षासुचमघासुच॥२७३॥

۲۶۸- مچھلی کے گوشت سے دو مہینہ تک اور ہرن کے گوشت سے تین مہینے تک اور بھیڑ کے گوشت سے چار مہینہ تک اور پرند جانور کے گوشت سے پانچ مہینہ تک پتر آسودہ رہتے ہیں۔

۲۶۹- بکرا کے گوشت سے چھ مہینہ تک چتر مرگ کے گوشت سے سات مہینہ تک این نام ہرن کے گوشت سے آٹھ مہینہ تک روَرو نام ہرن کے گوشت سے نو مہینہ تک پتر آسودہ رہتے ہیں۔

۲۷۰- جنگلی سور یا بھینسا کے گوشت سے دس مہینہ تک اور خرگوش اور کچھوا کے گوشت سے گیارہ مہینہ تک

۲۷۱- گیو کے دودھ سے یا اسی دودھ کی کھیر سے ایک برس تک اور ایسا بکرا جسکے دونوں کان پانی پیتے وقت پانی کو چھوئیں اور سفید رنگ ہو اور اندری جسکی چھین ہو اسکے گوشت سے بارہ برس تک

۲۷۲- کال شاک اور مہاسلک (ایک قسم کی مچھلی) اور گینڈا اور لال بکرا ان سبہیں سے کسی کے گوشت دینے سے اور مدھ اور تنی سے بے انتہا برس تک۔

۲۷۳- موسم برسات میں جب ترئودشی تتھ کو مگھا نکشتر ہو اسدن میٹھی چیز دینے سے اکشے یعنے لازوال پھل ہوتا ہے۔

* یعنے بدھیا۔

पतिव्रताधर्मपत्नीयपितृपूजनतत्परा॥ मध्यमन्तुततः पिण्डम
द्यात्सम्यक्सुतार्थिनी॥२६२॥ आयुष्मन्तंसुतंसूतेयशोमेधास-
मन्वितम्॥ धनवन्तंप्रजावन्तंसात्विकंधार्मिकंतथा॥२६३॥ प्र-
क्षाल्यहस्तावाचम्यज्ञातिप्रायंप्रकल्पयेत्॥ ज्ञातिभ्यःसत्कृ
तंदत्त्वाबान्धवानपिभोजयेत्॥२६४॥ उच्छेषणंतुतत्तिष्ठेद्या-
वद्विप्राविसर्जिताः॥ ततोगृहबलिंकुर्यादितिधर्मोव्यवस्थि-
तः॥२६५॥ हविर्यच्चिररात्राययच्चानन्त्यायकल्प्यते॥ पितृभ्यो
विधिवद्दत्तंतत्प्रवक्ष्याम्यशेषतः॥२६६॥ तिलैर्व्रीहियवैर्माषै
रद्भिर्मूलफलेनवा॥ दत्तेनमासंतृप्यन्तिविधिवत्पितरोनृणा-
म्॥२६७॥

۲۶۲ - پت برتا استری پترون کی پوجا کرنے والی لڑکا پیدا ہونے کی مراد سے بیچ
کے پنڈ کو اچھی طرح سے بھوجن کرے۔

۲۶۳ - تو اس استری کے بڑی عمر والا و نیکنام و عقلمند و صاحب اولاد و ستوگن
دھرم والا لڑکا پیدا ہو۔

۲۶۴ - ہاتھ دھو کر آچمن کرکے بچا ہوا کھانا اپنی ذات والون کو کھلاوے اسکے بعد
رشتہ مندون کو۔

۲۶۵ - براہمنون کا پس خوردہ تب تک رہے جب تک براہمن رخصت ہون بعد رخصت
ہونے براہمنون کے جوٹھے استھان کو دھووے اسکے بعد گرہ بل کرے یہ دھرم ہے

۲۶۶ - جو ہبیہ پترونکو بدھ پورک دینے سے بہت دن تک آسودہ رکھتی ہے اور بے
انتہا پھل دیتی ہے وہ سب کہتے ہین۔

۲۶۷ - تل - دھان - جو - اُرد - جل - مول - پھل - اِنہین سے کوئی ایک چیز بھی شاستر
کے موافق دینے سے ایک مہینہ تک پتر آسودہ رہتے ہین۔

दर्भाः पवित्रं पूर्वाह्णो हविष्याणि च सर्वशः॥ पवित्रं यच्च पूर्वोक्तं विज्ञेया हव्यसम्पदः॥२५६॥ मुन्यन्नानि पयः सोमो मांसं यच्चानुपस्कृतम्॥ अक्षारलवणं चैव प्रकृत्या हविरुच्यते॥ २५७॥ विसृज्य ब्राह्मणांस्तांस्तु नियतो वाग्यतः शुचिः॥ दक्षिणां दिशमाकांक्षन्याचेतेमान्वरान्पितॄन्॥२५८॥ दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च॥ श्रद्धा च नो मा व्यगमद्बहुदेयं च नोऽस्त्विति॥२५९॥ एवं निर्वपणं कृत्वा पिण्डांस्तांस्तदनन्तरम्॥ गां विप्रमजमग्निं वा प्राशयेदप्सु वा क्षिपेत्॥२६०॥ पिण्डनिर्वपणं केचित्पुरस्तादेव कुर्वते॥ वयोभिः खादयन्त्यन्ये प्रक्षिपन्त्यनलेऽप्सु वा॥२६१

۲۵۶ - سنتر - پوربا ہن کال ہبشیہ بھوم کا شودھنا جو اوپر کہہ آئے ہین یہ سب ہوکرم کی سمپت (دولت) ہین -

۲۵۷ - منیون کے ان دودھ - سوم لتا کا رس منا بنایا ہوا مانس بے بنا ہوا سیندھا نمک وغیرہ یہ سب سوبھاو سے ہبیہ کہاتے ہین -

۲۵۸ - تو پھر شرادھ مین سنسٹنگ کہنا چاہئے ان براہمنون کو بداکر کے شرادھ کرنے والا پوتر ہو کر چپ دکشن دشا کی طرف ہو کر پتر ون سے یہ بردان مانگے کہ

۲۵۹ - ہمارے کل مین داتا - وید - اولاد کی ترقی ہو شردھا بنی رہے بہت دولت وغیرہ دینے کی چیزین ہون -

۲۶۰ - اسطرح پنڈ دانکو دے کر بعدہ ان پنڈون کو گئو یا براہمن یا بکرا یا اگن کو کھلادے یا جل مین ڈالدے -

۲۶۱ - کوئی آچاری کہتے ہین کہ براہمن بھوجن کے بعد پنڈدان کرنا چاہیئے اور کوئی آچاری ان پنڈون کو پرندون کو کھلانا اور کوئی جل یا اگن مین ڈال دینا کہتے ہین -

श्राद्धभुग्वृषलीतल्पं तदहर्योऽधिगच्छति॥ तस्याः पुरीषे तन्मासं पितरस्तस्य शेरते॥ २५०॥ पृष्ट्वा स्वदितमित्येवं तृप्तानाचामयेत्ततः॥ आचान्तांश्चानुजानीयादभितो रम्यतामिति २५१॥ स्वधास्त्वित्येव तं ब्रूयुर्ब्राह्मणास्तदनन्तरम्॥ स्वधाकारः परा ह्याशीः सर्वेषु पितृकर्मसु॥ २५२॥ ततो भुक्तवतां तेषामन्नशेषं निवेदयेत्॥ यथा ब्रूयुस्तथा कुर्यादनुज्ञातस्ततो द्विजैः॥ २५३॥ पित्र्ये स्वदितमित्येव वाच्यं गोष्ठे तु सुश्रुतम्॥ सम्पन्नमित्यभ्युदये दैवे रुचितमित्यपि॥ २५४॥ अपराह्णस्तथा दर्भा वास्तुसम्पादनं तिलाः॥ सृष्टिर्मृष्टिर्द्विजाश्चाग्र्याः श्राद्धकर्मसु सम्पदः॥ २५५॥

٢٥٠- سنرادھ کا اَن بھوجن کرکے اُس دن رات مین جو کوئی عورت کے ساتھ جماع کرتا ہے اُسکے پتر اُسی عورت کے غلیظ مین ایک مہینہ تک پڑے رہتے ہین-

٢٥١- اچھی طرح بھوجن کیا یہ پوچھکر اور آسودہ جان کر آچمن کرائے سنرادھ ہو کرنیوالا براہمنون سے کہے کہ جاییے-

٢٥٢- بجواب اُسکے براہمن لوگ سودھاستُ کہین پتر کرمون مین سودھا بولنا بڑا اسشیرباد ہے-

٢٥٣- تِسکے بعد سب براہمنون کے بچے ہوئے اُن کو نہیدن کرے جیسا وہ براہمن کہین ویسا کرے-

٢٥٤- ایکو دشت سنرادھ مین ترپت اور پرشن سے ارتھم سو دہنگ کہنا چاہیے بردھ سنرادھ مین سمپن کہنا چاہیے دیوتا کے نسنت جو سنرادھ ہے اُسمین رچتنگ کہنا چاہیے-

٢٥٥- اپراہن کال- کُش گوبر آدسے بھوم کو شودھ کرنا تِل آوازنا- اَن آدکا سنسکار نِپگُن کے پونتر کرنیوالے براہمن یہ سب پدارتھ سنرادھ مین سمپت ہین-

सार्ववर्णिकमन्नाद्यं सन्नीयाप्लाव्य वारिणा॥ समुत्सृजेद्भुक्तवतामग्रतो विकिरन्भुवि॥२४४॥ असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलयोषिताम्॥ उच्छिष्टं भागधेयं स्याद्दर्भेषु विकिरश्च यः॥२४५॥ उच्छेषणं भूमिगतमजिह्मस्याशठस्य च॥ दासवर्गस्य तत्पित्र्ये भागधेयं प्रचक्षते॥२४६॥ आसपिण्डक्रियाकर्म द्विजातेः संस्थितस्य तु॥ अदैवं भोजयेच्छ्राद्धं पिण्डमेकं तु निर्वपेत्॥२४७॥ सहपिण्डक्रियायां तु कृतायामस्य धर्मतः॥ अनयैवावृता कार्यं पिण्डनिर्वपणं सुतैः॥२४८॥ श्राद्धं भुक्त्वा य उच्छिष्टं वृषलाय प्रयच्छति॥ स मूढो नरकं याति कालसूत्रमवाक्शिराः॥२४९॥

۲۴۴ - سب طرح کے ان بینجن وغیرہ سے ملا کر پانی ڈالکر اس ان کو بھوجن کیے ہوئے برہمنوں کے آگے زمین میں کش پر ڈالدے۔

۲۴۵ - جو بالک اگن داہ کرنے کے لائق نہیں تھے اور مر گئے ہیں جو نیرودش نشکل استریوں کو تیاگ کرکے مر گئے ہیں ان سب کو یہ ان جو کش پر ڈالا گیا ہے ملتا ہے۔

۲۴۶ - زمین پہ جو جوٹھا ان ہے وہ داس لوگوں کا ہے مگر وہ داس کٹل اور نٹ کھٹ نہوں

۲۴۷ - برہمن کشتری ویش کے مرنے کے دن سے سپنڈی کریا تک دیو کے نمت برہمن بھوجن نہ کراوے بلکہ پتر کے نمت ایک برہمن بھوجن کراوے اور ایک پنڈ دیوے

۲۴۸ - سپنڈی کرنے کے بعد اماوسیا کی شرادھ کی بدھان سے کنیاہ (چھپاہ) میں بھی پنڈ کو بیٹا دیوے۔

۲۴۹ - جو کوئی شرادھ کے ان کو بھوجن کرکے جوٹھا ان شودر کو دیتا ہے وہ موڑھ نیچے سر کیے ہوئے کال سوتر نام نرک میں جاتا ہے۔

यद्वेष्टितशिरा भुंक्ते यद्भुंक्ते दक्षिणामुखः ॥ सोपानत्कश्च यद्भुंक्ते तद्वै रक्षांसि भुंजते ॥ २३८ ॥ चाण्डालश्च वराहश्च कुक्कुटः श्वा तथैव च ॥ रजस्वला च षण्ढश्च नेक्षेरन्नश्नतो द्विजान् ॥ २३९ ॥ होमे प्रदाने भोज्ये च यदेभिरभिवीक्ष्यते ॥ दैवे कर्मणि पित्र्ये वा तद्गच्छत्ययथातथम् ॥ २४० ॥ घ्राणेन सूकरो हन्ति पक्षवातेन कुक्कुटः ॥ श्वा तु दृष्टिनिपातेन स्पर्शेनावरवर्णजः २४१ ॥ खञ्जो वा यदि वा काणो दातुः प्रेष्योऽपि वा भवेत् ॥ हीनातिरिक्तगात्रो वा तमप्यपनयेत्पुनः ॥ २४२ ॥ ब्राह्मणं भिक्षुकं वापि भोजनार्थमुपस्थितम् ॥ ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञातः शक्तितः प्रतिपूजयेत् ॥ २४३ ॥

۲۳۸۔ سر کو باندھے ہوئے اور دکشن منہ بیٹھے ہوئے اور جوتا پہنے ہوئے جو بھوجن کرتے ہیں وہ بھوجن راکشس کو پہونچتا ہے۔

۲۳۹۔ چانڈال۔ سور۔ مرغا۔ کتا۔ حیض والی عورت نامرد یہ سب لوگ برہمنوں کو بھوجن کرتے ہوئے نہ دیکھیں۔

۲۴۰۔ دیوکرم یا پترکرم میں ان سب کے دیکھنے سے سب کرم نشٹ ہو جاتے ہیں۔

۲۴۱۔ سور سونگھنے سے۔ مرغا پنکھ کی ہوا دینے سے کتا دیکھنے سے شودر چھونے سے ناش کرتا ہے۔

۲۴۲۔ لنگڑا کانا اگرچہ شرادھ کرنیوالے کا خدمتگار بھی ہو کوئی ایک عضو کم رکھنے والا کوئی عضو زیادہ رکھنے والا ان سب کو شرادھ کے مکان سے نکال دے۔

۲۴۳۔ اگر براہمن یا بھکھاری بھوجن کے واسطے آئے ہوں تو نیوتے ہوئے براہمنوں کی اگیا لیکر یتھا شکت ہر ایک کا پوجن کرے۔

स्वाध्यायंश्रावयेत्पित्र्येधर्मशास्त्राणिचैवहि॥आख्यानानी-
तिहासांश्चपुराणानिखिलानिच॥२३२॥हर्षयेद्ब्राह्मणांस्तु-
ष्टोभोजयेच्चशनैःशनैः॥अन्नाद्येनासकृच्चैतान्गुणैश्चपरिचो-
दयेत्॥२३३॥व्रतस्थमपिदौहित्रंश्राद्धेयत्नेनभोजयेत्॥कुत-
पंचासनेदद्यात्तिलैश्चविकिरेन्महीम्॥२३४॥त्रीणिश्राद्धेपवि-
त्राणिदौहित्रःकुतपस्तिलाः॥त्रीणिचात्रप्रशंसन्तिशौचम-
क्रोधमत्वराम्॥२३५॥अत्युष्णंसर्वमन्नंस्याद्भुञ्जीरंस्तेचवाग्य-
ताः॥नचद्विजातयोब्रूयुर्दात्रापृष्टाहविर्गुणान्॥२३६॥यावदु-
ष्णंभवत्यन्नंयावदश्नन्तिवाग्यताः॥पितरस्तावदश्नन्तियाव-
न्नोक्ताहविर्गुणाः॥२३७॥

۲۳۲ - وید دھرم شاستر کتھا اتہاس پران سٹری سوکت ان سب کو براہمنونکو سُناوے -

۲۳۳ - آپ مطمئن ہوکر شیرین بیانی وغیرہ سے براہمنوں کو خوش کرے جلدی نہ کرے - اچھے لڈو سے - اچھی کھیر سے اسطرح سب چیزونکا گن کہہ کہکر بھوجن کراوے -

۲۳۴ - لڑکی کا لڑکا اگر برت میں بھی ہو تو اسکو کسی تدبیر سے شرادھ میں بھوجن ضرور کراوے نیپالی کمل کا آسن دے - شرادھ کی زمین میں تل چھڑکاوے -

۲۳۵ - شرادھ میں تین چیزیں پاک ہیں - ناتی - نیپالی کمل تل - اور تین چیزوں کی تعریف ہے وہ یہ ہیں پوتر رہنا - شانت و دھیرتا -

۲۳۶ - براہمن لوگ مون ہوکر نہایت گرم کھانے کو بھوجن کریں اگر کھلانیوالا چیزوں کا گن پوچھے تو بھی کچھ نہ بولیں -

۲۳۷ - جبتک کھانا گرم رہتا ہے اور کھانیوالے بولتے نہیں ہیں تبتک پتر لوگ بھوجن کرتے ہیں -

गुणांश्च सूपशाकाद्यान्पयो दधि घृतं मधु॥ विन्यसेत्प्रयतः पूर्वं
भूमावेव समाहितः॥ २२६ ॥ भक्ष्यं भोज्यं च विविधं मूलानि
च फलानि च॥ हृद्यानि चैव मांसानि पानानि सुरभीणि च॥
२२७॥ उपनीय तु तत्सर्वं शनकैस्सुसमाहितः॥ परिवेषयेत प्रय
तो गुणान्सर्वान्प्रचोदयन्॥ २२८॥ नास्रमापातयेज्जातु न कुप्ये
न्नानृतं वदेत्॥ न पादेन स्पृशेदन्नं न चैतदवधूनयेत्॥ २२९॥ अस्रं
गमयति प्रेतान्कोपोऽरीननृतं शुनः॥ पादस्पर्शस्तु रक्षांसि दुष्कृ
तीनवधूननम्॥ २३०॥ यद्यद्रोचेत विप्रेभ्यस्तत्तद्दद्यादमत्सरः॥
ब्रह्मोद्याश्च कथाः कुर्यात्पितॄणामेतदीप्सितम्॥ २३१॥

۲۲۶ - اسی طرح سے کہ جس سے زمین میں گرنے نہ پاوے ایک چت ہو کر بھجن دال شاگ
دودھ دہی گھی مدھ کو زمین پر رکھے۔

۲۲۷ - لڈو وغیرہ و کھیر وغیرہ و طرح طرح کے پھل پھول اور ہرن کا ماس اور پینے والی
خوشبودار چیزیں ان سب کو بھی رکھے۔

۲۲۸ - ایک چت ہو کر سب چیزوں کو برہمنوں کے پاس لا کر یہ کہکر کہ یہ میٹھا ہے یہ کھٹا ہے
پروسے۔

۲۲۹ - رونا غصہ کرنا جھوٹھ بولنا ان سب کو چھوڑ دے پاؤں سے ان کو نہ چھوئے
اور نہ اچھال اچھال کر ان کو برتن میں رکھے۔

۲۳۰ - رونے سے پریت کو اور غصہ کرنے سے دشمن کو اور جھوٹھ بولنے سے
کتے کو اور پاؤں سے چھونے سے راکشش کو اور اچھالنے سے پاپی کو وہ ان
ملتا ہے۔

۲۳۱ - دکھ کو چھوڑ کر جو جو چیز برہمنوں کو اچھی معلوم ہو وہ وہ چیز دیوے اور پرماتما کی
کتھا کہے کیونکہ یہ باتیں پتروں کو پیاری ہیں۔

ध्रियमाणेतु पितरि पूर्वेषामेव निर्वपेत्॥ विप्रवद्वापि तं श्राद्धे स्वकं पितरमाशयेत्॥ २२०॥ पिता यस्य निवृत्तः स्याज्जीवेच्चापि पितामहः॥ पितुः स नाम संकीर्त्य कीर्त्तयेत्प्रपितामहम्॥ २२१॥ पितामहो वा तच्छ्राद्धं भुंजीतेत्यब्रवीन्मनुः॥ कामं वा समनुज्ञातः स्वयमेव समाचरेत्॥ २२२॥ तेषां दत्वा तु हस्तेषु सपवित्रं तिलोदकम्॥ तत्पिण्डाग्रं प्रयच्छेत स्वधैषामस्त्विति ब्रुवन्॥ २२३॥ पाणिभ्यां तूपसंगृह्य स्वयमन्नस्य वर्द्धितम्॥ विप्रान्तिके पितॄन्ध्यायन् शनकैरुपनिक्षिपेत्॥ २२४॥ उभयोर्हस्तयोर्मुक्तं यदन्नमुपनीयते॥ तद्विप्रलुम्पन्त्यसुराः सहसा दुष्टचेतसः॥ २२५॥

۲۲۰- پتا کے جیتے ہوئے ہوئے جو پتامہ وغیرہ تین پرش ہین اُنکی شرادھ کرے یا پتا کے برہمن کی جگہہ پتا ہی کو بھوجن کراوے اور پتامہ پرپتامہ کو پنڈ دیوے اور دونکی سمت برہمن بھوجن بھی کراوے

۲۲۱- جسکا پتا مرگیا ہو اور پتامہ جیتا ہو وہ پتا کا نام لیکر پرپتامہ کا نام لیوے -

۲۲۲- یا جسطرح جیتے ہوئے پتا کو بھوجن کرانا کہا ہے اُسیطرح جیتے ہوئے پرپتامہ کو بھوجن کراوے پتا پرپتامہ کو پنڈ دیوے اس بات کو منو جی نے کہا ہے یا پتامہ کی اگیا پاکر پتا پرپتامہ و پرپتامہ کو پنڈ دیوے پتامہ کو بھوجن کرا دے -

۲۲۳- اُن برہمنوں کے ہاتھہ میں تل جو کُش [illegible] پڑے ہوئے ہون رکھا ہوا جو تھوڑا تھوڑا جل ہے اُسکو پتا وغیرہ تینوں [illegible] کے برہمنون کو سلسلہ سے دیوے -

۲۲۴- آپ دونوں ہاتھوں سے کھانے کی سب چیز کو رسوئی میں سے باہر لاکر پتردن کا دھیان کرتا ہوا برہمنوں کے پاس آہستہ سے پروسے -

۲۲۵- ایک ہاتھہ سے لائے ہوئے اُن کو اسُر لوگ چھین لیتے ہیں اسلیئے دونوں ہاتھہ سے لانا چاہیئے -

अपसव्यमग्नौ कृत्वा सर्वमावृत्य विक्रमम्॥ अपसव्येन हस्ते
न निर्वपेदुदकं भुवि॥२१४॥ त्रींस्तु तस्माद्धविःशेषात्पिराडा
न्कृत्वा समाहितः॥ औदकेनैव विधिना निर्वपेद्दक्षिणामुख
॥२१५॥ न्युप्य पिराडांस्ततस्तांस्तु प्रयतो विधिपूर्वकम्॥ तेषु द
र्भेषु तं हस्तं निमृज्याल्लेपभागिनाम्॥२१६॥ आचम्योदक्प
रावृत्य त्रिरायम्य शनैरसून्॥ षड्ऋतूंश्च नमस्कुर्यात्पितॄनेव
च मंत्रवित्॥२१७॥ उदकं निनयेच्छेषं शनैः पिराडान्तिके पुन
॥ अवजिघ्रेच्च तान्पिराडान्यथान्युप्तान्समाहितः॥२१८॥
पिराडेभ्यस्त्वल्पिकां मात्रां समादायानुपूर्वशः॥ तानेव विप्रा
नासीनान्विधिवत्पूर्वमाशयेत्॥२१९॥

۲۱۴ - اگن ہون کو دکشن دشا مین کرکے آپ سبیہ ہوکر داہنے ہاتھ سے پنڈ رکھنے کی
زمین پر جل دیوے۔

۲۱۵ - ہون سے جو ہبیہ بچا ہو اُس سے تین پنڈ بنا کر دکشن کی طرف منھ کرکے
داہنے ہاتھ سے کشوں کے اوپر اُن پنڈوں کو ایک چت ہوکر دیوے

۲۱۶ - جو بدھ کرم کانڈ کے سوتر مین لکھی ہے اسکے مطابق کشوں پر اُن پنڈوں کو رکھکر
پنڈ کے نیچے کا جو کش ہے اُسکی جڑ مین ہاتھ کو پونچھے بر دادا پردادا وغیرہ تین پرکھوں
کی ترپت کیواسطے۔

۲۱۷ - منتر جاننے والا اُتر منھ ہوکر آچمن اور تین پرانایام یتھا شکت کرکے بسنت وغیرہ
چھ رتون کو اور پتروں کو نمسکار کرے۔

۲۱۸ - پنڈ دان سے پہلے پنڈ رکھنے کی زمین پر جو جل دیا تھا اُس پاتر مین بچا ہوا جو جل ہو
اسکو سب پنڈوں کے پاس سلسلے سے دیوے پیچھے اُن پنڈوں کو ایک چت ہوکر سلسلے سے سونگھے۔

۲۱۹ - پنڈوں سے تھوڑا تھوڑا اُس سلسلے سے لیکر [illegible]

आसनेषूपक्लृप्तेषु बर्हिष्मत्सु पृथक्पृथक्॥ उपस्पृष्टोदकान्सम्यग्विप्रांस्तानुपवेशयेत्॥२०८॥ उपवेश्य तु तान्विप्रानासनेष्वजुगुप्सितान्॥ गन्धैर्माल्यैः सुरभिभिरर्चयेद्दैवपूर्वकम्॥२०९॥ तेषामुदकमानीय सपवित्रांस्तिलानपि॥ अग्नौ कुर्यादनुज्ञातो ब्राह्मणो ब्राह्मणैः सह॥२१०॥ अग्नेः सोमयमाभ्यां च कृत्वाप्यायनमादितः॥ हविर्दानेन विधिवत्पश्चात्संतर्पयेत्पितॄन्॥२११॥ अग्न्यभावे तु विप्रस्य पाणावेवोपपादयेत्॥ यो ह्यग्निः स द्विजो विप्रैर्मन्त्रदर्शिभिरुच्यते॥२१२॥ अक्रोधनान्सुप्रसादान्वदन्त्येतान्पुरातनान्॥ लोकस्याप्यायने युक्ताञ्छ्राद्धदेवान्द्विजोत्तमान्॥२१३॥

۲۰۸- الگ الگ کُش کے آسنوں پر نیوتے ہوئے براہمنوں کو اسنان اور آچمن کرا کے بٹھلا دے-

۲۰۹- پہلے دیوکارج میں نیوتے ہوئے براہمنوں کی پھول مالا وغیرہ سے پوجن کرے بعد اسکے پتر کارج میں نیوتے ہوئے براہمنوں کی بھی پوجن کرے

۲۱۰- کُش تِل سمیت جل کو براہمنوں کو دے کر اُن کی اگیا لیکر اُن براہمنوں سمیت اگن میں ہون کرے-

۲۱۱- پہلے اگن سوم یم اِن سب کو ہبیہ دے کر پیچھے پتروں کو اَن وغیرہ دیوے

۲۱۲- اگن نہو تو براہمن کے ہاتھوں ہی میں ہون کرے جو اگن سو براہمن ہے اسبات کو منتر جاننے والے براہمنوں نے کہا ہے-

۲۱۳- تارک غصہ و خوش رو و قدیم و ترقی عالم میں کوشش کرنے والے شرادھ کے پاتر براہمن ہی ہیں اسبات کو مُن وغیرہ رشیوں نے کہا ہے اسلئے دیوتا رُوپ شرادھ کو براہمن کے ہاتھ میں دینا سدھ ہے-

राजतैर्भाजनैरेषामथो वा रजतान्वितैः ॥ वार्यपि श्रद्धया दत्तम
क्षयायोपकल्पते ॥ २०२ ॥ देवकार्याद्द्विजातीनां पितृकार्यं वि
शिष्यते ॥ दैवं हि पितृकार्यस्य पूर्वमाप्यायनं स्मृतम् ॥ २०३ ॥
तेषामारक्षभूतन्तु पूर्वं दैवं नियोजयेत् ॥ रक्षांसि हि विलुंपंति
श्राद्धमारक्षवर्जितम् ॥ २०४ ॥ दैवाद्यन्तं तदीहेत पित्राद्यन्तं न
तद्भवेत् ॥ पित्राद्यन्तं त्वीहमानः क्षिप्रं नश्यति सान्वयः ॥ २०५ ॥
शुचिं देशं विविक्तं च गोमयेनोपलेपयेत् ॥ दक्षिणाप्रवणं चैव-
प्रयत्नेनोपपादयेत् ॥ २०६ ॥ अवकाशेषु चोक्षेषु नदीतीरेषु चै-
व हि ॥ विविक्तेषु च तुष्यन्ति दत्तेन पितरः सदा ॥ २०७ ॥

۲۰۲ — ان سب پتروں کو روپے کے برتن مین یا جس برتن مین روپا ملا ہوا ہو اسمین اگر صرف پانی بھی دیوے تو لازوال خوشی حاصل ہوا۔

۲۰۳ — براہمن کشتری ویشیون کے دیو کارج سے پتر کارج بڑا ہے اسوجہ دیو کارج پہلے ہونے سے پتر کارج پورا۔

۲۰۴ — پتر کارج کی رکشا کرنیوالے دیو کارج کو پہلے کرنا چاہئے رکشا ہت کارج کو راکشش لے لیتے ہین۔

۲۰۵ — پتر کارج کے آد اور انت مین دیو کارج کرنا چاہئے اور دیو کارج کے آد اور انت مین پتر کارج کرنے والا اپنے ونش سمیت جلد ناش ہوجاتا ہے۔

۲۰۶ ایکانت پوتر دکشن کی طرف دھرت دیش کو گوبر سے لیپے۔

۲۰۷ — سوبھاؤ سے شدھ بن وغیرہ جو دیش ندی کے کنارے آدمیون سے خالی ہو ایسی جگہہ شرادھ کرنے سے پتر لوگ ہمیشہ آسودہ رہتے ہین۔

दैत्यदानवयक्षाणांगन्धर्वोरगरक्षसाम्॥सुपर्णाकिन्नराणां चस्मृताबर्हिषदोऽत्रिजाः॥१९६॥सोमपानामविप्राणांक्ष-त्रियाणांहविर्भुजः॥वैश्यानामाज्यपानामशूद्राणांतुसुकालिनः॥१९७॥सोमपास्तुकवेःपुत्राहविष्मन्तोऽङ्गिरःसुताः पुलस्त्यस्याज्यपाःपुत्रावसिष्ठस्यसुकालिनः॥१९८॥अग्नि-दग्धानग्निदग्धान्काव्यान्बर्हिषदस्तथा॥अग्निष्वात्तांश्चसौम्यांश्चविप्राणामेवनिर्दिशेत्॥१९९॥यएतेतुगणा मुख्याःपितॄणांपरिकीर्त्तिताः॥तेषामपीहविज्ञेयंपुत्रपौत्रमनन्तकम्॥२००॥ऋषिभ्यःपितरोजाताःपितृभ्योदेवमानवाः॥देवेभ्यस्तुजगत्सर्वंचरंस्थाण्वनुपूर्वशः॥२०१॥

۱۹۶ - دیتیہ - دانو - یکش - گندھرب - اُرگ - راکشش - سپرن - کنر - ان سب کا پتر اتر کا بیٹا برہشد ہے -

۱۹۷ - براہمن - کشتری - ویشیہ - شودر - ان سب کے پتر بہ ترتیب سلسلہ سوم پہ - ہور بھج - آجیپ - سکالی ہیں -

۱۹۸ - کوی - انگرا - پلستیہ - بششٹ کے پتر بہ ترتیب سلسلہ سوم پہ - ہور بھج - آجیپ - سکالی ہیں -

۱۹۹ - اگن دگدھ - انگن - دگدھ کاویہ - برہشد - اگن شوات - سوم پہ بہ نسبت براہمن کے پتر ہیں -

۲۰۰ - یہ سب پتر مقدم ہیں انھوں کے بیٹے اور پوتے بے نہایت ہیں -

۲۰۱ - رشیوں سے پتر پیدا ہوئے ہیں اور پتروں سے دیوتا اور آدمی پیدا ہوئے ہیں - دیوتوں سے ساکن و متحرک جاندار یعنی تمام عالم پیدا ہوا ہے -

आमंत्रितस्तु यः श्राद्धे वृषल्या सह मोदते ॥ दातुर्यद्दुष्कृतं किं
चित्तत्सर्व्वं प्रतिपद्यते ॥ १९१ ॥ अक्रोधनाः शौचपराः सततं
ब्रह्मचारिणः ॥ न्यस्तशस्त्रा महाभागाः पितरः पूर्वदेवताः ॥ १९२
यस्मादुत्पत्तिरेतेषां सर्वेषामप्यशेषतः ॥ ये च यैरुपचर्याः स्यु
र्नियमैस्तान्निबोधत ॥ १९३ ॥ मनोर्हैरण्यगर्भस्य ये मरीच्या-
दयः सुताः ॥ तेषामृषीणां सर्वेषां पुत्राः पितृगणाः स्मृताः ॥
१९४ ॥ विराट्सुताः सोमसदः साध्यानां पितरः स्मृताः ॥ अग्नि
ष्वात्ताश्च देवानां मारीचा लोकविश्रुताः ॥ १९५ ॥

۱۹۱ - شرادھ کرم مین نیوتا پاکر جو برہمن شودر کی استری سے بھوگ کرتا ہے وہ شرادھ
کرنیوالے کے سپورن پاپ کو پاتا ہے۔

۱۹۲ - پتر لوگ کرودھ سے رہت باہر اور بھیتر سے پوتر راگ اور دویش سے رہت
استری بھوگ سے رہت لڑائی سے وویاد غیرہ آٹھ گن سے بھرے ہوئے مہا بھاگی
آدی دیوتا روپ ہین اسوجہ سے شرادھ کرنے والا اور شرادھ مین بھوجن کرنیوالا دونون
کرودھ سے رہت ہون۔

۱۹۳ - جس سے ان سب کی پیدایش ہے، اور جن نیمون سے جکا سیون ہے، ان سب کو سنیے

۱۹۴ - برہما کے پتر یعنے منوجی کے مریچ وغیرہ جو پتر ہین تنھون کے جو پتر ہین سو پتر
گن ہین۔

۱۹۵ - سادھو گن کے پتر براٹ کے پتر سوم سد ہین دیوتون کے پتر اگنشواتت ہین یہ
سب مریچ کے پتر ہین اور لوک مین پرسدھ ہین۔

ہ یعنی حصول مراد کی تمنا۔

ہ یعنے مراد نہ حاصل ہونے مین رنج۔

त्रिणाचिकेतः पंचाग्निस्त्रिसुपर्णः षडंगवित्॥ ब्रह्मदेयात्म-
सन्तानो ज्येष्ठसामग एव च॥१८५॥ वेदार्थवित्प्रवक्ता च ब्रह्म-
चारी सहस्रदः॥ शतायुश्चैव विज्ञेया ब्राह्मणाः पंक्तिपावनः
॥१८६॥ पूर्वेद्युरपरेद्युर्वा श्राद्धकर्मण्युपस्थिते॥ निमंत्रये-
त त्र्यवरान्सम्यग्विप्रान्यथोदितान्॥१८७॥ निमंत्रितो द्विजः
पित्र्ये नियतात्मा भवेत्सदा॥ न च छन्दांस्यधीयीत यस्य श्राद्धं
च तद्भवेत्॥१८८॥ निमंत्रितान्हि पितर उपतिष्ठन्ति तान्द्विजा-
न्॥ वायुवच्चानुगच्छन्ति तथासीनानुपासते॥१८९॥ केति-
तस्तु यथान्यायं हव्यकव्ये द्विजोत्तमः॥ कथंचिदप्यतिक्राम-
न्पापः सूकरतां व्रजेत्॥१९०॥

۱۸۵ - ترناچکیت۔ اگن ہوتری - تر سپرن بیاکرن وغیرہ چھ انگون کا پڑھنے والا براہم
ودواہ سے پیدا ہوا سام وید کے آرنیک بھاگ کو پڑھنے والا چھ پنگت پوتر کرنیوالے ہین -
۱۸۶ - وید ارتھ کا جاننے والا اور کہنے والا برہم چاری اور ہزار گئو دینے والا سو برس کا
ہو سو پنگت کو پوتر کرنیوالا ہے -
۱۸۷ - شرادھ کرنے سے ایک دن پہلے یا اسی دن تین سے زیادہ اچھے براہمن ملسکین
تو انکو نیوتا دینا نہ مل سکین تو ایک یا دو یا تین کو بھی نیوتا دینا چاہیے -
۱۸۸ - نیوتا پاکر براہمن اس رات دن مین استری سے بھوگ کرے اور وید کو بھی نہ پڑھے
اور شرادھ کرنیوالا بھی یہ دونون کرم نکرے -
۱۸۹ - نیوتا پاتے ہوئے براہمن کے پاس پتر لوگ کھڑے رہتے ہین اور پون روپ ہوا
ہوکر براہمن کے پیچھے پیچھے چلتے ہین -
۱۹۰ - دیو کرم اور پتر کرم مین نیوتا پاکر براہمن اگر کسیطرح بھوجن نکرے تو اُس پاپ
سے دوسرے جنم مین شوکر ہوتا ہے -

सोमविक्रयिणे विष्ठा भिषजे पूयशोणितम् ॥ नष्टं देवलके दत्त
मप्रतिष्ठं तु वार्धुषौ ॥ १८० ॥ यत्तु वाणिजके दत्तं नेह नामुत्र तद्भ
वेत् ॥ भस्मनीव हुतं हव्यं तथा पौनर्भवे द्विजे ॥ १८१ ॥ इतरेषु
त्वपांक्त्येषु यथोद्दिष्टेष्वसाधुषु ॥ मेदोऽसृङ्मांसमज्जास्थि
वदन्त्यन्नं मनीषिणः ॥ १८२ ॥ अपांक्त्योपहता पंक्तिः पाव्य
ते यैर्द्विजोत्तमैः ॥ तान्निबोधत कार्त्स्न्येन द्विजाग्र्यान्पंक्तिपा
वनान् ॥ १८३ ॥ अग्र्याः सर्वेषु वेदेषु सर्वप्रवचनेषु च ॥ श्रोत्रि
यान्वयजाश्चैव विज्ञेयाः पंक्तिपावनाः ॥ १८४ ॥

۱۸۰ - سوم کتا کے بیچنے والے براہمن کو دان دینے سے دانا دوسرے جنم مین غلیظ کھانیوالا جانور ہوتا ہے اور اسیطرح چیو کالے کیلئے علاج کرنے والے براہمن کو دان دینے سے دانا دوسرے جنم مین خون اور پیپ پینے والا جانور ہوتا ہے اور مزدوری لیکر تین برش تک دیو مورت کی پوجا کرنیوالا براہمن اور بیاج لینے والے براہمن کو دان دینے سے دان کا پھل نہین ہوتا۔

۱۸۱ - بنیا کے کرم سے جینے والے براہمن کو دان دینے سے اِس لوک اور پرلوک مین دان کا پھل نہین ہوتا اور پہلے پت کو چھوڑکر دوسرا پت کرنیوالی جو استری ہے اُسمین دوسرے پت سے جو لڑکا پیدا ہوا اُسکو دان دینا کیسا ہے جیسے راکھ مین ہون کرنا۔

۱۸۲ - جو براہمن پنگت مین بٹھلانے کے لائق نہین ہین اونکو دان دینے سے دوسرے جنم مین دانا سینہ کا گوشت و خون و ہڈی وغیرہ کھانیوالا جانور ہوتا ہے۔

۱۸۳ - جو پنگت چور وغیرہ براہمنون سے دوشت ہوا اُسکو پوتر کرنیوالے جو براہمن ہین اُنکو سنو۔

۱۸۴ - جس کُل مین دش پرش تک وید اور شاستر کا پڑھنا اور پڑھانا چلا آیا ہے اُس کُل مین پیدا ہوا اور چارو وید کے چھ انگ دیا کرن وغیرہ کو پڑھا سکتا ہو وہ براہمن پنگت کا پوتر کرنیوالا ہے۔

तौतुजातौपरक्षेत्रेप्राणिनौप्रेत्यचेहच॥ दत्तानिहव्यकव्यानिनाशयेतेप्रदायिनाम्॥ १७५॥ अपांक्त्योयावतःपांक्त्यान्भुञ्जानाननुपश्यति॥ तावतान्नफलंप्रेत्यदाताप्राप्नोतिबालिशः॥ १७६॥ वीक्ष्यान्धोनवतेःकाणः षष्टेः श्वित्रीशतस्यतु॥ पापरोगीसहस्रस्यदातुर्नाशयतेफलम्॥ १७७॥ यावतःसंस्पृशेदंगैर्ब्राह्मणाञ्छूद्रयाजकः॥ तावतान्नभवेद्दातुःफलंदानस्यपौर्तिकम्॥ १७८॥ वेदविच्चापिविप्रोऽस्यलोभात्कृत्वाप्रतिग्रहम्॥ विनाशंभवतिक्षिप्रमामपात्रमिवाम्भसि॥ १७९॥

۱۷۵ - ان دونون کو دیو یا پتر کرم مین بھوجن کرانے سے اور دان دینے سے داتا کو پرلوک مین کچھ پھل نہین ملتا۔

۱۷۶ - جو براہمن پنگت کے لائق نہین ہے، وہ پنگت کے لائق جتنے براہمنون کو بھوجن کرتے ہوئے دیکھتا ہے، اتنے کا پھل داتا نہین پاتا۔

۱۷۷ - اندھا - کانا - سفید کوڑھ والا - راج روگی - ان سب کے دیکھنے سے بترتیب سلسلہ ۹۰ - ۶۰ - ۱۰۰ - ۱۰۰۰ - براہمن بھوجن کرانیکا پھل بھوجن کرانے والے کو نہین ملتا ہے

۱۷۸ - شودر کی یگیہ مین یگیہ کرانے والا براہمن اپنے انگون سے جتنے براہمنونکو چھوتا ہے اتنے براہمنونکو دینے کا پھل داتا نہین پاتا اور شرادھ مین بھی اچھے براہمنونکی پنگت مین شودر کو یگیہ کرانیوالا براہمن اگر بیٹھکر بھوجن کرے تو جتنے براہمن بھوجن کرتے ہون - ان سب کے بھوجن کرانیکا پھل داتا نہین پا سکتا -

۱۷۹ - شودر کو یگیہ کرانیوالے براہمن سے لوبھ کرکے وید پڑھنے والا براہمن بھی جو دان لیوے تو جھٹ پٹ ناش ہو جاتا ہے جیسے مٹی کا کچا برتن پانی مین۔

* اسمین یہ شک ہے کہ اندھا تو دیکھ نہین سکتا کسطرح پھل کو ناش کریگا - اسکا جواب یہ ہے کہ دیکھنے کے مقام مین لینے بھوجن کرانے والے براہمن کے پاس بیٹھا ہو۔

अपांक्तदानेयोदातुर्भवत्यूर्ध्वंफलोदयः॥ दैवेहविषिपित्र्येवा तम्प्रवक्ष्याम्यशेषतः॥१६९॥ अव्रतैर्यद्द्विजैर्भुक्तंपरिवेत्रादि- भिस्तथा॥ अपांक्तेयैर्यदन्यैश्चतद्वैरक्षांसिभुंजते॥१७०॥दारा ग्निहोत्रसंयोगंकुरुतेयोऽग्रजेस्थिते॥ परिवेत्तासविज्ञेयःप- रिवित्तिस्तुपूर्वजः॥१७१॥परिवित्तिःपरिवेत्ताययाचपरि- विद्यते॥ सर्वेतेनरकंयान्तिदातृयाजकपंचमाः॥१७२॥भ्रा तुर्मृतस्यभार्यायांयोऽनुरज्येतकामतः॥ धर्मेणापिनियु- क्तायांसज्ञेयोदिधिषूपतिः॥१७३॥परदारेषुजायेतेद्वौसुतौ कुण्डगोलकौ॥ पत्यौजीवतिकुण्डःस्यान्मृतेभर्तरिगोल- कः॥१७४॥

۱۶۹ - دیوکرم یا پترکرم مین ننِدک براہمنون کو بھوجن کرانے سے جو پھل پرلوک مین ملتا ہے اُسکو ہم (یعنے بھرگ جی) کہتے ہین کہ

۱۷۰ - اوپر کہے ہوئے ننِدت براہمن جو بھوجن کرتے ہین وہ راکشس بھوجن کرتے ہین یعنے کچھ پھل نہین ہوتا۔

۱۷۱ - بے بیواہے سگے بڑے بھائی کے ہوتے ہوئے جو چھوٹا بھائی بیواہ کرے اور اگن ہوتر کرے تو بڑا بھائی پریت کہلاتا ہے اور چھوٹا بھائی پربتیا کہلاتا ہے۔

۱۷۲ - پریت - پربتیا - پربتیا - (یعنی جس کنیا سے بیواہ ہوا ہو) اور اُس کنیا کو دینے والا اور بیواہ کرانے والا - براہمن یہ پانچون نرک مین جاتے ہین۔

۱۷۳ - مرے ہوئے بھائی کی استری کے ساتھ بھوگ کرنے کی بدھ جو آگے کہینگے اُس بدھ سے بھی اپنی اِچھیا سے بھوگ کرنیوالا ددھشوپت کہلاتا ہے۔

۱۷۴ - پر استری مین دو پتر ہوتے ہین ایک کنڈ دوسرا گولک یعنی جیوت پت والی کا بیٹا کنڈ کہلاتا ہے اور مرے پت والی کا بیٹا گولک کہلاتا ہے۔

स्रोतसांभेदकोयश्चतेषांचावरणेरतः॥ गृहसंवेशकोदूतोवृक्षारोपकएवच॥ १६३॥ श्वक्रीडीश्येनजीवीचकन्यादूषकएवच॥ हिंस्रोवृषलवृत्तिश्चगणानांचैवयाजकः॥ १६४॥ आचारहीनः क्लीबश्चनित्यंयाचनकस्तथा॥ कृषिजीवीश्लीपदीचसद्भिर्निन्दितएवच॥ १६५॥ औरभ्रिकोमाहिषिकःपरपूर्वापतिस्तथा॥ प्रेतनिर्यातकश्चैववर्जनीयाःप्रयत्नतः॥ १६६॥ एतान्विगर्हिताचारानपाङ्क्तेयान्द्विजाधमान्॥ द्विजातिप्रवरोविद्वानुभयत्रविवर्जयेत्॥ १६७॥ ब्राह्मणस्त्वनधीयानस्तृणाग्निरिवशाम्यति॥ तस्मैहव्यंनदातव्यंनहिभस्मनिहूयते॥ १६८॥

١٦٣- بندھے ہوئے پانی کو دوسرے مقام پر لیجانے والا- بہتے ہوئے پانی کو روکنے والا پیشہ معماری سے اوقات بسر کرنیوالا- دوت- مزدوری لیکر درخت لگانیوالا-

١٦٤- کتوں سے کھیل کرنیوالا- باز وغیرہ پرندے سے اوقات بسر کرنیوالا- کنواری کنیا سے بھوگ کرنیوالا- جیو ہتیا کرنے والا- شودروں سے اوقات بسر کرنیوالا- بہت آدمیوں کو یگیہ کرانیوالا

١٦٥- آچار نہ رکھنے والا- نامرد- ہر روز مانگنے والا- کھیتی سے اوقات بسر کرنیوالا- سوجھا پاؤں والا اچھے لوگوں سے نندا پانیوالا-

١٦٦- بھیڑ بھینس سے زندگی بسر کرنیوالا- اپنے شوہر کو چھوڑکر دوسرے شخص سے شادی کرنیوالی جو عورت اسکا دوسرا شوہر مزدوری لیکر مردہ کو پھونکنے والا-

١٦٧- یہ سب نندک آچار والے ہیں براہمنوں میں ادھم ہیں- پنگت میں بٹھانیکے لائق نہیں ہیں- ان سب کو دیوتا یا پترکرم میں بھوجن نہ کراوے-

١٦٨- جیسے پھوس کی آگ جھٹ پٹ بجھ جاتی ہے اسیطرح مورکھ براہمن ہے اسلیے ہبیہ اور کبیہ اسکو نہ دینا چاہیے کیونکہ راکھ میں ہون نہیں ہو سکتا-

अकारणपरित्यक्तामातापित्रोर्गुरोस्तथा ॥ ब्राह्मैर्यौनैश्चस-
म्बन्धैः संयोगंपतितैर्गतः ॥ १५७ ॥ अगारदाहीगरदः कुण्डा-
शीसोमविक्रयी ॥ समुद्रयायीबन्दीचतैलिकः कूटकारकः ॥
१५८ ॥ पित्राविवदमानश्चकितवोमद्यपस्तथा ॥ पापरोग्यभि
शस्तश्चदाम्भिकोरसविक्रयी ॥ १५९ ॥ धनुःशराणांकर्ताच-
यश्चाग्रेदिधिषूपतिः ॥ मित्रध्रुग्द्यूतवृत्तिश्चपुत्राचार्यस्तथैव-
च ॥ १६० ॥ भ्रामरीगण्डमालीचश्वित्र्यथोपिशुनस्तथा ॥ उन्म-
त्तोऽन्धश्चवर्ज्याः स्युर्वेदनिन्दकएवच ॥ १६१ ॥ हस्तिगोश्वोष्ट्र-
दमकोनक्षत्रैर्यश्चजीवति ॥ पक्षिणांपोषकोयश्चयुद्धाचार्य-
स्तथैवच ॥ १६२ ॥

۱۵۷ - بے وجہ ماتا پتا گرو کو ترک کرنیوالا - پتت سے پڑھنے والا - پتت کو پڑھانیوالا - پتت سے وواہ وغیرہ رشتہ منسوبی کرنیوالا -
۱۵۸ - گھر میں آگ لگانیوالا - زہر دینے والا - کنڈ* کا ان کھانیوالا - سوم لتا کا بیچنے والا - سمندر میں جانیوالا - بندی - تیل کے واسطے تل وغیرہ پیلنے والا - بیہودہ بکنے والا -
۱۵۹ - باپ سے لڑائی کرنیوالا - آپ پانسہ کھیلنا نہیں جانتا اور اپنے واسطے دوسرے کو پالتا رکھانیوالا - شراب پینے والا - کوڑھی - لعنت بہانے سے دھرم کرنے والا - رس بیچنے والا -
۱۶۰ - تیر کمان رکھنے والا - بڑی سگی بہن کی شادی ہوئے بغیر چھوٹی بہن سے شادی کرنیوالا - دوست سے دشمنی کرنیوالا - قمار بازی سے اوقات بسر کرنیوالا - بیٹے سے پڑھنے والا -
۱۶۱ - بھرنگی - گنڈ مالا - سفید کوڑھ - ان روگوں میں سے کوئی ایک روگ رکھنے والا - کھوٹا آدمی - دیوانہ - اندھا - وید کی نندا کرنیوالا -
۱۶۲ - ہاتھی - بیل - اونٹ - گھوڑا - ان سب کو بدھیا کرنیوالا - جوتش ودیا سے اوقات بسر کرنیوالا - پرند پالنے والا - لڑائی کے واسطے علم اسلحہ سکھانیوالا -

* یعنی باپ کے ترکے بنا پاپی کا ان کھانیوالا -

चिकित्सकान्देवलकान्मांसविक्रयिणस्तथा॥ विपणेन च
जीवन्तो वर्ज्याः स्युर्हव्यकव्ययोः॥१५२॥ प्रेष्यो ग्रामस्य राज्ञ-
श्च कुनखी श्यावदन्तकः॥ प्रतिरोद्धा गुरोश्चैव त्यक्ताग्निर्वा-
र्धुषिस्तथा॥१५३॥ यक्ष्मी च पशुपालश्च परिवेत्ता निराकृतिः
॥ब्रह्मद्विट् परिवित्तिश्च गणाभ्यन्तर एव च॥१५४॥ कुशील
वोऽवकीर्णी च वृषलीपतिरेव च॥ पौनर्भवश्च काणश्च यस्य
चोपपतिर्गृहे॥१५५॥ भृतकाध्यापको यश्च भृतकाध्यापित-
स्तथा॥ शूद्रशिष्यो गुरुश्चैव वाग्दुष्टः कुण्डगोलकौ॥१५६॥

۱۵۲ - بید (یعنی طبیب) مزدوری لیکر تین برش تک دیوتو نکی مورت کا پوجن کرنیوالا - ماس بیچنے والا - بنیون کے کرم سے جینے والا -

۱۵۳ - مزدوری لیکر رعیت یا راجا کی فرمانبرداری کرنیوالا - خراب ناخن رکھنے والا - پیدایشی سیاہ دانت والا گرو کے خلاف کام کرنے والا - اختیار ہوتے ہوئے اگن ہوتر نہ کرنیوالا سود بیاج سے اوقات بسر کرنیوالا -

۱۵۴ چھئی روگ والا پشو کے پالنے سے اوقات بسر کرنیوالا - پریتیا پنچ مہا یگیہ کو نہ کرنیوالا برہمنوں سے دشمنی کرنیوالا پریت - گنا بھینتر -

۱۵۵ - ناچ سے اوقات بسر کرنیوالا عورت کے جماع سے ناپاک برہم چاری شودر استری کا شوہر دوسرے شوہر سے عورت کا بیٹا کانا اور جسکی عورت نے دوسرا شوہر کیا ہو -

۱۵۶ - مزدوری لیکر پڑھانیوالا مزدوری دیکر پڑھنے والا شودر کا چیلہ شودر کا گرو سخت گفتار ستیت کو پڑھانیوالا - کنڈ - گولک -

* دیکھو اشلوک ۱۷۱ † دیکھو اشلوک ۱۷۱ - ‡ یعنے سب جانداروں کے رہنے کے لئے بڑے آدمیوں نے جو مٹھ وغیرہ عمارت بنائی ہو یا دولت دی ہو اس سے اوقات بسر کرنیوالا - (یعنے بحالت زندگی ایک شوہر کے دوسرے سے پیدا ۱ اشلوک) - لا یعنے بعد وفات ایک شوہر کے دوسرے سے پیدا - دیکھو اشلوک ۱۶۶ و ۱۷۴ -

एषामन्यतमोयस्यभुञ्जीतश्राद्धमर्चितः॥ पितृणांतस्यतृप्तिः
स्याच्छाश्वतीसाप्तपौरुषी॥१४६॥एषवैप्रथमःकल्पःप्रदाने
हव्यकव्ययोः॥ अनुकल्पस्त्वयंज्ञेयःसदासद्भिरनुष्ठितः॥१४७
॥मातामहंमातुलंचस्वस्रीयंश्वशुरंगुरुम्॥ दौहित्रंविट्पतिं-
बन्धुमृत्विग्याज्यौचभोजयेत्॥ १४८ ॥ नब्राह्मणंपरीक्षेतदैवे
कर्मणिधर्मवित्॥ पित्र्येकर्मणितुप्राप्तेपरीक्षेतप्रयत्नतः॥
१४९ ॥येस्तेनपतितक्लीबायेचनास्तिकवृत्तयः॥ तान्हव्यक-
व्ययोर्विप्राननर्हान्मनुरब्रवीत्॥ १५० ॥जटिलंचानधीयानं-
दुर्बलंकितवंतथा॥ याजयन्तिचयेपूगांस्तांश्चश्राद्धेनभो-
जयेत्॥ १५१॥

۱۴۶- ان دید پاٹھیون مین سے ایک کو بھی اگر پوجا کرکے شرادھ مین بھوجن کرادے تو
سات برش تک پترون کی ترپت ہوتی ہے-

۱۴۷- ہبیہ اور کبیہ ان دونون کے دان مین مکھیہ پکش کو کہا اب گون پکش کو جسے اچھے
لوگون نے اختیار کیا ہے کہتے ہین-

۱۴۸- نانا- ماما- بھانجا- سسر- ودیاگرو- بیٹی کا بیٹا- داماد- موسی کا بیٹا- یگیہ کرانیوالا
ججمان- ان دسون کو مکھیہ پکش کے ہونے مین بھوجن کرانا چاہیے-

۱۴۹- دیوکرم مین براہمن کا امتحان نہ لینا چاہیے مگر پترکرم مین حکمت عملی سے براہمنون
کا امتحان لینا چاہیے-

۱۵۰- جن براہمنون کو منوجی نے شرادھ بھوجن کرانے کے لائق نہین کہا ہے وہ یہ ہین
چور- مہاپاپی- نامرد (ناستک)-

۱۵۱- برہم چاری- مورکھ- ناقص چمڑے والا- جوا کھیلنے والا- بہت آدمیون کو یگیہ
کرانے والا-

यः संगतानि कुरुते मोहाच्छ्राद्धेन मानवः॥ स स्वर्गाच्च्यवते लोकाच्छ्राद्धमित्रो द्विजाधमः॥१४०॥ संभोजनी साभिहिता पैशाची दक्षिणा द्विजैः॥ इहैवास्ते तु सा लोके गौरन्धेवैकवेश्मनि॥१४१॥ यथा रिरो बीजमुप्त्वा न वप्ता लभते फलम्॥ तथाऽनृचे हविर्दत्त्वा न दाता लभते फलम्॥१४२॥ दातॄन्प्रतिग्रहीतॄंश्च कुरुते फलभागिनः॥ विदुषे दक्षिणां दत्त्वा विधिवत्प्रेत्य चेह च॥१४३॥ कामं श्राद्धेऽर्चयेन्मित्रं नाभिरूपमपि त्वरिम्॥ द्विषता हि हविर्भुक्तं भवति प्रेत्य निष्फलम्॥१४४॥ यत्नेन भोजयेच्छ्राद्धे बह्वृचं वेदपारगम्॥ शाखान्तगमथाध्वर्युं छन्दोगं तु समाप्तिकम्॥१४५॥

١٤٠۔ جو براہمن شرادھ مین بھوجن ہی کیواسطے مترتا کرتا ہے وہ سورگ لوک سے
بھرشٹ ہوتا ہے اور وہ براہمنون مین ادھم ہے۔

١٤١۔ ایسا بھوجن پشاچون کا ہے اسی لوک مین پھلدایک ہے جسطرح اندھی گئو ایک ہی گھر مین
رہسکتی ہے اسی طرح وہ بھوجن اسی لوک مین رہتا ہے پرلوک مین کام نہین آتا۔

١٤٢۔ جسطرح اوسر زمین مین بیج بونے والا پھل نہین پاتا اسیطرح مورکھ براہمن کو دیوتا
کی چیز بھوجن کرانے سے داتا پھل نہین پاتا۔

١٤٣۔ پنڈت براہمن کو بدھی پوروک دکشنا دینے سے دینے والا اور لینے والا دونون
پھل کو پاتے ہین اس لوک مین بھی اور پرلوک مین بھی

١٤٤۔ شرادھ مین متر کو بھوجن کرانا کچھہ مضائقہ نہین مگر شتر اگر پنڈت بھی ہو تو بھی اسکو
بھوجن نہ کرانا کیونکہ اوسکے بھوجن کرلنے سے پرلوک مین داتا پھل نہین پاتا ہے

١٤٥۔ وید کے دو بھاگ ہین ایک منتر بھاگ دوسرا براہمن بھاگ۔ رگ وید کے دونون بھاگ یا
پھر دیگر دونون بھاگ یا سمپورن ایک شاکھا کو پڑھے ہو تو ایسے براہمن کو یتن پوروک شرادھ مین بھوجن کراوے

ज्ञाननिष्ठाद्विजाः किंचित्तपोनिष्ठास्तथापरे॥ तपःस्वाध्या
यनिष्ठाश्चकर्मनिष्ठास्तथापरे॥१३४॥ ज्ञाननिष्ठेषुकव्यानि
प्रतिष्ठाप्यानियत्नतः॥ हव्यानितुयथान्यायंसर्वेष्वेवचतुर्ष्व
पि॥१३५॥ अश्रोत्रियःपितायस्यपुत्रःस्याद्वेदपारगः॥ अश्रो
त्रियोवापुत्रःस्यात्पितास्याद्वेदपारगः॥१३६॥ ज्यायांसमन-
योर्विद्याद्यस्यस्याच्छ्रोत्रियःपिता॥ मंत्रसंपूजनार्थन्तुसत्का
रमितरोऽर्हति॥१३७॥ नश्राद्धेभोजयेन्मित्रंधनैःकार्योऽस्यसं
ग्रहः॥ नारिंनमित्रंयंविद्यात्तंश्राद्धेभोजयेद्द्विजम्॥१३८॥ य-
स्यमित्रप्रधानानिश्राद्धानिचहवींषिच॥ तस्यप्रेत्यफलंना-
स्तिश्राद्धेषुचहविःषुच॥१३९॥

۱۳۴ - چار طرح کے براہمن ہین - گیانی - تپسوی - وید پاٹھی - کرم کانڈی -

۱۳۵ - پترون کے دینے لائق چیز کو گیانی براہمن کو دینا چاہیئے اور دیوتون کے دینے لائق چیز کو چارون مین سے جو ملے اُسکو دینا چاہیئے -

۱۳۶ - جسکا باپ وید پاٹھی ہو اور آپ مورکھ ہو یا آپ وید پاٹھی ہو اور باپ مورکھ ہو تو -

۱۳۷ - ان دونون مین جسکا باپ وید پاٹھی ہو وہ بڑا ہے اور دوسرا بھی پوجنے کے ستکار کے لائق ہے

۱۳۸ - شرادھ مین متر براہمن کو بھوجن نکراوے کچھ نقدی وغیرہ دیکر خاطرداری کرے بلکہ جو براہمن نہ دوست ہو نہ دشمن اُسکو بھوجن کراوے -

۱۳۹ - جس کسی کے دیو یا پتر کرم مین متر ہی بھوجن کرتا ہے اُسکو بھوجن کرانے کا پھل پرلوک مین نہین ہوتا -

श्रोत्रियायैव देयानि हव्यकव्यानि दातृभिः॥ अर्हत्तमाय वि-
प्राय तस्मै दत्तं महाफलम्॥ १२८॥ एकैकमपि विद्वांसं दैवे पि-
त्र्ये च भोजयेत्॥ पुष्कलं फलमाप्नोति नामन्त्रज्ञान्बहूनपि १२९
॥ दूरादेव परीक्षेत ब्राह्मणं वेदपारगम्॥ तीर्थं तद्धव्यकव्या-
नां प्रदाने सोऽतिथिः स्मृतः॥ १३०॥ सहस्रं हि सहस्राणाम
नृचां यत्र भुञ्जते॥ एकस्तान्मन्त्रवित्प्रीतः सर्वानर्हति धर्मतः
॥१३१॥ ज्ञानोत्कृष्टाय देयानि कव्यानि च हवींषि च॥ न हि
हस्तावसृग्दिग्धौ रुधिरेणैव शुध्यतः॥ १३२॥ यावतो ग्रसते
ग्रासान्हव्यकव्येष्वमन्त्रवित्॥ तावतो ग्रसते प्रेत्य दीप्तशूलर्ष्ट्य-
योगुडान्॥ १३३॥

۱۲۸- دیوتا یا پِتروں کے نام جو چیز دینا ہو وہ وید پاٹھی بڑے پوجیہ براہمن کو دے کیونکہ
ایسے براہمن کو دینے سے مہا پھل ہوتا ہے۔
۱۲۹- دیوتا یا پتر کرم میں ایک بھی پنڈت براہمن کو بھوجن کرانے سے بڑا پھل ہوتا ہے
اور بہت سے مورکھ براہمن کے بھوجن کرانے سے ویسا پھل نہیں ہوتا۔
۱۳۰- دور سے وید پڑھنے والے براہمن کی پریکشا کرنا چاہیے کیونکہ دیوتا اور پتروں
کی چیز کا لینے والا وہی ہے۔
۱۳۱- دس لاکھ مورکھ براہمن کے بھوجن کرانے سے جو پھل ہوتا ہے وہی پھل منتر
کے جاننے والے ایک براہمن کے بھوجن کرانے سے ہوتا ہے۔
۱۳۲- دیوتا یا پتروں کے دینے کی چیز گیانی براہمن کو دینا چاہیے کیونکہ خون سے
بھرا ہاتھ خون ہی سے دھونے سے صاف نہیں ہوتا۔
۱۳۳- دیوتا یا پتروں کے اُن کے جتنے گراس مورکھ براہمن بھوجن کرتا ہے اتنے
شرادھ کرنیوالا آگ سے گرم کیئے ہوئے لوہے کے پنڈا اور دو دھارا شستر کو بھوجن کرتا

पितृयज्ञन्तु निर्वर्त्य विप्रश्चन्द्रक्षयोऽग्निमान्॥ पिण्डान्वाहा-
र्यकं श्राद्धं कुर्यान्मासानुमासिकम्॥१२२॥ पितॄणां मासिकं-
श्राद्धमन्वाहार्यं विदुर्बुधाः॥ तच्चामिषेण कर्त्तव्यं प्रशस्तेन सम-
न्ततः॥१२३॥ तत्र ये भोजनीयाः स्युर्ये च वर्ज्या द्विजोत्तमाः॥ या-
वन्तश्चैव यैश्चान्नैस्तान्प्रवक्ष्याम्यशेषतः॥ १२४ ॥ द्वौ दैवे पितृ-
कार्ये त्रीनेकैकमुभयत्र वा॥ भोजयेत्सुसमृद्धोऽपि न प्रसज्जेत
विस्तरे॥१२५॥ सत्क्रियान्देशकालौ च शौचं ब्राह्मणसम्पदः
॥ पञ्चैतान्विस्तरो हन्ति तस्मान्नेहेत विस्तरम्॥१२६॥ प्रथिता
प्रेतकृत्यैषा पित्र्यं नाम विधुक्षये॥ तस्मिन्युक्तस्यैति नित्यं प्रे-
तकृत्यैव लौकिकी॥ १२७॥

۱۲۲ - ہر مہینہ کی اماوس میں پتر یگیہ سے اگن ہوتری براہمن شرادھ کرے -

۱۲۳ - ہر مہینہ میں پتروں کی شرادھ کو انواہاری کہتے ہیں اُس شرادھ کو سدھ ماس میں اُتم مانس سے کرنا چاہیئے -

۱۲۴ - اس شرادھ میں جو بھوجن کرانے کے لائق ہے اور جو لائق نہیں ہے اور جتنے چاہیئے اور جو اُن بھوجن کرانا چاہیئے وہ سب ہم کہیں گے -

۱۲۵ شرادھ میں دو کرم ہیں ایک پتر کرم دوسرا دیو کرم لستین کیا ہی دھنی ہو مگر دیو کرم میں ایک اور پتر کرم میں دو ہی براہمن کو بھوجن کراوے یا دونوں کرموں میں ایک ایک براہمن کو بھوجن کراوے زیادہ بستارہ کرے -

۱۲۶ ستکار دیش کال پوترتا سرشیٹھ براہمن ان سب باتوں کا ناش بستار کرنے سے ہوتا ہے اسلیئے بستارہ کرنا چاہیئے -

۱۲۷ - اماوس میں شرادھ کرنے سے پتر دنکا اُپکار ہوتا ہے بموجب اسکے پتر لوگ شرادھ کرنے والے کو گن - بیٹیا - پوتا - دولت وغیرہ سب کچھ دیتے ہیں اسلئے شرادھ ضرور کرنا چاہیئے

उपासतेयेगृहस्थाःपरपाकमबुद्धयः॥तेनतेप्रेत्यपशुतांव्रज-
न्त्यन्नादिदायिनाम्॥१०४॥अप्रणोद्योऽतिथिःसायंसूर्योढो
गृहमेधिना॥कालेप्राप्तस्त्वकालेवानास्यानश्नन्गृहेवसेत्॥
१०५॥नवैस्वयंतदश्नीयादतिथिंयन्नभोजयेत्॥धन्यंयशस्य
मायुष्यंस्वर्ग्यंवातिथिपूजनम्॥१०६॥आसनावसथौशय्या
मनुव्रज्यामुपासनाम्॥उत्तमेषूत्तमंकुर्याद्धीनेहीनंसमेसमम्
॥१०७॥वैश्वदेवेतुनिर्वृत्तेयद्यन्योऽतिथिराव्रजेत्॥तस्याप्य-
न्नंयथाशक्तिप्रदद्यान्नबलिंहरेत्॥१०८॥नभोजनार्थंस्वेवि-
प्रःकुलगोत्रेनिवेदयेत्॥भोजनार्थंहितेशंसन्वान्ताशीत्युच्य-
तेबुधैः॥१०९॥

۱۰۴- جو گرہستھ پرائے بھوجن کی اپاسنا کیا کرتے ہیں اسکے کرنے سے
پرلوک میں ان دینے والے کے پشو ہوتے ہیں -

۱۰۵- سورج ڈوبے اتتھ آیا ہو تو اسکو کھانا پانی ضرور دینا چاہیئے وقت پر آوے
یا بے وقت مگر بغیر کھانا کھائے گھر میں نہ رہنے پاوے

۱۰۶- جو چیز اتتھ کو نہ کھلاوے اسکو آپ بھی نہ کھاوے اتتھ کو کھانا کھلانا دولت
نیکنامی عمر اور سورگ کے واسطے ہے -

۱۰۷- آسن - گرہ - شیا - پیچھے چلنا - سیوا ان سب کو اتم ادھم میں ادھم پرش میں سم کو سم
اتم کو اتم میں کرنا چاہیئے -

۱۰۸- بیشو دیو کرم کرنے کے پیچھے دوسرا اتتھ آوے تو اسکو یتھا شکت ان دیوے
بل کرم نہ کرے -

۱۰۹- بھوجن کے لیے براہمن اپنا کل اور گوتر نہ کہے اگر کہے تو اگلی ہوئی چیز کا کھانے والا
ہے اسبات کو پنڈتوں نے کہا ہے

संप्राप्तायत्वतिथयेप्रदद्यादासनोदके॥ अन्नंचैवयथाशक्तिस-
त्कृत्यविधिपूर्वकम्॥९९॥शिलानप्युञ्छतोनित्यंपंचाग्नीन-
पिजुह्वतः॥सर्वंसुकृतमादत्तेब्राह्मणोऽनर्चितोवसन्॥१००॥
तृणानिभूमिरुदकंवाक्चतुर्थीचसूनृता॥एतान्यपिसतांगेहे
नोच्छिद्यन्तेकदाचन॥१०१॥एकरात्रंतुनिवसन्नतिथिर्ब्राह्म-
णःस्मृतः॥अनित्यंहिस्थितोयस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते१०२
॥नैकग्रामीणमतिथिंविप्रंसांगतिकंतथा॥उपस्थितंगृहेवि-
द्याद्भार्यायत्राग्नयोऽपिवा॥१०३॥

۹۹- جو اتتھہ آپ سے آیا ہو اُسکو اپنی شکت کے موافق بدھہ پوروک آسن
ان جل آدر سے دیوے-

۱۰۰- جو براہمن اتتھہ بغیر پوجن پائے گھر مین رہے تو گھر والا اگرچہ بڑا اتجیوی
ہو اور شل انچھہ سے اوقات بسر کرتا ہو اور پنچ اگن کو سیون کرتا ہو تو بھی اُسکا
سُکرت جاتا رہتا ہے-

۱۰۱- گھاس زمین پانی شیرین زبانی اِن چیزون سے اچھے لوگون کا گھر کبھی
خالی نہین رہتا-

۱۰۲- ایک رات کے رہنے والے کو اتتھہ کہتے ہین اسلیے اتتھہ کو سواے
ایک رات کے ہر روز نہ رہنا چاہیئے-

۱۰۳- جس گرہستھہ کے گھر استری اور اگن موجود ہو اُسکے گھر دوسرے دیس کے
سے اتتھہ آیا ہو تو اتتھہ ہے مگر ایک گانون کا رہنے والا اور بچپن ہنسی کتھا کہنے
والا اتتھہ نہین کہا جاتا ہے-

---

* کھیتی کرنیوالے جب غلہ کھیت سے کاٹ کر لیجاتے ہین اُس سے جو غلہ زمین مین گرکر پڑا رہجاتا ہے اُسکو شل کہتے ہین-
* بنیا لوگ بازار مین غلہ کا ڈھیر لگاتے ہین اور شام کو جو غلہ اُٹھا لیجاتے ہین اُس سے جو غلہ گرکر پڑا رہجاتا ہے وہ انچھہ کہلاتا ہے-

एवंयःसर्वभूतानिब्राह्मणोनित्यमर्चति॥सगच्छतिपरंस्था-
नंतेजोमूर्त्तिपथर्जुना॥९३॥कृत्वैतद्बलिकर्मैवमतिथिंपूर्व-
माशयेत्॥भिक्षांचभिक्षवेदद्याद्विधिवद्ब्रह्मचारिणे॥९४॥य-
त्पुण्यफलमाप्नोतिगांदत्त्वाविधिवद्गुरोः॥तत्पुण्यफलमाप्नो-
तिभिक्षांदत्त्वाद्विजोगृही॥९५॥भिक्षामप्युदपात्रंवासत्कृत्यवि-
धिपूर्वकम्॥वेदतत्त्वार्थविदुषेब्राह्मणायोपपादयेत्॥९६॥न-
श्यन्तिहव्यकव्यानिनराणामविजानताम्॥भस्मीभूतेषुविप्रे-
षुमोहाद्दत्तानिदातृभिः॥९७॥विद्यातपःसमृद्धेषुहुतंविप्रमुखा-
ग्निषु॥निस्तारयतिदुर्गाच्चमहतश्चैवकिल्बिषात्॥९८॥

۹۳ - اسطرح جو برہمن ہر روز سب جیوؤں کی پوجا کرتا ہے وہ تیج روپ ہوکر کومل
مارگ سے بڑے استھان کو جاتا ہے۔

۹۴ - اسطرح بل کرم کرکے گرہ جن کے بھوجن کے پہلے اتتھی کو بھوجن کرادے
اور برہم چاری بھکھاری کو بھیکھ دے۔

۹۵ - بدھ پوروک گرو کو گئو دینے سے جو پھل ہوتا ہے وہی پھل بھکھاری کو
بھیکھ دینے سے گرہستھ آشرم والا پاتا ہے۔

۹۶ - وید کا سدھانت اور ارتھ جاننے والے براہمن کو آدر سے بدھ پوروک
بھکشا یا جل دیوے۔

۹۷ - داتا لوگ جو بسنت موہ سے دیوتا یا پتر کے ہیت مورکھ براہمن کو دیتے ہیں
سو سب نشپھل ہو جاتی ہے۔

۹۸ - ودیاوان اور تپ دان براہمن کے مکھ روپی اگن میں جو ہون کیا
جاتا ہے وہ بڑے پاپ سے ہون کرنے والے کو چھڑاتا
ہے۔

एवंसम्यग्घविर्हुत्वासर्वदिक्षुप्रदक्षिणम्॥ इन्द्रान्तकाप्पतीन्दुभ्यः सानुगेभ्योबलिंहरेत्॥ ८७॥ मरुद्भ्यइतितुद्वारिक्षिपेदप्स्वद्भ्यइत्यपि॥ वनस्पतिभ्यइत्येवंमुशलोलूखलेहरेत्॥ ८८॥ उच्छीर्षकेश्रियैकुर्याद्भद्रकाल्यैचपादतः॥ ब्रह्मवास्तोष्पतिभ्यांतुवास्तुमध्येबलिंहरेत्॥ ८९॥ विश्वेभ्यश्चैवदेवेभ्योबलिमाकाशउत्क्षिपेत्॥ दिवाचरेभ्योभूतेभ्योनक्तंचारिभ्यएवच॥ ९०॥ पृष्ठवास्तुनिकुर्व्वीतबलिंसर्व्वात्मभूतये॥ पितृभ्योबलिशेषन्तुसर्व्वंदक्षिणतोहरेत्॥ ९१॥ शुनांचपतितानांचश्वपचांपापरोगिणाम्॥ वायसानांकृमीणांचशनकैर्निर्वपेद्भुवि॥ ९२॥

۸۷- اچھی پرکار سے ہون کرکے سب دشا مین پردکش کرم سے اندر برن یم چندر ان سب کو اور انھون کے سیوکون کو بل دیوے -

۸۸- دوار دیش مین مرت کو جل استھان مین جل کو موسل او کھلی کے استھان مین فنسپتی کو -

۸۹- واستو پرش کے سر یا ود ھیہ مین کرم سے شری بھدر کالی واستو شپت ان سب کو دیوے -

۹۰- وشوے دیوون مین پھرنے والے بھوت رات مین پھرنے والے بھوت ان سب کو آکاش مین دیوے -

۹۱- واستو پرش کی پیٹھ مین سرباتم بھوت کو بل دیوے بل دینے سے جو ان بچے وہ دکش دشا مین پتر ان کو دیوے -

۹۲- کتا پتیت ڈوم پاپ روگی کوا چھوٹا کیڑا ان سب کو آہستہ سے زمین مین دیوے -

स्वाध्यायेनार्चयेदृषीन्होमैर्देवान्यथाविधि ॥ पितॄन्श्राद्धैश्च नॄनन्नैर्भूतानि बलिकर्म्मणा ॥ ८१ ॥ कुर्य्यादहरहः श्राद्धमन्नाद्येनोदकेन वा ॥ पयोमूलफलैर्वापि पितृभ्यः प्रीतिमावहन् ८२ ॥ एकमप्याशयेद्विप्रं पित्रर्थे पांचयज्ञिके ॥ न चैवात्राशयेत्किञ्चिद्वैश्वदेवं प्रति द्विजम् ॥ ८३ ॥ वैश्वदेवस्य सिद्धस्य गृह्येऽग्नौ विधिपूर्व्वकम् ॥ आभ्यः कुर्य्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणो होममन्वहम् ॥ ८४ ॥ अग्नेः सोमस्य चैवादौ तयोश्चैव समस्तयोः ॥ विश्वेभ्यश्चैव देवेभ्यो धन्वन्तरय एव च ॥ ८५ ॥ कुह्वै चैवानुमत्यै च प्रजापतय एव च ॥ सह द्यावापृथिव्योश्च तथा स्विष्टकृतेऽन्ततः ॥ ८६ ॥

۸۱- وید پڑھنے سے رشی کی پوجا اور ہون کرنے سے دیوتا کی پوجا شرادھ کرنے سے پتر کی پوجا ان دان سے منشیہ کی پوجا بلدان سے بھوت کی پوجا یدھوست کرنا چاہیے -

۸۲- پتروں سے پریت کرتا ہوا ان جل دودھ مول پھل سے دن دن ہیں پاروں شرادھ کرے -

۸۳- پنچ مہایگیہ میں پتروں کے نمت جو بل کرم کہا ہے وہ اگر ہو سکے تو ایک یا بہت براہمنوں کو بھوجن کرا دے مگر وشوے دیو کے نمت براہمن بھوجن نہ کرا دے -

۸۴- سنسکار ست اوستھ نام اگن میں جو آگے دیوتا کہیں گے ان کو دن دن میں بدھو ست آہت دیوے

۸۵- اگن سوم - اگن سوم وشوے دیو دھنونتر -

۸۶- کہو - انمت - پرجاپت - دیاوا - پرتھوی - سوشٹ کرت ان سب کو آہت دیوے -

स्वाध्याये नित्ययुक्तःस्याद्दैवेचैवेहकर्मणि।।दैवकर्मणियुक्तो हिविभर्तीदंचराचरम्।।७५।।अग्नौप्रास्ताहुतिःसाम्यगादि त्यमुपतिष्ठते।।आदित्याज्जायतेवृष्टिर्वृष्टेरन्नंततःप्रजाः।। ७६।।यथावायुंसमाश्रित्यवर्त्तन्तेसर्वजन्तवः।।तथागृहस्थमा श्रित्यवर्त्तन्तेसर्वआश्रमाः।।७७।।यस्मात्त्रयोऽप्याश्रमिणो ज्ञानेनान्नेनचान्वहम्।।गृहस्थेनैवधार्यन्तेतस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही।।७८।।ससन्धार्यःप्रयत्नेनस्वर्गमक्षयमिच्छता।।सुखं चेहेच्छतानित्यंयोऽधार्योदुर्बलेन्द्रियैः।।७९।।ऋषयःपित रोदेवाभूतान्यतिथयस्तथा।।आशासतेकुटुम्बिभ्यस्तेभ्यः कार्य्यंविजानतः।।८०।।

۷۵- جو آدمی ہر روز وید کو پڑھتا ہے اور اگن مین ہون کرتا ہے۔ وہ سمپورن سنسار کو دھارن کر سکتا ہے۔

۷۶- اگن مین جو آہت پڑتی ہے وہ سورج کے پاس جاتی ہے اور سورج سے پانی برستا ہے پانی سے اناج پیدا ہوتا ہے ناج سے پرجا پیدا ہوتی ہے۔

۷۷- جسطرح ہوا کے سہارے سے سب جیو جیتے ہین اسیطرح گرہستھ آشرم کے سہارے سے سب آشرم والے رہتے ہین۔

۷۸- وید کے پڑھنے اور ان دان دینے سے تینون آشرمون کو گرہستھ آشرم والا ہر روز اختیار کرتا ہے اس سے گرہستھ آشرم ہی بڑا ہے۔

۷۹- پرلوک مین اکشی سورگ اور اس لوک مین سکھ کی اچھا کرنیوالا اس گرہستھ آشرم کو ہر روز دھارن کرتا ہے جو دربل اندری والون سے دھارن نہین ہو سکتا۔

۸۰- رشی پتر۔ دیوتا اتتھی یہ سب گرہستھون سے بھوجن کا آسرا رکھتے ہین اسلیے ان سب کو ان جل دینا چاہیے۔

तासांक्रमेणसर्वासांनिष्कृत्यर्थंमहर्षिभिः॥पंचक्लृप्तामहाय-
ज्ञाःप्रत्यहंगृहमेधिनाम्॥६९॥अध्यापनंब्रह्मयज्ञःपितृयज्ञस्तु
तर्पणम्॥होमोदैवोबलिर्भौतोनृयज्ञोऽतिथिपूजनम्॥७०॥पं-
चैतान्योमहायज्ञान्नहापयतिशक्तितः॥सगृहेऽपिवसन्नित्यं
सूनादोषैर्नलिप्यते॥७१॥देवतातिथिभृत्यानांपितॄणामात्म-
नश्चयः॥ननिर्वपतिपंचानामुच्छ्वसन्नसजीवति॥७२॥अहुतं-
चहुतंचैवतथाप्रहुतमेवच॥ब्राह्म्यंहुतंप्राशितंचपंचयज्ञान्प्र-
चक्षते॥७३॥जपोऽहुतोहुतोहोमःप्रहुतोभौतिकोबलिः॥ब्रा-
ह्म्यंहुतंद्विजाग्र्यार्चाप्राशितंपितृतर्पणम्॥७४॥

۶۹- اِن پانچوں کے پراشچت کے لیے پانچ مہایگیہ کو گرہستھ لوگ نِتیہ ہی کریں -

۷۰- پانچ مہایگیہ یہ ہیں یعنے وید کا پڑھنا - پِتر کا ترپن - ہون کرنا - بل دینا اتتھی کا پوجن - اِن سب کو بلحاظ سلسلہ برہم یگیہ - پتر یگیہ - دیو یگیہ - بھوت یگیہ - منشیہ یگیہ کہتے ہیں -

۷۱- جو کوئی سامرتھ کے موافق اِن پانچوں مہایگیوں کو کرتا ہے وہ روزمرہ کی ہنسا (یعنی جان کُشی) کے پاپ سے چھوٹتا رہتا ہے -

۷۲- جو آدمی دیوتا مسافر اقارب بزرگوں کو کھانا نہیں دیتا ہے وہ بحالت زندگی مردہ ہے -

۷۳- اَہُت - ہُت - پرہُت - براہمیہ ہُت - پراشت - یہ پانچ یگیہ ہیں -

۷۴- اِن پانچوں کو سلسلہ سے جپ - ہون - بھوت بل - اتتھی پوجا - پتر ترپن کہتے ہیں -

कुविवाहैः क्रियालोपैर्वेदानध्ययनेनच ॥ कुलान्यकुलतांयांति
ब्राह्मणातिक्रमेणच ॥ ६३ ॥ शिल्पेनव्यवहारेणशूद्रापत्यैश्च
केवलैः ॥ गोभिरश्वैश्चयानैश्चकृष्याराजोपसेवया ॥ ६४ ॥ अया
ज्ययाजनैश्चैवनास्तिक्येनचकर्मणाम् ॥ कुलान्याशुविनश्यंति
यानिहीनानिमंत्रतः ॥ ६५ ॥ मंत्रतस्तुसमृद्धानिकुलान्यल्पधना-
न्यपि ॥ कुलसंख्यांचगच्छन्तिकर्षन्तिचमहद्यशः ॥ ६६ ॥ वैवा-
हिकेऽग्नौकुर्वीतगृह्यंकर्मयथाविधि ॥ पंचयज्ञविधानंचपं-
क्तिंचान्वाहिकींगृही ॥ ६७ ॥ पंचसूनागृहस्थस्यचुल्लीपेषण्यु
पस्करः ॥ कण्डनीचोदकुंभश्चबध्यतेयास्तुवाहयन् ॥ ६८ ॥

۶۳- نندت دواہ کریا کا نہونا - وید کا نہ پڑھنا براہمن کا اپمان ان سب باتوں سے کل نشٹ ہوجاتا ہے۔

۶۴- تصویر کشی وغیرہ سودی روپیہ دینا صرف شودر کی عورت سے لڑکا پیدا کرنا گھوڑا رتھ کی خرید فروخت کرنا کھیتی کرنا راج سیوا کرنا ان سب سے

۶۵- اور جو یگیہ کرانے کے لائق نہیں ہے اسکو یگیہ کرانا اور بغیر منتر کے کرم کرنا ان سب باتوں سے کل جلد ناش ہوجاتا ہے۔

۶۶- جس کل میں منتر سے سب کرم ہوتے ہوں گو کہ بہت دولت نہو تاہم وہ کل بڑا کہلاتا ہے اور نیکنام ہوتا ہے۔

۶۷- کرم مندرجہ گرہیج سوتر اور پنچ یگیہ اور نتیہ بھوجن پاک ان سب کو دواہ سمے کی اگن میں بدھ سے کرنا چاہیئے۔

۶۸- گرہستھ کے گھر میں چولھا - سل - بٹہ - جھاڑو - اوکھلی - موسل پانی کا گھڑا ان سب سے کام لینے میں جیو مرتے ہیں۔

* یعنے وید کا پڑھنا - دیو رشی پتر کا ترپن - ہوم - بل - اتتھ کا پوجن -

शोचन्तिजामयोयत्रविनश्यत्याशुतत्कुलम् ॥ नशोचन्तितुय-
त्रैतावर्द्धतेतद्धिसर्व्वदा ॥ ५७ ॥ जामयोयानिगेहानिशपन्त्यप्र-
तिपूजिताः ॥ तानिकृत्याहतानीवविनश्यन्तिसमन्ततः ॥ ५८
॥ तस्मादेताःसदापूज्याभूषणाच्छादनाशनैः ॥ भूतिकामैर्न-
रैर्नित्यंसत्कारेषूत्सवेषुच ॥ ५९ ॥ सन्तुष्टोभार्य्ययाभर्त्ताभर्त्राभा-
र्य्यातथैवच ॥ यस्मिन्नेवकुलेनित्यंकल्याणंतत्रवैध्रुवम् ॥
६० ॥ यदिहिस्त्रीनरोचेतपुमांसंनप्रमोदयेत् ॥ अप्रमोदात्पुनः
पुंसःप्रजननंनप्रवर्त्तते ॥ ६१ ॥ स्त्रियान्तुरोचमानायांसर्व्वंतद्रो-
चतेकुलम् ॥ तस्यांत्वरोचमानायांसर्व्वमेवनरोचते ॥ ६२ ॥

۵۷ - جس کل مین استری لوگ دکھی رہتی ہین وہ کل جلد نشٹ ہو جاتا ہے -
اور جس کل مین استری لوگ سکھی رہتی ہین وہ کل ہمیشہ بڑھتا ہے -
۵۸ - پوجا نہ پا کر استری لوگ جس کل کو سراپ دیتی ہین وہ کل چارون طرف سے
نشٹ ہو جاتا ہے -
۵۹ - اسلیئے دولت کا چاہنے والا آدمی گہنا کپڑا کھانا سے ہمیشہ استریون کو پوجا
کرے -
۶۰ - جس کل مین استری سے پت اور پت سے استری پرسن رہتی ہین اس کل مین
بیشک کلیان ہے -
۶۱ - اگر استری پت کو پرسن نرکھے گی تو اولاد کہان سے ہوگی -
۶۲ - استری کے پرسن رہنے سے سب کل پرسن رہتا ہے اور استری کے اپرسن رہنے سے سب کل
اپرسن رہتا ہے -

नकन्यायाःपिताविद्वान्गृह्णीयाच्छुल्कमण्वपि॥ गृह्णञ्छुल्कं
हिलोभेनस्यान्नरोऽपत्यविक्रयी॥५१॥स्त्रीधनानितुयेमोहा
दुपजीवन्तिबान्धवाः॥ नारीयानानिवस्त्रंवातेपापायान्त्यधो-
गतिम्॥५२॥ आर्षेगोमिथुनंशुल्कंकेचिदाहुर्मृषैवतत्॥ अ-
ल्पोऽप्येवंमहान्वापिविक्रयस्तावदेवसः॥५३॥यासान्नाददं
तेशुल्कंज्ञातयोनसविक्रयः॥ अर्हणंतत्कुमारीणामानृशंस्यं
चकेवलम्॥५४॥पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताःपतिभिर्देवरैस्तथा॥
पूज्याभूषयितव्याश्चबहुकल्याणमीप्सुभिः॥५५॥यत्रनार्य्य
स्तुपूज्यन्तेरमन्तेतत्रदेवताः॥ यत्रैतास्तुनपूज्यन्तेसर्वास्तत्रा-
फलाःक्रियाः॥५६॥

۵۱- لڑکی کا باپ تھوڑا معاوضہ بھی نہ لیوے طمع سے کچھ معاوضہ لینے سے لڑکی کا بیچنے والا کہلاتا ہے -

۵۲- عورتوں کی سواری و دولت و کپڑا اے کر جو عزیز و اقارب اوقات بسری کرتے ہیں وہ بڑے پاپی ہیں نرک میں جاتے ہیں -

۵۳- کسی رشی نے آرش وواہ میں دو گئو لینا جائز رکھا ہے لیکن تھوڑا یا بہت کچھ بھی لینا لڑکی کا بیچنا ہی کہلاتا ہے -

۵۴- جس لڑکی کا معاوضہ ذات کے لوگ نہیں لیتے وہ بیچنا نہیں کہلاتا معاوضہ نہ لینا لڑکی کا پوجن ہے اور ترحم ہے -

۵۵- بہت کلیان کے چاہنے والے باپ بھائی پت دیور گہنا اور کپڑا سے عورتوں کی پوجا کریں -

۵۶- جس کل میں عورتوں کی پوجا ہوتی ہے اس کل میں دیوتا لوگ بہار کرتے ہیں اور جہاں عورتوں کی پوجا نہیں ہوتی وہاں سب کریا نشپھل ہے -

ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडश स्मृताः ॥ चतुर्भिरितरैः सार्द्धमहोभिः सद्विगर्हितैः ॥ ४६ ॥ तासामाद्याश्चतस्रस्तु निंदितैकादशी च या ॥ त्रयोदशी च शेषास्तु प्रशस्ता दश रात्रयः ॥ ४७
युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु ॥ तस्माद्युग्मासु पुत्रार्थी संविशेदार्त्तवे स्त्रियम् ॥ ४८ ॥ पुमान्पुंसोऽधिके शुक्रे स्त्री भवत्यधिके स्त्रियाः ॥ समेऽपुमान्पुंस्त्रियौ वा क्षीणेऽल्पे च विपर्ययः ॥ ४९ ॥ निन्द्यास्वष्टासु चान्यासु स्त्रियो रात्रिषु वर्जयन् ॥ ब्रह्मचार्येव भवति यत्र तत्राश्रमे वसन् ॥ ५० ॥

۴۶ - رِتُ کال کی سولہ رات ہین باستثناے چار کے جو مکروہ ہین۔
۴۷ - اُنمین پہلی چار اور گیارھوین اور تیرھوین رات نندت (ممنوع) ہین باقی دش رات اچھی ہین۔
۴۸ - غالبًا سم رات ہین بھوگ کرنے سے لڑکا پیدا ہوتا ہے اور بکھم رات ہین بھوگ کرنے سے لڑکی پیدا ہوتی ہے۔ اسلئے لڑکا پیدا ہونے کی خواہش رکھنے والا سم راتین بھوگ کرے
۴۹ - مرد کے نطفہ زیادہ ہونے سے بکھم رات ہین کبھی لڑکا پیدا ہوتا ہے اور عورت کے نطفہ زیادہ ہونے سے سم رات ہین کبھی لڑکی پیدا ہوتی ہے اگر مرد و عورت دونون کا نطفہ برابر ہو تو لڑکا نامرد پیدا ہوتا ہے یا لڑکا و لڑکی دونون پیدا ہوتے ہین اور اگر دونون کا نطفہ کم ہو تو حمل نہین رہتا۔
۵۰ - آٹھ راتین جو منع ہین اُنمین بھوگ نہ کرنے سے جس آشرم مین رہے اُسمین برہم چاری ہی کہلاتا ہے۔

* جیسے چھٹوین آٹھوین دسوین بارھوین چودھوین سولھوین رات۔
† جیسے پانچوین ساتوین نوین گیارھوین تیرھوین پندرھوین رات۔

इतरेषुतुशिष्टेषुनृशंसानृतवादिनः।।जायन्तेदुर्विवाहेषुब्रह्मध-
र्मद्विषःसुताः।।४१।। अनिन्दितैःस्त्रीविवाहैरनिन्द्याभवतिप्रजा
।। निन्दितैर्निन्दितान्नृणांतस्मान्निन्द्यान्विवर्जयेत्।। ४२।।पाणि
ग्रहणसंस्कारःसवर्णासूपदिश्यते।। असवर्णास्वयंज्ञेयोवि-
धिरुद्वाहकर्मणि।।४३।।शरःक्षत्रिययाग्राह्यःप्रतोदोवैश्य-
कन्यया।।वसनस्यदशाग्राह्याशूद्रयोत्कृष्टवेदने।।४४।।ऋतु-
कालाभिगामीस्यात्स्वदारनिरतःसदा।। पर्ववर्जंव्रजेच्चैनांतद्व्र-
तोरतिकाम्यया।। ४५।।

۴۱- اور باقی چار وواہوں سے جو لڑکا پیدا ہوتا ہے وہ گھاتک ہوتا ہے اور جھوٹھ بولتا ہے اور برہم دھرم کا شتر (دشمن) ہوتا ہے۔

۴۲- اننندت (بےعیب ۱۲) وواہ سے آنندت اولاد پیدا ہوتی ہے اور نندت (معیوب ۱۲) وواہ سے نندت اولاد پیدا ہوتی ہے اسلیئے نندت (معیوب ۱۲) وواہ نکرنا چاہیئے۔

۴۳- اپنی ذات کی جو کنیا ہے اسی سے ہست گرہن کا سنسکار جاننا دوسری ذات کی کنیا کے ساتھ وواہ کرنیمیں جو طریق آگے کہینگے وہ کرنا۔

۴۴- کشتری کی کنیا تیر کو گرہن کرے اور ویشیہ کی کنیا آلہ ستوررانی کو اور شودر کی کنیا کپڑے کے کونے کو پکڑے جبکہ اسکا وواہ بڑی ذات کے پرش سے ہوتا ہو۔

۴۵- رت* کال میں استری سے بھوگ کرے اور دوسرے کی استری سے بھوگ نکرے مگر اپنی استری سے رت کال میں بھی پرب** کے دن بھوگ نکرے اور جو استری کا کہنا ہو تو بغیر رت کال کے بھی بھوگ کرے یہ نیم ہے اور رت کال میں پاس ہے اور سامرتھ رکھتا ہو تو ضرور بھوگ کرے نہیں تو بڑا دوش ہے۔

* یعنے بعد فراغت حیض سولہ دن تک۔

** یعنے کرشن پکش کی اشٹمی چتردشی اماوس پورنماشی سنکرانت۔

योयस्यैषां विवाहानां मनुना कीर्त्तितो गुणः ॥ सर्वं शृणुत तं विप्राः सर्वं कीर्त्तयतो मम ॥ ३६ ॥ दश पूर्वान्परान्वंश्यानात्मानं चैकविंशकम् ॥ ब्राह्मीपुत्रः सुकृतकृन्मोचयेदेनसः पितॄन् ॥ ३७ ॥ दैवोढाजः सुतश्चैव सप्त सप्त परावरान् ॥ आर्षोढाजः सुतस्त्रींस्त्रीन्षट् षट् कायोढजः सुतः ॥ ३८ ॥ ब्राह्मादिषु विवाहेषु चतुर्ष्वेवानुपूर्वशः ॥ ब्रह्मवर्चस्विनः पुत्रा जायन्ते शिष्टसम्मताः ॥ ३९ ॥ रूपसत्त्वगुणोपेता धनवन्तो यशस्विनः ॥ पर्याप्तभोगा धर्मिष्ठा जीवन्ति च शतं समाः ॥ ४० ॥

۳۶ - جس وواہ کا جو گُن منُ جی نے کہا ہے وہ ہم اے برہمن لوگو اچھی طرح سے کہتے ہیں آپ لوگ سُنیے کہ اگر -

۳۷ - براہم وواہ سے لڑکا پیدا ہوا ور اچھے کرموں کو کرے تو دش برش اوپر کے اور دش برش نیچے کے اور اکیسواں اپنے کو پاپ سے چھڑاتا ہے -

۳۸ - دیو وواہ سے لڑکا پیدا ہو کر اچھے کرم کرنے والا ہو تو سات برش اوپر کے اور سات برش نیچے کے اور پندرھواں اپنے پاپ سے چھڑاتا ہے اور آرش وواہ سے لڑکا پیدا ہو کر تین تین برش اوپر اور نیچے کے اور پراجاپتیہ وواہ سے لڑکا پیدا ہو کر چھ چھ برش نیچے اور اوپر کے ان سب کو پاپ سے چھڑاتا ہے بشرطیکہ اچھے کرموں کا کرنے والا ہو -

۳۹ - براہم وواہ وغیرہ چار وواہوں سے جو لڑکا پیدا ہوتا ہے وہ بڑا تیجسوی اور اچھے لوگوں کے برابر ہوتا ہے -

۴۰ - اور روپ اور اچھے گن اور دھن اور بھاگ اور دھرم اور دھن والا ہوتا ہے اور سو برش تک جی سکتا ہے -

सहनौ चरतांधर्ममिति वाचानुभाष्यच ॥ कन्याप्रदानमभ्यर्च्य-
प्राजापत्योविधिःस्मृतः ॥ ३० ॥ ज्ञातिभ्योद्रविणंदत्वाकन्यायै
चैवशक्तितः ॥ कन्याप्रदानंस्वाच्छन्द्यादासुरोधर्मउच्यते ॥
३१ ॥ इच्छयान्योन्यसंयोगः कन्यायाश्चवरस्यच ॥ गान्धर्व्वः
सतुविज्ञेयोमैथुन्यः कामसम्भवः ॥ ३२ ॥ हत्वाछित्वाचभित्वा
चक्रोशन्तींरुदतींगृहात् ॥ प्रसह्यकन्याहरणंराक्षसोविधिरु
च्यते ॥ ३३ ॥ सुप्तांमत्तांप्रमत्तांवारहोयत्रोपगच्छति ॥ सपा-
पिष्ठोविवाहानांपैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥ ३४ ॥ अद्भिरेवद्वि-
जाग्र्याणांकन्यादानंविशिष्यते ॥ इतरेषांतुवर्णानामितरे-
तरकाम्यया ॥ ३५ ॥

۳۰ - بر اور کنیا دونون ساتھ دھرم کو کرین یہ بات کہکر بر اور کنیا کی پوجا کرکے کنیا کو دیوے یہ پراجاپتیہ وواہ کہلاتا ہے -

۳۱ - کنیا اور کنیا کی ذات والون کو دولت دے اور کنیا لینا اسر وواہ کہلاتا ہے -

۳۲ - بر اور کنیان آپسمین اچھیا کرکے جو سنجوگ کرین وہ گاندھرب وواہ کہلاتا ہے یہ وواہ یعنے شادی صحبت داری کیواسطے ہے -

۳۳ - مارپیٹ ضد کرکے روتی پکارتی ہوئی کنیا کو گھر سے لے انا راکشش وواہ کہلاتا ہے -

۳۴ - جو عورت سوتی ہو یا دولت یا شہوت سے مست ہو یا کسی بیماری مین مبتلا یا بیخبر ہو اس سے تنہائی مین صحبت کرنا پشاچ وواہ ہے یہ سب سے ادھم ہے -

۳۵ - برہمن کو جل سے کنیان دان کرنا اچھا ہے اور کشتری وغیرہ کا بغیر جل کے آپس کی اچھیا سے صرف زبان کے کہنے سے وواہ ہوسکتا ہے -

चतुरोब्राह्मणस्याद्यान्प्रशस्तान्कवयोविदुः ॥ राक्षसंक्षत्रि-
यस्यैकमासुरंवैश्यशूद्रयोः ॥ २४ ॥ पंचानांतुत्रयोधर्म्याद्वाव
धर्म्यौस्मृताविह ॥ पैशाचश्चासुरश्चैवनकर्त्तव्यौकदाचन ॥
२५ ॥ पृथक्पृथग्वामिश्रौवाविवाहौपूर्व्वचोदितौ ॥ गान्धर्वो
राक्षसश्चैवधर्म्यौक्षत्रस्यतौस्मृतौ ॥ २६ ॥ आच्छाद्यचार्चयि-
त्वाचश्रुतिशीलवतेस्वयम् ॥ आहूयदानंकन्यायाब्राह्मोध-
र्मःप्रकीर्त्तितः ॥ २७ ॥ यज्ञेतुविततेसम्यगृत्विजेकर्मकुर्वते ॥
अलंकृत्यसुतादानंदैवंधर्मंप्रचक्षते ॥ २८ ॥ एकंगोमिथुनंद्वे-
वावरादादायधर्मतः ॥ कन्याप्रदानंविधिवदार्षोधर्मःसउच्य-
ते ॥ २९ ॥

۲۴ - پہلے کے چار وواہ براہمن کو اور کشتری کو راکشش وواہ اور ویشیہ کو اسر وواہ
بعضون نے مخصوص قرار دیا ہے -

۲۵ - لیکن منجملہ پانچ وواہ آخر الذکر کے تین جائز اور دو نا جائز ہین لہذا پشاچ اور اسر
وواہ نکرنا چاہیئے -

۲۶ - گاندھرپ اور راکشش وواہ دونون علیحدہ ہون یا یکجا صرف کشتری کیواسطے
کہا ہے -

۲۷ - (اب آٹھو وواہون کا لکشن کہتے ہین) برا ور کنیا کو کپڑا اور زیور دیکر بر کو
بلا کر کنیا ان کو دیوے وہ براہم وواہ کہلاتا ہے -

۲۸ - یگیہ مین رتوج کو النکار سہت کنیا کو دیوے وہ دیو وواہ کہلاتا
ہے -

۲۹ - ایک یا دو گئو اور بیل بر سے لیکر کنیا کو دیوے وہ آرش وواہ
کہلاتا ہے -

दैवपित्र्यातिथेयानि तत्प्रधानानि यस्य तु ॥ नाश्नन्ति पितृदेवा-
स्तन्न च स्वर्गं स गच्छति ॥ १८ ॥ वृषलीफेनपीतस्य निःश्वासो-
पहतस्य च ॥ तस्यां चैव प्रसूतस्य निष्कृतिर्न विधीयते ॥ १९ ॥
चतुर्णामपि वर्णानां प्रेत्य चेह हिताहितान् ॥ अष्टाविमान्स-
मासेन स्त्रीविवाहान्निबोधत ॥ २० ॥ ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः
प्राजापत्यस्तथासुरः ॥ गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमो-
ऽधमः ॥ २१ ॥ यो यस्य धर्म्यो वर्णस्य गुणदोषौ च यस्य यौ ॥ त-
द्वः सर्वं प्रवक्ष्यामि प्रसवे च गुणागुणान् ॥ २२ ॥ षडानुपूर्व्या
विप्रस्य क्षत्रस्य चतुरोऽवरान् ॥ विट्शूद्रयोस्तु तानेव विद्याद्धर्म्या-
नराक्षसान् ॥ २३ ॥

۱۸- جس براہمن کے گھر مین شودر کی کنیان دیوکرم اور پتر کرم کرتی ہو اُسکے دیے ہوے ہبیہ اور کبیہ کو دیوتا اور پتر نہین لیتے اور وہ براہمن سورگ مین نہین جاتا۔

۱۹- جس براہمن نے شودر کی کنیان کے لب پر اپنا لب ملایا اور اُسکی سانس سے اُسکا منہ ملا اور بصورت فرزند آپ اُس سے پیدا ہوا اُس براہمن کا پرایشچت شاستر مین نہین ہے۔

۲۰- اِس لوک اور پرلوک مین چارو ورنون کا ہت کرنیوالا اور اہت کرنیوالا آٹھہ طرح کا وواہ ہے اُسکو ہمسے سُنئے یہ بات بھرگ جی کہتے ہین۔

۲۱- براہم۔ دیو۔ آرش۔ پراجاپتیہ۔ اسُر۔ گاندھرب۔ راکشس۔ پشاچ۔ اسمین آٹھوان وواہ ادھم ہے۔

۲۲- جو وواہ جس ورن کو دھرم سے اور جس وواہ کا جو گن اور دوش ہے اور جس وواہ سے پیدا ہوے بیٹے مین جو گن اگن ہو سو سب آپ لوگون سے ہم کہین گے

۲۳- پہلے کے چھہ وواہ براہمن کو اور پچھلے چار کشتری اور انمین سے تین یا سوا راکشس کے ویشیہ اور شودر کو بعضون نے جائز کیا ہے۔

सवर्णाग्रे द्विजातीनां प्रशस्ता दारकर्मणि ॥ कामतस्तु प्रवृत्तानामिमाः स्युः क्रमशोवराः ॥ १२॥ शूद्रैव भार्या शूद्रस्य सा च स्वा च विशः स्मृते ॥ ते च स्वा चैव राज्ञश्च ताश्च स्वा चाग्रजन्मनः ॥ १३॥ न ब्राह्मणक्षत्रिययोरापद्यपि हि तिष्ठतोः ॥ कस्मिंश्चिदपि वृत्तान्ते शूद्रा भार्योपदिश्यते ॥ १४॥ हीनजातिस्त्रियं मोहादुद्वहन्तो द्विजातयः ॥ कुलान्येव नयन्त्याशु ससन्तानानि शूद्रताम् ॥ १५॥ शूद्रावेदी पतत्यत्रेरुतथ्यतनयस्य च ॥ शौनकस्य सुतोत्पत्त्या तदपत्यतया भृगोः ॥ १६॥ शूद्रां शयनमारोप्य ब्राह्मणो यात्यधोगतिम् ॥ जनयित्वा सुतं तस्यां ब्राह्मण्यादेव हीयते ॥ १७

۱۲- تینون ورنون کو اپنی ذات کی عورت کے ساتھ ووا ہ کرنا افضل ہے اور اگر بسبب تحریک کام دیو غیر ذات کی لڑکی کے ساتھ ووا ہ کرے تو بطریق ذیل کرے مگر وہ افضل نہیں ہے

۱۳- سُودر صرف اپنی ذات کی لڑکی سے اور ویشیہ اپنی ذات اور سودر کی لڑکی سے اور کشتری اپنی ذات اور ویشیہ اور شودر کی لڑکی سے اور براہمن چارون ورنونکی لڑکی سے ووا ہ کرسکتا ہے

۱۴- مگر کسی پران مین وقت مصیبت کے بھی براہمن اور کشتری کو شودر ذات کی لڑکی کے ساتھ ووا ہ کرنا پایا نہین گیا-

۱۵- براہمن کشتری ویشیہ تینون ورن اگر محبت کی وجہ سے نیچ ذات کی لڑکی کے ساتھ ووا ہ کرین تو اولاد اور اپنی کُل کو جلد ناش کر دیتے ہین-

۱۶- اتر اور اُتتھیہ رِشی کا یہ مت ہے کہ شودر کی کنیا سے ووا ہ کرنے سے تینون ورن پتت ہو جاتے ہین اور شونات رشی کا یہ مت ہے کہ شودر کی لڑکی سے لڑکا پیدا ہونے سے پتت ہوتا ہے اور بھرگ رشی کا یہ مت ہے کہ پوتا پیدا ہونے سے پتت ہوتا ہے-

۱۷- شودر کی لڑکی کو اپنی پلنگ پر بٹھانے سے براہمن نرک مین جاتا ہے اور اُس سے لڑکا پیدا ہونے سے دھرم کرم سے الگ ہو جاتا ہے

हीनक्रियंनिष्पुरुषंनिश्छन्दोरोमशार्शसम्॥ क्षय्यामयाव्यप
स्मारिश्वित्रिकुष्ठिकुलानिच॥७॥ नोद्वहेत्कपिलांकन्यांना-
धिकाङ्गींनरोगिणीम्॥ नालोमिकांनातिलोमांनवाचाटांन
पिङ्गलाम्॥८॥ नर्क्षवृक्षनदीनाम्नींनान्त्यपर्वतनामिकाम्॥
नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नींनचभीषणनामिकाम्॥९॥ अव्यङ्गाङ्गीं
सौम्यनाम्नींहंसवारणगामिनीम्॥ तनुलोमकेशदशनांमृद्व-
ङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियम्॥१०॥ यस्यास्तुनभवेद्भ्राताविज्ञायेतवापि-
ता॥ नोपयच्छेततांप्राज्ञः पुत्रिकाधर्मशंकया॥११॥

۷ - جس کُل کی کریا نشٹ ہوگئی ہے اور جسمین مرد نہون اور جس کُل مین بہت روم والے مرد وعورت ہون اور جسمین وید کا پڑھنا نہین ہے اور بواسیر کی بیماری اور چھئی روگ اور ضُعف ہاضمہ اور مرگی اور سفید داغ وغیرہ بہت طرح کے کوڑھ جس کُل مین ہون وہ اگر اوپر کہے ہوئے دھن دولت سے بھرا ہو تو بھی اس کُل مین وواہ نکرے -

۸ - کپِل رنگ کی زیادہ اعضا رکھنی والی بیمار - بغیر بال والی - بہت بال والی بہت بولنیوالی پنگلا رنگ کی

۹ - اور جسکا نام ستارہ و درخت و پرند و سانپ و ملیکش و پہار و دوس کی طرح ہیبت ناک ہے اوسکے ساتھ وواہ نکرنا چاہیئے -

۱۰ - بلکہ جو سب اعضا رکھنے والی ہو اور نام بھی اوسکا اچھا ہو اور چال جسکی مثل ہاتھی و ہنس کے ہو اور بال اور دانت بھی چھوٹے ہون ایسی عورت کے ساتھ وواہ کرنا چاہیئے -

۱۱ - جس لڑکی کے بھائی نہو اور جسکے باپ کا نام معلوم نہو اوس سے وواہ نکرنا چاہیئے کیونکہ پُتر کا دھرم کا شبہہ رہیگا - (باپ وواہ کے وقت ارادہ کرے کہ اِس لڑکی کا لڑکا میرا ہوگا اوسکو پُتر کا کرن کہتے ہین پس وہ لڑکا اپنے نانا کا ہوگا -

षट्त्रिंशदाब्दिकं चर्यं गुरौ त्रैवेदिकं व्रतम्॥ तदर्द्धिकं वाग्रहणा ग्रहणान्तिकमेव वा॥ १॥ वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वापि यथाक्रमम्॥ अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममावसेत्॥ २॥ तं प्रतीतं स्वधर्मेण ब्रह्मदायहरं पितुः॥ स्रग्विणं तल्प आसीनमर्हयेत्प्रथमं गवा॥ ३॥ गुरुणानुमतः स्नात्वा समावृत्तो यथाविधि॥ उद्वहेत द्विजो भार्य्यां सवर्णां लक्षणान्विताम्॥ ४॥ असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः॥ सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि मैथुने॥ ५॥ महान्त्यपि समृद्धानि गोजाविधनधान्यतः॥ स्त्रीसम्बन्धे दशैतानि कुलानि परिवर्जयेत्॥ ६॥

۱- چھتیس یا اٹھارہ یا نو برش تا تحصیل علم وید کے تینون ویدون کے پڑھنے کا برت کرنا چاہئے -

۲- تینون وید یا دو وید یا ایک وید سلسلہ سے پڑھکر اکھنڈ برت کرنیوالا آدمی گرہستھ آشرم مین آوے -

۳- دھرم کا انشٹھان کرنے سے جو برہم چاری پرسدھ ہوا اور باپ سے وید پڑھا ہو مالا پہنے ہوئے کھٹیا پر بیٹھا ہو اور گئو کے دودھ آدسے مدھپرک بنا کر آچارج یا باپ اوسکی پوجا کرے -

۴- گرو کی آگیا سے اسنان کرکے سماورتن کرم کرکے اپنی ذات کی اچھی لڑکی سے (وواہ شادی) کرے -

۵- جو لڑکی مان کے سپنڈ مین نہ ہو اور نہ باپ کے گوتر مین ہو ایسی لڑکی تینون ورنون کو زوجہ بنانے کے لئے اچھی ہوتی ہے -

۶- اگرچہ گئو بکری دولت وغیرہ کی کثرت ہو تو بھی جو دش کُل یعنی خاندان آگے کہینگے اُن مین وواہ نکرنا چاہیئے -

आचार्येतुखलुप्रेतेगुरुपुत्रेगुणान्विते॥ गुरुदारेसपिण्डेवागुरु-
वद्वृत्तिमाचरेत्॥ २४७॥ एतेष्वविद्यमानेषुस्थानासनविहार-
वान्॥ प्रयुञ्जानोऽग्निशुश्रूषांसाधयेद्देहमात्मनः॥ २४८॥ ए-
वंचरतियोविप्रोब्रह्मचर्य्यमविप्लुतः॥ सगच्छत्युत्तमंस्थानंन-
चेहाजायतेपुनः॥ २४९॥

इतिमानवेधर्म्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां
द्वितीयोऽध्यायः २

۲۴۷ - گرو کے مرنے کے بعد گرو کا لڑکا جو گن وان ہو اور گرو کی استری اور گرو کے سپنڈ (یعنی بھائی بند) ان سب کو بھی گرو کی طرح ماننا چاہیے۔

۲۴۸ - جو برہم چاری نیشٹک ہے وہ بحالت نہ موجود ہونے گرو و عزیز و اقارب گرو کے اُنکے مکان اور آسن میں رہکر اگنی کی سیوا کرتا ہوا اپنے کو برہم میں ملجانے کے لائق کرے

۲۴۹ - اسطرح جو براہمن اکھنڈ برہم چرج کو کرتا ہے وہ اُتم استھان میں جاتا ہے اور پھر سنسار میں نہیں آتا۔

منو جی کا دھرم شاستر بھگو جی کی
سنگھتا کا دوسرا ادھیائے سماپت ہوا۔

नाब्राह्मणो गुरौ शिष्यो वासमात्यन्तिकं वसेत्॥ ब्राह्मणो चाननूचाने कांक्षन्गतिमनुत्तमाम्॥ २४२॥ यदि त्वात्यन्तिकं वासं रोचयेत गुरोः कुले॥ युक्तः परिचरेदेनमा शरीरविमोक्षणात्॥ २४३॥ आसमाप्तेः शरीरस्य यस्तु शुश्रूषते गुरुम्॥ स गच्छत्यंजसा विप्रो ब्रह्मणः सद्म शाश्वतम्॥ २४४॥ न पूर्वं गुरवे किंचिदुपकुर्वीत धर्मवित्॥ स्नास्यंस्तु गुरुणाज्ञप्तः शक्त्या गुर्वर्थमाहरेत्॥ २४५॥ क्षेत्रं हिरण्यं गामश्वं छत्रोपानहमासनम्॥ धान्यं शाकं च वासांसि गुरवे प्रीतिमावहेत्॥ २४६॥

۲۴۲ - آتم گت کی چھا کرنے والا آدمی کشتری وغیرہ گورو اور مورکھ براہمن کے پاس زیادہ قیام نہ کرے۔

۲۴۳ - اگر گورو کے پاس زیادہ عرصہ تک قیام کرنا منظور ہو تو ہوشیاری سے جب تک زندہ رہے خدمت کرتا ہوا قیام کرے مگر براہمن گورو کے پاس یہ نشٹک برہم چاری کہلاتا ہے۔

۲۴۴ - جو برہم چاری شریر تیاگ کرنے تک گورو کی سیوا کرتا ہے وہ بلا محنت ابناشی برہم لوک کو پاتا ہے۔

۲۴۵ - دھرم کا جاننے والا برہم چاری جب تک پڑھتا ہے تب تک سوا سیوا کے دوسرا اپکار گورو کا نہ کرے پڑھ چکنے کے بعد سماورتن کے نمت اشنان کرکے گورو کا حکم لیکر گورو کو حسب توفیق دکشنا دے۔

۲۴۶ - یعنی زمین - سونا - گئو - گھوڑا - چھتری - جوتا - آسن - شاک - کپڑا وغیرہ گورو کو دیوے۔

* یعنی پتر کل میں آنے کے لئے دعا کے واسطے۔

तेषामनुपरोधेन पारत्र्यं यद्यदाचरेत्॥ तत्तन्निवेदयेत्तेभ्यो मनोवचनकर्मभिः॥२३६॥ त्रिष्वेतेष्वितिकृत्यं हि पुरुषस्य समाप्यते॥ एष धर्मः परः साक्षादुपधर्मोऽन्य उच्यते॥२३७॥ श्रद्दधानः शुभां विद्यामाददीतावरादपि॥ अन्त्यादपि परं धर्मं स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि॥२३८॥ विषादप्यमृतं ग्राह्यं बालादपि सुभाषितम्॥ अमित्रादपि सद्वृत्तममेध्यादपि काञ्चनम्॥२३९॥ स्त्रियो रत्नान्यथो विद्या धर्मः शौचं सुभाषितम्॥ विविधानि च शिल्पानि समादेयानि सर्वतः॥२४०॥ अब्राह्मणादध्ययनमापत्काले विधीयते॥ अनुव्रज्या च शुश्रूषा यावदध्ययनं गुरोः॥२४१॥

۲۳۶ ۔ انھوں کی سیوا کرتا ہوا اور دوسرا دھرم بھی کرے تو من بانی کرم کرکے انھوں سے کہدیوے ۔

۲۳۷ ۔ انھیں تینوں مین آدمی کے کرنے کی جو بات ہے وہ ہو جاتی ہے پس انکی خدمت کے سوای اور دھرم جو ہین وہ اُپ دھرم ہین ۔

۲۳۸ شردھا کرکے اچھی ودیا کو نیچ ذات سے بھی لینا اور پرم دھرم کو چانڈال سے بھی لینا اور سندر استری کو دشٹ کل سے بھی لینا چاہیئے ۔

۲۳۹ ۔ زہر و طفل و دشمن ان تینوں سے سلسلے موافق آبحیات و شیرین زبانی و طریقہ نیک و طلا کو لینا چاہیئے ۔

۲۴۰ ۔ عورت و جواہرات و علم و دھرم و صفائی و پاکی و شیرین زبانی و طرح طرح کی کاریگری ان سب کو جہانسے ملے وہان سے لینا چاہیئے

۲۴۱ ۔ اگر مصیبت آپڑے تو کشتری وغیرہ سے براہمن پڑھے اور جبتک پڑھے تب تک اُس گرو کے پیچھے چلے اور سیوا کرے ۔

तएवहित्रयोलोकास्तएवत्रयआश्रमाः॥ तएवहित्रयोवेदास्तएवोक्तास्त्रयोऽग्नयः॥२३०॥ पितावैगार्हपत्योऽग्निर्माताग्निर्दक्षिणाःस्मृतः॥ गुरुराहवनीयस्तुसाग्नित्रेतागरीयसी॥२३१॥ त्रिष्वप्रमाद्यन्नेतेषुत्रींल्लोकान्विजयेद्गृही॥दीप्यमानःस्ववपुषादेववद्दिविमोदते॥२३२॥ इमंलोकंमातृभक्त्यापितृभक्त्यातुमध्यमम्॥ गुरुशुश्रूषयात्वेवंब्रह्मलोकंसमश्नुते॥२३३॥ सर्व्वेतस्यादृताधर्म्मायस्यैतेत्रयआदृताः॥ अनादृतास्तुयस्यैतेसर्व्वास्तस्याःफलाःक्रियाः॥२३४॥ यावत्त्रयस्तेजीवेयुस्तावन्नान्यंसमाचरेत्॥ तेष्वेवनित्यंशुश्रूषांकुर्य्यात्प्रियहितेरतः॥२५॥

۲۳۰ - تینوں لوک تینوں آشرم تینوں وید تینوں اگن یہی تینوں شخص ہیں۔

۲۳۱ - گارہپتیہ اگن پتا ہے اور دکشن اگن ماتا ہے آہونی اگن گرو ہیں یہی تینوں اگن بہت بڑی ہیں۔

۲۳۲ - ان تینوں کی خدمتگذاری میں مستعد رہنے سے آدمی تینوں لوک کو جیت کر اور بڑا تیج وان ہوکر دیوتاؤں کی طرح سورگ میں آنند کرتا ہے۔

۲۳۳ - ماتا کی بھگت کرنے سے بھولوک اور پتا کی بھگت کرنے سے انترکش لوک اور گرو کی بھگت کرنے سے برہم لوک کو پاتا ہے۔

۲۳۴ - جس شخص نے ان تینوں کا آدر کیا وہ گویا سب دھرموں کا آدر کر چکا اور جسنے ان تینوں کا آدر نہیں کیا اسکی سب کریا نشپھل ہے۔

۲۳۵ - جبتک یہ تینوں زندہ رہیں تب تک خود مختار ہوکر دوسرا دھرم نکرے انھیں کی خدمت اور بھلائی اور ہرشی میں رہے۔

× یعنے ماتا پتا گرو۔

धर्मार्थावुच्यते श्रेयः कामार्थौ धर्म एव च ॥ अर्थ एवेह वा श्रेय-स्त्रिवर्ग इति तु स्थितिः ॥ २२४ ॥ आचार्यो ब्रह्मणो मूर्त्तिः पिता मूर्त्तिः प्रजापतेः ॥ माता पृथिव्या मूर्त्तिस्तु भ्राता स्वो मूर्त्तिरात्मनः ॥ २२५ ॥ आचार्यश्च पिता चैव माता भ्राता च पूर्वजः ॥ नार्तेनाप्यवमन्तव्या ब्राह्मणेन विशेषतः ॥ २२६ ॥ यं मातापितरौ क्लेशं सहेते संभवे नृणाम् ॥ न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्त्तुं वर्षशतैरपि ॥ २२७ ॥ तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्य्यस्य च सर्व्वदा ॥ तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु तपः सर्व्वं समाप्यते ॥ २२८ ॥ तेषां त्रयाणां शुश्रूषा परमं तप उच्यते ॥ न तैरभ्यननुज्ञातो धर्ममन्यं समा-चरेत् ॥ २२९ ॥

٢٢٤- کسی کے مت مین دھرم اور ارتھ دونون اور کسی کے مت مین ارتھ اور کام اور کسی کے مت مین صرف دھرم کلیان کرنیوالا ہے اب اپنی مت کو کہتے ہین کہ دھرم اور ارتھ اور کام تینون باہم موافق ہین- انھین تینون سے سب کچھ ملتا ہے-

٢٢٥- آچارج پرماتما کی مورت ہے اور ماتا پرتھوی کی مورت ہے اور پتیا برہما کی مورت ہے اور سگا بھائی اپنی گردکی مورت ہے-

٢٢٦- آچارج اور پتیا اور سگا بڑا بھائی ان تینون کی توہین رنجیدہ دل ہو کر بھی نکرے اسبات کی تعمیل برہمن کو تو ضرور ہی واجب ہے-

٢٢٧- آدمی کے پیدا ہونے مین جو تکلیف مان اور باپ سہتے ہین اوسکا عوض سو برس کے اوپکار کرنے سے بھی نہین ہو سکتا یہ سب دیوتا روپ ہین انکا اپمان نکرنا چاہیئے-

٢٢٨- مان اور باپ اور آچارج ان تینون کی خدمت ہمیشہ کرنا چاہیئے انکے خوش رہنے سے سب عبادت پوری ہوتی ہے

٢٢٩- ان تینون کی سیوا پرم تپ یعنی عبادت اعظم ہے ان لوگونکے حکم بغیر کوئی دوسرا دھرم نکرنا چاہیئے

यथा खनन्खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति॥ तथा गुरुगतां विद्यां शुश्रूषुरधिगच्छति॥२१८॥ मुण्डो वा जटिलो वा स्यादथवा स्याच्छिखाजटः॥ नैनं ग्रामेऽभिनिम्लोचेत्सूर्यो नाभ्युदियात्क्वचित्॥२१९॥ तं चेदभ्युदियात्सूर्यः शयानं कामचारतः॥ निम्लोचेद्वाप्यविज्ञानाज्जपन्नुपवसेद्दिनम्॥२२०॥ सूर्येण ह्यभिनिर्मुक्तः शयानोऽभ्युदितश्च यः॥ प्रायश्चित्तमकुर्वाणो युक्तः स्यान्महतैनसा॥२२१॥ आचम्य प्रयतो नित्यमुभे सन्ध्ये समाहितः॥ शुचौ देशे जपञ्जप्यमुपासीत यथाविधि॥२२२॥ यदि स्त्री यद्यवरजः श्रेयः किंचित्समाचरेत्॥ तत्सर्वमाचरेद्युक्तो यत्र वास्य रमेन्मनः॥२२३॥

۲۱۸- جسطرح کدالی سے کھودتے کھودتے آدمی پانی پاتا ہے اسیطرح گرو کی سیوا کرنے والا گرو کی سمپورن ودیا کو چیلہ پاتا ہے۔

۲۱۹- اگرچہ برہم چاری مونڈ منڈائے یا جٹا رکھائے یا چوٹی کو جٹا کے برابر بنائے ہو مگر وقت طلوع و غروب آفتاب کے گانون یا شہر مین نہ رہے یعنے یہ دونون وقت شہر سے باہر برہم چاری پر گذرین

۲۲۰- اگر برہم چاری وقت طلوع و غروب آفتاب کے گھر مین موجود ہو تو اسدن جپ کرتا ہوا اپاس کرے۔

۲۲۱- اگر اوپر کہا ہوا پراشچت نکرے تو بڑا پاپ ہوتا ہے۔

۲۲۲- آچمن کرکے دونون سندھیا مین ایکچت ہوکر پوتر استہان مین اچھی طرح سے گایتری کا جپ کرے۔

۲۲۳- عورت یا چھوٹا آدمی کوئی اچھی بات کرتا ہو تو اسکو آپ بھی کرے یا شاستر کے موافق جس عمل مین دل کو اطمینان ہو وہ کام کرے۔

गुरुपत्नीतुयुवतीर्नाभिवाद्येहपादयोः ॥ पूर्णविंशतिवर्षेण
गुणदोषौविजानता ॥२१२॥ स्वभावएषनारीणांनराणामि-
हदूषणम् ॥ अतोऽर्थान्नप्रमाद्यन्तिप्रमदासुविपश्चितः ॥२१३
॥ अविद्वांसमलंलोकेविद्वांसमपिवापुनः ॥ प्रमदाह्युत्पथंने-
तुंकामक्रोधवशानुगम् ॥२१४॥ मात्रास्वस्रादुहित्रावान-
विविक्तासनोभवेत् ॥ बलवानिन्द्रियग्रामोविद्वांसमपिक-
र्षति ॥२१५॥ कामन्तुगुरुपत्नीनांयुवतीनांयुवाभुवि ॥ विधि-
वद्वन्दनंकुर्यादसावहमितिब्रुवन् ॥२१६॥ विप्रोष्यपादग्रह-
णमन्वहंचाभिवादनम् ॥ गुरुदारेषुकुर्वीतसतांधर्ममनुस्म-
रन् ॥२१७॥

۲۱۲ جو چیلہ بیس برس کا ہو اور عیب و ہنر جانتا ہو وہ گرو کی جوان عورت کا پاؤن پکڑ کے پرنام نہ کرے

۲۱۳ آدمیون کو عیب لگانا عورتون کی عادت ہے اسلیئے پنڈت لوگ عورتون سے ہوشیار رہین۔

۲۱۴ کام کرودھ کے وش ہو پنڈت ہو یا مورکھ ہو اسکو بری راہ مین لیجانے کیواسطے استری لوگ سامرتھ رکھتی ہین

۲۱۵- مان بہن لڑکی ان سب کے ساتھ اکیلے مکان مین نہ رہے کیونکہ اندری بہت بلوان ہین پنڈتون کو بھی بری راہ پر کھینچ لیجاتی ہین۔

۲۱۶- گرو کی جوان عورت کو جوان چیلا اچھی طرح سے یہ کہکر کہ مین فلانا ہون زمین پر گر کر ڈنڈوت کرے۔

۲۱۷ سفر سے آکر اچھے لوگون کے دھرم کو یاد کرکے گرو کی استری کے پاؤن پکڑے اور پرنام تو ہر روز کرے۔

विद्यागुरुष्वेतदेवनित्यावृत्तिः स्वयोनिषु ॥ प्रतिषेधत्सुचा-
धर्मान्धर्मंचोपदिशत्स्वपि॥ २०६॥ श्रेयस्सुगुरुवद्वृत्तिंनित्य-
मेवसमाचरेत्॥ गुरुपुत्रेषुचार्येषुगुरोश्चैवस्वबन्धुषु॥ २०७॥
बालःसमानजन्मावाशिष्योवायज्ञकर्मणि॥ अध्यापयन्गु-
रुसुतोगुरुवन्मानमर्हति॥ २०८॥ उत्सादनंचगात्राणांस्नाप-
नोच्छिष्टभोजने॥ नकुर्याद्गुरुपुत्रस्यपादयोश्चावनेजनम्॥ २०९॥
गुरुवत्प्रतिपूज्याःस्युःसवर्णागुरुयोषितः॥ असवर्णास्तुसंपू-
ज्याःप्रत्युत्थानाभिवादनैः॥ २१०॥ अभ्यंजनंस्नापनंचगा-
त्रोत्सादनमेवच॥ गुरुपत्न्यानकार्याणिकेशानांचप्रसाध-
नम्॥ २११॥

۲۰۶- اسی طرح سوا آچارج کے آپا دھیا وغیرہ دش گرو ہین اور چچا وغیرہ رشتہ دار اور ادھرم سے بچانیوالے اور اچھی بات سکھانے والے بھی مثل گرو کے ہین-

۲۰۷- جو بڑے لوگ ہین اور گرو کے بڑے بیٹے اور گرو کے بھائی بندھوان سب کو بھی مثل گرو کے جانے-

۲۰۸- گرو کا بیٹا اپنی عمر سے چھوٹا ہو یا بڑا ہو اور پڑھانے کی سامرتھ رکھتا ہو اور اپنی یگیہ دیکھنے کو آوے تو اوسکی تعظیم مثل گرو کے کرنا چاہیئے-

۲۰۹- اَسنان کرانا- ابٹن لگانا- جوٹھا بھوجن کرنا- پاؤن دھونا یہ سب کام گرو کے بیٹے کے نہ کرے-

۲۱۰- گرو کے ہمقوم زوجہ کی پوجا مثل گرو کے کرے اور جو عورت ہمقوم نہین ہے تو اُسکی پوجا یہی ہے کہ اٹھکر صرف پرنام کرے-

۲۱۱- گرو کی استری کے بدن مین تیل یا اُبٹن نہ لگاوے اور نہ اسنان کراوے نہ بال سکھاوے-

परिवादात्खरोभवतिश्वावैभवतिनिन्दकः॥ परिभोक्ताकृमिर्भवतिकीटोभवतिमत्सरी॥२०१॥ दूरस्थोनार्चयेदेनंनक्रुद्धोनान्तिकेस्त्रियाः॥ यानासनस्थश्चैवैनमवरुह्याभिवादयेत्॥२०२॥ प्रतिवातेऽनुवातेचनासीतगुरुणासह॥ असंश्रवेचैवगुरोर्नकिंचिदपिकीर्त्तयेत्॥२०३॥ गोऽश्वोष्ट्रयानप्रासादस्रस्तरेषुकटेषुच॥ आसीतगुरुणासार्द्धंशिलाफलकनौषुच॥२०४॥ गुरोर्गुरौसन्निहितेगुरुवद्वृत्तिमाचरेत्॥ नचानिसृष्टोगुरुणास्वान्गुरूनभिवादयेत्॥२०५॥

۲۰۱ - گرو کا سچا یا جھوٹا عیب کہنے سے گدھا اور نندا کرنے سے کتا ہوتا ہے اور اور گرو انچت وھن بھوجن کرنے سے چھوٹا کیڑا اور گرو کی بڑائی نہ سہہ سکنے سے بڑا کیڑا ہوتا ہے -

۲۰۲ - گرو کی پوجا دور سے (یعنی کسی کے ہاتھ پوجا کی سامگری بھیجکر) نہ کرے اور غصہ سے بھی نہ کرے اور اگر اپنی عورت کے پاس بیٹھا ہو یا سواری یا آسن پر بیٹھا ہو تو سواری سے اتر کر اور آسن کو چھوڑ کر پرنام کرے -

۲۰۳ - جو آدمی گرو کے ملک سے چیلہ کے ملک مین آیا ہو یا چیلہ کے ملک سے گرو کے ملک مین آیا ہو ان دونون کے روبرو چیلہ گرو کے ساتھ نہ رہے جو بات گرو کی سننے مین نہ آوے ایسی کوئی بات گرو کی یا اور کسی کی نہ کہے یعنے گرو سے چھپا کوئی بات نہ کہے -

۲۰۴ - بیل گھوڑا اونٹ والے رتھ یا گاڑی پر اور چٹائی اور پتھر اور لکڑی اور ناؤ پر گرو کے ساتھ بیٹھے -

۲۰۵ - گرو کے گرو کو بھی مثل اپنے گرو کے جانے اور بغیر حکم گرو کے اپنے ملک سے آئے ہوئے چچا وغیرہ کو پرنام نہ کرے -

प्रतिश्रवणसंभाषेनसयानःसमाचरेत्।। नासिनोनचभुञ्जानो नतिष्ठन्नपरांमुखः।।१९५।। आसीनस्यस्थितःकुर्यादभिग च्छंस्तुतिष्ठतः।। प्रत्युद्गम्यत्वाव्रजतःपश्चाद्धावंस्तुधावतः१९६ परांमुखस्याभिमुखोदूरस्थस्यैत्यचान्तिकम्।। प्रणम्यतुश यानस्यनिदेशेचैवतिष्ठतः।।१९७।।नीचंशय्यासनंचास्यस र्व्वदागुरुसन्निधौ।। गुरोस्तुचक्षुर्विषयेनयथेष्टासनोभवेत्। ।।१९८।।नोदाहरेदस्यनामपरोक्षमपिकेवलम्।। नचैवास्या नुकुर्वीतगतिभाषितचेष्टितम्।। १९९।।गुरोर्यत्रपरीवादोनि न्दावापिप्रवर्त्तते।। कर्णौतत्रपिधातव्यौगन्तव्यंवाततोऽन्य तः।।२००।।

۱۹۵ — سوتا ہوا اور آسن پر بیٹھا ہوا اور بھوجن کرتا ہوا اور مکھ پھیرے تکو گرو سے بات چیت نہ کرے اور نہ سنے۔

۱۹۶ — گرو بیٹھے ہوں تو آپ کھڑا ہوکر اور گرو کھڑے ہوں تو آپ چلکر اور گرو چلتے ہوں تو آپ سامنے جاکر اور گرو دوڑتے ہوں تو آپ بھی پیچھے دوڑکر گفت و شنید کرے۔

۱۹۷ — گرو منھ پھیرے کھڑے ہوں تو سامنے جاکر اور دور ہوں تو پاس جاکر اور سوتے ہوں تو پرنام کرکے اونکی اگیا کو سنے۔

۱۹۸ — گرو کے پاس خوابگاہ اور بستره اپنا نیچا رکھے جیسا دل چاہے ویسا نہ رکھے۔

۱۹۹ — گرو کے پیچھے بھی صرف انکے نام کو نہ لیوے اور گرو کی جیسی چال ڈھال بولی چیشٹھا (یعنی قطع) ہو ویسی اپنی نہ رکھے۔

۲۰۰ — جہاں گرو کا سچا یا جھوٹھا عیب کہا جاتا ہو یا نندا (بدگوئی) ہوتی ہو وہاں اپنے کان بند کرکے یا وہاں سے اٹھ جاوے۔

ब्राह्मणस्यैव कर्मैतदुपदिष्टं मनीषिभिः ।।राजन्यवैश्ययोस्त्वेवं-
नैतत्कर्म विधीयते ।।१९०।। चोदितोगुरुणा नित्यमप्रचोदितए-
ववा ।। कुर्य्यादध्ययनेयत्नमाचार्य्यस्य हितेषु च।। १९१ ।।शरी-
रंचैवबाचंचबुद्धीन्द्रियमनांसिच । नियम्यप्रांजलिस्तिष्ठेद्वीक्ष-
माणोगुरोर्मुखम् ।। १९२ ।। नित्यमुद्धृतपाणिःस्यात्साध्वाचारः
सुसंयुतः ।। आस्यतामितिचोक्तःसन्नासीताभिमुखंगुरोः ।।
१९३ ।।हीनान्नवस्त्रवेषःस्यात्सर्वदागुरुसन्निधौ ।। उत्तिष्ठे-
त्प्रथमंचास्यचरमंचैवसंविशेत ।। १९४ ।।

۱۹۰- شرادھ مین بھوجن کرنا براہمن ہی کا کام ہے کشتری و بیشیہ برھم چاریون کا کام نہین ہے

۱۹۱- گرو کی اجازت ہو یا نہو مگر وید کے پڑھنے اور گورو کی بھلائی کرنے مین کوشش کرے

۱۹۲- جسم و زبان و عقل و حواس و دل کو قابو مین رکھکر ہاتھ جوڑے ہوئے گرو کو دیکھتا ہوا سامنے کھڑا رہے۔

۱۹۳- داہنے ہاتھ کو چادر سے ہمیشہ باہر رکھے سادھ کیطرح آچار سے رہے چنچل پنے کو چھوڑے رہے اور جب گرو بیٹھنے کی اجازت دین تب سامنے اونکے بیٹھے۔

۱۹۴- گرو کے سامنے ایسا طریقہ اختیار کرے کہ جیسا گرو بھوجن کرے اُس سے اونے درجہ کا بھوجن آپ کرے اور جیسا کپڑا گرو پہنین اُس سے کم درجہ کا کپڑا آپ پہنے اور جیسی صورت سے گرو رہین اس سے کمتر صورت سے آپ رہے اور گرو کے جاگنے سے پہلے جاگے اور گرو کے سونے کے بعد آپ سووے۔

गुरोःकुलेनभिक्षेतनज्ञातिकुलबन्धुषु॥ अलाभेत्वन्यगेहानांपूर्वंपूर्वंविवर्जयेत्॥१८४॥ सर्वंवापिचरेद्ग्राममंपूर्वोक्तानामसंभवे॥ नियम्यप्रयतोवाचमभिशस्तांस्तुवर्जयेत्॥१८५॥दूरादाहृत्यसमिधःसन्निदध्याद्विहायसि॥ सायंप्रातश्चजुहुयात्ताभिरग्निमतन्द्रितः॥१८६॥ अकृत्वाभैक्षचरणमसमिध्यचपावकम्॥ अनातुरःसप्तरात्रमवकीर्णिव्रतंचरेत्॥१८७॥भैक्षेणवर्तयेन्नित्यंनैकान्नादीभवेद्व्रती॥भैक्षेणव्रतिनोवृत्तिरुपवाससमास्मृता॥१८८॥व्रतवद्देवदैवत्येपित्र्येकर्मण्यथर्षिवत्॥ काममभ्यर्थितोऽश्नीयाद्व्रतमस्यनलुप्यते॥१८९॥

۱۸۴- گرو کے کُل مین ذات کے کُل مین بھائی کے کُل مین بھیکھ نہ مانگے اور اگر کہین نہ ملے تو اوّل اول کو چھوڑکر دوسرے دوسرے سے مانگے -

۱۸۵- جو ایسے گھر نہون تو سب گانؤن مین مون ہوکر اندریون کو قابو مین لاکر بھیکھ مانگے لیکن پاپیون کا گھر چھوڑدیوے -

۱۸۶- دور سے لکڑی لاکر زمین سے اوپر آکاش مین (یعنی اونچے پر) رکھے اُوسی لکڑی سے صبح وشام ہون کرے -

۱۸۷- اگر سالم تندرست ہو تو سات دن تک بھیکھ نہ مانگے اور آگ مین ہون کرے اور کیرن نام برت (جو آگے کہین گے) کرے -

۱۸۸- ہر روز بھیکھ مانگ کر بھوجن کرے مگر ایک ہی گھر کا اَن نہ کھاوے بھیکھ مانگ کر بھوجن کرنا برت کے برابر ہے -

۱۸۹- اگر کسی شخص نے دیو یا پترکرم کے نمت نیوتہ دیا ہو تو خاطر خواہ شرادھ مین بھوجن کرے لیکن دونون کرمون مین سے دیوکرم مین برتی اور رشی کیطرح مدھ- مانس وغیرہ اشیاء ممنوعہ سے پرہیز کرے ایسا کرنے سے برت نہین جاتا -

अभ्यंगमञ्जनंचाक्ष्णोरुपानच्छत्रधारणम्॥ कामंक्रोधंचलोभंच नर्त्तनंगीतवादनम्॥१७८॥ द्यूतंचजनवादंचपरिवादंतथानृत-म्॥ स्त्रीणांचप्रेक्षणालम्भमुपघातंपरस्यच॥१७९॥एकः शयीतसर्व्वत्रनरेतःस्कन्दयेत्क्वचित्॥ कामाद्धिस्कन्दयन्रेतो हिनस्तिव्रतमात्मनः॥१८०॥स्वप्नेसिक्त्वाब्रह्मचारीद्विजःशुक्र-मकामतः॥ स्नात्वार्कमर्चयित्वात्रिःपुनर्मामित्यृचंपठेत्॥१८१ ॥ उदकुम्भंसुमनसोगोशकृन्मृत्तिकाकुशान्॥ आहरेद्यावद-र्थानिभैक्षंचाहरहश्चरेत्॥१८२॥वेदयज्ञैरहीनानांप्रशस्तानां स्वकर्म्मसु॥ ब्रह्मचार्य्याहरेद्भैक्षंगृहेभ्यः प्रयतोऽन्वहम्॥ १८३॥

۱۷۸- ادبٹن- کاجل- جوتا- چھتری- کام- کرودھ- لوبھ- ناچنا- گانا بجانا-

۱۷۹- جوا- جھگڑا- کسی کا جھوٹا عیب بیان کرنا- عورتوں کو دیکھنا اور اُنسے ملنا کسی کی بدخواہی- اِن سب باتوں سے پرہیز کرے-

۱۸۰- اکیلا سووے بیج کو نہ گرادے اور جو کوئی عمداً بیج کو گراتا ہے وہ اپنا برت کھوتا ہے-

۱۸۱- اگر خواب میں بلاخواہش بیج گر جاوے تو غسل کرکے سورج کی پوجا کرکے پُنرمام اس منتر کو تین بار جپ کرے-

۱۸۲- پانی کا گھڑا پھول گوبر مٹی کُش- ان سب کو ضرورت کے موافق لادے اور ہر روز بھیکھ مانگے

۱۸۳- جو شخص وید اور یگیہ اور اپنے اچھے کرموں کے ساتھ ہو اُسکے گھر سے بھیکھ لاوے-

नाभिव्याहारयेद्ब्रह्मस्वधानिनयनादृते॥ शूद्रेण हि समस्तावद्याव
द्वेदे न जायते॥१७२॥ कृतोपनयनस्यास्य व्रतादेशनमिष्यते॥ ब्रह्म
णो ग्रहणं चैव क्रमेण विधिपूर्वकम्॥१७३॥ यद्यस्य विहितं चर्म
यत्सूत्रं या च मेखला॥ यो दण्डो यच्च वसनं तत्तदस्य व्रतेष्वपि॥
१७४॥ सेवेतेमांस्तु नियमान्ब्रह्मचारी गुरौ वसन्॥ सन्नियम्येन्द्रि
यग्रामं तपोवृद्ध्यर्थमात्मनः॥१७५॥ नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्या
द्देवर्षिपितृतर्पणम्॥ देवताभ्यर्चनं चैव समिदाधानमेव च १७६
वर्जयेन्मधु मांसं च गन्धं माल्यं रसान्स्त्रियः॥ शुक्तानि यानि स
र्वाणि प्राणिनां चैव हिंसनम्॥१७७॥

۱۷۲ - بغیر جنیؤ ہونے کے لڑکے کا ادھکار شرادھ کرنے مین ہوتا ہے لیکن شودر
کے برابر ہوتا ہے -

۱۷۳ - جنیؤ کے بعد برت کرنا چاہیے اور بدھ سے ساتھ وید پڑھنا
چاہیئے -

۱۷۴ - جسکا جو میکھلا جو چرم جو سوت جو ڈنڈ جو کپڑا ہے وہی برت مین
بھی رہے -

۱۷۵ - برہم چاری گرو کل مین مقیم ہو کر اندریون کو قابو مین لا کر اپنی عبادت کی ترقی کیواسطے
بطریق مندرجہ ذیل عمل کرے -

۱۷۶ - ہر روز غسل کر کے پاک ہو کر دیو رشی پتر دن کا ترپن کر کے دیوتاؤن کا پوجن
کرے اور آگ مین ہون کرے -

۱۷۷ - مدھ - مانس - گندھ - مالا - رس - استری - شکت* - جیوؤنکا مارنا -

* جو میٹھا ہے مگر پانی پا کر کچھ زمانہ گذرنے سے کھٹا ہو گیا ہے -

वेदमेवसदाभ्यस्येत्तपस्तप्स्यन्द्विजोत्तमः ॥ वेदाभ्यासो हि विप्रस्य
तपः परमिहोच्यते ॥ १६६ ॥ आहैव स नखाग्रेभ्यः परमं तप्यते
तपः ॥ यः स्रग्व्यपि द्विजोऽधीते स्वाध्यायं शक्तितोऽन्वहम् ॥
१६७ ॥ योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम् ॥ स जीवन्नेव
शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥ १६८ ॥ मातुरग्रेऽधिजननं द्वि-
तीयं मौञ्जिबन्धने ॥ तृतीयं यज्ञदीक्षायां द्विजस्य श्रुतिचोदना-
त् ॥ १६९ ॥ तत्र यद्ब्रह्मजन्मास्य मौञ्जीबन्धनचिह्नितम् ॥ तत्रा-
स्य माता सावित्री पिता त्वाचार्य्य उच्यते ॥ २७० ॥ वेदप्रदानादा-
चार्य्यं पितरं परिचक्षते ॥ नह्यस्मिन्युज्यते कर्म्म किंचिदामौञ्जि
बन्धनात् ॥ २७१ ॥

۱٦٦ - براہمن تپ کرتا ہوا وید ہی کو پڑھے یہی اوسکا بڑا تپ ہے -

۱٦٧ - سر سے لیکر پاؤن تک پرم تپ وہ کرتا ہے جو مالا پہنے ہوئے بھی شکتی پورک ہر روز وید کو پڑھتا ہے (یعنی برہم چاری کو مالا پہننا منع ہے پس فعل ممنوع کرنے پر بھی اگر وید کو پڑھا کرے تو وہ بھی تپ ہی ہے -

۱٦٨ - جو براہمن وید کا پڑھنا چھوڑ کر شاستروں کے پڑھنے مین محنت کرتا ہے وہ بحالت زندگی اپنے ونش سمیت شودر بھاؤ کو حاصل کرتا ہے -

۱٦٩ - وید مین براہمن کے تین جنم لکھے ہین پہلا جنم ماتا سے دوسرا جنیو ہونے سے تیسرا یگیہ کرنے سے -

۱٧٠ - تسمین جنیو ہونے سے جو جنم ہوتا ہے اوسمین گایتری ماتا ہے آچارج پتا ہے -

۱٧۱ - وید کے پڑھانے سے آچارج پتا کہلاتا ہے جب تک جنیو نہین ہوتا تب تک آدمی کا ادھکار کسی کام مین نہین ہوتا -

यस्यवाङ्मनसीशुद्धेसम्यग्गुप्तेचसर्वदा।।सवैसर्वमवाप्नोति-
वेदान्तोपगतंफलम्।।१६०।।नारुन्तुदःस्यादार्तोऽपिनपरद्रो
हकर्मधीः।। ययास्योद्विजतेवाचानालोक्यांतामुदीरयेत्।।-
१६१।।समानाद्ब्राह्मणोनित्यमुद्विजेतविषादिव।।अमृतस्ये-
वंचाकांक्षेदवमानस्यसर्वदा।।१६२।।सुखंह्यवमतःशेतेसुखं
चप्रतिबुध्यते।।सुखंचरतिलोकेऽस्मिन्नवमन्ताविनश्यति
।।१६३।।अनेनक्रमयोगेनसंस्कृतात्माद्विजःशनैः।।गुरौवसन्सं
चिनुयाद्ब्रह्माधिगमिकंतपः।।१६४।।तपोविशेषैर्विविधैर्व्रतै-
श्चविधिचोदितैः।।वेदःकृत्स्नोऽधिगन्तव्यःसरहस्योद्विजन्मना
।।१६५।।

۱۶۰- جسکی بانی اور من شدھ ہے اور ہمیشہ مایا سے بچا ہوا ہے، وہ ویدانت کے پھل کو پاتا ہے۔

۱۶۱- دکھی ہونے پر بھی ایسی بات نہ کہے کہ جس سے کسی کے دل پر گھاؤ لگے اور حسد نہ کرے۔

۱۶۲- براہمن تعظیم و تکریم کو مثل زہر کے اور توہین اور تحقیر کو مثل آبحیات کے سمجھتا رہے۔

۱۶۳- توہین پانے والا خوشی تمام سوتا اور جاگتا اور پھرتا ہے اور توہین کرنیوالا مرجاتا ہے۔

۱۶۴- اسطرح سنسکار کو پاکر آہستہ آہستہ گرو کل میں باس کرتا ہوا برہم کو پراپت کرنیوالی تپ کو کرے۔

۱۶۵- طرح طرح کے تپ اور برت کو کرکے وید کو مع علم پوشیدہ کے پڑھے۔

नहायनैर्नपलितैर्नवित्तेननबन्धुभिः॥ ऋषयश्चक्रिरेधर्मंयो ऽनूचानःसनोमहान्॥१५४॥ विप्राणांज्ञानतोज्यैष्ठ्यंक्षत्रि- याणान्तुवीर्यतः॥ वैश्यानांधान्यधनतश्शूद्राणामेवजन्मतः ॥१५५॥ नतेनवृद्धोभवतियेनास्यपलितंशिरः॥ योवैयुवाप्य धीयानस्तंदेवाःस्थविरंविदुः॥१५६॥ यथाकाष्ठमयोहस्तीय- थाचर्ममयोमृगः॥ यश्चविप्रोऽनधीयानस्त्रयस्तेनामबिभ्रति॥ १५७॥ यथाषण्ढोऽफलःस्त्रीषुयथागौर्गविचाफला॥ यथा- चाज्ञेऽफलंदानंतथाविप्रोऽनृचोऽफलः॥१५८॥ अहिंसयैव भूतानांकार्यंश्रेयोऽनुशासनम्॥ वाक्चैवमधुराश्लक्ष्णाप्रयो- ज्याधर्ममिच्छता॥१५९॥

۱۵۴- زیادہ عمر ہونے اور بالون کے پک جانے اور زیادہ دولت اور بہت رشتہ دارون سے برا ہمن کہلاتا بلکہ انگ سہت وید کا پڑھنے والا بڑا ہے یہ رشیون کا قول ہے۔

۱۵۵- براہمنون مین گیان سے بڑائی ہے کشتریون مین طاقت سے ویشیون مین دولت سے شودرون مین جنم ہونے سے۔

۱۵۶ بالون کے پکنے سے بڑا ہمن کہلاتا بلکہ جو کوئی جوان ہے اور پڑھے ہوے ہے اُسی کو دیوتاؤن نے بڑا کہا ہے۔

۱۵۷- کاٹھ کا ہاتھی چمڑے کا ہرن مورکھ براہمن یہ تینون برائے نام ہین کچھ کام نہین کر سکتے۔

۱۵۸- جسطرح نامرد آدمی عورتون مین اور گئو گئو ؤن مین نشپھل ہے اور جسطرح مورکھ برہمن کو دان دینا نشپھل ہے اسی طرح بے پڑھا براہمن نشپھل ہے۔

۱۵۹- ایسے کام کی اگیا دینا چاہئے جسمین کسی جاندار کو تکلیف نہو اور دھرماتما آدمی کو میٹھی بانی بولنا چاہئے۔

आचार्यस्त्वस्ययांजातिंविधिवद्वेदपारगः।।उत्पादयतिसावि-
त्र्यासासत्यासाजरामरा।।१४८।।अल्पंवाबहुवायस्यश्रुतस्यो
पकरोतियः।।तमपीहगुरुंविद्याच्छ्रुतोपक्रिययातया।।१४९
।।ब्राह्मस्यजन्मनःकर्तास्वधर्मस्यचशासिता।।बालोऽपिवि-
प्रोवृद्धस्यपिताभवतिधर्मतः।।१५०।।अध्यापयामासपितॄ
न्शिशुरांगिरसःकविः।।पुत्रकाइतिहोवाचज्ञानेनपरिगृह्य
तान्।।१५१।।तेतमर्थमपृच्छन्तदेवानागतमन्यवः।।देवाश्चै
तान्समेत्योचुर्न्याय्यंवःशिशुरुक्तवान्।।१५२।।अज्ञोभवति
वैबालःपिताभवतिमन्त्रतः।।अज्ञंहिबालमित्याहुःपितेत्येव
तुमंत्रदम्।।१५३।।

۱۴۸ - جو جنم گایتری کر کے آچارج کرتا ہے سو جنم سچا اور بے زوال ہے -
۱۴۹ - تھوڑا یا بہت وید کے پڑھانے سے جو اپکار کرتا ہے اسکو بھی گرو سمجھنا چاہیے
۱۵۰ - جو اپنی عمر سے چھوٹا ہے اور وید کو پڑھاتا اور دھرم کو سکھاتا ہے وہ بھی گرو کہلاتا ہے -
۱۵۱ - انگرا کے بیٹے نے اپنے چچا کو پڑھایا اور بیٹا کہا اسو جہ سے کہ گیان میں بڑا تھا -
۱۵۲ - تب وہ چچا خفا ہو کر دیوتاؤں سے پوچھنے گیا دیوتاؤں نے کہا کہ اس لڑکے نے اچھا کہا -
۱۵۳ - کیونکہ جو کچھ نہیں جانتا وہ بالک کہلاتا ہے اور جو منتر دیتا ہے وہ باپ کہلاتا ہے -

निषेकादीनि कर्म्माणि यः करोति यथाविधि ॥ सम्भावयति चान्नेन स विप्रो गुरुरुच्यते ॥ १४२ ॥ अग्न्याधेयं पाकयज्ञानग्निष्टोमादिकान्मखान् ॥ यः करोति वृतो यस्य स तस्यर्त्विगिहोच्यते ॥ १४३ ॥ य आवृणोत्यवितथं ब्रह्मणा श्रवणावुभौ ॥ स माता स पिता ज्ञेयस्तन्न द्रुह्येत्कदाचन ॥ १४४ ॥ उपाध्यायान्दशाचार्य्य आचार्य्याणां शतं पिता ॥ सहस्रन्तु पितॄन्माता गौरवेणातिरिच्यते ॥ १४५ ॥ उत्पादकब्रह्मदात्रोर्गरीयान्ब्रह्मदः पिता ॥ ब्रह्मजन्म हि विप्रस्य प्रेत्य चेह च शाश्वतम् ॥ १४६ ॥ कामान्माता पिता चैनं यदुत्पादयतो मिथः ॥ संभूतिं तस्य तां विद्याद्यद्योनावभिजायते ॥ १४७ ॥

۱۴۲ - گربھا دھان وغیرہ کرم کو بدھ سے جو کراتا ہے وہ براہمن گورو کہلاتا ہے -
۱۴۳ - جو شخص اگنی ہوتر کرم دَرشٹکا شراددھ واگنشٹوم وغیرہ یگیہ ان سب کو کراتا ہے وہ رتوگ کہلاتا ہے -
۱۴۴ - جو دونوں کانوں کو وید سے بھرتا ہے وہ بجاے ماں باپ کے ہے اُس سے کبھی دشمنی نہ کرنا چاہیے -
۱۴۵ - اپادھیاے سے دس حصہ آچارج بڑا ہے آچارج سے سَو حصہ باپ بڑا ہے باپ سے ہزار حصہ ماں بڑی ہے -
۱۴۶ - جنم دینے والا اور وید پڑھانے والا اِن دونوں میں وید پڑھانے والا بڑا ہے وید پڑھنے سے جو جنم ہوتا ہے وہ لازوال ہے -
۱۴۷ - ماتا پتا اپنے کام کے بس ہو کر لڑکے کو پیدا کرتے ہیں اسلیئے پیدائش کے مقام ہیں -

वित्तम्बन्धुर्वयः कर्म्म विद्या भवति पंचमी॥ एतानि मान्यस्थानानि गरीयो यद्यदुत्तरम्॥१३६॥ पंचानां त्रिषु वर्णेषु भूयांसि गुणावन्तिच॥ यत्र स्युः सोऽत्र मानार्हः शूद्रोऽपि दशमीं गतः॥१३७॥ चक्रिणो दशमीस्थस्य रोगिणो भारिणः स्त्रियाः॥ स्नातकस्य च राज्ञश्च पन्था देयो वरस्य च॥१३८॥ तेषान्तु समवेतानां मान्यौ स्नातकपार्थिवौ॥ राजस्नातकयोश्चैव स्नातको नृपमानभाक्॥१३९॥ उपनीय तु यः शिष्यं वेदमध्यापयेद्द्विजः॥ सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्य्यं प्रचक्षते॥१४०॥ एकदेशन्तु वेदस्य वेदांगान्यपि वा पुनः॥ योऽध्यापयति वृत्यर्थमुपाध्यायः स उच्यते॥१४१॥

۱۳۶ - دولت رشتہ دار عمر عمل علم یہ پانچو واجب التعظیم ہین انہین پہلے سے دوسرا دوسرے سے تیسرا وغیرا افضل ہے -

۱۳۷ - منجملہ براہمن کشتری ویشیہ کے جسکے پاس پانچ چیز مندرجہ بالا مین سے کوئی چیز زیادہ ہووے قابل تعظیم ہے اور نوی برس سے زیادہ عمر کا شودر بھی قابل تعظیم ہے -

۱۳۸ - رتھ سوار نوے برس سے زیادہ عمر والا بیمار بوجھ والا عورت برہمچاری دراجا دنوشہ انھون مین سے کوئی ایک آتا ہو تو اسکو راستہ دے یعنے آپ کنارے ہو جاوے -

۱۳۹ - اور اشخاص متذکرہ صدر باہم راجہ کو راستہ دیوین اور راجا برہمچاری کو آتا ہوا دیکھکر راستہ سے ہٹ جاوے -

۱۴۰ - جنیو کرکے جو شخص وید کو مع علم پوشیدہ کے پڑھاتا ہے وہ آچارج کہلاتا ہے -

۱۴۱ - وید کا ایک دیش اور وید کے چھ انگ ان سب کو جیوکا کے لیے جو پڑھاتا ہے وہ اپادھیا کہلاتا ہے -

मातृष्वसा मातुलानी श्वश्रूरथ पितृष्वसा॥ संपूज्या गुरुपत्नीव
समास्ता गुरुभार्यया॥१३१॥ भ्रातुर्भार्योपसंग्राह्या सवर्णाहन्य
हन्यपि॥ विप्रोष्य तूपसंग्राह्या ज्ञातिसम्बन्धियोषितः॥१३२
पितुर्भगिन्यां मातुश्च ज्यायस्यां च स्वसर्यपि॥ मातृवद्वृत्तिमा-
तिष्ठेन्माता ताभ्यो गरीयसी॥१३३॥ दशाब्दाख्यं पौरसख्यं प-
चाब्दाख्यं कलाभृताम्॥ त्र्यब्दपूर्वं श्रोत्रियाणां स्वल्पेनापि
स्वयोनिषु॥१३४॥ ब्राह्मणं दशवर्षन्तु शतवर्षन्तु भूमिपम्॥
पितापुत्रौ विजानीयाद्ब्राह्मणस्तु तयोः पिता॥१३५॥

۱۳۱- موسی مامین ساس پھوپھو یہ سب گرو کی استری کے برابر ہین اسلیئے ان
سب کی پوجا گرو کی استری کی طرح کرنا چاہیے۔
۱۳۲- بڑے بھائی کی عورت جو ہمقوم ہو اسکا پانون چھو کر ہمیشہ پرنام کرے اور ہمقوم
رشتہ دار عورت کا بھی پانون چھو کر پرنام کرے لیکن جبکہ سفر سے آکر اپنے دیش مین
قیام کرے تب پانون کو نہ چھووے صرف پرنام کرے۔
۱۳۳- پھوپھو موسی بڑی بہن ان سب کو مان (یعنی والدہ) کے برابر جانے مگر مان ان سب سے بڑی ہے
۱۳۴- ایک گانون یا ایک شہر کے رہنے والے کئی برس سے رہتے ہون اور دس برس
بڑے ہون تو انکے ساتھ دوستی کا بیوہار ہوتا ہے اور گنی ہو اور پانچ برس بڑا ہو تو
اسکے ساتھ بھی دوستی
کا برتاؤ ہوتا ہے اور وید پڑھا ہوا اور تین برس بڑا ہو تو بھی دوستی کا برتاؤ
ہوتا ہے اور رشتہ دار ہو تو تھوڑے ہی زمانہ مین دوستی ہوتی ہے اگر مندرجہ بالا سے
عمر مین زیادہ ہو تو وہ بزرگ ہے۔
۱۳۵- دس برس کا براہمن اور سو برس کا کشتری دونون آپسمین باپ بیٹے کی طرح ہین
انمین براہمن بجاے باپ کے اور کشتری بجاے بیٹے کے رہے۔

आयुष्मान्भवसौम्येतिवाच्योविप्रोऽभिवादने॥ अकारश्चा-
स्यनाम्नोऽन्तेवाच्यःपूर्वाक्षरःप्लुतः॥१२५॥योनवेत्त्यभिवादस्य
विप्रःप्रत्यभिवादनम्॥नाभिवाद्यःसविदुषायथाशूद्रस्तथैवसः
॥१२६॥ब्राह्मणंकुशलंपृच्छेत्क्षत्रबन्धुमनामयम्॥वैश्यंक्षेमं
समागम्यशूद्रमारोग्यमेवच॥१२७॥अवाच्योदीक्षितोनाम्ना-
यवीयानपियोभवेत्॥भोभवत्पूर्वकंत्वेनमभिभाषेतधर्म्मवि-
त्॥१२८॥परपत्नीतुयास्त्रीस्यादसंबन्धाचयोनितः॥तांब्रूया
द्भवतीत्येवंसुभगेभगिनीतिच॥१२९॥मातुलांश्चपितृव्यांश्च-
श्वशुरानृत्विजोगुरून्॥असावहमितिब्रूयात्प्रत्युत्थाययवी-
यसः॥१३०॥

۱۲۵ - اشیر باد دینے مین آیش مان بھو سومیہ ایسا کہنا چاہیئے نام کے اخیر مین اکار وغیرہ حرکو پلت یعنے ترمانز اتمک کہنا چاہیئے -

۱۲۶ - جو شخص اشیر باد دینے کے کلام کو نہین جانتا اسکو پرنام کرنا نچاہیئے وہ سودر کے مانند ہے -

۱۲۷ - براہمن سے کشل کشتری سے اناے ویشیہ سے کیشم سودر سے آروگیت پوچھنا چاہیئے -

۱۲۸ - جو آدمی اپنے سے چھوٹا ہے اور یگیہ کرتا ہے اوسکو یگیہ مین بھو بھوت لفظ سے بولنا چاہیئے نام لینا مناسب مین ہے -

۱۲۹ - جس عورت سے کسی طرح کا رشتہ نہین ہے اسکو سبھگے بھوتی بھگنی ایعنی بہن کہکے پکارنا چاہیئے -

۱۳۰ - ماموں - چچا - خسر - یگیہ کرانے والا گرو یہ سب اپنی عمر سے چھوٹے بھی ہون تو بھی انکو یہ کہکر کہ مین فلانا ہون اٹھکر پرنام کرے -

शय्यासनेऽध्याचरितेश्रेयसानसमाविशेत्॥शय्यासनस्थ-
श्चैवैनंप्रत्युत्थायाभिवादयेत्॥११९॥ऊर्ध्वंप्राणाउत्क्रामंति
यूनःस्थविरआयति॥प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यांपुनस्तान्प्रति
पद्यते॥१२०॥अभिवादनशीलस्यनित्यंवृद्धोपसेविनः॥चत्वा
रितस्यवर्द्धन्तेआयुर्विद्यायशोबलम्॥१२१॥अभिवादात्परं
विप्रोज्यायांसमभिवादयन्॥असौनामाहमस्मीतिस्वंनाम-
परिकीर्त्तयेत्॥१२२॥नामधेयस्ययेकेचिदभिवादंनजानते॥
तान्प्राज्ञोऽहमितिब्रूयात्स्त्रियःसर्वास्तथैवच॥१२३॥भोःश-
ब्दंकीर्त्तयेदन्तेस्वस्यनाम्नोऽभिवादने॥नाम्नांस्वरूपभावोहि
भोभावऋषिभिःस्मृतः॥१२४॥

۱۱۹ بڑے لوگ جس آسن یا سَیا پر بیٹھے ہون اسپر آپ نہ بیٹھے اور اگر آپ سَیا یا آسن
پر بیٹھا ہو تو اُٹھکر پرنام کرے۔

۱۲۰ - بڑے لوگون کے آنے سے چھوٹے لوگون کا دل خوش ہوتا ہے اور چھوٹے
لوگ جب اُٹھکر پرنام کرتے ہین تو اُس پرنام کو پاتے ہین

۱۲۱ - جو آدمی بڑے لوگون کو ہمیشہ پرنام کرتا ہے اور خدمت کرتا ہے اوسکی عمر و نیکنامی
و علم و قوت یہ چارون بڑھتی ہین۔

۱۲۲ - پرنام کرنے کے بعد بزرگون سے یہ کہے کہ مین فلان شخص
ہون۔

۱۲۳ - جو شخص پرنام کرنے کے کلام کو نہین جانتا وہ صرف اپنے نام ہی کو کہے
اور عورتین بھی اسیطرح کہین۔

۱۲۴ - پرنام کرنے کے وقت اپنے نام کے اخیر مین بھوہ لفظ کو کہنے بھوہ لفظ
نام کا بتانے والا ہے یہ رشی لوگون نے کہا ہے

विद्ययैव समं कामं मर्त्तव्यं ब्रह्मवादिना॥ आपद्यपि हि घोरायां नत्वेनामिरिणे वपेत्॥११३॥ विद्या ब्राह्मणमेत्याह शेवधिस्तेऽस्मि रक्ष माम्॥ असूयकाय मां मादास्तथा स्यां वीर्यवत्तमा॥११४॥ यमेव तु शुचिं विद्या न्नियतब्रह्मचारिणम्॥ तस्मै मां ब्रूहि विप्राय निधिपायाप्रमादिने॥११५॥ ब्रह्म यस्त्वननुज्ञात अधीयानादवाप्नुयात्॥ स ब्रह्मस्तेयसंयुक्तो नरकं प्रतिपद्यते॥११६॥ लौकिकं वैदिकं वापि तथाध्यात्मिकमेव च॥ आददीत यतो ज्ञानं तं पूर्व्वमभिवादयेत्॥११७॥ सावित्रीमात्रसारोऽपि वरं विप्रः सुयन्त्रितः॥ नायन्त्रितस्त्रिवेदोऽपि सर्व्वाशी सर्व्वविक्रयी॥ ॥११८॥

۱۱۳ - وِدّیا سمیت وید پڑھنے والا خواہش میں مرجاے مگر کیسی ہی مصیبت مین وِدّیا کو اوسر زمین مین نہ بووے۔

۱۱۴ - وِدّیا براہمن کے پاس آکر کہتی ہے کہ مین تمھاری دولت ہون میری حفاظت کرو نندا کرنیوالے کو مجھے نہ دو تو مین بقدرت تمام تمھارے پاس رہونگی

۱۱۵ - جس براہمن کو پوتر اور برہم چاری اور دولت کی حفاظت کرنیوالا اور ہوشیار جانو اُس براہمن کو مجھے دو۔

۱۱۶ - گرو کی بلا اجازت جو کوئی وید کو پڑھتے پڑھاتے سنکر سیکھ لیتا ہے وہ وید کا چور ہے نرک مین جاتا ہے

۱۱۷ - جس سے لوکک گیان یا ویدک گیان یا برہم گیان سیکھے اوسکو پہلے پرنام کرے۔

۱۱۸ - جو شخص صرف گایتری جانتا ہو لیکن شاستر کے موافق نیم سے رہتا ہو وہ قابل تعظیم ہے۔ اور جو تینون وید کو پڑھا ہو لیکن سب چیز کا بیچنے والا ونا پاک چیز کا کھانے والا و خلاف شاستر عمل کرنیوالا ہو وہ قابل تعظیم نہین ہے۔

यः स्वाध्यायमधीतेऽब्दं विधिना नियतः शुचिः॥ तस्य नित्यं क्षरत्येष पयो दधि घृतं मधु॥ १०७॥ अग्नीन्धनं भैक्षचर्य्यामधः शय्यां गुरोर्हितम्॥ आसमावर्त्तनात्कुर्यात्कृतोपनयनो द्विजः॥ १०८॥ आचार्य्यपुत्रः शुश्रूषुर्ज्ञानदो धार्मिकः शुचिः॥ आप्तः शक्तोऽर्थदः साधुः स्वोऽध्याप्या दश धर्मतः॥ १०९॥ नापृष्टः कस्यचिद्ब्रूयान्न चान्यायेन पृच्छतः॥ जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोक आचरेत्॥ ११०॥ अधर्मेण च यः प्राह यश्चाधर्मेण पृच्छति॥ तयोरन्यतरः प्रैति विद्वेषं वाधिगच्छति॥ १११॥ धर्मार्थौ यत्र न स्यातां शुश्रूषा वापि तद्विधा॥ तत्र विद्या न वक्तव्या शुभं बीजमिवोषरे॥ ११२॥

۱۰۷- جو آدمی ایک سال تک پوتر ہو کر بدھ سے ہر روز وید کو پڑھتا ہے اُسکو وہی وید رُفتہ دودھ- دہی گھی مٹھائی دیتا ہے-

۱۰۸- جسکا جنیئو ہو گیا ہو وہ وید پڑھنے سے جبتک فارغ نہو جاے تب تک ہون کرتا رہے اور بھیکھ مانگے زمین پر سووے گرو کی بھلائی مین رہے-

۱۰۹- آچارج کا بیٹا خدمت کرنیوالا دھرم کرنیوالا گیان دینے والا پوتر رہنے والا سگا سمرتھ ہو روپیہ دینے والا ہمقوم یہ دس پڑھانے کے لائق ہین-

۱۱۰- بغیر پوچھے کسی سے کوئی بات نہ کہے فریب سے پوچھے تو بھی نہ کہے عقلمند آدمی واقف ہونے پر بھی دنیا مین مثل شئے غیر متحرک کے رہے-

۱۱۱- جو آدمی اَدھرم سے پوچھتا ہے اور جو ادھرم سے کہتا ہے دونون مین سے ایک مر جاتا ہے یا دشمنی پیدا ہو جاتی ہے-

۱۱۲- جہان دھرم ارتھ سیوا شاستر کے موافق نہین ہے وہان بدیا نہ سکھانا کیونکہ عمدہ بیج اوسر زمین مین نہین بویا جاتا ہے-

पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शनात्॥ पश्चिमां तु समासीनः सम्यगृक्षविभावनात्॥ १०१॥ पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठन्नैशमेनो व्यपोहति॥ पश्चिमां तु समासीनो मलं हन्ति दिवाकृतम्॥ १०२॥ न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम्॥ स शूद्रवद्बहिष्कार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः॥ १०३॥ अपां समीपे नियतो नैत्यकं विधिमास्थितः॥ सावित्रीमप्यधीयीत गत्वारण्यं समाहितः॥ १०४॥ वेदोपकरणे चैव स्वाध्याये चैव नैत्यके॥ नानुरोधोऽस्त्यनध्याये होममन्त्रेषु चैव हि॥ १०५॥ नैत्यके नास्त्यनध्यायो ब्रह्मसत्रं हि तत्स्मृतम्॥ ब्रह्माहुतिहुतं पुण्यमनध्यायवषट्कृतम्॥ १०६॥

۱۰۱- پراتہ کال گایتری کا جپ کرتا رہے جبتک سورج کا درشن نہو اور اسیطرح سائنکال مین جبتک تارے نہ دکھلائی دین-

۱۰۲- پراتہ کال کی سندھیا کرنے سے رات کا پاپ چھوٹ جاتا ہے اور سائنکال کی سندھیا کرنے سے دن کا پاپ چھوٹ جاتا ہے-

۱۰۳- جو آدمی دونون وقت کی سندھیا نہین کرتا ہے وہ شودر کی طرح دوج کرم سے باہر ہو جاتا ہے-

۱۰۴- جنگل مین جاکر پانی کے پاس ایک دل ہوکر بدھ سے گایتری کا جپ کرے-

۱۰۵- وید کے جو چھ* انگ ہین انمین اور نتیہ کرم اور ہون کے منتر ان سب مین انَدھیا یعنے تعطیل کا بچار نہین ہے-

۱۰۶- نتیہ کرم مین جو منتر پڑھے جاتے ہین وہ تعطیل کے دن بھی خالی از ثواب نہین ہین-

* یعنے شکشا- کلپ- دیاکرن- نرکت- جوتش- چھند-

यश्चैतान्प्राप्नुयात्सर्वान्यश्चैतान्केवलांस्त्यजेत् ॥ प्रापणात्सर्व कामानां परित्यागो विशिष्यते ॥ ९५ ॥ न तथैतानि शक्यन्ते सं- नियन्तुमसेवया ॥ विषयेषु प्रजुष्टानि यथा ज्ञानेन नित्यशः ॥ ९६ ॥ वेदास्त्यागश्च यज्ञाश्च नियमाश्च तपांसि च ॥ न विप्रदुष्टभा वस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित् ॥ ९७ ॥ श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च भु- क्त्वा घ्रात्वा च यो नरः ॥ न हृष्यति ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रि- यः ॥ ९८ ॥ इन्द्रियाणां तु सर्वेषां यद्येकं क्षरतीन्द्रियम् ॥ तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृतेः पादादिवोदकम् ॥ ९९ ॥ वशे कृत्वेन्द्रियग्रामं संयम्य च मनस्तथा ॥ सर्वान्संसाधयेदर्थानक्षिण्वन्योगत- स्तनुम् ॥ १०० ॥

۹۵ جس شخص کو سب چیزین خاطر خواہ میسر ہین اور جو شخص پائی ہوئی سب چیزون کو ترک کر دیتا ہے اِن دونون مین ترک کرنیوالا بڑا ہے -

۹۶ - نعمتون کا ترک بغیر اُنکے استعمال کے نہین ہوتا کیونکہ استعمال کرنے سے جب اُنکا عیب نظر آتا ہے تب اُنکے ترک کرنے کو دل چاہتا ہے -

۹۷ - جسکا سُبھاؤ دُشٹ ہے اُسکو وید تیاگ نیم - تپ - یگیہ سے کچھ سدھ نہین ملتی -

۹۸ - جو شخص سُننے اور چھُونے اور دیکھنے اور استعمال کرنے اور سونگھنے سے نہ خوش ہوتا ہے اور نہ بغیر اُنکے ناخوش ہوتا ہے وہ جتیندری کہلاتا ہے -

۹۹ - سب اندریون مین سے ایک بھی اندری جہان اپنے بس مین لگی بس بدھ جاتی رہی جیسے چلنی سے پانی نکل جاتا ہے -

۱۰۰ - عمدہ تدبیرون سے سب اندریون کو اور دل کو اپنے قابو مین کرکے اسطرح پر کہ جسمین جسم کو تکلیف نہونے پاوے سب مُرادون کو حاصل کرے -

एकादशेन्द्रियाण्याहुर्यानिपूर्वेमनीषिणः।।तानिसम्यक्प्रव-
क्ष्यामियथावदनुपूर्वशः।।८९।।श्रोत्रंत्वक्चक्षुषीजिह्वानासि-
काचैवपंचमी।।पायूपस्थंहस्तपादंवाक्चैवदशमीस्मृता।।९०
।।बुद्धीन्द्रियाणिपंचैषांश्रोत्रादीन्यनुपूर्वशः।।कर्मेन्द्रियाणि
पंचैषांपाय्वादीनिप्रचक्षते।।९१।।एकादशंमनोज्ञेयंस्वगुणे
नोभयात्मकम्।।यस्मिञ्जितेजितावेतौभवतःपंचकौगणौ
।।९२।।इन्द्रियाणांप्रसंगेनदोषमृच्छत्यसंशयम्।।सन्नियम्य
तुतान्येवततःसिद्धिंनियच्छति।।९३।।नजातुकामःकामाना-
मुपभोगेनशाम्यति।।हविषाकृष्णवर्त्मेवभूयएवाभिवर्द्धते
।।९४।।

٨٩- اگلے پنڈتون نے جو گیارہ اندریان کہی ہین اُن سب کو ٹھیک ٹھیک کہتے ہین
(یعنی حواس ۱۱) سُنو یعنے-

٩٠- سامعہ[1] - باصرہ[2] - شامہ[3] - ذائقہ[4] - لامسہ[5] - ہاتھ[6] - پاؤن[7] - زبان[8]
مقام[9] پاخانہ - مقام پیشاب[10] -

٩١- اِن سب مین پہلے پانچ گیان اندری کہلاتی ہین اور دوسرے پانچ کرم اندری کہلاتی
ہین-

٩٢- گیارھوان[11] من ہے جو اپنی صفتون سے گیان اندری اور کرم اندری سے نامزد ہے
من کو جیتنے سے دسون اندری جیتی جاتی ہین-

٩٣- اندریون کی سنگت مین پڑنے سے جیو دُکھی ہوتا ہے اور اندریون سے ترک تعلق
کرنے سے جیو سِدّھ کو پاتا ہے-

٩٤- جس چیز کی خواہش من یعنے دل کو ہوتی ہے اُسکے ملجانے پر بھی آسودہ نہین ہوتا
بلکہ اور خواہش زیادہ ہوتی ہے جسطرح گھی پانے سے آگ تیز ہوتی ہے-

सरन्तिसर्वावैदिक्योजुहोतियजतिक्रियाः॥ अक्षरंदुष्करंज्ञेयं ब्रह्मचैवप्रजापतिः॥८४॥ विधियज्ञाज्जपयज्ञोविशिष्टोदश-भिर्गुणैः॥ उपांशुःस्याच्छतगुणःसाहस्रोमानसःस्मृतः॥८५॥ येपाकयज्ञाश्चत्वारोविधियज्ञसमन्विताः॥ सर्वेतेजपयज्ञ-स्यकलांनार्हन्तिषोडशीम्॥८६॥ जप्येनैवतुसंसिध्येद्ब्राह्मणो नात्रसंशयः॥ कुर्यादन्यन्नवाकुर्यान्मैत्रोब्राह्मणउच्यते॥८७॥ इन्द्रियाणांविचरतांविषयेष्वपहारिषु॥ संयमेयत्नमाति-ष्ठेद्विद्वान्यन्तेववाजिनाम्॥८८॥

۸۴۔ ویدمین لکھی ہوئی سب کریا ناش ہونے والی ہے مگر اونکار جو برہم کا روپ ہے لازوال ہے۔

۸۵۔ یگیہ سے اُپانس جپ دش گنا زیادہ ہے جسکو پاس کے رہنے والے بھی نہ سُنین سن پڑنے والے جپ سے اُپانس جپ سو گنا زیادہ ہے اور جو جپ دل مین چپ چاپ کیا جاوے اونٹھ نہ ہلین تو وہ جپ اُپانس سے ہزار گنا زیادہ ہے

۸۶۔ اور جو چار پاک یگیہ ہین اور بدھیم یگیہ یہ سب جپ یگیہ کے سولھوین حصہ کو بھی نہین پہونچتے۔

۸۷۔ براہمن سب جانداروں سے محبت رکھے اور صرف جپ ہی کو کرے تو سب سدھ ہوتی ہے۔

۸۸۔ اپنے اپنے بشیون سے اندریون کو روکے اسطرح کہ جیسے رتھوان گھوڑے کو لگام سے روکتا ہے۔

* یعنی آنکھ کو دیکھنے سے زبان کو ذائقہ سے ناک کو سونگھنے سے بدن کو چھونے سے کان کو سننے سے روکے۔

एतदक्षरमेतां च जपन्व्याहृतिपूर्विकाम्॥ संध्ययोर्वेदविद्विप्रो वेदपुण्येन युज्यते॥७८॥ सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य बहिरेतत्त्रिकं द्विजः॥ महतोऽप्येनसो मासात्त्वचेवाहिर्विमुच्यते॥७९॥ एतयर्चा विसंयुक्तः काले च क्रियया स्वया॥ ब्रह्मक्षत्रियविड्योनिर्गर्हणां याति साधुषु॥८०॥ ॐकारपूर्विकास्तिस्रो महाव्याहृतयोऽव्ययाः॥ त्रिपदा चैव सावित्री विज्ञेयं ब्रह्मणो मुखम्॥८१॥ योऽधीतेऽहन्यहन्येतांस्त्रीणि वर्षाण्यतन्द्रितः॥ स ब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खमूर्तिमान्॥८२॥ एकाक्षरं परं ब्रह्म प्राणायामाः परं तपः॥ सावित्र्यास्तु परं नास्ति मौनात्सत्यं विशिष्यते॥८३॥

۷۸- اونگ بھوہ بھوہ سوہ اسکو اور گایتری کے تینون چرنون کو دونون سندھیا مین وید پڑھنے والا براہمن جپ کرے تو سمپورن پن پراپت ہون

۷۹- انھین تینون کو باہر جاکر ہزار بار ایک مہینہ تک پڑھے تو بڑے پاپ سے چھوٹ جاے جسطرح سانپ کیچل سے چھوٹتا ہے

۸۰- جو براہمن کشتری ویشیہ ان تینون کو اپنے وقت پر نہین پڑھتا ہے اسکی سادھ لوگ نندا کرتے ہین-

۸۱- یہی تینون یعنی اونگ بھوہ بھوہ سوہ گایتری وید کا مکھ ہے اور پرماتما کے ملنے کا دروازہ ہے-

۸۲- جو شخص کاہلی چھوڑکر تین برس تک ہر روز انھین تینون کو پڑھے وہ نشکل ہوا ہوکر برہم پدوی کو حاصل کرے

۸۳- اونگ یہ پر برہم ہے پرانایام پرم تپ ہے گایتری سے بڑا کوئی نہین ہے، چپ رہنے سے سچ بولنا اچھا ہے-

व्यत्यस्तपाणिनाकार्यमुपसंग्रहणंगुरोः॥सव्येनसव्यःस्प्र-
ष्टव्योदक्षिणेनचदक्षिणः॥७२॥अध्येष्यमाणंतुगुरुर्नित्य
कालमतन्द्रितः॥अधीष्वभोइतिब्रूयाद्विरामोऽस्त्वितिचा
रमेत्॥७३॥ब्रह्मणःप्रणवंकुर्यादादावन्तेचसर्वदा॥स्रवत्य-
नोंकृतंपूर्वंपुरस्ताच्चविशीर्यति॥७४॥प्राक्कूलान्पर्युपासी-
नःपवित्रैश्चैवपावितः॥प्राणायामैस्त्रिभिःपूतस्ततओंका
रमर्हति॥७५॥अकारंचाप्युकारंचमकारंचप्रजापतिः॥वे-
दत्रयान्निरदुहद्भूर्भुवःस्वरितीतिच॥७६॥त्रिभ्यएवतुवेदेभ्यः
पादंपादमदूदुहत्॥तदित्यृचोऽस्याःसावित्र्याःपरमेष्ठीप्र-
जापतिः॥७७॥

۷۲ - گرو کے سامنے ہوکر داہنے ہاتھ سے داہنے چرن کو اور بایئں ہاتھ سے بایئں چرن کو چھوے -

۷۳ - گرو حکم دے تب چیلا پڑھے اور جب چپ رہنے کو کہے تب چپ رہے حاصل یہ کہ گرو کے حکم سے پڑھے اور چپ رہے -

۷۴ - سبق کے آغاز و اختتام پر پرنو (یعنی اونکار) کہے اگر نہ کہے تو پڑھا ہوا بھول جاتا ہے -

۷۵ - پورب منہ کشا کے آسن پر بیٹھکر پوتر منتر سے پوتر ہوکر تین بار پرانایام کرکے تب اونکار کہنے کے لائق ہوتا ہے -

۷۶ - اکار اکار مکار ان تینوں اکشروں کو اور بھو بھوہ سوہ انکو بھی برہما جی نے تینوں ویدسے نکالا -

۷۷ - انھیں تینوں وید سے ایک ایک پاد گایتری کا برہما جی نے نکالا -

یجی رگ یجر سام ۱۲ -

अमन्त्रिकातुकार्येयंस्त्रीणामावृदशेषतः॥संस्कारार्थंशरीर-
स्ययथाकालंयथाक्रमम्॥ ६६॥वैवाहिकोविधिःस्त्रीणांसं-
स्कारोवैदिकःस्मृतः॥पतिसेवागुरौवासोगृहार्थोऽग्निपरिक्रि
या॥ ६७॥एषप्रोक्तोद्विजातीनामौपनायनिकोविधिः॥उत्प
त्तिव्यञ्जकःपुण्यःकर्मयोगंनिबोधत॥ ६८॥उपनीयगुरुःशि
ष्यंशिक्षयेच्छौचमादितः॥आचारमग्निकार्यंचसन्ध्योपास-
नमेवच॥६९॥अध्येष्यमाणस्त्वाचान्तोयथाशास्त्रमुदङ्मु
खः॥ब्रह्माञ्जलिकृतोऽध्याप्योलघुवासाजितेन्द्रियः॥७०॥ब्र
ह्मारम्भेऽवसानेचपादौग्राह्यौगुरोःसदा॥संहत्यहस्तावध्येयं-
सहिब्रह्माञ्जलिःस्मृतः॥७१॥

۶۶۔ یہ سب سنسکار عورتوں کے بلا ذریعہ منتر کے کرنا چاہیئے مگر انکو جس وقت پر جس طرح سے کہا ہے اُسی طرح کرنا چاہیئے

۶۷۔ عورتوں کا بواہ بموجب ستر کے ہونا ہی منتر کا سنسکار ہے پت کی سیوا گرو کے گھر میں رہنا ہے اور گھر کا کام کاج ہی اگن کی سیوا ہے۔

۶۸۔ تینوں ورن کا جنیئو کہا وہ نہایت ثواب ہے اس سے دوسرا جنم ہوتا ہے آب اسکے بعد کرم یوگ کو کہتے ہیں

۶۹۔ گرو کو چاہیئے کہ پہلے پوتر یا آچار اگن کی سیوا تینوں وقت کی سندھیا ان سب باتوں کو چیلے کو پہلے سکھاوے۔

۷۰۔ بموجب حکم شاستر کے پڑھتے وقت آچمن کرکے پورب رخ ہاتھ جوڑ کر جتیندری ہوکر چھوٹا کپڑا پہنکر چیلا رہے۔

۷۱۔ ہر روز سبق کے آغاز و ختتام پر دونوں ہاتھ سے گرو کے چرنوں کو چھووے۔

त्रिराचामेदपःपूर्वंद्विःप्रमृज्यात्ततोमुखम्॥ खानिचैवस्पृशेद-
द्भिरात्मानंशिरएवच॥६०॥ अनुष्णाभिरफेनाभिरद्भिस्तीर्थेनध-
र्मवित्॥ शौचेप्सुःसर्वदाचामेदेकान्तेप्रागुदङ्मुखः॥ ६१॥ हृ-
द्गाभिः पूयतेविप्रःकण्ठगाभिस्तुभूमिपः॥ वैश्योऽद्भिःप्राशि-
ताभिस्तुशूद्रःस्पृष्टाभिरन्ततः॥ ६२॥ उद्धृतेदक्षिणेपाणावुपवी-
त्युच्यतेद्विजः॥ सव्येप्राचीनआवीतीनिवीतीकण्ठसज्जने॥
६३॥ मेखलामजिनंदण्डमुपवीतंकमण्डलुम्॥ अप्सुप्रा-
स्यविनष्टानिगृह्णीतान्यानिमंत्रवत्॥ ६४॥ केशांतःषोडशे
वर्षेब्राह्मणस्यविधीयते॥ राजन्यबन्धोर्द्वाविंशेवैश्यस्यद्व्य-
धिकेततः॥ ६५॥

٦٠- پہلے تین بار آچمن کرے پھر دو دفعہ منھ دھووے اور ناک کان آنکھ منھ
چھاتی سر کو پانی سے چھووے۔

٦١- پورب منھ یا اتر منھ ہو کر ٹھنڈے پانی سے جس میں پھینا نہو تنہائی میں پاکی و
صفائی سے آچمن کرے۔

٦٢- آچمن کرنے میں براہمن چھاتی تک کشتری گلے تک ویشیہ زبان تک شود-
اونٹھ تک پانی کو پہنچا دیں۔

٦٣- بائیں کندھے پر جنیو رہنے سے اُپبیتی یعنے سبتیہ کہلاتا ہے اور داہنے کندھے
پر رہنے سے پراچین آبیتی یعنے اپسبیہ کہلاتا ہے اور گلے میں رہنے سے نیبیتی کہلاتا ہے

٦٤- میکھلا چرا دنڈ جنیو کمنڈل یہ سب ٹوٹ جائیں تو پانی میں ڈال دے اور نیا
منتر کر کے دھارن کرے۔

٦٥- براہمن کو کیشانت کرم گربھ سے سولھویں برس اور کشتری کو بائیس برس اور
ویشیہ کو چوبیسویں برس کرنا چاہیے۔

पूजयेदशनं नित्यमद्याच्चैतदकुत्सयन्।। दृष्ट्वा हृष्येत्प्रसीदेच्च प्र-
तिनन्देच्च सर्वशः।। ५४।। पूजितं ह्यशनं नित्यं बलमूर्जं च यच्छ-
ति।। अपूजितं तु तद्भुक्तमुभयं नाशयेदिदम्।। ५५।। नोच्छिष्टं क-
स्यचिद्दद्यान्नाद्याच्चैव तथान्तरा।। न चैवात्यशनं कुर्यान्न चोच्छि-
ष्टः क्वचिद्व्रजेत्।। ५६।। अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चातिभोजन-
म्।। अपुण्यं लोकविद्विष्टं तस्मात्तत्परिवर्जयेत्।। ५७।। ब्राह्मेण
विप्रस्तीर्थेन नित्यकालमुपस्पृशेत्।। कायत्रैदशिकाभ्यां वा न
पित्र्येण कदाचन।। ५८।। अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मं तीर्थं प्रचक्ष-
ते।। कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवं पित्र्यं तयोरधः।। ५९।।

۵۴- ہر روز ان کی پوجا کرے اور ان کی توہین نہ کرے اور ان کو دیکھکر
خوش ہو کر یہ کہکر کہ ہمکو ہمیشہ ایسا ان ملے بھوجن کرے -
۵۵- ان کی پوجا کرنے سے بیج اور اندری شکت دونوں بڑھتے ہیں
اور پوجا کرنے سے انھیں دونوں کا ناش ہو جاتا
ہے -
۵۶- جوٹھا کسی کو نہ دے دن اور رات کے بیچ میں بھوجن نہ کرے بہت
بھوجن نہ کرے جوٹھے منھ کہیں نہ جاوے -
۵۷- بہت بھوجن کرنا عمر و تندرستی و بہشت و ثواب کیواسطے نہیں ہے اور دنیا
میں باعث بدنامی ہے -
۵۸- براہمن ہمیشہ برہم تیرتھ سے آچمن کرے دیو تیرتھ پتر تیرتھ پرجاپت تیرتھ
سے آچمن نہ کرے -
۵۹- انگوٹھا - ترجنی - کنشٹھا - ان تینوں کا مول سلسلہ سے یہ تیم تیرتھ ہیں ترتیب
پرجاپت کہلاتا ہے -

प्रतिगृह्येप्सितंदराडमुपस्थायचभास्करम्॥ प्रदक्षिणांपरीत्या-
ग्निंचरेद्भैक्षंयथाविधि॥ ४८॥ भवत्पूर्वंचरेद्भैक्षमुपनीतोद्विजो-
त्तमः॥ भवन्मध्यंतुराजन्योवैश्यस्तुभवदुत्तरम्॥ ४९॥ मातरं-
वास्वसारंवामातुर्वाभगिनींनिजाम्॥ भिक्षेतभिक्षांप्रथमं-
याचैनंनावमानयेत्॥ ५०॥ समाहृत्यतुतद्भैक्षंयावदर्थममाय-
या॥ निवेद्यगुरवेऽश्नीयादाचम्यप्राङ्मुखःशुचिः॥ ५१॥
आयुष्यंप्राङ्मुखोभुंक्तेयशस्यंदक्षिणामुखः॥ श्रियंप्रत्य-
ङ्मुखोभुंक्तेऋतंभुंक्तेह्युदङ्मुखः॥ ५२॥ उपस्पृश्यद्विजोनि-
त्यमन्नमद्यात्समाहितः॥ भुक्त्वाचोपस्पृशेत्सम्यगद्भिःखा-
निचसंस्पृशेत्॥ ५३॥

۴۸- ڈنڈ دھارن کرکے سورج کے سنمکھ ہوکر اگن کی پردکشنا یعنے طواف کرکے طریق مندرجہ شاستر سے بھیکھ مانگے

۴۹- براہمن کشتری ویشیہ تینون ورن کے برہم چاری بھیکھ مانگنے کے الفاظ مین سلسلہ کے موافق اول و درمیان و آخر مین بھوت لفظ کو کہین گے

۵۰- پہلے مان بہن موسی سے بھیکھ مانگے اور جو برہم چاری کا اپمان یعنے توہین نکرے اُس سے بھی مانگے-

۵۱- سنبھل ہوکر بھیکھ مانگ کر گورو کے پاس رکھے پھر آچمن کرکے پوتر ہوکر پورب منھ بیٹھکر بھوجن کرے-

۵۲- پورب- دکشن- پچھم- اُتر کی طرف منھ کرکے بھوجن کرنے سے سلسلہ کے موافق عمر نیکنامی دولت راستی کی ترقی ہوتی ہے-

۵۳- ہر روز دل کو یکسو کرکے بعد آچمن کرنے کے بھوجن کرے اور بھوجن کے بعد پھر آچمن کرے اور اندریون کو پانی سے چھوے -

मौञ्जीत्रिवृत्समाश्लक्ष्णाकार्याविप्रस्यमेखला॥ क्षत्रिय-
स्यतुमौर्वीज्यावैश्यस्यशणतान्तवी॥४२॥मुंजालाभेतुकर्त-
व्याःकुशाश्मन्तकबल्वजैः॥ त्रिवृताग्रन्थिनैकेन त्रिभिःपंच-
भिरेववा॥४३॥कार्पासमुपवीतंस्याद्विप्रस्योर्ध्ववृतंत्रिवृत्॥श-
णसूत्रमयंराज्ञोवैश्यस्याविकसौत्रिकम्॥४४॥ब्राह्मणोबैल्व
पालाशौक्षत्रियोवाटखादिरौ॥ पैलवौदुम्बरौवैश्योदंडानर्ह-
न्तिधर्मतः॥४५॥केशान्तिकोब्राह्मणस्यदण्डःकार्यःप्रमा-
णतः॥ललाटसंमितोराज्ञःस्यात्तुनासान्तिकोविशः॥४६॥
ऋजवस्तेतुसर्वेस्युरव्रणाःसौम्यदर्शनाः॥ अनुद्वेगकरान्नृ-
णांसत्वचोनाग्निदूषिताः॥४७॥

۴۲ - براہمن کی موںج کی میکھلا تین لڑکی اور کشتری کو مورواکی ڈوڑکی اور ویشیہ کی سن کی تین پہننا چاہیئے -

۴۳ - اگر موںج اور وہ سن نہ ملیں تو کش بھبڑ اگنی کی تین لڑکی کرنا چاہیئے ایک یا تین یا پانچ گانٹھ کی کرنا چاہیئے کل کی ریت کے موافق نہ یہ کہ براہمن یا کشتری وویشیہ تین گانٹھ کی کھیں

۴۴ - براہمن کو کپاس کا جنیئو کشتری کو سن کا ویشیہ کو بھیڑ کے بالوں کا پہنا چاہیئے سو کسطرح کی تگنا کرکے پھر تگنا کرنا -

۴۵ - براہمن بیل یا پلاس کا ڈنڈ دھارن کرے اور کشتری بڑ یا کھیر کا اور ویشیہ پیلو یا گولر کا -

۴۶ - سر کے بالوں تک براہمن اور پیشانی تک کشتری اور ناک تک ویشیہ ڈنڈ کو دھارن کریں -

۴۷ - سب ڈنڈ ملائم و صاف و بے سوراخ و خوبصورت ہوں بدصورت یا آگ سے داغدار نہوں -

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम् ॥ गर्भादेकादशे
राज्ञो गर्भात्तु द्वादशे विशः ॥ ३६ ॥ ब्रह्मवर्चसकामस्य कार्यं वि-
प्रस्य पंचमे ॥ राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे ॥ ३७
॥ आषोडशाद्ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्त्तते ॥ आद्वाविंशा-
त्क्षत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ ३८ ॥ अत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्ये-
ते यथाकालमसंस्कृताः ॥ सावित्रीपतिता व्रात्या भवन्त्यार्य-
विगर्हिताः ॥ ३९ ॥ नैतैरपूतैर्विधिवदापद्यपि हि कर्हिचित्
॥ ब्राह्मान्यौनांश्च सम्बन्धान्नाचरेद्ब्राह्मणाः सह ॥ ४० ॥ का-
र्ष्णरौरवबास्तानि चर्म्माणि ब्रह्मचारिणः ॥ वसीरन्नानुपू-
र्व्येण शाणक्षौमाविकानि च ॥ ४१ ॥

۳۶- روز قیام حمل یا روز ولادت سے آٹھوین- گیارھوین- بارھوین برش بترتیب
سلسلہ براہمن- کشتری ویشیہ کا جنیو کرنا چاہیے-
۳۷- برہم تیج اور بل اور دھن کی اچھا ہو تو سلسلہ کے موافق براہمن کشتری ویشیہ
پانچوین چھٹھوین- آٹھوین برش جنیو کرین-
۳۸- سولہ- بائیس- چوبیس برش تک بترتیب سلسلہ براہمن کشتری ویشیہ کی گایتری (ادہن) رہتی ہے
۳۹- اسکے بعد تینون ورن اسکے ادھکاری نہین رہتے تب انکا نام براتیہ کہلاتا ہے اور
آریا لوگ انکو برا کہتے ہین-
۴۰- جبتک ایسے براہمن پراشچت یعنی کفارہ نہ کرین تب تک- انھون کے ساتھ پڑھنے پڑھانے
و داماد شادی وغیرہ کا بیوہار نکرے-
۴۱- اب ان تینون ورنون کے برہم چاریون کا چمڑا وغیرہ پہنا کہتے ہین- کہ کالا ہرن ہرن
بکرا کا چمڑا براہمن کشتری ویشیہ سلسلہ کے موافق اوپر کے جسم مین اور سن بھی بھیڑ کے اون کا
کپڑا نیچے کے بدن مین دھارن کرین-

नामधेयंदशम्यान्तुद्वादश्यांवास्यकारयेत्॥पुण्येतिथौमुहू-
र्त्तेवानक्षत्रेवागुणान्विते॥३०॥मंगल्यंब्राह्मणस्यस्यात्क्षत्रि-
यस्यबलान्वितम्॥वैश्यस्यधनसंयुक्तंशूद्रस्यतुजुगुप्सितम्॥
३१॥शर्म्मवद्ब्राह्मणस्यस्याद्राज्ञोरक्षासमन्वितम्॥वैश्यस्य
पुष्टिसंयुक्तंशूद्रस्यप्रैष्यसंयुतम्॥३२॥स्त्रीणांसुखोद्यमक्रूरं
विस्पष्टार्थंमनोहरम्॥मंगल्यंदीर्घवर्णान्तमाशीर्वादाभिधान-
वत्॥३३॥चतुर्थेमासिकर्त्तव्यंशिशोर्निष्क्रमणंगृहात्॥ष-
ष्ठेऽन्नप्राशनंमासियद्वेष्टंमंगलंकुले॥३४॥चूडाकर्म्मद्विजा-
तीनांसर्व्वेषामेवधर्म्मतः॥प्रथमेऽब्देतृतीयेवाकर्त्तव्यंश्रुति-
चोदनात्॥३५॥

٣٠ - پیدائش سے گیارھوان یا بارھوان دن نام کرن کرنا چاہیے اگر ان دنون مین نہ ہو سکے تو اور کسی اچھی تتھ اور نکشتر اور دن مین کرنا چاہیے۔

٣١ - براہمن کے نام مین لفظ منگل یعنی خوشی اور کشتری کے نام مین لفظ بل یعنی طاقت اور ویشیہ کے نام مین لفظ دھن یعنی دولت اور شودر کے نام مین لفظ نندا یعنی تحقیر شامل کرنا چاہیے

٣٢ - براہمن کشتری - ویشیہ شودر - انھون کے نام کے اخیر مین الفاظ شرم رکشا پشٹ یا پریشیہ حسب سلسلہ شامل کرنا چاہیے -

٣٣ - عورت کا نام ایسا رکھنا چاہیے کہ جو فرحت انگیز ہو اور نرم اور سہل اور پیارا اور خوشی اور دعا کے معنے رکھتا ہو اور اخیر کا حرف اعراب کامل رکھتا ہو -

٣٤ - چوتھے مہینہ لڑکے کو گھر سے باہر نکالنا چاہیے - اور چھٹے مہینہ یا جس مہینہ مین اپنے کل کی ریت ہو ان پراشن کرنا چاہیے -

٣٥ - براہمن کشتری ویشیہ ان سب کا چوڑا کرم یعنے مونڈن پہلے یا تیسرے برس کرنا چاہیے یہ وید کا حکم ہے -

तान्द्विजातयोदेशान्संश्रयेरन्प्रयत्नतः॥शूद्रस्तुयस्मिन्कस्मि
न्वानिवसेद्वृत्तिकर्शितः॥२४॥एषाधर्मस्यवोयोनिःसमासेनप्र-
कीर्त्तिता॥संभवश्चास्यसर्वस्यवर्णधर्मान्निबोधत॥२५॥वै-
दिकैःकर्मभिःपुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्॥कार्यःशरीरसं-
स्कारःपावनःप्रेत्यचेहच॥२६॥गार्भैर्होमैर्जातकर्मचौडमौंजी
निबन्धनैः॥बैजिकंगार्भिकंचैनोद्विजानामपमृज्यते॥२७॥स्वा-
ध्यायेनव्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्ययासुतैः॥महायज्ञैश्चयज्ञैश्चब्रा-
ह्मीयंक्रियतेतनुः॥२८॥प्राङ्नाभिवर्द्धनात्पुंसोजातकर्मवि-
धीयते॥मंत्रवत्प्राशनंचास्यहिरण्यमधुसर्पिषाम्॥२९॥

۲۴- براہمن کشتری ویشیہ تدبیر کے ساتھ اس ملک میں رہیں اور شودر بوجہ تکلیف معاش
چاہے جس ملک میں رہیں۔
۲۵- بھرگ جی کہتے ہیں کہ اے رشی لوگو آپ سے سب کی پیدائش اور دھرم کو بیان
کیا اب ورنوں کا دھرم سنتے ہیں۔
۲۶- براہمن کشتری ویشیہ کو گربھادھان وغیرہ شریر کا سنسکار لوک اور پرلوک میں پوتر کرتا
ہے اسلیئے ان سنسکاروں کو کرنا چاہیئے۔
۲۷- گربھ سنسکار جات کرم مونڈن اپنین ان سنسکاروں سے براہمن کشتری ویشیہ کے بیج کا دوش
اور گربھ کا دوش چھوٹ جاتا ہے۔
۲۸- وید کا پڑھنا۔ برت۔ ہون۔ تریبدیہ۔ نام برت۔ دیوتوں۔ پتروں کا
ترپن۔ پتر کی اتپت۔ مہایگیہ۔ یگیہ۔ ان سب کرموں سے یہ شریر موکش پانے کے
لائق ہوتا ہے۔
۲۹- نال چھیدن سے پہلے جات کرم ہوتا ہے اسمیں منتر پڑھکر ورق طلا و شہد
و گھی لڑکے کو کھلانا چاہیئے۔

तस्मिन्देशेय आचारः पारंपर्यक्रमागतः॥ वर्णानांसान्तराला
नांससदाचारउच्यते॥१८॥ कुरुक्षेत्रंचमत्स्याश्चपंचालाः शू-
रसेनकाः॥ एषब्रह्मर्षिदेशोवैब्रह्मावर्त्तादनन्तरः॥१९॥ एतद्दे-
शप्रसूतस्यसकाशादग्रजन्मनः॥ स्वंस्वंचरित्रंशिक्षेरन्पृथिव्यां
सर्वमानवाः॥२०॥ हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यंयत्प्राग्विनशनादपि
॥प्रत्यगेवप्रयागाच्चमध्यदेशःप्रकीर्त्तितः॥२१॥ आसमुद्रात्तुवै
पूर्वादासमुद्रात्तुपश्चिमात॥ तयोरेवान्तरंगिर्योरार्यावर्त्तंविदु
र्बुधाः॥२२॥ कृष्णसारस्तुचरतिमृगोयत्रस्वभावतः॥ सज्ञेयो
यज्ञियोदेशोम्लेच्छदेशस्त्वतःपरः॥२३॥

۱۸- سب ورنون اور ورن سنکرون کا اس دیش مین جو آچار چلا آیا ہے وہ سداچار کہلاتا ہے
۱۹- برہماورت کے متصل کرکشیتر - متسیہ[۱] پنچال[۲] - شورسینک[۳] یہ سب دیش برہم رشیون کے ہیں
۲۰- تمام مردمان عالم پیدائیش اپنی اس ملک کے رہنے والے براہمون سے جانین
۲۱- ہماچل اور بندھیاچل کا بیچ و نشن[۴] کے پورب اور پریاگ کے پچھم مدھیہ دیش کہلاتا ہے
۲۲- مشرقی سمندر سے لیکر مغربی سمندر تک اور ہماچل اور بندھیاچل کا درمیان آریاورت کہلاتا ہے-
۲۳- کالا ہرن اپنے سبھاؤ سے جس دیش مین رہے وہ دیش یگیہ کرنے کے لائق ہے اُسکے آگے ملیچھ دیش ہے-

ف۱ - بعد اور-
ف۲ تھانیشر کے اُتر پچھم ہمالیہ پہاڑ و جہلم دریا کے بیچ کا ملک-
ف۳ - دیپ متھرا-
ف۴ - حصار کے قریب

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः॥ एतच्चतुर्विधं प्राहुः
साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥ १२॥ अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं वि-
धीयते॥ धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः॥ १३॥ श्रुति-
द्वैधन्तु यत्र स्यात्तत्र धर्मावुभौ स्मृतौ॥ उभावपि हि तौ धर्मौ सम्य-
गुक्तौ मनीषिभिः॥ १४॥ उदितेऽनुदिते चैव समयाध्युषिते तथा
॥ सर्वथा वर्त्तते यज्ञ इतीयं वैदिकी श्रुतिः॥ १५॥ निषेकादिश्मशा-
नान्तो मंत्रैर्यस्योदितो विधिः॥ तस्य शास्त्रेऽधिकारोऽस्मिन् ज्ञे-
यो नान्यस्य कस्यचित्॥ १६॥ सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तर-
म्॥ तन्देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्त्तं प्रचक्षते॥ १७॥

۱۲- وید اور شاستر اور اچھے لوگون کا طریقہ جس سے اپنے دل کو سچا اطمینان ہو یہ چارون
دھرم کے لکشن ہین-

۱۳- ارتھ اور کام کی جسکو خواہش نہین ہے اوسکو دھرم اور گیان کا ادھکار ہے
اور جسکو دھرم جاننے کی خواہش ہے اوسکو صرف وید ہی پرمان ہے-

۱۴- جس کام کے کرنے مین شاستر دو طرح کے حکم لکھتا ہے اسمین دونون جب تفصیل
مین اسبات کو اچھے پرکار سے پنڈتون نے کہا ہے-

۱۵- سورج کے اودے ہین اور سورج کے است ہین اور سورج اور نکشتر کے
نہونے ہین یہ تینون وقت ہوَن کرنے کو ویدین کہے ہین انمین جو اچھا معلوم ہو
کرے-

۱۶- جنم سے مرن تک جسکا سنسکار منتر سے ہوتا ہے (یعنی براہمن کشتری ویشیہ)
انھین تینون ورنون کا ادھکار اس شاستر مین جاننا اور کسیکا ادھکار نہ جاننا-

۱۷- دیوتاؤن کی ندی جو سرسوتی اور درشدوتی ہے اُن دونون کے بیچ جو ملک ہے
اوسکو آریاورت کہتے ہین-

वेदोऽखिलोधर्ममूलंस्मृतिशीलेचतद्विदाम्॥ आचारश्चैवसाधूनामात्मनस्तुष्टिरेवच॥ ६ ॥ यःकश्चित्कस्यचिद्धर्मोमनुनापरिकीर्त्तितः॥ ससर्वोऽभिहितोवेदेसर्वज्ञानमयोहिसः॥ ७ ॥ सर्वन्तुसमवेक्ष्येदंनिखिलंज्ञानचक्षुषा॥ श्रुतिप्रामाण्यतोविद्वान्स्वधर्मेनिविशेतवै॥ ८ ॥ श्रुतिस्मृत्युदितंधर्ममनुतिष्ठन्हिमानवः॥ इहकीर्त्तिमवाप्नोतिप्रेत्यचानुत्तमंसुखम्॥ ९ ॥ श्रुतिस्तुवेदोविज्ञेयोधर्म्मशास्त्रंतुवैस्मृतिः॥ तेसर्वार्थेष्वमीमांस्येताभ्यांधर्मोहिनिर्बभौ॥ १० ॥ योऽवमन्येततेमूलेहेतुशास्त्राश्रयाद्द्विजः॥ ससाधुभिर्बहिष्कार्योनास्तिकोवेदनिन्दकः॥ ११ ॥

۶ - وید کا قول اور وید جاننے والون کا قول وفعل وسادھو لوگون کا فعل اور وہ فعل جسکے کرنے سے اپنا دل مطمئن ہو یہ سب دھرم کے مول ہین -

۷ - سب باتون کے جاننے والے منُ جی نے جسکا جو دھرم اس شاستر مین کہا ہے وہ سب وید مین ہے -

۸ - ہر شخص کو بچشم عقل و اعتقاد کے وید و شاستر پر نظر کرکے اپنے دھرم پر ثابت قدم رہنا چاہئے

۹ - جو شخص وید و شاستر مین کہے ہوئے دھرم پر چلتا ہے وہ دنیا مین نیکنامی اور عاقبت مین عیش جاودانی حاصل کرتا ہے -

۱۰ - وید اور شاستر پر بحث لاطائل کرکے اپنے معنی نہ لگانا چاہئے کیونکہ انھین دونون سے دھرم نکلا ہے -

۱۱ - جو شخص وید کے احکام کو بذریعہ علم منطق غلط سمجھکر وید اور شاستر کی توہین کرتا ہے وہ ناستک یعنی کافر ہے اوسکو سادھ لوگ اپنی منڈلی سے باہر کردین -

विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः॥हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो-
धर्मस्तन्निबोधत॥१॥कामात्मता न प्रशस्ता न चैवेहास्त्यकाम-
ता॥काम्यो हि वेदाधिगमः कर्म्मयोगश्च वैदिकः॥२॥संकल्प
मूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः॥व्रता नियमधर्म्माश्च सर्वे
संकल्पजाः स्मृताः॥३॥अकामस्य क्रिया काचिद्दृश्यते नेह
कर्हिचित्॥यद्यद्धि कुरुते किंचित्तत्तत्कामस्य चेष्टितम्॥४॥तेषु
सम्यग्वर्तमानो गच्छत्यमरलोकताम्॥यथा संकल्पितांश्चेह
सर्व्वान्कामान्समश्नुते॥५॥

۱- دوستی و دشمنی سے علیحدہ اچھے پنڈت لوگوں نے دھرم کی پیروی کی ہے اور وہ دھرم کلیان کرنے والا ہے اس دھرم کو سب سنیئے۔

۲- کہ پھل کی اچھا سے کوئی کام کرنا اچھا نہیں ہے (کیونکہ اس پھل کے بھوگنے کے واسطے جنم لینا پڑتا ہے) اور جو نشکام کرم اور گیان ہے وہ معاون حصول معرفت ہو کر مکت دینے والا ہے مگر اس بیان سے تمام خواہش کی ممانعت نہیں ہے کیونکہ تمام بیان متعلقہ دھرم مندرجہ وید شاستر عین خواہش ہی سے ہے۔

۳- اچھا - یگیہ - برت - نیم - دھرم یہ سب سنکلپ (یعنی اس کام سے یہ پھل ہم کو ملے ایسی بدھ) سے پیدا ہوتے ہیں۔

۴- بغیر اچھا کے کوئی کام نہیں ہے جو کچھ ہوتا ہے سب اچھا ہی سے ہوتا ہے۔

۵- بغیر اچھا کے اگر کوئی کام کرے تو مکت حاصل ہو اور دنیا کی تمنا بھی بر آوے۔

۱ شودھ سنسکار یہ ہیں - گربھادان - پنسون - سیمنتونین - جات کرم - نام کرن - نشکرمن - ان پراشن - چوڑا کرن - کرن بیدھ - اپنین - ویدارمبھ (یعنی وید پڑھنا) سماورتن - بواہ۔

स्त्रीधर्मयोगंतापस्यंमोक्षंसंन्यासमेवच॥राज्ञश्चधर्ममखिलंकार्याणांचविनिर्णयम्॥११४॥साक्षीप्रश्नविधानंचधर्मंस्त्रीपुंसयोरपि॥विभागधर्मंद्यूतंचकण्टकानांचशोधनम्॥११५॥वैश्यशूद्रोपचारंचसंकीर्णानांचसम्भवम्॥आपद्धर्मंचवर्णानांप्रायश्चित्तविधिंतथा॥११६॥संसारगमनंचैवत्रिविधंकर्मसंभवम्॥निःश्रेयसंकर्मणांचगुणदोषपरीक्षणम्॥११७॥देशधर्माञ्जातिधर्मान्कुलधर्मांश्चशाश्वतान्॥पाषण्डगणधर्मांश्चशास्त्रेऽस्मिन्नुक्तवान्मनुः॥११८॥यथेदमुक्तवाञ्छास्त्रंपुरापृष्टोमनुर्मया॥तथेदंयूयमप्यद्यमत्सकाशान्निबोधत॥११९॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां
प्रथमोऽध्यायः १

۱۱۴ - استری کا دھرم - تپسیا - موکش - سنیاس - راجاؤں کا دھرم - سب کاموں کا بچار
۱۱۵ - طریق گواہی گواہان - مرد عورت کا دھرم - بھاگ دھرم - (یعنی حصہ بانٹ) جوا کھیلنے کی بابت مجرموں کی سزا -
۱۱۶ - ویشیا و شودروں کا دھرم - ورن سنکروں کی پیدائش - بپت سمے ورنوں کا دھرم - پاپ سے چھوٹنے کی
۱۱۷ - شبھ اور اشبھ کرموں سے اتم مدھیم ادھم شریروں میں جنم پانا - آتم گیان (یعنی خود شناسی) نتیجہ اعمال نیک و بد -
۱۱۸ - دیش - جات - کل - پاکھنڈی ان سبھوں کا دھرم - اتنی باتیں منّ جی نے اس شاستر میں کہی ہیں -
۱۱۹ - بھرگ جی کہتے ہیں کہ جس طرح ہمنے اس شاستر کو منّ جی سے پوچھا اور انھوں نے کہا اسی طرح آپ لوگ بھی ہم سے سنئے

आचारःपरमोधर्म्मःश्रुत्युक्तःस्मार्त्तएवच।।तस्मादस्मिन्सदायु-
क्तोनित्यंस्यादात्मवान्द्विजः।।१०८।।आचाराद्विच्युतोविप्रोनवे-
दफलमश्नुते।।आचारेणतुसंयुक्तःसम्पूर्णफलभाग्भवेत् १०९
एवमाचारतोदृष्ट्वाधर्म्मस्यमुनयोगतिम्।।सर्व्वस्यतपसोमूल
माचारंजगृहुःपरम्।।११०।।जगतश्चसमुत्पत्तिंसंस्कारविधिमे-
वच।।व्रतचर्य्योपचारंचस्नानस्यचपरंविधिम्।।१११।।दाराधि
गमनंचैवविवाहानांचलक्षणम्।।महायज्ञविधानंचश्राद्ध-
कल्पंचशाश्वतः।।११२।।वृत्तीनांलक्षणंचैवस्नातकस्यव्रतानि
च।।भक्ष्याभक्ष्यंचशौचंचद्रव्याणांशुद्धिमेवच।।११३।।

۱۰۸- جو آچار وید اور شاستر میں کہی ہیں وہ پرم دھرم ہیں اسلیئے جو براہمن یا کشتری یا ویشیہ اپنا بھلا چاہے وہ اس شاستر پر عمل کرے۔

۱۰۹- آچار رہت براہمن وید کے پھل کو نہیں بھوگ کر سکتا ہے اور آچار سہت براہمن تمام وید کے پھل کو بھوگ کر سکتا ہے۔

۱۱۰- جب منیوں نے دیکھا کہ آچار ہی سے دھرم حاصل ہوتا ہے تب سب تپسیا کا مول جو آچار ہے اسی کو اختیار کیا۔

۱۱۱- اتنی باتیں اس شاستر میں کہی گئی ہیں۔ جگت کی اُتپت سنسکار بدھ برت کا آچرن۔ اسنان بدھ۔

۱۱۲- استری پرسنگ۔ بواہوں کا لکشن۔ مہایگیہ۔ شرادھ کی بدھ۔

۱۱۳- جیوکا کا لکشن۔ برہم چاری کا برت۔ کھانے اور نہ کھانے والی چیزیں صفائی چیزوں کے پاک کرنے کا طریقہ۔

तस्यकर्म्मविवेकार्थंशेषाणामनुपूर्व्वशः॥स्वायम्भुवोमनुर्धी-
मानिदंशास्त्रमकल्पयत्॥१०२॥विदुषाब्राह्मणेनेदमध्येतव्यं
प्रयत्नतः॥ शिष्येभ्यश्चप्रवक्तव्यंसम्यङ्नान्येनकेनचित् १०३
इदंशास्त्रमधीयानोब्राह्मणः शंसितव्रतः॥ मनोवाग्देहजै-
र्नित्यंकर्म्मदोषैर्नलिप्यते॥१०४॥पुनातिपङ्क्तिंवंश्यांश्चसप्त
सप्तपरावरान्॥पृथिवीमपिचैवेमांकृत्स्नामेकोऽपिसोऽर्हति॥
१०५॥इदंस्वस्त्ययनंश्रेष्ठमिदंबुद्धिविवर्द्धनम्॥इदंयशस्यमायु-
ष्यमिदंनिःश्रेयसंपरम्॥१०६॥अस्मिन्धर्म्मोऽखिलेनोक्तोगु-
णदोषौचकर्म्मणाम्॥चतुर्णामपिवर्णानामाचारश्चैवशा-
श्वतः॥१०७॥

١٠٢ - اس براہمن کے کرم اور کشتری وغیرہ کے کرم جاننے کے لیئے برہماجی کے بیٹے
من جی نے اس شاستر کو بنایا -

١٠٣ - جو براہمن پنڈت ہین وہ اس شاستر کو جتن سے پڑھین اور چیلون کو دینے
شاگردون کو بھی پڑھاوین اور کشتری وغیرہ پڑھین مگر پڑھاوین نہین -

١٠٤ - جو براہمن اس شاستر کو پڑھتا ہے اور برت کرتا ہے وہ دل و زبان و جسم سے
پیدا ہوئے اعمال مین ملوث نہین ہوتا -

١٠٥ - پاپیون کی پنگت کو براہمن پوتر کرتا ہے اور اپنی سات پشت اوپر کی اور سات
پشت نیچے کی پوتر کرتا ہے اور تمام پرتھوی کو اکیلا دھارن کرسکتا ہے -

١٠٦ - یہ شاستر کلیان اور بدھ اور یش اور عمر اور مکت کا دینے
والا ہے -

١٠٧ - اس شاستر مین تمام دھرم اور کرمون کے گن دوش اور آچار
کہے ہین -

भूतानांप्राणिनःश्रेष्ठाःप्राणिनांबुद्धिजीविनः॥बुद्धिमत्सुनराःश्रे-
ष्ठाःनरेषुब्राह्मणाःस्मृताः॥९६॥ब्राह्मणेषुचविद्वांसोविद्वत्सु-
कृतबुद्धयः॥कृतबुद्धिषुकर्त्तारःकर्तृषुब्रह्मवेदिनः॥९७॥उत्पत्ति
रेवविप्रस्यमूर्त्तिर्धर्मस्यशाश्वती॥सहिधर्मार्थमुत्पन्नोब्रह्मभूया-
यकल्पते॥९८॥ब्राह्मणोजायमानोहिपृथिव्यामधिजायते॥
ईश्वरःसर्व्वभूतानांधर्म्मकोशस्यगुप्तये॥९९॥सर्व्वस्वंब्राह्मणा-
स्येदंयत्किंचिज्जगतीगतम्॥श्रैष्ठ्येनाभिजनेनेदंसर्व्वंवैब्राह्म-
णोऽर्हति॥१००॥स्वमेवब्राह्मणोभुंक्तेस्वंवस्तेस्वंददातिच॥
आनृशंस्याद्ब्राह्मणस्यभुंजतेहीतरेजनाः॥१०१॥

۹۶ - ساکن و متحرک جانداروں مین کیڑا افضل ہے اور اوس سے چارپایہ اور اس سے آدمی اور اُس سے براہمن افضل ہے -

۹۷ - براہمنوں مین وید و شاستر کے پڑھنے والے اور اُنسے وید شاستر کے موافق کام کرنیکی خواہش رکھنے والے اور اونسے وید شاستر کے موافق کام کرنے والے اور اُنسے برہم گیانی (عارف لوگ) افضل ہین -

۹۸ - براہمن دھرم کی صورت ہے اور دھرم کرنے کے لیئے پیدا کیا گیا ہے اسلیئے مکت پانے کے لائق ہوتا ہے -

۹۹ پرمیشور نے واسطے حفاظت خزانہ دھرم کے بصورت براہمن نزول فرمایا ہے

۱۰۰ - جو کچھ چیز دنیا مین ہے وہ سب گویا براہمنوں کی نج کی چیز ہے کیونکہ برہما جی کے مکھ سے پیدا ہوا اور سب سے افضل ہے اسلیئے سب چیزوں کا مالک براہمن ہوسکتا ہے یہ براہمن کی صرف تعریف ہے کیونکہ منجی براہمنوں کو بھی چوری کی سزا آگے کہین گے -

۱۰۱ - براہمن اپنی اپنی چیزوں کو کھاتا ہے اور پہرتا ہے اور دیتا ہے اُسکی مہربانی سے کشتری لوگ چین کرتے ہین -

पशूनांरक्षणंदानमिज्याध्ययनमेवच॥वणिक्पथंकुसीदंचवै-
श्यस्यकृषिमेवच॥९०॥एकमेवतुशूद्रस्यप्रभुःकर्मसमादिश-
त्॥एतेषामेववर्णानांशुश्रूषामनसूयया॥९१॥ऊर्द्ध्वंनाभेर्मे-
ध्यतरःपुरुषःपरिकीर्त्तितः॥तस्मान्मेध्यतमन्त्वस्यमुखमुक्तंस्व-
यम्भुवा॥९२॥उत्तमाङ्गोद्भवाज्ज्यैष्ठ्याद्ब्राह्मणश्चैवधारणात्॥
सर्व्वस्यैवास्यसर्गस्यधर्म्मतोब्राह्मणःप्रभुः॥९३॥तंहिस्वयंभूः
स्वादास्यात्तपस्तप्त्वादितोऽसृजत्॥हव्यकव्याभिवाह्याय स-
र्व्वस्यास्यचगुप्तये॥९४॥यस्यास्येनसदाश्नन्तिहव्यानित्रि-
दिवौकसः॥कव्यानिचैवपितरःकिंभूतमधिकन्ततः॥९५॥

۹۰ - چار پایون کی حفاظت کرنا دان دینا۔ یگیہ کرنا۔ وید پڑھنا۔ تجارت کرنا سود لینا۔ کھیتی کرنا۔ یہ سات کرم ویشون کے لیے مقرر کیئے۔

۹۱ - سودر کے لیئے ایک ہی کرم پربھو نے ٹھہرایا یعنے صدق دل سے ان تینون ورنون کی خدمت کرنا۔

۹۲ - مرد کے تمام اعضا ناف کے اوپر تک کے پاک ہین خصوصًا منھ اور بھی زیادہ تر پاک ہے برہما جی نے کہا ہے۔

۹۳ - دنیا مین براہمن بوجہ دھرم کے سب سے افضل ہے اسلیئے کہ نہایت پاک عضو (یعنی منھ) سے پیدا ہوا ہے اور وید کا استعمال رکھتا ہے۔

۹۴ - برہما جی نے اپنی عبادت کے زور سے پہلے براہمن کو اپنے منھ سے پیدا کیا تاکہ تمام عالم کی حفاظت کرے اور منتر کے زور سے دیوتاؤن کو ہبیہ اور پتیرون کو کبیہ پہنچاوے۔

۹۵ - اُس براہمن سے بڑھکر اور کون ہے کہ جسکے مکھ سے دیوتا لوگ ہبیہ اور پتر لوگ کبیہ کھاتے ہین۔

र्क्तमायुर्मर्त्यानामाशिषश्चैवकर्म्मणाम्॥ फलन्त्यनुयुगं-
केप्रभावश्चशरीरिणाम्॥ ८४॥ अन्येकृतयुगेधर्मास्त्रेतायां
परेऽपरे॥ अन्येकलियुगेनृणांयुगह्रासानुरूपतः॥ ८५॥ त
रंकृतयुगेत्रेतायांज्ञानमुच्यते॥ द्वापरेयज्ञमेवाहुर्दानमेकं
लौयुगे॥ ८६॥ सर्वस्यास्यतुसर्गस्यगुप्त्यर्थंसमहाद्युतिः॥ मु
बाहूरुपज्जानांपृथक्कर्माण्यकल्पयत्॥ ८७॥ अध्यापनम
यनंयजनंयाजनन्तथा॥ दानंप्रतिग्रहंचैवब्राह्मणानामक
ल्पयत्॥ ८८॥ प्रजानांरक्षणंदानमिज्याध्ययनमेवच॥ विष
यष्वप्रसक्तिश्चक्षत्रियस्यसमासतः॥ ८९॥

٨٤ - وید مین جو عمر آدمی کی کہی ہے اور حصول مقصد کے لیئے جو دعا اور بد دعا
اور آدمیون کی خاصیت یہ سب باتین جگ کے موافق پھل دیتی ہین -
٨٥ - جگ کے موافق آدمیون کا دھرم سب جگون مین علیحدہ علیحدہ ہوتا
ہے یعنے ست جگ مین اور - ترتیا مین اور - دواپر مین اور - کلجگ مین - ا
ہوتا ہے -
٨٦ - ست جگ مین صرف عبادت اور ترتیا مین معرفت اور دواپر مین یگیہ اور کلجگ
مین دان مقدم رکھا گیا ہے -
٨٧ - اس سمپورن جگت کی رچھا کے لیئے اُس مہاتیجسوی برہما نے مُنھ باہنہ - جانگھ
چرن سے پیدا ہوئے چار وورنون کے کرم الگ الگ مقرر کیئے -
٨٨ - وید پڑھنا - وید پڑھانا - یگیہ کرنا - یگیہ کرانا - دان دینا - دان لینا -
یہ کرم براہمن کے لیئے بنائے -
- رعایا کی حفاظت کرنا - دان دینا - یگیہ کرنا - وید پڑھنا - دنیا کی نعمتون مین
دل نہ لگانا یہ پانچ کرم کشتری کے لیئے مقرر کیئے -

ज्योतिषश्चविकुर्व्वाणादापोरसगुणाःस्मृताः ॥ अद्भ्यो
गन्धगुणाभूमिरित्येषासृष्टिरादितः ॥७८॥ यत्प्राग्द्वादशसा
हस्रमुदितंदैविकंयुगम् ॥ तदेकसप्ततिगुणंमन्वन्तरमिहोच्य
ते ॥७९॥ मन्वन्तराण्यसंख्यानिसर्गःसंहारएवच ॥ क्रीडन्निवै
तत्कुरुतेपरमेष्ठीपुनःपुनः ॥८०॥ चतुष्पात्सकलोधर्मःसत्
यंचैवकृतेयुगे ॥ नाधर्मेणागमःकश्चिन्मनुष्यान्प्रतिवर्त्तते ॥८१॥
इतरेष्वागमाद्धर्मःपादशस्त्ववरोपितः ॥ चौरिकानृतमा
याभिर्धर्मश्चापैतिपादशः ॥८२॥ अरोगाःसर्व्वसिद्धार्थाश्च
तुर्वर्षशतायुषः ॥ कृतेत्रेतादिषुह्येषामायुर्ह्रसतिपादशः ॥८३॥

۷۸ - جوت سے پانی پیدا ہوا جسکا گن رس ہے اور پانی سے زمین پیدا ہوئی جسکی صفت بو ہے قیامت کے بعد پیدایش عالم کی صورت یہی ہے -

۷۹ - دیوتاؤن کا جو جگ بارہ ہزار برش کا ہوتا ہے اوسکا اکھتر گنا ایک منونتر ہوتا ہے یعنے ایک منُ کی سلطنت کی مدت ہے -

۸۰ - بے انتہا منونتر اور پیدایش اور فناء عالم کھیل کے برابر بغیر محنت کے برہما جی بار بار کیا کرتے ہین -

۸۱ - ست جگ مین دھرم چارو چرن سے رہا اور اوس جگ کے آدمی سچ بولا کرتے تھے اور کوئی کام ادھرم کا نہین کرتے -

۸۲ - ترتیا وغیرہ تینون جگون مین لوگ ادھرم یعنے چوری جھوٹھ فریب سے کام کرنے لگے اسلیئے دھرم ایک ایک چرن گھٹتا گیا - یعنے ترتیا مین ایک حصہ دواپر مین دو حصے اور کلجگ مین تین حصے کم ہوگیا -

۸۳ - ست جگ مین کوئی بیمار نہوتا تھا اور جو چاہتے تھے وہی ہوتا تھا چارسو برس کی عمر ہوتی تھی ترتیا وغیرہ تینون جگون مین عمر آدمی کی ایک ایک چرن گھٹ گئی -

दैविकानांयुगानान्तुसहस्रंपरिसंख्यया॥ ब्राह्ममेकमहर्ज्ञे
यन्तावतींरात्रिमेवच॥७२॥ तद्वैयुगसहस्रान्तंब्राह्मंपुण्यम-
हर्विदुः॥ रात्रिंचतावतीमेवतेऽहोरात्रविदोजनाः॥७३॥त
स्यसोऽहर्निशस्यान्तेप्रसुप्तःप्रतिबुध्यते॥ प्रतिबुद्धश्चसृजति
मनःसदसदात्मकम्॥७४॥मनःसृष्टिंविकुरुतेचोद्यमानंसिसृ
क्षया॥ आकाशंजायतेतस्मात्तस्यशब्दंगुणंविदुः॥७५॥
आकाशात्तुविकुर्वाणात्सर्वगन्धवहःशुचिः॥ बलवान्
जायतेवायुःसवैस्पर्शगुणोमतः॥७६॥वायोरपिविकु
र्वाणाद्विरोचिष्णुतमोनुदम्॥ ज्योतिरुत्पद्यतेभास्वत्तद्रूप
गुणमुच्यते॥७७॥

۷۲ ۔ اور دیوتاؤں کے ہزار جگ کے برابر برہما جی کا ایک دن ہوتا ہے اور اتنی ہی
رات بھی ہوتی ہے ۔

۷۳ ۔ برہما کے ہزار جگ کے برابر پرم برہم کا ایک دن ہوتا ہے سو وہ دن بڑا پوتر ہے
اور اتنی ہی رات بھی ہوتی ہے اس رات دن کے جاننے والے نے کہا ہے ۔

۷۴ ۔ وہ برہما اپنے دن میں کام کرتے ہیں اور رات میں سوتے ہیں جب جاگتے ہیں
تب سنکلپ بکلپ روپ من کو سرشٹ رچنے کیواسطے آگیا دیتے ہیں ۔

۷۵ ۔ من نے برہما جی کی آگیا پا کر آپ سے آپ آکاش کو بنایا اسکی صفت
آواز ہے ۔

۷۶ ۔ آکاش سے جملہ خوشبویات کی پہچاننے والی پاک قوی ہوا پیدا ہوئی اسکی
صفت لمس ہے ۔

۷۷ ۔ ہوا سے تاریکی دور کرنے والی اور روشنی پھیلانے والی جوت پیدا ہوئی اسکا
صفت روپ ہے ۔

दैवेरात्र्यहनीवर्षंप्रविभागस्तयोःपुनः॥ अहस्तत्रोदगयनंरा-
त्रिःस्याद्दक्षिणायनम्॥६७॥ ब्राह्मस्यतुक्षपाहस्ययत्प्रमाणं
समासतः॥ एकैकशोयुगानान्तुक्रमशस्तन्निबोधत॥६८॥
चत्वार्य्याहुःसहस्राणिवर्षाणान्तुकृतंयुगम्॥ तस्यतावच्छ
तीसन्ध्यासन्ध्यांशश्चतथाविधः॥६९॥ इतरेषुससन्ध्येषुस
न्ध्यांशेषुचत्रिषु॥एकापायेनवर्त्तन्तेसहस्राणिशतानिच॥
७०॥यदेतत्परिसंख्यातमादावेवचतुर्युगम॥ एतद्द्वादशसा-
हस्रंदेवानांयुगमुच्यते॥७१॥

۶۷ - آدمیون کے ایک برش کے برابر دیوتاؤن کا ایک دن رات ہوتا ہے جبتک سورج اتراین* رہین تب تک دن ہے اور جب تک دکشائن رہین تب تک رات ہی۔

۶۸ - برہما کے رات دن کی مقدار اور ہر ایک جگون کی مقدار کا خلاصہ سلسلہ وار کہتے ہین سنو۔

۶۹ کہ دیوتاؤن کے چار ہزار برش کا ست جگ ہوتا ہے جگ کے پہلے دیوتائی زیادہ چارسو برس کی سندھیا کہلاتی ہے - اور جگ کے اخیر پر اتنا ہی سندھیانش کہلاتا

۷۰ - اور تینون جگون (یعنی ترتیا - دواپر - کلجگ -) کی سندھیا اور سندھیانش کی مقدار ایک ایک ہزار اور ایک سو برش کے گھٹانے سے ہوتی ہے+

۷۱ - یہ چار جگون کا اندازہ کہا اُسکا بارہ ہزار گنا دیوتاؤن کا جگ ہوتا ہے -

---

* مکر کی سنکرانت سے لیکر متھن کی سنکرانت تک اتراین کہلاتا ہے اور کرک کی سنکرانت سے لیکر دھن کی سنکرانت تک دکشاین کہلاتا ہے -

+ یعنی ۳۰۰۰ ہزار برش کا ترتیا جگ اور ۳۰۰ برش سندھیا اور ۳۰۰ برش سندھیانش اور ۲۰۰۰ ہزار برش کا دواپر اور ۲۰۰ برش سندھیا اور ۲۰۰ برش سندھیانش اور ۱۰۰۰ برش کا کلجگ اور ۱۰۰ برش سندھیا اور ۱۰۰ برش سندھیانش

स्वायम्भुवस्यास्य मनोः षड्वंश्या मनवोऽपरे॥ सृष्टवन्तः प्रजाः स्वाः
स्वा महात्मानो महौजसः॥६१॥ स्वारोचिषश्चोत्तमश्च तामसो रै-
वतस्तथा॥ चाक्षुषश्च महातेजा विवस्वत्सुत एव च॥६२॥ स्वाय
म्भुवाद्याः सप्तैते मनवो भूरितेजसः॥ स्वे स्वेऽन्तरे सर्व्वमिदमुत्पा-
द्यापुश्चराचरम्॥६३॥ निमेषा दश चाष्टौ च काष्ठा त्रिंशत्तु ताः क
ला:॥ त्रिंशत्कला मुहूर्त्तः स्यादहोरात्रन्तु तावतः॥६४॥ अहोरा
त्रे विभजते सूर्य्यो मानुषदैविके॥ रात्रिः स्वप्नाय भूतानां चेष्टा-
यै कर्म्मणामहः॥६५॥ पित्र्ये रात्र्यहनी मासः प्रविभागस्तु प
क्षयोः॥ कर्म्मचेष्टास्वहः कृष्णः शुक्लः स्वप्नाय शर्व्वरी॥ ६६॥

۶۱ - برہما جی سے جو مُن پیدا ہوئے اونکی نسل مین چھ من اور بھی ہین ان مہا تیجسوی
پرتماؤن نے اپنے اپنے اختیار سے اپنی اپنی خلقت کو پیدا کیا -
۶۲ - اُنکے نام یہ ہین - سوارو چش - اوتم - تامس - ریوت - چاکشش -
ویوسوت -
۶۳ - سوایمبھو وغیرہ ساتوں مُن جو بڑے تیجوان ہین وے اپنے اپنے اختیار سے تمام
مخلوقات ساکن و متحرک کو پیدا کرکے پالنے لگے -
۶۴ - ۱۸ پل کا ایک کاشٹھا - ۳۰ کاشٹھا کی ایک کلا - ۳۰ - کلا کا ایک مہورت ۳۰
مہورت کا ایک دن رات ہوتا ہے -
۶۵ - آدمی اور دیوتا کے رات دن کی تمیز آفتاب کے باعث سے ہوتی ہے سب
جانداروں کے آرام کے لئے رات اور کاروبار کے لئے دن مقرر ہوا ہے -
۶۶ - آدمیون کے ایک مہینہ کے برابر پترون کا ایک رات دن ہوتا ہے اسمین
کرشن پکش کام کرنے کے لئے دن ہے اور شکل پکش سونے کے لئے رات
ہے -

तमोऽयंतुसमाश्रित्यचिरन्तिष्ठतिसेन्द्रियः॥नचस्वंकुरुतेकर्मं
तदोत्क्रामतिमूर्त्तितः॥५५॥यदाणुमात्रिकोभूत्वाबीजंस्थास्नु
चरिष्णुच॥समाविशतिसंसृष्टस्तदामूर्त्तिंविमुंचति॥५६॥ए-
वंसजाग्रत्स्वप्नाभ्यामिदंसर्व्वंचराचरम्॥संजीवयतिचाजस्रंप्रमा
पयतिचाव्ययः॥५७॥इदंशास्त्रंतुकृत्वासौमामेवस्वयमादि-
तः॥विधिवद्ग्राहयामासमरीच्यादींस्त्वहंमुनीन्॥५८॥एतद्वोऽ
यंभृगुःशास्त्रंश्रावयिष्यत्यशेषतः॥एतद्धिमत्तोऽधिजगेसर्व्व
मेषोऽखिलंमुनिः॥५९॥ततस्तथासतेनोक्तोमहर्षिर्मनुनाभृगुः
॥तानब्रवीदृषीन्सर्व्वान्प्रीतात्माश्रूयतामिति॥६०॥

۵۵ - اب مرگ کی حالت لکھتے ہیں کہ یہ جیو اندریوں کے ساتھ مدت دراز تک بکر حالت
میں رہتا ہے اور انفاس ختم ہو جانے پر قالب اول سے دوسرے قالب میں جاتا ہے
۵۶ - اور جب وہ جیو عناصر و حس و دل و عقل و خواہش و عمل و ہوا و ناداں - ان
چیزوں کے ہمراہ تخم ساکن میں جاتا ہے تب درخت وغیرہ کا قالب پاتا ہے اور جب
متحرک میں جاتا ہے تب آدمی وغیرہ کا قالب پاتا ہے -
۵۷ - اسی طرح برہما جی جاگنے اور سونے سے تمام جانداران ساکن و متحرک کو بار بار
اور مارتے ہیں -
۵۸ - برہما نے اس شاستر کو بنا کر پہلے ہمکو بیدہ کے موافق بتلایا پھر
کو سکھلایا -
۵۹ - اور اب اس سمپورن شاستر کو بھرگ رشی آپ لوگوں کو سنا دینگے
سے اس شاستر کو پڑھا ہے -
۶۰ - جب اسطرح منو جی نے بھرگ رشی سے کہا تب بھرگ رشی نے پرسن ہو کر سب
سے کہا کہ سنیئے -

…र्वेषान्तुसनामानिकर्म्माणिचपृथक्पृथक्॥वेदशब्देभ्यए
…ादौपृथक्संस्थाश्चनिर्म्ममे॥२१॥कर्म्मात्मनांचदेवानांसोऽ
…ृजत्प्राणिनांप्रभुः॥साध्यानांचगणंसूक्ष्मंयज्ञंचैवसनातनं
॥२२॥अग्निवायुरविभ्यस्तुत्रयंब्रह्मसनातनम्॥दुदोहयज्ञ
…सिद्ध्यर्थमृग्यजुःसामलक्षणम्॥२३॥कालंकालविभक्तीः
…नक्षत्राणिग्रहांस्तथा॥सरितःसागराञ्छैलान्समानिवि
…षमाणिच॥२४॥तपोवाचंरतिंचैवकामंचक्रोधमेवच॥
…सृष्टिंससर्जचैवेमांस्रष्टुमिच्छन्निमाःप्रजाः॥२५॥कर्मणां
…विवेकार्थंधर्म्माधर्म्मौव्यवेचयत्॥द्वंद्वैरयोजयच्चेमाःसु
…ुःखादिभिःप्रजाः॥२६॥

۲۱- پھر پرماتما نے سب جیوون کا نام اور کرم علیحدہ علیحدہ جیکا جیسا پیدائش سے پہلے تھا
ویسا ہی وید شبد سے جانکر بنایا-

۲۲- پھر پربھو یعنے برہما نے دیوتاؤن کو اور جڑ بدار تھون کو اور سوکشم ہستیہ یگیہ کو پیدا کیا

۲۳- پھر یگیہ سدھ ہونے کے لئے اگن سے رگ وید اور بایو سے یجر وید اور سورج سے
سام وید کو نکالا-

۲۴- پھر کال اور کال کے حصے یعنے برس مہینہ دن وغیرہ اور آسمانی وغیرہ نکشتر اور
وغیرہ گرہ اور ندی سمندر پربت سم بکھم یعنے ٹیڑھے سیدھے مقامات کو بنایا-

۲۵- انکے بنانے کے بعد تپ "یعنے پراجاپت وغیرہ" اور بانی رت "یعنے چت کا
اچھا کام کرودھ دیوتا وغیرہ پرجا ان سب کو بنایا-

۲۶- [illegible]

स्मिन्नण्डे स भगवानुषित्वा परिवत्सरम्॥ स्वयमेवात्मनो-
ध्यानात्तदण्डमकरोद्द्विधा॥१२॥ ताभ्यां स शकलाभ्यां च दिवं
भूमिं च निर्ममे। मध्ये व्योम दिशश्चाष्टावपां स्थानं च शाश्वतम्॥
१३॥ उद्बबर्हात्मनश्चैव मनः सदसदात्मकम्॥ मनसश्चाप्यहंका
रमभिमन्तारमीश्वरम्॥१४॥ महान्तमेव चात्मानं सर्व्वाणि त्रिगु
णानि च॥ विषयाणां ग्रहीतॄणि शनैः पंचेन्द्रियाणि च॥१५
तेषां त्ववयवान्सूक्ष्मान्षण्णामप्यमितौजसाम्॥ सन्निवे-
श्यात्ममात्रासु सर्व्वभूतानि निर्म्ममे॥१६॥

۱۲- برہمانے اُس انڈے مین اپنے ایک برس تک رہکر اور پرماتما کا دھیان کرکے
انڈے کے دو ٹکڑے کئے۔

۱۳- اُن دو ٹکڑون سے برہمانے سورگ اور پرتھوی کو بنایا پھر اُن دونون کے بیچ مین
اور آٹھو دِشا اور اَچل سمدر کو بنایا۔

۱۴- پھر برہمانے پرماتما سے سنکلپ بکلپ روپ من کو پیدا کیا اور من کے پیدا کرنے سے
سمرتھ اور ابھمان کرنیوالے اہنکار کو بنایا۔

۱۵- اور اہنکار سے پہلے آتما کا اُپکار کرنیوالا مہت تتو یعنی عقل کو پیدا کیا اور سب
بھوگ کرنے والی پانچ گیان اندری اور پانچ کرم اندری اور تنماترا کو
بنایا۔

... تنکت ماترون کے سوکشم انگون کو اپنے بکار مین ملاکر تمام مخلوق

ततः स्वयम्भूर्भगवानव्यक्तोव्यंजयन्निदम्॥ महाभूता
ज्ञाः प्रादुरासीत्तमोनुदः॥६॥ योऽसावतीन्द्रियग्राह्यः
व्यक्तः सनातनः॥ सर्व्वभूतमयोऽचिंत्यः स एव स्वयमुद्ब
सोऽभिध्याय शरीरात्स्वात्सिसृक्षुर्विविधाः प्रजाः॥ अप ए
र्यासीतासु बीजमवासृजत्॥८॥ तदण्डमभवद्धैमं सहस्रां
प्रभम्॥ तस्मिन्जज्ञे स्वयं ब्रह्मा सर्व्वलोकपितामहः॥
पो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः॥ ता यदस्यायनं
नारायणः स्मृतः॥१०॥ यत्तत्कारणमव्यक्तं नित्यं सदस
कम्॥ तद्विसृष्टः स पुरुषो लोके ब्रह्मेति कीर्त्यते॥११॥

سکے پوشیدہ ولازوال قوت رکھنے والا اور اندھکار کا ناش کرنے والا پرمیشور پرماتما
رہ کو ظاہر کرتا ہوا ظاہر ہوا۔

اتما اندریوں سے الگ باریک پوشیدہ وہمیشہ بے فکر وسب مخلوقات کی جان
سے آپ ظاہر ہوا۔

سکے دل مین یہ خواہش ہوئی کہ اپنے بدن سے ایک قسم کی خلقت پیدا کرنا چاہیئے تو اسنے
ی کو پیدا کیا پھر اُس پانی مین بیج ڈالا

وہ بیج مثل طلا و آفتاب کے خوبصورت بیضہ بن گیا پھر اُس بیضہ سے
ی جو تمام مخلوقات کے پیدا کرنے والے ہین آپ سے آپ پیدا

سنسکرت مین پانی کو نارا کہتے ہین اور وہ پہلے پرماتما کا گھر تھا اسوجہ سے پرماتما
کہتے ہین۔

اتما سب کا باعث و پوشیدہ و ہمیشہ قائم و فاعل مطلق ہے اسنے جس شخص کو دنیا مین
کیا اُسی کو سب لوگ برہما کہتے ہین۔

ण्डजाः पक्षिणः सर्प्पा नक्रा मत्स्याश्च कच्छपाः॥ यानि चैवं
प्रकाराणि स्थलजान्यौदकानि च॥४४॥ स्वेदजं दंशमशकं यूका
मक्षिकमत्कुणम्॥ ऊष्मणश्चोपजायन्ते यच्चान्यत्किंचिदीदृ-
शम्॥४५॥ उद्भिज्जाः स्थावराः सर्वे बीजकाण्डप्ररोहिणः॥ ओष
ध्यः फलपाकान्ता बहुपुष्पफलोपगाः॥४६॥ अपुष्पाः फल-
वन्तो ये ते वनस्पतयः स्मृताः॥ पुष्पिणः फलिनश्चैव वृक्षास्तू
भयतः स्मृताः॥४७॥ गुच्छगुल्मन्तु विविधं तथैव तृणजातयः
बीजकाण्डरुहाण्येव प्रताना वल्ल्य एव च॥४८॥

۴۴ — پرند و سانپ مچھلی و کچھوا یہ سب انڈج ہین (یعنے بیضہ سے پیدا ہوتے ہین) اور
جو اسی طرح پانی یا زمین سے پیدا ہون وہ بھی انڈج کہلاتے ہین —

۴۵ — ڈنش و مساد و ڈھیل و مکھی و کھٹمل یہ سب پسینا سے پیدا ہوتا ہے اسلیے سویج
ہین اور جو ایسی گرمی سے ہوتے ہین وہ بھی سویج کہلاتے ہین —

۴۶ — سب [illegible] پھیلتا اور سب ادبھج کہلاتے ہین کوئی تو بیج سے پیدا ہوتے ہین اور کوئی قلم لگا-
[illegible] وہ ہین بہت پھل پھول والے جو پکنے پر ناش ہوتے ہین —

۴۷ — جن مین پھول نہین لگتا فقط پھل ہی لگتا ہے انکو بنسپت کہتے ہین اور جنمین پھل پھول
دونون لگتے ہین انکو برکش کہتے ہین —

۴۸ — گچھ اور گلم بہت قسم کے ہوتے ہین اور ترن کوئی تو بیج سے اور کوئی شاخ لگانے
سے ہوتے ہین جیسے پرتانا اور بلی وغیرہ —

* جو زمین توڑ کر نکلتے ہین —

* جنمین جڑ تنا سے نکلتی ہے اور بڑی شاخ نہین ہوتی —

* جنمین سوت ہوتا ہے لکی و کمرڈھا وغیرہ —

* جنمین جڑ ایک ہے اور ریشہ بہت نکلتے ہین —

…केवदन्त्यग्निं मनुमन्ये प्रजापतिम्। इन्द्रमेकेऽपरे प्रा…
…ब्रह्म शाश्वतम्॥ १२३॥ एष सर्वाणि भूतानि पंचभि…
…र्तिभिः। जन्मवृद्धिक्षयैर्नित्यं संसारयति चक्रवत्॥ १…
…यः सर्वभूतेषु पश्यत्यात्मानमात्मना। स सर्वसमतामे…
…भ्येति परं पदम्॥ १२५॥ इत्येतन्मानवं शास्त्रं भृगुप्रो…
…ः। भवत्याचारवान्नित्यं यथेष्टां प्राप्नुयाद्गतिम्॥ १२…

…ते मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां
द्वादशोऽध्यायः १२
समाप्तोऽयं ग्रन्थः॥

۱۲۳- اس پرش کو کوئی من کوئی اگن کوئی پرجاپت کوئی …
۱۲۴- یہ آتما سب جانداروں میں پنچ عناصر کی مورتیوں …
…قی پیدائش و فنا کرکے ہمیشہ چکر کے مانند گردش دیتا ہے۔
۱۲۵- جو آدمی اس طریق سے سب جانداروں میں آتما کے دیکھ…
…سمدرشی ہو کر بڑی برہم پد وی کو پاتا ہے۔
۱۲۶- اس بھرگ رشی کے کہے ہوئے مانو شاستر کو برہمن کشتری ویشیہ…
…تا ہے اور خاطر خواہ گت کو پاتا ہے۔

منو سمرت دھرم شاستر سماپت ہوا۔

अथ मनुस्मृतेः सूचीपत्रम्।

فہرست مطالب منوسمرت

मनुस्मृतिः

मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां

महाभारते

पुराणं मानवो धर्मः साङ्गो वेदश्चिकित्सितम्।
आज्ञासिद्धानि चत्वारि न हन्तव्यानि हेतुभिः॥

कानपुरनगरे
नवलकिशोरीय यंत्रे मुद्रिता
संवत १९६५ वै०।

منوسمرتی

یعنے

مانوو دھرم شاستر بھرگ سنگھتا
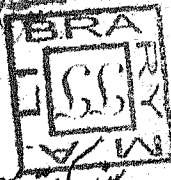
سنسکرت مع ترجمہ اُردو مرتبہ لالہ سوامی دیال صاحب

بار دوم

مطبع منشی نول کشور مقام کانپور میں طبع ہوئی